पद्मपुराण भाषा

द्वितीयभूमिखण्ड

जिसको

श्रीयुत महाशय श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोरजी ने बारहबंकी प्रदेशान्तर्गत गोमत्युत्तर तटस्थ धनावली ग्रामनिवासि पण्डित महेशदत्तशुक्ल जी से संस्कृत पद्मपुराणद्वारा प्रतिश्लोकका अनुवाद हिन्दीसरलभाषामें बनवाया—

भगवद्भक्ति भूषित दोषादूषित पितृभक्ति मातृभक्ति गुरुभक्ति भार्य्यातीर्थ पुत्रतीर्थादि नानाप्रकारके धर्मोंके जिज्ञासुओं के अनुमोदन के लिये अतिशुद्धतापूर्वक

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपा
सितम्बर सन् १९०५ ई० ॥

भूमिका ॥

उस परमशक्तिमान् करुणावान् को असंख्यनाद धन्यवादहै जिसने सर्व्वो-पकारक दीनप्रजोद्धारक शुभधर्म्मप्रचारक विधर्म्मनिवारक परमप्रकाश व्यास जीका अवतारलेकर वेदोंके भागोंको अवलोडितकर अल्पज्ञलोगोंके उपकारके लिये अष्टादशपुराण व इतनेही उपपुराण बनाये जिनमें ढूँढ़ २ वेही कथायें लिखी हैं जिनको सुनकर धर्म्मकरनेमें रुचि व अधर्म्म करनेमें अरुचि तुरन्तही होजातीहै उन पुराणों में सब से संख्यामें स्कन्दपुराण बड़ाहै उससे नीचे यह पद्मपुराण पचपनसहस्र श्लोकोंका है उसका यह द्वितीयभूमिखण्ड है इसमें प्रथम माता पिताकी भक्ति व सेवा पुत्रको कैसे करनी चाहिये इस विषयमें शिवशर्म्माकी अतिविचित्र कथा बड़ीयुक्तिसे निरूपितहै फिर उसके चार पितृ-भक्त पुत्रोंकी कैसी विचित्रकथा व सुव्रतचरित व दुष्टता करने से अवश्य दण्ड मिलताहै चाहे कैसाही बलवत्तर क्यों न हो इसविषयमें वृत्रासुरकेवधकी कथा कही है कैसाही पापी व दुष्टपुरुषहो पर सुपुत्रके होनेसे तरहीजाताहै इस वि-षय में राजावेन व उनके पुत्र महाराजाधिराज पृथुजीका परमपावन चरित्र कहागया है फिर वेनकी माता सुनीथा का वृत्तान्त इसलिये कहागया है कि चाहे कैसे प्रतिष्ठित व सर्व्वोपरि गरिष्ठकी सन्तति क्यों न हो पर महात्माओंका अपकार करनेसे उसे अवश्य दुःख भोगने पडतेहैं पतिव्रतास्त्रीके समान अन्य कोई प्रधान धर्म्म नहीं होता इसविषयमें सुकलाकी अत्यद्भुत कथाकहीहै फिर ऐसी पतिव्रताको छोड़कर अकेले तीर्थादि करनेजानेसे धर्म्मकाफल नहीं होता इसविषयमें अपूर्वही धर्म्मका आख्यान वर्णित है पुत्रको पिताके वचन अ-वश्यही करने चाहियें इसविषयमें राजानहुष की कथा है फिर ययातिजी की कथा है जिसमें गुरुलोगही तीर्थहैं इसका निरूपणहै फिर राजाका व जैमिनि उनके पुरोहित का महाअपूर्व संवाद है फिर अशोकसुन्दरी की कथा इस विषयमें है कि पतिव्रता का पातिव्रत जो भंगकरना चाहता है वह आप भंग होजाता है जैसे हुण्डदैत्य मारागया व इसीविषय में उससे भी अद्भुत कामो-

दाख्यानहै जिसमें पतिव्रतासेही दुष्टता करनेकेकारण विहुण्ड दैत्यका वधहुआ फिर अद्भुतज्ञानके विषयमें कुञ्जलनामशुक व महात्माच्यवनजी का अतिविचित्र संवादहै फिर एकसिद्धका अतीव विचित्र आख्यानहै बस ऐसीही नाना प्रकारके धर्म्मों के उपकारोंकी कथायें इसभूमिखण्डमें हैं यदि व्यासजी वर्णन न करते तो प्राणियों का निस्तार इसअपार संसारसे कैसे होता व फिर भाषानुवाद न होता तो बेचारे हमारे प्यारे संस्कृतानभिज्ञ इसअभिप्रायके विज्ञ कैसे होते इससे लालसाहै कि लोग इसे आदरपूर्व्वक ग्रहणकरके यह कहें कि ॥

दो० सुखकारक दुखियानके मुन्शी नवलकिशोर ॥
यशतनुसों युगयुग जियो कियो हमैं सुखओर १

इसके सिवाय इस यंत्रालयमें औरभी बहुत से ग्रंथ प्रत्येक विषयके उल्था होकर मुद्रितहुयेहैं वह संपूर्ण महाशयों की विज्ञप्तिके लिये निम्नलिखितहैं ॥

पुराणोंमें-श्रीमद्भागवत,श्रीमहाभारत,शिवपुराण,विष्णुपुराण,लिंगपुराण, मार्कंडेयपुराण,भविष्यपुराण,नृसिंहपुराण,वामनपुराण, वाराहपुराण, जैमिनिपुराण, गणेशपुराण और आदिब्रह्मपुराण सुंदरदेशभाषाके लालित्यपदोंमें हैं ॥

काव्यमें-रघुवंश, कुमारसंभव ॥

धर्म्मशास्त्रमें-मिताक्षरा तीनोंकाण्ड और मनुस्मृति इनकी उत्तमता देखने से विदित होगी ॥

वैद्यकमें-निघण्टरत्नाकर,भावप्रकाश,सुश्रुत,भैषज्यरत्नावली, रसरत्नाकर ॥

वेदान्तमें-योगवाशिष्ठ औरश्रीमद्भगवद्गीता शंकरभाष्यादि इनग्रंथोंको जो विद्वज्जन अवलोकन करेंगे वह प्रसन्नतापूर्वक स्वीकारकरेंगे-और ग्रंथकर्त्ता तथा यंत्रालयाध्यक्षको धन्यवाददेंगे ॥

महेशदत्तशर्म्मा ॥

पद्मपुराण भाषा द्वितीय भूमिखण्ड का सूचीपत्र ॥

इति ॥

पद्मपुराण भाषा ॥

द्वितीय भूमिखण्ड ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

जानक्याप्रिययासमंस्वसदनेसौधेसरय्यास्तटे ।
पर्य्यङ्केमणिनिर्मितेस्थितमहन्ध्यात्वाकुजेशम्प्रभुम् ॥
कुर्व्वेपद्मपुराणभूमिशकलस्यप्रीतयेश्रीमता ।
प्रोक्तोनूवलकिशोरनामसुधियाभाषानुवादंसताम् १

दो० जनकसुता दशरथ तनय सनय विनयकरि आज ॥
भूमिखण्ड भाषा रचत पुरवहिं लघुरघुराज १
कहब प्रथम अध्याय महँ शिवशर्म्मा की गाथ ॥
जासु पञ्चसुत पितु चरण सेवा पाय सनाथ २

सृष्टिखण्डकी कथा सुनकर ऋषिलोग सूतजी से बोले कि हे महाभाग ! व सब शास्त्रों के निश्चय के जाननेवाले विद्वान् सूतजी ब्राह्मण लोग बड़े सन्देहको प्राप्तहुये हैं इससे उनकी बुद्धिकी कुछ न्यूनता होगई है १ क्योंकि कोई कोई तो द्विजोत्तम ऐसा कहते हैं कि पुराणों में लिखाहै कि प्रह्लादजीकी जब पांचही वर्षकी अवस्था

थी तभी उन्होंने केशवभगवान् को सन्तुष्ट किया २ व कोई कहते हैं कि देवासुर संग्राम में प्रह्लाद व श्रीहरिका युद्धहुआ उसमें श्रीवासुदेवजी ने उनको मारडाला इससे वे श्रीविष्णुजी के शरीरमें प्रविष्ट होगये ३ यह सुनकर सूतजी बोले कि यही प्रश्न पूर्व्वकाल में धीमान् श्रीव्यासजीने ब्रह्माजीसे किया था तब ब्रह्माजी ने अपने आप व्यासजी के आगे इसका उत्तर दियाथा ४ सो हे ब्राह्मण लोगो ! वही हम आप लोगोंके आगे कहेंगे जिसप्रकार व्यासजी को संदेह हुआ व ब्रह्माजी ने उसका निवारण किया ५ श्रीवेदव्यासजी सूतजी से बोले कि हे महाभाग सूत ! प्रह्लादजी का जो वृत्तान्त पुराण में तुमने अन्य प्रकार से सुनाहै वह हम ब्रह्माजी का कहा हुआ तुमसे कहते हैं सुनो ६ भगवद्दासों में श्रेष्ठ देवताओं से भी पूजित प्रह्लाद जी उत्पन्न होतेही महावैष्णवभावको आश्रितहुये ७ व अपने पुत्रकेसाथ श्रीविष्णुजी के सङ्ग युद्धकरने केलिये समर में गये इससे श्रीविष्णुजी के हाथोंसे मारेगये व विष्णुके शरीर में प्रवेश करगये ८ अब तुम इन महात्मा प्रह्लादजीकी प्रथम हमसे उत्पत्तिसुनो फिर जैसे वीर्य्यवान् वे महात्मा विष्णुभगवान् से समरमें लड़े ९ व अपने तेजसे श्रीविष्णुजीके तेजमें प्रह्लादजी प्रविष्टहुये सबसुनो पूर्व्वकल्प में जिसप्रकार वीर्य्यवान् प्रह्लादजी उत्पन्नहुयेथे १० वह वृत्तान्त संक्षेप रीतिसे तुमसे कहेंगे पश्चिमदिशा में समुद्र के मध्य में सब ऋषियों से युक्त व सब सिद्धियों से समन्वित द्वारका नाम पुरी है उसमें वेदशास्त्र के अर्थों के जानने में महापण्डित व योग योगाङ्गों के जानने में अतिविद्वान् शिवशर्म्मा इस नामसे प्रसिद्ध एक ब्राह्मण रहताथा उसके पांचपुत्र हुये व सबके सब शास्त्रों के पढ़ने से बड़े पण्डित हुये ११ । १२ एकका यज्ञशर्म्मा दूसरेका वेदशर्म्मा तीसरे का धर्म्मशर्म्मा चौथेका विष्णुशर्म्मा नामथा यह महाभाग विशेष धर्म्मकर्म्म करने में चतुरथा १४ पांचवें का सोम शर्म्मा नाम था वह अपने पिताकी भक्तिमें रात्रिदिन लगारहता था क्योंकि पिताकी भक्तिको छोड़ अन्य कोई धर्म्मही वह नहीं कहता था १५ इससे वे सबके सब अपने पिताकी भक्तिमें तत्पर होगये उन सबोंकी

पितृभक्ति देख द्विजोंमें उत्तम शिवशर्म्माजीने १६ उन सबोंकी परीक्षा लेनेके लिये अपने मनमें चिन्तनाकी पिताकी भक्ति करने में इन लोगोंके मनमें जैसा भाव टिकाहै वैसा जानने के लिये हम बुद्धिपूर्व्वक कुछ विचार करके जानें तो अच्छा है क्योंकि श्रीविष्णुजी के प्रसाद से हम सब प्रकार से सिद्धहैं योंभी इनका भाव जानते हैं तथापि विचारपूर्व्वक इनके हृदयका अच्छा भाव पूजा करने के विषयका जानना चाहिये कि कैसे भक्तहैं १७। १८ यह विचारांशकर अपने तप व तेजके प्रभाव से सब उपाय जाननेवाले उस ब्राह्मण श्रेष्ठ व वेदवादियों में उत्तम ने माया से यह उपाय किया कि उन अपने पुत्रोंके आगे शिवशर्म्मा ने यह वार्त्ता प्रकटकर दिखाई २० कि तुम्हारी माता बड़े ज्वरके रोगसे देखो मृतक होगई वे लोग माताको मरीहुई देख अपने पितासे बोले २१ कि हे महाभाग ! जिन्होंने हम लोगोंको प्रथम गर्भ में धारण करके बढ़ाया वे शरीर छोड़ अब हम सबोंको त्यागकर आप नाशको प्राप्तहुई हे तात ! अब हमलोग क्या कहें यह सुन उनके पिता शिवशर्म्मा सबोंसे बड़े यज्ञशर्म्मा नाम अपने पुत्रको बुलाकर उससे बोले कि अतितीक्ष्ण व चोखेशस्त्र से २२। २४ इस अपनी माताके सब अङ्ग काटडालो व दूर कहीं फेंक आओ यह वचन जैसेही पिताके मुखसे सुना कि वैसेही आज्ञाके अनुसार उस पुत्रने सबकिया २५ व फिर पीछे पिता के आगे आकर यह वचन बोला कि हे तात ! जैसी आपकी आज्ञा हुई हमने वैसा सब किया २६ अब और जो कुछकार्य्य हो उसके करने की आज्ञा दीजिये हे पिताजी ! चाहे बहुत दुर्गम व दुर्लभ कार्य्य होगा पर हम सब करेंगे २७ उस महाभाग्यवाले को निस्संदेह पिताका भक्तजानकर पिताने दूसरे पुत्रका परम निश्चय जानने केलिये चिन्तनाकी २८ व दूसरे वेदशर्म्मा नाम पुत्रको बुलाकर उससे कहा कि तुम हमारी आज्ञासे जाकर कहीं से एक स्त्री लाओ क्योंकि कन्दर्प्प से मोहित होनेके कारण हम बिना स्त्री के नहीं जी सक्के २९ यह कह उस अपने पुत्रको उन्होंने सब सुन्दरता व सौभाग्यता युक्त मायासे एक स्त्री बनाकर दिखाई व कहा कि पुत्र नि-

श्चय करके हमारेलिये यही स्त्री आनदो ३० यह सुन उस पुत्रने कहा बहुत अच्छा ऐसाही होगा तुम्हारा प्रिय करेंगे फिर पिताके प्रणामकर वह पुत्रजाकर उस स्त्री से बोला कि ३१ हे देवि ! कामके बाणोंसे व्याकुल व पीड़ित वृद्धावस्थाको प्राप्तहमारे पिताजी तुम्हारी प्रार्थना करते हैं इससे प्रसन्नहो उनके सम्मुख चलो ३२ व हे सर्व्वांगसुन्दरि ! हमारे पिताको भजो यह सुन वह शिवशर्म्माकी मायासे बनीहुई स्त्री बोली कि ३३ वृद्धता से पीड़ित श्लेष्मा मुखमें भरेहुये व नानाप्रकार की व्याधियों से युक्त तुम्हारे पिताकेपास हम कभी न जायँगी ३४ क्योंकि अब वे बनाय शिथिलहोगये हैं व बनाय वृद्धहोगये हैं उनकी कोई इन्द्रिय भोगके योग्य नहीं है हां तुम्हारे संग भोगकरना चाहती हैं तुम चाहो तो तुम्हारा प्रिय अच्छीतरह करें ३५ क्योंकि तुम रूप सौभाग्य गुण व रत्नादिकों से भूषित हो व सब तुम्हारे दिव्य लक्षण हैं व दिव्यही रूप है व बड़ेपराक्रमी हो ३६ हे मानद ! उस वृद्ध अपने पिताको क्याकरोगे हमारा वचन सुनो हमारे अङ्गोंके भोग के भावसे सब दुर्लभ पदार्थ पाओगे ३७ हे विप्र! जो तुम चाहोगे हम सब देंगी इसमें कुछभी सन्देह नहीं है यहअप्रिय व पापयुक्त उस स्त्रीका वचन सुन वेदशर्म्मा ब्राह्मण बोला कि ३८ तुम्हारा यह वाक्य धर्म्मयुक्त नहीं है व पापसे मिलेहुये के कारण बहुत ही अयोग्य है जो कि हे देवि ! निरपराध पिताकेभक्त हमारे तुल्य पुरुष से तुमने कहा ३९ हे शुभे ! हमने पिताके अर्थ आकर तुमसे प्रार्थनाकी है इससे अब और बात न मुखसे निकालना हे शुभे ! चलकर हमारे पिताजीको भजो ४० हे देवि ! सचराचर तीनोंलोकों में जिस वस्तुकी इच्छाकरोगी वह सब हम तुमको देंगे चाहे इन्द्रादिकों के राज्य सेभी अधिक हो इसमें सन्देह नहीं है ४१ यह सुनकर फिर स्त्री बोली कि जो आप पिताके अर्थ इस प्रकार सब कुछ हमको देनेमें समर्थ हैं तो हमको इस समय इन्द्रादि सब बड़े बड़े देवताओं को दिखाओ ४२ क्योंकि ऐसे दुर्लभ पदार्थों के देनेमें अपने को समर्थ समझतेहो तो हे महाभाग ! तुम्हारे कौनसा बलहै अपना बल हमको दिखाओ तो ४३ वेदशर्म्मा

बोला कि हे देवि ! हमारे तपका प्रभाव देखो देखो अभी हमारे बुलाये हुये इन्द्रादि सब देवश्रेष्ठ यहीं आते हैं ४४ इतना कहतेही वेदशर्म्मा के स्मरण करने से इन्द्रादि देव वहां आकर बोले कि हे द्विजोत्तम ! कहो हमलोग क्याकरें हे विप्र ! जिस वस्तुकी इच्छाहो वह हमलोग दें इसमें सन्देह न करना ४५ यह सुन वेदशर्म्माजी बोले कि हे देवताओ ! यदि प्रसन्नहो व हमारे ऊपर सुमुखहो तो पिताजी के चरणों में हमको निर्मलभक्ति दो बस और कुछ हम नहीं चाहते ४६ ऐसा हीहो ऐसा कहकर सब देवगण अपने २ स्थानों को चलेगये तब हर्षित हो वह स्त्री वेदशर्म्मा से बोली कि तुम्हारे तपका बल हमने देखा ४७ परन्तु देवताओंके आने से हमारा कुछभी कार्य्य नहींहै जो तुम पिताके अर्थ सब कुछ हमको देसक्के हो तो जो हम कहैं वह हमारा प्रिय करो ४८ हे विप्र ! अपना शिर अपनेही हाथसे काटकर हमको दो यह सुन वेदशर्म्मा बोले कि हम धन्यहैं जो आजही तीनों ऋणों से छूटेजाते हैं ४९ केवल शिरही के देनेसे जब पिताका कार्य्य सिद्ध होता है तो हे शुभे ! शिरग्रहण करो ग्रहणकरो इतनाकह तीक्ष्णधारवाले बड़े चोखेशस्त्र से उस ब्राह्मण श्रेष्ठने ५० अपना शिरकाट हँसतेहुये उस स्त्रीको देदिया व रुधिर टपकताहुआ वह शिर लेकर वह स्त्री वेदशर्म्मादिकों के पिता शिवशर्म्मा मुनिके पासगई ५१ व बोली कि ॥

चौ० तव हित वेदशर्म्म सुत बाडव । पठवा हमें यहां मतिपाटव ॥
पिताभक्क उन निज शिरकाटा । हमें दीन मनखोलि कपाटा ५२
हे द्विज हम आईं तव हेतू । करहु भोग मम सँग करिचेतू ॥
वेदशर्म्म साहसलखि ताके । सकल सहोदर रहे सटाके ५३
थर थर कांपत सकल सुअंगा । कहे परस्पर वचन सुढंगा ॥
धर्म्मवती मम सत्यसुबानी । जननीमरी कृपाकी खानी ५४
महाभाग यह धर्म्मधुरन्धर । पितुहित मरो सुभग पण्डितवर ॥
धन्य २ यह धन्य सुपावा । पितुप्रियकीन सकलविधि भावा ५५
इमिसब भाइन कहा निहोरी । पुण्यकारिता सुयश बहोरी ॥
बोले सूत सुनहु मुनिराया । वेदशर्म्म यश यह हम गाया ५६

निजसुत प्रेरित यह शिरहेहू । नारी कह्यो सुनो मुनियेहू ॥
जानिपुत्र की भक्ति विशेखी । बोल्यहु द्विज ताके गुण देखी ५७

इति श्रीपाद्ममहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेशिवशर्मचरिते प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

दो० कहब द्वितीयाध्याय महँ धर्म्म शर्म्म की गाथ ॥
वेदशर्म्मजीवन कियो जो निज तपके साथ १

सूतजी ऋषियों से बोले कि जब वेदशर्म्मा ने अपना शिर इस तरह काटडाला तब उसके पिता शिवशर्म्माजी अपने तीसरे पुत्र धर्म्मशर्म्मा को बुलाकर उससे बोले कि हे पुत्र! यह शिर तुम ग्रहण करो व जैसा करने से यह हमारा बच्चाजीवे हे तात! वैसाकरो उस शिरको लेकर वह महात्मा धर्म्मशर्म्मा अतिवेग से वहां से चल खड़ाहुआ व पिताकी भक्तिसे तप करने सत्य बोलने सरलता रखने से धर्म्मशर्म्मा ने धर्म्मके खींचने की इच्छाकी उस धीमान् के तपोबलसे खिंचेहुये धर्म्मजी १। २ वहां आकर धर्म्मशर्म्मा से यह वचन बोले कि हे धर्म्मशर्म्मन् ! तुमने हमको क्यों बुलाया है वह कार्य्य हम से तुम कहो हमकरें इसमें कुछ सन्देह नहीं है तब धर्म्मशर्म्मा बोला कि हे सुव्रत ! जो हमारे पिताकी सेवाहो निष्ठा और अचल तपस्या हो तो ३।४ तिस सत्यता से वेदशर्म्मा फिर जीउठे तब धर्म्मने कहा कि हे सुव्रत! तुम्हारे दम शौच सत्य तपस्या और पिता की भक्तिसे तुम्हारा भाई वेदशर्म्मा महात्मा फिर जी उठेगा ५।६ हे-महामते ! हम तुम्हारे तपसे व पितृभक्ति से बहुत प्रसन्नहुये हैं इस से कोई और वर मांगो जो सब ब्रह्मवादियों में उत्तम लोगों को भी दुर्लभ हो तुम्हारा कल्याण हो ७ जब धर्म्मशर्म्मा ने इस प्रकारका सुन्दर वाक्यसुना तो महात्मा धर्म्मराज जीसे वह महायशस्वी बोला ८ कि हमको पिताजी के चरणारविन्दों में अचल भक्ति दीजिये व यदि प्रसन्नहुये होतो फिर धर्म्म कर्म्म करने में हमारी प्रीतिहो व मोक्षमिले ९ यह सुनके धर्म्मराजजीबोले कि हमारे प्रसादसे ये सब

कार्य्य तुम्हारे होंगे यह कह धर्म्मतो चलेगये व वेदशर्म्मा उठखड़े हुये १० मानो शयनहीं करते थे व उठतेही उस महाबुद्धिमान् ने धर्म्मशर्म्मा अपने भाईसे कहा कि हे भ्रातः! वह देवी कहां है व हमारे पिताजी इस समय कहांहोंगे ११ यहसुन धर्म्मशर्म्मा ने संक्षेप रीतिसे सब वृत्तान्त कहा जैसे कि पिताने वेदशर्म्मा के जिलाने के लिये आज्ञादीथी उस बातको जान वेदशर्म्मा अतिहर्षित होके धर्म्मशर्म्मासे बोला कि १२ हे महाभाग! हमारे शिरके जीआने से आजहमारे पिताजी सुखीहोंगे इससे पृथ्वीपर आजहमारे समान और कौनहै १३ पिताके समीप को जानेमें उत्सुक अपने भाई धर्म्मशर्म्मा से ऐसा कहकर धर्म्मशर्म्मा भाईकेसङ्ग वेदशर्म्मा अपने घरको चला १४ इस प्रकार देखनेकी इच्छा कियेहुये अपने पिताके समीप वे दोनों गये व पहुँचतेही शिवशर्म्मा से १५ धर्म्मशर्म्मा यह वचन बोला कि हे विप्रेन्द्र! आपके तेज से यमराज के गृहसे इन वेदशर्म्मा को हमलाये अब अपने पुत्रको ग्रहण करो धर्म्मशर्म्मा की ऐसी भक्तिजान शिवशर्म्माजी कुछनहीं बोले व फिर चिन्ता करने लगे व आगे हाथजोड़े खड़ेहुये अपने चौथेपुत्र महामति १६।१८ विष्णुशर्म्मा से बोले कि हे वत्स! तुम हमारा यह वचन करो आज ही इन्द्रलोक को जाओ व वहांसे अभी अमृतलाओ १९ हम इस स्त्रीके साथ पानकिया चाहते हैं हे सुव्रत! जो कि सागर से उत्पन्न हुआहै वह सब व्याधि नाशनेवाला अमृतलाओ २० जिससे अभी हमारी वृद्धावस्था नष्टहोजाय व हम नीरोग होजावें हे पुत्र! यदि हमारे भक्तहो तो ऐसाही करो सोभी शीघ्रता के साथ नहीं तो यह स्त्री हमको छोड़कर और के पास चलीजायगी २१ क्योंकि हमको वृद्धजानकर यह स्वरूपिणी व थोड़ी अवस्था की स्त्री हमें नहीं मानती २२ इससे हे तात! जिससे प्यारी स्त्रीके सङ्ग हम तीनों लोकोंमें निर्दोष व व्याधि रहित होकर सुखभोगें २३ अपने महात्मा पिताके ऐसे वचन सुनकर प्रकाशित तेजवाले अपने पितासे विष्णुशर्म्मा बोला २४ कि आपके उत्तम सुखके लिये हम यह सब कार्य्य करेंगे ऐसा पितासे कह महामति विष्णुशर्म्मा २५ ॥

चौ० तातहिकीन्ह प्रणामबहोरी । कीन्ह प्रदक्षिणसाहित निहोरी ॥
बलतप नियम बहुरिमन सेती । सबविधिदृढ़ह्वै चल्यहुसचेती २६
अन्तरिक्ष उड़िगयहु तुरन्ता । वायु वेगसों सो बलवन्ता ॥
तुरत महेंद्र भवन नगिचाना । महामहात्मा अरुभीमाना २७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेशिवशर्म्मचरिते
द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

दो० कही तृतीयाध्याय महँ विष्णुशर्म्म की गाथ ॥
तदनुसहोदर चारि हरि पुरगे भये सनाथ १

सूतजी शौनकादि ऋषियों से बोले कि विष्णुशर्म्मा अन्तरिक्ष के मार्ग होकर जाय बनाय इन्द्रपुरी के समीप पहुँचे उन्हें सहस्र नेत्रवाले बुद्धिमान् इन्द्रजी ने आतेहुये देखा १ व उनका उद्यम जानकर देवराजजी ने बड़ा विघ्नकिया मेनका नाम अप्सरा से बोले कि हमारी आज्ञासे तू जा २ व हे सुमध्यमे ! जाकर शीघ्रही इस शिवशर्म्मा के पुत्र विप्रश्रेष्ठका ऐसा विघ्नकर ३ कि जिससे वह हमारे गृहमें न आवै ऐसा वचन सुनकर मेनका शीघ्रही आकाश को गई ४ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि रूप उदारतादि गुणों से युक्त व सब भूषणों से भूषित हो एक उड़नखटोले पर चढ़ नन्दन वनके समीप ५ वीणा बजाकर गातेहुये पुरुषोंके अच्छे रागके समान गाती हुई उस विशालनयनी चतुर व मनोहर कटाक्ष करनेवाली को उन महात्मा विष्णुशर्म्मा ने देखा ६ व उसका व्यवसाय भी जाना कि यह इन्द्रकी भेजीहुई हमारा विघ्न करनेके लिये यहांपर उपस्थित है ७ परन्तु वे द्विजोत्तमजी उसको छोड़ बड़े वेगसे आगे बढ़े तब उन ज्ञानात्मा से उसने कहा कि तुम कहां जातेहो हे महामतिवाले! ८ तब उस कामचारिणी मेनकासे विष्णुशर्म्मा बोले कि हम अपने पिताके अर्थ बहुत शीघ्रता के साथ इन्द्रलोक को जाते हैं ९ यह सुन मेनका विष्णुशर्म्मा से फिर अतिप्रिय वचन बोली कि मैं काम के बाणोंसे व्याकुलहूं इस से तुम्हारे शरण में आईहूं १० हे द्विज

शार्दूलन! जो इसको धर्म जानतेहो तो मेरी रक्षाकरो हे विप्र! जैसेही मैंने तुमको देखाहै कि मेरा चित्त कामसे व्याकुल होगया ११ व सब मेरे अङ्ग कामसे जलनेलगे इससे प्रसन्न व सुमुखहोओ जबतक मेरेसङ्ग मैथुन न करोगे तब तक मैं कामाग्नि से जलाकरूंगी इसमें कुछभी संदेह नहींहै १२ यह सुन विष्णुशर्म्मा बोले कि हे वरानने! हे शुभे! हमदेवराजका चरित जानते हैं व आपका भी चरित बहुत अच्छी तरह जानते हैं हम ऐसे नहींहैं जैसा तुम चाहतीहो १३ हे शोभने! आप के रूप व तेजमें विश्वामित्रादिक अन्य मुनिलोग मोहित होते हैं हम शिवशर्म्माजी के पुत्रहैं १४ जोकि योगसे सिद्धहैं व तपस्या से भी सिद्धहैं व कामादि दोषोंको उन्होंने पहिलेही जीतलिया है इससे उनसे वे रहितहैं १५ इससे हे विशालनेत्रवाली! और किसीको जाकर भज हम तो इन्द्रलोकको जाते हैं ऐसा मेनकासे कह वे ब्राह्मण श्रेष्ठ अपने उसी वायुवेगसे चलखड़ेहुये १६ तब निष्फलहो मेनका इन्द्रके समीप पहुँची व उन्होंने जाना कि इसका किया वहां कुछ नहीं हुआ इससे इन्द्रने विष्णुशर्म्मा को नानाप्रकार की भयंकर बिभीषिकायें दिखाईं १७ हे द्विजो! जैसे अग्नि से जलनेपर तृणों के ढेर के ढेर एक क्षणमें भस्म होजाते हैं वैसेही इन्द्रकी कीहुई सब बिभीषिकायें नष्ट होगईं १८ पिताके परमभक्त उन ब्राह्मण के तेज से बड़ी २ दारुण व घोर व भयंकर जितनी इन्द्रकी कीहुई बिभीषिकायें थीं सब क्षणमात्रमें भस्म होगईं १९ क्योंकि महातेजस्वी व यशस्वी ब्राह्मणलोग अपने तेजसे क्या २ नहीं नष्ट करडालते इस प्रकार महात्मा इन्द्र के बार २ कियेहुये बहुत से विघ्न उन मेधावी विष्णुशर्म्माजीने अपने तेजसे नष्ट करदिये २० । २१ जब वे सब बड़े २ दारुण विघ्न नष्ट होगये व उन सब दारुण आकृतिवाले दारुण विघ्नोंको एक दूसरेके पीछे इन्द्रके कियेहुये जाना तब २२ महा तेजस्वी द्विजोत्तम विष्णुशर्म्माजीने लालनेत्र करके इन्द्र के ऊपर बड़ा भारी कोपकिया २३ सूतजी बोले कि अपने धर्ममें रत पुरुष का जो कोई विघ्नकरे तो उसको अवश्य दण्ड देना चाहिये क्योंकि उसके दण्डदेने में देनेवाला दोषी नहीं होता द्विजोत्तम विष्णुशर्म्माजी

ने अपने मनमें यह विचार किया कि बस अब हम इन्द्रको इन्द्र लोकसे नीचे गिरादेंगे अन्यथा इन्द्र न मानेंगे व देवताओंके पालने के लिये दूसरा इन्द्र बनावेंगे २४।२५ ऐसा विचारांश करके वे ब्राह्मणदेव इन्द्रके नाशकरनेपर उद्यतहुये तबतक इन्द्रजी वहां आये व नम्रतापूर्वक विष्णुशर्म्मा से बोले २६ कि हे महाप्राज्ञ विप्रजी ! तुम्हारे तपसे व नियमसे व इन्द्रियों के दमन करने से व शौचाचार करने से तुम्हारे समान अन्य कोई नहीं है २७ व तुम्हारी इस पिताकी अपूर्व भक्तिसे सब देवताओं समेत हम जीत लियेगये हे सत्तम ! इसमें हमारे सब अपराध आप क्षमाकरें २८ व जो मनमें हो वह वरमांगें तुम्हारा कल्याणहो चाहे बहुतही दुर्लभ होगा पर आपको अवश्य देंगे तब आयेहुये देवराज से विष्णुशर्म्मा बोले २९ कि हे इन्द्र ! ब्राह्मणोंका तेज बड़ा रौद्र होताहै उसे देवता व दैत्य बड़ेदुःखसे सह सक्तेहैं उसमें भी जो ब्राह्मण अपने पिताका भक्त होताहै उसका तेज तो बहुतही दुस्सह होताहै ३० इससे अब आजसे महात्मा ब्राह्मणों के तेज को कभी न भंगकरना क्योंकि जब उत्तम ब्राह्मण कभी रुष्टहोते हैं तो तेज हरनेवाले को पुत्र पौत्रसमेत नाश करदेते हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है यदि इससमय आप न आये होते तो यह तुम्हारा उत्तम राज्य ३१ । ३२ अपने तपके प्रभाव से किसी अन्य महात्मा को अनुराग से पूर्णचित्त होके हमने देनेकी इच्छा की थी ३३ पर आप यहां आगये व वर देना चाहते हैं तो हे इन्द्र ! हमको थोड़ासा अमृत दीजिये व पितामें अचल भक्ति दीजिये ३४ हे देवराज! यदि संतुष्ट हुयेहो तो ऐसाही वर दीजिये यह सुन इन्द्रजीने कहा कि बहुत अच्छा तुमको अमृत भी देंगे व पितामें अचल भक्ति भी देंगे ३५ ऐसा उन ब्राह्मणोत्तम से कह इन्द्रने अपने हाथसे लेआकर अमृत दिया सो भी ऐसे प्रसन्न हुये कि एक घड़ेका घड़ा उठाकर देदिया ३६ व कहा कि पितामें तुम्हारी सदैव अचल भक्ति होगी ऐसा कह कर इन्द्रजीने उन ब्राह्मणदेव को बिदाकिया ३७ और ब्राह्मण के अत्यन्त दुस्सह तेजको देखकर प्रसन्न हुये व विष्णुशर्म्मा वहांसे आय अपने पिता से बोले कि ३८ व्याधिनाश करनेवाला अमृत

हम इन्द्रसे लाये हे महाभागपिता जी! इससे अब सदाके लिये रोग रहित होजाइये ३९ व इस अमृतको पानकर परमतृप्ति को प्राप्त हूजिये पुत्रका यह पूज्य वचन सुनकर शिवशर्म्माजी ४० बड़े प्रसन्न चित्तहो सब अपने पुत्रोंको बुलाकर उनसे बोले कि तुम सब लोग पिताकी भक्तिमें तत्परहो व हमारे वचनका परिपालन सदा करतेहो ४१ हेपुत्रो! अब जो पृथ्वीतलपर दुर्लभहो वह वर हमसेमाँगो ऐसा पिताका वचन सुन सबोंने सम्मतकिया ४२ व विचार करके सब अपने पितासे बोले कि हम लोगोंकी माता जोकि यमराज के मन्दिर को चलीगईहै हे सुव्रत! वह अब फिर तुम्हारे प्रसाद से जीकर रोग रहित होजावे व जन्म जन्मान्तरमें आप पिता व ये माता हम लोगों की होतीरहैं ४३ । ४४ व हम लोगों की सदा पिता मातामें अचल भक्ति बनीरहै बस और कुछ वर हमलोग नहीं चाहते इतना सुन शिवशर्म्मा बोले कि आजही पुत्रोंके ऊपर करुणा करनेवाली तुम लोगोंकी माता ४५ जीकर अतिहर्षित होकर आवेगी इसमें कुछभी सन्देह नहींहै जब शिवशर्म्मा ऋषिने ऐसा शुभवाक्य कहा ४६ कि वैसेही उन लोगोंकी माता अतिहर्षितहो वहां आकर बोली कि इसी लिये सुन्दर वीर्य्यवाले श्रेष्ठ कुल व वंशके तारनेवाले पुत्रके उत्पन्न होनेकी इच्छा मनुष्य व महाभाग्यवती व पुण्य करने में प्रीति करनेवाली स्त्रियां करती हैं ४७ । ४८ कि हमारे सर्व्वाङ्ग पुण्य अंगों से युक्त व पुण्यकरने का साधक पुत्र उत्पन्नहो क्योंकि जिसके गर्भ में पुण्यात्मा पुत्र आताहै उसका गर्भ पुण्यों से सुखसे बढ़ताहै ४९ व वह पुण्यभागिनी स्त्री विना कष्टहीके आनन्द से पुण्य पुत्रोंको उत्पन्न करती है सो कुलका आचार व कुलहीके आधारका व पिता माता के तारनेवाला ५० उत्तम पुत्र विना बहुत पुण्यों के कैसे कोई स्त्री पासक्ती है हम नहीं जानतीं किन २ पुण्यों से ये महापुण्यात्मा भर्त्ता हमको मिलेहैं ५१ जिनका वीर्य्य धर्म्मयुक्तहै व आप धर्म्मात्मा व धर्म्मवत्सल हैं जिनके वीर्य्यसे महातपस्वी तुम लोगोंको हमने पुत्र पाया ५२ व पुण्य करने में अत्यन्त प्रीति करनेवाले तुम लोग ऐसे प्रभाव से युक्त हुये व हमारे तुम सब पुत्र पिताकी भक्तिमें परायण

हुये ५३ देखो लोकों में बहुत पुण्योंकरके अच्छा पुत्र मिलताहै व हमने तो एक दूसरे से अधिक महायशवाले पांचपुत्र पाये ५४ जो कि सब यज्ञों के करने में निपुण व सब अपने स्वभावही से पुण्यात्मा व सब तप तेज व पराक्रम से युक्त इस प्रकार उनकी माताने बार २ अपने पुत्रोंको बढ़ाया ५५ व वे बड़े भारी हर्षसे युक्त होकर प्रणाम करके अपनी मातासे बोले कि हे माताजी ! बड़े सुन्दर पुण्यों से अच्छी माता व अच्छे पिता मिलते हैं ५६ सो हम लोगोंके बड़े भाग्यों से महापुण्यवती अच्छी माता आप मिली हैं व जिनके गर्भमें प्राप्तहोके हम लोग उत्पन्न हुये व पुण्य करते हुये अच्छीतरह बढ़ाये गये ५७ अब यही चाहते हैं कि जन्म २ में तुम तो माता होओ व ये हमारे पिता हों यह सुन उन लोगोंका पिता बोला कि हे हमारे पुत्रो ! तुम लोग सुनो हम पुण्यदायक सुन्दर वर देते हैं ५८ कि हमारे सन्तुष्ट होनेसे अक्षयभोग बहुत दिनोंतक भोगो यह सुन पुत्र बोले कि हे तात ! यदि आप प्रसन्नहैं व वर देना चाहतेहैं ५९ तो हम लोगोंको तुम तापरहित श्रीविष्णु के लोक गोलोक को भेजो यह सुन उन लोगोंका पिता फिर बोला कि हे पुत्रो ! निश्छल पिताकी भक्तिसे व तप करने से व हमारे प्रसाद से पापरहित तुम लोग श्रीविष्णुजी के लोकको शीघ्रही जाओ जब शिवशर्म्मा ऋषिने ऐसे सुवचन अपने पुत्रों से कहे ६० । ६१ तो शंख चक्र गदा हाथोंमें धारणकिये व गरुड़पर आरूढ़ श्रीविष्णुभगवान् आप वहां आये व पुत्रों सहित शिवशर्म्मा ऋषिसे बार २ बोले ६२ कि हे ब्राह्मण ! पुत्रों समेत तुमने भक्तिसे हमको जीतलिया इससे पुण्यकारी इन चारों पुत्रों समेत व पतिकी इच्छा कियेहुई इस पुण्यरूपिणी अपनी भार्य्या के साथ तुम आओ हमारे संग चलो तब शिवशर्म्मा ऋषि फिर बोले कि ये हमारे चारोंपुत्र उत्तम वैष्णवलोकको तबतक जायँ ६३ । ६४ व हम अभी कुछ कालतक इस पृथ्वीपर अपनी इस स्त्री के साथ व इस अच्छे अपने अन्तवाले पांचवें पुत्र सोमशर्म्मा के संग रहेंगे ६५ जब सत्यभाषण करनेवाले उन ऋषिने ऐसा शुभ वाक्य कहा तो ॥

चौ० देवदेवहरिशिवशर्म्माके । चारिसुतनलोंशुभधर्म्माके ॥

बोलेचलहु आज गतशोका । प्रलयरहितमोक्षदममलोका ६६
इमिसुनि सत्यतेज द्विजचारी । विष्णुरूपधरि बहुत सुखारी ॥
इन्द्रनीलमणि श्याम शरीरा । गदाचक्रन्दरधर वर बीरा ६७
सर्व्व त्रिभूषण भूषित अंगा । विष्णुरूप अति तेज प्रसंगा ॥
कंकणहार रत्नकी माला । तासों शोभितरूप विशाला ६८
सूर्य्यप्रकाशभासमम भासित । तेजज्वाल आवृत अतिकाशित ॥
विष्णु काय महँ धायसु पैठे । शिवशर्म्मा रह देखत बैठे ६९
जिमि दीपकमहँ दीपक दूसर । जाय मिले यकहोत सुसूथर ॥
तिमिभेलीन सकल हरिमाहीं । करि पितुभक्ति विष्णुरताहीं ७०
वैष्णव धामगये इमि चारी । उत्तम द्विज पितृभक्त करारी ॥
सोमशर्म्मकर विशदप्रभावा । आगेकहब न अबहिं बतावा ७१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेशिवशर्मोपाख्याने तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

दो० सोमशर्म्म कर विशद यश पितुसेवा सों जौन ॥
चौथे महँ कह सूतजू त्यहिसम करिहै कौन १

जब शिवशर्म्माजी के चार पुत्र श्रीहरिके रूपमें मिलके वैकुण्ठ को चलेगये तो वे अपने पांचयें पुत्र सोमशर्म्मा को बुलाकर उससे बोले १ कि हे महाप्राज्ञ पुत्र! तुम यह अमृत का कलश रखना क्योंकि तुम भी तो हमारे भक्तहो २ हम इस अपनी भर्य्यासमेत तीर्थयात्रा करनेको जायँगे सोमशर्म्माने कहा एवमस्तु हम इस अमृत के घड़ेकी रक्षा करेंगे ३ बस वे बुद्धिमान् शिवशर्म्माजी महात्मा पुत्रके हाथमें अमृतका कुम्भदे चलेगये व दशवर्ष तक निरन्तर तप करतेरहे ४ व यहां धर्म्मात्मा सोमशर्म्मा निरालस होके रात्रि दिन अमृतघटकी रक्षा करतारहा दशवर्ष के पीछे महायशस्वी शिवशर्म्माजी फिर आये ५ परन्तु वे महाप्राज्ञ ऐसी माया करके पुत्रके समीप आये कि स्त्री समेत कुष्ठरोग से अतीव ग्रसित होके दिखाई दिये ६ यहांतक कि दोनों केवल मांसके पिण्डही रहगयेथे कर चर-

णादि बनाय गलकर फूटगये थे ऐसे उस सोमशर्म्मा के माता पिता होगयेथे ७ जब इस रूपसे अतिदुःखित आयेहुये महायशस्वी सोमशर्म्माजीने अपने परमगुरु माता पिता को देखा तो परम कृपायुक्त होकर ८ बड़ी भक्तिसे शिरझुकाकर दोनों जनोंके चरणोंपर आगिरे व पितासे बोले कि तपसे आपके तुल्य हम और किसीको नहीं देखते ९ व सुन्दर पुण्यवाले गुणभावों से भी तुम्हारे तुल्य और किसी को नहीं देखते परन्तु नहीं जानते यह आपमें क्या होगया सब देवगण सदैव तुम्हारे दासोंके तुल्यहैं १० जैसेही आपकी आज्ञा पाते हैं वैसेही आपके तेजसे खिंचेहुये चलेआतेहैं पर नहीं जानते किस पापसे तुम्हारे अंगमें यह रोग होगया ११ हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! इसरोग के होनेका कारण हमसे कहो व ये हमारी माता अति पुण्यवती पतिव्रता हैं १२ जोकि पतिके प्रभावसे तीनों लोकोंको तरसक्ती हैं इनको दुःख कैसे मिला क्या इनमें तपका प्रभाव नहींहै १३ जोकि राग व अप्रीति छोड़के कर्म्मणा मनसा वाचा तीनों प्रकारके कर्म्मों से अपने पतिकी सेवा करती हैं वे ऐसा दुःख कैसेपावें जो गुरुवत्सला पतिको सदा देवताही के समान पूजती हैं वे कैसे दुःखपावें दुःखों में भी कुष्ठरोगका महादुःख यह सुन शिवशर्म्माजी बोले कि हे महाभाग्यवाले! तुम शोच न करो कर्म्मका फल सब को भोगना पड़ता है १४ । १५ व मनुष्यका शरीर सदा पाप पुण्य दोनों से युक्त होताहै इसमें जो तुम पुण्य चाहो तो हम दोनोंकी शुश्रूषाकरो अन्य कुछ इसमें विचार न करो विचार करने से अच्छा नहीं है जब शिवशर्मा मुनि ने ऐसा शुभ वचन कहा तो महायशस्वी सोमशर्म्मा बोले १६ । १७ कि पुण्ययुक्त तुम दोनों जनोंकी शुश्रूषा हम अवश्य करेंगे जो हमने माता पिता की पूजा न की तो फिर मुझ पापी दुष्ट कृपण को और कौनसा पुण्यकर्म्म करना चाहिये ऐसा कहकर व उन दोनों के दुःख से दुःखितहो सोमशर्म्मा १८ । १९ अपने कोढ़ी माता पिता का थूँक खँखार व मल मूत्र अपने हाथों से उठानेलगे व अपनेही हाथों से दोनों जनों के पैरधोवें व रात्रिमें उनके चरण दाबें व और भी अंगमींज दाब दियाकरें २० व भक्तिसे उन दोनों को स्नान

कराते उत्तम २ पदार्थ भोजन के लिये देते व महायशस्वी सोम-शर्म्मा अपने उन परमगुरु माता पिताको २१ धर्म्म के लिये अपने कन्धे पर चढ़ाकर तीर्थादिकों में स्नान कराने को लेजाया करें व दोनों को अपने हाथ से अच्छेप्रकार स्नान कराकर चन्दनादि सुगन्धित वस्तु उनके अंगोंमें लगावें स्नानभी वेदके मन्त्रोंसे जैसा लिखा है वैसाही करावें क्योंकि वे तो सब वेद शास्त्र अच्छी तरह पढ़ेथे व दोनोंजनों से नित्य देवताओं ऋषियों व पितरोंका तर्प्पण व पूजन करावें व होम अपने हाथों से अग्निमें करें व उत्तम भोजन भी अपने ही हाथों से बनावें २२ । २४ फिर बड़ी प्रीति के साथ अपनेही हाथसे दोनों जनों को भोजन करावें फिर सुन्दर शय्या व आसन पर उठाकर उनदोनों को बैठादें शयनके समय लपटादें २५ वस्त्र पुष्पादिक सब उन दोनोंको नित्य अपने हाथसे दें बहुत सुगन्धसे युक्त ताम्बूल दोनोंको खिलावें २६ तब महाभाग सोमशर्म्मा उनकी पूजा करें मूल दुग्ध दधि आदि सुन्दर भक्षण करने के पदार्थ उन दोनों को यशस्वी सोमशर्म्मा नित्य देकर व जो २ उनको वाञ्छित हो बराबर दिया किया करें इसरीति से नित्य पूजाकरके सोमशर्म्मा अपने माता पिताको प्रसन्न कियाकरे व उसके पिताजी सोमशर्म्मा को बुलाकर निष्ठुर हो प्रतिदिन उसकी निन्दा करें २७ । २९ व निष्ठुर वचन कह २ कर बकते झकते रहें जब कोई कार्य्य व पुण्य कर्म्म पुत्र करे तो पिता निन्दाही करते रहें व कहें ३० कि हे कुल नाशनेवाले ! तूने हमारा प्रिय कुछ नहीं किया इसप्रकार नानाप्रकारके दुःखदायक निष्ठुर वचन कहकर ३१ दण्ड लाठी आदि से आतुर हो शिवशर्म्मा अपने पुत्रको माराकरें ऐसा करनेपर भी वह धर्म्मात्मा सोमशर्म्मा कभी रोष न करे बरन सन्तुष्ट ही बनारहे ३२ सो मनसे वचन से व कर्म्म से सदा सन्तुष्ट ही रहे व सदा पिताकी पूजाही करता रहै ३३ व उसी प्रकार प्रतिदिन माताकी भी पूजा सोमशर्म्मा करता रहै जिसको जानकर शिवशर्म्मा अपना चरित देखे ३४ कि हमारे लिये विष्णुशर्म्मा अमृत लाया था व सदा पुण्ययुक्त हो वह धर्म्मात्मा पितृभक्तिमें तत्पर रहा इस तरह सेवाक-

रतेहुये सौदिन बीतगये तब पुत्रकी भक्तिदेख शिवशर्म्मा भी अपने मनमें चिन्तना करके कहने लगे ३५ । ३६ कि हमने प्रथम अपने पुत्र यज्ञशर्म्मा से कहा कि हे पुत्र ! अपनी माता के शरीर के ये खण्ड जहां तहां बड़ीदूर फेंकआओ ३७ सो हमारा वचन उसने किया माता के ऊपर कृपा नहीं की फिर उससे भी अधिक दुःख वेद शर्म्माने किया जिसने उस माया की स्त्रीके आगे हमारे लिये अपना शिरही समर्पण करदिया उसने तत्कालही बड़ाभारी साहस किया तीसरे ने अपने तपके प्रभाव से हमारे कहने से उसे जिलाय ही दिया चौथे ने जानों अपने तपके प्रभाव से इन्द्रपुरी से अमृत ही ले आनदिया ३८ । ४० परन्तु यह सोमशर्म्मा सबसे अधिक ठहरा क्योंकि इसकी परीक्षा नानाप्रकार के दुःख दे हमने ही करली ४१ ऐसी भक्ति इसने की कि नानाप्रकारके दुःखोंसे जानो यह पुत्र यहीं मृतकही होजायगा व हम ने माया से अपने अंगों में कुष्ठरोग भी दिखाया ४२ तो भी खँखार मूत्र मलकी घिनघिनी कुछ भी इसने न की व यह महा यशस्वी नित्य विष्ठा अपने हाथों से ही उठाकर अलग बहाता है ४३ सब अङ्ग अपने ही हाथों से मींजता रहताहै व शौच भी अपने ही हाथों से कराता है व हमारा दुस्सह महादारुण वचन नित्य सहता है ४४ नानाप्रकार की निन्दा व ताड़न सहता हुआ यह पुत्र सर्व्वत्र अपने कन्धोंपर चढ़ाकर हमको पहुँचाता है इस प्रकार के दुःखके सहने के समाचार इस महाबुद्धिमान् मेरे पुत्रकेहैं ४५ कहांतक कहें नाना प्रकारके क्लेशों से दुःखों के समुद्र में यह पुत्र पतित है परन्तु अब श्रीविष्णु भगवान् के प्रभाव से इस के सब दुःख हम दूर करेंगे ४६ ऐसा बहुत समयतक अपने मनमें चिन्तना कर महामति शिवशर्म्माजी ने फिर यह माया की कि कहीं उस घड़ेसे अमृतही उड़ा दिया ४७ व पीछे सोमशर्म्मा को बुलाकर उससे यह वचन कहा कि तुम्हारे हाथपर व्याधिनाशक अमृत हमने दिया था ४८ वह हमको शीघ्रही दो कि हम उस को पीवें व विष्णुशर्म्मा के प्रसाद से नीरोग हों ४९ जब शिवशर्म्मा आपने ऐसा वचन कहा तो सोमशर्म्मा बड़ी शीघ्रतासे उठे व उस

अमृतपात्र के पासगये ५० देखा तो वह घड़ा अमृतसे खाली था बिन्दुमात्र भी उसमें अमृत न था कहनेलगे कि किस पापीका यह कर्म्म है किस ने यह हमारा विप्रिय किया ५१ इसप्रकार चिन्ता में तत्पर हो सोमशर्म्मा अतिदुःखित हुये व अपने मनमें कहने लगे कि जो हमजाकर पिताजीके आगे यह वृत्तांत कहेंगे ५२ तो व्याधि से पीड़ित हमारे पिताजी बड़ा कोप करेंगे इसप्रकार बड़ी देरतक चिन्ताकर महामति सोमशर्म्माजी यह अपने मन में कहनेलगे ५३ कि यदि सत्य २ निश्छल होके हमने अपने गुरु माता पिताकी सेवा की हो व पूर्व्व समयमें जो हमने शुद्धचित्त होके तपकियाहो ५४ व इन्द्रियों के दमन करने व शौचादि नियमों से सत्य २ धर्म्म हीका पालन कियाहो तो यह घड़ा अभी अमृत से पूर्णहोजाय इस में कुछभी संशय न हो ५५ उन महाभागने जैसेही ऐसी चिन्तना करके घड़ेको देखा कि वैसेही फिर वह घट अमृत से पूर्ण होगया ५६ उसे देख महायशस्वी सोमशर्म्माजी अतिहर्षितहुये ॥

चौ० गुरुपहँजाय कीन्ह परनामा । लै घट करमहँ युतसबसामा ॥
कह लीजे यहघट पीयूषा । पूर्ण भलीविधि तनिक न शूषा ॥
करियहि पान रोग बिनहोऊ । महाभाग तुम सम नहिं कोऊ ॥
सत्यधर्म्मयुत यह त्यहिवचना । सुनिप्रसन्नभे मुनि लखिरचना ॥
शिवशर्म्मासुत माधुरबानी । सुनिनिजमनअतिशयसुखमानी ॥
हर्षित ह्वै बोले मृदुवचना । लखतप्रशंसततनयसुरचना५७।५१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादे
शिवशर्मोपाख्यानेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवाँ अध्याय ॥

दो० कह पँचयें अध्याय महँ सोमशर्म्म तप फेरि ॥
इन्द्रजन्म प्रस्ताव सब अदिति तपस्या ढेरि १

शिवशर्म्माजी अपने पुत्रसे बोले कि हे पुत्र! आज हम तुम्हारे तप दम शौच गुरुशुश्रूषा व भक्तिसे सन्तुष्टहुये १ अब हमसे उत्तम विष्णुमन्त्र ग्रहणकरो व सुख पाओ यह पुत्र से कह ब्राह्मण

देवताने अपना प्रथमवाला शरीर दिखाया २ जैसे प्रथम थे वैसे ही अपने माता पिताको पुत्रने देखा दोनों दीप्तिमान् महातेजस्वी सूर्य्य के बिम्बके समान प्रकाशित देखपड़े ३ तब बड़ीभक्तिसे पुत्र ने दोनोंके चरणोंमें प्रणामकिया व बड़े हर्षसे उनके पिताने विष्णु-सूक्त ग्रहणकराया ४ व श्रीविष्णुजी के प्रसाद से अपनी भार्य्या समेत धर्म्मात्मा शिवशर्म्माजी तो अपने पुण्य व योगाभ्याससे विष्णु को प्राप्त होगये ५ श्रीविष्णु भगवान्के तेज में लीन होगये जोकि मुनियोंको भी दुर्ल्लभहै जो न यज्ञोंसे मिलता है न तपोंसे न पुण्यों से उस अक्षय तेजको शिवशर्म्माजी गये ६ क्योंकि जैसे विष्णुके ध्यानसे प्राणी उनके लोकको जाताहै वैसे दान तीर्थयात्रा व स्तोत्रादिकों के पाठ करने से दुर्ल्लभ परमपदको नहीं जाता ७ जिस प्रकार वह ब्राह्मण विष्णुके ध्यानसे वैष्णवी शरीरमें प्रवेश करगया वैसा तो यज्ञ पुण्य योगाभ्यास व दान करनेसे कोई नहीं प्राप्तहोते ८ सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि पिता माताके वैकुण्ठवासी होजाने के पीछे मिट्टीका ढीला पत्थर व सुवर्णको समान समझते हुये ९ आहारको जीत उनधर्म्मात्मा सोमशर्म्माने निद्राको भी जीतलिया व नानाप्रकारके विषयोंको छोड़ एकान्तकी सेवा करनेलगे १० केवल योगासनपर आरूढ़हो भोजनरहित होके सब पदार्थ उन्होंने छोड़ दिये इस प्रकार तप करते २ सोमशर्म्मा के मरणका समय आया उसी समयमें वहां एक दानवों की सेना आई जब उस ऋषियों के मान बढ़ानेवाले शालग्राम नाम महाक्षेत्र में सोमशर्म्मा मरनेपर उद्यतहुये कि वैसेही वे दैत्य आपहुँचे वे कोई २ दानव तो कहतेथे मारो २ कोई २ दैत्य कहते थे निकालो निकालो ११ । १२ इस प्रकारका महाशब्द मरण समय में सोमशर्म्माके कानोंमें पड़ा तब विप्रों में श्रेष्ठ सोमशर्म्माजीका १४ ज्ञान ध्यान जातारहा व उनके चित्तमें दैत्योंका भय पैठगया इससे उनके प्राण दैत्यरूप होगये व उन महात्मा के प्राण तुरन्त निकलगये बस वे दैत्यभाव को प्राप्तहो मृत्युके वशीभूत हुये १५ । १६ इसीसे वे आकर हिरण्यकशिपु नाम दैत्य के गृहमें हिरण्यकशिपुके पुत्र उत्पन्नहुये व देवा-

सुर नाम महायुद्ध में श्रीविष्णु भगवान् के हाथसे मारेगये १७ जब सोमशर्म्मा दैत्यहुये तो उनका प्रह्लाद नाम हुआ सो जब महात्मा प्रह्लाद विष्णुजी से युद्धकरनेलगे तो उन्होंने विश्वरूपसमन्वित भगवान् वासुदेवजीको देखा १८ तब पूर्व योगाभ्याससे उन महात्माको ज्ञान होआया जिससे कि पूर्व्वजन्मके शिवशर्म्मा नाम पिताका सब चरित स्मरण होआया १९ व विचारा कि हम वेही सोमशर्म्मा हैं अब दानवी शरीरको प्राप्तहुये हैं अब इस शरीरको छोड़ कब केवल पुण्यधामको प्राप्तहोंगे २० सोभी मोक्षदायक ज्ञानोंसेही यों नहीं जब समरमें मरनेलगे तो महात्मा प्रह्लादजीने ऐसी चिन्ताकी यह सर्व्व सन्देह नाशन वृत्तान्त तुमसे हमने वर्णन किया अब और क्या श्रवणकिया चाहते हो सो पूँछो २१।२२ सूतजी फिर शौनकादिकोंसे बोले कि जब इसप्रकार प्रह्लादको देवदेव वासुदेवजी ने मारा तब पुत्रनाश होनेवाली कमला रोतीभई २३ प्रह्लाद की माता हिरण्यकशिपु की भार्य्या प्रह्लादके महाशोकों से दिन रात्रि शोच किया करतीथी २४ बड़ी पतिव्रता व भाग्यवतीथी कमला उसका नामथा सो बड़ी दुःखितहो दिन रात्रि जब रोदनही कियाकरै तो नारदजी आकर उससे बोले कि २५ हे महाभाग्यवाली व पुण्यवाली! तू पुत्रके अर्थ शोच न कर जिस तेरे पुत्र को वासुदेवजी ने मारडाला है वह फिर तेरे यहां जन्मलेगा २६ उसीतरह का रूप व लक्षण उसका होगा व तेरेही उदर से उत्पन्न होगा व फिर भी उस महाबुद्धिमान् लड़के का प्रह्लादही नामहोगा २७ पर उसका आसुरभाव कुछभी न होगा पूरे सब वैष्णवीभाव उस में होंगे व वह इन्द्रत्व को भोगकरेगा तब सब देवगण उसके नमस्कार करेंगे २८ हे महाभाग्यवाली! उस पुत्रसे सदा सुखिनीहो परन्तु हेदेवि! यह वार्त्ता तू किसी से न कहना २९ इसको अपने ज्ञानभावसे सदा गुप्तही रखना ऐसा कह मुनियों में श्रेष्ठ श्रीनारदमुनि चलेगये ३० फिर उसी कमला के उदरमें उन्हीं प्रह्लादका उत्तम जन्म हुआ व उन महात्माका फिर भी प्रह्लादही नामहुआ ३१ वे बाल्यावस्थाही से कृष्णचन्द्रही का स्मरण कियाकरें इसी से नरसिंहजी के प्रसाद से

वे देवताओं के राजा इन्द्रहोगये ३२ इससे उत्तम इन्द्रपद भोगते हुये वेभी देवरूपही होगये व महाज्ञानी होकर फिर वे महात्मा मोक्ष को प्राप्तहोंगे ३३ हे महाभागो! सृष्टि असंख्यप्रकारकीहै इससे ज्ञानवान् महात्माओं को कभी मोह न करना चाहिये ३४ हे द्विजोत्तमो! यह तुम्हारे प्रश्नका उत्तर हमने दिया हे महाभागो! अब और कुछ पूँछो तुम्हारे सन्देहको हम काटेंगे ३५ देवताओं का विजय व दानवोंका महानाश श्रीविष्णु भगवान् करके तीनोंलोकों को स्थापित करते हैं ३६ इतना सुन ऋषिलोग फिर सूतजी से बोले कि प्रह्लाद देवताओं के इन्द्र जैसे हुये वह कथा हमलोगों से विस्तारसहित आप कहें ३७ सूतजी बोले कि हे ब्राह्मणो! जिसप्रकार से उन अत्यन्त सज्जन पुण्यात्मा ने इन्द्रता पाई वह हम विस्तारसहित वर्णन करेंगे ३८ जब महात्मा श्रीगोविन्दजीने उन सब महादैत्योंको उस महादेवासुर संग्राम में मारडाला तो सब पापी बनाय नष्ट होगये ३९ तब सब देवता गन्धर्व्व नाग विद्याधरादि सब देवयोनि हाथजोड़ श्रीमाधवजी से बोले कि ४० हे भगवन्! हे देवदेवेश हृषीकेश! तुम्हारे नमस्कार है जो कुछ हमलोग तुमसे जनाते हैं उसे विचार कीजिये ४१ हे केशव! अब हमलोगोंका शासन करनेवाला ऐसा कोई इन्द्र बनाइये जो पुण्यात्माहो व हमलोगोंकी रक्षा अच्छे प्रकारकरे ४२ ऐसा पुण्यात्मा राजा इन्द्रहो कि तीनोंलोकोंकी प्रजा जिसका आश्रयण करके अत्यन्त सुखीहो यह सुन श्रीभगवान् वासुदेवजी बोले कि हे महाभाग्यवालो! हमारे लोकमें आजकल वैष्णव तेजसे युक्त एक ब्राह्मण बहुत दिनों से निवास करता है व उस महात्माका काल हमारे लोक में बसने का पूर्ण होचुका है ४३ । ४४ हे देवसत्तमो! वह विप्र हमारा बड़ा भक्त है सो वैष्णव तेजसे वह तुमलोगोंका पालक होगा ४५ क्योंकि बड़ा धर्म्मात्मा व धर्म्मों का अनुरंजन करनेवाला होगा वह ब्राह्मणसत्तम तुमलोगों का पालक व धारकहोगा ४६ व तुमलोगों की सदा रक्षा बड़े धर्म्म के साथ कियाकरेगा वह अदितिका पुत्रहोगा सुव्रत उसका नामहोगा ४७ महाबली व महावीर्य्यवान् होगा बस वही इन्द्रहोगा सूतजी शौ-

नकादिकों से बोले कि इसप्रकार सब देवताओं को वरदे ४८ श्री विष्णु भगवान् विजय करनेवाले सब देवताओंको संगले पिता कश्यप व माता अदितिके देखने को गये ४९ व वहां जाकर उन महात्मा देवताओंने सुखपूर्वक आसनपर बैठेहुये दोनोंके प्रणामकिया व सबके सब बड़े आनन्द से युक्त हाथ जोड़के बोले ५० कि तुम दोनोंजनों के प्रसादसे हमलोग देवत्व को प्राप्त हुये तब बड़े आनन्दयुक्त कश्यपजी देवताओं से बोले ५१ कि तुमलोग सदा सत्य धर्म से वर्तमान रहना इससे हम दोनोंके प्रसाद से व तपके प्रभाव से ५२ अब अक्षयपद देवत्व को प्राप्तहोओगे यह व और भी वर तुमलोगों को देते हैं कि तुमलोग बहुत प्रीति से युक्त ५३ अमर व निर्जर होओगे अर्थात् न कभी मरोगे न वृद्ध होओगे व तुमलोगों के सब काम अर्थ सिद्धहोंगे व सब सिद्धियां तुम्हारे आगे खड़ी रहेंगी ५४ सो तुम्हीं को यह वर नहीं देते सब नाग गन्धर्व भी हमारे प्रसादसे बड़ेदेव होंगे जब देवताओं से कश्यपजीने ऐसा कहा तब श्रीविष्णुभगवान् अदितिजी से बोले कि हे यशस्विनि देवताओं की माता अदितिजी ! तुम्हारा कल्याणहो हमसे वरमांगो ५५ जो तुमको मनसे वाञ्छित होगा वह हम सब देंगे यह निश्चय करके कहते हैं यह सुन अदितिजी बोलीं कि हे माधव ! तुम्हारे प्रसादसे हम पूर्व्वकाल में पुत्रवती हुईथीं ५६ व हमारे सबपुत्र अमर व निर्ज्जर हुये और सबके सब पुण्य करने में वत्सल हुये हे मधुसूदन ! सुनिये ये पुत्र हमने पायेहैं ५७ और हे गोविन्द ! आप सदैव सबकाम समृद्धिके देनेवाले हमारे गर्भमें होकर हमारे पुत्रहों ५८ कि जिसमें हे केशव ! आपको पुत्रपाय हम नित्य आनन्दितरहें हे नाथ ! इस प्रकारका महोदययुक्त हमारा मनोरथ आप पूर्णकरें ५९ यह सुन श्रीभगवान्जी बोले कि देवकार्य्यके लिये मनुष्य देहमें जाना योग्य होगा तब हम तुम्हारे गर्भमें निश्चय वासकरेंगे ६० हे देवि ! बारहईं चौयुगी के त्रेता में पृथ्वी का भार हरनेके लिये जमदग्नि जीके पुत्रहो सब ब्राह्मणों में उत्तम होकर प्रताप व तेजसे युक्तहो सब दुष्ट क्षत्रियों के मारनेके लिये रामनाम से प्रसिद्धहो सब शस्त्र

धारियोंमें श्रेष्ठ तुम्हारे पुत्र हम होंगे ६१ । ६२ फिर एक कल्प में सत्ताइसईं चौयुगी के त्रेतायुग की सन्ध्या में श्रीरामचन्द्र के नामसे प्रसिद्ध होकर तुम पतिव्रता के हम पुत्र होंगे ६३ इसके पीछे फिर भी पुण्यबुद्धि तुम्हारे हम पुत्रहोंगे उसको सुनो बताते हैं अट्ठाइसईं चौयुगी के द्वापरके अन्त में हम तुम्हारे पुत्र होंगे उसमें सब दैत्यों को मारेंगे व पृथ्वीका भारउतारेंगे क्षत्रियवसुदेवके यहां उत्पन्नहोनेसे वासुदेवके नामसे प्रसिद्ध तुम्हारेपुत्रहोंगे इसमें सन्देहनहींहै ६४।६५ हे कल्याणि! हे सब देनेवाली ! हे देवि ! इस समय अब हमारा धर्म्म युक्त यह वचनकरो कि सर्व्व लक्षणसम्पन्न सत्यधर्म्मयुक्त सर्व्वज्ञ एक सुन्दरपुत्र उत्पन्नकरो उसको हम इन्द्रत्व देंगे इससे वह इन्द्रहोगा ६६।६७ ऐसा सुनकर कि देवदेव श्रीविष्णुजीके प्रसादसे हमारा पुत्र इन्द्र होगा अदितिजी अत्यन्त हर्षित हुईं ६८ व श्रीहरि से बोलीं कि हे महाभाग ! बहुत अच्छा ऐसाही हो हम तुम्हारा वचनकरेंगी पुत्र उत्पन्न करेंगी इसके पीछे सब देवगण अपने २ स्थानोंको चलेगये ६९ व श्रीहरि भी उन्हीं के संग चलेगये देवगण इस बात से अत्यन्त प्रसन्नहुये व सब कहीं से निर्भय होगये सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि जब मनस्विनी अदितिजीने ऋतुस्नान किया तो वे अपने पति कश्यपजी से बोलीं ७० कि हे भगवन् ! तुम हम को इन्द्रपद भोगनेवाला पुत्र अबकी दो इस बात को सुनकर एक क्षणभर चिन्तनाकर कश्यपजी अतिमनस्विनी अदितिजी से बोले ७१ कि हे महाभागे ! ऐसाही हो तुम्हारे पुत्रहोगा जोकि तीनोंलोकोंका कर्ता व यज्ञोंके भोगनेवाला होगा ७२ ऐसा कह व अदिति के शिरके ऊपर अपना हाथ रखकर द्विजों में श्रेष्ठतम तेजस्वी कश्यपजी सत्यधर्म्मयुक्त होकर जाय तप करनेलगे ७३ तब जो महा तेजस्वी सुव्रत नाम ब्राह्मणोत्तम श्रीविष्णुलोक में सदा निवास करताथा उसका पुण्य विष्णुलोक से क्षय होगयाथा ७४ इससे कर्म्म के वश से उस सुव्रत द्विजोत्तमका वहांसे पातहुआ व वही महातपस्वी ब्राह्मण आकर अदितिके पुण्यगर्भमें आया ७५ कि जिससे सत्य पुण्यके कर्म्म से इन्द्रत्व का भोगकरे तब पुण्यों से व तपके प्रभाव

से अदितिजी ने गर्भ को धारणकिया ७६ व निरालस हो वन में जाकर वे तप करनेलगीं तप करते करते उनको देवताओं के सौवर्ष बीतगये ७७ उसमें ऐसा तीव्र तप अदितिने किया जो देवता और असुरों को भी बड़े दुःखसे करने के योग्य था उन के उस तेजसे व तपके प्रभावसे बड़ी प्रभा से युक्त ७८ व सूर्य्यके तेजके समान प्रकाशित मानों दूसरे भास्करही के तुल्य तेजसे वे अदितिजी ध्यान करतीहुई अतिदीप्तिसे शोभित हुईं ७९ व तप और तेजके कारण रूप में औरभी अधिक होगईं बस वे तपध्यान में युक्त हो केवल वायु पानकरके रहती थीं ८० इस कारण दक्षकी कन्या देवी अदितिजी अधिक शोभितहुईं उस तप करने के समय में सब महाभाग्यवाले सिद्धऋषि महापराक्रमी सब देवगण ८१ उन महा भाग्यवती की रक्षाकिया करते थे व सब स्तुतिभी करते थे जब तप करते २ पूर्ण दिव्य सौवर्ष बीतगये तो श्रीविष्णुभगवान् वहां आये ८२ व तप करतीहुई महाभाग्यवती उन अदितिजी से बोले कि हे देवि ! गर्भ अब बनाय अच्छे प्रकार पूर्णहोगया व प्रसूतिका समय आगया है ८३ व तुम्हारेही तप से और तेजसे पुष्टहुआ व बढ़ाभी है इससे हे यशस्विनि ! अब आजही इस गर्भको छोड़ो ८४ ऐसा कह देवेश श्रीविष्णुभगवान् अपने स्थानको चलेगये अदितिजीने जब महोदयवाला सुन्दर काल आया तो दूसरे सूर्य्यही के समान तेजस्वी महादीप्तिमान् पुत्रको उत्पन्नकिया उस पुत्रके सुन्दर तो भुज थे व सब अंग मनोहर सब शुभ लक्षणों से युक्त ८५।८६ चारभुजा बड़ाभारी शरीर था इसीसे वह तीनोंलोकों का नाथ व देवताओंका ईश्वरहुआ तेजकी ज्वालासे घिराथा चक्र पद्म हाथोंमें लियेथा ८७ मुख उसका चन्द्रबिम्बका अनुकरण करताथा व वह महाप्राज्ञ वैष्णव तेज से प्रकाशित होताथा ८८ अन्यभी सब दिव्य लक्षण व भावों से युक्त था सब लक्षणों से सम्पूर्ण चन्द्रवदन कमलसम नयनथा ८९ जब ऐसा पुत्र अदितिजी ने उत्पन्न किया तब वहां सब देवतालोग व वेदवेदाङ्गपारगामी ऋषिलोग आये गन्धर्व नाग सिद्ध विद्याधर ९० व सात देवर्षिलोग व बड़े २ तेजस्वी पूर्व्व के

आचार्य्य बृहस्पत्यादि सब आये औरभी पुण्य मंगल देनेवाले पुण्य रूप मुनिलोग आये ९१ सबके सब जो वहां आये अत्यन्त हर्ष से सबों के मन भरेहुये थे भाग्यवान् महापराक्रमी उस पुत्र के उत्पन्न होने पर ९२ सब देवगण व सब पर्व्वतलोगभी देवरूप धारण करके वहां आये व सब तपस्वीलोग व क्षीरादि सातोसमुद्र देवरूप धारण किये व सब विमल जलवाली नदियां भी दिव्यमूर्त्तियों से आईं ९३ व अन्य भी जो चर व अचर जो कोई थे सब सुन्दर मूर्त्ति धारणकिये वहां आये व सबोंने आकर वहां बड़ाभारी मंगल महोत्सव किया ९४ अप्सरादि सबस्त्रियां नाचनेलगीं व गन्धर्व्वलोग ललित गानेलगे व वेदपारगामी ब्राह्मणदेव वेदमंत्र पढ़ २ कर ९५ कश्यपजी के उन महात्मापुत्रकी स्तुति करनेलगे ब्रह्मा विष्णु रुद्र व साङ्गोपाङ्ग सब वेद उन महात्मा महापराक्रमी के उत्पन्न होने पर आये व हे सत्तम ! तीनोंलोकों में जितने पुण्यरूप प्राणी थे ९६।९७ उन महापराक्रमी के उत्पन्न होनेपर सब वहां आये व सबों ने पुण्यगीतों से तथा महोत्सवों से अतिमङ्गल किया ९८ व मारे हर्षके आनन्दित सबों ने उनकी पूजाकी ब्रह्माजी श्रीविष्णुजी व महादेवजी कश्यप व बृहस्पतिजी ९९ इनलोगोंने उन महाप्रतापी पुत्र के नामकर्म्म किये कहा कि वसुदेने के कारण एक तुम्हारा वसुदत्तनामहोगा व दूसरा वसुदनाम होगा १०० तीसरा आखण्डल नाम फिर चौथा मरुत्वान्नाम पांचवां मघवान् व मघवा छठां विडौजाः सातवां पाकशासन १०१ आठवां शक्र व नववां इन्द्रनाम होगा हे अदितिजी ! बस ये तुम्हारे पुत्रके सब नाम होंगे सब येनाम इन्हीं महात्मा के हैं १०२ तब हर्षित होके सब देवताओंने उस पुत्र को स्नानकरा फिर अन्य संस्कार कराया १०३ विश्वकर्म्मा को बुलाकर उनसे उस महात्मा पुत्रको नाना प्रकारके दिव्यभूषण दिलाये १०४ इसप्रकार जब महात्मा देवराज उत्पन्नहुये तो महापराक्रमी सब देवगण इसरीति से अतिहर्षितहुये १०५ व जब पुण्य तिथि शुभमुहूर्त्त व लग्नआया तब माङ्गलिक पदार्त्थों से स्नान कराय देवताओंने इन्द्रजीको इन्द्रपदवीपर स्थापित किया १०६ ॥

चौ० इमि श्रीहरिप्रसादसों नीके। इन्द्र इन्द्रपद लह्यहु सुठीके॥
तब वसुदत्तकीन्ह तपजाई। अतिविचित्र जोसबसुखदाई १०७
वज्रपाश अंकुशकर लीन्हें। उग्रतेज युत वरमति कीन्हें॥
नानाविधितपकीन्हअपारा। वर्णनहार कौन संसारा॥
बोलेसूत सुनहु मुनिराजहु। इन्द्रतपस्यासुनि भृगुभ्राजहु॥
निजपुरमहँइमिवचनउचारा। को वसुदत्त तुल्य संसारा १०८।१०९
विष्णु प्रसाद तपोबल पाई। ऐन्द्रपदहि पायहु हरषाई॥
यहिममानलोकनमहँआना। तपप्रभाव नहिंअपरमहाना ११०

इति श्रीपद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादे देवासुरेन्द्राभिषेकोनाम पञ्चमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय॥

दो० छठयें महँ सुतवध निरखि सौतिपुत्र कर राज॥
लखिदनुकहदितिसोंविलपि दितिकश्यपसोंकाज १

सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि इन्द्रके देवराज होने की वार्त्ता सुनकर कश्यप मुनिकी अति प्रिय भार्य्या परम तपस्विनी दनुनाम अपने पुत्रोंके शोकसे सन्तप्तहो दितिके मन्दिरमें पहुँची १ व रोदन करतीहुई बड़े दुःखसे चिघड़तीहुई मानो मरीहीजाती थी दितिके चरणकमलोंके प्रणामकर फिर चरणोंपर गिरपड़ी उसको इसप्रकार दुःखितदेख दिति उसकी दूसरीसपत्नी समझातीहुई बोली २ कि हे महा भाग्यवाली! तुम्हारे रोदन करनेका क्याकारणहै लोकमें एकपुत्र के होनेसे स्त्रियां पुत्रवती कहाती हैं ३ हे भामिनि! हे कल्याणि! तुम्हारे बड़े महात्मा गुणी शुम्भादि पुत्रहैं इससे ऐसे पुत्रों की माता कहाती हो ४ फिर तुमको किससे दुःख मिला इसका कारण हमसे कहो इसके विशेष महात्मा महाबली हमारे पुत्र हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष राजा हैं तुमको किससे दुःख हुआ हे सखि! अपने दुःखका कारण अवश्य हमसे कहो इस प्रकार महा दुःखित उस दनुसे दितिने बार २ ऐसा कहा ५।६ कि हे देवि! तुम क्यों रोती हो अपने रोनेका कारण सब हमसे विस्तार सहित कहो इतना

दनुसे कह परम तपस्विनी दिति विश्राम कररही ७ तब दनु बोली कि हे महा भाग्यवाली ! देखो २ देवदेव श्रीविष्णु ने हमारी तुम्हारी सबसे बड़ी सौति अदिति का मनोरथ कैसे पूर्ण कियाहै ८ हे देवि ! जिसप्रकार पूर्व्व समयमें अदितिको उन्होंने वरदियाहै उसका वृत्तान्त कहती हैं सुनो जैसे वरदियाथा वैसेही इससमय वसुदत्तनाम पुत्रभी अदिति को दिया ९ वह पुत्र कश्यपजी से अदिति में जो हुआहै तीनों लोकों का पालक नियत किया गया व उसको तुम्हारे पुत्रों से छीनकर इन्द्रत्व दियाहै १० इससे अदिति अपने मनोरथोंसे अच्छी तरह परिपूर्णहुई व सब सुखोंसे बढ़ी क्योंकि उसका सबसे छोटा वसुदत्तनाम पुत्र आजकल ११ इन्द्रपद भोगता है जो कि बड़े बड़े दुःखोंसे नहीं मिलता परन्तु वह सब देवताओंके संग वसुदत्त भोगताहै तब दितिबोली कि हमारा महा बुद्धिमान् पुत्र कैसे पदसे भ्रष्टहुआ १२ अन्य दानवोंके तेजोभ्रष्ट होनेका कारण हमसे विस्तारसे कहो १३ इतना दनुसे कहकर परम दुःखित होकर दिति चुप होरही तब दनु बोली देवता व सब हमारे तुम्हारे पुत्र दानव दैत्य क्रोध युक्तहोकर संग्राम करनेको गयेथे १४ वहां दैत्यके नाश करनेवाला बड़ा युद्ध हुआ देवदेव श्रीविष्णुजी ने समर में आकर हमारे पुत्रोंको मारडाला १५ जैसे सिंह वनमें गजोंको मारडालताहै वैसेही चक्रपाणिने तुम्हारे सब पुत्रोंको मारडाला १६ कालनेमिआदि जितने सैन्यकेस्वामीथे जिनको देवता दैत्य कोई भी नहीं जीतसक्तेथे १७ उनको नाशित मर्दित व द्रावितकरके विकलकरदिया बचे बचाये इधरउधर भागगये जैसे अपनी इच्छाहीसे अग्निवनमें तृणोंको जलादेताहै १८ वैसेही ये केशव दैत्यगणोंको भस्मकरडालते हैं हे देवि ! बहुतसे हमारेपुत्र मारेगये व बहुतसे तुम्हारेमारेगये १९ जैसे अग्निकोपाकर सब शलभ भस्महोजाते हैं वैसेही सब दानव दैत्य हरिकोपाकर क्षयकोप्राप्तहुये २० इसप्रकार का दारुण वृत्तान्त सुनकर बहुत व्याकुलहो दितिबोली कि हे भद्रे ! यह वज्रपातके समान वचन तुमने हमसे कैसेकहा २१ इतनाकह दिति मूर्च्छितहो पृथ्वीपर गिरपड़ी तब बड़ाभारी हाहाकार शब्दहुआ जो कि बहुतदुःख और

तापकारक था २२ पुत्रशोकसे दुःखितहो दिति बड़े ऊँचे स्वरसे विलाप करनेलगी तिसको देखकर मुनियों में श्रेष्ठ कश्यपजी यह शुभ वचन बोले कि २३ हे महाभागे ! रोदन न करो तुम्हारा कल्याण हो तुम्हारे ऐसे लोग शोच नहीं करते जो लोग सत्त्ववान् होते हैं वे लोभ मोहसे बाहर रहते हैं २४ हे देवि ! संसार में किसके पुत्र व किसके बान्धव लोग हे प्रिये ! सुनो किसीका किसी के साथ कुछभी सम्बन्ध नहीं है २५ तुम सबजनी दक्षकी कन्याहो व सहोदर भगिनियां हो नाम केवल तुम लोगों के और २ हैं व तुम सबोंके भरण पोषण और कामना पूर्ण करनेवाले भर्त्ता हमहैं २६ हे वरानने ! सो पोषण पालन व रक्षाकरनेके लिये अबभी उद्यतहैं तुम्हें पुत्रोंसे क्या प्रयोजनहै फिर उन दुष्ट अजितेन्द्रिय अशान्तात्माओंने क्यों देवताओंसे वैर किया २७ व हे महाभागे ! हे शुभे ! तुम्हारे सब पुत्र सत्य धर्म्म से रहित थे उस दोषसे व तुम्हारे भी दोष से २८ वासुदेव भगवान्‌जी ने मारडाला व देवताओंसे भी बहुतोंको मरवाडाला इससे अब शोक न करो क्योंकि शोक करनेसे सत्य और मोक्ष का नाश होता है २९ शोक पुण्यको नाश करडालता है व पुण्य के नाशसे प्राणी आप नष्टहोजाता है इससे हे वरानने ! विघ्न रूप इस शोकको छोड़ आनन्दित होओ ३० ॥

चौ० आत्मदोषसों सबदानवगण । मृतकभये सबजायएकक्षण ॥
देव निमित्तमात्र तिन केरे । निजकर्म्महिं सों मरे घनेरे ३१
इमिगुनिमनमहँकरहुविचारा । शान्त चित्त लहुसुख संसारा ॥
वृथा मरहु जनिकरिबहुशोका । सुमिरिवचनममहोहुअशोका ॥
इमि दुःखिनी प्रियासोंभाषी । महायोगनिधिमुनिगुणलाषी ॥
भयहु विषादनिवृत्त तुरन्ता । महाबुद्धि पूजित भगवन्ता ३२

इति श्री पाद्मे महापुराणे भूमिखण्डे भाषानुवादे
देवासुरे दिति विलापोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवाँ अध्याय ॥

दो० सतयें महँ कश्यप कह्यो दिति सों आत्मज्ञान ॥
पञ्चभूत की कहि कथा समुझायहु विज्ञान १

कश्यपजी के ऐसे वचन सुन दिति बोली कि हे नाथ! तुमने सब सत्य कहा इस में कुछ भी सन्देह नहींहै परन्तु तुम्हारी भक्तिको छोड़ अब हमको सपत्नी अर्थात् सौतिकी भक्तिकरनी पड़ेगी १ हे सत्तम! अबतक हम अपने अभिमान में बैठीरहती थीं सो अब मानभङ्ग होनेके दुःखसे महादुःखपाकर अपने प्राणछोड़देंगी २ यह सुन कश्यप जी बोले कि सुनो जैसे तुम्हारी शान्तिहोगी वैसा हम तुमसे कहेंगे हे शुभे! कोई किसीका पुत्र नहीं होता न कोई किसी की माता न कोई किसी का पिता होता है ३ न कोई किसी का भ्राता न बान्धव न कोई किसी का स्वजन यह संसार का सम्बन्ध केवल माया मोह से युक्त है ४ हे देवि! आपही अपना पिताहै व आपही माता आपही बान्धव व आपही स्वजनवर्ग व आपही सनातन धर्म्म ५ हेदेवि! आचारकरने से मनुष्य सुख को प्राप्तहोता है व अनाचार व पापके करनेसे नष्टताको प्राप्तहोताहै ६ हे देवि! ऐसेही अनाचारादि करने से मनुष्य क्रूरयोनिको प्राप्तहोजाता है इसमें कुछभी संशयनहींहै व सत्यहीन महापापकर्म्म से मोहितहो ७ मनुष्य औरोंसे शत्रुता करने लगता है व मनुष्यों से महावैर करनेलगताहै फिर जिन के सङ्ग वह वैरकरताहै उसके सङ्ग वे भी वैरकरनेलगते हैं इसमें सन्देहनहीं है ८ हे भामिनि! हे प्रिये! हे शुभे! जोलोक में सब के सङ्ग मैत्री करताहै उसके सब मित्रहीहोते हैं कहीं कोई उसका वैरीही नहीं दिखाईदेता ९ हे देवि! जैसे किसान लोग जिसखेतमें जैसा बीजबोते हैं वैसाहीफलभी पाते हैं १० सो तुमने व तुम्हारे पुत्रोंने साधु देवगणों केसाथ निष्प्रयोजन वैर किया उसकर्म्म का यह फल हुआ उसे भोगो जो जैसा करता है वह वैसा भोगताही है ११ हे महाभागे! तुम्हारे सब पुत्र तप व शांति सेहीनथे उसीपापसे सब बड़ेभारी इन्द्रपदवी के अधिकार परसे गिरपड़े १२ ऐसा जानकर शान्तहोओ दुःखछोड़ो

सुखको प्राप्तहोओ कौन किसकेपुत्र व कौन किसके मित्र कौन किस के स्वजन बांधव १३ सब जीव अपने कर्म्म के अनुसारसे फलको भोगते हैं हे देवि! तत्त्वज्ञानसे पण्डित महात्मा लोग पराये अर्थ चिन्ता व्यर्थ नहीं करते इस में सन्देह नहीं है यह शरीर केवल पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश पांचतत्त्वों से बनाहै पर महाजर्ज्ज- रहै इसमें कुछ शक्ति नहीं है १४। १५ सुखकी अशासे आत्मा इसमें आजाताहै वही इसकामित्रहै जिसका आत्मा नाम है वह म- हापुण्यहै व सब जगह जाताहै सब को देखताहै १६ सब प्रकारसे सिद्ध है व सर्व्वात्मा सत्त्वगुणी व सर्व्वसिद्धिदायकहै इसप्रकार सर्व्व मय अकेला माया रहित आत्मा भ्रमण कियाकरता है १७ व नि- र्जन में भ्रमतेहुये उसआत्मा ने मूर्त्तिमान् चार ब्राह्मणोत्तम देखे जोकि बड़े तेजस्वी उत्तम मूर्त्तियोंको धारणकिये थे १८ उनमें पां- चवां पवन सम्मत करने के लिये आमिला तब ज्ञानको सङ्गलेकर आत्मा वहां आया १९ उनसबों को एकत्रदेख महात्मा आत्मा ज्ञानसे बोला कि हे ज्ञान! देखो ये पांचोपरस्पर सम्मत करतेहैं २० जाकर तुम इनसे पूछो कि तुम लोग कौनहो जब तिसमहात्मा आत्माका ऐसा श्रेष्ठ वचन सुना २१ तो ज्ञान आत्मासे बोला कि इन पांचो से पूँछने से आपका क्या प्रयोजनहै हे देव! निश्चयकरके यह बात हमसे कहो तुम सदा शुद्धहो २२ आत्मा बोला कि इनके पूँछने से यह प्रयोजन है कि देखो ये पांच महाभाग रूपवान् और मनस्वी हैं परस्पर मिलापकरने के लिये आये हैं वैरकरने के लिये नहीं आये इससे हे ज्ञान! तुम हमारे दूत बनकर उनके पासजाओ क्योंकि तुम दूतताके कर्म्म में बड़े कुशल हो २३। २४ यह सुन ज्ञान बोला कि हे आत्माजी! हम सत्य कहते हैं हमारा वाक्य सुनो हे तात! इनकी सङ्गति तुम कभी न करना २५ हे शुद्धात्मन्! इस से शुभकी इच्छा करनेवाले आपका इनपांचों से कुछ प्रयोजन नहीं है हे महामतिवाले! यह केवल आपका मोहमात्रहै जो इनके संग मैत्री कियाचाहते हो २६ यह सुन आत्माबोला कि इनलोगों की संगति को ज्ञानआप क्यों रोकते हैं हे पण्डित! इसका कारण हमसे तुम

यथातथ्य बताओ २७ तब ज्ञान बोला कि हे तात ! इनसबों के सङ्गमसे तुम बड़ेदुःखी होगे क्योंकि ये पांचो दुःखकेमूल व शोक सन्तापके करनेवाले हैं २८ तब आत्माने कहा कि अच्छा हे महाप्राज्ञ ! हम तुम्हारा वचन करेंगे इनकासंग न करेंगे ऐसा कहकर आत्माध्यानके संग रहगया २९ कश्यपजी यही कथा दितिसे कहनेलगे कि जब आत्मा व ध्यान दोनों एकत्ररहे उन पञ्चमहाभूत पृथिव्यादिकों के समीप न गये तो उन पांचोंने अपनेआप आत्माका ध्यानकिया व बुद्धिको अपने समीप बुलाकर उससे उन्हों ने कहा कि तुम आत्मा के पासजावो ३० हे कल्याणि ! हमलोगों के व आत्माके मध्यकी दूतता तुम करो हम पांचोतत्त्वहैं व महात्माहैं तथा सब विश्वभरके सुन्दर आधारहैं ३१ व आपसे मैत्री कियाचाहते हैं इसप्रकार महामति से कहकर फिर कहा कि हे बुद्धे ! बस आपजाकर हमलोगोंका यह कार्य्यकरें यहां से जायँ ३२ तब महाबुद्धिने कहा कि बहुत अच्छा ऐसाही होगा तुमलोगोंका वचन हम करेंगी ऐसा उन सबों से कह कर वह आत्मा के समीपजाकर बोली कि ३३ हे महाभाग ! मैं बुद्धिहूँ आप के निकट दूतता करनेकेलिये आईहूँ जिनकीओर से आईहूँ उनके वचनसुनो ३४ अग्निआदि पंचमहाभूत तुम्हारेसाथ नाशरहित मैत्री किया चाहतेहैं इससे हे महाप्राज्ञ ! उनकेसंग आप मैत्री करें ध्यानको दूरसे त्यागकरदीजिये ३५ यहसुन ध्यानबोला कि हे आत्मन् ! तुम इनकासंग न करना इनके संसर्ग मात्र से बड़ादुःख होगा ३६ क्योंकि हम ज्ञान के विना कौन कर्म्मोंको करेगा यह ऐसा है तुम इसका वचन न करो हमारा वचनसुनो ३७ जैसेही आप हमको छोड़ उनकेसमीप जायँगे वैसेही वे आपको गर्भवास करावेंगे व मुझ ज्ञानसेहीन हो आप अज्ञानी होजायँगे यह निश्चयहै ३८ ज्ञान आत्माजी से ऐसा कह चुपहोगये तब आत्माजी बहुत विचारपूर्वक बुद्धिसे यह वचन बोले कि ३९ हे बुद्धे ! ज्ञान और ध्यान महात्मा हमारे सुन्दर मंत्री हैं वहांका जाना हमको उचित नहीं है हम क्याकरें ४० ऐसा सुन परमयशस्विनी बुद्धि उन पृथिव्यादिकों के पासगई व ज्ञान आत्मा दोनोंका कहाहुआ सब उन-

लोगों से उसने कहा ४१ तब वे पांचोमिलकर आप आत्माके पास गये व बोले कि हमलोग सदा आपसे मैत्री किया चाहते हैं ४२ परन्तु जिस्से कि आप शुद्धहैं हे लोकेश ! इससे हमलोग तुम्हारे पासआये हैं अब आपही अपने विचारकरके हमलोगोंको उत्तरदें ४३ यह सुन आत्माजी बोले कि तुमलोग पांचहो हमारे पास मैत्री करने के लिये आयेहो अब अपने गुण प्रभावभी हमारे आगे तुम लोगकहो ४४ यह सुन उन पंचमहाभूतों में से भूमिबोली कि सर्व्व कार्य्यों का संस्थान चर्म्म मांस अस्थि इनसबोंका दृढ़ता नख लोम ४५ येसब पदार्थ शरीरमें हमारे प्रभावसे होतेहैं नासिका नाभि गुद इनकीद्वारा हमारे पदार्थोंका मल सदा निकला करता है ४६ फिर आकाशबोला किहे परब्रह्मजी!हम आकाशहैं व शरीरमें हमाराप्रभाव सुनो सब आपसे कहतेहैं ४७ बाहर वा भीतर जितने शून्यस्थानहैं वहां हम बसतेहैं व शरीरमें हमारे मन्त्री कान हैं जो कि सब कुछ सुननेके लिये वहां रहतेहैं ४८ फिर वायु बोला कि हे आत्मन्! हमारा गुण सुनो हम शरीरमें पांच स्थानों में प्राण अपान उदानादि के नामोंसे प्रसिद्ध होकर बसतेहैं व शुभ अशुभ कर्म्मों को करते हैं ४९ फिर तेजबोला कि हम शरीरमें टिकेहुये सदा नाना प्रकारके पदार्थ प्राणी को दिखाया करते हैं व भीतर बाहर देखी विनादेखी वस्तु हमारे प्रभावसे दिखाई देती है ५० फिर जल बोला कि वीर्य्य मज्जा राल इनसबस्थानों में हम शरीरमें बसतेहैं और रक्तको पहुँचायाकरते हैं ५१ व शरीरमें हमारे मन्त्री नेत्रहैं वे हमारे द्रव्य लब्धिके साधक हैं यह अपना व्यापार हमने आपके आगे कहा ५२ हेप्रिये ! अमृतरूप होकर जिलातेहैं यह हमारा व्यापार और कोई नहीं करता हम अपने आप करते हैं ५३ रसके स्वादु करनेवाली श्रेष्ठ जीभको मंत्री जानो फिर नासिकाबोली कि हम सुगन्धसे शरीरकी परम पुष्टि करा- तीहैं ५४ व दुर्ग्गन्धिको छोड़ शरीर में सुगन्ध दिखाती रहतीहैं व बुद्धिके साथ युक्तहो स्वामी के कार्य्य के लिये इस शरीर में निश्चल होकर सदा टिकी रहती हैं जो दोप्रकार का सुगन्धहै वह हमारा गुण जानो ५५।५६ फिर दोनों कान बोले कि हम दोनों जने कार्य्य
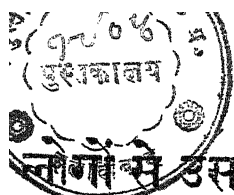
अकार्य्यके लिये शुभ वा अशुभ लोगोंके कहेहुये वचन सत्य असत्य प्रिय अप्रिय सुना करते हैं ५७ शब्द हम लोगोंका गुणहै सो जब बुद्धि उस शब्दमें हम लोगोंको भरती है तो उसी शब्दसे अपना व्यापार करते हैं ५८ फिर त्वचा बोली कि पांच प्रकारका पवन इसशरीर में सदा भरा रहताहै ५९ उन पांचोंकी चेष्टा बाहर भीतर हम सदा जानती हैं शीत ऊष्ण घाम वर्षा वायु का लगना ६० अंगोंमें श्लेष्मा आदिका लगजाना हम सब स्पर्शमात्र से जानलेती हैं व स्पर्शही हमारा गुणहै यह सत्य कहतीहैं ६१ इसप्रकार हमने अपना सब व्यापार आपसे कहा फिर नेत्रबोले कि हेसत्तम! संसारमें जितने उत्तम वा नष्टरूपहैं ६२ उनको जब बुद्धि प्रेरणा करती है तभी हमलोग देखते हैं यों नहीं हमलोगभी शरीरमें बसते हैं व रूप हम दोनोंका गुणहै ६३ हे महामतिवाले! इस प्रकार शरीरके मध्य में हम लोगों का व्यापारहै फिर जिह्वाबोली कि हे तात! बुद्धियुक्तहोनेसे हम सब रसों का बिचारकरती हैं ६४ क्षार खट्टा रसहीन व स्वादुयुक्त इन सबको बिचारती हैं बस इसी व्यापारसेयुक्त होकर नित्य मुखमें बसी रहती हैं ६५ व सब इन्द्रियों की नायिका केवल एकबुद्धिही है हे प्रिये! इस प्रकार पांचोइन्द्रियोंने आकर आत्मासे कहा ६६ सब इन्द्रियां अपना २ कर्म्म व २२ सदा आकर आत्मा से कहती हैं तब बुद्धिभी वहां आकर उन महामतिवाले आत्म जीसे बोली ६७ कि जब प्राणी विना हमारे के होजाता है तो तुरन्त नष्टहोजाता है इससे हे महामते! हममें टिककर आप वर्त्ताव करैं ६८ इसके पीछे कर्म्मआकर आत्माजी से यह वचन बोला कि हे महाप्राज्ञ! मैं कर्म्म हूं तुम्हारे पास आयाहूं ६९ इससे तुमको जहां हम प्रेरणाकरें तुम वहीं जाओ इसप्रकार सबोंकी वार्त्ता सुन आत्मा उनसबोंसे बोले ७० कि सर्वसाधारण तुम पांचों एकत्र होकर क्यों नहीं कार्य्यकरलेते हमारीमित्रताकी इच्छा क्यों करते हो ७१ हमारे मिलने की इच्छा करने का कारण तुम लोगहमसे बताओ कि ठीक२ तुम लोगोंने क्या बिचारा है यह सुन वे पांचो एकत्रहोकर बोले कि हम लोगोंके संगके प्रसङ्ग से अपने २ बलके अनुसार अलोपण करतेहैं तो एक पिण्ड होजाता

है ७२ उस पिंड में जब आपभी आकर बसते हैं तब आपके प्रसादसे हमलोग भी उसमें अच्छे प्रकार ठहरसक्के हैं ७३ इसीकारण से नित्य आपकी मैत्रीचाहते हैं यह सुन आत्माजी फिर बोले कि हे महाभाग्यवालो ! ऐसाही हो हम आपलोगों का प्रियकरेंगे ७४ व प्रीति के कारण तुमलोगों की मैत्री करेंगे हे महाभागो ! यद्यपि हम को महात्मा ज्ञान रोंकताहै ७५ तथापि हम अपने ध्यानसे तिनका संग करते हैं व उन पांचों से मोहित होके राग द्वेषादिकों से युक्त हो ७६ पञ्चतत्त्वों में मिलकर वह प्रभु आत्मा शरीरत्वको प्राप्तहोगया व जब विष्ठा मूत्रसे पूरित गर्भ में प्रविष्टहुआ ७७ तब उन्हीं सबोंके संग उस दुर्गति में आनपड़ा व अङ्ग से व्याकुल होकर उन पांचों में मिलगया व सबों से कहनेलगा ७८ कि हे २ सब पंचात्मको ! हमारे वचन को सुनो आपलोगोंके संगके प्रभाव से हम महादुःखसे मोहितहोकर इस महाभयरूप चीकने व घोरस्थान में आकर पतित हुये ७९ यह सुन एक में मिलेहुये वे पांच महाभूत बोले ॥

चौ० महाराज तबलगयहँबसिये । जबलग गर्भपूर्ति ह्वै लसिये ॥
पीछे तब निष्क्रमण यहांते । होइहि संशय करत कहांते ॥
आप हमनके अरु सब केरे । हैं स्वामी तनु बसत सुनेरे ॥
राज्यकरहु सुख भोगक आपू । ह्वैहहु सत्य न मृषा अलापू ॥
तिनके सुनि इमिवचन अभाये । आत्मादुःखितभो अकुलाये ॥
चलन चह्यो तहँसोंअतिव्याकुल। भयहुपलायनपरजिमिबातुल ८०।८१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेदेवासुरशरीर कथनंनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

दो० कह अठयें महँ आत्मके गर्भवाससुख दुःख ॥
जिन्हें विचारत अजहुँ नर पावत सिगरे सुक्ख १

कश्यपजी दितिसे बोले कि आत्माजी दुःखसे आक्रांत व सर्वाङ्गोंमें पीड़ायुक्तहो वे धर्म्मात्मा गर्भवास में व्याकुलहो प्रतिदिन चिन्ता करनेलगे १ क्योंकि गर्भ में नीचेको मुखकिये मोहजाल से

बँधेहुये आधि व्याधियोंसे व्याकुल मूर्च्छितहो हाहाकार करते थे २ कि जब बड़े २ दुःखों से आत्माजी पीड़ितहुये तो ज्ञानसे बोले कि हे महाप्राज्ञ ! तुम्हारा वचन हमने उससमय नहीं किया ३ व ध्यान नेभी हमको रोका था परन्तु हम आकर इस मोहके सङ्कटमें पतित-हीं होगये अब हे महाप्राज्ञ ! इस महादारुण गर्भवाससे हमारीरक्षा कीजिये ४ तब ज्ञान बोला कि हे आत्माजी ! हमने आपको रोका परन्तु आपने हमारा कहा न माना इन महाक्रूर पञ्चात्मक पृथि-व्यादिकोंने गर्भके सङ्कट में आपको गिरादिया ५ अब इससमय तुम ध्यान के समीप जाओ उससे तुम सुख पाओगे व गर्भवास से तुम्हारी मुक्ति होजायगी इसमें सन्देह नहीं है ६ जब आत्माने ज्ञानके ऐसे वचन सुने तो ज्ञानकी तत्त्वता जानकर फिर ध्यानको बुलाकर कहा कि तुम हमारा वचन सुनो ७ हे ध्यान ! अब हम तुम्हारे शरण हैं नित्य हमारी रक्षाकरो तब ध्यानने कहा कि हे महाप्राज्ञ ! बहुत अच्छा ऐसाही करेंगे हमारे समीप आओ ८ इस वचन के सुनतेही आत्मा ध्यानके पास गये व ध्यानके साथ मोह सहितही गर्भमें बसनेलगे ९ जब आत्मा ध्यानको प्राप्तहुये तब उनको गर्भ से उत्पन्नभय भूलगया अब ध्यानके साथ होजाने से आत्मा मोहरहित होगये १० व नित्य अपने सुखकी चिन्तना करनेलगे कि बस जैसे यहां से बाहरहोंगे हम यह अपना शरीर छोड़देंगे ११ इसप्रकार गर्भवास में प्राप्त वह प्रभु नित्य चिन्तना किया करताहै कि कब यहांसे निकलें व कब इस शरीर को छोड़ें ऐसा विचारते २ जब प्रजापति का नियमित प्रसूति होनेका काल प्राप्तहोताहै १२ तब बलवान् वायु व प्राणगर्भको चलायमान करता है उससमय योनि चौबीस अंगुलकी फैली होजाती है १३ व गर्भ भी चौबीसही अंगुल का उससमय होताहै इससे बाहर आने में दोनोंको पीड़ा होती है इससे सम्पीड्यमान होने के का-रण गर्भ मूर्च्छितहो १४ ज्ञान व ध्यानके सङ्ग पृथ्वीपर गिरपड़ताहै प्राजापत्य दिव्यवायु से अलग होजाता है १५ भूमिके स्पर्शही मात्र से ज्ञान और ध्यान भूलजाते हैं संसार बन्धसे संदिग्ध

आत्मा प्रियता से स्थित होता है १६ फिर नानाप्रकारके गुण व दोषोंसे युक्तहो व महामोहसे भी युक्त होके प्रतिदिन माताके स्तन पानादिककी इच्छा करने लगताहै १७ इस प्रकार आत्माको पृथिव्यादि पंचमहाभूतों के संग पुष्ट होते हुये देखकर पापकारी सब इन्द्रियां उसको विषयोंका भोगकराने लगती हैं १८ बान्धवों के मोह से व भार्यादिकों के भी अतिमोहसे हे देवि ! प्रतिदिन वह आत्मा आकुल व्याकुल होता है १९ इस प्रकार महामोह से जलता हुआ आत्मा मोहजालमें ऐसा बँधजाताहै जैसे कहारके जालसे मछली बँधजाती है २० बस आत्मा ऐसा बँधजाताहै कि किसी प्रकार अपने को इस जाल से छुड़ायही नहीं सक्ता क्योंकि मोहके बड़े दृढ़ जालों के बन्धनों से आत्मा व पृथिव्यादि पांच महाभूत सब बँध जातेहैं इस प्रकार सर्व्वत्र व्यापक इस प्रपञ्च से आत्मा व्यापित होजाता है व राग द्वेषादिकों से हतहोकर ज्ञान विज्ञानसे भ्रष्ट होजाताहै २१ । २२ फिर काम क्रोध से पीड़ितहो प्रकृति व कर्म्म से ऐसा बँधजाताहै कि महामूढ़ होजाताहै २३ सूतजी बोले कि जब काम क्रोध के वशीभूतहो यह आत्मा ऐसा मूढ़ होजाताहै तो दुष्टात्मा लोभ रागादि सबों से व्यापित होजाताहै २४ यह हमारी भार्य्या यह पुत्र यह मित्र व यह गृह ऐसा कहताहुआ संसारके जालमें महा मोहसे बन्धित होजाताहै २५ व पुत्रशोक आदिक नानाप्रकार के दुःखोंसे तिससमयमें व्याकुलहोजाताहै बुढ़ापा व आधि व्याधियोंसे होते २ ग्रसित होजाताहै २६ इसप्रकार दारुण दुःख मोहोंसे सन्तप्त आत्मा अभिमान व मानभङ्गादि नानाप्रकारके दुःखों से भलीभांति खण्डितहोताहै २७ हे देवि ! वृद्धताके कारण चलने फिरनेकी शक्ति न रहनेसे अत्यन्त पीड़ित होताहै व वृद्धता में और भी सब पदार्थों की चिन्तासे हाहाकार किया करताहै २८ रात्रिमें स्वप्नोंको देखताहै व दिनमें बनाय चैतन्यतासे रहितहोजाताहै हे देवि ! इसप्रकार अंगोंकी विकलतासे युक्तरहताहै २९ फिर कभी संसारमें घूमतेहुये एकनग्न निःशंक बन्धुहीन अत्यन्त शांत और प्रसन्न विरागीको देखकर वह आत्मा बोलताहै कि आप कौनहैं जो नग्नरूप से घूमते और मित्रों

से लज्जित नहीं होते ३० । ३१ जहां कि सब लोग वृद्ध स्त्रियां माता व अन्य स्त्रियां विद्यमानहैं इनसबोंके मध्य में आप नग्न नहीं डरते हैं ३२ यह सुन वह वीतराग बोला कि यहां कौन नङ्गा दिखाई देताहै हम तो कभी नङ्गे नहीं रहते हमको तो उसीके नग्न होनेमें सन्देह है जो वस्त्रादि धारणकिये रहताहै ३३ इससे हमतो कभी नहीं नग्न रहते आपही हमको नग्न दिखाई देते हैं जो कि इन्द्रियों के अर्थों के वशीभूतहैं व मर्य्यादासे रहित होगये हैं ३४ यह सुन आत्मा बोला कि हे सुव्रत ! हे महाप्राज्ञ ! पुरुषकी कौनसी मर्य्यादा है हम से तुम कहो सो यों नहीं यदि निश्चित होकर जानतेहो तो विस्तार पूर्व्वक कहो ३५ तब महाप्राज्ञ महामति वीतरागजी बोले कि म-र्य्यादा वह है कि चित्त जिसे स्वस्थहो भजे व सुख दुःख से सदा अलग रहै ३६ व सब भावों से चित्त आर्द्र बनारहै व सबभावोंको त्यागै किसी में लीन न हो अब लज्जा बताते हैं जिसमें मन अ-त्यन्त न प्रवेशकरे ३७ व वह गुप्तस्थानमेंभी कुकर्म्म करनेपर उसमें पैठजाती है व चित्तको पश्चात्ताप करनेसे लीन करलेती है वही ल-ज्जा कहातीहै ३८ सो लज्जा किसकी करे संसारमें दूसरा तो कोई है नहीं एक वही दिव्यपुरुष रहता है वह किसीको मारता है नहीं है ३९ अब लोग कहते हैं जिनको तुमनेही कहाथा जैसे कुम्हार चाकपर मिट्टीका पिण्ड स्थापित करताहै ४० व फिर दंड से उसको घुमाकर व सूत्रसे काट२कर नानाप्रकारके भेदकरताहै जिनसे सहस्रों प्रकार के पात्र अपनी मति व इच्छा से बनाताहै ४१ ऐसेही विधाता इस संसार में नानाप्रकार के रूप बनाताहै व फिर वे कालपाकर जिस किसी हेतुसे नष्ट होजाते हैं ४२ जो सदा बने रहते हैं वे सनातन लोक कहाते हैं व लज्जा उनकी करनी चाहिये जो वहां विद्यमान न हों ४३ आकाश वायु तेज पृथ्वी व जल बस इन्हीं पांचों को लोक कहते हैं सो ये सर्व्वत्र स्थित रहते हैं ४४ प्राणिमात्र के प्रत्येक अङ्गमें ये पांचों स्थित रहते हैं तो ये सब एकही हैं फिर लज्जा किसकी करे ४५ अब स्त्रियोंका रूप बताते हैं हे तात ! इस समय चित्तलगाकर सुनिये जैसे जलभरे हुये सहस्रों घड़ों में एकही च-

न्द्रमा पृथक् दिखाई देताहै वैसेही आप अकेले सब स्त्रियों में व पुरुषों में विराजमान हैं व मोहसे बँधे हुये अनेक जन्तुओं में वर्त्तमान रहते हैं ४६ । ४७ ऐसेही सब स्थावरों में व जङ्गमों में भी सदा आपही रहते हैं व पापरूप योनिके होनेसे जो एक मायामात्र है ४८ व दोकुच और नितम्बों के होनेसे जो कि अवस्था के कारण बड़े ऊँचे होजाते हैं वास्तवसें त्वचा व मांसकी अधिक वृद्धि होजाने से वे बनजाते हैं इसमें सन्देह नहीं है ४९ सो उनको देख विधाताने सब लोगों के गिराने के लिये एकमोहरूप दिखाया है बस जिसको तुम ने कहा था वह नारी नहींहै ५० केवल लीलामात्रके लिये विधाताने बनादिया है नहीं तो जैसे स्त्री वैसे पुरुष जीव सबमें विद्यमानहै ५१ जो कुचों और योनिसे रहितहों वे सदैव जीवन्मुक्त हैं व नर पुरुष कहाता है नारी प्रकृति कहाती है ५२ बस उसी के सङ्ग क्रीड़ा किया करताहै मुक्त कभी नहींहोता सो आपही प्रकृतिसंयुक्तहोकर सब पुरुषों में दिखाईदेते हैं ५३ फिर कहो कौन किसकी लज्जा करे ऐसा जानकर सुखको प्राप्त होरहिये अब हम वृद्धा स्त्री सदावृद्धा बताते हैं ५४ वे नहीं हैं जिनकी त्वचा बनायजर्ज्जर होजाती है व केश बनाय श्वेत होजाते हैं व सब अंगोंपरका चमड़ा सिकुर जाताहै ५५ व बलसे हीन दीन और बलिसे व्याप्त होजाती हैं ऐसी को वृद्ध नारी कहने लगते हैं पर वह वास्तवमें वृद्धानहीं कहीजाती अब हम वृद्धास्त्री के लक्षण कहते हैं सुनो जो ज्ञान से नित्य बढ़तीहुई जीवके पास जाकर उसी में मिलकर स्थित होती है ५६।५७ व सुमति उसका नामहै बस वृद्धा स्त्री उसका नामहै वह नारी पुरुषलोगोंमें सदा टिकीरहती है ५८ बस उसीकी लज्जा करनीचाहिये और भी तुमसे कहते हैं जोकि तुमने कहाथा कि माता यहां विद्यमानहै सो हम माता बताते हैं ५९ जो प्राणियों के सब अंगों में सदैव चेतनायुक्तरहै व परमउत्कृष्ट ज्ञानको देवे उसको प्रज्ञा कहते हैं ६० बस प्राणियों के पालन करनेके लिये यही प्रज्ञामाता है व सब लोगोंके पोषण करने तथा हितकरने के लिये स्थित रहती है ६१ व जो सुमति नाम कहाहै वहभी माताहै व जो संसारमें आनेके लिये द्वाररूप नित्य बहुतसी माता दिखाईदेतीहैं

ये सब तो बड़े दुःखों के दिखानेवालीहैं बस माताका भी रूप तुमसे हमनेकहा अब और क्याकहें ६२ । ६३ यह सुन फिर आत्माबोला कि आप कौन हैं जो आकर हमारे सन्तापके नाशकहुये अब अपना स्वरूप विस्तारसे हमसे अपने आप कहो ६४ यह सुन वीतराग बोला कि जिससे निराश सब कामना होकर निवृत्त होजावें और दुष्टभाव से ये कर्म जिसको न देखें और प्रकार नहीं ६५ आशा जिसके पास कभी न आवे क्रोध लोभ और मोह जिसके भयसे नाशहोजावें ६६ ऐसा वीतराग मैंहूं तुम्हारा कल्याणहो विवेक हमारा भाई है तब आत्मा बोला कि यह विवेकनाम तुम्हारा भाई कैसाहै ६७ तिस अपने भाई के लक्षण आपकहें तब वीतराग बोला तिसका लक्षण व रूप हम अपने आप तुम्हारे आगे न कहेंगे ६८ हे महाभाग ! हम अपने भाई को बुलाते हैं यह कह बोले कि हे हमारे भाई विवेक ! हमारे वचनसुनो ६९ हे महाभाग ! हे महामते ! हमारेस्नेह से यहां आओ कश्यपजी दितिसे बोले कि वीतरागका वचन सुन क्षमा व शान्तिनाम अपनी स्त्रियोंसमेत विवेक वहां आया ७० जो कि सर्व्वदर्शी सर्व्वगामी सर्व्वत्रव्यापी व सर्व्वतत्त्व परायण है व जो सब सन्देहोंका पूरा वैरी व ज्ञानके ऊपर वत्सल है ७१ जिस महात्माकी धारणा व धी दो कन्याहैं जिसके ज्येष्ठपुत्रका योगनामहै व मोक्ष जिसका महागुरुहै ७२ व आप निर्म्मल अहंकाररहित निराश परिग्रहहीन सब समय में प्रसन्नात्मा सुख दुःखादि द्वन्द्वों से रहित महामति ७३ विवेक वहां इन गुणों से विभूषित आगया जिसके मंत्री महात्मा महामतिवाले धर्म्म व सत्यहैं ७४ व क्षमा शान्तिसे भी समेतही आया व वीतरागसे बोला कि तुम्हारे बुलायेहुये हमआये ७५ इससे हे भाई ! तुम हमारे आगे सब कारणकहो जिसलिये हमको तुमने यहां बुलाया है ७६ तब वीतराग बोला कि हे भाई ! महापाशों से बँधेहुये ये आगे आत्मा खड़े हैं ये मोह के बाण संसारके बन्धनों से बँधगये हैं ७७ हम सब संसारके व्यापक स्वामी ये आत्माहैं पंचमहाभूतों के वशमें पड़गये हैं व ज्ञान ध्यान को छोड़दियाहै ७८ आप तो तत्त्वोंके जानने में बड़े पण्डितहैं इससे इनसे पूँछें वीतरागके वचन सुन विवेक

यह वचन बोला कि ७९ हे देव आत्माजी ! हे विश्वके उत्पन्न करा-
नेवाले ! आप सुखसे तो हैं संसार में आकर आपने क्या २ सुख व
भोगकिया ८० यह सुन आत्माजी बोले कि हे महाप्राज्ञ ! ज्ञानसे
हीनहोकर हमने इसगर्भवासमें सदैव दारुण असह्य महादुःख भोग
किये ८१ अहो ज्ञान से भ्रष्ट होकर हम इस संसारमें अनेकप्रकारसे
आये व बाल्यावस्था में हमने नानाप्रकारके करने न करने के योग्य
कर्म्म किये ८२ फिर युवावस्था में क्रीड़ा की अनेक स्त्रियों के संग
भोग किया फिर वृद्धताको प्राप्त होकर पुत्रादिकों के बहुत शोकों
से सन्तप्तहुये ८३ व भार्य्यादिकों के वियोगों से रात्रि दिन बराबर
जलतेरहे ऐसे अन्य सम्बन्धियों के अनेकदुःखों से प्रतिदिन सन्तप्त
रहे ८४ हे महाप्राज्ञ ! दिनरात्रि कहीं न सुखपाया ऐसे दुःखों से
पीड़ितहैं हे महामतिवाले ! अब हम क्याकरें ८५ वह उपाय हम
से कहो जिससे सुखपावें इस संसारजाल समूहसे हमको छुड़ाओ
हम बड़ेभारी बंधनों में बँधगये हैं ८६ तब विवेक बोला कि हे ज-
गन्नाथ ! आप तो शुद्ध हैं सुख दुःखादि द्वन्द्वोंसे रहित व अपाप हैं
अब सुखदेनेवाले इन महात्मा वीतरागको प्राप्त हों ८७ जिन्हें आ-
पने नग्न आचारसे हीन और निःसंशय देखा था ये सुखके दिखला-
नेवाले और सब संताप नाश करनेहारे हैं ८८ विवेक के ऐसे वचन
सुन शुद्धात्मा आत्माजी फिर वीतरागके समीप गये व उनसे दीनहो-
कर बोले कि हमारा वचन सुनो ८९ जिससे हम सुखपावें वह मार्ग्ग
हमको दिखाओ यह सुन वीतरागने कहा हे महाप्राज्ञ ! अच्छा आप
का वचन करेंगे ९० अब फिर आप विवेकके पासजायँ क्योंकि आप
ने सुखकी वार्ता की है सुखमार्ग्गके बतानेवाले तुमको यही होंगे ९१
पुण्य वीतराग के भेजेहुये प्रभु आत्मा वहांगये व उन महात्मा शुद्धस-
त्तम विवेक से बोले ९२ कि हमको सुख दिखाओ वीतराग ने तुम्हारे
पास भेजाहै व आपके शरणमें आये हैं इससे इस संसार दारुण से
हमारी रक्षाकरो ९३ तब विवेक बोला कि हे महाप्राज्ञ ! ज्ञान के पास
जाओ वह आपसे सब कहेगा उसके कहने से आत्माजी वहांगये
जहां ज्ञान स्थितथा ९४ जाकर कहा भो महातेजवाले व सब भावों के

दिखानेवाले ज्ञान ! हम तुम्हारे शरणमें आये हैं हमको सुखमार्ग्ग दिखाओ ९५ तब ज्ञानबोला कि हे लोकेश ! मैं तो आपका सेवकहूँ हे सुव्रत ! आप मुझको नहीं जानते मैंने व ध्यानने बार २ आपको रोका था ९६ हाय इन पंचमहाभूतों के संगसे आप महाआपदाको प्राप्त हुये हे महाप्राज्ञ ! अब आप ध्यान के पासजायँ वह आपको सुखदेगा ९७ ज्ञानके भेजने से आत्मा जाकर ध्यान के पास संस्थितहुये व बोले कि हे ध्यान ! तुम हमको अत्यन्त सिद्ध सुखका मार्ग्ग दिखाओ ९८ हम आपके शरणहैं हमारी आप रक्षाकरें इसप्रकार आत्माका कहाहुआ वचन जब ध्यान ने सुना ९९ तब वह हर्षित होकर उन आत्माजी से बोला कि हे तात ! सब कर्म्मों में आप हमें न छोड़ें जो कर्म्म करने लगें ध्यान करके विचारलें १०० सो तुम वीतराग व विवेक तीनों हम ध्यानको कभी न छोड़ो व ध्यानयुक्त होकर तुम आत्माको देखो १०१ व आत्मामें स्थिरहोके आतंकरहित व विकल्पना से रहित होजाओगे ॥ चौपाई ॥

जिमिनिवातथिरदीपकजोती । थिरह्वै कज्जलउगिलतहोती ॥
तिमिसब दोषधोय महराजा । लहिहहु पदनिर्व्वाणसुसाजा ॥
निराहार एकान्त विराजी । अमिताशनकरिगुणगतभ्राजी ॥
शब्दहीन निर्द्वन्द्वाचलहू । थिर आसनकरिसब सुखलहहू ॥
आत्माकहँआत्मासों ध्यावहु । सुस्थिरमतिकरि अतिहर्षावहु ॥
पैहहु परमधाम थिर होई । विष्णु परमपद जो नहिं गोई १०२।१०५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखंडेभाषानुवादेऽध्यात्मवर्णनेऽष्टमोऽध्यायः८

नवां अध्याय ॥

दो० नवयें महँ समझाय मुनि दितिहि प्रबोध्योनीक ॥
जासों सुस्थिर ह्वै बहुरि नाहिं प्रलपी ह्वै ठीक १

कश्यपजी दितिसे बोले कि जब ध्यानादिकोंने आत्माको इस प्रकारसे समझाया तो उन बुद्धिमान् ने उन पञ्चमहाभूतों का सङ्ग छोड़ना चाहा १ वे सब प्रार्त्थनाही करतेरहे परन्तु उनके हेतुओंको देखकर हँसकर फिर उन्होंने शरीरकी ओर देखाही नहीं २ क्योंकि

जब एकही साथ बढ़ेहुये देह व प्राणहीका सदाके लिये कोई सम्बंध नहीं है तो धन पुत्र स्त्री के साथ किस हेतुसे सम्बन्ध होसक्ताहै ३ ऐसा जानकर हे सुप्रिये ! इस व्याकुलताको छोड़ो शान्तचित्त होओ यह आत्मा परब्रह्महै व यही सनातनहै ४ यही आत्मा अपने रूप से दैत्यों और देवों के देहों में टिकाहै व यही ब्रह्मा है यही रुद्रहै यही सनातन श्रीविष्णु है ५ यही आत्मा सब प्राणियों को उत्पन्न करताहै व यही सबोंको पालताहै व यही धर्म्मरूपी होकर सब का संहारकरता है क्योंकि धर्म्मरूपी श्रीजनार्द्दन भगवान् हैं ६ उन्हीं जनार्द्दनजी ने देवताओं को उत्पन्नकिया है व उन्हीं ने दानवोंको भी हे प्रिये ! परन्तु देवलोग धर्म्मयुक्त हैं व तुम्हारे पुत्र दानवलोग धर्म्महीन हैं ७ व धर्म्म श्रीविष्णुका अंगहै इसी से सब देवलोग धर्म्मका पालन करते हैं हे देवि ! इस से सदा धर्म्महीं की चिन्तना व धर्म्महीं का पालन जोकरै ८ तिसके ऊपर धर्म्मात्मा विष्णुभगवान् सदैव प्रसन्न रहते हैं धर्म्म सत्य तप से देवता वर्त्तमान रहते हैं ९ बस जिससे वे लोग सदा धर्म्मकापालन करते हैं इससे विष्णु उनके ऊपर प्रसन्न रहते हैं विष्णुका शरीर धर्म्म है व सत्य उनका हृदयहै १० इससे जो कोई इनदोनों का पालन करता है उस के ऊपर श्रीविष्णु प्रसन्न होते हैं इसीप्रकार जो धर्म्म व सत्य को दूषित करता है वह पाप को पालन करता है ११ उसके ऊपर विष्णु कोप करतेहैं व उसकानाश करदेते हैं क्योंकि वे अतिवीर्य्यवान् हैं सो तप व सत्य में टिककर वैष्णवों ने धर्म्म का पालन किया है १२ इससे उनके ऊपर धर्म्मात्मा विष्णुजी भी प्रसन्नहैं इसलिये उनकी रक्षा करतेहैं व तुम्हारे पुत्र दैत्य व दनुके पुत्र दानव सिंहिका के सुत सैंहिकेय ये सब १३ सदा अधर्म्म व पापही करते रहते हैं इससे उनका चित्त पापमय होगया था इसीसे वासुदेव चक्रपाणिजीने समर में उनको मारडाला १४ व जो आत्मा है जिसे हमने तुम्हारे आगे प्रथम कहा है वे विष्णुही हैं क्योंकि धर्मात्मा सर्व्वपालक हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है १५ दैत्यों के शरीर में स्थित उन आत्मा श्रीविष्णुने देख लिया कि ये सब सदा अधर्म्महीं करतेहैं व दानव भी अधर्म्महीं

करते हैं यह देख महामति श्री विष्णु क्रुद्धहोगये १६ बस भीतर तो थेही बाहर भी होकर व बाहर भीतर दोनों ओर से जोर करके तुम्हारे पुत्रों को उन्हों ने मारडाला हे देवि ! जिनसे उत्पन्न हुये थे उन्हीं से नाशभी होगये १७ इससे अब तुम उन अपने पुत्रों का शोक न करो हमारा वचन सुनो जो पाप करताहै वही मरताहै १८ इससे मोहको छोड़ सदा धर्म्मका आश्रयणकरो यह सुन दितिने कहा हे महाभाग ! बहुत अच्छा हम तुम्हाराही वचन करेंगी १९ ॥

चौ० कश्यपसोंइमिकहिदितिरानी । दुःखितह्वैअतिशयअकुलानी ॥
समझावा मुनि बहुत प्रकारा । दुखतजि थिरह्वै रहीं अपारा २०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेदितिसंबोधनंनाम नवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

दो० दशयें महँ कश्यप बहुरि दैत्य सिखावन दीन ॥
जासों सबगे तपकरन तजि अधर्म्म मन खीन १

इतनी कथा सुन शौनकादि ऋषिलोग सूतजी से बोले कि हे महामतिवाले ! जब युद्ध से हारे व मारे से बचे उन हिरण्यकशिपु आदि दैत्य दानवों ने क्या उपाय किया १ उन लोगों का उत्तम वृत्तान्त हमसे विस्तार से कहिये हमलोग तुमसे इससमय सुनाचाहते हैं २ सूतजी बोले कि जब संग्राम से सब भागे तो बलहीन तो होही गये थे इस से अहङ्कारहीनहो अतिदुःखित सब दैत्य दानव अपने पिता कश्यपमुनिके पासगये ३ व भक्तिसे कश्यपजी के प्रणामकर सब बोले कि हे द्विजसत्तम ! आपही के वीर्य्य से देवताओं की व हमलोग दानवों की उत्पत्ति है उनमें हम सब दानव बलवीर्य्यपराक्रम से युक्त हुये ४ । ५ व उपाय नानाप्रकार के जानते हैं सुन्दर धीरहैं उद्यमसे युक्तहैं हे तात ! हमलोग बहुतहैं और देवता थोड़े हैं ६ इससे देवता कैसे जीतजातेहैं और बल और तेज से युक्त हम लोग संग्रामसे भग्न होजाते हैं इसका क्या कारणहै ७ हे महामते ! एक २ दैत्यके किरोड़ २ हाथियों का बल है ऐसा देवताओं में बल

नहीं है ८ परन्तु हे तात ! संग्राम में बहुधा जीत देवताओंकीही होतीहुई दिखाई देती है इस विषय में हमलोगोंको बड़ा सन्देह है आप निवारण करें ९ कश्यपजी बोले कि हे पुत्रो ! जयका कारण सबजने सुनो जिससे समर में बहुधा देवतालोगही विजय पाते हैं १० पिता बीजका बोनेवाला होताहै व माता खेतरूप होतीहै इससे धारण पालन पोषण करनेमें सदा लगी रहती है ११ परन्तु और कुछ पुत्र के साथ न माताही करसक्ती है न पिताही कुछ करसक्ता है इस विषय में कर्म्मकी प्रधानता है हमारी इसप्रकार आश्रित बुद्धिहै १२ पाप व पुण्यसे उत्पन्न होनेके कारण कर्म्मका सम्बन्ध दोप्रकार काहै व जो कर्म्म सत्यके आश्रयणसे कियाजाताहै वह उत्तम धर्म्म होताहै १३ व जो तप व ध्यानके साथ कियाजाताहै वह करनेवाले को तारता है व पापकर्म्म सदा पतितही होनेके लिये होताहै इस में कुछभी सन्देह नहींहै १४ हे पुत्रो ! बाल्यावस्था से अपने परिवार व जातिके लोगोंके संग जो पुरुष पापही करता है उस पुण्य हीन पुरुष का सब बल विफल होजाता है कभी समयपर काम नहीं आता १५ जैसे पर्व्वतों के दुर्गम स्थानोंपर बड़ेपुष्ट व ऊँचेवृक्ष होते हैं पर पवनके वेगसे जड़सहित उखड़ पड़तेहैं १६ ऐसेही सत्यकर्म्म से हीन पुरुष यमराज के स्थानको जातेहैं इससे हे पुत्रो ! साधारण रीतिसे सब पुरुषोंका बल धर्म्मही है १७ जिससे प्राणी यहांभी तरताहै व परलोक में भी जाकर उसीके बलसे तरता है सो तुमलोगों ने उस सत्यधर्म को छोड़दिया १८ व हे पुत्रो ! सत्यरहित अधर्म्मही करने लगे इसीसे सत्यधर्म और तपसे भ्रष्टहोगये व दुःखसागर में आपड़े १९ व देवतालोग सत्यसे सम्पन्न कल्याण संयुक्त व तप शांति दमसे युक्त सब पुण्य कर्म्म करने में तत्पर व पापरहितहैं २० बस जहां सत्य धर्म्म तप पुण्यहै व जहां श्रीविष्णु हैं वहां विजय सदा दिखाई देताहै २१ उन देवताओं के सहायक सदा भगवान् वासुदेव रहते हैं इसीसे व सत्यधर्मसे युक्त होनेके कारण सदा देवगणही जीततेहैं २२ व हे पुत्रो ! तुम लोगोंको सहायक बल व पौरुष से क्या होसक्ता है क्योंकि तप व सत्यसे तो रहितहो २३ धर्म्मवादी

लोगोंने यही निर्णय कररक्खा है कि जिसके सहायक विष्णुहैं व तपकाभी बलहै बस उसीकी जीति सदा होतीहै २४ तुमलोग धर्म से विहीन व तपस्या व सत्यसे रहितहो भला बल से कहीं कोई इन्द्र-पद पाताहै २५ विना तप किये विना धर्म्म यज्ञकिये हे पुत्रो ! बल अहङ्कारादि गुणोंसे कहीं इन्द्रपद मिलता है २६ इन्द्रपद पाकर भी तिससे भ्रष्टहोजाते हैं इससे पुत्रो तुमलोग विरोधरहित ज्ञान और ध्यानसे युक्तहो जाकर तपकरो व केशव भगवान्के संग वैरभी कभी न करो २७। २८ जब ऐसे पुण्यात्मा तुमलोग होगे तो धन्य होजा-वोगे और परमसिद्धि को पाओगे इसमें कुछ भी संशय नहीं है २९ जब महात्मा कश्यपजीने दैत्योंसे ऐसा कहा तो उनका वाक्य सुन-कर महापराक्रमी दानवलोग ३० शीघ्रतायुक्त उठकर बड़ीभक्तिसे कश्यपजी के प्रणाम करके सबोंने आपस में सम्मत किया ३१ फिर राजा हिरण्यकशिपु उन सब दानवोंसे बोला कि बस अब हम सब कार्य्योंका साधक तपही करेंगे ३२ फिर हिरण्याक्ष बोला कि हम भी अतिदारुण तप करेंगे व तपोबल से तीनोंलोक लीललेंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ३३ संग्राममें विष्णु व उस पापी इन्द्रको जीत-कर व सब देवताओंको मारकर इन्द्रपदलेलेंगे ३४ तब बलिनामदैत्य बोले कि हे दानवेश्वरो ! तुम लोगोंको ऐसा करना योग्य नहीं है क्योंकि विष्णुके साथ जो वैरहै वह नाशका कारणही है ३५ दान धर्म पुण्य तप व यज्ञोंसे उन हृषीकेशजीकी आराधनाकरके मनुष्य सुखको प्राप्त होतेहैं ३६ तब हिरण्यकशिपु बोला कि हम ऐसा कभी न करेंगे कि हरिकी आराधनाकरें क्योंकि अपना भाव छोड़-कर इसमें शत्रुकी सेवा करनी पड़ेगी ३७ शत्रुकी सेवा मरणसे भी अधिक होतीहै यह पण्डितों ने कहाहै विष्णुकी सेवा न हमीं करेंगे न औरही कोई दानव करेंगे ३८ तब अपने महात्मा पितामह से बलि फिर बोले कि धर्म्मशास्त्रों में तत्त्वज्ञानी मुनियों ने जो देखा है ३९ उसमें यह लिखाहै कि शत्रुको जैसे बने साधलेना चाहिये यही राजनीतियुक्त मतहै अपने को हीन जान व शत्रुको बलीजा-नकर ४० उसके पास जाकर अपने जीतने के समयतक वहींरहना

चाहिये जैसे जब दीपक जलता है तो सब अन्धकार सदैव जाकर अपने शत्रुदीपक की छायामें होरहता है ४१ व दीपक के तेल का शत्रु बत्ती है पर जब बत्ती जलाईजाती है तो तेल अपनी वैरिणी बत्तीमें होकर उसे अतिवेगसे प्रकाशितकरके अन्तमें उसे जलायही देताहै ४२ ऐसेही शत्रुको स्नेहकरके प्रथम प्रसन्न करनाचाहिये फिर अपना कार्य्य होजानेपर अलग होजाना चाहिये इस से देवताओं के संग स्नेह करनेके लिये चलनाचाहिये व वहां पहुँचकर धर्म्मभाव दिखाना चाहिये ४३ व यही मन्त्र कश्यपमुनिने भी पहले कहाहै कि देवदेव विष्णुसे वैरभाव छोड़कर तपकरो बस जैसा उन्होंने सम्मत दियाहै हे राजेन्द्र ! उसी के अनुसार अपना कार्य्य करो बलिके ऐसे वचन सुन प्रतापी दैत्यराज बोला कि हे पौत्र ! हम ऐसा अपना मानभङ्ग कभी न करेंगे ४५ तब और सब हिरण्यकशिपु के बान्धव तिस नीतिमें पण्डित से बोले कि बलिने जो पुण्य कहीहै वह देवताओं को प्रियकरनेवाली है ४६ इन्द्र के मानकरने हारी और दानवोंको भयङ्कर है हां उत्तमतप हम सबभी करेंगे ४७ बस तपसे देवताओंको जीतकर आप ऐन्द्रपद लेलेंगे ऐसा सम्मतकर व बलिका निरादर करके सबके सब ४८ ॥

चौ० करिहरिसङ्ग वैर मनमाहीं । चलेसकल जिय संशय नाहीं ॥
गिरिकानन दुर्ग्गमथल देखी । करनलगे दारुणतप पेखी ४९
कामक्रोध मद लोभ विहाई । निश्चल ह्वै दानव समुदाई ॥
ह्वै यकमनतप विविध प्रकारा । कीनभलीविधिसहित विचारा ५०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेतपश्चर्यावर्णनन्नाम दशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

दो० ग्यारहयें महँ दम्पती सोमशर्म्म सुमनाउ ॥
न्यासाहारी सुतचरित दयिता पतिहिसुनाउ १

ऋषिलोग इतनी कथा सुनकर फिर सूतजी से बोले कि हे सूत ! दैत्यों व दानवों के संग्राम की कथा हमलोगोंसे सर्व्वज्ञ आपने कही

अब इस समय महात्मा सुव्रतका चरित सुनने की इच्छा है १ वह महाबुद्धिमान् किसके पुत्रहुये व किसके गोत्रमें उत्पन्नहुये तिस विप्रने क्या तपस्या की और कैसे हरिजीको आराधन किया २ तब सूतजी बोले कि हे विप्रो! बुद्धिके प्रभावसे पहले कथा जैसे सुनीहै तैसे सुव्रत महात्मा को चरित कहेंगे ३ यह चरित पावन दिव्य कल्याणदायक व वैष्णव है सो तुम्हारे आगे विष्णुभगवान् के प्रसादसे सब कहते हैं ४ हे महाभाग्यवालो! पूर्व्व के कल्प में पापनाशन सुन्दर क्षेत्र नर्म्मदानदी के पुण्य तटपर वामन संज्ञक तीर्थ में ५ कौशिक के कुलमें एक द्विजों में उत्तम सोमशर्म्मा नाम ब्राह्मण हुआ वह पुत्र से हीनहोने से बहुत दुःखोंसे युक्त रहता था ६ व दारिद्र्यके दुःखसे सदैव पीड़ित रहता इससे पुत्र व धनकेपाने का उपाय दिनरात्रि सोचाकरताथा ७ एक समय सुमनानाम उसकी पतिव्रता स्त्रीने अपने पतिको चिन्तायुक्त नीचेको मुखकिये लज्जितकिया ८ व अपने कान्त की ओर देखकर वह तपस्विनी उससे बोली कि असंख्य दुःखों के जालोंसे तुम्हाराचित्त व्याकुल दिखाई देता है ९ सो हे महामति वाले! इस मोहसे तुम बनाय मूढ़से होगये हो अब चिन्ता छोड़दो हमसे अपना दुःखकहो व स्वस्थ होकर सुखीहोओ १० क्योंकि शरीर सुखाने केलिये चिन्ताके समान और कोई दुःख नहीं है जो चिन्ता छोड़कर वर्तमान होता है वह पुरुष सुखपाय हर्षित होताहै ११ हे विप्र! चिन्ता का कारण हमारे आगे कहो अपनीप्रिया का वचन सुन सोमशर्म्माजी उससे बोले कि १२ हे भद्रे! जो तुमने चिन्तन किया सो हम अपनी चिन्ता व दुःखका सब कारण कहेंगे उसेसुन विचारपूर्व्वक धारणकरो १३ हे सुव्रते! नहीं जानते कि किसपापसे हम धनसे व पुत्रसे विहीन हैं बस यही हमारे दुःखका कारण है १४ यह सुन सुमना बोली कि सुनिये हम सब सन्देहनाशन वचन कहती हैं वह उपदेश का स्वरूप है व सब विज्ञानों को दिखाता है १५ लोभ पापका बीजहै व मोह उसका मूलहै असत्य उसका स्कन्ध व मायारूप बहुतसी शाखाओं से फैलाहै १६ दम्भ व कुटिलता उस वृक्षके पत्रहैं और कुबुद्धि से वह सदा फूला रहता

है मिथ्याबोलना उसका सुगन्ध है व अज्ञान फलहै १७ छल पाखण्ड चोरी ईर्षा क्रूर और कूट स्वभाव के सब पापी ये सब उस मोहवृक्षके पक्षी हैं वे मायाकी शाखाओं पर बैठे रहते हैं १८ अज्ञान जानों उसका अच्छा फलहै व उसफलका रस अधर्म्म है तृष्णारूप जलसे उसकीवृद्धि होती है हे प्रिय! उसकी अश्रद्धा द्रवहै १९ व अधर्म्म उसका सुन्दर रस है वह कहतेही मधुरसा विदित होताहै लोभवृक्ष भीहै २० इस वृक्षकी छायामें जाकर जो मनुष्य प्रसन्न होताहै और दिनदिन में तिसके अच्छेफलों को खाता है २१ वह फलोंके रस अधर्म्म से पालित सन्तुष्ट मनुष्य नरकको जाताहै २२ इससे पुरुष को चाहिये कि उसके फलोंको देखकर लोभ न करे व धन पुत्रकलत्रादिकोंकी भी चिन्ता जो विद्वान्हो कभी न करे क्योंकि इनकी चिन्ता करना मूर्खोंका मार्ग्गहै मूर्खही इस बातकी चिन्ता सदाकिया करता है कि हमारे धन कैसेहो २३ । २४ व सुन्दरी भार्य्या कैसे मिले व पुत्र कैसेपावें इसप्रकार विमोहितहो रात्रिदिन चिन्ता किया करता है २५ कभी कभी उसी चिन्ता में क्षणमात्र बड़ा सुखभी देखने लगता है फिर जैसेही चैतन्य हुआ महादुःखसे पीड़ितहोनेलगताहै २६ इससे द्विज! चिन्ता व मोहको छोड़कर वर्त्तमानहो हे महामतिवाले! इससंसारमें किसीकेसाथ कुछ सम्बन्ध नहीं है २७ मित्र बान्धव पुत्र पिता माता नौकर व भार्य्या ये सब अपने सम्बन्ध से होतेहैं २८ यह सुन सोमशर्म्मा बोले कि हे भद्रे! वह सम्बन्ध कैसाहै जिससे सब धन पुत्रादि बान्धव उत्पन्न होतेहैं हम से विस्तार सहित कहो २९ तब सुमना बोली कि कोई २ तो ऋण के सम्बन्धी होतेहैं व कोई अपनी धरोहर के हरलेजानेके सम्बन्धी होतेहैं कोई लाभके देनेवाले व कोई उदासीन न प्रिय न शत्रु ३० बस चारभेदोंसे पुत्र मित्र व स्त्रियां होती हैं भार्य्या पिता माता नौकर स्वजन बान्धव ३१ ये सब भूतलपर अपने २ सम्बन्ध से उत्पन्न होतेहैं जो कोई किसी का न्यास अर्थात् धरोहर पृथ्वीपर हरलेताहै ३२ न्यासका स्वामी गुणवान् रूपवान् पुत्रहोकर हरने वालेके घरमें निस्सन्देह उत्पन्न होताहै ३३ व फिर न्यासापहारी

को दारुणदुःख देकर चलाजाताहै इसप्रकार न्यासका स्वामी न्यास हरनेवालेका सुपुत्रहोकर ३४ गुणवान् रूपवान् सबलक्षणयुक्त होता है व पुत्र होकर प्रति दिन उसको बड़ीभक्ति दिखाता है ३५ प्रिय व मधुर वचन कहकर अतिस्नेह दिखाता व रोगीहोता है फिर अपनाधन उससे ले व उत्तम प्रीति उत्पन्न कराके ३६ जैसे पूर्व्वजन्म में उसने अपना धन बड़े कष्ट से इकट्ठा करके उस के यहां न्यास स्थापित कियाथा व द्रव्यके उपार्ज्जन करने में प्राणनाशन दारुण दुःख उसे हुआ था ३७ वैसाही दुःख सुहृद्भावसे पुत्रहोकर वहअपने बड़े गुणों से उसे देता है थोड़ेही दिनों में मरजाता है ३८ इसप्रकारका दुःख बार २ देकर चलाजाताहै जब वह पुत्र २ करके रोदन करने लगता है ३९ तब वह हँसता है कि कौन किस का सुपुत्र व कौन किसका कुपुत्र इसपापी ने हमारा उपकार करनेवाला न्यास हरलिया था ४० द्रव्य हरलेनेसे पूर्व्वसमयमें हमको महादुःख दियाथा जिस असह्य दुःखको हम किसी प्रकार नहीं सहसके थे महाव्याकुल होगये थे प्राण तो नहींगये थे ४१ सो वैसाही दुःख इसे देकर अपना उत्तम धन इससे लेकर हम चलदिये हम इसके कैसे पुत्रठहरे ४२ न यह पूर्व्वजन्ममें हमारा पिताथा न इसीजन्ममें है इस दुष्टात्माको हमने पिशाचता दी है ४३ ऐसा कहकर बार बार उसको जन्मलेकर ऐसाही करके चलाजाताहै व फिर इसीमार्ग्गहोकर दारुण दुःख बार २ देकर आताजाता रहता है ४४ हे कान्त ! इस प्रकार न्यासके सम्बन्ध से पुत्र होते हैं व संसार में नानाप्रकार के दुःख जहां तहां दिखाते हैं ४५ ॥

चौ० ऋणसम्बन्धीतनयबखानत । कान्त तुम्हारे सम्मुख भानत ॥
सुनहुचित्तदै बहुरि विचारहु । तब तामहँ निजमन निरधारहु ४६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेसुव्रतोपाख्याने एकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

दो० बरहें महँ सुमना बहुरि सोमशर्म्म सों पुत्र ॥
ऋणसम्बन्धी आदि कह सुखद न यहां अमुत्र १
तैसे औरहु धर्म दम शौच नियम व्रत दान ॥
क्षमा दया मति शांति मुख की है कथा बखान २

सुमना अपने पति सोमशर्म्मा से बोली कि तुम्हारे आगे ऋण सम्बन्धी पुत्र कहती हैं जो जिसका ऋण लेकर मरजाताहै १ धनी पुत्र होकर वा भाई होकर वा पिता होकर वा स्त्री होकर ऊपर से तो वह मित्ररूप से दिखाई देता है पर अन्तःकरण से सदैव दुष्टही र-हताहै २ वह गुण तो देखता नहीं सदा क्रूरस्वभाव व निष्ठुर अपनी आकृति बनाये रहताहै व स्वजनों से सदा निष्ठुरही वचन बोलता है ३ आप नित्य मीठे २ पदार्त्थ भोजन करता व और भी नानाप्रकार के नित्यही भोग भोगताहै जुवा खेलनेमें सदा निरत रहताहै व चोरी करने की सदा इच्छा रखता है ४ घर से द्रव्य जबरदस्ती लेजाता है व रोकने पर क्रोध करता है पिता व माताकी निन्दा प्रतिदिन किया करताहै ५ व ऐसे वचन कहताहै जिससे वे भागजायँ वा डर-जायँ व महानिष्ठुर वचन सदा बकता बरबराता रहता है इस रीति से घर से सब धन खींच लेता है व सुखसे रहता है ६ प्रथम जात-कर्म्मादिकों में भी बाल्यावस्थामें बहुतधन खर्च करादेताहै फिर वि-वाह यज्ञोपवीतादि नानाप्रकारके भेदोंसे अनेकबार द्रव्य उड़वाताहै इस तरह द्रव्य क्षीणकराता है व आप लेकर कुछ उसमें मिलाता नहीं घर खेत आदि सब हमारेही हैं और किसीके नहीं इसमें संदेह नहीं हैं ऐसा सदा कहा करताहै ७ । ८ व पिता माताको प्रतिदिन मार-ता पीटता रहता है सोभी सुन्दर दण्डोंसे मूसलोंसे ताड़ित करताहै व ऐसे २ दारुणकर्म्म करताहै ९ कि पिता माताके मरजाने पर भी कुछ स्नेह नहीं प्रकट करता बरन महानिष्ठुरताको धारण करताहै सब कामोंमें सदा निष्ठुर व स्नेहरहितही रहता इसमें कुछभी संश-य नहीं मानता १० पिताके लिये श्राद्ध दानादिकभी कुछ कभी क-

रताही नहीं ऐसे ऋणपुत्र पृथ्वीपर होते हैं ११ हे द्विजश्रेष्ठ! अब तुम्हारे आगे शत्रु पुत्रका लक्षण कहती हैं वह बाल्यावस्थाही में सदा शत्रुता करता है १२ पिता माताको खेलताहीहुआ मारता पीटता है और मारकर हँसताहुआ चलदेताहै फिर आकर मारकर भागजाताहै १३ व फिर पिता माताके पास डरताहुआ आताहै नित्यक्रोधयुक्तही बना रहताहै बारंबार मातापिताकी निन्दाही करताहै १४ इस रीतिसे सदा वैरही के कर्म्म किया करता है बार २ पिताको मारकर फिर माताकोमारताहै १५ व पूर्व्वके वैरके प्रभावसे इस प्रकार वह दुष्टात्मा फिर २ आय २ मारता पीटतारहताहै अब उस पुत्रका लक्षण बताती हैं जिससे मातापिताको कुछ प्रिय लाभ होताहै १६ ऐसा पुत्र उत्पन्न होतेही बाल्यावस्थाहीमें लाड़प्यार व खेलकूदहीसे अपने पिता माता का प्रिय करताहै फिर जब कुछ अधिक अवस्था होती है समझने बूझने लगताहै तो निरन्तर मातापिता का प्रियही करताहै १७ भक्ति से उनको नित्य सन्तुष्ट रखताहै व शारीरक सेवा उन दोनोंकी अपने हाथों से करताहै सदा स्नेह करने मधुर वचन बोलने प्रियवाणी कहने से उनकी आज्ञामें रहता व प्रसन्न कराता १८ जब उनको मृतक जानताहै तो स्नेहके मारे बार २ रोदन करता है व सब श्राद्ध कर्म्मादिक बड़ी भक्ति से करता पिण्डदानादि क्रियाओं में अधिक धन लगाताहै १९ उनकी क्रिया करनेके समय उनका स्मरणकरके बार २ दुःखित होताहै व उनके परलोक की यात्राके लिये नाना प्रकारके दान देता है व स्नेहसे माता पिताको तीनों ऋणों से छुड़ाता है २० हे कान्त! हे महाप्राज्ञ! जिस पुत्रसे कुछ लाभ होताहै वह इस रीतिसे देता है इस में संदेह नहीं है व पुत्र होकर सदा ऐसेही कार्य्य करताहै २१ हे प्रिय! अब तुम्हारे आगे उदासीन पुत्रका सम्बन्ध व उसके लक्षण कहती हैं यह पुत्र सदा उदासीनतासे रहता है २२ न कभी कुछ माता पिता को दे न कुछ उनसे ले न कभी उन के लिये क्रोधकरे न सन्तुष्टही रहे न कभी माता पिताको छोड़ कहीं जाय न रहनेपर कुछ उनकी सेवाहीकरे न कुछ वैरभावही रक्खे २३ हे द्विजसत्तम! तुम्हारे आगे हमने सब कहा पुत्रोंकी गति ऐसी है

जैसे पुत्र वैसीही भार्य्या वैसेही पिता माता व बान्धव लोग २४ वैसेही भृत्यवर्ग व वैसेही घोड़े बैल आदि पशुगण हाथी भैंसे दासी दास सब ऋणसम्बन्धी होते हैं २५ सो हमारा तुम्हारा कुछ किसीने न पूर्व्व जन्ममें लियाहै न हम दोनों जनों नेही किसी का कुछ लियाहै न हम दोनोंने किसीके पास कुछ न्यास धराहै २६ न किसी का कुछ धरायाही है कि किसी का धन कुछ लिया हो व हे कान्त ! हम दोनोंने पूर्व्व जन्ममें वैरभी किसीके संग नहीं किया २७ न किसीका परित्यागही किया न और किसीका ग्रहणही किया ऐसा जानकर शान्त हूजिये व अनर्थकी इस चिंताको छोड़िये २८ किस के पुत्र प्यारी स्त्री और किसके स्वजन बांधव हैं उस जन्ममें तुमने न किसी का कुछ हरलिया न किसी को कुछ दिया २९ हे स्वामिन् ! फिर तुम्हारे धन कैसे आवे इस विषयमें विस्मय न करो हे द्विजोत्तम ! जो धन मिलनेको होताहै वह मिलताही है ३० विना यत्नही किये हाथमें आजाताहै व जो जानेवाला धन होताहै मनुष्य उसकी रक्षा बड़ेही यत्नसे करे पर वह चलाही जाताहै रक्षा करनेवाले के पास नहीं ठहरता ॥

चौ० इमिमनजानि शान्तचितहोऊ । त्यागहुचिंतासंशयदोऊ ॥
काके सुत काकी प्रियनारी । काके स्वजन बन्धु हितकारी ॥
काहू कर कोइ कहुँ नाहीं । समझि लेहु अपने मनमाहीं ॥
यह सम्बन्धरहित संसारा । देखिलेहु करि बहुत विचारा ॥
माया मोह मूढ़ नर सारे । पाप करत नित हाथ पसारे ॥
यह ममगृह यहपुत्रहमारो । यहभार्य्याइमिवचनउचारो३१।३४
अनृतलखात कांतसंसारी । यह बन्धन हमकहतविचारी ॥
जनियामहँ चितदैदुखलेहू । ममत्वच गुनिये सहितसनेहू ॥
इमिसमझायहुप्राणपियारी । सोमशर्म्म कहँ बहुत विचारी ॥
तबबोल्यहु सोभार्य्यापाहीं । वचनपरमप्रियज्याहिसमनाहीं ॥

जब इस प्रकार उनकी स्त्रीने समझाया तो ब्राह्मणों में उत्तम सोमशर्म्मा ज्ञानवादिनी हितकरनेवाली अपनी भार्य्यासे फिर बोले कि हे भद्रे ! तुमने सत्य कहा व जो कहा सब सन्देहोंका नाशनेवालाही

वचन कहा ३५ । ३६ तथापि सत्य के पण्डित साधुलोग पुत्रकी इच्छा करते हैं हे प्रिये ! जैसे हमको पुत्र की चिन्ताहै वैसी धनकी नहीं है ३७ इससे जिसी किसी उपायसे पुत्र हम अवश्य उत्पन्न करेंगे यह सुन सुमना फिर बोली कि पुत्रसे लोकों को जीतता है व पुत्र कुलको तारदेताहै ३८ हे महाभाग! सत्पुत्रसे पिता माता दोनों अच्छे प्रकार जीतेही बनेरहते हैं एक गुणवान् पुत्र श्रेष्ठ होताहै व निर्गुण बहुत पुत्रों से कुछ नहीं होताहै ३९ एक वंशको तारताहै व वे सन्ताप कराते हैं पूर्व्वकालमेंही हमने कहाथा कि अन्य पुत्र सम्बन्ध भागी होते हैं ४० पुत्र पुण्यसे मिलताहै व पुण्यही से कुल मिलताहै व पुण्यहीसे सुन्दरगर्भ मिलताहै इससे पुण्य अच्छीतरह करो ४१ जो उत्पन्नहोताहै उसकी मृत्यु अवश्य होती है व जो मृतक होताहै उसका जन्मभी अवश्यही होताहै पुण्य करनेसे सुन्दर जन्म मिलताहै व पापसंचय करने से मरताहै ४२ व हे कान्त ! पुण्यके कर्म्मोंसे धनका समूह मिलताहै यह सुन सोमशर्म्मा बोले कि हे प्रिये! हे भद्रे ! पुण्यका आचरण हमसे कहो व जन्मकाभी वृत्तान्त कहो सुपुण्य कैसा होताहै हमसे पुण्यका लक्षणकहो तब सुमना बोली कि जैसा हमने पूर्व्वसमय में सुनाहै प्रथम पुण्य कहती हैं ४३ । ४४ पुरुषहो वा स्त्री हो नीति से कार्य्य करने से कीर्त्ति प्रिय पुत्र धन ये सब पुण्योंसेही मिलते हैं ४५ हे कान्त ! पुण्य का लक्षण सत्य २ कहती हैं ब्रह्मचर्य्य रहनेसे सत्य बोलनेसे नित्य तप करनेसे दान देने से नियम करने से क्षमा करने से व शौचसे रहने से अपनी शक्तिभर अहिंसा करनेसे व गुरु वेद पुराण शास्त्र ईश्वर को मानने से ४६ । ४७ इन दश अङ्गों से पूर्णपुण्य मिलता है इन सबों के करने से पुण्य सम्पूर्ण होता है जैसे दशअंगों से गर्भ पूर्ण होता है ४८ जो धर्म्मात्मा मन वचन व कर्म्म तीनों प्रकारसे धर्म्म करता है धर्म्म प्रसन्नहोकर उसको पुण्यको पहुँचाताहै ४९ व वह बुद्धिमान् प्राणी जिस जिस कामको चाहता वह वह दुर्लभभी पाताहै सोमशर्मा बोले कि हे भामिनि ! धर्म्मकी कैसी मूर्त्तिहै व कैसे उसके अंग होते हैं ५० हे कान्ते ! प्रीतिसे कहो हमारे सुननेकी श्रद्धाहै सुमना

बोली कि हे द्विजोत्तम ! लोकमें धर्म्मकी मूर्ति किसने देखी है ५
सत्यात्मा धर्म्म अदृश्यहै उसे देवता दानव किसीने नहीं देखा अ
के वंश में उत्पन्न अनसूयाके पुत्र ५२ दत्तात्रेयके साथ हमने एकबा
धर्म्मको देखाथा धर्म्म तप बलसे वर्त्तमान उत्तम तपकरतेहुये इन
सेभी अधिक रूपवान् दत्तात्रेय व दुर्व्वासा दोनों महात्माओंको हम
देखाथा ५३ । ५४ दश सहस्र वर्षतक मनकी स्थिरताकरके निराहा
केवल वायु पान करतेहुये शुभदर्शन देनेवाले दोनों जनोंने काल बि
ताया ५५ व अच्छेप्रकार आराधना की परन्तु धर्म्मके दर्शन न हु
उतने कालतक दोनों पंचाग्नि तापते रहे व त्रिकाल स्नान करते
५६ । ५७ जलके मध्य में एकसमय दोनों जने स्थितथे कि इतने
उनदोनोंमें से तप से दुर्ब्बल मुनियोंमें श्रेष्ठ धर्म्मात्मा दुर्व्वासाजी
५८ धर्म्मके ऊपर क्रोध किया हे महाभाग ! जब मुनियोंमें श्रेष्ठ
र्व्वासाजीने क्रोध किया ५९ तो धर्म्म विप्रका रूप धारण करके व
आये ब्रह्मचर्य्यादि सबअङ्गोंसे वे बुद्धिमान् धर्म्मजीयुक्तथे ६० जैसे
ब्राह्मणकेरूपसे सत्यको सङ्गलियेथे व ब्रह्मचर्य्यभी विप्रका रूपधार
किये उनकेसङ्गथा व तपभी विप्रमूर्ति धारण कियेथा बुद्धिमान् द
भी द्विजोत्तमही की मूर्त्तिधारण कियेथे ६१ महाप्राज्ञ दान व नि
मभी विप्ररूपधारीथे व अग्निहोत्र भी ब्राह्मणही का रूप बनाये
इस प्रकार सब दत्तात्रेयजी व दुर्व्वासा के समीपआये ६२ हे द्वि
जोत्तम ! क्षमा शान्ति लज्जा अहिंसा व अकलहता ये सब स्त्री रू
धारण करके वहां आईं ६३ बुद्धि प्रज्ञा दया श्रद्धा सत्कृति शांति
पुण्य पञ्चाग्नि साङ्गोपाङ्ग वेद ६४ ये सब रूपधारण किये धर्म्म
संग आये व पुण्यात्मा स्वभाव अग्न्याधानादि और अश्वमेधा
यज्ञ सब ६५ अपने २ रूप व सुन्दरतासमेत सब भूषणों से भूषि
दिव्य माला वस्त्रधारणकिये दिव्य चन्दनादि सुगन्धित पदार्थों
अनुलेपनकिये ६६ किरीट और कुण्डलसे युक्त सुन्दर आभरणों
भूषित दीप्तिमान् सुन्दर रूपवाले व तेज की ज्वालाओं से घिरे
६७ इन सबों के संग धर्म्म परिवार समेत वहां आये जहां काल
समान क्रोधी दुर्व्वासाजीथे आकर धर्म्म जी वचन बोले ६८ कि

विप्र ! तपसेयुक्त होके तुमने कोप क्यों किया जिससे कि क्रोध कल्याण का नाशकरता है व तपका नाशकरताहै इसमें कुछसंशयनहींहै ६९ व क्रोध सब को विनाशताहै इससे क्रोध त्यागना चाहिये हे द्विज-श्रेष्ठ ! स्वस्थ होकर तपका फल भोगो ७० तब दुर्व्वासाजी बोले कि आप इन द्विजवरोंकेसाथ कौन हैं जो आये हैं व तुम्हारेसाथ अति-रूपवती व अलंकारयुक्त ये सात स्त्रियां कौन हैं ७१ हे महामतिवाले ! हमारे आगे तुम विस्तारसेकहो तब धर्म्म बोले कि ये ब्राह्मणका रूप धारणकिये सब तेजसे युक्त दण्ड हाथमें लिये सुप्रसन्नचित्त कमण्डलु हाथमें लिये तुम्हारे आगे ब्रह्मचर्य्य हैं आयेहैं इनकोदेखो ७२।७३ व और इन दीप्तिमान् द्विजोत्तम को देखो जो कपिलवर्ण पीले नेत्र के हैं ये सत्यहैं हे द्विजसत्तम ! ७४ व हे धर्मात्मन् ! उसी प्रकारके वैश्वदेवके समान प्रकाशित इनको देखो जो तप तुम सदा किया करतेहो ७५ वे यही हैं अपने पास आये हुये इन महाभाग्यवान् को देखो व प्रसन्नवाणीवाले दीप्ति संयुक्त सब जीवोंपर दया करने वाले ७६ ये दम आये हैं जो सदैव प्राणियों का पोषण करते हैं जटाधारे कर्कश स्वभाव पिङ्गलवर्ण अतितीव्र रूप महाप्रभु ७७ पापों के नाशक खड्ग हाथमें लिये अतिशान्त सदा पुण्य करनेवाले नित्य क्रियाओं से संयुक्त ७८ ये नियमहैं हे द्विजोत्तम ! तुम्हारे पास आये हैं व अनिर्मुक्त महादीप्तिमान् शुद्ध स्फटिक मणि के समान ७९ जल का कमण्डलु हाथ में लिये व दन्तधावन करमें किये द्विज ये शौचहैं तुम्हारे पासआये हैं ८० व अतिसाधु महाभाग्यवाली सत्य भूषणों से भूषित सब आभरणों से शोभित अङ्गवाली यह शुश्रूषाहै तुम्हारे निकट आई है ८१ व अतिधीर स्वभाव प्रसन्नात्मा गौररंग की हँसती हुई कमल हाथमें लिये सब कुछ सहनेवाली कमलन-यनी पद्मिनी के रूपकी ८२ दिव्य भूषणोंसे भूषित हे द्विजोत्तम ! यह क्षमा प्राप्त हुई है अतिशान्त सुन्दर प्रतिष्ठावाली बहुत मङ्गलों से युक्त ८३ दिव्य रत्न धारण किये दिव्य आभरणों से भूषित हे महा-प्राज्ञ ! तुम्हारे समीप शान्ति आई है ज्ञानरूपिणी ८४ बहुत सत्य से समाकुल परोपकार करने में निरत सदा मित भाषण करनेवाली

यह अकलहता तुम्हारे पास आई है ८५ प्रसन्न क्षमायुक्त सब आ-
भरणों से भूषित कमल आसनवाली स्वरूपवती यशस्विनी श्याम
वर्णवाली ८६ महाभागा यह अहिंसाहै आपके पास आई है व तपाये
हुये पक्के सुवर्ण के रंगवाली रक्तवस्त्रविलासिनी ८७ सुप्रसन्नमुखी
सुन्दर मन्त्र जपती हुई ज्ञानभाव से समाक्रान्त पुष्प हाथमें लिये
तपस्विनी ८८ मोतियों से जटित भूषणोंकी शोभासे युक्त निर्मल
सुन्दर हास करनेवाली हे महाभाग ! यह श्रद्धा है आई है देखो
देखो व बहुत बुद्धिसे भरीहुई व बहुत ज्ञान से युक्त सुभोगमें रूप
आसक्त किये सुन्दर प्रकारसे स्थित सुन्दर मङ्गलवाली ८९ । ९०
सब इष्ट ध्यानोंसे युक्त लोककी माता महायशस्विनी सब आभरणों
से शोभायुक्त पीनपयोधर पश्चाद्भागवाली ९१ गौरवर्ण माला और
वस्त्रों से विभूषित हे महाप्राज्ञ ! ये मेधा जी हैं आई हैं सो तो तुम्हीं
में टिकी रहती हैं ९२ हंस व चन्द्रमाके समान प्रकाशित मोतियों
का हार पहिने सब आभरणों से भूषित सुप्रसन्न मनस्विनी ९३
सफेद वस्त्र से युक्त कमल के समाननेत्र युक्त पुस्तक हाथमें लिये
कमलपर बैठी सदैव प्रकाशित ९४ यह प्रज्ञा भाग्यवान् तुम्हारे
पास आई है व लाख के रसके रंगवाली सदा प्रसन्न चित्त ९५ पीले
फूलों की माला पहिने हार नूपुर धारण किये मुँदरी व कंकणसेयुक्त
कानों में कुण्डल धारणकिये ९६ व सदा पीतवस्त्र से प्रकाशित तीनों
लोकों के उपकार और पोषण करनेमें अद्वितीय ९७ जिसका शील
सदैव रहताहै हे द्विजश्रेष्ठ ! सो दया तुम्हारे पास आई हैं ९८ व हे
महाप्राज्ञ ! ये वृद्धास्त्रीका रूप धारणकिये महादेवजी की भार्य्या जो
महातपस्विनी हैं आई हैं व हे द्विजश्रेष्ठ ! ये हमारी माता हैं व हे
सुव्रत ! हम धर्म्म हैं ९९ यह जानकर शान्त होवो व हमारा प्रति-
पालनकरो तब दुर्व्वासाजी बोले कि यदि आप धर्म्म हैं व हमारे स-
मीप इससमय आये हैं १०० तो आने का कारण कहिये व कौन
कार्य्य तुम्हारा हम करें धर्म्म बोले कि हे विप्रेन्द्र ! तुमने क्रोध क्यों
किया तुम्हारा किसने अप्रिय किया १०१ हे दुर्व्वासाजी जो मानो
तो इसका कारण हमसे कहो तब दुर्व्वासाजी बोले कि हे देव ! जिस

से हम क्रुद्धहुये उसका कारण सुनो १०२ हमने दम शौचादि महा-
क्लेशों से अपना शरीर शुद्धकरडाला व लाख वर्षतक हमने तप किया
१०३ पर तुम्हारे दया न आई कि आकर दर्शनदेते हे देव ! इसीसे
हमने क्रोध किया व तुमको शाप देनेपर उतारू हुये १०४ यहसुन
दुर्व्वासाजीसे महामति धर्म बोले कि हे महाप्राज्ञ ! जब धर्म्म नष्टहो-
जायगा तो लोक नष्ट होगा १०५ दुःखके मूल तो हमीं हैं व सबको
कष्टदेकर उसके अंगों से पापोंको निकाला करते हैं यदि कष्ट पाकर
प्राणी सत्यको नहीं छोड़ता तो पीछे फिर हम उसे सुखदेते हैं १०६
पापकरने में सुख प्रथम बहुत मिलता है व पुण्य बड़े दुःखसे मिल-
ताहै पुण्यही करते २ प्राणी अपने प्राणतक छोड़देताहै १०७ तब
हम उसे परलोकमें महासुखदेते हैं इसमें संदेह नहींहै दुर्व्वासाजी बोले
कि जब मनुष्यको बहुत सुख मिलता है तो धर्म्म को छोड़ अधर्म्मा-
दि करने लगताहै १०८ उसको कल्याण तुम प्रथमही नहीं देदेतेहो
यही बड़ाभारी अन्याय करतेहो जिस शरीर से पुण्य वा पापकरे उसी
से उसका फलभी भोगना चाहिये १०९ । ११० व जो अन्य शरीर
ने किया व उसका फल अन्य शरीरको दियागया तो यह कौन सी
न्यायकी वार्त्ता ठहरी यह तो महाअन्याय विदित होताहै १११ अ-
न्य शरीर से इस जन्म में जिसने तप आदिके क्लेश सहे उसे दूसरे
जन्ममें तुमने उसका फल दिया यह हमारे मतसे कल्याण की उत्तम
वार्त्ता नहीं है ११२ जिस शरीरसे श्रमकरके पुण्यकरे उसी से उसका
फलभी भोगना चाहिये यह नहीं कि अन्यका कियाहुआ पुण्य और
शरीरभोगे ११३ सुख तो उसी में होताहै कि जब आज एक ओर
पुण्य किया दूसरी ओर आजही पुण्यफल भोगनेको मिला ११४
बस ऐसेही जिस शरीरसे पापकरे उसीसे दुःख भोगने चाहिये सो
ऐसा नहीं होता पाप यहां इस शरीर से करता है दुःख उसे परलोक
में मिलता है जहां करनेवाला शरीर होताही नहीं ११५ यह जान-
कर कोई हे धर्म्म ! तुम्हारी ओर देखताही नहीं जैसे महापापी चोर
लोग अपना पाप भी जिस शरीरसे करते हैं तो दुःख भी उसी से
भोगकरते हैं ११६ उनको सदा दुःखही कठोर मिलता है सुख नहीं

मिलता ऐसेही यहीं पाप पुण्य करनेवालोंको दुःख सुख क्यों नहीं देदेतेहो धर्म्म बोले कि पापीलोग जिस शरीरसे जो पाप करते हैं ११७ उसीसे तो पीड़ा भी सहते हैं व पापका फलभी उसी से भोगते हैं पण्डितों ने धर्म्मशास्त्रों में दण्ड अलबत्ता दूसरे शरीर को लिखा है ११८ जब कि इस शरीर के पातक यहां के राजादिक को नहीं विदितहोते तो दूसरे शरीरको दण्ड दियाजाता है व यही हमारी भी आज्ञाहै दुर्व्वासा फिर बोले कि हे धर्म्म! यह हम न्याय नहीं मानते ११९ इससे क्रोधयुक्त हम तुम्हारे इसअन्यायके बदलेमें तीन शाप तुम्हें देंगे धर्म्म बोले कि हे विप्र! जो बहुतही क्रुद्धहो अब शापही दियाचाहतेहो क्षमा नहीं करते तो अच्छा ऐसा शाप दीजिये जिसमें हम दासीके पुत्रहों पर शाप देकर कहींका राजा बनाना व चाण्डाल बनाना १२० । १२१ क्योंकि प्रणतकेऊपर ब्राह्मणलोग प्रसन्न हो-कर सदैव प्रसाद करते हैं तब क्रोधयुक्त दुर्व्वासा धर्मको शाप देतेहुये बोले कि धर्म्म तुम हमारे शापसे राजा दासीपुत्र व चाण्डाल भी अपनी इच्छासे जाकर होवो १२२।१२३ ॥

चौपाई ॥

इमिदै महाशाप मुनिराया । गमन कीन मन तनिक न दाया ॥
यहि प्रसङ्गसों पूरबकाला । धर्म्महि हम देखा तनुपाला १२४
सोमशर्म्म बोले कहु प्यारी । फिर सो धर्म्म कौन तनुधारी ॥
यदि जानततुमताकर जनन् । कहहु मोहिं करिकै बहुमनन् १२५
बोली सुमना भारतवंशी । भयहु युधिष्ठिर भूप प्रशंशी ॥
दासीपुत्र विदुर भे फेरी । इइ भे धर्म्म शाप हियहेरी १२६
जब राजाहरिचन्द्रहि बाड़व । विश्वामित्र कीन अति ताड़व ॥
तब भे धर्म्म बहुरि चण्डाला । तीनजन्म की कथा रसाला १२७
धर्म्महु सकल कर्म्मफलभोगा । लहि दुर्व्वासा शाप सशोगा ॥
यहशुभचरितकहातव आगे । हमहुँयथामतिअतिअनुरागे १२८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेसोमशर्मोपाख्याने सोमशर्मसुमनासंवादेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

दो० तेरहयें महँ धर्म्म दम ब्रह्मचर्य्य दानादि ॥
सबके लक्षण हैं कहे क्षमा शांति नियमादि १

इतनी कथा सुनकर सोमशर्म्मा ने फिर पूँछा कि ब्रह्मचर्य्य का लक्षण हमसे विस्तार से कहो यदि जानतीहो तो बतावो हे भामिनि ! ब्रह्मचर्य्य कैसा होताहै १ सुमना बोली जो नित्य सत्यबोले पुण्यात्माहोकर स्वच्छरहै जब अपनी स्त्री रजोदर्शन के पीछे स्नानकरके शुद्ध हो तो उसके सङ्ग भोगकरे इससमय को छोड़ स्त्रियोंके दोषोंसे वर्जितरहै २ अपने कुलका सदाचार कभी न छोड़े हे द्विजोत्तम ! यह गृहस्थी में टिकेहुये ३ ब्रह्मचारीका लक्षण हमने तुमसे कहा व यही गृहस्थोंका भी लक्षणहै अब यतियोंका धर्म्म कहती हैं वह हम से सुनो ४ इन्द्रियोंके दमन करने व सत्यबोलने में सदायुक्तरहैं पाप से सदा डरतेरहैं नारीका सङ्गबराकर ध्यानधरने व ज्ञानकरने में टिके रहैं ५ यह सन्न्यासियों का ब्रह्मचर्य्य तुमसे हमने कहा अब तपके लक्षण कहतीहैं हमसेसुनो ६ आचारसे सदारहै काम क्रोधसे वर्जितरहै प्राणियों के उपकारही के लिये जो कुछ उद्यमकरै सो करै ७ यह तप का लक्षण कहा अब सत्यका कहती हैं जिसको परधन व परस्त्री देखकर उसके लेनेकी चटपटी न लगे उसका सत्यनामहै अब दानका लक्षण कहती हैं जिससे मनुष्य जीते हैं ८।९ जो अपना सुख इस लोकमें व परलोक में चाहै तो अन्नका महादानकरै १० व भूँखेको अपने आगे के ग्रास में से भी देडाले क्योंकि देने पर महापुण्य होता व अन्तमें वह अमृतपान करनेको सदैव पाताहै ११ अपने विभवके अनुसार प्रतिदिन दान करतारहै तृण शय्या मधुर वचन अत्यन्त ठण्ढी घरकी छाया १२ भूमि जल अन्न प्रिय व उत्तम वाक्य आसन व कुटिलतारहित वार्त्ता करना १३ अपने जीने के लिये नित्य जो इतने दान करताहै व देवताओं पितरोंकी पूजाकरके जो इस प्रकार दान करताहै १४ वह इसलोकमें भी आनन्दकरताहै व परलोक में प्रमुदित होताहै जो दान व पढ़ने से दिनको सफल करता रहता

है १५ वह देवहै मनुष्य नहीं है इसमें संदेह नहीं है अब धर्म्मसाधनका उत्तम नियम कहती हैं १६ जो देवताओं व ब्राह्मणोंकी पूजा में नित्यरत रहताहै व नित्यनियमसे दान व्रत १७ और उपकार करता है व नियमही से पुण्यके कार्य्य करताहै बस इसीका नियम नामहै हे द्विजसत्तम! अब क्षमाका रूप कहती हैं सुनो १८ जब कोई उसे ताड़ितकरे वा उसकी निन्दाकरे तब न उसे लौटकर ताड़ितकरे न क्रोध करे वैसेही सहले १९ व वह धर्म्मात्मा कुछ उससे अपना दुःख न माने वह यहां वहां दोनों स्थानों में सुखही भोगताहै २० इस प्रकार क्षमाका लक्षण कहा अब शौचका लक्षण कहती हैं बाहर व भीतर से जो शुद्ध रहता है नानाप्रकारके रागोंसेरहित रहता २१ व स्नान आचमन आदि के साथ सब भोजनादि के व्यवहार करता है इस प्रकार शौचका लक्षण कहा अब अहिंसाका लक्षण कहती हैं २२ विनाकार्य्य तृणभी जानबूझकर न काटे व अन्य किसी प्राणीको तो कभी मारे नहीं जैसे अपना शरीर समझे वैसेही औरों का बस इसी का अहिंसा नामहै २३ अब शान्ति कहती हैं शान्तिही से सब सुख मिलते हैं कोई अपने को कष्टभीदे पर आप शान्तिही करे २४ ऐश्वर्य्य देखकर कभी उफला न चले न वैरआदि दुःख देखकर घबरा उठे बस इसीका शान्ति नामहै अब अस्तेय कहती हैं २५ पराया धन कभी न हरे न पराई स्त्रीहरे सो न वचनसे न मनसे न शरीर से इन दोनों को हरे इसीको अस्तेय अर्थात् अचोरी कहतेहैं २६ हे द्विजसत्तम ! अब तुम्हारे आगे दमका लक्षण कहती हैं मनसे इन्द्रियों का सदा दमन करतारहै २७ क्योंकि इन्द्रियां सबलहोने से उसके आधे कर्म्मोंको तो करतेही करते नष्ट करदेती हैं इससे उनका दमन अवश्य होना चाहिये अब जैसी धर्म्मशास्त्रों में शुश्रूषा लिखीहै वैसी कहती हैं पूर्वके आचार्यों ने जैसे कहा है वाणी देह और मनसे गुरु कार्यको साधन करै २८ । २९ और जहां पर दयाहो उसी का शुश्रूषा नामहै ॥

चौपाई ॥

साङ्गधर्म्म तुमसन द्विजसत्तम । हमभाषा विधिसोंगुनिचित्तम ॥
अपर श्रवणकी है का इच्छा । हमसनकहिये करिकै शिक्षा ॥

जो नर करु इमि धर्म्म अचारा । निजवर्णाश्रम सहित विचारा ॥
सो सबतों उत्तम संसारा । जिमितुमसन हमकीनप्रचारा ॥
जो यह धर्म करत सो प्रानी । भवसागर तरिजात अमानी ॥
यह गुनि धर्म करहु मतिमाना । जो हम तुमसन कीन बखाना ॥
प्रियावचन इमि सुनिगुनिमनमें । सोमशर्म्म द्विजवरत्यहिछनमें ॥
बहुत विचारि नैज चितकेरी । कही बात तासों हितकेरी ३०।३५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुमनो पाख्यानेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

दो० चौदहयें महँ धर्म्मकृत पुरुष मरत ज्यहि भाँति ॥
सो सुमनानिजस्वामिसों कह्यहुलह्यहुगुणपाँति १

सोमशर्म्मा इतनी कथा सुनकर अपनी स्त्री सुमना से बोले कि हे भद्रे ! इस प्रकारका धर्म्मका उत्तम व्याख्यान तुम कैसे जानती हो व तुमने किससे सुनाहै १ सुमना बोली कि हे महामतिवाले ! हमारे पिता भार्ग्गवों के कुलमें उत्पन्नहुये च्यवन उनका नामहै व सब शास्त्रों के जानने में विशारदहैं २ उन ऋषि के हम एकही प्यारी कन्याथीं जो कि प्राणों से भी प्यारीथीं इस से जहां कहीं वे तीर्थादिक को जाते थे हमभी उनके सङ्ग जाती थीं ३ मुनियोंकी सभाओंमें जाते थे वा देवताओं के मन्दिरों में जाते थे तब भी हम उन के सङ्ग खेलती सदैव चलीजाती थीं ४ कि कौशिक के वंशमें उत्पन्न हमारे पिताके मित्र बड़े बुद्धिमान् वेदशर्माजी भाग्य से घूमते हुये प्राप्त हुये ५ वे बड़े दुःख से वारंवार चिन्तना करते थे तब आये हुये महात्मासे हमारे पिता बोले ६ कि हे सुव्रत ! आपको हम दुःखसे तपे हुये जानते हैं आप दुःखी कैसे हैं तिससे कारण कहिये ७ ये महात्मा च्यवनके वचन सुनकर तिन महात्मा हमारे पिता से वह सुव्रत वेदशर्मा बोला कि हे महाप्राज्ञ ! सब दुःखका कारण सुनिये मेरी स्त्री महासाध्वी और पातिव्रत्य में परायणहै ८।९ वह पुत्र हीन है मेरे वंश नहीं है जिससे कि आप ने पूंछा इसी से आप से

कारण मैंने कहा १० इसी समय हमारे पिता के स्थानपर एक सिद्ध आये उनकी हमारे पिता और वेदशर्मा ने उठकर ११ भक्तिपूर्वक उपहार भोजन के योग्य अन्न और मीठे वचनों से पूजाकी १२ और वेदशर्मा के प्रश्नको उन सिद्ध से पूछा तब मित्र वेदशर्म्मा समेत हमारे पितासे धर्मात्मा सिद्धजी १३ सब धर्मका कारण कहते भये जो कि मैंने आपसे कहा धर्म से पुत्र धन धान्य और स्त्रियां प्राप्त होती हैं १४ तब वेदशर्मा ने सम्पूर्ण धर्म किया तिस धर्म से पुत्र समेत बड़ा सुख उत्पन्न हुआ १५ तिसी संगके प्रसङ्गसे हमारे यह बुद्धि निश्चय हुई है हे कांत! मैंने जैसे बहुत शुभ आप से कहा १६ यह सब सन्देहनाशन मैंने तिस महासिद्ध से सुना है इससे हे विप्र! अब तुमभी सदैव ऐसाही धर्म्म करो सब तुम्हारे मनोरथ सिद्ध होंगे १७ यह सुन सोमशर्म्मा बोले कि धर्म्म करने से कैसी मृत्यु होती है व फिर जन्म कैसा होताहै हे कान्ते ! इन दोनों का लक्षण हम से कहो १८ सुमना बोली कि सत्य शौच क्षमा शान्ति तीर्त्थसेवा व पुण्यादिक धर्म्म जो करताहै उसकी मृत्युका लक्षण तुम से कहती हैं १९ मरणके समय न तो उसके रोग होताहै न उसके शरीर में कुछ पीड़ा होतीहै न कुछ उसको श्रम होता न ग्लानि होती है न पसीना उसके अङ्गों से आवे न उसके चित्तमें भ्रम होताहै २० व दिव्यरूप धारण करके वेदपाठी ब्राह्मणलोग व गन्धर्वगण वेद पढ़ २ व गीत गाय २ उसकी स्तुति करते हैं व वह अपने आसनपर स्वस्थचित्त बैठाहुआ वा लेटाहुआ उन लोगों की स्तुति व गान सुनकर आनन्दित होताहै व मरणसमय में देवपूजा करता हुआ रहताहै २१।२२ बहुधा किसी तीर्त्थ में जाकर धर्म में तत्पर होकर देह छोड़ताहै वा अग्निशाला में बैठकर प्राण छोड़ता अथवा गोशालामें वा किसी देवता के मन्दिरमें २३ वा पुष्पवाटिका में वा किसी तड़ाग के तटपर वा पिप्पल वटवृक्ष के नीचे वा ब्रह्मवृक्ष के नीचे वा बिल्वके नीचे अथवा तुलसी के समीप २४ वा अश्वशालामें अथवा गजशालामें स्थितहोकर प्राण छोड़ताहै अथवा अशोक आम्रवृक्षके नीचे २५ वा ब्राह्मणोंके समीप अथवा राजमन्दिरमें स्थित होकर वा उस रणभूमि

के भागपर प्राण छोड़ताहै जहां प्रथम मराहो २६ ये पुण्य मृत्युस्थान केवल धर्म्म करनेवालों कोही मिलते हैं अथवा धर्म्म करनेवाले की मृत्यु कहीं गौवों वा ब्राह्मणों के लिये समर करने में होती है २७ जो कोई धर्म्मवत्सल मनुष्य शुद्ध धर्म्म करता है वह मृत्यु के समय किसी न किसी युक्तिसे इन स्थानों पर पहुँच जाताहै २८ व उत्तम पुरुष अपनी माता व अपने पिता अपने इष्टमित्र बान्धवों को देखता हुआ सबों के सम्मुख आनन्द से प्राण छोड़ताहै २९ व पुण्यात्मा वन्दीजनों से वारंवार स्तुति किया गया पापियों को न देखता हुआ प्राण छोड़ताहै ३० गन्धर्व्व लोग गीत गाते हैं स्तुति करनेवाले स्तोत्रों से स्तुति करते हैं मन्त्र पाठों से ब्राह्मण लोग पूजित करते हैं व माता स्नेहसे पूजती है ३१ पिता व और भी स्वजन वर्ग्ग सब उस बड़े बुद्धिमान् धर्म्मात्माकी प्रशंसा उस समय करते हैं हे विभो! इस प्रकारके पुण्य स्थान तुमसे हमने कहे ३२ व प्रत्यक्षमें ऐसे स्थानों में प्राप्तहो स्नेहयुक्त हँसते हुये भगवद्दूतोंके दर्शन करते हैं न स्वप्नसे न मोहसे न पसीनेके साथ कभी वे प्राणी मरते हैं ३३ दूत जो आते हैं वे उस धर्म्मात्मासे कहते हैं कि आपको महाबुद्धिमान् धर्म्मराज बुलाते हैं इससे हे महाभाग! यहां आवो जहां धर्मराज हैं चलके वहां विराजो इसतरह वह आनन्द से जाता है ३४ न तो उसको मोहहो न भ्रान्तिहो न ग्लानिहो न स्मृतिविभ्रम हो कि किसी को न चीन्हे न कुछ उसे सन्देहहो वैसेही प्रसन्नात्मा स्थित रहता है ३५ ज्ञान विज्ञानसे सम्पन्न जनार्द्दन देवका स्मरण करता हुआ सन्तुष्ट व हर्षितमन उन दूतों के संग चला जाताहै ३६ एक शरीर में टिकाथा व एक शरीरको छोड़ दशयें द्वार अर्थात् ब्रह्माण्ड फोड़कर आत्मा निकलकर जाता है ३७ कि तो उसके चढ़ने के लिये पालकी आतीहै वा हंस वा विमान वा घोड़ा अथवा उत्तम हाथी ३८ उसके ऊपर छत्र लगा होता व चामर व्यजनादिकोंसे पवन संचार होताहै इस प्रकार सेवकलोग पवन करते ३९ व गाता हुआ व पण्डित लोग स्तुति करतेहैं वन्दीगण चारण व दिव्य वेदकेपारगामी ब्राह्मण ४० साधुलोग सब ओरसे यश गाय २ स्तुति करते

चले जाते हैं व दान करने के प्रभावसे पालकी आदिपर चढ़ाहुआ वह प्राणी वाटिका व पुष्पवाटिका के भीतरही भीतर होकर सुख से छायामेंही जाताहै व दिव्य अप्सरा मंगल वस्तु हाथों में लिये संग२ गाती चली जाती हैं ४१ ।४२ व देवता लोग स्तुति करते हैं इस प्रकार जाकर वह धर्म्मराजजी को देखता है व धर्म्म संयुत देवता लोग सम्मुख आके कहते हैं ४३ कि हे महाभाग ! यहां आवो व अपने मनमाने भोग भोगो ॥

चौपाई ॥

इमि सो सौम्य मूर्त्ति मतिमानहि । धर्मराजकहँ लखत अमाहि ॥
निज कृत पुण्य प्रभाव सुखारी । स्वर्ग भोग भोगत हितकारी ॥
भोग नाश पर पुनि सो प्रानी । जन्म लेत भूतल महँ आनी ॥
पुण्य शील ब्राह्मण के गेहा । क्षत्रियके गृह वा करि नेहा ॥
अथवा सधन वैश्य गृहमाहीं । जन्म लेत संशय कछु नाहीं ॥
धर्मकरतप्रमुदित तहँवासी । पुण्यकरतनितसुखीविलासी ४४ । ४७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐंद्रेसुमनो पाख्यानेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पंद्रहवां अध्याय ॥

दो० पंद्रहयें महँ पापकृत पुरुष मरत ज्यहि रीति ॥
सो सुमना निजस्वामिसों कह्यो बहुतकरि प्रीति १

इतनी कथा सुनकर सोमशर्म्मा फिर अपनी पत्नी सुमनासे बोले कि हे भद्रे ! पापियोंका मरण किन लक्षणोंसे होताहै हे भामिनि ! यदि जानतीहो तो वह हमसे विस्तारसे कहो १ सुमना बोली कि सुनो हम कहेंगी जैसे कि हमने उस सिद्धके मुखसे पापियों के मरने के लक्षण सुने हैं २ महापापियोंके स्थान व मरणसमयकी चेष्टा कहती हैं विष्ठा मूत्र ख्यँखार आदि अपवित्र वस्तुओंसे लिपीहुई पापयुक्त भूमिपर ३ पापी दुष्टात्मा प्राप्तहोकर बड़े दुःखों से प्राणोंको छोड़ता है व महाचाण्डाल भूमिको पाकर दुःखित होकर मरताहै ४ अथवा

जिसभूमिपर नित्य गर्दभ चरतेहैं बँधते हैं वहां मरताहै वा वेश्याके गृहमें जाकर मरताहै अथवा चमारके घरमें जाकर प्राणछोड़ताहै ५ वा हड्डी चमड़ा नख जहां बहुत पड़ाहोता अथवा अन्य पापके पदार्थ जहां होते वहां प्राप्तहो वह दुष्टात्मा पापी मरताहै यह निश्चितहै ६ वा अन्य पाप समाचारसे युक्त पृथ्वी पर पहुँचकर जैसे वेश्यादिकों के घरमें जाकर मरताहै अब पापियोंको लेनेकेलिये आयेहुये दूतों की चेष्टा तुमसे कहतीहैं सुनो ७ बड़े भैरव दारुणरूप महाघोर अतिकाले बड़े२ पेटवाले पीले नेत्रवाले वा नीले धूसरेरंगके नयनवाले वा अतिश्वेतरंगवाले वा बड़े पेटवाले ८ अतिऊँचे अतिविकराल सूखे मांस और चर्बीवाले भयानक डाढ़वाले कराल सिंहके मुख के समान मुखवाले हाथों में बड़े २ विषधर सर्प लिये ९ ऐसे दूतोंको देखकर वह पापी थरथर काँपने लगताहै व बार२ पसीना होआता है सियारी पर सवार मुखपसारे वे दूत १० आके उसके कान के नीचे सर्पोंको छोड़देते हैं फिर गले व कमर व पेटमें फांसीसे बांधते हैं ११ वह बार २ हाहाकार मचाताही रहता परन्तु वे ज़बरदस्ती खींच लेजाते हैं अब जब मरनेपर पापी होता है उसकी चेष्टा बतलाती हैं १२ जिन पापियों ने पराया धन हरलियाहै जिन्होंने पराई स्त्रीकी विडम्बना कराई है जिन पापियों ने ऋणलेकर लोभसे दिया नहीं अथवा किसीका सर्व्वधन हरलिया है इसीप्रकार अन्य महापाप कुदानलेना अन्त्यजोंकी धान्य भोजनकरना आदि जो पाप उसने किये हैं १३।१४ व जोई कोई पाप उससे पूर्व्व में कियेगये हैं वे सब उस महापापीके कण्ठमूल में आते हैं ये सब कफको गले में बढ़ाकर बड़ादुःख उत्पन्न कराते हैं व दारुण पीड़ाओंसे गला घुर्घुराने लगता है व माता पिता भाई बन्धुओंकी ओर देख २ रोदन करता व काँपता है व भार्य्या पुत्र का स्मरण बार बार करताहै फिर पीड़ाके मारे मोहित होकर भूलजाताहै १५।१८ व उसके प्राण बहुतपीड़ासे युक्त नहीं निकलतेहैं गिरताकांपता और वारंवार मूर्च्छित होताहै १९

चौ० सुनहु कान्त पापीके प्राना । गुदमारग ह्वै करत पयाना ॥
यासों दुर्गतिलहत न शङ्का । जिमि तिन कीन पाप दै डङ्का ॥

लोभ मोहयुत इमि खल प्रानी । यमपुर जात पाप तनु सानी ॥
जिमि यमदूत वहां पहुँचावत । सोदुख कहहमतुम्हैंसुनावत २०।२२

इति श्री पाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐंद्रेसुमनोपाख्या नेपापमरणाविवक्षानामपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

दो० सोलहयेंमहँ पापकृत पुरुष मार्ग्ग ज्याहिजात ॥
अरुतहँभोगतनरकजिमि कहसुमनायहबात १

सुमना फिर अपने पतिसे बोली कि उस दुष्टात्माको यमदूत उस मार्ग्ग में घसीटते हुये लेजाते हैं जिसमें अङ्गारों के ढेरके ढेर बिछे होते हैं इसीसे वह उसमें गिरता पड़ता उछलता बार बार छ-टपटाताहुआ जाता है १ व जिसमार्ग्गमें बारहों सूर्य्योंसे तपाया हुआ महातीव्र घाम लगताहै उस मार्ग्गहोकर सूर्य्यके किरणों से सन्तप्त उस पापीको लेजाते हैं २ व बीचमें छायाहीन नानाप्रकारके दुर्ग्गम पर्व्वतोंपर चढ़ाते उतारते क्षुधा पिपासासे पीड़ित उस दुष्टमतिवाले पापीको लेजाते हैं ३ व दूतलोग गदा खड्गोंसे व लोहेके दण्डों से पीटते मारते हुये व फरसोंसे काटतेहुये उसकी निंदाभी करते जाते हैं ४ फिर इसप्रकार जलाकर ऐसे शीतल पवनयुक्त मार्ग्ग में होकर लेजाते हैं जहां अत्यन्त शीतकेमारे बनाय व्यँठुरजाताहै इससे अ-तिदुःख पाताहै इसमें संदेह नहीं है ५ फिर वहांसे खींचकर दूत नानाप्रकारके दुर्ग्गम स्थानों में घसीटते हैं इसप्रकार देवताओं व ब्राह्मणोंकी निन्दा करनेवाला दुष्टात्मापापी ६ व और भी नानाप्र-कारके पापोंके करनेवाला यमदूतों से इसप्रकार पहुँचाया जाता है व वह दुष्टात्मा काले अञ्जन के ढेरके समान बैठेहुये यमराजको देखता है ७ जिनका बड़ा उग्र दारुण भयङ्कररूप होताहै व भयङ्कर दूतोंके बीचमें बैठे होते हैं व चारोंओर आधि व्याधि आदि सब रोग देहधारणकिये खड़ेहोते हैं चित्रगुप्त सम्मुख खड़ेरहते हैं ८ यमराजकी मूर्ति महिषपर चढ़ीहुई दिखाई देती है जिसके बड़े बड़े दांत व बड़ीभारी चौहड़ी होती है व बड़ाभारी भयानक कालके स-

मान मुख होताहै ९ वस्त्र वे पीत ओढ़े पहिने होते गदा हाथमें लिये व लालचन्दन लगाये होते हैं कालेही फूलोंकी माला धारणकिये हाथ में गदा लिये महाभयङ्कर मूर्ति होते हैं १० इसप्रकारके बड़ेभारी शरीरवाले धर्मराजको वह दुर्बुद्धि देखता है सब धर्म्मोंसे बाहर किये हुये आयेहुये उसे देखकर ११ उस पापी धर्म्मकण्टक दुष्टको यम-राज बड़ी कड़ी दृष्टिसे देखते हैं व देखतेही आज्ञादेते हैं कि नाना प्रकारकी पीड़ाओं से इसे महादुःख दो १२ बस सहस्रयुगपर्यन्त नानाप्रकारके नरकों में बार बार एकमें से निकालकर दूसरे में डा-लकर पचित किया जाता है १३ फिर वहां से यहां आकर नरककी योनि में उत्पन्न होता है फिर नानाप्रकार के कीड़ोंकी योनियों में जन्मता है व उसे अपवित्र पापी दुष्टलोग पकाकर खा भी लेते हैं व बार बार इसी प्रकार उस दुष्टात्मा का मरण होता है ऐसेही वह दुर्म्मति बार बार पापों को भोगता रहता है १४।१५ फिर जिन २ योनियों में जन्म होताहै उनके नाम भी कहतीहैं सौ जन्मतक तो कुत्तेकी योनियों में जन्मलेकर पाप भोगता है १६ फिर वह दुष्टात्मा व्याघ्र होता फिर गधा होताहै फिर मार्ज्जारयोनि में जन्मपाता फिर शूकरकी में फिर सर्पकी योनिमें १७ इसप्रकार नानातरह की सब तिर्य्यक् योनिमें उत्पन्न होताहै फिर नानाप्रकार के कौवा गीध आदि पापी पक्षियों की योनियों में जन्म पाताहै १८ फिर डोम चमारआदि चाण्डाल जातियों में फिर भिल्ल पुलिन्दआदि वनवासियों की योनियोंमें ॥

चौ० यहतुमसनपापिनकेजनन् । कहाविचारिचित्तकरिमनन् ॥
मरण बहुरि चेष्टा तिनकेरी । तुमसन भाषी कौन न देरी ॥
पापपुण्य सब कहे निबेरी । दारुणदुखदसुन्यहुहियहेरी ॥
अपरश्रवणकरनेकोकाहा।हमसनकहहुकहवममनाहा १९।२१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डे भाषानुवादेऐन्द्रेसुमनोपाख्याने पापपुण्यविवक्षानामषोड़शोध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

दो० कह्यो सत्रहें महँ सकल सोमशर्म्म द्विज केरि ॥
पूर्व्वजन्म वृत्तान्त सब मुनिवशिष्ठ हिय हेरि १

पूर्व्व अध्यायकी कथा सुनकर सोमशर्म्मा ब्राह्मण अपनी स्त्री सुमना से बोले कि हे देवि ! तुमने सब धर्म्मात्मा व पापात्माओं की गति व धर्म्मके लक्षण हमसे कहे अब यह कहो हम सर्व्वज्ञ व गुण युक्त पुत्र कैसे पावें १ हे महाभागे ! हे सुव्रते ! हे भद्रे ! यदि तुम जानतीहो तो परलोक और इस लोकमें जिस दान धर्म्मादिके करने से पुत्र मिले वह हमसे कहो उसको करें इसमें सन्देह नहीं है २ सुमना बोली कि तुम अब धर्म्मज्ञ वशिष्ठजीके निकटजाय उन महामुनिसे पूँछो उनसे तुम धर्म्मज्ञ व धर्म्मवत्सल पुत्र पावोगे ३ जब उसने ऐसा कहा तो द्विजोंमें उत्तम सोमशर्म्माने कहा कि हे कल्याणि ! तुम्हारा यह वचन हम करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहींहै ४ ऐसा कहकर सोमशर्म्मा द्विजोंमें उत्तम सब कुछ जाननेवाले दिव्य व सब तप करनेवालोंमें श्रेष्ठ वशिष्ठजीके निकट शीघ्रगये ५ जो मुनिराज गंगाजी के तीरपर पुण्य आश्रम में स्थित थे व तेजकी ज्वाला से मानो दूसरे सूर्य्यही के समान प्रकाशित थे ६ इस प्रकार ब्रह्मतेज से दीप्तिमान् द्विजोत्तम विप्रोंके स्वामी वशिष्ठजी के भक्तिसे बार २ दण्डवत्प्रणाम करके ७ उन पापरहित ब्रह्माजीके पुत्रसे महातेजस्वी सोमशर्म्मा पुण्य आसनपर बैठकर बोले ८ उनका वचन सुनकर महामतिमान् वशिष्ठमुनि सोमशर्म्मा से बोले कि हे वत्स ! तुम्हारे गृहमें पुत्र स्त्री भृत्यवर्गोंका ९ क्षेम तो है व हे महाभाग ! तुम्हारे सब पुण्यकर्म्मों में व अग्नियों में कुशलहै व तुम्हारे सब अंगोंमें नीरोगताहै व सदा धर्म्मका पालन करते रहतेहो १० ऐसा कहकर उस महाबुद्धिमान् फिर सोमशर्म्मा से कहा कि हे द्विजोत्तम ! कहो तुम्हारा क्या प्रिय इस समय हम करें ११ ब्राह्मण से ऐसा कहकर कुम्भ से उत्पन्न वशिष्ठजी चुप होरहे तब उन महामुनि व ऋषियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी के थँभजाने पर १२ सोमशर्म्मा सब प्रकाशमानों में श्रेष्ठ

वशिष्ठजीसे बोले कि हे भगवन्! सुप्रसन्नचित्तसे हमारा वचन सुनो १३ व यदि हमारा प्रिय आपको करना अङ्गीकार हो तो हमारे प्रश्न के अर्थ के सन्देह नाश करने में उद्यतहोवो १४ किस कारण से हमारे दरिद्रता सदा रहती है व पुत्रका सुख हमको क्यों नहीं होता हे तात! यह हमको संशयहै किस पापसे ये दोनोंबातें हमारेहैं १५ हम महामोह से मूढ़ होगये थे तब हमारी स्त्रीने बहुत समझाया व उसीकी प्रेरणासे हम आपके पास आये हैं १६ सो सर्व्व सन्देहोंके नाशनेवाला वचन हमसे आप कहें इस संसारबन्धनसे आप हमको मुक्तिके दाताहों १७ यह सुन वशिष्ठजी बोले कि पुत्र मित्र भ्राता व और भी स्वजन बान्धव पांचभेदों से पुरुषके सम्बन्धसे होतेहैं १८ वे सम्बन्ध के भेद सुमनाने तुम्हारे आगे पूर्व्वही कहे हैं हे द्विजोत्तम! वे सब पुत्र कुपुत्र ऋणसम्बन्धीहैं १९ अब पुण्यात्मा पुत्रके लक्षण तुमसे हम कहतेहैं जिसका आत्मा सदा पुण्य करने में लगारहताहो व सत्यधर्म्म में सदैव रतहो २० बुद्धिमान् ज्ञानसम्पन्न तपस्वी वाणी जाननेवालोंमें श्रेष्ठ सब कर्म्मोंमें धीर वेदअध्ययन करनेमें तत्पर २१ सब शास्त्रवेत्ता देव व ब्राह्मणोंका पूजक सबयज्ञोंका करनेवाला दाता त्यागी व प्रिय बोलनेवाला २२ विष्णुभगवान् के ध्यानमें नित्यपर शान्तचित्त इन्द्रियोंको दमन करनेवाला सदा सबका मित्र पिता माता की सेवा में नित्यपर व अपने सबजनों के ऊपर कृपाकरनेवाला २३ कुलका तारक विद्वान् अपने कुलकापालक ऐसे गुणों से सम्पन्न पुत्र सुखदायक होता है २४ अन्य सम्बन्धवाले पुत्र शोक सन्ताप के दायक होते हैं व फलहीन ऐसे पुत्र से जानो कुछ कार्य्यही नहीं चलता २५ वे सब सुदारुण ताप देकर आया जाया करतेहैं हे द्विज-सत्तम! पुत्ररूप से सब ऋणादि सम्बन्धी संसार में आ जाकर दुःख देते हैं २६ व पूर्व्वजन्मका कियाहुआ पुण्य जो तुम्हारे है जिसका पालन तुमने आजतक किया है वह सब तुमसे कहते हैं उस अद्भुत को श्रवण करो २७ हे महाप्राज्ञ! पूर्व्वजन्म के आप शूद्र हैं इस में कुछ सन्देह नहीं है खेती का काज किया करते थे ज्ञान से हीन थे व महालोभी थे २८ एकही तुम्हारे स्त्री थी व वैर तुम

सब से रखते थे पुत्र बहुत से थे देते किसी को तुम एक कौड़ी भी न थे धर्म्म को जानतेही न थे सत्य कभी सुना भी नहीं २९ दान तुमने कुछ दियाही नहीं शास्त्र कभी किसी पण्डित के मुख से सुना नहीं तुमने कोई तीर्थ किया नहीं व न कभी कोई उत्तम स्थानकी यात्राही तुमने की ३० बस हे विप्र ! एक ज्ञानलगाये बार२ वही खेती किया करते थे व पशुओं का पालन तथा गौवों का पालन ३१ भैसों का व घोड़ों का पालन बार २ करते थे हे द्विजसत्तम ! पूर्व्व जन्ममें तुमने इसप्रकार बड़े लोभसे बहुतसा धन इकट्ठा कियाथा उसका खर्च तुमने सुपुण्यमें कभी नहीं किया३२।३३व बड़े दुर्बल सत्पात्र ब्राह्मणकोभी आयेहुये देख कृपाकर तुमने कुछभी दान नहीं किया ३४ वनगो महिषी आदि जो तुम्हारे बहुतसे पशु थे उन्हींमेंसे किसी को दिया सब पशुओं को बेंच २ बहुत धन संचय करलिया था ३५ मट्ठा घी दूध दही सब बेंच लेते थे इसप्रकार विष्णुभगवान् की माया से मोहितहो दुष्टता के साथ काल बिताते थे ३६ हे ब्राह्मणसत्तम ! ऐसा बहुतधन होनेपरभी किसी को कभी कुछ नहीं दिया ऐसे निर्दयी तुम थे ३७ हे विप्र ! देवताओंकी पूजा तो कभी आपने कीही नहीं पूर्णमासी अमावास्या व्यतीपातादि पुण्यपर्व्वों में भी तुमने ब्राह्मणों को दान नहीं दिया ३८ व श्राद्धसमय आजाने पर कभी श्रद्धापूर्व्वक श्राद्धभी तुमने नहीं किया तुम्हारी पतिव्रता स्त्री कहती भी थी कि आज अमुक पुण्यका दिन है ३९ व आज श्वशुर के श्राद्धका कालहै व आज श्वश्रूके श्राद्ध का काल आया है हे महामते!तुम उसका वचन सुनकर उस दिन घरछोड़ भागजाते थे ४० न तो धर्म्ममार्ग्ग तुमने कभी देखा न किसी का कहाहुआ कभी सुना तुम्हारे लोभही माता पिता भाई लोभही स्वजन लोभही बांधव थे ४१ इससे धर्म्मको छोड़ तुमने केवल एक लोभहीका पालन सदैव किया इसीसे आप दुःखीहुये व दरिद्रता से अत्यन्तपीड़ित हुये ४२ व प्रतिदिन तुम्हारे हृदय में बड़ीभारी तृष्णा बनी रहती थी जब २ तुम्हारे घरमें धनकी बढ़ती होती थी ४३ तब २ अग्निरूप तृष्णा से तुम और भस्म होतेजाते थे रात्रि भर सोते

भी नहींथे इसी चिन्ता में लगे रहतेथे कि औरभी धनहो तो अच्छा है ४४ फिर जब दिन होता था तो महामोहित होते थे कि सहस्र लक्ष कोटि अर्ब्बुद हमारे धनहो तो अच्छा हो ४५ व खर्व्व निखर्व्व हमारे घरमें कब धनहोगा इसप्रकार जब सहस्रलक्ष कोटिअर्ब्बुद४६ खर्व्व निखर्व्व भी होगया तो भी तुम्हारी तृष्णा नहीं कम हुई इस प्रकार धीरे २ सब अवस्था बीतगई वृद्धता आनपहुँची ४७ न तो तुमने कुछ दान किया न होम किया न ब्राह्मणों को भोजन कराया न आपही कभी पेटभर तुमने खाया धनभी जो हुआ पृथ्वी खोद कर गाड़ते गये जहां कि पुत्र किसीप्रकार से न जान पावें ४८ व ऐसा कर द्रव्य आने के अन्य उपाय करने लग जाते थे व सदैव किया करते थे यद्यपि तुम बुद्धिमान् बड़ेथे पर धन बढ़नेका उपायलोगों से और भी पूँछा करते थे ४९ प्रथम पूँछते थे कि किसप्रकार रुपया गाड़े जो कोई जान न पावे फिर अन्यका धराहुआ धन कैसे जान लियाजाता है इसका विधान पूँछते थे इसप्रकार जिसी किसी से पूँछतेहुये भूँखेप्यासे भ्रमण कियाकरतेथे ५० रुपये सोने चाँदी को छूतेही परखने का उपाय सोचा करते थे व सिद्धिवाली कल्प रसायनादि विद्याओं का विचार किया करतेथे व विवरों का प्रवेश भी पूँछा करते कि कैसेही दुर्ग्गमस्थानमें कोई पदार्त्थ धराहो उसके निकालने का उपाय पूँछते थे ५१ इसप्रकार तृष्णारूप अग्नि से रात्रि दिन जलाकरते थे जिससे क्षणमात्र को भी कभी सुख नहीं मिलताथा तृष्णानल में जलकर मूर्च्छितहोकर अचेत हाहाकार मचाया करते थे ५२ हे विप्रेन्द्र ! इसप्रकार से मूढ़ताको प्राप्तहोथे कि कालके वशीभूत होगये तब तुम्हारी स्त्री पुत्रादिकों ने तुमसे पूँछा कि धन कहांहै ५३ पर तुमने न उनको दिया न उनसे बताया बस प्राणछोड़कर चलदिये व यमपुर का मार्ग्गलिया इस रीति से हमने सब तुम्हारा पूर्व्वजन्मका वृत्तान्त कहा ५४ ॥

चौ० यहीकर्म्मसों द्विजतुमभयऊ । निर्द्धनदरिद सकलदुखलह्यऊ ॥
यहि संसारमाहिं सुतजाके । भक्तिमान शुभगुणयुत ताके ५५
ज्ञानी शीलवान सचवादी । धर्म्मपरायण विगत विवादी ॥

जापर विष्णु करतहैं दाया । ताके सुत इमि होत सुभाया ५६
धनसुत धान्य कलत्र सुपोता । सो भोगन जो हरिजनहोता ॥
विष्णुविमुखपुरुषकहँ नाहीं । धनसुतादि भोगनको आहीं ५७
जापर श्रीहरिकेर प्रसादा । सो सुत धन भोगत गतवादा ॥
सुकुलसुजन्मपरमपदपावन । श्रीहरिकृपामिलतमनभावन ५८

इति श्रीपाद्ममहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऽद्रसुमनोपाख्यानेसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

दो० अठारहें महँ पुनि कह्यो मुनिवशिष्ठ इतिहास ॥
सोमशर्म्म किय धर्म्मजिमि पूर्व्वद्विजहि दै वास १

इतनी कथा सुन सोमशर्म्मा बोले कि पूर्व्वजन्म का कियाहुआ पाप तुमने हमारा कहा जो कि हमने शूद्रकी योनि में जन्म लेकर कियाथा १ पर हमने ऐसे पापी शूद्रके जन्मसे ब्राह्मणता कैसे पाई हे ज्ञानविज्ञानपण्डित! इस सबका कारण हमसे कहो २ वशिष्ठजी बोले कि हे द्विज! पूर्व्वजन्ममें जो तुमने धर्म्मका कर्म्म कियाहै वह तुमसे हम कहतेहैं यदि मानो तो सुनो ३ एक धर्म्मात्मा सदाचाररत पण्डित विष्णुजीका भक्त सुधर्म्मात्मा नित्य विष्णु में परायण ब्राह्मण था ४ वह बुद्धिमान् तीर्थयात्रा के प्रसंग से अकेला पृथ्वी पर भ्रमण किया करताथा घूमते २ एकसमय तुम्हारे गृहमें आया५ हे द्विजसत्तम! तुमसे उसने रहने के लिये एक घर मांगा तब तुम व तुम्हारी भार्य्या व तुम्हारे पुत्रोंनेभी उसको रहने के लिये घर दिया ६ व कहा ब्राह्मण आवो २ हमारे घर में सुखसे निवासकरो उस पुण्यात्मा वैष्णव ब्राह्मणसे बार २ तुमलोगों ने आदरपूर्व्वक कहा ७ कि हे सुव्रत! यह गृह आपही का है जहां चाहो सुखसे बसो आज हम धन्यहैं व आज सब पुण्य हमने किये मानो सब तीर्थोंको गये ८ व तुम्हारे दोनों चरणों के देखने से आज हमने बहुतसे तीर्थों के जाने का फलपाया इतना कहकर अतिपुण्य गोशाला तुमने उस ब्राह्मण के रहने के लिये देदी ९ व फिर उस ब्राह्मण के सब अंग

मर्दित करके फिर अपनेही हाथों से उस विप्रके चरणभी मींजदिये फिर उसके चरण अच्छे शुद्धजलसे धोये उसी जलसे तुमने स्नान करलिया १० फिर तुरन्तका घृत दधि दुग्ध अन्न और माठा अलग२ पात्रों में लाकर उस ब्राह्मण को दिया आपने उस महात्मा वैष्णव ब्राह्मणकी ऐसी सेवाकी ११ इसप्रकार स्त्री पुत्रोंसहित तुमने उस ज्ञानमें पण्डित महाभाग ब्राह्मणको बनाय सन्तुष्ट किया १२ उसके प्रातःकाल अतिपुण्यदायक व शुभ आषाढ़मासके शुक्लपक्ष की पापनाशनी एकादशी तिथिथी १३ वह सबपातकनाशनी तिथि उस ब्राह्मणको तुम्हारे यहां आनपड़ी जिसमें देव श्रीविष्णुभगवान् योगनिद्राको ग्रहण करते हैं १४ उसदिन सब बुद्धिमान् पण्डितों ने अपने २ गृहोंका सब कार्य्य छोड़ दिया केवल सबके सब विष्णुके ध्यान में परायण होगये १५ व गाय २ बजायकर सबों ने बड़ा भारी मंगल किया ब्राह्मणों ने आकर वेद व स्तोत्र पढ़ २ कर बड़ी भारी स्तुतिकी १६ ऐसा महोत्सव उस तुम्हारे ग्राममें देखकर वह ब्राह्मणसत्तम उस दिन वहां रहगया क्योंकि वह व्रतकी तिथिथी इससे वहभी उपवास कररहा १७ व उस ब्राह्मणने विष्णुशयनी उस एकादशी का माहात्म्य बांचा व अपनी स्त्री पुत्रों समेत तुमने वह उत्तम धर्म्म श्रवण किया १८ उस कथाको सुनकर तुम्हारी स्त्री व पुत्रों ने तुमसे कहा कि तुमभी व्रत रहो सो उनके कहने से व उस ब्राह्मणके संसर्ग से उसदिन तुमभी एकादशी व्रत रहगये १९ फिर योंही नहीं उन सबोंका सब पुण्यदायक वचन सुनकर तुमने निश्चय करके संकल्पकिया कि आज हम व्रतकरेंगे २० फिर अपनी स्त्री पुत्रों के संग जाकर तुमने नदीमें स्नानकिया व बड़े हर्षित मनसे हे विप्र! मधुसूदन भगवान्‌जीकी पूजाकी २१ जैसा गन्ध धूपादि सब पुण्यकारी सामग्री से श्रीहरिके पूजनका विधान लिखा है वैसेही पूजन तुमने किया व नाच और गाते बजाते हुये तुमने रात्रिभर जागरण किया २२ व ब्राह्मण के साथ प्रातःकाल फिर तुमने नदी में स्नान किया व फिर धूप गन्धादिकों से देवदेवेश श्रीविष्णु भगवान्‌का पूजन किया २३ व भक्ति से श्रीहरिके प्रणामकर बार २ स्नानकराये

व भगवान् को जो भोग लगाया वह उस महात्मा ब्राह्मण को देकर उसके भी प्रणाम किया व उस ब्राह्मणको भोजन कराके फिर दक्षिणाभी तुमने कुछदी तब अपनी भार्य्या पुत्रों के संग ब्राह्मण तुमने भी पारण किया २४।२५ यद्यपि तुमने अपनी स्त्री व पुत्रोंकी प्रेरणा से उन सहित व्रत किया परन्तु हे विप्र ! व्रत का फल तुम्हींने पाया जैसा कि पाना चाहिये था २६ इससे ब्राह्मणकी संगति से व श्रीविष्णुजी के प्रसादसे तुम ब्राह्मणताको प्राप्तहुये उस में भी सत्यधर्म्म युक्तहुये २७ व उस व्रतके प्रभावसे ब्राह्मणके महाकुलमें उत्पन्नहुये जो यह ब्राह्मणों का कुल सत्यधर्म्मोंसे संयुक्त होताहै २८ व जोकि तुमने उस महात्मा वैष्णव ब्राह्मण को उस द्वादशी तिथिमें बनाबनाया दिव्य भोजन करायाथा सोभी श्रद्धा व सद्भाव से २९ सो उस दानके प्रभावसे तुम को नानाप्रकार के मिष्टान्न भोगने को मिले व पूर्व्वजन्म के अन्य कर्म्मों के प्रभावसे महामोहसे युक्तहुये व सदा तृष्णा से व्याकुल मन बनारहताहै ३० व पूर्व्वजन्ममें तुमने इतना धन इकट्ठा कियाथा परन्तु न तो ब्राह्मणों को दिया न अन्यही दीनों को कुछ दिया ३१ व मारेलोभके मरते समय स्त्री पुत्रादिकों से भी नहीं बताया उस पापके प्रभावसे तुम दरिद्रहुये ३२ व पुत्रका लोभ व स्नेह तुमने छोड़दिया धन उनसे नहीं बताया इससे तुम इस जन्ममें पुत्रहीन हुये यह उसी पापका फलहै ३३ सुपुत्र सुकुल धन धान्य व श्रेष्ठस्त्रियां सुन्दरजन्म व अच्छी रीति से मरण सुभोग सुख ३४ राज्य स्वर्ग मोक्ष और जो जो दुर्लभ हैं ये सब पदार्थ महात्मा देव श्रीविष्णु भगवान्जी ही के प्रसादसे होते हैं ३५ इससे नारायण अनामय श्रीगोविन्दकी आराधना करके श्रीविष्णुके श्रेष्ठस्थान परमपद को पावोगे ३६ व सुपुत्र धन धान्य सुभोग व नानाप्रकार के सुख पावोगे पूर्व्वजन्म में जो कुछ तुमने किया था ३७ हे विप्र ! वह सब हमने तुम्हारे आगे विचारपूर्व्वक कहा सो हे महाभाग ! ऐसा जानकर अब तुम नारायणमें पर होवो ३८ ॥

चौपै० तब विधिसुतभाषी इमिवरवाणी सुनि भो विप्र प्रवीना ।
अतिहर्षितसोई अतिनतहोई मुनिहिप्रणामसुकीना ॥

करि भक्तिसुहावनि अतिमनभावनिजबबोधितभो आशू ।
तबमहाप्रभावा द्विजसुखपावा नयननमें भरिआंशू ३९
लै मुनि उपदेशा गो निजदेशा हर्षसहित मुनिराया ।
सुमनानिजप्यारी अतिहितकारी तासनसकलसुनाया ॥
भामिनितवनेहा वरमतिदेहा मुनिवशिष्ठ गुणखानी ।
तिनसकलसुनाई अतिहरषाई पूर्व्वजकथाबखानी ४०
नाश्यहु सबमोहा ममकरिछोहा मुनिवशिष्ठ विज्ञानी ।
सबपूर्व्व कहानी तिनममभानी जासों वे बड़ध्यानी ॥
अब हरिआगधी गतसबबाधी लहिहहुँ मोक्षअनूपा ।
अरु परपद पैहों सुखसों जैहों लखिहों सुरसुरभूपा ४१
सुनिकै पतिबानी अतिसुखमानी हर्षितह्वै अतिप्यारी ।
निजपतिसों बोली बात अमोली तासुचरण शिरधारी ॥
तुमधनिधनिस्वामी मुनिअनुगामी भयहुसुकृतकेकारी ।
मुनिकरसमभावनबहुविधिपावनकरहुसुहृदयविचारी ४२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुमनोपाख्यानेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

दो० उन्निसयें भार्य्यासहित सोमशर्म्म द्विजवर्य्य ॥
कीन तपस्यानेक विधि सोइ सूत कह अर्य्य १

सूत मुनियों से बोले कि महाप्राज्ञ सोमशर्म्माजी अपनी सुमना स्त्री समेत नर्म्मदानदी के पुण्यतटपर कपिलासङ्गमनाम पुण्यतीर्थमें १ स्नानकर शान्त आत्मा होकर देवताओं व पितरों का अच्छे प्रकार तर्प्पणकर कल्याणरूप श्रीनारायण का जप करतेहुये ब्राह्मण देव तप करनेलगे २ ध्यानयुक्त हो तिन देवदेव श्रीवासुदेवजी का द्वादशाक्षर मन्त्र जपने लगे ३ सदैव निश्चल होकर काम क्रोध से रहितहो आसन शयन सवारी और स्वप्नमें भी भगवान्‌ही को देखताभया ४ व महासाध्वी पातिव्रतकर्म्म में परायण महाभाग्यवती उनकी स्त्री सुमना तप करतेहुये अपने पतिकी सेवा करनेलगी ५ जब

इसप्रकार सोमशर्म्मा ध्यान करने लगे तो विघ्नों ने बहुत भय दिखाया बड़ेभारी विषधर काले सर्प तपकरते हुये उन महात्मा सोमशर्म्माके निकट आनेलगे सिंह व्याघ्र हाथीभी वहां आकर भय करने लगे ६।७ वेताल राक्षस भूत कूष्माण्ड प्रेत भैरव ये सब प्राणनाशन दारुण भय दिखानेलगे ८ व नाना प्रकारके भयङ्कर सिंह वहां आगये व अतिकराल दांतनिकाल २ वहां अतिभयङ्कर शब्दसे गर्जने लगे ९ परंतु महामति धर्म्मात्मा सोमशर्म्मा श्रीविष्णुजी के ध्यानसे चलायमान न हुये यद्यपि उन महारूढ़ विघ्नोंसे घेरेभी गये १० परंतु द्विजोत्तम सोमशर्म्मा ध्यान करतेही रहे किंचिन्मात्रभी चलायमान न हुये बड़ेप्रचण्ड वर्षा के साथ पवन चलते जिन के कारण अतिशीत से पीड़ित होते पर अपने ध्यानहीमें तत्पररहे ११ और महाभयंकर गर्जता हुआ सिंहभी वहां आया उसको देखकर भयसे डर कर ब्राह्मण नृसिंहजीको स्मरण करनेलगे १२ जोकि इन्द्रनीलमणि के तुल्य श्याम स्वरूप पीताम्बरओढ़े महापराक्रमी शंख चक्र गदा कमल चारोंहाथोंमें धारण किये १३ व बड़े मोतियों का हार पहिने जो कि चन्द्रमाके तुल्य श्वेतथा व कौस्तुभ रत्नसे शोभित १४ दिव्य श्रीवत्ससे विराजमान हृदय से शोभित सब आभरणों की शोभासे शोभित कमलसम नेत्र १५ मन्द २ मुसुकाते हुये प्रसन्नमुख होनेसे रत्नों से अतिशोभित व अतिभ्राजमान श्रीहृषीकेशजी का ध्यान करतेरहे १६ व उन्हीं शरणागतवत्सल श्रीकृष्णचन्द्रजी का स्मरण करतेरहे व कहते थे कि देवदेव श्रीहरि के नमस्कार हैं हमारा भय क्याकरेगा हम आपहीकी शरण हैं १७ जिन महात्मा के उदर में तीनों लोक ये व सात नीचेवालेभी वर्त्तमान रहते हैं उन श्रीविष्णु जी के शरण में हैं हमारा भय क्या करेगा १८ जिनसे कृत्यादिक महाबलवान् भय वर्तमान होते हैं उन सब भयोंकेहर्त्ता श्रीहरिके हम शरण में हैं १९ व जो सब पापों से व दानवोंके महाभयों से विष्णु भक्तों की रक्षा सदा कियाकरते हैं हम उन्हींके शरणमें हैं २० जो सब देवता और महात्मा कृष्णभक्तोंकीजो गति हैं हम तिनकी शरण में प्राप्त हैं २१ जो भयों को नाश करके अभय करते हैं व जानकर

पापोंको नष्ट करते हैं व आप एक चन्द्रस्वरूपी शुद्धहैं हम उन्हींके शरणमें हैं २२ व जो विष्णुभगवान् व्याधियोंके नाशनेकेलिये औषध स्वरूपी हैं व आप रोगरहितहैं व सदा आनन्द से रहते हैं हम उन्हीं के शरणमें हैं २३ जो अचल होकर लोकों को चलायमान करते हैं और पापरहित होकर ज्ञानको देते हैं तिनकी मैं शरण में प्राप्तहूं भय हमारा क्या करेगा २४ और जो विश्वात्मा रोगरहित होकर सब साधुओंका पालन करतेहैं और संसारकी भी रक्षा करते हैं हम तिनकी शरण में प्राप्तहैं २५ जो सिंहरूपसे आगे भय दिखलाते हैं उन नृसिंहजीके शरणमें होकर उनके प्रणामकरते हैं २६ व जिनके शरण में मद से मत्त बड़ी देहवाला वनका हाथी आया व उसकी रक्षाकी उन गजकी परमगति शरणागतवत्सल श्रीहरिके शरणमें हैं २७ व गजका मुख धारण किये ज्ञानयुक्त पाश और अंकुश धारण किये काल के समान मुखवाले हाथीकीसी तुंडवाले श्रीविष्णुजी के शरण में हैं २८ व जिन्होंने शूकरावतार धारणकरके महाअसुर हिरण्याक्षको मारा उन शूकरजी के हम शरण हैं और शरणागतवत्सल वामनजी की हम शरणमें हैं २९ छोटे कूबरे प्रेत कूष्माण्डादिक करनेवाले श्रीवामनजी सब मृत्युरूप धारण किये हमको भय दिखाते हैं ३० व हम अमृतरूप श्रीहरिके शरणमें हैं तो भय हमारा क्या करेगा जो श्रीहरि ब्रह्मण्य ब्रह्म देनेवाले ब्रह्मा व ब्रह्म ज्ञानमय हैं ३१ उनके हम शरणहैं हमारा भय क्या करेगा भयके खण्डनकरनेवाले व दुष्टों को भय देनेवाले अभय श्रीविष्णुभगवान् के प्रपन्नहैं ३२ जिन्होंने भयरूप होकर अवतार लियाहै फिर भय हमारा क्या करेगा व जो सब लोकोंके तारकहैं व सब पापियों के मारकहैं ३३ उन धर्म्मरूप जनार्द्दनजी के हम शरणहैं जोकि रण में देवताओंको अभय देते और अद्भुत देह धारणकरते ३४ तिनकी हम शरण में हैं ये हमारी सदागति हैं यह बड़ा झञ्झारूप पवन सब ओर से महाशीत उत्पन्नकरके पीड़ित करताहै ३५ इसलिये उन पवनस्वरूप श्रीहरिके शरणमें हैं अतिशीत अतिवर्षा अतितापदायक घाम इन सबोंका रूपधारी जो हरिहै मैं उसके शरणहूँ व ये सब

कालस्वरूपी भयदायक चंचलरूप सब हमको भयदेतेहैं ३६।३७ हरि स्वरूपी इनसबोंके भी शरणमें हमहैं ३८ जो सब देवोंका देव व हम सबोंका परमेश्वर केवल ज्ञानमय प्रदीपरूपहै व जो एक नारायणरूप आदिसिद्धस्वरूप है उस सिद्धेश्वर के हम शरणमें हैं ३९ इसप्रकार भक्तिसे क्लेशनाशन उन केशवभगवान्‌की नित्य स्तुतिकरते व ध्यान करतेहुये सोमशर्म्माने श्रीहरिको अपने हृदयमें स्थित करलिया ४० तब सोमशर्माका उद्यम व पराक्रम देखकर प्रकटहो अतिहर्षितहोकर श्रीहरि बोले कि ४१ हे महाप्राज्ञ सोमशर्म्माजी ! अपनी भार्य्यासहित हमारा वचन सुनो हम वासुदेव हैं प्राप्तहुये हैं इससे हे विप्रेन्द्र ! हे सुव्रत ! तुम हमसे वरमांगो ४२ जब श्रीहरिने ऐसा कहा तो नेत्र खोलकर सोमशर्म्माने देखा आगे घनश्याम विश्वेश्वर महोदययुक्त ४३ सब आभरणों की शोभा से युक्त सब आयुध धारण किये दिव्य लक्षणयुक्त कमल सदृश नेत्रवाले ४४ पीताम्बर धारण करनेसे विराजमान शंख चक्र गदा पद्म धारणकिये गरुड़पर आरूढ़ ४५ व महायशस्वी ब्रह्मादिकों के धारण करनेवाले व सब जगत् के धारक इस विश्वसे सदा अन्यत्र व रूपरहित जगत्‌के गुरु ४६ श्री हरिभगवान् खड़ेथे बस अतिहर्षितहो दण्डवत् प्रणामकर लक्ष्मीयुक्त कोटिसूर्य्यसम प्रकाशित श्रीहरिके ४७ हाथजोड़ अपनी भार्य्यासुमनासमेत स्तुतिकरनेलगे व जय२ हे मानद माधव ! जय२ यहकहा ४८॥

चौपाई ॥

जय योगीश जयाच्युत केशव । जय योगीन्द्र रमाधव मामव ॥
जय शाश्वत जय सर्व्वग देवा । जय मखमय करते तव सेवा ॥
जय सर्व्वेश्वर यज्ञ स्वरूपा । जय अनन्त नम करत अनूपा ॥
यज्ञ ज्ञान युत श्रेष्ठ जयाव्यय । ज्ञाननाथजयजयमतिवरजय ॥
जय जय पाप विनाशन हारे । जय पुण्येश पुण्य प्रतिकारे ॥
ज्ञान स्वरूप ज्ञान गम तोरे । करत प्रणाम हरहु भय मोरे ॥
कमल नयन जय पंकजनाभा । करतप्रणाम लखत तवआभा ॥
जय गोविन्दरु जय गोपाला । शंख चक्रधर रूप विशाला ॥
गदापाणि जय नमत तुम्हारे । व्यक्ताव्यक्त स्वरूप उदारे ॥

जय विक्रम शोभांग मुरारे । विक्रम नायक हरु दुख सारे ॥
जय लक्ष्मी विलास जय देवा । नमो नमो करि करत सुसेवा ॥
जय विक्रम शोभा युत श्यामा । उद्यम नायक वरगुण धामा ॥
उद्यम करण जयाच्युत आजू । सकल कर्म्म उद्यत गुणभ्राजू ॥
उद्यम भोग्युद्यम त्रय धारक । नमत चरणयुग तवजनभारक ॥
युद्धोद्यम प्रवृत्त धर्म्माकर । धर्म्मरूप बिनवत मतिसागर ॥
नमो हिरण्यरेत तेजोऽधिप । प्रणमत तव पद पाप दूरक्षिप ॥
अतितेजस्स्वरूप तेजोमय । दैत्यतेजनाशकरु रहित भय ॥
पाप तेजहर गोहितकारी । द्विजहितकरण सदा तनुधारी ॥
हुत भोक्ता परमात्मा स्वामी । अनल रूप बिनवत वरधामी ॥
कव्य रूप नम स्वधा स्वरूपा । सदा नमत तव चरण अनूपा ॥
स्वाहा रूप यज्ञ वर रूपा । नमोनमो हम मति अनुरूपा ॥
करत शार्ङ्गधर हरि नम तोरे । पापहारि हरिये अघ मोरे ॥
सिंहविनाशन ज्ञान विलासी । विज्ञशिरोमणि सब गुणरासी ॥
पावन पुनि वेदान्त स्वरूपी । नमो नमो हम करत निरूपी ॥
नम हरिकेश क्लेशहर तेरे । केशव नमत हरहु दुख मेरे ॥
विश्वधारि पर पुरुष तुम्हारे । करत प्रणाम दहहु अघ सारे ॥
कृष्ण बुद्ध सब हर्ष स्वरूपा । आनँदमय तव रूप निरूपा ॥
नित्यशुद्ध केवल हरवन्दित । विधिपूजितसबकालविनन्दित ॥
इन्द्रादिक सुर नमित परात्मा । कृष्णनमत तवचरण दृढ़ात्मा ॥
अजित सुरेश अमृत भगवन्ता । करत प्रणाम निहोरि अनन्ता ॥
क्षीरजलधिवासी कमलाप्रिय । नम ॐकाररूप हरिकरि हिय ॥
व्यापी व्यापक व्यसनविनाशी । नमोनमो नित करत महाशी ॥
नमो वराहरु वामन रूपा । कूर्म्म नृसिंहरूप सुरभूपा ॥
सर्व्वक्षत्र नाशन द्विजरामा । करत युगलकरजोरि प्रणामा ॥
सर्व्वज्ञानमय मीन मुरारी । रावणनाशक जनभयहारी ॥
राम कृष्ण अरु बुद्ध स्वरूपा । म्लेच्छविनाशिकल्किअनुरूपा ॥
कपिलदेव हयकण्ठ तुम्हारे । व्यासदेव सब पाप सँहारे ॥
करत प्रणाम धाम निजदेहू । सदा करहु निजचरण सनेहू ॥

स्तुतिकरि पुनि कह करजोरी । जगन्नाथ जगदीश निहोरी ॥
तव अपार गुण पार न पावत । ब्रह्मा रहत सदा नित गावत ॥
रुद्र सहस्रनयन नहिं जानत । तवगुण कहन हारिहियमानत ॥
मैं किमि कहहुँ कहां मति पावहुँ । यासोंसबविधि विनयबतावहुँ ॥
निर्गुण सगुण कीन स्तुति तोरी । क्षमा करहु हौं दास निहोरी ॥
जन्म जन्म मोपर करु दाया । केशवहोय कबहुँ नहिं माया ८९।७५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुमनो
पाख्यानेएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

दो० बिसयें महँ श्रीहरिकृपा सों पुत्रादिक पाय ॥
सोमशर्म्म सुख लहि कियो धर्म्म पुण्य यह गाय १

श्रीविष्णुभगवान् सोमशर्म्माकी बड़ी स्तुति सुनकर बोले कि हे द्विज ! हम तुम्हारे तप पुण्य सत्य व इस पावन स्तोत्र से बहुत सन्तुष्ट हुये इससे जो चाहो वरमांगो १ चाहे बड़ा दुर्लभ भी वर तुम्हारे मनमें होगा पर हम देंगे जो कामना करोगे उसीको हम पूरी करेंगे २ यह सुन सोमशर्म्मा बोले कि हे कृष्ण ! जो सुप्रसन्न मन से हमारे ऊपर आपकी दयाहुईहो तो प्रथम हमको यह वर मिले कि ३ जन्मजन्मान्तर को प्राप्तहोकर हम सदा आपकी भक्तिकरें व जिस लोकमें हमको आप रक्खेंगे वह मोक्षदायक अचल लोक दिखादें ४ व फिर अपने वंश का तारक दिव्य लक्षणसंयुत विष्णुभक्ति में तत्पर हमारे वंशका बढ़ानेवाला ५ सर्वज्ञ सब कुछ देनेवाला इन्द्रियोंको दमन करनेवाला तप व तेजसे युक्त देवता व ब्राह्मणलोगों का पालक व इन दोनों की पूजा सदैव करनेवाला ६ देवताओं का मित्र पुण्यभाव का दाता ज्ञानी पण्डित ऐसा पुत्र हमको दीजिये व हे केशव ! हमारा दारिद्र्य हरलीजिये ७ यह सब हमारेहो इस में सन्देह नहीं है बस यही आपसे वरमांगते हैं यह सुन श्रीभगवान् बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ ! हमारे प्रसाद से तुम्हारे वंशके तारनेवाला पुत्र होगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है व मनुष्यों के दुर्लभ सब

भोगों को तुम भोगोगे ८। ९ व पुत्र उत्पन्न होनेका सुख देखते हुये सब सुख भोगोगे हे विप्र ! जब तक जीवोगे तब तक किसी प्रकार का दुःख न देखोगे १० व तुम नानाप्रकार के पदार्थ सब दोगे व आप सब पदार्थ भोगोगे व गुणों के बड़े ग्राहक होगे इसमें सन्देह नहीं है व सुन्दर किसी तीर्थ में मरकर परमगति पावोगे ११ स्त्रीसहित ब्राह्मण को ऐसा वरदेकर श्रीहरि अन्तर्द्धान होगये व स्वप्न सा सब दिखाई दिया १२ व अपनी सुमना स्त्रीके साथ ब्राह्मणोंमें उत्तम सोमशर्म्मा नर्म्मदाके तीर पुण्यदायक तीर्थ में १३ जिसका अमरकण्टक नाम है दान पुण्य करने लगे व बहुत दिनों तक ऐसा पुण्यदान करते हुये सोमशर्म्मा ने १४ अपने आगे कपिला व नर्म्मदाके सङ्गम में स्नान करके निकले हुये एक श्वेत रङ्गके हाथी को देखा १५ जो कि सुन्दर प्रकाशित दिव्य स्वरूप सुन्दर मदयुक्त गज लक्षणों से युक्त नाना प्रकारके भूषणों से भूषित बड़ी शोभासे युक्त १६ सिन्दूर कुंकुम उसके मस्तकमें लगा हुआ था व सुवर्णकी झूल उसके ऊपर पड़ी जिसमें नीलमणि बीच बीच में जटित थे व ऊपर पताका लगीथी १७ व उसके ऊपर अच्छी दीप्तिवाला सुन्दर लक्षणयुक्त सब आभरणों से भूषित सुन्दर माला और वस्त्र धारण किये सुन्दर चन्दन लगाये अत्यन्त सुन्दर पूर्ण चन्द्रमा के समान छत्र और चामर संयुक्त एक दिव्य पुरुष बैठाथा सिद्ध चारण और गन्धर्वों से स्तुति किये गये मंगलरूप हाथीपर चढ़े जाते हुये हाथी समेत सुन्दर दिव्य लक्षणयुक्त पुरुषको देख विस्मययुक्त सोमशर्म्मा ने विचारा कि सुन्दर अङ्गवाला अच्छा व्रतधारे राह में प्राप्तहोकर कौन पुरुष जाताहै यह ये चिन्तनाही करते थे कि वह उन्हीं के द्वार पर आया १८। २२ व उनके गृहमें पैठने के समय दिव्यरूप होगया जैसा कि देवताओं का रूप होताहै तब बड़े हर्ष से युक्तहो द्विजों में उत्तम सोमशर्म्मा २३ धर्म्मात्मा अपने गृहको चले जैसे घरके द्वार पर आये फिर उस हाथी को उन्हों ने न देखा २४ केवल उसके ऊपर से अतिसुगन्धित कुछ पुष्प गिरपड़े थे उन्हें उन्हों ने देखा व गृह में जानेपर अपने आँगन में दिव्य वस्त्र नानाप्रकार के ठौर ठौर

पड़े धरेदेखा २५ व देखा कि सब गृह चन्दन व कुंकुम और पुष्पकारी सुगन्धोंसे पुताहुआहै व आँगनमें दूब अक्षत बहुतसे पड़ेहुयेहैं २६ यह सब देख सोमशर्म्मा बड़ी चिन्ता में युक्त हुये व सुमनाको भी देखा तो दिव्य माङ्गलिक भूषणादिकों से भूषित बैठीथी इस से विस्मितहो अपनी स्त्री से बोले २७ कि ये दिव्य भूषण तुमको किसने दिये शृङ्गार व रूपकी सुन्दरता वस्त्र अलङ्कारादि किसने दिये २८ हे भद्रे! इसका कारण निश्शङ्क होकर हमसे कहो ऐसा अपनी भार्या से कह वे द्विजोत्तमजी विश्राम कररहे २९ तब सुमना बोली कि हे कान्त! सुनो एक उत्तम ब्राह्मण दिव्यरूप धारण किये श्वेत गज पर चढ़ा दिव्य भूषणोंसे भूषित ३० दिव्य चन्दनादि गन्ध अङ्गों में लगाये दिव्य शोभासे युक्त नहीं जानतीं कि कोई देवथा जिस की सेवा सब गन्धर्व्वलोग करते थे ३१ व देवता गन्धर्व्व चारण लोग सब ओर से स्तुति करते थे सो वह हमारे गृहमें आया उसके सङ्ग पुण्यरूपवाली शृङ्गारसंयुक्त ३२ सब भूषणोंसे भूषित पूर्णमनोरथ वाली बहुतसी स्त्रियां भीथीं सब सब आभरणोंसे युक्तथीं व सबों के पूर्णमनोरथथे उनसबोंसे व उस महात्मा पुरुष से हम संयुतहुईं ३३ उन सबों ने एक अति दिव्य सब शोभासहित चौतरा रत्नोंसे बनाया उसके ऊपर एक दिव्य आसनधर हमको उसपर बैठाया व ब्राह्मणोंसे हमको हनवाया ३४ व सबोंने वस्त्र भूषणादि हमें दिये व पहिनाये फिर वेदोंके मङ्गल पाठपढ़े व पुण्यदायक शास्त्रोंके भी माङ्गलिक स्तोत्रादि सुनाये व बहुत गाया बजाया ३५ सबों से चारों ओर से घेरकर सबोंने अच्छीतरह हमको फिर हनवाया और सब अंतर्द्धान होगये फिर सबके सब हमसे आकर बोले ३६ कि हे कल्याणि! हमसब सदैव तुम्हारे घरमें बसेंगे तुम सर्व्वदा पति समेत पवित्र होवो ३७ ऐसाकर वेसब चलेगये यह हमने देखा सो तुमसे कहा उस अपनी स्त्री का कहा हुआसुन महामति सोमशर्म्मा ३८ फिर चिन्ता करनेलगे कि क्या यह सब किसी देवताने बना दिया ऐसा चिन्तवनकर व विचारकर महामतिवाले सोमशर्म्मा ३९ अपने धर्म्म कर्म्म करनेमें फिर लगगये व होते २ उनसे उनकी महा-

भागा पतिव्रता स्त्रीने गर्भ धारण किया ४० उस गर्भके धारण करनेसे वह देवीसुमना अधिक शोभित होनेलगी फिर समयपर उस तेजकी ज्वाला समेत स्त्री ने सुन्दर दीप्तिमान् देव समान पुत्र उत्पन्न किया उस पुत्रके होनेके समय अन्तरिक्ष में देवताओंके नगारे बाजे ४१।४२ व बड़े देवोंने शंख बजाये गन्धर्व लोगोंने ललितराग गाया व अप्सरा लोग सब मिलकर नाचने लगीं ४३ तब सब देवताओं को सङ्गलिये ब्रह्माजी वहां आये व उस पुत्र का नामकरण किया व कहा कि आपका सुव्रत नामहै ४४ इस प्रकार नाम धराकर सब बड़े तेजस्वी देवगण स्वर्गको चलेगये जब सब देवगण चलेगये तो सोमशर्म्माने जातकर्म्मादि सब कर्म्म अपने पुत्र के किये जब देवताओंका बनाया हुआ सुव्रत नामपुत्र सोमशर्म्माके हुआ ४५।४६ तो उनके गृहमें महालक्ष्मीके वास करने से धन धान्य सब भरहुआ हाथी घोड़े महिषी धेनु सुवर्ण रत्न ४७ सब पदार्थ घरमें होगये इससे धनके संचयों से कुबेर कासा गृह शोभित होनेलगा सोमशर्म्माके गृहमें मारे धनके वही शोभा होगई जो कुबेरके गृहमें है ४८ इससे वे ब्राह्मणदेव ध्यान पुण्यादिक कर्म्म करनेलगे और अनेक प्रकारकी पुण्यसे युक्त होकर तीर्थयात्राको भी गये ४९ और ज्ञान पुण्य युक्त बुद्धिमान् श्रेष्ठ ब्राह्मण और भी पुण्य दान करतेभये ५० इस प्रकार बार २ धर्म्म करतेथे व पुत्रका पालन करते व पुत्रके जातकर्म्मादि समय २पर बराबर करते थे ५१ फिर बड़े हर्षसे पुत्र का विवाह कराया तब पुत्रके भी गुणवान् शुभ लक्षणके बहुतसे पुत्र हुये ५२ सब सत्य धर्म्म तप युक्त व दान धर्म्म में सदैव रतहुये सोमशर्म्मा ने उन सब अपने पौत्रों के भी जातकर्म्मादि किये कराये ५३ व उन पौत्रों के सुखसे महाभाग्यवाले सोमशर्म्मा अति हर्षित रहने लगे व सब सुखों के संयोगसे वृद्धता व कोई रोग उनको हुआही नहीं ५४ सूर्य के तेजके समान महामति सोमशर्म्मा का शरीर सदा पच्चीस वर्षकी अवस्थाका बनारहा व शोभित रहा ५५ व वह देवी सुमनाभी पुण्य मङ्गलोंसे वैसेही शोभित रही पुत्र पौत्रोंके साथ दान व्रत संयम करती रही ५६ व पातिव्रतादि धर्म्मों से वह

विशालनयनी अति शोभित होती थीं सदा तरुण अवस्थासे युक्त बनीरही जैसे सोलह वर्षकी स्त्रियां होती हैं ५७ इससे वे दोनों स्त्री पुरुष सुन्दर मङ्गलोंसे व सदा नवीन अवस्था बनीरहनेसे अत्यन्त मोद करतेथे व सदा वे पुण्यात्मा महाहर्षसे युक्तरहे ५८ ॥

चौ० इमिदोनोंके वृत्तसुहावन । पुण्यचरितयुत अतिमनभावन ॥
तुमसनकह्यासकलमुनिपुञ्जा । ज्यहिसुनिहोत पापसबलुञ्जा ॥
अबतासुतसुव्रतके चरिता । कहतभलीविधि सों आदरिता ॥
जिमिसोनारायण आराधन । करिकैभयहु रहितसबबाधन ५९।६०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुमनो
पाख्यानेसुव्रतोत्पत्तिर्नामविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

दो० इक्किसयें महँ बाल्यके सुव्रत चरित अनेक ॥
हरिपूजनवन्दनस्तवन आदिकहेकरिटेक १

सूतजी बोले कि एकसमय अत्यन्त विस्मित व्यासदेवजी जगत् के पति ब्रह्माजी से सुव्रतका सब चरित पूछते भये १ कि हे लोकात्मन् ! हे लोकविन्यास ! हे देवदेव ! हे महाप्रभो ! इससमय सुव्रत का चरित सुनने की इच्छा है २ तब ब्रह्माजी व्यासजी से बोले कि हे व्यासजी ! हे महाभाग्यवाले ! तपस्या सहित सुव्रत विप्र का उत्तमचरित हमसे सुनो ३ सुव्रतनाम मेधावी ने बाल्यावस्थाही से बड़ीउत्तम चिन्तनाकी व गर्भहीमें टिकेहुये उन्होंने पुरुषोत्तम नारायणजी के दर्शन किये ४ पूर्वजन्म के कर्म्मों के अभ्यास से गर्भ हीमें हरिका ध्यानकिया शंख चक्र धारण कियेहुये पद्मनाभ अतिपुण्य देनेवाले श्रीहरिका ५ ध्यान बड़ी चिन्ता से करते व मन में उनके चरित गाते मुख से स्तोत्र पढ़ते इस प्रकार श्रीहरिका ध्यान वे द्विजसत्तम सदैव करते थे ६ जब उत्पन्नहुये तो सब बालकों के सङ्ग उत्तम क्रीड़ा करनेलगे बालकों के व अपनानाम श्रीहरिके सम्बन्धके धरादिये ७ जिस मित्रको वे महामतिवाले पुकारें तो हरिही के नामसे पुकारें जो नाम उन्होंने धरायाथा इसप्रकार धर्म्मात्मा

पुण्यवत्सल वे सदा करते ८ भो केशव ! हे माधव ! हे चक्रधारिन् ! हे पुरुषोत्तम ! यहां आओ हमारे साथ खेलो ९ व हमारेसाथ चलो हे मधुसूदन ! इसीप्रकार वे ब्राह्मणदेव अपने मित्रोंको हरिही के नामोंसे पुकारते १० सो इसीतरह वे ब्राह्मणदेव क्रीड़ा करनेमें कभी पढ़नेमें हास्य करने में लेटजानेपर गीतगाने में व नृत्यआदि देखने में हरिही के नामों का कीर्त्तन करते वाहनपर चढ़ने के समय आसनपर बैठने में ध्यान करने में सलाह देनेमें ज्ञान बतानेमें व और भी सब सुकर्म्मों के करने में ११ इसीप्रकार जगन्नाथ जनार्दन जी को देखें व पुकारें भी व विश्वनाथ महेश्वर उन्हीं श्रीहरि अकेलेका ध्यानकरें १२ तृण काष्ठ पाषाण शुष्कहो वा आर्द्रहो सबमें केशव को ही देखते व वे धर्म्मात्मा सब कहीं कमलेक्षण गोविन्दही को पुकारते १३ आकाश में भूमिके मध्यमें पर्व्वतों पर वनों में जल में स्थलमें पत्थरमें व सब पश्वादि जीवोंमें भी १४ सुमनाकेपुत्र सुव्रत ब्राह्मण नृसिंहही को देखते बालक्रीड़ा को प्राप्त होके ऐसेही प्रतिदिन रमण कियाकरें १५ व सुन्दर रागों के गीतों से मधुरस्वर से कृष्णहीका गानकरैं लय तालोंसेयुक्त स्वरमूर्च्छादिकों समेत रागों से गावैं १६ एकसमय सुव्रतजी बोले व यह गीत गानेलगे कि ॥

हरिगीतिका ॥

वेदवादी सकल बुधजन सततध्यावतजाहि को ।
ज्यहिअङ्गअङ्गमुरारिजीके बसतजगबहुनाहिको ॥
सकलपाप कलाप नाशन योगपति भगवन्तके ।
हमहोत शरणविहाय औरनमधुदमन श्रीकंतके १७
सकल लोकन महँ विराजत जो चराचर पालई ।
ज्यहिमाहिंलोकअशेषराजत गुणनिधानकहावई ॥
सबदोषरहितपरेशअगजग बसतनिर्भयह्वैजहां ।
ताकेचरणयुग नमतहों नित और जाहुँ कहांकहां १८
वेदान्तशुद्ध विशुद्धमति बुधजनहि नारायणकहैं ।
गुणग्राम पूरणकाम रामनमामहम सबसुखलहैं ॥
संसारसागर अतिअपार उताराहित चितदैसही ।

हमकरतबहुतप्रणामकेशव द्रवहुसुनिसबमोकही १९
योगीन्द्र मानस है सरोवर राजहंस तहां हरी ।
अरुशुद्धरूपप्रभावजगमहँ नाहिंजानतइमिकरी ॥
ताकेचरणयुग शरणह्वैनित नमतहैं चितमें धरी ।
सोकरहु रक्षामेशहमरी चहत नित आदरकरी २०
जोशुद्धवेद अनन्तअद्वय सकलधर्म्मसमन्वितम् ।
सबलोगगुरुसुरईशकेशव अमितवीर्य्यसुसंयुतम् ॥
सुरगीतप्रीतअलापकरि श्रीरङ्गभुवनाधिपगुनी ।
गावतमनावतचरित तवनित कबहुँश्रवणपरैधुनी ॥
दुखअन्धकार पसार नाशनहेतु चन्द्रसमानहै ।
सबविश्वकरतप्रकाश दिननिशिप्रभुपरेशमहानहै ॥
सम्पूर्ण अमृतकला कलापन सोंसदा सुविकाशहै ।
त्यहिशरण शरणागतकृपाकर सकलजगतप्रकाशहै ॥
शुभयोग युक्त विशेष इन्द्रिय गणनसों जग देखई ।
चरअचरजीव अजीवकहँ विधिसों निरन्तरपेखई ॥
नहिंलखतभक्खतसुपापिगणत्यहिकरतकोटिउपायहू ।
त्यहिशरणअशरणशरणजूकेजातविगतअपायहू २१ ।२४

इसप्रकार दोनों हाथोंसे ताड़ी बजाय ताल लगाय गाय २ श्री कृष्णजी को गीतोंसे रिझाय २ बालकों के संग प्रमोद करतेथे २५ इस तरह बालभाव से सदा क्रीड़ामें रतरहते थे सुमनाके पुत्र सुव्रतजी सदा विष्णु के ध्यान में परायण रहते २६ इसप्रकार खेलते हुये शुभलक्षण विचक्षण सुव्रतको आतेहुये देख सुमना कहती थी वत्स भोजनकरो तुमको क्षुधा पीड़ित करती होगी २७ तब वे परम-प्राज्ञ अपनी माता सुमनासे फिर कहते थे कि हम श्रीहरिके ध्यान रसके महा अमृत से तृप्तहैं २८ फिर भोजनके आसन पर बैठकर मिष्टभोजन के पदार्त्थ देखकर कहते थे कि यह अन्न स्वयं विष्णु रूपहै व आत्मा अन्नमें स्थितहै २९ सो आत्मा के रूप इस अन्नसे श्रीविष्णुभगवान् तृप्तहों जिन विष्णुभगवान् का क्षीरसागर में सदा वास रहताहै ३० इस पुण्यजल से वे केशवभगवान् तृप्तहों व इन

मनोहर पुष्प ताम्बूल चन्दन सुगन्ध से आत्मरूप श्रीकेशव विष्णु तृप्तहों जब शयन करनेको जातेथे तब दिव्य शय्या देखकर विष्णु जीकी चिन्तना करते ३१ । ३२ कि इस शय्यापर शयन करतेहुये जलशायी भगवान् के हम शरणमें हैं इसप्रकार भोजन करने के समय वस्त्रधारण करने के आसनों पर बैठने के व शयन के समय ३३ सदा श्रीहरिका स्मरण करके उन्हींके निवेदन सब पदार्थोंको करते और धर्मात्माजी युवावस्था पाकर कामभोगों को छोड़कर ३४ फिर पवित्र पापनाशन जहां सिद्धेश्वर नाम लिङ्ग रुद्रजीका है व जहां अमरेश्वर व ॐकारेश्वर नाम लिंगहैं नर्म्मदाके दक्षिणतीरपर उत्तम वैडूर्यपर्वत में सिद्धेश्वरनाथ भी हैं वहीं जाकर सुव्रतजी तप करनेलगे ३५ । ३७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुमनोपाख्यानेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

दो० बाइसयें महँ पूर्व्वजनि सुव्रत कथा प्रसंग ।
तहँ धर्म्माङ्गद बहुरि रुक्मांगद चरितसुढंग १

इतनी कथा सुन व्यासजीने ब्रह्माजी से पूँछा कि हे महाभाग ! एक प्रश्न हम करते हैं आप उत्तरदें आपने पूर्व्वसमय में कहाथा कि सुव्रत ईश्वरहैं १ व पूर्व्वजन्म के अभ्यास से उन्होंने अनामय श्रीनारायणजी का ध्यानकिया सो अब कहिये कि पूर्व्वजन्म में सुव्रत किस जातिमें उत्पन्न हुयेथे २ वह हमसे इससमय कहो व उन्होंने कैसे श्रीहरिकी आराधनाकी व इन्होंने कौन पुण्यकिया जिससे देवदेवेश श्रीविष्णु प्रसन्न हुये ३ यह सुन ब्रह्माजी बोले कि बहुत धन समृद्धियुक्त अतिपुण्य वैदिश नाम नगरमें महातेजस्वी अति बली ऋतध्वजका पुत्र राजा हुआ ४ उसके महाप्राज्ञ रुक्मांगद नाम अतिप्रसिद्ध पुत्रहुआ उसकी स्त्रीका सन्ध्यावली नामथा यह उसकी धर्म्मपत्नी बड़ी यशस्विनीथी ५ उसमें राजाने अपने तुल्य पुत्र उत्पन्नकरके उसका धर्म्माङ्गद नाम धराया ६ यह रुक्मांगदका

पुत्र सब लक्षणों से सम्पन्न पिताकी भक्तिमें परायण व हृषीकेशजी की भक्तिमें निरत हुआ। ७ जिसने अपने पिताके सुखके लिये मोहिनी को अपना शिर देदिया था उसके वैष्णवधर्म्म से व पिताकी भक्ति से ८ हृषीकेश भगवान्‌ने प्रसन्न होकर सदेह उसे वैष्णवपदको भेज दियाथा व सब धर्म्मकरनेवाले उस वैष्णवको सब भगवद्दासोंमें श्रेष्ठ समझाथा ९ उन महाप्राज्ञ प्रज्ञा व ज्ञानमें विशारद धर्म्मांगदजीको जब सशरीर श्रीहरिने वैष्णवलोक को भेजाथा वहां निवास करके धर्म्मभूषण महाधर्म्मवाले उन्होंने १० दिव्य नानाप्रकारके सुखभोग जब सहस्रयुग भोग करते२ बीते तो वे धर्म्मात्मा धर्म्मके भूषण ११ उस विष्णुपद से भ्रष्टहुये व विष्णुजी के प्रसादसे आकर सुमना के आनन्द बढ़ानेवाले सोमशर्म्माके पुत्र महाबुद्धिमान् सुव्रत के नाम से प्रसिद्धहुये व सब भागवतों में श्रेष्ठहुये व जाकर श्रीविष्णु में मन लगाकर तप करनेलगे १२।१३ काम क्रोधादि दोषों को उन द्विजोत्तम ने छोड़दिया व अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर निरन्तर तप करनेलगे १४ सिद्धेश्वर के समीप जो श्रेष्ठ वैडूर्य्य नाम पर्व्वत है उसीपर तप करने का प्रारम्भ उन्हों ने किया अपने मन को एकाग्रकर श्रीविष्णुजी के साथ मिला दिया १५ व सौ वर्षतक उन महात्मा श्रीहरिका ध्यान करते रहे तब शंख चक्र गदा धारण किये श्रीजगन्नाथजी ने अतिप्रसन्नहो१६ लक्ष्मी सहित वहां आकर उनको वर दिया कहा कि हे धर्म्मात्मा देवताओं में श्रेष्ठ सुव्रत! जागो २ समझो समझो १७ वर मांगो हम कृष्णहैं तुम्हारे समीप आये हैं ऐसा श्रीविष्णुजीका उत्तम वचन सुनकर १८ व जनार्द्दन जी को देखकर वे मेधावी सुव्रतजी बड़े हर्ष से युक्त हुये व दोनों हाथ जोड़कर उन्हों ने श्रीहरिके साष्टांग प्रणामकिया १९ व सुव्रत बोले भी कि हे जनार्द्दन! बड़े २ दुःख जालरूपी बड़ी २ लहरियों से युक्त व विविधप्रकारके मोहतरङ्गों से भरे व सब दोषगण बड़े २ मत्स्यों से युक्त इस संसारसागर में पड़ेहुये हम दीन का उद्धार करो २० व हे मधुसूदन! नानाप्रकार के कर्म्म मेघों के गर्ज्जते व वर्षते में पातकों के संचयोंसे व्याकुल व चलायमान व मोहान्धकार

परदों से नेत्र मूँदगयेहुये हम दीनका हाथ पकड़ो हमें कुछ दिखाई नहीं देता २१ हे कृष्ण! अति दुःखों से भरेहुये इस संसाररूप सघन वन में भूलेहुये व मोहमय सिंहों से व्याकुल व करुणारूप बहुतसी ज्वालाओं के बीच में बहुधा पड़जाने से डरेहुये हमारी रक्षाकरो २२ हे भगवन्! हे मुरारे! यह संसारवृक्ष बहुत पुराना व ऊँचा है माया इसकी जड़ें हैं दीनता व नानाप्रकारके दुःख शाखायें हैं व स्त्री आदि का संग इसके फलहैं ऐसे वृक्षपर चढ़कर नीचे गिरेहुये हमारी रक्षाकरो २३ हे कृष्ण! विविधप्रकारके मोहमय धूमों से युक्त दुःखों के अग्नि से जो कि शोक वियोग मरणादिकों के तुल्य है हम जले जाते हैं ज्ञानरूपी बादलों से स्नान करा के हमको सदैव मोक्ष देवो २४ हे केशव! घोर अन्धकार के परदे से ढँकेहुये इस बड़ेभारी संसार गढ़े में गिरेहुये व महाभय से आतुर हम दीन की रक्षाकरो क्योंकि तुम्हारी शरण में आये हैं २५ हे भगवन्! जो लोग निश्चलमानसभावसे युक्तहो ध्यानसे व ज्ञानयुक्त मनसे तुम्हारी पदवीको पाते हैं वे धन्यहैं क्योंकि तुम्हारे पादयुगलों का ध्यान सदा देव किन्नरगण कियाकरते हैं २६ सो ऐसेही हमारी इच्छा को पूरीकरो हम और देव को न कहैं न भजैं और न चिन्तनकरैं तुम्हारे युगल चरणारविन्दों के निरन्तर प्रणाम करतेहैं व हमारे पाप के सब संचय दूरहों व जन्म२हमतुम्हारे दासोंके दास हों आपके चरणकमलोंको सदैव स्मरण करतेहैं२७।२८व हे कृष्ण! हे प्रभो! जो हमारे ऊपर प्रसन्नहुये हो तो हमको यह सुन्दर वरदो कि हमारे माता पिता को शरीर सहित अपनेधामको लेचलो २९ व हम कोभी सशरीर उन्हींके संग अपने धामको पहुंचाओ बस और कुछ भी वर हम नहींचाहते इसमें सन्देह नहीं है यह सुन श्रीकृष्ण जी बोले कि बहुत अच्छा ऐसाही हो यह तुम्हारा कार्य्य अवश्य होगा इस में कुछ संशय नहीं है ३० उन सुव्रतजी की भक्ति से हृषीकेश जी बहुत संतुष्टहुये व सोमशर्म्मा व सुमना दोनों उष्णता व नाश से रहित श्रीविष्णुजी के लोक को चलेगये ३१ व सुव्रतभी उन्हीं अपने पिता माता सोमशर्म्मा व सुमना के संग सदेहही श्रीहरि-

पुरको गये व जबतक दो कल्प बीते तबतक वे सुव्रत ब्राह्मण ३२ दिव्यलोक में नानाप्रकार के दिव्यभोग भोगतेरहे फिर स्वर्गलोक में देवताओं का कार्य्य करने के लिये कश्यपजी के गृह में फिर ३३ उन्हीं विष्णुभगवान् के कहने से उत्पन्न हुये व उन्हीं महात्मा विष्णु के प्रसाद से ऐन्द्रपद भोगनेलगे ३४ वहांउनका वसुदत्त नामहुआ व सब देवगण उनके नमस्कार करनेलगे क्योंकि इन्हीं वसुदत्तहीका दूसरानाम इन्द्रभी है सो जो आजकल ऐन्द्रपद को भोग करते हैं ३५ हे व्यास ! यह तुमसे सृष्टि के सम्बन्धका कारण हमने सुनाया और भी जो कुछ तुम पूंछोगे सो सब कहेंगे ३६ व्यासजी बोले कि महाबुद्धिमान् बलवान् रुक्मांगद का पुत्र धर्मांगद प्रथमसत्य-युगमें सृष्टि समय में उत्पन्न होकर इन्द्रहुआ ३७ हे देवदेवेश ! वह कैसे पृथ्वी में और धर्मांगदहुआ और धर्म्मांगद राजा देवताओंका स्वामीथा३८इस बातमें हमको बड़ासन्देहहै उसे आप कहनेके योग्य हैं ब्रह्माजी बोले कि हम तुमसे सब सन्देहोंका नाशनेवाला वृत्तान्त कहेंगे ३९ यह सब देव श्रीविष्णुजीकी लीला देखने के लिये संसार बनाहै जैसे सूर्य्यादिवार शुक्ल व कृष्ण दोपक्ष बारहमास हेमन्तादि छःऋतु ४० संवत्सर मनु ये सब बने हैं इन्हीं के प्रमाणसे अयुतों युग बीतजाते हैं उनके पीछे कल्प होताहै तब हमजाकर जनार्दन जीमें लीनहोजाते हैं ४१ व हममें सबचराचर यह विश्व लीन होजाता है फिर वह योगात्मा परमेश्वर श्रीविष्णु हमआदि सब विश्व की रचनाकरता है ४२ फिर हमहोते तदनन्तर वेद होते हैं फिर देव गणहोते हैं फिर और ब्राह्मणलोग उत्पन्न होते हैं व ऐसेही सब राजालोग भी प्रत्येककल्प में उत्पन्नहोकर अपने २ चरित करते हैं ४३ इस प्रकार सब होतेजाते रहते हैं हे महाभाग ! इसविषय में विद्वान्लोग मोहित नहींहोते पूर्व्वके कल्पमें जैसे महाभाग रुक्मां-गदराजा हुआथा ४४ ऐसेही धर्म्माङ्गद महाख्यातिमान् द्विजहुआ था इसीप्रकार श्रीरामचन्द्रादिक महाराजाधिराज हुये व ययाति न-हुषादि बहुतराजा हुये ४५ व महात्मा स्वायम्भुवादि मनुहुये व फिर नाश को भी प्राप्तहुये व इनमें ऐन्द्रपद वे धर्म्मात्मा राजा भोगते हैं

४६ जैसे कि महावीर धर्मांगद राजाने भोगाहै ऐसे ही वेद देवता पुराण व स्मृतियांभी सब ऐन्द्रपद अपनी २ पारीपर भोगती हैं ४७ हे द्विजश्रेष्ठ! यह सब तो प्रत्यक्ष तुम्हारे आगे सुव्रतका पुण्यकारी अच्छी गतिका देनेवाला चरित हमने कहा अब तुम्हारे आगे अप्रत्यक्ष समाचार कहेंगे सुनना ४८ । ४९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुव्रतोपाख्यानं नामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

दो० तेइसयें महँ दैत्यवध लखि दितिभई उदास ॥
नियम सहित बलनामसुत उपजायहु सुरत्रास १
कीन महातप ताहिसुनि अदिति पुरन्दर पाहिं ॥
हतन कह्योत्यहिसोहत्यो यहकहगुनिमनमाहिं २

इतनीकथा सूतसे सुनकर ऋषिलोगोंने फिर सूतसे प्रश्नकिया कि तुमने धन्य पुण्य व यश फैलाने वाली यह बड़ी विचित्र कथा कही व सब पापहरनेवालीभी है क्योंकि आप कहनेवालोंमें बड़ेश्रेष्ठ हैं १ हे सूतनन्दन! जैसे पूर्व्व में सृष्टिका सम्बन्ध तुमने विस्तार से कहाथा वैसेही फिर हम तुमसे सृष्टिकासम्बन्ध सुनाचाहते हैं २ सूतजी बोले कि सृष्टिके संहार का कारण हम विस्तारसे कहेंगे जिसके केवल सुननेहीसे नर सर्व्वज्ञताको प्राप्त होजाता है ३ जब हिरण्यकशिपुने बलिकाकहा न मानकर श्रीहरिसे वैरबांध बड़ीभारीतपस्या की तो उसके तपसे तीनोंलोक व्याप्तहोगये व तपस्यासे ब्रह्माजी की आराधना करके उसने बड़ादुर्ल्लभ वरपाया ४ जिस में देवता गंधर्व्वादि ब्रह्माकी सृष्टिभरसे उसको अमरता मिलगई इससे देवताओंको स्वर्गसे निकाल तीनोंलोकों की इन्द्रता आपही भोगने लगा ५ तब देवता गन्धर्व्व वेदपारगामी मुनिलोग नाग किन्नर सिद्ध व यक्ष तथा और सब देवताओंकी जातियां ६ ब्रह्माजीको सङ्ग ले श्रीनारायण प्रभुके समीपगये जो कि क्षीरसागर में योगनिद्राको अपनी इच्छासे ग्रहणकरके शयन कररहेथे ७ उनको बड़े २ स्तोत्रों

से जगाकर सब देवगण हाथ जोड़ कर खड़ेहुये व उनके जागनेपर उस दुष्टात्मा हिरण्यकशिपुका सब वृत्तान्तकहा ८ व जगत्पति श्री नारायणने सुनकर नृसिंहका रूप धारणकरके उस हिरण्यकशिपु को मारडाला ९ व फिर वाराहरूप धारणकर महाबल हिरण्याक्षको भी विदारणकिया पुण्यकारी पृथ्वी को लेआये उसीमार्ग्ग में उसअसुर कोभी माराथा १० व अन्यभी घोरदर्शन बहुतसे दानवोंको उन्होंने मारा इसप्रकार जब बड़े २ सब दानव नष्टहोगये ११ व और भी दुष्ट दितिके जब सबपुत्र नष्ट होगये व देवगण फिर अपने स्थान को प्राप्तहुये १२ यज्ञ व धर्म्म कर्म्म यथावस्थित ठौर २ होनेलगे व सबलोग अच्छेप्रकार स्वस्थ होगये तब दैत्योंकी मातादिति बड़े दुःखसे पीड़ितहुई १३ पुत्रों के शोकसे सन्तप्तहो हाहापुत्रो ! ऐसा कहकर मूर्च्छित होगई फिर कुछ चैतन्य होकर अपने सूर्य्य समान प्रकाशित तप और तेजयुक्त दाता और महात्मा कश्यपपतिसे बड़ी भक्तिसे प्रणामकरके हाथजोड़ उनमहातपस्वी महामतिकश्यपजी से बोली १४।१५ कि हे भगवन्! विष्णुने हमको विनापुत्रों की करदिया दैत्यों व दानवोंको देवताओंसे मरवाडाला १६ हे मुनिसत्तम! अब हम पुत्रोंके शोकके अग्निसे सदाजलाकरतीहैं हे विभो! हमारे आनन्दके करनेवाला व सबका तेज हरनेवाला १७ सुबल सर्व्वांग सुन्दर देवताओंकी दीप्तिकेसमान दीप्तिवाला बुद्धिमान् सब कुछ जाननेवाला ज्ञाता व महापण्डित १८ तप तेजसमेत सुबली सुन्दर लक्षणवाला ब्रह्मण्य ज्ञानवेत्ता देव व ब्राह्मणोंकी पूजाकरनेवाला १९ व सब लोकों को जीतनेवाला व हमारे आनन्दके करनेवाला व सर्व्व शुभलक्षणों से युक्त पुत्र हमको दीजिये २० दितिका ऐसा उत्तम वचन सुनकर कश्यपमुनि उस दुःखित दितिके ऊपर कृपायुक्तहो बहुत सन्तुष्टहुये २१ व उस दीनमनवाली अतिदुःखित दितिसे उसके शिरपर अपना हाथ धरके भावमें तत्पर उससे बोले २२ कि हे महाभागे! जैसा पुत्र तू चाहती है वैसाही होगा यह कह वे तो सुमेरु पर तप करने चले गये २३ व वहां जाकर उन कश्यपजीने निरालंब होकर परम व्रत साधनकर बड़ी तपस्याकी व इस अन्तरमें दितिने बड़ा उत्तम

गर्भ धारणकिया २४ व सब धर्म जाननेवाली चारुकर्म्म करनेवाली परमयशस्विनी उस दितिने सौ वर्षतक गर्भ धारणकिया इससे उसका गर्भ बहुत पवित्र व प्रकाशित हुआ २५ उसका उत्पन्न किया हुआ पुत्र ब्रह्मतेज से युक्त हुआ तब बड़े हर्षसे युक्तहो कश्यपमुनि वहां आये २६ व उस पुत्रका महामेधावी कश्यपजीने बल नाम धराया जैसा उस पुत्रका बल नामथा उसी के तुल्य वह बलवान् भी एकही हुआ २७ इसप्रकार नामकरण करके फिर उसका यज्ञोपवीत भी कश्यपजीने किया फिर उससे कहा कि हे महा भाग्यवाले हमारे पुत्र! अब तुम जाकर ब्रह्मचर्य साधनकरो २८ उसने कहा बहुत अच्छा द्विजोत्तम हम तुम्हारे वाक्य से ऐसाही करेंगे तब प्रथम उस बलने सब वेद पढ़े २९ तदनन्तर जाकर सौ वर्षतक बड़ी भारी तपस्या उसने की फिर तप और तेजयुक्त हो माताके पास आया ३० उसका ब्रह्मचर्य्य से अतितीव्र वीर्य्य देखकर दिति बड़े हर्ष से युक्त हुई मारे आनन्दके फूलीहुई अंगों में न समाती थी ३१ इससे एकदिन उस परमतपस्वी बलनाम पुत्रसे बोली जोकि बड़ा मेधावी महात्मा व प्रज्ञा ज्ञानसे युक्तथा ३२ कहा कि हे वत्स! अब तुम्हारे जीनेमें हमारे सब पुत्र जीतेहैं जिन हिरण्यकशिपु आदिकों को विष्णुने मारडाला था ३३ इससे हे पुत्र! अब वैरको सिद्धकरो संग्राम में देवताओंको मारडालो फिर उस महाबली बलनाम पुत्रसे दानवों की माता दनु आकर बोली कि ३४ हे पुत्रक! प्रथम तो सब देवताओंके स्वामी इन्द्रको शीघ्र मारो फिर सब देवताओं को मारकर पीछे गरुड़पर चढ़नेवाले उन विष्णुको भी मारडालो ३५ इनदोनों दिति व दनु अपनी सौतियों के वचन सुन देवताओं की माता अदितिजी बहुत दुःखितहुईं व बड़े दुःखसे युक्तहो वे पतिव्रता अदितिजी अपने पुत्र इन्द्रसे बोलीं कि ३६ दितिका यह बल नाम पुत्र ब्रह्मतेजसे बढ़ते २ बड़े शरीरवाला होगयाहै व देवताओं के वधके अर्थ तप कररहाहै ३७ हे देवेश! इस बातको जानो जिसमें तुम्हारा कल्याणहो वह करो माताका ऐसा वाक्य सुनकर इन्द्र ३८ बड़ीभारी चिन्ताको प्राप्त हुये व अतीव दुःखित हुये व महा भय से ऊबकर

उन्होंने अपने मनसे यह चिन्ताकी ३९ कि कैसे देवधर्म्म को दूषित करनेवाले इसको हम मारडालेंगे बलके मारडालने के विषयमें इन्द्र ने निश्चय करलिया ४० एक समय वह बल सन्ध्या करने के लिये समुद्र के तटपर पहुँचा व वहां मृगचर्म्म व दण्डकाष्ठ लिये विराजमानहो ४१ अमल पुण्य व ब्रह्मचर्य्य के तेजसे प्रकाशित सागर के तीर उसे संध्याकरते ४२ व शान्तचित्त होकर मंत्र जपते हुये इन्द्र जीने देखा व जाकर वज्रसे उस दितिनन्दनको ताड़ितकिया ४३ कि प्राणरहितहो बल पृथ्वीपर गिरपड़ा उसको मृतक देखकर बड़े हर्ष से युक्तहो इन्द्र बड़े प्रमुदित हुये ४४ इस प्रकार दितिके पुत्र उस बल दैत्यको मारकर इन्द्र धर्म्मात्मा बड़े सुखसे राज्य करनेलगे ४५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेबलदैत्यवधोनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

दो० चौबिसयें महँ वृत्रकी है उत्पत्ति विचित्र ॥
पुनि ता मैत्री इन्द्रसों यह कह चित्रचरित्र १

इतनी कथा सुनाकर सूतजी फिर ऋषियों से बोले कि सुन्दर बलवाले बलनाम पुत्रको मारगयाहुआ सुन दितिने हाहाकष्ट कह कर अत्यन्त रोदन किया व बड़ी दीनता प्रकटकी १ व बहुत दिनों तक उस परमतपस्विनी यशस्विनी दितिने अतिदीनताकर अपने पति कश्यप जी के पास जाकर कहा कि २ हे द्विज ! सुनो पापी तुम्हारे पुत्र इन्द्रने ब्रह्मलक्षण युक्त महातपस्वी हमारे पुत्र बल को सागरके समीप सन्ध्योपासन करतेहुये देख चुप्पे से जाकर वज्रसे मारडाला इस बातको सुनकर मरीचिजी के पुत्र कश्यपजी ने बड़ाही कोपकिया ३ । ४ व क्रोधकी ज्वाला से जल उठे महाक्रोधानलको प्रकटकिया फिर पवित्र अग्नि में एक अपनी जटा उखाड़ कर ५ कहा कि बस हम इन्द्र के वधके लिये पुत्र उत्पन्न करेंगे यह कह अग्नि में वह जटा डालदी इससे उस अग्निकुण्डसे अग्निसमान प्रज्वलित एक असुर उत्पन्न हुआ ६ जिसका काले अञ्जनके ढेरके

समान तो रंगथा व पीले २ नेत्र अतिभयङ्कर आकृति ऐसे कराल मुखवाले उसको जगत् भरको भय देनेवाले कश्यपजी ने देखा ७ वह महावीर्य्यवान् खड्ग चर्म्म धारणकिये मुनि के तेजसे प्रकाशित महामेघ के समान ऊँचा महाबलीथा ८ वह कश्यपजीसे बोला कि हे विप्र ! हमको आज्ञादीजिये हे विप्र ! आपने हमको क्यों उत्पन्न कियाहै इसका कारण कहिये ९ हे सुव्रत ! उसे हम आपके प्रसाद से सिद्धकरें यह सुन कश्यपमुनि बोले कि हे पुत्र ! दितिके पुत्र बल को इन्द्रने छलसे मारडालाहै इससे दितिका मनोरथ तुम पूराकरो १० हे महाप्राज्ञ ! अदिति के पुत्र दुरात्मा इन्द्रको मारडालो व देव-राजके मारजानेपर ऐन्द्रपदका राज्य भोगकरो ११ इसप्रकार कश्यप महात्माकी आज्ञापाकर वृत्रासुर ने इन्द्रके मारडालने का उपाय किया १२ प्रथम बड़े पौरुषसे धनुर्विद्या सीखने में अभ्यास किया फिर बल वीर्य्य तेज धैर्य्यादि क्षत्रियों के सब गुण व स्वभाव सीखे व धारण किये १३ वृत्रासुरका ऐसा उद्योगदेख इन्द्र अत्यन्त भय से आतुरहुये व उस दुरात्मा वृत्रासुरके लिये उन्होंने उपाय विचारा १४ उसके वधके अर्थ सब महामुनियोंको बुलाया व सप्तर्षियों को भी बुलाकर वृत्रासुरके पासको भेजा कि १५ आपलोग वहांजायँ जहां वह वृत्रासुर है उससे जाकर आपलोग हमारा मिलाप करादें १६ इसप्रकार इन्द्रके सम्मतसे वे सप्तर्षिलोग जाकर वृत्रा-सुरसे बोले १७ कि हे दैत्यश्रेष्ठ ! इन्द्र मित्रता करना चाहते हैं सो आप करैं यह सातों तत्त्वके जाननेवाले ऋषियों ने महाबली वृत्रा-सुरसे कहा १८ कि महाबुद्धिमान् जब इन्द्र आप मित्रता करना चाहते हैं तो तुम क्यों नहीं करते १९ बस इन्द्र से मैत्री करके हे वीर ! आधा ऐन्द्रपद सुखसे तुम भोगो व आधा इन्द्र भोगें ऐसा करनेसे दैत्य व देवता दोनों सुखसे रहेंगे व वैरभाव छूटजायगा इस बातको सुनकर वृत्रासुर बोला कि हे मुनिसत्तमो ! जो इन्द्र सत्यतापूर्व्वक मित्रता चाहते हैं २० । २१ तो हमभी सत्य २ मैत्री करेंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है भला जो छल करके इन्द्र हमारे साथ द्रोहकरें २२ तो हे विप्रो ! फिर उसके लिये क्या प्रमाण ब-

तातेहो सो यह सुन ऋषियों ने जाकर इन्द्रसे पूँछा कि तुम दोनों के विषय में इस अर्थ में कौनसी विश्वासकी बातहै कि उसके होजाने पर सत्य २ मैत्री बनीरहै तब इन्द्रने सप्तर्षियों से कहा कि आप लोगों को बीचमें डालकर हम सत्यही का बर्ताव करेंगे छलका नहीं २३ । २४ यदि सत्य के विपरीत करें तो ब्रह्महत्यादि पाप हमको निःसन्देह लगें यह सुन सप्तर्षियों ने जाकर वृत्रासुर से कहा २५ कि इन्द्र ने कहा है कि जो तुम्हारे साथ हम छलकरें तो हमको ब्रह्महत्यादिक सब पापलगें इसमें सन्देह नहीं है २६ बस हे महा-मते ! इस विश्वास वचन से तुम इन्द्र के साथ मैत्री करो वृत्रासुर ने कहा कि आपलोगों के संग चलकर इन्द्र से मैत्री करेंगे तब वे ब्राह्मणश्रेष्ठ वृत्रासुरको इन्द्रके स्थानपर लेगये व वृत्रासुर को आते देख इन्द्र मैत्री करने के लिये उद्यतहुये व अपने सिंहासनपर से उठकर अर्घ लेकर बड़ी शीघ्रता से आधा सिंहासन वृत्रासुरको बैठने के लिये दिया व धर्मात्मा वृत्रासुर उसपर बैठा व इन्द्र भी आधे सिंहासन पर बैठे व वृत्रासुरसे कहा कि हे महाभाग ! आधा राज्य तुम भोगो आधा हम भोगें २७ । ३० व हम दोनों सुखसे आपस में बर्ताव करें इस प्रकार इन्द्रने वृत्रासुर को अच्छे प्रकार विश्वास दिया ३१ जब सब ऋषिलोग अपने २ स्थानों को चलेगये व कुछ दिन प्रीतिभावसे चले तब दुष्टात्मा इन्द्र वृत्रासुर के रात्रिदिन छिद्र देखनेलगे ३२ रात्रिदिन यही विचाराकरें कि कहीं कोई छिद्र मिले मैत्री तोड़डालें परन्तु उस महात्मा वृत्रासुर में कोई भी छिद्र इन्द्र को न दिखाई दिया ३३ तब इन्द्रने उसके बध के लिये उपाय विचा-रलिया व रम्भा नाम अप्सरा को उसके पास भेजा कि जाकर उस महासुर को मोहितकरो ३४ हे शुभे ! जिस किसी उपायसे बने इस दैत्यको महामोह में डालो जिसमें मारकर हम सुखको प्राप्तहों ३५ तब रम्भा जाकर महादिव्य पुण्य व पुण्यवृक्षोंसे शोभित बहुत पुष्प से युक्त मृग व पक्षियों से समाकुल ३६ व दिव्य विमानमन्दिरों से सब ओरसे शोभित दिव्य गन्धर्वों के गीतों से युक्त भ्रमरोंकी गु ञ्जार से सदैव आकुलित ३७ कोकिलाओंकी पुण्य कूकोंसे सर्वतः

मधुर मोर हरिणादि पक्षिमृगों से सब कहीं समाकुल ३८ व सब ओरसे दिव्य चन्दन के वृक्षोंसे अलंकृत व जलसे पूर्ण मनोहर वापीकूप तड़ागादिकों से शोभित ३९ जिनमें कि कमल शतपत्रादि पुष्प फूलरहेथे उनसे विराजमान व देव गन्धर्व्व सिद्ध चारण किन्नर ४० व मुनियों से भरा दिव्य देवताओंकी पुष्पवाटिकाओं से शोभित व नाना प्रकार के कौतुक मंगल करनेवाली अप्सराओं के नृत्य से विराजमान ४१ सुवर्ण के धवरहरों से शोभित चामर छत्रादिकों से मण्डित कलशों व पताकाओं से सर्व्वत्र समलंकृत ४२ वेदध्वनि से समाकीर्ण व गीतध्वनि से समाकुल इस प्रकारके नन्दन वन में जाकर चारुहास करनेवाली वह रम्भा ४३ अप्सराओं के झुण्डों के साथ क्रीड़ा करनेलगी सूतजी शौनकादिकों से बोले कि एक दिन कालका खींचाहुआ वह वृत्रासुर कुछ दानवों को संगलिये आनन्द समेत उसी नन्दनवनको गया व इन्द्रभी अलक्षितहोकर उस महात्मा वृत्रासुर के पासहीपास घूमते चलेजातेथे क्योंकि वे शंकितचित्त होकर सदा उसके छिद्र ढूँढ़ा करतेथे व वह महाप्राज्ञ सब कर्म्मोंमें इन्द्र का विश्वास करताथा ४४।४६ इन्द्रको परममित्र जानकर कुछ उनकी ओरसे भय नहींकरताथा इधर उधर घूमताहुआ सब कहीं परमशुभ वनदेखता फिरता था ४७ जो वन अतिरम्य नाना प्रकारके कौतूहलों से युक्त व उत्तम स्त्रीगणों से भराहुआ था देखा तो चन्दनकी पुण्यदायिनी शीतल छायामें बैठीहुई ४८ विशालाक्षी रम्भा नाम अप्सरा क्रीड़ा कर रही थी वह महाभाग्यवती यशस्विनी अपनी सखियों के साथ हिंडोले पर चढ़ी ४९ सुस्वर से गीत गारहीथी जिस गीत को सुनकर विश्वभर मोहित होजाता ॥

चौपाई ॥

कामाकुलित ललितमन भयऊ। वृत्रासुर तहँ आयसुगयऊ ॥
दोलारूढ़ विलोकत रम्भा। कांप्यहु जिमि कदलीकर खम्भा ५०।५१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवृत्रवञ्चनं नामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

दो० पच्चिसयें महँ मोहवश रम्भालिंगित वृत्र ॥
इन्द्रहत्योछलसोंऋषयकोपशान्तियहाचित्र १

सूतजी शौनकादि ऋषियों से नैमिषारण्य में बोले कि रम्भा को देख कामाकुल हो वृत्रासुर अपने सङ्गी दानवों से बोला कि चारु लोचनवाली मनोहररूपिणी यह कौनसी स्त्री है गानकर रही है व अपने विलासभावों से सब विश्वको मोहित करती है व अत्यन्त शोभित सम्पूर्ण हावभावों से कामीजनों को अतिमोहित करतीहै १ व कमल के समान विशालनयनी पीनकुचवती कुंकुम अङ्गों में लगाये हुई कमलमुखी कामके मन्दिर के समान स्थित अतिचारु मनोहररूपिणी २ सम्पूर्ण भावों से व विलक्षण रूपसे युक्त कामांग शीलवती अतिशीलभाव किये हुई रम्भाको बनाय निकटसे देखकर कहनेलगा कि बस अब हम आज इसीके वशीभूत होंगे क्योंकि कामदेव ने इसीलिये हमको यहां भेजा है ३ इसप्रकार दैत्यों का ईश्वर बड़ी देरतक चिन्ता करता रहा व कामसे मूढ़हो बहुत समय तक कुछ न बोला फिर अतीव आतुर हो अतिवेग से वहां गया व दीनमन हो उस सुलोचना से बोला ४ कि हे सुन्दरि! तुम किसकी स्त्री हो व किसने तुमको यहां भेजा है व तुम्हारा पुण्यदायक क्या नाम है हम से कहो हे बाले! महातेजस्वी तुम्हारे रूप से हम मूढ़ होगये हैं इस से तुम हमारे वशीभूत होओ ५ जब इसप्रकार वृत्रासुरने कहा तो वह विशालाक्षी रम्भा काम से अतिव्याकुल वृत्रासुरसे बोली कि हमारा रम्भा नामहै हे महाभाग! यहां कामक्रीड़ा करने के लिये इस उत्तम वन में ६ सखियों के संग आई हूं देखते हो कि कैसा उत्तम नन्दन वन है तुम कौनहो व किसलिये हमारे पास आये हो ७ तब वृत्रासुर बोला कि हे बाले! हे शुभे! हम जो हैं व जिसके लिये यहां आयेहैं तुमसे कहतेहैं सुनो हम अग्नि से उत्पन्न हुये हैं व कश्यपजीके पुत्रहैं ८ व हे वरानने! देवताओंके देव इन्द्र के भी हम सखाहैं व हे वरारोहे! आधा ऐन्द्रपद हमारे भोगकरने

में आगया हूँ ९ हे देवि ! हे वरवर्णिनि ! मेरा वृत्रासुर नाम है मुझे इसप्रकार कैसे नहीं जानतीहो जिसके तीनों लोक वश में हैं १० सो हे प्रिये ! हे श्रेष्ठमुखवाली ! हे सुन्दर नेत्रोंवाली ! हम काम से बहुत व्याकुल हैं और तुम्हारी शरण में आयेहैं कामसे हमारी रक्षा करो हमारे संग भोग करो ११ तब रम्भा बोली कि हम अभी तुम्हारे वश में होंगी इस में कुछ सन्देह नहीं है परन्तु हे वीर ! जो २ कार्य्य हम कहेंगी सो २ तुमको करना होगा १२ वृत्रासुरने कहा हे महा-भागे ! ऐसाहीहोगा जो जो तुम कहोगी सब हम करेंगे इस प्रकार की प्रतिज्ञा उसके संग कर महाबली १३ दानवश्रेष्ठ वृत्रासुर उस महापुण्य वन में रम्भा के गीतसे व नृत्यसे ललित हँसने से १४ व उसके सुरतसे महादैत्य अतिमूढ़ होगया तब उसमहाभाग दानव सत्तम वृत्रासुरसे रम्भा बोली १५ कि अब तुम मदिरापान करो व मधु माधवी लताका भी रस पानकरो तब उस विशाल नेत्रवाली और चन्द्रमाके समान मुखवाली रम्भा से वृत्रासुर बोला १६ कि हम ब्राह्मण के पुत्रहैं व वेदवेदाङ्ग पारगामी हैं इस से हे भद्रे ! अति निन्दित मदिरापान कैसे करें १७ यह सुन उस देवी रम्भा ने बड़ी प्रीति के साथ हठ करके उसको मदिरादी तब उसकी चतुरता से उसने सुरापान करीलिया १८ जब मदिरा से अति मत्तहोकर ज्ञान से भ्रष्टहोगया व सोगया सोतेहीमें इन्द्र ने वज्र से मारडाला १९ व वृत्र के मारने के कारण ब्रह्महत्यादि पापों से इन्द्र लिप्त होगये तब ब्राह्मण इन्द्रसे बोले कि हे इन्द्र ! तुमने पाप किया २० महा बलवान् वृत्र तुम्हारे विश्वासपर था तुमने विश्वासघात किया जो उसे मारा ऐसा पाप तुमने किया २१ इन्द्र बोले कि जिस किसी उ-पाय से हो शत्रुको सदैव मारही डालना चाहिये ॥

चौ० द्विज देवनको मारनहारा । यज्ञधर्म्म कण्टक श्रुतिन्यारा ॥
तीनलोक नायक खल दानव । हम मारा जो मारत मानव २२
तासु हेतु कोप्यहु तुम लोगा । यह नहिं न्याय बरनहै शोगा ॥
करहु विचार विप्र वर नीके । कहत वचन सबविधिहमठीके २३
मम अन्याय जानि पुनि पीछे । करहु कोप हमकहत अतीछे ॥

इमिकहि सुरपति द्विजनप्रबोधा । जासों गयहु कछुक तिनक्रोधा २४
पुनि ब्रह्मादिक तिन समझावा । बहुनभांति करि वचन बनावा ॥
तबगे ऋषि निज आसन पाहीं । धर्म्मग्रहुहतिमोदकनाहीं २५।२६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवृत्रासुरवधोनाम पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

दो० छब्बीसयें महँ दितिज पवन भये उञ्चास ॥
जिन्हेंइन्द्रहति गर्व्व महँ तिनसँग भयेपचास १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि उस पुत्रको भी माराहुआ सुन दिति दुःखितहुई व हे द्विजसत्तमो ! पुत्र के शोकसे अतिभस्महुई १ व जाकर फिर महात्मा मुनिश्रेष्ठ कश्यपजीसे बोली कि हे द्विजसत्तम ! इन्द्र दुष्ट के वध के अर्थ २ ब्रह्मतेजोमय तीव्र सब देवताओं को दुःख से सहने के योग्य एकपुत्र हमको दो हे कान्त ! हे विभो ! जो हमभी आपकी प्रियाहों ३ कश्यपजी बोले कि दुष्टात्मा इन्द्र ने अधर्म्म का आश्रयणकर महाबली हमारे बल व वृत्र दोनों पुत्रोंको मारडाला ४ अच्छा अब उसके वध के लिये एक और पुत्र तुमको देंगे परन्तु हे यशस्विनि ! सौ वर्ष तक तुम पवित्रता से रहना ५ इतना कह उन योगेन्द्रजीने दितिके शिरपर अपना हाथरखदिया व दितिके साथ हीवे योगीन्द्रजी तपकरनेके लिये सुमेरु पर्व्वतपर चलेगये ६ व दिति भी तपोवनमें रहकर तप करनेलगी व पुत्रकेअर्थ सदा पवित्रादि नियमोंसे रहनेलगी ७ तब इन्द्रदेव दितिका ऐसाउद्यम जानकर उनके नियमोंमें विघ्नदेखनेलगे ८ यहांतक कि ब्राह्मणका शरीर धारणकर पच्चीसवर्षके होकर देवतोपम इन्द्रजी उस महातपस्विनी अपनी मौसी व सौतेलीमाता दितिके समीपगये व धर्मात्माजी तप करती हुई उस अपनी सौतेलीमाताके प्रणाम करतेभये तब दितिने कहा कि हे द्विजसत्तम ! आप कौन हैं ९।१० इन्द्र उससे बोले कि हे भामिनि ! हे शोभने ! हम तुम्हारे पुत्रहैं व वेदशास्त्र जाननेवाले ब्राह्मणहैं सब धर्म्म जानतेहैं ११ इससे तुम्हारे तपमें सहायताकरेंगे

इसमें कुछ सन्देह नहींहै यह कह तप करतीहुई उस अपनी माता की शुश्रूषा इन्द्र करने लगे १२ परन्तु वह दुष्टकारी इन इन्द्र को नहीं जानतीथी दिन २ सेवाकरने से धर्म्मपुत्र जानतीथी १३ इन्द्र उसके सब अङ्ग मींजदेतेथे व पैर धोदेतेथे वनसे मूल फल पत्र व-ल्कलाजिन आनदेते थे १४ व बड़ेप्रेमसे धर्म्मात्मा इन्द्र उस दिति को सदा सब पदार्थ दियाकरते इन्द्रकी भक्तिसे सन्तुष्टहो बड़ीप्रीति से दिति ब्राह्मणरूपी इन्द्रसे बोली कि १५ जब हम पुण्यपुत्र उत्प-न्नकरेंगी व वह इन्द्र को मारडालेगा तो उसहमारे पुत्रके सङ्ग तुमभी राज्यसुख भोगना १६ यह सुन इन्द्रजीने कहा हे महाभागे ! अच्छा तुम्हारे प्रसादसे हमभी ऐन्द्रपदका सुखभोगेंगे यह कह इन्द्र उसके तप नियममें औरभी अन्तर विचारनेलगे १७ इसप्रकार कुछ कम सौवर्ष बीतगये इन्द्रने एकदिन यह अन्तर देखा कि विना पैर-धोयेहुये दिति सोरही १८ व शिरके बारखोले उत्तरको शिरकिये अत्यन्त विह्वल दितिके उदरमें सूक्ष्मशरीर धारणकर इन्द्र पैठगये व तिनकी नींदको हरलिया और तीक्ष्णधारवाले वज्रसे उसगर्भके उन्होंने सातखण्ड करडाले १९।२० तब वे सातोंखण्ड रोदन करने-लगे फिर रोतेहुये उन गर्भके खण्डोंसे इन्द्रने बार २ कहा २१ कि रोदन न करो रोदन न करो जब उन्होंने रोना न बन्दकिया तो इन्द्र ने उन सातोंके सात २ और खण्ड करडाले इस प्रकार वे उञ्चास होगये व तब उन्होंने कहा अब हमको न मारो हम तुम्हारेभाई होंगे इन्द्रने कहा अच्छा तुम हमारेभाई उञ्चासपवन होओ इससे वे पवनहोगये इन्द्रके कहनेसे वे सब अतिवीर्य्यवाले व बड़े शरीरवाले महातेजस्वी पराक्रमी होगये २२।२४ व उञ्चासो देवताहोगये मरुत् उनका नामहुआ व इन्द्रहीके आश्रितहुये २५ व सब प्राणियों को ये पवन सदा सन्तुष्ट करते व प्रकाशित करतेरहतेहैं बस इसप्रकारसे सब समूहके समूहोंकी सृष्टि श्रीविष्णु भगवान् कश्यपादि प्रजापति-योंसे कराते हैं २६ व उस सृष्टिके राजा क्रमसे पृथु आदिको बनाते हैं वे देवदेव कृष्णचन्द्र सर्व्वव्यापी पुरुष पुराण जगत्के गुरुहैं २७ तप सब विष्णुरूपहैं व सब प्रजापति भी विष्णुस्वरूपी हैं मेघ अ-

ग्नि आदि सब पुण्यात्मा विष्णु रूपही हैं २८ व उन्हींका यह स्थावर जङ्गम सब जगत्है हे द्विजसत्तमो! जो कोई यह प्राणियोंकी सृष्टि जानताहै २९ उसका फिर इस संसारमें आना नहींहोता फिर परलोकका भय कहां होसक्ताहै इस महापुण्य व सब पापहरनेवाली सृष्टिको ३० जो पुरुष भक्तिसे सुनताहै वह सब पापों से छूटजाता है वह धन्य होता व पुण्यात्मा होता व सत्यसंयुत होताहै ३१ ॥
चौ० जोयहसृष्टि सुनतनरकोई। लहत परमगति नहिं शकसोई ॥
सर्व पापगत शुद्धस्वरूपा। विष्णुलोक पावत नरभूपा ३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेनरवृत्तिर्नामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

दो० सत्ताइसयें महँ कह्यो सब अधिपतिजिमिहोत ॥
ब्रह्माज्ञासों करतसुख पालत सबहि निसोत १

सूतजी शौनकादि ऋषियोंसे बोले कि वे परमेश्वर सबलोकोंके ईश सब राज्य में वेन केपुत्र महाप्रभुपृथुजी को राज्याभिषेक करते भये १ ये पृथुजी महाबाहु महाकाय सुरेश्वरइन्द्र के समान थे २ सृष्टि की आदि में सबको उत्पन्न करके ब्रह्माजी जो जिसके योग्य होताहै उसे उसका राजा बनातेहैं जैसे मनुष्यों का राजा महात्मापृथुजी को नियत किया ऐसेही सब वृक्ष ब्राह्मण ग्रह ताराओं का राजा चन्द्रमा को नियतकिया व सब तप धर्म्म सबयज्ञ सबपुण्य व सब पुण्यतेजस्वियों का भी राज्य सोमही को दिया ३ । ४ व जलोंके मध्य में सबतीर्थोंका राज्य वरुणजीको दिया समुद्रमें जो रत्न हैं उनके भी स्वामी वरुणही हुये ५ व अन्य सब यक्षाओं के राजा कुबेरजी को बनाया व महा बुद्धिमान् विष्णु वामनजीको सब अदितिके पुत्र देवताओंका राजा बनाया ६ व सब पुण्यात्माजनोंके राजा सबोंके हितके लिये दक्षप्रजापतिजीको बनाया ७ क्योंकि वे सब धर्म्म जानते थे इससे सब प्रजाओं के अधिप किये गये व विष्णुके तेज से युक्त सबधर्मजाननेवाले प्रह्लादजीको ब्रह्माजीने सब दैत्यों व दान-

वोंके स्वामी नियत किया यम वैवस्वत धर्म्मराजजीको पितरोंके रा-
ज्यपर स्थापित किया ८। ९ यक्ष राक्षस भूत पिशाच उरग सर्पसब-
योगिनी महात्मा वेताल १० सब कंकाल सब कूष्माण्ड व सब
राजाओं के राजा शूलपाणि महादेवजी को बनाया ११ व सब
पर्व्वतोंके राजा महापर्व्वत हिमवान्को नियतकिया व सब नदियों
तड़ागों वापियों १२ कुण्डों व कूपोंके राज्यपर सर्वतीर्थ अत्युत्तम
पुण्यकारी समुद्रको स्थापितकिया १३ व सबगन्धर्व्वों तथा पुण्यजनों
के राज्यपर सुरेश्वर ब्रह्माजीने चित्ररथनाम गन्धर्व्वको नियुक्तकिया
१४ व पुण्यवीर्य्यवाले नागोंके राजा वासुकिनागको बनाया व सर्प्पों
के राज्यपर तक्षक नाम सर्प्पको नियोजितकिया १५ व सब हाथि-
योंका राजा ऐरावत नाम महागज नियतहुआ ऐसेही सबघोड़ोंका
राजा उच्चैश्श्रवा नियतहुआ १६ व सबपक्षियोंकेराजा गरुड़ नियत
हुये व सब हरिणों का राजा सिंह बनायागया १७ व सबवृषभों व
धेनुओं के राजा नन्दीश्वर नियत हुये व सब वनस्पतियोंका राजा
पिप्पल बनाया गया १८ इसप्रकार पुण्य राज्यों पर पुण्यात्मा राजा
नियतकर ब्रह्माजीने सबदिशाओंमें दिक्पाल स्थापित किये १९ पूर्व्व
दिशामें वैराजके पुत्र सुधन्वा को राज्याभिषेककरके स्थापितकि-
या २० व दक्षिणदिशामें कर्द्दम प्रजापतिके पुत्र महात्मा शंखपदको
राजा नियतकिया २१ इनलोगोंने सप्तद्वीपवती पत्तनयुक्त इस सब
पृथ्वीको यथा भाग पालनकिया व अबभी ये सब धर्मसे पालनकर-
तेहैं २२ फिर पश्चिमदिशामें ब्रह्माजीने वरुण प्रजापतिके पुत्र पु-
ष्करनामको दिक्पालता पर नियत किया २३ व उत्तरदिशामें
ब्रह्माजीने नलकूबर को स्थापित किया इस प्रकार महापराक्रमियों
को सब राज्याधिकार में ब्रह्माजीने अभिषेक किया २४ महाभाग
पृथुको जानों प्रथम सब राजाओंका स्वामी बनायाहीथा फिर राज-
सूयादि सब महायज्ञों से ब्राह्मणोंके द्वारा विधि विधानसे उनका अ-
भिषेक किया कराया २५ इस प्रकार वेदके विधानसे महाराज पृथु
जीको राज्यपर स्थापितकिया इन पृथुजीको अत्यन्त पुण्यात्मा महा-
पराक्रमी महात्मा चाक्षुषनाम मन्वन्तरमें सबका राजा ब्रह्माजीने

बनायाथा २६ फिर उसके पीछे जब पुण्यरूप यह वैवस्वत मन्वन्तर आया तो इसमें जो राजा पृथु नियतहुआ उसकी विशेष कथा जो तुम्हारे सुननेकी इच्छाहोगी तो हम कहेंगे २७ । २८ ॥

चौ० पुण्यपुनीतदेवअभिषेका । अधिष्ठान सबके सविवेका ॥
तुमसनभाषे सकल सुपावन । सब पुराणमहँ भणितसुहावन २९
पुण्ययशस्य स्वर्ग्य आयुषकर । शुभ अरु सौख्य सकलउत्तमतर ॥
धन्य पवित्र पुत्रप्रद येहू । वृद्धिदायि यामहँ न सँदेहू ३०
भाव ध्यानयुत जो नर कोई । पढ़त भक्तिसों प्रकट न गोई ॥
अश्वमेधफल सो जनपावत । नहिं संशय कछु सत्य बतावत ३१

इति श्रीपाद्मयेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेराज्याभिषेको नामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

दो० अट्ठइसे महँ पृथुचरित कथनहेतु खल वेन ॥
के भाषे अवगुण बहुरि पृथुचरित्र सुख देन १

पूर्व्वके अध्यायकी कथा सुन ऋषियोंने सूतसे पूँछा कि हे महाभाग ! महात्मा पृथुजीका चरित विस्तारसहित कहो हम लोगों को फिर सुननेकी इच्छाहै १ जिस प्रकार उन महात्मा राजाने इस पृथ्वी को दुहा व फिर देवताओं पितरों व तत्त्व जाननेवाले मुनियोंने उसे दुहा २ व जैसे दैत्यों नागों यक्षों व वृक्षों ने दुहा फिर जैसे पर्व्वतों पिशाचों गन्धर्व्वोंने व पुण्य कर्म्म करनेवाले ब्राह्मणोंने दुहा जैसे सिद्धों राक्षसों व भीमपराक्रमी अन्य महात्मा लोगोंने भी दुहा ३।४ उन सबोंके पात्र विशेष वर्णनकरो व हे महामतिवाले ! दुग्धका भी विशेष विधान कहो ५ व महात्मा राजा वेन का हाथ पूर्व्व समय में ऋषियों ने मथा सो किस कारण से यह भी कहो ६ सोभी उन लोगों ने सुना कि क्रुद्ध होकर वेन का हाथ मथा था यह सब पापनाशिनी कथा पुण्यकारिणी और बड़ी विचित्रहै ७ हे महाभाग ! इससे हम लोगोंके सुननेकी इतनी इच्छाहै कि तृप्तिही नहीं होती यह सुनकर सूतजी बोले कि वेन व पृथु दोनों का चरित्र व जन्म

वीर्य्य तेज पौरुष सब विस्तारपूर्व्वक कहते हैं व विशेषकर धीमान् पृथुका चरित कहते हैं ८।९ सो हे महाभाग द्विजसत्तमो ! हमसे श्रवणकरो व कभी यह चरित अभक्त श्रद्धाहीन शठसे न कहना १० व न अतिमूर्खसे न अतिमोहयुक्त से न अशिक्षितसे न थोड़ी श्रद्धावाले से न क्रूरसे न सब कुछ नाशकरनेवाले से ११ क्योंकि जो इस चरितको अश्रद्धा आदिसे पढ़ता है वह नरकको जाताहै आप लोग भावसंयुक्त व सत्य धर्म्मपरायण हैं १२ इससे आपलोगोंके आगे पापनाशन यह चरित सम्पूर्ण कहते हैं श्रवणकरो १३ यह चरित स्वर्ग देता यश आयुष् देताहै धन्यहै व सब वेदोंके सम्मत सेहै ऋषिलोगों ने इसे बहुत गुप्त सम्भाषण किया है पर हम तुम से कहेंगे हे द्विजोत्तमो ! सुनो १४ जो कोई वेनकेपुत्र पृथुजीका चरित विस्तारपूर्व्वक कहताहै वह ब्राह्मणों के नमस्कार करके किये हुये व बिना कियेहुये का शोच नहीं करता सब उसे कियाही हुआ जानपड़ता है १५ सातजन्मका पाप केवल सुननेसे नष्ट होजाताहै ब्राह्मण जो इसे पढ़ताहै वेदज्ञ विद्वान् होता व क्षत्रिय विजयी होता १६ वैश्य धनवान् होता व शूद्र इसको सुनकर सुखी होताहै जो सुनता व पढ़ता है अपनी २ जातिके अनुसार ऐसा फलपाता है १७ पृथुका जन्म व वेनकाभी जन्म पवित्र पापनाशने वाला है धर्म्म के रक्षक महाप्राज्ञ वेद शास्त्र के अर्थ जानने में महा पण्डित १८ अत्रिवंश में उत्पन्न अत्रि के समान तेजस्वी पूर्व्वकाल में सब धर्म्मोंके उत्पन्न करने वाले अङ्गनाम एक प्रजाओं के पति राजाहुये १९ वे धर्म्मकोछोड़ और कर्म्म कभी नहीं करतेथे तिन अङ्गके वेन नाम प्रजापति हुये २० राजा अङ्गजीका विवाह महाभाग्यवती मृत्युकी कन्या सुनीथा नाम के सङ्गहुआ २१ उस में जो पुत्रहुआ उसका वेननामहुआ यह बड़ा धर्म्मनाशक बालकहुआ अपने मातामह मृत्यु के दोषसे यह मृत्युकी पुत्रीका पुत्र हुआ २२ यह अपने धर्म्मको छोड़ अधर्म्म में निरतहुआ काम लोभ व महामोह से पापही सदा किया करे २३ वेदाचारके धर्म्मको छोड़ वह राजा मदसे मत्त व मोहितहो सदा पापों केहीकरने में निरतरहै २४ इससे उसके भयके मारे

अन्यजनभी वेदाध्ययन न करनेलगे उस राजाके राज्यमें स्वाहा स्वधा वषट्काररहित सब प्रजा प्रायः होगई २५ अब देवताओंकी प्रवृत्तिही यज्ञोंसे जातीरही क्योंकि जो ब्राह्मण यज्ञ करनेभी लगे उनसे वह दुष्ट ऐसा कहै २६ कि तुम लोग वेदादि न पढ़ो होम न करो दान न दिया लिया करो यज्ञ न करो हवन कभी न करो यह हमारी आज्ञाहै २७ राजाकी जब ऐसी आज्ञाहुई तो सबोंने जाना कि अब इनका विनाश आगया है व यहभी राजाने ब्राह्मणोंसे कहा कि यज्ञ हमारे लिये करना चाहिये क्योंकि उसके भोक्ता हमीं हैं व यज्ञ करनेवाले भी हमीं हैं यज्ञ भी हम हैं २८ हमारेही विषय में यज्ञ करो व हमारेही विषय में होम करो वेन ऐसाही सदा सबोंसे कहै कि सनातनविष्णु हमीं हैं २९ हम ब्रह्मा हम रुद्र हम इन्द्र हम पवनहैं व हमीं हव्य कव्य सबके भोक्ता हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है ३० यह सुनकर महाबलवान् मुनिलोग वेनके ऊपर बहुत क्रुद्ध हुये व इकट्ठे होकर सबके सब जाकर उस पापी राजासे बोले कि ३१ राजा पृथिवीका नाथ होताहै इससे सदा प्रजाओंको पालताहै व धर्म्मकी मूर्त्ति होताहै इससे सदा उसे चाहिये कि धर्म्म की रक्षाकरे ३२ हमलोग दीक्षामें प्राप्तहोकर बारहवर्षतक यज्ञकरेंगे इससे हे वेन ! उसे रोंककर अधर्म्म न करो क्योंकि यह सज्जनों का धर्म्म नहीं है ३३ हे महाराज ! तुमभी धर्म्म करो व सत्यपुण्य करो तुमने यह प्रतिज्ञाकीथी कि हम प्रजाओंको पालेंगे ३४ ऐसा कहते हुये उन महर्षियोंसे निर्बुद्धि वेन यह निरर्थक अर्थ हँसकर बोला कि ३५ धर्म्म बनानेवाला और कौनहै व हम अन्य किसका वचन सुनें क्योंकि वेदाध्ययन पराक्रम तप व सत्यके करनेमें हमारे समान और पृथ्वी पर कौनहै ३६ हे मूढ़ो ! तुमलोग सब भूतों के उत्पन्नहोने के स्थान व सब धर्म्मोंके उत्पन्न होनेके तो विशेषस्थान हमको नहीं जानते ऐसे अचैतन्य होगयेहो ३७ हम इस पृथ्वीको जब चाहें जलादें व जब चाहें समुद्रमें डुबादें पृथ्वी व अन्तरिक्षको कहो तो रूँधलें इसमें कुछ विचार करने की बात नहीं है ३८ जब मोह व गर्व्व से युक्त राजाकी दुष्टता न मिटसकी तब महर्षियोंने

राजा के ऊपर बड़ा क्रोधकिया ३९ व इधर उधर कूदते फांदतेहुये वेनको जबरदस्ती पकड़कर मारेक्रोधके वेनकी बाईं जंघा मथी ४० उसमेंसे कालेअञ्जनके ढेरकेसमान काला बहुतही छोटेडीलका विलक्षण बड़ेभारी मुखका अतिविरूप नेत्रवाला नीलके रंगका ४१ बड़े लम्बेपेटका सिकुड़े कानोंका अतिभयङ्कर व बड़े दुःखसे भरने वाले पेटका एक पुरुष निकला व उसने कहा क्या करूं तब उन महात्माओंने देखकर कहा निषीद अर्थात् बैठजा ४२ उन लोगों का ऐसा वचन सुन भयसे आतुरहो वह बैठगया व इसीसे उसका निषाद नाम हुआ पर्व्वतोंपर व वनोंमें उसको वसने की आज्ञाहुई ४३ उसी निषादके वंशसे निषाद किरात भिल्ल नाहलक भ्रमर पुलिन्द व और भी जो म्लेच्छोंकी जातें हैं ४४ वे सब पाप करनेवाले उसी वेनके अंगसे उत्पन्न हुयेथे फिर वे सब ऋषिलोग बड़े प्रसन्नमन हुये ४५ व उन्होंने नृपोत्तम वेनको अब पापरहित समझा इससे उस महात्मा वेनका दहिनाहाथ उन्होंने मथा ४६ उस हाथके मथने पर उसमें पसीना होआया तब उन विप्रोंने फिर वही दहिना हाथ मथा ४७ तब उस सुन्दरकरसे बारह सूर्य्यों के समान प्रकाशित एक पुरुष उत्पन्न हुआ उसके सब अंगोंका रङ्ग तपाये हुये पक्केसोनेका सा था व दिव्यमाला वस्त्र धारण कियेहुयेथा ४८ दिव्य आभरणों की शोभासे शोभित अंगथा व दिव्य गन्ध अंगोंमें लगेथे सूर्य्यसम चमकतेहुये मुकुटसे व कुण्डलोंसे विराजताथा ४९ बड़ाभारी शरीर था व बड़े बड़े बाहुथे व रूपमें पृथ्वीपर उसके समान दूसरा कोई न था खड्ग बाण धनुषा कवच धारण किये महाप्रभु था ५० सब लक्षणोंसे सम्पन्न व सब अलङ्कारोंसे भूषितथा तेज रूप वर्णोंसे युक्त महामति ५१ इन्द्र जैसे स्वर्ग में शोभित होते हैं वैसेही पृथ्वीपर वह वेनकापुत्र शोभितहुआ उन महाभागके उत्पन्नहोने पर निर्म्मल देवताओं व ऋषियोंने ५२ वेनके पुत्र होनेका बड़ा भारी उत्सव किया उन्होंने अपने शरीरसे दीप्तिमान् होने से साक्षात् अग्निके समान प्रज्वलित होतेहुये ५३ आजगवधनुष् धारणकर जिसमें बड़ा भारी शब्दहोताथा दिव्य बाण व रक्षाके लिये बड़ी दीप्तिवाला क-

वच धारणकिया ५४ यह सब महाभाग महात्मा महावीर पृथुजीके उत्पन्न होतेही सब हुआ व सब प्राणी हर्षितहुये ५५ व सब तीर्थों के विविध प्रकारके पुण्यकारी जल उनके अभिषेकके लिये सब ब्राह्मण सब ओरसे लेकर आखड़े हुये ५६ व ब्रह्मादिक देव तथा और भी नानाप्रकार के प्राणी स्थावर जङ्गम सब अभिषेकके समय आये व आकर सबोंने अभिषेक किया ५७ इसप्रकार चरोंने व अचरोंने भी ऐसे महावीर पृथुजीको राजराजकरके अभिषेकित किया व वे सब प्रजाओंके पालक हुये ५८ जब देवताओं व सब ब्राह्मणों ने वेनके पुत्र महाराजाधिराज प्रतापी पृथुजी को राजसिंहासनपर स्थापित किया ५९ वैसेही उन्होंने सब प्रजाओंको अनुरञ्जित किया जिनको उनके पिताने कभी अनुरञ्जित नहीं कियाथा जब प्रजाओं में उन वीरने ऐसा अनुराग किया जिससे सब पृथ्वी राजन्वती हुई व समुद्र पार तक सप्तद्वीपवती धरणी के अकेले स्वामी हुये उन महात्माके भयसे समुद्र पर्य्यन्त के जल सब ठौर ठौर ठहरगये चलना बन्दहोगया व पर्व्वतों पर यद्यपि बहुधा दुर्ग्गम मार्ग्ग होतेहैं पर इनके होतेही सब पर्व्वतोंने मारे भयके अपने मार्ग्ग सुगम कर दिये ६० । ६२ इनके ध्वजाका भङ्ग किसी पर्व्वतने न किया सब कहीं सुगममार्ग्ग होगये व महाराज पृथुजीके राज्यमें पृथ्वीपर विना जोतेही अन्न होनेलगा ऐसेही धेनु जो इनके पिताके समयमें कुछ भी दुग्ध नहीं देतीथीं वे बहुत बहुत पय देनेलगीं ६३ मेघ प्रजाओं की इच्छा के अनुकूल जल बरसाने लगे सर्व्वत्र बड़े बड़े यज्ञ होने लगे ब्राह्मण व क्षत्रिय सब यज्ञ करने लगे ६४ व उन राजाके राज्य में सब कालों में वृक्षों से फल मिलने लगे दुर्भिक्ष उनके राज्य में कभी हुआही नहीं व्याधि अकाल मरण किसी प्राणी को कभी न हुये ६५ सब लोग धर्म्म में परायणहो सुखसे जीनेलगे जब ये राजराज दुर्धर्ष महात्मा इस प्रकारका राज्य कररहेथे ६६ उसी समयमें महाब्रह्मयज्ञ में सूतसूति में उत्पन्न हुये जब कि अच्छा सौम्य दिन आया ६७ व उसी यज्ञमें महाप्राज्ञ मागध लोग उत्पन्न हुये तब पृथुकी स्तुति करनेके लिये ऋषियों ने उनको बुलाया ६८ हे द्विजो-

त्तमो ! अब हम पुण्य सूतका लक्षण तुम लोगों से बताते हैं शिखा सूत्रसे संयुक्त व वेदके अध्ययन में तत्पर ६९ सब शास्त्रों के अर्थों का वेत्ता व नित्य अग्निहोत्रकी उपासना करे दान नित्य देता रहे पठन पाठनकरे ब्रह्मचर्य्यमें परायणहो ७० देवताओं व ब्राह्मणों की नित्य पूजाकरे व याजकों से सदा पुण्यकारी वेदमन्त्रों से यज्ञ करातारहे ७१ ब्राह्मणों का सा सदा आचारकरे सम्बन्धभी बहुत ब्राह्मणों केही साथ रक्खे बस यह सूतका लक्षणहै अब मागधका लक्षण कहते हैं वह अन्यकर्म तो करसक्ताहै पर वेद नहीं पढ़सक्ता ७२ व वन्दीजन तथा सब चारण ब्राह्मणका कोई आचार नहीं कर सक्ते व और भी जो बड़े भाग्यवाले स्तुति करनेवाले लोग होते हैं ७३ परन्तु स्तुति करने के लिये निपुण सूत व मागध येही दो ठीक ठीक उत्पन्न किये गये हैं इसलिये उन्हीं दोनोंसे सब ऋषियोंने कहा कि तुम दोनों इस राजाकी स्तुति करो ७४ जैसा राजा होना चाहिये उसके अनुरूप ये महाराज हुये हैं इससे इनकी स्तुति करनी चाहिये यह सुन वे वन्दी व मागध दोनों ऋषियों से बोले ७५ कि हम दोनों देवताओं व ऋषियोंको अपने कर्म्मों से तृप्तकरेंगे पर इन राजाके न हम कुछ कर्म्म जानें न यश न लक्षण ७६ कि जिस कर्म्म से इन महात्माकी स्तुतिकरें विना इनके गुण जाने हम स्तुतिमें क्या कहें ७७ तब ऋषियोंने उनदोनोंसे कहा कि हम इनके भविष्यगुण जानते हैं ये २ होंगे इससे तुम इन्हीं गुणों से इन महात्मा राजाकी स्तुतिकरो जो गुण उनमहायशस्वी पृथुमहाराजमेंथे ७८ सब गुणोंको उन महात्मा त्रिकालदर्शी ऋषियों ने सूत व मागध से कहे जैसे कि सत्यवान् ज्ञानसम्पन्न बुद्धिमान् अद्भुतविक्रम ७९ सदा शूर गुणग्राही पुण्यवान् दानी गुणी धार्म्मिक सत्यवादी यज्ञों के उत्तम याजक ८० प्रियवाक् सत्यवाक् धान्यवान् धनवान् अतिगुणी गुणज्ञ गुणग्राही धर्म्मज्ञ सत्यवत्सल ८१ सर्व्वगसर्व्ववेत्ता ब्रह्मण्य वेदवित् सुधी प्रज्ञावान् सुन्दर स्वरवाले वेदवेदाङ्गपारगामी ८२ धाता व प्रजाओं के गोप्ता समरभूमिविजयी व ये राजसत्तम राजसूयादि यज्ञोंके करनेवाले होंगे ८३ व भूतलपर सब धर्म्मयुक्त एकही होंगे येसबगुण इन

महात्मा के अङ्गों में होंगे ८४ जब ऋषियों ने ऐसे भावी गुण बताकर सूत व मागधको महाराजकी स्तुति करने के लिये नियुक्त किया तो उन महात्माके उन भविष्य गुणों से सूत मागधों ने बड़ी स्तुतिकी ८५ व तब से सब लोग उनकी स्तुतियों से प्रसन्न हुये जब सूतादिकों ने दिव्य स्तुति महाराजाधिराजकी की तो उनमें आश्चर्य को तो बहुतसा उत्तम धन महाराज ने दिया ८६।८७ व सूत मागध वन्दी गण इनको महोदय दिया जिससे सर्व्वत्र उनका मान होता रहे व चारणको तैलङ्ग उत्तम देश दिया ८८ पृथुजीके प्रसादसे इन लोगों को ये पदार्त्थ मिले व आपने हैहयदेश में नर्म्मदा नदी के तीर पर अपने नाम का एक नगर बसाया ८९ व वहां बस नानाप्रकार के यज्ञ करके ब्राह्मणों को बहुत धन दिया जब सर्व्वज्ञ सर्व्वदाता धर्म्म वीर्य्ययुक्त महाराज को ९० सबों ने देखा तो सब प्रजायें व तपसे निर्मल मुनिलोग परस्पर यह कहने लगे कि ये महाराज महामतिमान्हैं ९१ क्योंकि देवादिकों को वृत्ति देते हैं व हमलोगों को तो विशेष वृत्ति देते हैं व प्रजाओं के पालक व जीविका देनेवाले भी होंगे ९२ यह आपस में विचारकर सब प्रजायें महाराजसे बोलीं कि हे महाराज ! यह पृथ्वी आपके प्रथम बोये हुये बीज को ग्रसलेती थी इससे प्रजाओंकी जीविका नहीं चलती थी अब आप इस विषय में विचारांशकरें व हमलोगों की वृत्ति फिर नियत करें क्योंकि विना जीविका के हम सब मरेजाते हैं आप इन ब्राह्मणों से भी पूँछलें ९३।९४ सब हम लोगोंकी जीविका लीलकर पृथ्वी कुछभी अन्नादि नहीं उत्पन्न करती प्रजाओं का यह बड़ा भय श्रवणकर महाराज श्रेष्ठतमने ९५ महर्षियोंसे भी पूँछकर जब उन्होंने भी कहा कि सत्य ऐसाही है तो धन्वा बाणले बड़ा क्रोधकर पृथ्वीके ऊपर महाराज बड़े वेगसे दौड़े ९६ तब हाथीका रूप धारणकर राजाके भयसे व्याकुल पृथ्वी भागी व वनोंमें दुर्ग्गम स्थानों में गुप्त होकर घूमनेलगी ९७ महाराज ने बहुत ढूँढ़ा परन्तु पृथ्वीका रूप उन्होंने न देखा तब सब ऋषियोंने कहा कि पृथ्वी तो हाथीकारूप धारण कियेहुये है ९८ तब कुञ्जररूप धारणकिये हुई पृथ्वी के पीछे राजा अतिवेगसे दौड़े दौ-

ड्ने के समय राजाने योगबल से अपना सिंहकारूप धारण करलिया रोषके मारे लाल नेत्रवाले महाराजने बड़ाही क्रोधकिया व बड़े तीक्ष्ण घोर बाणों से जाकर पृथ्वी को मारा ९९।१०१ तब बाणों के घातसे युक्त गजरूप पृथ्वी बहुत आकुल व्याकुल होगई व महिष का रूप धारणकरके भागी हाथीका रूप छोड़दिया १०२ पर बाण हाथोंमें लिये राजा बड़े वेगसे उसके भी पीछे २ दौड़े तब तो वह महिषका रूप छोड़ गऊका रूप धारणकर निश्चय स्वर्ग को चलीगई १०३ व जाकर प्रथम ब्रह्माजीके शरण में पहुँची वहां अपनी रक्षा न देखकर महात्मा श्रीविष्णुजी के शरण में गई वहांसे भी भागी फिर रुद्रादि सब देवताओं के समीपगई पर रक्षाका स्थान कहीं न पाया १०४ तब अत्यन्त व्याकुलहो महाराज पृथुजीकेही शरण में आई बाणों के घातों से समाकुलहो उनके पास फिर आकर १०५ हाथ जोड़ उन्हीं महाराज पृथुजीसेही बोली कि हे राजेन्द्र! रक्षाकरो रक्षाकरो १०६ हे महाभाग! मैं सबकी आधारभूत पृथ्वीहूं हे राजेन्द्र! मेरे मारजाने पर सातोलोक मारजायँगे १०७ फिर भी दोनों हाथ जोड़कर राजासे बोली कि महाराज स्त्रीजाति सब किसी से सदैव अवध्य होतीहै १०८ क्योंकि स्त्रियोंके वधमें महर्षियोंने बड़े २ दोष दिखायेहैं व गौओं के वधमें भी द्विजोत्तमों ने बड़े २ पाप कहे हैं १०९ इसके विशेष हे महाराज! मेरे न रहनेपर आप प्रजाओंको कहां धारण करेंगे हे राजन्! जब मैं स्थिरहूं तभीतक ये चर अचर सब लोगहैं ११० क्योंकि जब मैं स्थिर रहती हूं तभी ये सब स्थिर रहते हैं अन्यथा नहीं मेरे न रहनेपर चराचर ये सब लोग विनष्ट होजायँगे १११ फिर मेरे होनेपर भी क्या होगा जब कि सब प्रजायें नष्ट होजायँगी सो हे राजन्! यह तो बतावो कि विना मेरे आप प्रजाओं को कैसे धारण करेंगे ११२ मुझीपर सब लोग स्थिर रहते हैं व मैंही सब जगत् को धारण किये रहतीहूँ व मेरे विनाश में सब प्रजायें नष्ट होजायँगी इसमें सन्देह नहीं है ११३ इससे यदि सबका कल्याण चाहतेहो तो मुझको मारने के योग्य नहींहो हे प्रजानाथ! हे पृथ्वीपाल! हे देव! मेरा वचन सुनो ११४ उपाय के करने

से लोग सिद्धि पाते हैं जिस उपायसे प्रजाओंका धारणहो वह उपाय देखिये ११५ मुझको मारकर आप इस उपाय से प्रजाओंका धारण पालन पोषण सदैव करेंगे मैं तो जानतीहूँ कि मेरे विनाश में आप का किया पालन पोषण न होगा ११६ अब कोपको छोड़ो हम जो उपाय बतावें उसे करो हम अब अन्नमयी होंगी व सब तुम्हारी प्रजा का धारण पोषण करेंगी ११७ व जो मारनाही चाहतेहो तो मैं स्त्री हूँ इसे मुझे मार तुमको प्रायश्चित्त करना पड़ेगा क्योंकि स्त्री अवध्य होतीहै सो मनुष्यही की स्त्री अवध्य नहीं होती बरन पशु पक्ष्यादिकों की भी स्त्री अवध्य होती है ११८ ऐसा विचारकरके हे महाराज ! आप धर्म्म छोड़ने के योग्य नहीं हैं ॥

चौपाई ॥

इमि नानाविध वचन बनाई । कहे धरणि नृपसों अकुलाई ॥
दारुण कोप तजहु महिपाला । जासों होवहुँ सुखित निहाला ॥
जब प्रसन्न ह्वैहहु भूपाला । तबै स्वस्थ हम होब कृपाला ॥
यासों होहु प्रसन्न महीपति । हौं तव शरण न है दूसरिगति ॥
वेन तनय पृथुराज प्रतापी । प्रजापाल सुनि धरणि अलापी ॥
बोले क्षितिसों वचन गँभीरा । प्रजानाथ वर पुण्य शरीरा ११९।१२१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखंडेभाषानुवादेपृथूपाख्यानेष्टाविंशोध्यायः

उन्तीसवां अध्याय ॥

दो० उनतिस महँ पृथुकी कृपा सों निजपात्ररु वत्सु ॥
दोग्धाकरि महि सब दुही निज अभीष्ट पयसत्सु १

महाराज पृथुजी ने कहा कि महापापी व पापचारी एकके मार जानेपर जो पुण्यदर्शी साधुलोग सब आनन्दित व सुखीहों तो एकके मारनेमें कुछभी दोष राजाको नहीं होता १ इससे भूपति को चाहिये कि पापचेतन एक महापापिष्ठको मारडाले इससे सब प्राणियों के विनाश करनेवाली तुझको हम मारडालेंगे २ तू सब अन्न वृक्षादिकोंके सब बीज ग्रसितकरके बैठीहै इससे अब सब प्रजाओं को मारकर कहांजाती है ३ दुराचारी पापीके मारजानेपर साधुलोग

सुखपूर्व्वक जीते हैं इससे पापीको मार साधुकी रक्षा करनी चाहिये इसमें संशय नहींहै ४ इससे साधुओं का पालन बड़े यत्नसे करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने में धर्म्म होताहै तुमने बड़ाभारी पाप कियाहै जो सब प्रजाओंका संहार करना चाहा है ५ हां एकके लिये एकको न मारना चाहिये चाहे अपने लियेहो वा दूसरेके लिये व जिसने बहुतों की प्राणहत्या चाहीहो उसको अवश्यही मारडालना चाहिये ६ क्योंकि उस अकेलेके मारजाने पर बहुत लोग सुखपाके बढ़ते हैं इससे हे वसुधे! तेरे मारडालने से न पापहीहै न उपपापही है ७ प्रजाओं के निमित्त तुझको आज मारडालेंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है जो पुण्ययुक्त हमारा वचन तू न करेगी ८ तो सत्यही कहते हैं कि जगत्के हितके लिये तुझको इस पैने बाण से मारडालेंगे क्योंकि हमारे वचनसे तू पराङ्मुखीहै ९ व हमारे तेज से पुण्यरूपिणी त्रैलोक्यवासिनी और पृथ्वी स्थित होजायगी बस उसीपर सब प्रजाओंको स्थापित करके धर्म्मसे उनका पालनकरेंगे इसमें संशय नहीं है १० हे पृथ्वि! धर्मयुक्त हमारी आज्ञाको ग्रहण कर मेरीही आज्ञा से सदैव इन प्रजाओं की रक्षा करो ११ हे भद्रे! इस प्रकार हमारी आज्ञाको इससमय जब करोगी तो प्रसन्न होकर सदैव तुम्हारी रक्षाकरेंगे १२ इसमें सन्देह नहीं है अन्य भी राजा रक्षा करेंगे तब शरसे बिधीहुई धेनुरूपिणी पृथ्वी १३ वेनके पुत्र धर्म्मात्मा राजापृथुजी से बोली कि हे महाराज! सत्य पुण्य अर्थ युक्त तुम्हारी आज्ञा मैं अवश्य करूँगी १४ व यहभी मैंने जाना कि आपने प्रजाओंकी रक्षा के लिये ऐसा कियाहै इससे अब आप प्रथम उपायकरें क्योंकि सब राजालोग उद्यमही से सिद्ध होते हैं व सब पुण्ययुक्तही कार्य्य व उपक्रम फलित होते हैं इससे आपभी उपायहीकरें जिससे सत्यवान् गिनेजायँ १५।१६ व इनसब प्रजाओं का भी धारण पोषण करसकें हमारे अंगों में बाणरूप सब पर्व्वत व आपके शरभी लगेहैं १७ हे राजन्! प्रथम ये दोनों शल्य हमारे अंगों से निकालिये फिर हमसे सब पदार्थ युक्तिसे दुह लीजिये १८ सूत जी शौनकादिकों से बोले कि इतना सुनतेही महाराजने पृथ्वी के

अंगों में प्रविष्ट नानाप्रकारके बड़े भारी पर्व्वतों को धन्वा के अग्र भाग से अलगकर व पीटकर चूर्णीभूत करके भूमिको समान कर दिया १९ तब फिर उसके अंगपर जहां तहां ऊपरको ऊँचे होगये फिर उसके अङ्गों से महाराजने अपने सब बाण निकाले २० प्रसन्न मनसे सब शर पृथ्वीके अंगों से निकाल वेनके पुत्र महाराजने गढ़े व कन्दरा आदि जो कहींथे सबको पाटकर समान करदिया व ऊँचे टीले आदिकों को पीटकर नीचा करदिया २१ इस रीति से सब पृथ्वीको समान करदिया व समान करके उसपर नगर ग्राम घोष खेरे आदि बसादिये २२ जिसप्रकारकी पृथ्वी राजास्वायम्भुवजीके समय में थी उसीतरहकी फिर करदी स्वायम्भुवमनुको छोड़ अन्य अतीत किसी मन्वन्तरमें वैसी भूमि न थी जैसी कि महाराज पृथुजीने चाक्षुषमन्वन्तरमें सुन्दरसमान करदीथी २३ जितने विषमस्थान ऊँचे नीचेथे सब समान होगये क्योंकि स्वायम्भुव मन्वन्तरके पीछे चाक्षुष मन्वन्तरतक ऐसी विषमधरणी होगईथी कि कहीं बड़े नगरादिकोंके बसने का स्थानही नहीं रहगयाथा २४। २५ इसीसे ग्रामपुर पत्तन देश खेत आदिकों की मर्य्यादा कहीं नहीं दिखाई देतीथी २६ न कहीं खेती होती थी न वाणिज्य होता न गउओं की रक्षाहोती पर हां कोई मनुष्य झूंठ नहीं बोलता था सब सत्य बोलते व लोभ और मत्सरहीन २७ निरहङ्कारी होतेथे अभिमान कहीं न था न कोई कभी स्वप्न में भी पाप करता था व पृथुजी के प्रथम इतनीप्रजा इसभूमि पर न थी न इन प्रजाओं के लिये कहीं समस्थानही था जहांबसते इस से कहीं २ नदियों के किनारों पर वा पर्व्वतों के ऊपर एक घर यहां दूसरा वहां इसरीति से लोग बसतेथे कुञ्जों में तीर्थ स्थानों में समुद्रकी तराइयों में २८।३० सब प्रजा पुण्यसे निवास करती थी व भूमिपर कोई भी कहीं प्रायः नहीं बसता बसाता था कन्दमूल फलादि यही सब भोजन करते थे ३१ बड़े कष्ट से उन प्रजाओंको आहार मिलता था जो उस समय में थीं भी वही दशाथी जबपृथु जीका अवतारहुआ ३२ जब इसप्रकार उन्हों ने पृथ्वीको समान कर ग्राम नगरादि बसाये तो पृथ्वी बहुत प्रसन्नहुई उसे प्रसन्नदेख

स्वायम्भुवमनु राजाको बछड़ा कल्पितकर व अपने हाथों को पात्र कल्पित करके ३३ पृथुजीने प्रथम सब यज्ञ के लिये पुरोडासादि यज्ञकर्म दुहलिये व सब अन्नमय समर्थ दूध दुहलिया ३४ उसी पुण्यकारी अमृत सदृश अन्नमय दुग्ध से सब प्रजाओं की व देवताओं की तृप्तिहोनेलगी व उसी से प्रजा पितरों की तृप्तिकरनेलगीं ३५ व उन महाराजपृथुके प्रसादसे सब प्रजायें सुखसे जीनेलगीं प्रजा देवता और पितरोंको अन्न देकर ३६ ब्राह्मण और अतिथियों को विशेषकर देकर पीछेसे सब प्रजा भोजन करतीथी ३७ यज्ञोंसे जनार्द्दनजीको लोग तृप्तकरनेलगे व उसी अन्नसे जनार्द्दनजी की पूजा करने से सब देवतालोग तृप्तहोनेलगे ३८ व श्री माधवजी की प्रेरणा से मेघ वर्षा करने लगे उससे नानाप्रकारके अन्न व अन्य औषधियां भी उत्पन्न होनेलगीं व उन सबों के प्रजाओं के पति वेनके पुत्र महाराज पृथुजी हुये तबसे उसी अन्नसे प्रजा अब भी सुख से अपनी प्राणयात्रा करतीहैं ३९ । ४० फिर सब ऋषियों ने मिलकर इस पृथ्वी को दुहा तदनन्तर अन्य साधारण विप्रों ने भी दुहा इन ऋषियों व ब्राह्मणों ने सत्य तप अमलता आदि पदार्थ दुहलिये ४१ फिर चन्द्रमाको बछड़ा कल्पितकर व बृहस्पति जी दुहनेवाले बनकर बल करनेवाला ऊर्ज्ज नाम दुग्ध दुहलिया जिस से देव गण अबभी जीतेहैं ४२ व उनके सत्य तथा पुण्य से अन्य सब भूतलपरके जीव जीते हैं व ऋषिलोग भी वसुन्धरा को दुहकर अपने सत्य पुण्यादिकों से वर्त्ताव वर्त्तने लगे ४३ अब वह विधान कहते हैं जिस विधि से पितरों ने इकट्ठे होकर इस भूमिको अच्छेप्रकार से दुहा ४४ चांदी का सुन्दर पात्र बनाकर स्वधारूप दुग्ध यमराज को वत्स बनाकर अन्तक ने अपने आप दुहलिया ४५ नागों व सर्प्पोंने तक्षकको बछड़ा बनाकर लौकीका पात्र ले विषरूप दुग्ध दुहलिया ४६ व नागों में प्रतापी धृतराष्ट्रनाम नाग दुहनेवाला बना बस उसी विषरूप क्षीर से अतुलसर्प्प व नाग जीनेलगे ४७ नाग और भयानक सर्प अत्यन्त घोर रूप विष से जीनेलगे ४८ ये नाग और सर्प बड़ेघोर बड़ी देह और महाबल

युक्तभये वही विषही उन लोगों का आहार है व वही आचार वही वीर्य्य वही पराक्रम है और कुछ नहीं ४९ अब वह कहते हैं जैसे असुरों और सब दानवों ने वसुन्धरा को दुहा हे द्विजोत्तमो! असुरों ने व दानवों ने अपने योग्य लोहे का पात्र बनाया क्योंकि वह पात्र उनका सब काम देता है व सब शत्रुनाशन मायामय क्षीर उन्हों ने दुहा ५० । ५१ उन दैत्यों में महाप्रतापी विरोचन वत्स हुआ था द्विमूर्द्धा व महाबली मधु दो दुहनेवाले दैत्यों व दानवोंमें हुये ५२ इसी से अबभी दैत्य दानव सब मायासेही सब कार्य्य करते हैं ये दैत्य महाप्राज्ञ महाकाय होतेहैं परन्तु तेज व पराक्रम इनमें मायायुक्तही होता है ५३ व उन दानवों का वही बल व पौरुष भी होता है व उसी मायामय तेज से वे सदा जीते रहते हैं हे द्विजोत्तमो! उसी माया से अबभी वे ५४ बर्त्ताव करते हैं इससे माया दैत्यों का महाबल है व वैसेही यक्षों ने सर्व्वाधारा मही को दुहा ५५ हे विप्रो! यह हमने सुना है कि पूर्व्वकल्प में इसी प्रकार यक्षों ने पृथिवी दुही इन लोगों ने बड़ेभारी कच्चेपात्र में अन्तर्द्धानमय दुग्ध दुह लिया ५६ उन्हों ने महाप्राज्ञ कुबेरजी को बछड़ा कल्पित किया था व मणिधरका महापुण्यात्मा व बुद्धिमानोंमें बड़ा श्रेष्ठ पिता ५७ रजतनाभ नाम यक्ष दुहनेवाला हुआ वह महामतिमान् यशतथा सर्व्वज्ञ सर्व्वधर्म्मज्ञ व बली यक्षराज का पुत्रथा ५८ अष्टबाहु व महातेजस्वी द्विशीर्षभी दोहने के समय सहाय हुये थे सो हे द्विजोत्तमो! यक्षलोग अबभी उसी अन्तर्द्धानहीं से अपने बहुधा सब कार्य्य करतेहैं ५९ तदनन्तर महाबली राक्षसों ने इस पृथ्वीकोदुहा उन्होंने भूतों पिशाचों व मनुष्यों के भक्षणकरनेवाले बहुतसे राक्षसोंको भी बछड़ा बनाया ६० व सड़ेहुये तथा फूलेहुये मुर्दैको पात्रबनाया व चाहा कि इससे बहुतसे उत्तम २ पदार्थ हम लोग भोगकरेंगे ६१ उनमें महाबली रजतनाभ राक्षस दुहनेवाला बना व सुमाली राक्षस बछड़ा कल्पित कियागया व रुधिरमय दुग्ध दुहागया ६२ इससे राक्षस भूत प्रेत पिशाच व यक्ष तथा दारुण ब्रह्मराक्षस उसी रुधिरही से अब भी जीते हैं ६३ फिर गन्धर्व्व

व अप्सराओंने पृथिवीको दुहा उन लोगोंने चित्ररथ नाम बड़े वि-
द्वान् गन्धर्व्वको बछड़ाबनाया ६४ व गीतमें तत्पर गन्धर्व्वोंने गान
विद्यादुही उनमें सुरुचिनाम महाबुद्धिमान् गन्धर्व्व दुहनेवालाहुआ
इन सबोंने गीतके विशेष पवित्रता व तपोरूपभी क्षीर दुहा ६५।६६
इससे उसी गानविद्या व तपके बलसे गन्धर्व्व व अप्सरायें जीती
हैं फिर महापुण्यकारी पर्व्वतोंने इस वसुन्धरा को दुहा ६७ इन्होंने
विविध प्रकारके रत्न व औषधियांदुहीं जोकि अमृतके समान गुण
करती हैं पर्व्वतोंने महाभाग हिमवान्को बछड़ाबनाया ६८ व सुमेरु
पर्व्वतको दुहनेवाला व पात्र हरीघासयुक्त स्थानोंको बनाया उसदूध
से सब महापराक्रमी पर्वत बढ़े ६९ तदनन्तर पर्व्वतों के सम्बन्धसे
महावृक्षोंनेभी अपने मनका पदार्त्थ दुहलिया वृक्षोंमें कल्पद्रुमादि-
क सब इकट्ठेहुये थे व पालाशको तो उन्होंने पात्रबनाया व छिन्न
दुग्धप्ररोहण नाम दुग्ध अर्त्थात् जहां काटेजायँ व जलजायँ वहीं
कल्ले निकलआवें यह दुग्धदुहा ७० उनमें साखूकेवृक्षको तो दुहने
वाला बनाया व पाकरिके वृक्षको बछड़ा बनाया था इसप्रकार वृ-
क्षोंने दुहा फिर गुह्यक चारण सिद्ध विद्याधरादिकोंने ७१ इस सब
वसुंधराको दुहा क्योंकि यह तो सर्वकामप्रदायिनी ठहरी जोजो
चाहता दुहलेता जिस २ वस्तुकी इच्छा जिसनेकी उसने पात्रवत्स
व दोग्धा बनाकर अपने भावके तुल्य दुग्धदुहलिया यहपृथ्वी सब
के धारणकरनेवाली है व पालन पोषणभीकरतीहै व यही श्रेष्ठधनभी
धारणकरतीहै इसीसे इसका वसुन्धरा नामभीहै ७२ । ७३ सब
कामोंके दुहनेकी धेनुभी यही है व सब पुण्योंसेभी भूषितहै यह सब
से ज्येष्ठा व प्रतिष्ठाहै व यहीसृष्टि यहीप्रजाभीहै ७४ जितनी पृथ्वी
है सब पुण्य देनेवाली व पुण्यस्वरूपिणी है व सब अन्नोंको जमाती
है इसीसे चर व अचर सबके टिकनेका व उत्पत्तिका स्थानहै ७५
यही महालक्ष्मीहै व यही महाविद्याहै व सदासर्व विश्वमयीहै सब
कामोंको पूराकरतीहै व सबको दुहती है व सब बीजोंको जमाती है
७६ व सब कल्याणोंकी माताहै व यह सब लोगोंको अपने ऊपर
धारणकरतीहै व पाँचोतत्वोंका प्रकाश व रूप यहीहै ७७ क्योंकि यह

सबसे प्रथम व जलके पीछे बनाईगईहै इसीसे इसका मेदिनीभी नामहै विष्णु भगवान्ने मधु व कैटभनाम बड़ेभारी दैत्योंके मेदस् अर्थात् मज्जासे बनाया है इसीसे मेदिनी कहातीहै ७८ व इसीसे वेदवादी लोगभी इसदेवीको मेदिनी कहतेहैं व फिर इसीप्रकार जब वेनकेपुत्र महाप्रतापी पृथुजी हुये ७९ व उन्होंने इसे अपनी कन्या करके माना तबसे इस देवीका एक पृथ्वीभी नामहोगया हे द्विज श्रेष्ठो ! उन महाराजने इसवसुन्धरा का पालनकिया ८० व उन्हींने ग्राम पुर पत्तनादिकों का आधार इसे बनाया व सब अन्नोंकी उत्पत्तिकी खानि इसको बनाया व सब धन धान्यादिकों से भरीपुरी बनाया व सर्व्वतीर्त्थमयीभी उन्होंने इसे किया ८१ इस प्रकार वसुमती देवी सदा सर्व्वलोक मयीहै हे राजन् ! पुराणोंमें इसप्रकार के प्रभावसे युक्त यह पृथ्वी कहीजाती है ८२ वेनके पुत्र महाराज पृथुजी सब कर्म्मोंके प्रकाशकहुये जैसे ब्रह्मा विष्णु व रुद्र सनातन हैं ८३ व तीनों वेदवादी देवादिकोंसे नमस्कार करनेके योग्यहैं व इसीसे ब्राह्मण व ऋषि लोग इनके नमस्कार करते चलेआये हैं ८४ व वर्णों तथा आश्रमों के स्थापक व सबलोकोंके धारणकरने वाले राजालोगभी पृथ्वीके पालकहोकर इनतीनोंके प्रणामकरते चलेआयेहैं ऐसेही उनसबोंको महाराजाधिराज प्रतापी पृथुजीके भी नमस्कार करना चाहिये ८५ क्योंकि ये आदिराजा कहलातेहैं व सदैव जयकीइच्छा कियेहुये धनुर्वेदके अर्त्थियों कोभी चाहिये कि इनके नमस्कार करें व सब राजाओं को तो नित्य उन महाराजकेनमस्कारकरना चाहिये क्योंकि सबकी वृत्तिदेनेवाले वही हैं हे द्विजोत्तमो ! इसप्रकार सबोंने जिस २ को पात्र बनाकर पृथ्वी को दुहा हमने सब कहे ८६ । ८७ व बछड़ों व दुहनेवालों की विशेषता भी तुम्हारे आगे कही व चीरविशेष भी हे भूसुरो ! तुमसे कहा यह सब जैसा पूर्व्वकालमें हुआथा सब तुमसे कहा ॥

चौ० धन्ययशस्य पुण्यनीरोगा । पाप प्रणाशन गत सब शोगा ॥
बेन तनय पृथुचरित अनूपा । जो यहिसुनिहिस्वमतिअनुरूपा ॥
भागीरथी स्नानफल तासू । प्रतिदिन होइहि पुण्य प्रकासू ॥

सर्व्व लोकमहँ शुद्ध पुनीता । ह्वैजाइहि हरिपुर श्रुतिगीता ८८ । ९१ ॥

इति श्रीपाद्ममहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादे
पृथूपाख्यानएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

दो० तिसयेंके महँ वेनके पुनि पृथुके बहु वृत्त ॥
सूत ऋषिन सों कह्यहु यह कथा विचित्र सुवृत्त १

ऋषिलोगोंने सूतजीसे पूँछा कि पाप करनेमें प्रवृत्त वेनके दुराचार तुमने कुछ हमलोगोंसे कहेथे सो उसके पापकी कौनसी वृत्ति थी व क्याफल उसने पाया १ अब वेनके व वेनकेपुत्र महात्मा पृथु जीके भी चरित्र हमसे विस्तारपूर्व्वक कहो हमलोगों को सुनने की बड़ी इच्छाहै २ सूतजी बोले कि हमने जैसे पूर्व्वकालमें सुनाहै वह पुण्यदायक वृत्तान्त तुम लोगों से कहेंगे ३ जब महात्मा महाभाग पृथुनाम पुत्र राजावेनके अङ्गसे उत्पन्न हुये तो राजावेन विमलहोके फिर धर्म्मात्मा होगये ४ क्योंकि जैसे अधम पुरुष महापाप इकट्ठे करते हैं व तीर्थके प्रसङ्गसे सब नष्ट होजाते हैं ५ ऐसेही सज्जनों के सङ्गसे पुण्य उत्पन्न होताहै इसमें सन्देह नहीं है व पापियोंके प्रसङ्गसे पापही उत्पन्न होताहै ६ पापियोंके सङ्ग वार्त्ता करने से व उनके देखने से स्पर्श करने से उनके सङ्ग बैठने उठने से व उनकी पंक्तिमें बैठकर वा उनका बनाया भोजन करनेसे वा उनका संगम होनेसे पाप इकट्ठा होजाताहै ७ ऐसेही पुण्यात्माओंके सङ्गवार्त्तादि करनेसे पुण्यहोताहै व महातीर्थों के प्रसङ्ग से पापनष्ट होतेहैं अन्यथा नहीं नष्टहोते ८ व तीर्थोंके करनेसे व महात्माओं के सङ्गसे सब पापधोकर पुरुष पुण्यगति को पाते हैं इतनी कथा सुनकर ऋषिलोगों ने पूँछाकि पापी लोग कैसे सत्सङ्गसे परमसिद्धि को पहुँचते हैं ९ वह सब हमसे विस्तारसे कहो हम लोगोंको सुननेकी बड़ी इच्छा है १० सूतजी बोले कि देखो लुब्धक लोग दास धीवरादि महापापी होते हैं व वे बहुधा नर्मदा गंगा यमुना नदियोंकेही भीतर सदा स्थित रहते हैं ११ ज्ञान से वा अज्ञानसे सदा उन्हीं

नदियों में स्नान किया करते हैं व जलमें क्रीड़ा किया करते हैं सो महानदियोंके प्रसंग से वे परमगतिको पाते हैं १२ व दासत्व जोकि पापोंके समूहों से युक्त होता है उसे परित्याग करके स्वर्गादि स्थानों को चलेजाते हैं जो पुण्यकारी जलमें स्नान करते हैं १३ सो इसीप्रकार महानदीके प्रसंगसे अन्य महापापी पापों से छूटजाते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं कि महापुण्यात्माजनों के संगसे पापियोंके पाप नष्ट होते हैं १४ महात्माओं के प्रसंगसे व दर्शनसे स्पर्श करनेसे पापियों के पाप छूटतेही हैं इस विषयमें विचारणा करनेकी कुछभी आवश्यकता नहीं है हे विप्रो ! इस विषयमें एक पापनाशन इतिहास कहते हैं सुनो वह बहुत पुण्य देता है(एक महावन में सुलोभ नाम मृग व्याध रहताथा १५ । १६ वह कुत्तोंको संग लिये जाल व पांशी हाथोंमें किये धनुर्ब्बाणों से नित्य मृगोंको माराकरे क्योंकि मांसके स्वादुमें वह बड़ा लम्पट होगया था १७ एक समय धन्वाबाण हाथों में लिये वह दुष्टात्मा कुत्तोंको संगलिये विन्ध्याचलके दुर्गम स्थानमें गया १८ व मृग रुरु वराह सूकरादि डरेहुए बहुत से जन्तुओं को उसने मारा व उसी समय नर्म्मदाके तीर से कोई मछली मारनेवाला धीवर १९ मछलियों को मार जलसे बाहर निकला व उसी समय सुलोभनाम मृगव्याध के भयसे डरीहुई एक मृगी २० अपने जीव की रक्षा करनेके लिये अति विह्वलहो जीभ निकालेहुई आपहुँची वह बड़े वेगसे दौड़ती हुई नर्म्मदाके तीर पर आई २१ उसके बाण भी लगाथा व पीछे से कुत्ते भी दौड़े चले आते थे व पवनके वेग से सुलोभ नाम मृगघातक भी दौड़ा आता था २२ इधर से मछली मारनेवाले उस धीवर ने भी उसे देख बाण हाथ में लिया व धनुषपर चढ़ाकर उस बेचारी मृगी को मारा इतने में सुलोभ नाम लुब्धकभी कुत्तों सहित वहां पहुँचा २३।२४ व उसने कहा कि इसे न मारना यह मृगी हमारी है क्योंकि हमारा बाण इसके लगाहुआहै यह सुन मांसके लोभी उस मछली मारनेवाले २५ महाबली दुष्टात्माने भी उसका कहा न मानकर मृगीके ऊपर एक बाण मारा व उधरसे मृगव्याधने भी तीक्ष्ण बाण उसके मारा २६

बस उन दोनों पापियों के बाणों के लगनेसे वह मृगी मृतकके समान होगई तब तक कुत्ते आकर नोचनेलगे तब तो वह मृगी उचकी व जाकर नर्म्मदानदी के भीतरगिरी व उसके संगही वे कुत्ते भी उस विमल नर्म्मदा के कुण्डमें कूदे २७।२८ तब मृगव्याध क्रोध से मूर्च्छित उस धीवरसे बोला कि हे दुष्ट ! यह मृगी तो हमारी थी तूने बाणसे क्यों इसे मारा २९ तब मछलियों का मारनेवाला उस मृगघातकसे बोला कि नहीं यह मृगी हमारी है तू घमण्डके मारे अपनी कहताहै ३० बस ऐसा कहकर क्रोधमें व लोभमें आकर दोनों युद्धकरनेलगे यहां तक कि लड़ते २ वेभी दोनों उसी विमल नर्म्मदा जीके जलमें गिरे ३१ उस समयमें दैवयोगसे एक पर्व्वका योग था अमावास्या तिथि लगगईथी वह पर्व्व सर्व्वथा गतिदायक और महापुण्य फलका देनेवाला था ३२ उसी पर्व्वमें वे सबके सब जलमें गिरे यद्यपि वे सब जप ध्यान से हीन थे व भावसत्यसे वर्जित थे ३३ परन्तु तीर्थस्नानके प्रसंग से मृगी कुत्ते व लुब्धक सबके सब पापोंसे विनिर्म्मुक्तहो परमगति को चलेगये ३४ इससे हे ब्राह्मणो ! तीर्थों के प्रभाव से व सज्जनों के संग से पापियों के पापभी नष्ट होजाते हैं जैसे अग्निके संयोग से काष्ठ जलजाते हैं ३५ सूतजी बोले कि इसीप्रकार उन महात्मा ऋषियों के संसर्ग से व उनसे वार्त्तालाप करने व उनके दर्शन करनेसे व स्पर्श करने से उस पापी राजा वेन के भी पाप नष्ट होगये अत्युग्र पुण्यात्मा के संसर्ग से पापियों के पाप नष्टही होजाते हैं ३६। ३७ व अत्युग्र पापियों के संग से अल्प पुण्यवाले पुरुषों को पाप भी लग जाते हैं सो अपने नानाके पापके दोषसे वेन लिप्त होगयाथा ३८ इतना सुनकर ऋषिलोगोंने प्रश्न किया कि वेनके मातामह अर्थात् नानाके कौनदोषथा हमसे विस्तारसहित कहो वही मृत्यु वही काल वही यम व धर्म्मराज ३९ केवल वह उस अधिकारपर स्थित रहता है किसीका मारनेवाला नहीं स्थितहोसक्ता चर व अचर सबलोग अपने अपने कर्म्मके वशीभूतहोते हैं ४० इससे कर्म्मानुसारजीते मरते व सुख दुःखादि भोगते हैं पापी तिनके कर्म के विपाक से यमराजजी को

भयानक देखते हैं ४१ और पुण्यात्मा यमराजजी दिनदिनमें पापियों को उनके कर्म से सब नरकों में लेजाते और ताड़ना देते हैं ४२ और पुण्यात्माओं को सब पुण्यकर्म्मों में धर्मात्मा यमराजजी लगाते हैं पुण्यात्माका दोष नहीं देखते ४३ ऋषियोंने सूतजीसे पूंछा कि पापी वेन किस दोष से मृत्युको प्राप्तहुआ तब सूतजीने कहा कि दुष्ट चित्तवाले पापियोंको मृत्यु नित्यही शासन करती है ४४ कालरूपसे वर्तमान होती और पापियोंके कर्म देखती है जिसका पापकर्म होताहै उसको किसी कर्मसे नाशकरती है ४५ तिसका पापजानकर यमराजजी उसको लेजाते हैं पुण्यात्मा पुण्यकर्म से स्वर्गको जाता है ४६ इन सबको दूतों की द्वारा मृत्यु युक्त करती है जो यहां बड़े २ दानपुण्य करते हैं व मंगलकर्म्म सदा करते रहते हैं ४७ उनको मृत्यु नानाप्रकारके भोग भोगनेको देती है व दुष्ट पापियोंको वही मृत्यु लोहदंडादिकों से ताड़ित कराकर नानाप्रकारके कष्ट देती दिलाती है बस कर्महीसे मृत्युका व्यापार ऐसाहै मृत्युभी पाप व पुण्यहीसे प्रयोजन रखताहै ४८।४९ व महात्मा मृत्युके लोभ और पुण्यसे सुनीथानाम कन्या हुईथी व पिताके कर्म्म देखतीहुई सदा क्रीड़ा किया करतीथी व प्रजाओं को जिसप्रकार पाप पुण्यके अनुसार मृत्यु दुःख व सुख देताथा सब सुनीथाभी देखाकरती थी ५०।५१ मृत्यु की कन्या महाभाग्यवाली सुनीथा एकदिन खेलती २ अपनी सखियों के साथ एक वनको गई ५२ वहांपर उसने एक बड़े सुन्दर गन्धर्वके पुत्र सुशङ्ख को देखा व उसके गाने का कोलाहल सुनकर वहांगई ५३ व सर्वांग सुन्दर उस गन्धर्व्वकुमार को अच्छी तरह निकट से देखा वह गीतविद्याकी सिद्धि के लिये सरस्वतीजीका ध्यान कररहाथा ५४ यह वहां रहकर उस गन्धर्व्व का विघ्न नित्यही आप करे वह बिचारा गन्धर्व्व क्षमाकरे व नित्य कहे कि तू यहांसे चलीजा हमारे ध्यान में क्यों विघ्न डालती है पर यह उसके कहने से वहां से न हटी बार २ विघ्नही करतीरही तप करतेहुये उसको इसने उलटे ताड़ित भी किया कि तू क्यों तप करता है ५५।५६ तब वह सुशङ्ख नाम गन्धर्व्व इस सुनीथा नाम मृत्यु की

कन्या से अतिक्रुद्ध होकर बोला कि हे पापिनिदुष्टे ! तू क्यों हमारे तपमें बार २ विघ्नही करती चलीजाती है ५७ महात्मालोग मारने परभी उसके बदले में उसे नहीं मारते व न गालीआदि पाने से उलटकर गाली ही उसे देते हैं ५८ पर तूने तप करतेहुये निर्दोष हमको ताड़ित किया इतना पापिनी सुनीथासे कहकर वह धर्मात्मा गन्धर्व्व तो महाक्रोध से चुपहोरहा क्योंकि उसने विचारा कि यह स्त्री है व दुष्टता करती है पर यह मारे पाप मोहके व बाल्यावस्थाके कारण ५९।६० तपस्या करतेहुये महात्मा सुशंखसे बोली कि तीनों लोकों में जितने प्राणी बसते हैं उन सबों को हमाराही पिता मारताहै ६१ व दुष्टोंको सदा सन्तप्त करताहै और सज्जनों का पालन करता है तिसको दोष नहीं होता महापुण्य से बर्तता है ६२ यह सुशंख नाम गन्धर्व्व से कह जाकर अपने पिता से सुनीथा बोली कि हे तात ! हमने वनमें आज तप करतेहुये एक गन्धर्व्व के पुत्रको ताड़ित कियाहै ६३ वह काम क्रोधआदि से रहित था अपना मन लगाये सदा एकान्त में ध्यान करता था जब हमने उसे बहुतही दुःखित किया तब वह धर्म्मात्मा क्रोधयुक्त होकर हमसे बोला ६४ कि मारतेहुये को मारना न चाहिये न गाली देतेहुये को गाली देनी चाहिये हे तात ! उसने हमसे यह कहा सो आप हमसे इसका कारणकहें ६५हे द्विजसत्तमो ! जब मृत्युसे सुनीथाने ऐसा कहा तो मृत्यु सुनीथा से कुछभी नहीं बोला क्योंकि वह तो धर्म्मात्मा है इस दुष्टा अपनी कन्या के वचनका क्या उत्तर देता ६६ तब एकदिन फिर सुनीथा वहां वनमें गई जहां वह सुशंख गन्धर्व्व तप करताथा व जातेही उसने तप करतेहुये उसको दुष्टतासे हाथसे मारा ६७ जब मृत्युकी कन्यासे वह सुशंख गन्धर्व्व व्यर्थ फिर ताड़ित हुआ तो क्रुद्धहोकर उस महातेजस्वी ने सुनीथा को शापदिया ६८ कि हे दुष्टे ! जिससे कि वनमें तप करतेहुये निर्दोष हमको तूने व्यर्थ ताड़ितकिया इससे हम तुझे शाप देते हैं ६९ सो सुन जब तू गृहस्थाश्रम को प्राप्तहोगी व अपने पतिके संग स्त्री पुरुषका व्यवहार करेगी तब पापाचारयुक्त, देवता व ब्राह्मणों का निन्दक ७० सब पापोंके करने में

रत हे दुष्टे! तेरे गर्भ से ऐसा पुत्र उत्पन्नहोगा ऐसा शापदेकर वह अन्यत्र जाकर तप करनेलगा ७१ व उसके वहां से चलेजाने पर सुनीथा अपने गृहमें आई व अपने महात्मा पितासे सब समाचार तत्तमन होकर उसने कहा ७२ जैसे कि उस गन्धर्व्व के पुत्रने शाप दिया था व वह सब उसका कहाहुआ मृत्युने सुना ७३ तब कहा कि दोषरहित तप करतेहुये उसे तूने क्यों ताड़ित किया हे पुत्रि! जो तुमने उसको ताड़ित किया यह उचित नहीं किया ७४ ऐसा कहकर धर्म्मात्मा मृत्यु तिसकी भाग्यकी चिन्तना कर बहुत दुःखित हुआ ७५ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि अत्रिमुनि के पुत्र महातेजस्वी व प्रतापी अंगनाम मुनि एक समय नन्दनवनको गये ७६ वहां उन्हों ने देवराज पाकशासन इन्द्रजी को देखा तो अप्सराओं के गणोंसे व गन्धर्व्व किन्नरों के गणों से युक्तथे ७७ व सब ओरसे अप्सरादि पंखे से पवन कररही थीं व सुन्दर स्वरोंसे गानकरती थीं हंसगामिनी रूपवती स्त्रियां चामरों से सेवा कररहीथीं व हंसके समान उजले छत्रसे जोकि चन्द्रमा का अनुकरण करता था उसके ढुरने से ७८। ७९ सब भूषणभूषित इन्द्र शोभित होते थे व काम क्रीड़ा कररहे थे ऐसे इन्द्र को जब देखा ८० व उनके समीप चारु मंगलवती महाभाग्यवती इन्द्राणीजी को भी विराजमान देखा जो कि रूपसे व तेजसे व तपसे महायशस्विनीथीं ८१ सौभाग्य व पातिव्रत धर्म्म से प्रकाशित होरही थीं उनके संग इन्द्र नन्दनवन में विहार करते थे ८२ इन्द्रकी लीला देख द्विजों में उत्तम अंगजी कहने लगे कि ये देवराज धन्यहैं जो ऐसे लोगोंके मध्यमें विराजमानहैं ८३ अहो इनके तपके वीर्य्य को है जिससे इन्होंने ऐसा महास्थान पाया है जो हमारे भी सब लोकों के धारण करनेवाला ऐसाही पुत्र होता ८४ तो हम भी बड़े सुखको पाते इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥

चौ० इमि चिन्तापर अंगमुनीशा । मनसुमिरतबहुविधिजगदीशा ॥
निजगृह गयहु भयहु अतिवेगी। पितसो व्रतकरनो सुतनेगी ८५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

दो० इकतिसयें महँ अंगको अत्रि दीन उपदेश ॥
इन्द्रसदृशसुतहितकरन तपसोगयहुनगेश १

सूतजी शौनकादि ऋषियोंसे बोले कि महातेजस्वी अङ्गजी उन महात्मा इन्द्रजीकी लीला सम्पदा भोग विलास देखकर १ सोचने लगे कि इन्द्र के तुल्य पुत्र हमारे कैसे हो व धर्म्मात्मा भी एकही हो एक क्षणमात्र चिन्ता करके २ सत्यमें तत्पर अंगजी अपने घरमें आये और अपने पिता अत्रिजी से बड़ी नम्रता से प्रणाम करके पूंछा कि ३ किस पुण्य समाचारके करने से पुरुष इन्द्रत्व भोगता है व किस पुण्यकी बड़ी पुष्टता है कैसा कर्म कियाहै ४ व किस प्रकारका तप कियाहै और पूर्व समयमें किसका आराधना कियाहै हे सत्यवानोंमें श्रेष्ठ यह हमसे विस्तारसहित कहो ५ अत्रिजीबोले कि हे महाभाग! बहुत अच्छा २ जो हमसे ऐसा तुमने पूँछा है वत्स! अब इन्द्रका चरित हम तुमसे कहतेहैं सुनो ६ पूर्वकालमें एक बड़े मेधावी सुव्रत नाम उत्तम ब्राह्मणहुये उन्होंने कृष्ण हृषीकेशजी को तपस्यासे सन्तुष्ट किया ७ इससे वे कश्यपजी के वीर्य्यसे अदिति जीके पुण्यगर्भ में प्राप्तहुये व उत्पन्न होकर श्रीविष्णुभगवान् के प्रसादसे देवराज होगये ८ यह सुन अंगजी बोले कि पिताको प्रिय इन्द्रके समान पुत्र हमारे कैसे उत्पन्न हो इसका उपाय आप हमसे कहें आप ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ हैं ९ यह सुन अत्रिजी बोले कि हे महामते अंग! संक्षेप रीति से महात्मा सुव्रतका सब पुण्यचरित सुनिये १० जिस प्रकारसे पूर्वकालमें मेधावी सुव्रतजीने श्रीहरिकी आराधनाकी थी व उनका भाव भक्ति व ध्यान ११ देख श्रीजगन्नाथ जीने उनको दूसरे जन्म में महापद दिया जिस पदके अधीन चराचर सब तीनों लोक हैं १२ व विष्णुके प्रसाद से जैसे इन्द्र उसे भोगते हैं इस प्रकार इन्द्र का कियाहुआ सब तुम से कहा १३ कि हे सत्तम! श्रीहरि भक्तिसे भावसहित ध्यान करनेसे संतुष्ट होते हैं व जिसकी भक्तिसे श्रीहरि सन्तुष्टहोते हैं उसे सब कुछ देदेते हैं १४

इससे सब कुछ देनेवाले सर्व्व संभव सर्व्वज्ञ सब जाननेवाले श्रेष्ठ पुरुष श्रीगोविन्दजी की आराधना करो १५ हे पुत्र! उनसे जिस जिस पदार्थकी इच्छा करोगे सब पाओगे १६ ॥

चौपै० वरसुखकेदाता धर्म्मविधाता अरुसबमोक्ष प्रदाता ।
सबजगके नाथा दीनसनाथा हैं हरिसुनु यह बाता ॥
यासों सुततांही करिमनमाहीं आराधहु विधिनीके ।
तुम इन्द्रसमाना अतिबलवाना पैहहुपुत्र सुठीके १७
परमार्थसमेता धर्म्मोपेता सुनि निजपितुके वचना ।
मनसोंगहिनीकेअरुकरिठीके करिप्रणाममुनिचग्ना ॥
शाश्वतहितकारी वरदसुरारी मनमहँकरिहितजानी ।
सोमुनिविज्ञानी पितुकीबानी मानीसब गुणखानी १८
लहिजनकनिदेशा चल्यहुविदेशा करनहेतुतपभारी ।
वरअंग मुनीशा धरिपदशीशा निजपितुकेअघहारी ॥
गिरिराज सुमेरू जहँ सुरफेरू सदा करत मनलाये ।
तहँ गो तपहेतू सुस्थिरचेतू करिहरिपद शिरनाये १९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

दो० बत्तिसयें महँ मेरुगिरि वर्णन अरु तप अंग ॥
हरिसोंवर वाञ्छितलह्यहु मुनियहकहो प्रसंग १

सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि नानारत्नों से अच्छेप्रकार सर्व्वत्र प्रकाशित व सबकहीं सुवर्ण से युक्त वह सुमेरुपर्व्वतराज ऐसा शोभित होताथा जैसे किरणोंसे सूर्य्य भगवान् शोभितहोते हैं १ जिस पर अतिशीतल अशोक वृक्षोंकी छायाओंमें दृढ़ आसन मारे बैठेहुये योगीलोग श्रीहरिका ध्यान कररहेथे २ कहीं २ मुनिलोग तप करते व कहीं किन्नरलोग गाते व कहीं २ ऋषि व गन्धर्व्वलोग सन्तुष्ट बैठे वीणा तालबजाते ३ व गन्धर्व्वलोग तालमान लयमें लीनहो निषाद

ऋषभ गान्धार षड्ज मध्यम धैवत व पंचम इन सातो स्वरोंसे गान कररहे थे मूर्च्छना रतिआदि से संयुत स्पष्ट मनोहर गीतें गातेथे ४ व उस पर्व्वत श्रेष्ठपर चन्दनों की छायाओं में बैठेहुये गीतके सब भेद तालस्वर जाननेवाले गन्धर्व्वलोग तत्पर हो गान करते थे ५ व उस पर्वतोत्तम में देवों की स्त्रियां नाचतीं व पापनाशन पुण्यदायी दिव्य सुन्दर कल्याण देनेवाला ६ मधुर वेदका शब्द सुनाई देता व चन्दन अशोक पुन्नाग शाल ताल तमाल ७ वटके बड़े २ वृक्षोंसे वह पर्व्वतोत्तम शोभित था सन्तानक कल्पवृक्ष केलाआदि के वृक्षोंसे विराजमान था ८ व सुन्दर फूलेहुये स्वर्ग के वृक्षोंसे सब ओर शोभित था अनेक प्रकार की धातुओं से युक्त और अनेक प्रकारके रत्नसमूह वाला था ९ अनेक प्रकारके कौतुक और मंगल संयुक्त था व देव समूह तथा अप्सराओं के झुंडों से संकुल था १० ऋषियों मुनियों सिद्धों व गन्धर्व्वों से सब ओरसे प्रकाशित था पर्व्वताकार गजों से व सिंहोंके नादोंसे विराजित था ११ शरभ मतवाले शार्दूल व मृग शशक लोमड़ीआदि से युक्त था विमल जलोंसे सम्पूर्ण वापी कूप तड़ागादिकों से अलंकृतथा १२ जिनमें कि हंस कारण्डवआदि पक्षी कूजते थे उनसे शोभित था व उनमें सुवर्ण के पुष्प व कमल कह्लार उत्पल शतपत्रादि कमलकी नानाजातियों के पुष्प लगे थे इससे शोभित था १३ ठौर २ नदियों की धारायें बहती थीं झरने झरते नाना प्रकारकी चित्र विचित्र शिलाओं से विराजता था १४ व बड़ी २ लम्बी चौड़ी सुवर्णकी शिलाओं से जोकि सूर्य्य व अग्नि के समान चमकती थीं उनसे वह शैलराज शोभितथा १५ व देवताओंके विमानों से तथा पर्व्वताकार देवताओं के धवरहरों से व हंस और चन्द्रमा के समान सुवर्ण के दण्डोंसे अलंकृत था १६ धवरहरों पर सुवर्णमय कलश विराजित थे व नानाप्रकार के गुणोंसे युक्त देवगणों से शोभितथा १७ व अनेकप्रकार के देवसमूह गन्धर्व्व चारणोंसे सब ओरसे पुण्यात्मा पर्वतों में उत्तम मेरुपर्वत शोभितथा १८ व उसी पर्व्वतपरसे महापुण्य जलवती गंगानाम महानदी सब पुण्यरूप तीर्थों से युक्त कमलोंसे शोभित हंसों से युक्त बहती १९

जिसकी सेवा मुनि व ऋषिसमूह कियाकरते इस प्रकारके गुणों से युक्त पुण्य कौतुक मंगल संयुक्त उस सुमेरुपर्व्वतपर २० अत्रि मुनिके पुत्र पुण्यात्मा अंगजी पहुँचे व जाकर गङ्गाजी के तीर एक पुण्यरूप कन्दरा में एकान्त २१ बैठकर वे मेधावी काम क्रोध से वर्ज्जित होकर व सब इन्द्रियों को अपने वशमें करके हृषीकेश भगवान्को मनमें करके २२ व क्लेशनाशन श्रीकृष्णजी को ध्यान करते हुये सोते बैठे जागते मनसे सदा सर्व्वत्र देखनेलगे २३ व नित्य योगाभ्यास से संयतेन्द्रिय होकर अनन्यमन होगये व चर अचर सब जीवोंमें केशव भगवान् को देखनेलगे २४ चाहे गीले पदार्त्थहों वा सूखेहों सबों में श्रीहरिकोही देखते इस प्रकार तप करतेहुये सौवर्ष बीतगये २५ तब इस प्रकार तप करतेहुये उन ब्राह्मणोत्तम अंगजी को देखकर जगन्नाथ चक्रपाणिजीने नित्य बहुत घोर विघ्न मुनिको दिखाये २६ परन्तु उन्हीं महात्मा श्रीनृसिंहजी के तेजसे वह धर्म्मात्मा ब्राह्मण उन विघ्नोंको ऐसा भस्म करता गया जैसे अग्नि इन्धनों को भस्म करताहै २७ व नानाप्रकार के नियमों के करनेसे व अन्य संयम उपवासादिकों के विधान से वह ब्राह्मण शरीर से तो अतिदुर्ब्बल होगया परन्तु अपने तेज से अतिदीप्तिमान् होतारहा २८ व सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशित दिखाई देनेलगा इस प्रकार तपस्या में निरत जनार्दनजीका ध्यान करते अंगजी को २९ श्रीभगवान्जीने आकर दर्शन दिया और अंगजी से बोले कि हे मानद! वर मांगिये उन्हें देख परमानिर्वृत ३० प्रसन्न बुद्धियुक्त अंगजी नम्र होकर बोले कि ३१ ॥

चौ० तुमगतिसबजनकेजगपावन। भूतभव्य भवके हौ भावन ॥
सर्व्वभूतपति सब गुण तोरे। भूतरूप विनवत करजोरे ॥
गुणरूपी गुणगम्य गुणार्णव। गुह्यवृत्त प्रणमत सुखमार्णव ॥
शंख चक्रदर धर भगवाना। नमो नमोहै सहित विधाना ॥
सत्यभाव अरु सत्य स्वरूपा। सर्व्व सत्यमय वेद निरूपा ॥
माया मोह विनाशनहारे। सब माया कर नमत तुम्हारे ॥
मायाधर मायाधृत देहा। मायारूप न रूप न गेहा ॥

सर्व्व मूर्त्तिधर शङ्कररूपा । करत प्रणामस्वमतिअनुरूपा ॥
सर्व्वधाम प्रणमत हौं तोहीं । धर्म्मधारि पालहु अब मोहीं ॥
तुम आकाश प्रकाशनहारे । वह्निरूप नम करत तुम्हारे ॥
शुद्धरूप स्वाहा तनुधारी । अरु अव्यक्त महात्मकरारी ॥
व्यासरूप जगव्यासस्वरूपा । नमोनमो हम करत अनूपा ॥
वासुदेव विश्वेश मुरारी । अनलरूप सर्व्वत्र प्रचारी ॥
हुतभोक्ता हुत आहुतिरूपा । करतप्रणामस्वमति अनुरूपा ॥
वामन कपिलदेव हरिनामा । करत प्रणाम सुनाम सुधामा ॥
नमो नृसिंहदेव भगवाना । सत्त्वपाल बलपाल महाना ॥
एकात्तर गोविन्द गुपाला । नमो नमो हम करत कृपाला ॥
सर्व्वाक्षर अरु हंस स्वरूपा । लेहु प्रणाम सकल सुरभूपा ॥
पञ्चतत्त्व त्रयतत्त्व स्वरूपा । नमत चरण तव हे जगरूपा ॥
पञ्चविंश तत्त्वात्मक देवा । दरश्याधार करत तव सेवा ॥
कृष्ण कृष्णरूपी भगवन्ता । लक्ष्मीनाथ अघौघ निहन्ता ॥
पद्मपलाश नयननम तोरे । आनँददानि हरहु दुख मोरे ॥
विश्वम्भर ममपाप विनाशन । नमोनमो हम करत प्रकाशन ॥
शाश्वतअव्ययअनघअनामय । लेहुप्रणति तव होयसदाजय ॥
पद्मनाभ केशव कमलाप्रिय । वासुदेव सर्व्वेश भक्त हिय ॥
आनँद कन्द पादयुग तोरे । मधुसूदन बिनवत करजोरे ॥
देहु दास्य तव चरणनमामी । केशव जन्मजन्म अनुगामी ॥
शङ्खपाणि शङ्करहु हमारो । शान्ति देहुयशजपत तिहारो ॥
भवदारुणहुत अज्ञानज तापा । शोकमोह बहुविधि तनुव्यापा ॥
दै अबज्ञान हरहु दुखसारे । विश्वनाथ हम शरण तुम्हारे ३२।५४

इस प्रकार की स्तुति अङ्गनाम महात्माकी सुनकर व घनश्याम निज महापराक्रमी रूप दिखाकर ५५ भगवान् प्रसन्न हुये वह रूप शंख चक्र गदा पद्मको धारणकिये गरुड़पर आरूढ़ प्रकाशित दिखा दिया ५६ सब भूषणोंकी शोभा से युक्त हार कुण्डल कङ्कण धारण किये व परमदिव्यरूप वनमालासे विराजमान ५७ अङ्गमुनिके आगे हृषीकेशजी ने अपना ऐसा रूप दिखाया जो कि पुण्यकारी

भृगुलता और कौस्तुभमणिसे शोभितथा ५८ सर्व्वदेवमय हरिजी ने अपनी देहदिखाकर ऋषिश्रेष्ठ महात्मा अङ्गजी से यह वचन कहा ५९ भो भो महाभाग विप्र हमारा परमवचन सुनो यह वचन मेघके नादके समान सुनाकर कहा ६० कि हम तुम्हारे तप से सन्तुष्ट हुये अब अब अवर हम से मांगो ऐसा कहतहुये सन्तुष्ट विश्वरूप जनेश्वर दीप्तिमान् कमलापति हृषीकेशजी को देखकर उनके युगलचरणकमलोंको बार बार प्रणाम करके ६१।६२ बड़े हर्षसे युक्तहो उन जनार्दनजीसे अङ्गजी बोले कि हे देवोंके स्वामी ! हे शंख चक्र गदाधरजी ! मैं तुम्हारा दासहूं ६३ जो मुझको वरदिया चाहते हो तो ऐसा उत्तमपुत्र दीजिये कि जैसे सब तेजों से युक्त स्वर्ग में इन्द्र प्रकाशित होते हैं वैसेही मेरापुत्र सदा प्रकाशितरहे ६४ बस वैसाही पुत्र दीजिये कि इन्द्रहीके समान तीनों लोकोंकी रक्षा करे व सब देवताओं को प्रियहो ब्रह्मण्य धर्म्मपण्डित ६५ दाता ज्ञानी धर्म्म तेजसे समन्वितहो तीनों लोकों का रक्षक व श्रीकृष्णचन्द्रजी के धर्म्मोंका पालकहो ६६ व सब यज्ञों के करने में एकही मुख्यहो शूर व तीनों लोकों का भूषणहो वेदके माननेवाला वा चार वेदों का पूरा पण्डितहो सत्यप्रतिज्ञ जितेन्द्रिय ६७ सब से अजित सबको जीतनेवाला विष्णुजी के तेजसे युक्तहो वैष्णव पुण्यकर्ता पुण्य से उत्पन्न पुण्यलक्षण ६८ शान्तस्वभाव तपस्वी सब शास्त्रों में विशारदहो वेदज्ञ योगियों में श्रेष्ठ व आपके सब गुणों के समान हो ६९ बस जो वर दिया चाहते हो तो इसी प्रकारका पुत्र हमको दीजिये यह सुन श्रीभगवान् विष्णुजी बोले कि बहुत अच्छा इन्हीं गुणों से युक्त तुम्हारे पुत्रहोगा ७० वह अत्रिकेवंशकाभी धर्त्ताहोगा व इस विश्वम्भरको भी धारण करेगा तेज व यशसे अपने पिताका उद्धारकरेगा ७१ व सत्यों से अपने पिता तथा पितामह दोनों का उद्धारकरेगा व आप विष्णु के परमपद हमारे स्थान को प्राप्तहोंगे ७२ अब किसी पुण्यवीर्य्यकी पुण्यकारिणी कन्या से विवाहकर ७३ तिस में शुभ पुण्यात्मा पुत्र को उत्पन्न करो हे महामुने ! हमारे प्रसाद से वह धर्मात्मा होगा ७४ और सर्वज्ञ सर्वदेता जैसा तुमने

वाञ्छा किया है ऐसा पुत्र होगा ऐसा वरदेकर श्री हरिभगवान् अन्तर्द्धान होगये ७५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेअंगवरप्रदानंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

दो० तेंतिसयें महँ पितु गिरा सुनी सुनीथा फेर ॥
वनहिंगई सखियनकह्यो चिन्तातजन सुटेर १

ऋषियोंने इतनीकथा श्रवणकर सूतजी से पूछा कि हे सूतजी ! जब सुशंख नाम महात्मा गन्धर्व्व के पुत्र ने शाप दिया तो उस पाप से वह सुनीथा कैसी हुई व क्या क्या कर्म्म उसने किया १ व उस शापसे उसने कैसा पुत्रपाया इत्यादि सुनीथा का चरित हमसे विस्तारसहित कहो २ सूतजी बोले कि जब सुशंख ने उस तनुमध्यमा सुनीथाको शापदिया तो वह दुःखसे पीड़ितहो अपने पिताके स्थान पर गई ३ व पितासे अपना सब चरित्र उसने प्रकाशित किया सत्यवानों में श्रेष्ठ धर्मात्मा मृत्युने उसका चरित सुनकर ४ उस महात्मा से शापित अपनी कन्या सुनीथासे बोले कि तुमने धर्म्म तेजके नाशनेवाला बड़ाभारी पापकिया ५ हे महभागे ! तुमने क्यों सुशंखको ताड़ित किया यह तुमने सब लोगोंके विरुद्ध कामकिया ६ जो कि काम क्रोध विहीन सुशान्तरूप धर्म्मवत्सल तपमार्गमें विलीन परब्रह्ममें स्थित ७ ऐसे पुरुषको जो ताड़ित करताहै उसके पाप का फल सुनो हे पुत्रि ! उसके पापात्मा पुत्र होताहै व बड़ेपापको भोगता है ८ व मारतेहुये को जो मारता है व गालीआदि कुवाच्यकहने वाले को जो कुवाच्य कहताहै वह उस मारनेवाले वा गालीदेनेवाले के पापका फल भोगताहै इसमें सन्देह नहीं है ९ वही शान्तहै व वही जितात्मा है जो ताड़न करतेहुये को नहीं ताड़ितकरता व जो कोई निर्दोषके साथ पाप करते हैं १० वे तो मोहसे महापाप करते हैं व जो दोष करनेवालेके सङ्ग दोषकरते हैं तो दोषीके दोष उनके ऊपर आजातेहैं ऐसेही जो कोई निर्दोष पुरुष किसी पापी को ताड़ित

करताहै तो उस पापीका पाप उस निर्दोषके ऊपर चलाजाताहै इसी से ज्ञानवान् पुरुष ताड़न करतेहुये को भी कभी ताड़ित नहीं करता ११ । १४ हे पुत्रि ! तुमने बड़े पापका पालन कियाहै यद्यपि उसने उसके बदले में तुमको शापदेदियाहै तथापि अब तुम पुण्यकरो १५ वह पुण्य सज्जनोंके सङ्गसे होताहै इससे सदैव सत्सङ्गति करो व योग ध्यान ज्ञान से अब अपना समय बिताओ १६ क्योंकि सज्जनों का संग महापुण्यदायक व कल्याण करनेवाला होताहै हे बाले ! तुमने बड़ी दुष्टताका काम कियाहै अब सत्संगका गुण देखो १७ जलके स्पर्शकरने व पीने व स्नानकरने से महात्मा मुनिलोग सिद्धियों को पातेहैं व भीतर बाहरके सब मल उनके दूरहोजाते हैं १८ मुनियों के विशेष और भी सब चराचरलोग जलके स्पर्श स्नानादिकोंसे सदा शुद्ध होते हैं हे पुत्रि ! जल शान्तहोता व सुशीतलहोता व सबका प्रियहोता है १९ निर्म्मल रसयुक्त पुण्यवीर्य मलनाशक होताहै इससे उसीके समान सबको शान्त रहना चाहिये व उसीके तुल्य सबको सुख देना चाहिये इसके अन्यथा न करना चाहिये २० जैसे अग्निके प्रसंगसे सुवर्ण मलको छोड़देताहै वैसेही सज्जनों के संसर्ग से मनुष्य पापको छोड़ताहै २१ व वह अग्निके तुल्य प्रकाशित रहताहै व पुण्यके तेजसे प्रज्वलित रहताहै ऐसेही सत्यरूप दीपसे सज्जनलोग प्रकाशित रहते हैं व ज्ञान से अतिनिर्म्मल रहते हैं २२ व ध्यान भावसे अतिउष्ण रहते हैं इसी से पापीनर सज्जनरूप अग्नि का स्पर्श नहीं करसके परन्तु सज्जन अग्निके प्रसंगसे पाप सब भस्म होजाताहै २३ इससे तुम सज्जनों का संग करो इसके विपरीत न करो पापके भारको छोड़ केवल पुण्यके आश्रित होओ २४ सूतजी बोले कि जब दुःखित सुनीथाको पिताने इसरीतिसे समझाया तो वह अपने पिताके चरणोंके प्रणामकर निर्जन वनको चलीगई २५ व काम क्रोध तथा बाल्यभाव को छोड़ तप करने लगी मोह द्रोह व मायाको छोड़ एकान्तमें स्थितहुई २६ उसके पीछे उसकी सखियांभी खेलने व उसका लाड़प्यार करनेके लिये वहां गईं व दुःखभागिनी उस सुनीथाको उन्होंने देखा २७ जोकि

ध्यानकररहीथी व चिन्ताके पारको नहीं जातीथी इससे उससे चिन्ता युक्त सब बोलीं कि हे भद्रे ! तुम यहां एकान्तमें बैठीहुई क्यों चिन्ता करतीहो २८ इसका कारण हमलोगोंसे कहो क्योंकि चिन्ता दुःख को देतीहै हां चिन्ता एकही सार्थक होतीहै जोकि धर्मके अर्थ कीजातीहै २९ व दूसरी वह चिन्ता सार्थका होतीहै जो योगियोंको आनन्द बढ़ाती है अन्य सब चिन्ता निरर्थक होतीहै इससे चिन्ता न करनी चाहिये ३० चिन्ता शरीरका नाशकरतीहै व बल तेजका तो प्रणाशनहीं करतीहै सब सुखोंको नाशती है रूपकी हानि दिखातीहै ३१ तृष्णा मोह लोभको भी यह चिन्ता प्राप्तकरातीहै व प्रति दिन चिन्ता कीगईहुई पापको उत्पन्न करातीहै ३२ चिन्ता व्याधि का जब प्रकाश होताहै तब वह नरकको पहुँचाताहै इससे हे शोभने ! चिन्ताको छोड़ अपनी पूर्व्वप्रकृतिके समान कार्य्यकरो ३३ मनुष्य जो पूर्व्व समयमें कर्म्म करने से इकट्ठा करताहै उसीको भोगताहै इससे ज्ञानीलोग किसी वस्तुकी चिन्ता नहींकरते ३४ इससे चिन्ता को छोड़ अपना सुख दुःखादिक कहो उन सबोंका वचन सुनकर सुनीथा बोली ३५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुनीथाचरितंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

दो० चौंतिसयें महँ सखिन कह सब देवनमहँ दोष ॥
पुनि पतिमोहिनिकी कही विद्या जासों पोष १ ॥

सूतजी शौनकादिक ऋषियों से बोले कि सुनीथाने सखियों से जैसे महात्मा सुशंख गन्धर्व्वने पूर्व्वसमय में शाप दियाथा वह वृत्तान्तसब अपनीसखियोंसे कहा १ व उसीदुःखसे अपनेको पीड़ित बताया व सखियोंसे फिर कहा हे सखियो ! और भी कुछ चिन्ता का कारण कहतीहैं सुनो २ हमारे गुण रूपकी सम्पत्तिका ढेर देखकर हमारे कारण हमारे पिताजीने बड़ीचिन्ता की ३ व देवताओं व मुनियोंको हमको देनाचाहा हाथमें हमको ग्रहणकर सबसे बोले ४

कि यह सुन्दर नेत्रवाली सोलहवर्ष की हमारीकन्या सब गुणोंसे युक्तहै इसे तुमलोगोंमें जो अधिक गुणवान् व महात्मा हो उसको दियाचाहते हैं ५ मृत्युका ऐसा वाक्य देवताओं व सब ऋषियोंने सुना तब वैसा कहतेहुये मृत्युसे इन्द्रादि देवगण बोले कि ६ हां तुम्हारी यह कन्या सब गुणोंसे युक्तहै व शीलोंकी तो परमनिधि है परन्तु एकबड़ेभारी दोषसे युक्तहै जोकि इसे उग्र तपस्वी ऋषिने शापदियाहै ७ इससे इसमें जिस पुरुषके वीर्य्यसे पुत्र उत्पन्नहोगा वह पुत्र महापापी व पुण्यवंशका नाशक होगा ८ इससे यह गंगाजल से भरेहुये कलशके तुल्य दिखाईदेतीहै पर जैसे वह मदिरा स्पर्शकियेहुये हाथके स्पर्शसे मद्यहीका कुम्भ होजाता है गंगाजलका घटनहीं समझाजाता ९ ऐसेही यह तुम्हारी कन्याहै पापके संसर्गसे कुलपापी होजाता है जैसे सिरका का एकबूँदभी जो दूधमें पड़जाताहै १० वह पीछेसे दुग्धको नाशकरके अपनेही रूपका प्रकाश करताहै वैसेही पापीपुत्र वंशका नाशक होताहै इसमें कुछभी संशयनहीं है ११ बस इसदोषसे तुम्हारीकन्या पापभागिनीहै इस से इसे और किसीकोदो यह हमारे पितासे देवताओंने कहा १२ सो देव गन्धर्व्व व महात्मा सब ऋषियोंनेभी ऐसेही कहा जब उन सबोंने हमारा लेना अंगीकार न किया तो हमारे पिता दुःखसे बहुत पीड़ितहुये १३ सो यह सब हमाराही दोषहै जो सज्जनों ने हमको अंगीकार न किया क्योंकि हमींने तो पूर्व्वसमयमें ऐसा पापकर्म्म कियाथा १४ सो इस दुःखके शोकसे सन्तप्तहो हम इस निर्जनवन को चलीआईं यहांपर देहका सुखानेवाला तपहीकरेंगी १५ जो तुम लोगोंने हमारी चिन्ताका कारण पूछा वह हमने तुमलोगोंसे प्रकाशितकिया १६ मृत्युकी कन्या दुःखसे पीड़ित यशस्विनी सुनीथा ऐसाकहकर चुपहोरही फिर सखियोंसे कछु न बोली १७ तब सखियांबोलीं कि हे महाभागे! शरीरनाशक इस दुःख को छोड़दो क्योंकि ऐसाकौनहै जिसके कुलमें कुछदोष नहींहै सब देवोंने पाप किया है १८ ब्रह्माजी ने पूर्व्वकाल में महादेवजीके समीप झूंठकहा था इसीसे ब्रह्मा अपूज्यहोजायँ यह देवताओंने कहदिया १९ इन्द्र

को देखो ब्रह्महत्यासे युक्तहैं परन्तु बड़े भाग्यवान् देवताओं के साथ तीनोंलोकों का राज्य भोगतेहैं २० फिर ब्रह्महत्याके सिवाय गौतम मुनिकी प्रिया भार्य्या अहल्याके संग उन्होंने भोग कियाथा सो परस्त्रीगामी होकरभी देव क्या देवराज कहातेहैं २१ महादेवजीने भी ब्रह्महत्याकीहै इससे अबभी उनके हाथमें ब्रह्माका शिर लपटारहता है पर देवता व वेदपारगामी सब ऋषिलोग उनके प्रणाम करतेहैं सूर्य्यदेव कुष्ठरोगसे संयुक्तहैं परन्तु तीनों लोकोंको प्रकाशितकरते हैं २२।२३ उनके इन्द्रादि चर अचर सबलोग नमस्कार करतेहैं विष्णु भगवान् भृगुमुनि के शापसे दशबारतक पृथ्वी पर जन्मलेकर दुःखादि भोगते हैं २४ चन्द्रमाने अपने गुरु बृहस्पतिजी की स्त्री ताराके संग भोगकिया इससे उनके क्षयीरोग होगया व प्रतापवान् महातेजस्वी राजा २५ पाण्डुके पुत्र महाप्राज्ञ धर्म्मात्मा धर्म्मके अवतार युधिष्ठिर राजा होंगे अपने गुरु द्रोणाचार्य्य के वध के अर्थ मिथ्या बोलेंगे २६ इतने महात्माओंमें महापाप विद्यमान है विगुणता किसमें नहीं है व विनालाञ्छनका कौनहै २७ हे वरानने ! आप तो थोड़ेही दोषसे लिप्त हैं हे श्रेष्ठरङ्गवाली ! हमलोग तुम्हारा उपकारकरेंगी २८ हे शुभे ! तुम्हारे अङ्गोंमें जो सज्जन स्त्रियोंके गुणहैं हे चारुलोचने ! वे गुण हमलोग अन्यत्र नहीं देखतीं २९ स्त्रियोंका भूषण सबसे प्रथमरूप है दूसरा भूषण शील है व तीसरा सत्यबोलना ३० चौथा अच्छेप्रकार शृङ्गार किये रहना पांचवांधर्म्म करना छठां मधुर बोलना हे वरानने ! ३१ सातवां भूषण अन्तःकरण व बाहरसे शुद्धरहना आठवां पिताका भावरखना नववां पति की सेवाकरनी ३२ दशवां सहनशीलता रतिमें कुशलता ग्यारहवां भूषणहै व पातिव्रतत्व बारहवां भूषणहै हे वरवर्णिनि ! ३३ हे बाले ! हे वरानने ! इन बारहगुणों से तुम युक्तहो जिस उपाय से सुधर्म्मी करनेवाला तुम्हारा पतिहोगा ३४ वही उपाय हमलोग करेंगी इस विषयमें हमलोग प्रयत्नकरेंगी यह सखियोंने सुनीथासे कहा व यह भी कि हम सब यत्न करतीहैं तुम साहस न करो साहस करनेसे होताहुआ भी कार्य्य नष्टहोजाताहै ३५ सूतजी शौनकादिकोंसे बोले

कि जब सखियोंने सुनीथासे ऐसा कहा तो वह सखियोंसे बोली कि जिस उपायसे धर्म्मात्मापति हमको मिले वह उपाय हमसे तुम सब कहो ३६ यह सुन रम्भादिक उसकी सखियां उससे बोलीं कि आप रूप मधुरतासे युक्त व ऐश्वर्य्यके बढ़ानेवाली हैं ३७ ब्राह्मणके शाप से डरके कुछ भयभीतहोगई हैं इससे हमलोग यहां आई हैं यह सुन्दर नेत्रवाली मृत्युकी कन्यासे कहा कि ३८ आपको एक ऐसी विद्यादेंगी जिससे पति मोहित होजाताहै व सब मायावी पुरुषोंको भी सब कल्याण देनेवाली है ३९ यह कह सबोंने सुनीथा को सुख देनेवाली पति मोहिनी विद्यादी व कहा कि हे भद्रे! जिस २ देवादिकको तुमको मोहित करना अभीष्टहोगा ४० उस २ को देखकर यह विद्या पढ़ना वह आप तुम्हारे पास आजायगा जब वह विद्या पाकर सुनीथाने उसे सिद्धकिया तब वह परमानन्दित हुई ४१ व अपनी सखियोंकेसङ्ग पुरुषोंके देखनेकेलिये घूमनेलगी घूमते २ पुण्य उत्तम नन्दनवन को गई ४२ वहां गङ्गाजीके तीरपर एक उत्तमपुरुष ब्राह्मणको देखा जो सब लक्षणोंसे सम्पन्न सूर्य्यके तेजके समान तेजस्वीथा ४३ लोकमें रूपमें अद्वितीयथा मानों दूसरा कामहीथा देवरूपसे महा भागवान् व भाग्यवान् और भाग्यदेनेवाला था ४४ उपमारहितथा क्योंकि विष्णुके तेजके समान उसके तेजकी प्रभा थी वैष्णव वहथा भी इसीसे विष्णुके तुल्य पराक्रमीथा ४५ ॥

चौ० कामक्रोधमोहादिविहीना । वंशविभूषण मन्त्र प्रवीना ॥
ऐसे पुरुषहि देखि लुभानी । सखिसों बोली परमसयानी ४६
को यह पुरुष रूप गुणखानी । तपप्रवीणयुत भाव सुबानी ॥
कहु रम्भे यह बात विचारी । दीखतपुरुष महाहितकारी ४७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दो० पैंतिसयें महँ अंगमुनि चरितकहे संक्षेप ॥
ताहिबनावनपतिकह्यो रम्भासखिसोंऽवेप १

सुनीथा का वचन सुन रम्भानाम उसकी सखी बोली कि परमे-श्वर से ब्रह्माजी उत्पन्नहुये व उनसे प्रजाओंकेपति महामनस्वी व धर्म्मात्मा अत्रिजी हुये १ उनके पुत्र अंगनामहुये ये एकबार इन्द्र के नन्दनवनको गये वहां उनकी लीला व तेज आदि देखकर २ इन्होंने चाहा कि हमारे भी यदि इन्द्रके समान पुत्र होता तो बहुत उत्तम बातथी व ऐसाही धर्म्मात्मा भी होता ३ तो यश कीर्तियुक्त मेरा कल्याण समेत जन्महोता यह विचार अपने पिताके उपदेश से इन्होंने तपों व नियमोंसे श्रीविष्णु भगवान्‌जीकी आराधनाकी ४ जब हृषीकेशजी सुप्रसन्नहुये तो इन्होंने यह वरमांगा कि इन्द्र के तुल्य विष्णुके तेज व पराक्रमसे युक्त वैष्णव सर्व्व पापनाशक पुत्र हमको मधुसूदनजी दीजिये तब उन्होंने कहा कि अच्छा जैसा तुम चाहतेहो वैसा पुत्र हमने तुमको दिया ५ । ६ तबसे ये विप्रेन्द्र पुण्य-वती कन्याको देखतेहैं कि आवे तो उसके संग विवाहकरें जैसे तुम सुन्दर सब अंगवाली हो तैसीहीको ये देखतेहैं ७ इससे हे वरारोहे ! इनके पास जाओ इनसे तुम में पुण्यात्मा पुण्यधर्म्म जाननेवाला विष्णुके समान तेजस्वी और पराक्रमी पुत्र होगा ८ हमसे जो तुमने पूँछा था वह सब तुमसे हमने कहा व हे देवि ! ये तुम्हारे भर्त्ताहोंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है ९ व हे देवि ! सुशंखका शापभी वृथा होजायगा इसमें भी संशय नहीं है व हे महाभागे ! इनसे जो पुत्र उत्पन्नहोगा वह धर्मकाप्रचार करनेवाला होगा १० हे भद्रे ! यह हम तुम से सत्य २ कहती हैं तुम सुखी होगी जैसे किसान अच्छे खेत में जैसा बीजबोता है ११ वैसाही उसबीजका फलभी भो-गताहै उसके विपरीत नहीं होता ऐसेही जैसे पुरुषके वीर्य्यसे पुत्र होता है वैसाही होता है १२ ये महाभाग तपस्वी व पुण्य वीर्य्य-वान् हैं इससे इनके वीर्य्य से जो उत्पन्नहोगा वह इन्हीं के गुण काहोगा १३ बस योग्य महातेजस्वी सब देहधारण करनेवालों में श्रेष्ठ पुत्र होगा महाभाग्यवाला व योगतत्त्वादिकों का वेत्ताहोगा १४ ॥

चौ० रम्भाकी वाणी विधिसों भाणी सुनि बाला हरषानी ।
जोसबसुखदायकअरुचितमायकहतीसकलशुभखानी ॥

मनमाहिं सुनीथा ताहि गुनीथा है सच मृषा न होई।
यासों यह कारज किये न हारज सुनि प्रसन्न सबकोई १५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

दो० छत्तिसयें महँ अङ्गमुनि और सुनीथा ब्याह ॥
तासुतवेनसुराज्यकर वर्णन किय ऋषिनाह १

यहसुन सुनीथा अपनी सखी रम्भासे बोली कि हे भद्रे ! तुमने सत्य कहा हम ऐसाही करेंगी इस विद्यासे इन ब्राह्मणदेवको मोहित करेंगी इसमें अन्तर न पड़ेगा १ अब हमको पुण्य सहाय हो जिससे इनके समीपको जावें यह सुन देवोंकी नारी रम्भाने उस मनस्विनी सुनीथा से कहा कि २ हे भामिनि ! कैसी सहायता करें सो तुम हमसे कहो सुनीथा ने कहा कि प्रथम इन विप्रजीके समीप तुम दूती बन कर जावो ३ जब सुन्दर नेत्रवाली रम्भासे सुनीथाने ऐसा कहा तो वह बोली कि बहुत अच्छा ऐसाही करेंगी ४ हम तुम्हारी सहायता करेंगी अब जो तुमको कहनाहो हमसे कहो यहसुनकर उसने कहा कि कहना क्याहै जिसमें हमको ये ग्रहणकरें वह युक्ति करो यह सुनतेही वह दिव्यरूप तो थीही और भी अपना उसने दिव्यरूप बनाया सुन्दर बड़े २ नेत्र रूपयौवनयुक्तहो मायासे अत्यन्त दिव्यरूप धारण किया यहांतक रूपमें उत्तम उससमय होगई कि तीनों लोकोंमें जोई देखता मोहित होजाता ५ । ६ सो वह महापुण्य सुन्दर कन्दराओंसे युक्त नानाप्रकारके धातुओंसे मण्डित नानाप्रकारके रत्नोंकी राशियोंसे शोभित ७ देववृक्षोंसे समाकीर्ण बहुत पुष्पोंसे उपशोभित देवसमूहोंसे समाकीर्ण गन्धर्व व अप्सराओं से सेवित ८ मनोहर सुरम्य शीत छायाओंसे समाकुल चन्दन अशोकादि वृक्षोंके झुण्डोंसे सघन उस सुमेरुपर्वतके शिखरपर ९ सब शृङ्गार किये जाकर हिंडोले पर झूलनेलगी नीलरङ्गके रेशमी सूक्ष्म वस्त्र धारण करलिये १० इससे अतीव शोभितहोनेलगी दुपहरीके

फूलके रङ्गकी चोलीपहिने सब अङ्गोंसे सुन्दरी वह बाला हाथमें वीणाले बजानेलगी ११ व सुन्दर स्वरसे विश्वभरके मोहनेवाला गान गानेलगी उन अपनी सब सखियोंकोभी सङ्ग लियेथी १२ यह तो ऐसा करनेलगी व महात्मा अङ्गजी पुण्यकन्दरामें एकांत में ध्यान कररहे थे काम क्रोधसे रहितहो जनार्द्दनजी का स्मरण करतेथे १३ उन्होंने मधुर मनोहर तालमानलयक्रियाओंसे युक्त सब प्राणियोंको खींचलेनेवाला सुन्दर स्वरसुना १४ यद्यपि महातेजस्वीथे परन्तु उस मायागीतसे मोहितहो ध्यानसे चलायमान होगये आसनपरसे उठकर बारबार उसी ओर देखने लगे १५ व मायासे मोहित होने के कारण बड़े वेगसे वहां गये व देखा तो वह हिंडोलेपर चढ़ीहुई वीणा हाथमें लिये बजारहीथी १६ कुछ हँसतीजाती व पूर्ण चन्द्र के समान प्रकाशित मुखसे गाती जाती उसके उस गीतसे व रूप से वे महायशस्वी मोहित होगये १७ उसकी सुन्दरताके भावसे काम बाण से पीड़ितहुये व ऋषिपुत्र द्विजोत्तम वे आकुल व्याकुल ज्ञान हुये १८ मोहसे अनर्थ वचन कहनेलगे व फिर २ जँभाईलेनेलगे व क्षणमात्र में उनके सब अंगोंमें पसीना होआया थर २ कांपने लगे देहमें सन्ताप हो आया १९ महामोहोंसे मोहित होनेलगे व मन चलायमान होगया व कांपतेहुये अंगजी बनाय उसके निकट चलेगये २० व उसे तो छोड़ उसीके निकट मृत्युकी कन्या विशालाक्षी यशस्विनी सुनीथाको देख मन्द २ मुसुकातीहुई सुनीथासे वे महात्माजी बोले २१ कि हे वरारोहे ! तुम कौनहो व किसकीहो व सखियोंके बीचमें किस कार्य्यसे यहां आई हो व तुमको इस वनमें किसने भेजाहै २२ तुम्हारे सब सुन्दर अंग इस महावनमें शोभित होतेहैं हमसे कहो व हमारे ऊपर प्रसन्न होके सुमुखी होवो २३ माया के मोह से मुनिने न जाना कि यह इसीका कर्म्म है क्योंकि वे तो कामके बाणोंसे विद्ध होगये थे २४ मुनि का इस प्रकार का महावाक्य सुनकर अपनी सखीके मुखकी ओर देखकर उन ब्राह्मण देव से सुनीथा कुछभी न बोली २५ व अपने सङ्केतसे रम्भाको प्रेरितकिया कि तुम इनसे वृत्तान्त कहो यह जान रम्भा उन द्विजोत्तम से आदरसमेत बोली कि २६

ह महाभाग महात्मा मृत्युकी कन्याहै व सबगुणोंसे सम्पन्नहै सु-
ीथा इसका नामहै २७ यह बाला धर्म्मवान् तपोनिधि शान्तस्व-
ाव जितेन्द्रिय महाप्राज्ञ वेदविद्यामें विशारद पति चाहतीहै २८
ह सुन अप्सराओंमें श्रेष्ठ उस रम्भासे अङ्गमुनि बोले कि हमने
र्व्वविश्वमय श्रीविष्णुजी की आराधना कीहै उन्होंने हमको वर
दियाहै कि तुम्हारे सब से उत्तम पुत्र होगा २९।३० उसके लिये
म बहुत दिनों से चाहते हैं कि किसी महात्मा पुण्यात्माकी कन्या
मिले तो उसके सङ्ग अपना विवाहकरैं परन्तु आजतक हमने अपनी
च्छाके अनुकूल कोई कन्या नहीं देखी पर यह धर्मकी कन्या है व
र्म्माचारमें परायण है रूपभी इसका अद्भुतहै ३१।३२सो यदि यहप-
तेकी इच्छा करतीहो तो हमींको क्यों नहीं भजतीहै जो २ यह बाला
ाहेगी हमसो २ इसे देंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ३३ इसके संग
 अदेयभी वस्तु हम इसे देंगे ऐसा कोई पदार्थ संसारमें नहीं जो
म इसकी प्रार्थना से इसे न दें ३४ जब ब्राह्मणने ऐसा कहा तो
म्भा उनसे बोली कि हे विप्रेन्द्र ! सुनो यह तुम्हारीही धर्म्मपत्नी होगी
समें सन्देह नहीं बस तुम यही करना कि चाहे यह कुछ अपराध भी
रे पर इसका परित्याग न करना ३५ व इसके गुण दोषकी ओर
ष्टि न देना बस इस अर्थकी तुम प्रतिज्ञा करलो व कुछ विश्वास
ी दिखावो ३६ सो और कुछ नहीं विश्वासके लिये अपना हाथ
ो यह सुन विप्रजीने कहा कि बहुत अच्छा हम अपना हाथ इसको
कड़ाते हैं इसमें सन्देह नहींहै ३७ बस ऐसा कह दोनोंकी हाथ
कड़ी पकड़ा होगई बस गान्धर्व्वविवाह की रीतिसे अङ्गजीने सु-
ीथा का विवाह कर लिया ३८ उनको सुनीथा को देकर रम्भा
हुत हर्षितहुई व उन दोनों से बिदाहोकर रम्भा अपने स्थानको
लीगई ३९ व सब और सखियांभी अपने २ स्थानोंको चलीगईं
ब वे सब चलीगईं तब द्विजोंमें उत्तम ४० अङ्गजी उस अपनी
्रियभार्याके साथ विहारकरनेलगे व उसमें सब लक्षणयुत एक पुत्र
त्पन्नकरके ४१ उसका वेन नामधराया व महातेजस्वी सुनीथाका पुत्र
ढ़नेलगा ४२ वेद शास्त्रपढ़के उस वेनने धनुर्व्वेदपढ़ा फिर वह

मेधावी सब विद्याओंका पारगामी हुआ ४३ इससे अङ्गका पुत्र वेन बड़े शिष्टाचार से बर्ताव करनेलगा यद्यपि वह वेन ब्राह्मणों में श्रेष्ठथा परन्तु धनुर्विद्या अधिक पढ़नेसे क्षत्रियोंके आचरणमें तत्पर हुआ ४४ जैसे इन्द्र सब तेजसे युक्तहोनेके कारण स्वर्गमें शोभित होते हैं वैसेही वहभी शोभित होनेलगा बल व पराक्रमोंसे वह महाप्राज्ञ इन्द्रहीके तुल्य हुआ ४५ तब चाक्षुष मन्वन्तरके बीचमें व वैवस्वत मन्वन्तर के आनेके पूर्व्वमें विना प्रजापालके लोकमें सदैव प्रजा कष्ट पातेहैं ४६ यह तपस्वी धर्म्मतत्त्वके जाननेवाले ऋषि प्रजाओंके कारण धर्म्म जाननेवाला सत्यमें पण्डित राजा चिन्तनाकरते भये ४७ तब सब लक्षणों से युक्त वेनको देखतेभये और इनको प्रजाओंका पालक नियतकरके राजसिंहासन पर स्थापितकिया ४८ महाभाग अंगके पुत्रके अभिषेक होने में सब प्रजापति लोग तप करनेके लिये वनको चलेगये उन सब महात्माओं के चलेजाने पर वेनराजा प्रजाओंका पालन यथावस्थित करनेलगे सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि सुनीथा वेनकी माता अपने पुत्रको विधिवत् राज्य करतेहुये देख ४९।५० उस सुशंखके शापका स्मरणकर बहुत शंकित चित्तहुई कि यह कैसे हुआ शाप तो यों था कि तेरे बड़ा दुराचारी पुत्रहोगा परन्तु उसके विपरीत यह तो बड़ा महात्मा तनय हुआ यह नित्य विचाराकरे जब सब धर्म्महीके अंग पुत्रमें देखे पापका कहीं लेशमात्र भी न देखे तब अत्यानंदित हो रहते २ वेन कुछ २ पापभी करने लगा जैसेही पाप करते जाने वैसेही सत्य धर्म्मादि गुणों को वेनके आगे प्रकाशित करके दिखावे व यह कहै कि हे वत्स ! मैं धर्म्मकी कन्याहूं ५१।५३ व तुम्हारे पिताजी धर्म्मतत्त्व अच्छे प्रकार जानते हैं इससे तुम धर्म्महीका आचरणकरो इस प्रकार वह पतिव्रता सुनीथा अपने पुत्रको नित्य समझायाकरे ५४ तब माता व पिताके भी वचनके अनुकूल प्रजाओंका पालन अच्छेप्रकार करनेलगे इसप्रकार प्रजापाल होकर वेन पृथ्वीमण्डलभरका राज्य करनेलगा ५५ ॥

चौ० प्रजासकलसुखसोंनिजजीवन । करहिंधरहिंधर्महिंमनहीमन ॥

वेन सदा अनुरञ्जन करई । देय न दुख काहुहि हित चरई ५६
वेन महात्मा के वर राजा । इमि प्रभाव भो सकल समाजा ॥
बढ़ेहु धर्म पालत त्यहि धरणी । अपरसुयशहमकयहिविधिवरणी५७
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनो
पाख्यानेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

दो० सैंतिसयें महँ वेनकहँ पापरूप यक आय ॥
वेदधर्मतजि जैनमत करन कह्यो यह गाय १

इतनी कथा सुनकर ऋषिलोगोंने सूतसे पूँछा कि जब महात्मा वेनकी राज्य व धर्म्म करने में ऐसी रीतिथी तो फिर धर्म्मछोड़कर अधर्म्म कैसे करनेलगे जिससे पीछे सुना है कि ब्राह्मणों ने कोप किया १ सूतजी बोले कि ज्ञानविज्ञानसम्पन्न व तत्त्व जाननेवाले मुनिलोग शुभ वा अशुभ जो कुछ कहते हैं वह मिथ्या नहीं होता २ इससे तपकरतेहुये उनमहात्मा सुशंखने जो सुनीथा को शापदिया था कि तेरापुत्र बड़ा अधर्म्मात्मा व दुराचारी होगा वह अन्यथा कैसे होसके ३ उस शापके कारणसे वेनके सब दुराचार तुम लोगों से कहतेहैं जब धर्म्मज्ञ महात्मा वेन राज्य करनेलगे तो ४ एक पुरुष कपटवेषधारण किये वहां आया उसका बड़ाउग्ररूपथा व महाकायथा शिरमुँड़ायेहुये बड़ातेजस्वी दिखाईदेताथा ५ एकमार्ज्जनी काँखमेंदबाये था व हाथमें एक नारियल का बड़ाभारी पानपात्र लिये था ६ व वेदधर्म्म की निन्दा करताहुआ असत् शास्त्र पढ़ता था जहां महाराज वेनजी थे वहां बड़ेवेग से आ पहुँचा ७ व वह पापी महाराज वेनकी सभामें पैठआया उसको सम्मुख आया देख राजावेन ने पूँछा कि ८ आप कौनहैं जो ऐसा रूप धारण कियेहुये हमारीसभामें चलेआये अपने आनेका कारण हमसे कहो ९ तुम्हारा क्या नाम क्याहै व क्या धर्म्म क्या तुम्हाराकर्म्महै किस देवताकी उपासना करतेहो आचार तुम्हारा क्याहै तप कैसा करतेहो व तुम्हारी भावना कैसी है १० व तुम्हारा क्या ज्ञान क्या प्रभाव क्या सत्य

धर्म्मका लक्षणहै वह सब हमारे आगे तुम सत्य२ कहो ११ वेनका ऐसा वाक्य सुन वह पापरूप बोला कि तुम इसप्रकारसे राज्य करते हो सबवृथाहै महामूढ़हो इसमें कुछभी संशय नहीं है १२ हम धर्म्म के सर्व्वधन हैं हम सब देवोंसे पूजितहैं हम ज्ञान हम सत्य व हम सनातन हैं इससे सबको धारणकरतेहैं १३ हम धर्म्म हम मोक्ष हम सर्वदेवमयहैं ब्रह्मदेह से उत्पन्न व सत्यप्रतिज्ञहैं भ्रष्टप्रतिज्ञ नहीं १४ हमको सत्यधर्म्मके शरीर जिनरूप जानो ज्ञानतत्पर सब योगी लोग सदा हमाराही ध्यान करते हैं और किसीका नहीं १५ यह सुन राजा वेन बोले कि तुम्हारा कैसा कर्म्म है व तुम्हारा शास्त्र कैसाहै व तुम आचार कौन करतेहो यह जब राजाने कहा तो १६ पापरूप वह बोला कि जहां अहिंसा तो देवताहो व कुशकी गांठियोंकी मालाधारणकिये गुरु दिखाईदे व दयाकरना परमधर्म्म हो बस वहां मोक्ष दिखाई देताहै १७ इस शास्त्रमें कुछ सन्देह नहीं है अब आचार तुमसे कहतेहैं यज्ञकरना व कराना व वेदोंका पढ़ना हमारे आचारमें नहीं है १८ न सन्ध्या तप दान स्वधा स्वाहा होम का करनाहै हव्य कव्यादिक नहींहैं न यज्ञादिक कोई क्रियायें उस मेंहैं १९ पितरोंका तर्प्पण नहींहै अतिथिका पूजन व बलिवैश्वदेव करनाभी नहींहै क्षपणक अर्थात् शिर मुण्डोंकी पूजा व अर्हन्त का ध्यान उसमेंहै २० यह जैनमार्ग्गका धर्म्म समाचारहै बस यही सब जिनधर्म्मका लक्षणहै जोकि हमने तुम से कहा २१ यह सुन राजा वेन बोले कि हमतो जानते हैं कि जो वेदमें कहाहै जिसमें यज्ञादिकक्रियायें हैं पितरों का तर्पण व बलिवैश्वदेवादिकर्म हैं वही धर्म है २२ पर जिसमें ये एक भी नहीं हैं न तप दानादिकहैं वह धर्म्म कैसा है हम से उसप्रकार का धर्म्म कहो २३ पातक बोला कि यह सब का देह पृथ्वी जल वायु तेज व आकाश इन पांच तत्त्वोंसे बना है उस में आत्मा वायु के स्वरूप से रहता है बस इसमें यज्ञादि क्रियाओं की प्रसङ्गता नहींहै२४ जैसे जलोंमें बुल्लों का समागम होता है व जाता है ऐसेही इन पृथिव्यादिकों में प्राणियों का सङ्गमहै२५ पृथ्वी और जल वहीं स्थित हैं तेज इसमें विद्यमान दिखाई देता

है तब वायु उनको प्रेरित करता है २६ फिर उसको आकाश आच्छादित करता है तब बुद्बुद अर्थात् बुल्ला होजाताहै तब जलके बीच में वह तेज गोलाकार होकर दिखाई देता है २७ सो क्षणमात्र दिखाई देता क्षणमात्र में फिर नहीं दिखाई देता ऐसेही प्राणियों का समायोग सर्व्वत्र दिखाई देता है २८ अन्तकाल में आत्मा अलग चला जाता है व पृथिव्यादि पांचों पांचों में मिलजाते हैं इस से मोहकी बुद्धिसे मनुष्य परस्पर मिलकर एक दूसरे की सहायता के लिये मोहही से श्राद्धकरते मोहही से क्षयाह व पितरों का तर्पण करतेहैं हे नृपोत्तम ! मरजाने पर वह कहां रहता व किस रूप से रहता है जो श्राद्धादि के पिण्डादि खाताहै २९ । ३० उसका ज्ञान कैसा होता व शरीर कैसा होता व उसे किसने देखा है हमसे कहो हां श्राद्धादि में मिष्टान्न भोजन करके ब्राह्मण तृप्त होकर चले जाते हैं ३१ और श्राद्ध किसको दियाजाता है इस से श्राद्ध में विश्वास करना निरर्थक है और अब वेदोंके दारुण कर्म्म तुम से कहतेहैं ३२ कि जब अतिथि गृहमें आवे तो प्रथम एक बड़ाभारी बैल उसको दे अथवा हे राजराजेन्द्र ! उसे एक छाग दे तबतक अतिथि भोजनकरै बस इसको तो अतिथि का भोजनकराना लिखाहै ३३ इसीप्रकार अश्वमेधयज्ञमें अश्वका बलिप्रदान करना पवित्र लिखा है ऐसेही गोमेधमें बैलका बलिदान पुरुषमेध में मनुष्य का बलिदान व वाजपेय यज्ञ में छागका ३४ व हे महाराज ! राजसूययज्ञमें जानो बहुत से प्राणियों का घातन लिखा है पुण्डरीक यज्ञ में गज को मारै व गजमेध में भी हाथी मारै ३५ सौत्रामण्यपशुमेध में मेष अर्थात् मेढ़े का वध लिखा है हे नृपनन्दन ! इसीप्रकार नानाप्रकारके यज्ञ लिखेहैं ३६ व उन में नानारूप के पशुओं का वधकरना लिखा है फिर जहां पश्वादिकही बलिदान दियेजाते हैं तो उनका लक्षण व फल क्या होगा ३७ व वह अन्नजूंठा होताहै जहां कि बहुत लोग एकत्र बैठकर भोजन करते हैं व वेदोंमें बार २ बहुतों को एकत्र भोजन देना लिखा है व यह भी लिखा है कि महायज्ञ में जो पशुको मारता है व वह पशुभी महादोषों से हीन होजाता

है ३८ फिर हे राजन्! ऐसे यज्ञों के करने से कौन धर्म्म दिखाई देता है व क्या फल जिन यज्ञों में वेदवाले पण्डितों ने पशुओंका मरण दिखाया है ३९ इस से उनमें न कोई धर्म्मही है न मोक्षदायक पुण्यही है क्योंकि विना दया का जो धर्म्म होताहै वह विफल समझा जाता है ४० व जहां जीवों का पालन होता है वहां धर्म्म है इसमें कुछ संशय नहीं है व हे नृपोत्तम! स्वाहाकार स्वधाकार तप सत्य ये सब ४१ दयाहीन विफल होतेहैं व उत्तम धर्म्म उनमें कुछ भी नहीं होता व ये वेद अवेदहैं जिनमें कहीं दयाका नाम नहीं है ४२ बस दया दानमें नित्यपर हो जीवों की रक्षाही करे जो जीवों की रक्षाकरे वह चाण्डालहो वा शूद्रहो वही ब्राह्मण कहा जाता है ४३ व जो ब्राह्मण होकर दयाहीन हो पशुओं के घात में परायण होता है वह दयाहीन पापी कठिन क्रूरचित है ४४ उन्होंने तो कहदिया है कि वेद ज्ञानदेनेवालेहैं परन्तुहैं वे ज्ञानवर्जित बस जहां नित्यज्ञान हो वहीं वेदको स्थित जानो ४५ हे महामते! दयाहीन वेदों में व दयारहित विप्रों में न सत्यहै न वेद वा वेदक्रिया है ४६ हे राजेन्द्र! वेद वेदान्त वा ब्राह्मण ये सब सत्यरहितहैं व दान का भी कुछ फल नहीं है इससे दान न देना चाहिये ४७ जैसे श्राद्ध का चिह्नहै वैसाही दानका भी लक्षण है इस से भुक्ति मुक्तिदायक जिनका धर्म्म ४८ बहुत पुण्यका देनेवाला तुम्हारे आगे कहताहूं प्रथम शांतचित्त से सब प्राणियों पर दया करे ४९ फिर हृदय से जिनदेव की आराधना करे जिसमें कि चराचर सब लोग विद्यमान रहते हैं व शुद्धभाव मनसे केवल एक जिनकी पूजा करे ५० बस नमस्कार भी उन्हीं देवदेव जिनके करे अन्य किसीके कभी न करे व माता पिताके पादोंकी वन्दना तो कभी न करे ५१ हे राजसत्तम! फिर औरोंकी कौनसी बातहै इतना सुन वेन बोले कि ये सब विप्रलोग व सब आचार्य्यलोग गंगादि नदियों को ५२ पुण्यतीर्थ बहुत पुण्यके देनेवाले कहते हैं सो बतावो सत्य है कि मिथ्याही कहते हैं यदि इनमें कुछ धर्म्म तुम जानतेहोवो तो हमसे कहो ५३ तब वह पातक पुरुष बोला कि हे महाराज! आकाश से मेघ जल

बरसतेहैं तब भूमि और पर्वतोंमें सबओर जल गिरता है ५४ वही वहां स्थित रहता है और नदियों में तो सब मैला कुमैला पापयुक्त जल बहताहै फिर उनमें तीर्थत्व कैसे होसक्ताहै ५५ व हे महाराज ! ऐसेही तड़ाग सागरादि सब जलाशयहैं व पर्वतोंमें सब पत्थरोंके ढेर हैं ५६ इससे इनके ऊपरभी कोई तीर्थ नहीं न कहींके जलही में कोई तीर्थ है जलसे मेघ उत्तमहैं यदि इन तीर्थोंमें स्नान करने से पुण्यहै तो उनमें सदा मछलियां रहती हैं क्यों नहीं तरतीं ५७ जो स्नान करने से कुछभी सिद्धिहोती तो मछलियां अवश्यही तरतीं कुछभी अन्तर न पड़ता बस जहां जिन वहीं सनातनधर्म व वहीं सब तीर्थ ५८ व वहीं तपोदानादि सब पुण्य प्रतिष्ठित रहते हैं ५९ ॥

चौ० यासोंनृप जिन सुरमय होई । उन्हें छोड़ि नहिं धर्म्मकहोई ॥
परम पवित्र लोक महँ ओई । उन समान नहिं है सुरकोई ॥
यासों ताहि अराधहु भूपा । पैहहु परमसुख मन अनुरूपा ॥
यामहँ नहिं संशय क्यहुभांती । सदा जपहु जिन गुणगणपांती ॥
सकल धर्म्मतत्त्व वेद सुदाना । पुण्य सत्यव्रत तीर्थ पुराना ॥
इनसबकी कीन्हीं अतिनिन्दा । कह्यहु अपूज्य सकलसुरवृन्दा ॥
पाप भावसों अंग तनूजा । बोधित भयहु त्यागि सबपूजा ॥
पूर्व्वज शाप प्रभावज पापी । समझायहुसबनृपअलापी६०।६१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

दो० अड़तीसयें महँ कह्यो वेन केर दुष्कर्म्म ॥
पुनि जिमिऋषि समझाय त्यहि अंगमथे कियधर्म्म १

सूतजी बोले कि जब उस पापीने पापभावसे राजा वेनको इस प्रकार समझाया तो वेन पापभावको प्राप्त हुआ व उस पुरुष ने बनाय पापभावसे दृढ़ करदिया १ तब झट उस दुष्टात्माके पैरोंपर राजा गिरपड़ा व वेद धर्म्म पुण्य यज्ञ क्रियाओंका करना छोड़दिया २ सुन्दर यज्ञोंकी व वेदोंकी निवृत्ति होगई व पुण्यदायक धर्मशास्त्र

व पुराणोंका धर्म्म सब बन्द होगया ३ व उसकी आज्ञासे सबलोग पापमय होगये न कोई यज्ञ करता न वेद पढ़ता न उत्तम धर्म्मशास्त्र ४ व पुराण कोई पढ़ने पाता ब्राह्मणलोग उसके राज्यमें दानदेना लेना व किसी वेद शास्त्रादिका अध्ययन नहीं करनेपाते ऐसा करने से धर्म्मका लोप होगया व महापाप प्रवृत्त होगया ५ अंगजी रोंकते थे पर उनके कहने के विपरीतही वह करे क्योंकि उस पापीने तो शिक्षाहीदीथी कि माता पिताकी आज्ञा न माननी चाहिये न उनकी पूजाही करनी चाहिये इससे वह दुरात्मा राजा न कभी पिताके चरणोंके प्रणाम करे न माताके ६ व न किसी ब्राह्मणही के प्रणाम करे ऐसा प्रतापी बन बैठा पिता व माताके विचारेहुये ७ शुभकर्म्म वह दुरात्मा एकभी न करनेलगा व न पुण्य तीर्थ दानादि कोई शुभ कर्म्महीं करे ८ अब अंगमुनि बार २ विचारांश करें कि न तो हमने कोई अशुभकर्म्म किया न कुमुहूर्त्त कुसमय में रतिकी फिर यह पुत्र ऐसा दुराचारी कैसे होगया प्रजाओं के पति हम अंगके वंशमें लाञ्छन लगगया ऐसा विचारकर ६ फिर उन धर्म्मात्माने महात्मा मृत्युकी कन्या सुनीथासे पूँछा कि हे प्यारी ! हमसे सत्य कहो यह किसके दोषसे दुष्ट पुत्र हुआ क्या तुमने तो कोई पाप कभी नहीं किया १० सुनीथा बोली व उसने पूर्व्वका अपना सब वृत्तान्त पति से कहा कि यह पुत्र मेरे दोषसे दुष्ट हुआहै ११ बाल्यावस्थामें मैंने तपस्यामें स्थित सुशंख महात्माको ताड़ित कियाहै और कुछ मैंने नहीं कियाहै १२ तब कोपकर सुशंखजीने शापदिया कि तेरी सन्तान दुष्टहोवे हे महाभाग ! यह मैं जानतीहूं तिसीसे यह दुष्ट हुआहै १३ इस बातको सुनकर महातेजस्वी अंगजी सुनीथाको संगले वनको चलेगये जब भार्य्यासहित वे महाभाग वनको चलेगये १४ तब सप्तऋषिलोग उस दुष्ट वेनकेपास आये व बुलाकर अंगके पुत्र वेनसे बोले कि हे वेन ! साहस न करो आप इस समय प्रजापाल हैं व तुमको चाहिये कि चराचर तीनोंलोकों को धर्म्म सिखाओ व तुमभी करो १६ हे महाराज ! धर्म्ममें सब प्रतिष्ठित रहते हैं व पाप से नष्ट होते हैं इससे पाप छोड़ धर्म्मकरो १७ जब ऋषियोंने ऐसा

कहा तो बहुत हँसताहुआ वेन वचन बोला कि बस यही परमधर्म्म है जो हम करते हैं व यही सनातनधर्म्म है १८ हम सबको अपने बलसे धारणकरते हैं व हम सबके रक्षक हैं व हमीं वेदोंके अर्थ हैं व हमीं महापुण्यधर्महैं व हमीं सनातन जैनधर्म हैं १९ और कोई भी धर्म्म ठीक नहीं है हे ब्राह्मणो ! कर्मसे धर्मरूपी हमको भजो यह सुन ऋषिलोग बोले कि ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्य ये तीनोंवर्ण द्विजाति कहातेहैं २० सो इन तीनोंवर्णोंके लिये यह सनातनी श्रुति है कि जो वेदके आचारपर चलते हैं वेही जन्तु जीते कहाते हैं २१ व ब्राह्मण से उत्पन्नहोनेके कारण आप ब्राह्मणहैं फिर पीछे से पृथ्वी के राजा होगये हैं इससे विक्रमसे विख्यातहोगयेहैं २२ हे राजेन्द्र ! राजाही के पुण्यसे ब्राह्मणलोग सुखसे जीते हैं व राजाहीके पापसे सब ब्राह्मणादि नष्ट होजाते हैं इससे पुण्यकरो २३ हे नराधिप ! जो सत्ययुग का धर्म्महै उसको करो फिर जैसा सत्ययुगमें धर्म्मथा वैसा त्रेतामें नहीं रहगयाथा व जैसा त्रेतामें था वैसा द्वापर में नहीं २४ व जैसा द्वापरमें होताहै वैसा कलियुगके प्रवेशमें नहीं रहता इससे जिसजैन धर्म्मकी तुम प्रशंसा करतेहो उसे कलियुगमें बहुधालोग करेंगे व इसी जैनधर्म्म पापरूपके करनेसे सब मोहित होजायँगे २५ व वेदाचारको छोड़कर सब मनुष्य पापकरनेलगेंगे क्योंकि यह जैनधर्म्म पापकामूलहै इसमें कुछभी संशय नहीं है २६ हे राजेन्द्र ! जैनधर्मसे युक्त मनुष्य महा मोहसे गिरायेजाते हैं पापी होते हैं तिनके नाशके लिये २७ सब पापके नाशकरनेवाले गोविन्दजी होंगे वे अपनी इच्छासे रूपधारणकर पापसे नाशकरेंगे २८ पापयुक्तहोने में म्लेच्छ नाशके लिये कल्किदेव निस्सन्देह होंगे २९ इससे अब कलियुगका व्यवहार छोड़ो व पुण्यकर्म्म करो सत्यसे बर्त्ताव करो व प्रजापाल होओ ३० यह सुन वेनराजा बोला कि हम ज्ञानवानों में श्रेष्ठहैं इससे इस विषय में सब हमाराजाना हुआ है जो और तरह से बर्त्तताहै वह निश्चय दण्ड देनेयोग्य होताहै ३१ ऐसा कह जब वह पापीराजा और भी बहुत बकनेलगा तो ब्रह्माजीके सातोपुत्र वे महात्मा ऋषिलोग अत्यन्त कुपितहुये ३२ जब उन सब महात्मा-

ओंने कोपकिया तो राजावेन उन लोगों के शापके भयसे बामी वा व्यमौर में घुसगया ३३ वे मुनिलोग सबओर वेनको कुपित होकर देखनेलगे कि वह दुष्ट कहांगया तब उन्होंने जाना कि राजा बामी में पैठाहुआ है ३४ बलसे ब्राह्मणोंने उसक्रूरपापी राजाको बामीसे खींचलिया तब इधर उधर कूदने फांदनेलगा ३५ परन्तु उन लोगोंने जबरदस्ती पकड़ अतिक्रोधकर उसकी बामजानु मथा उससे एक नीलवर्णका बहुतछोटा भयंकर पुरुष उत्पन्नहुआ ३६ रक्तकेसमान लाल २ तो उसके नेत्रथे व धनुर्बाण हाथों में लिये हुये था वह सब पापोंका रूपथा ३७ व म्लेच्छोंका पालक विशेष रीति से होनेवाला था उस पापकर्म्मवाले को देख ऋषियोंने जाना कि अब इसके देहसे पाप निकलगया ३८ इससे उन्होंने फिर वेन महात्मा का दहिनाहाथ मथा उससे फिर वे महात्मा पृथुजी उत्पन्न हुये जिन्होंने पृथ्वीको दुहा ३९ ॥

चौ० राजा [illegible] । पृथुसमानमहि भयउ न आना ॥
[illegible] वेन [illegible] । [illegible] पापी ४०
अरु पृथुहरिप्रसाद सों नीके । चक्रवर्ति पदभोगि सुठीके ॥
गयहु विष्णुपद जो अतिपावन । अरुसबभांति सुहावनभावन ४१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

दो० उन्तालिसे महँ वेन तप हरिदर्शन बखान ॥
दानकाल सत्पात्र अरु लक्षण तीर्थ बखान १

इतनी कथासुन ऋषियोंने सूतजीसे पूँछा कि हे सत्यवानों में श्रेष्ठ सूतजी ! सब पापोंको दूरसे त्यागकर वेन कैसे स्वर्गको गये यह हमसे विस्तारसहित कहो १ सूतजी बोले कि ऋषियोंके पुण्य संसर्गसे व उनके सम्भाषणसे व शरीरके मथनसे वेनके शरीरसे सबपाप जातेरहे २ पीछे पुण्यात्मा वेनने निरन्तर उत्तम ज्ञानपाया व नर्म्मदाके दक्षिणतटपर उन पुण्यात्मा ने बड़ाभारी तपकिया ३

जहां कि सब पापनाशन तृणबिन्दु मुनिका आश्रम था वहीं तप किया वहां पर काम क्रोधसे रहितहो कुछ अधिक सौवर्षतक तप कियाथा ४ उनके उग्र उग्रतपसे शंख चक्र गदाधारी श्रीविष्णुदेव प्रसन्नहोकर उनसे बोले कि वरमांगो तब राजा वेन बोले कि हे देवदेव ! जो हमारे ऊपर प्रसन्न हो तो यह उत्तम वर हमको दो ५।६ हम इसी अपने शरीरसे व अपने पिता माता सहित तुम्हारे तेजसे युक्तहो श्रीविष्णु तुम्हारेही परमपदको जायँ पर माता पिता भी इसी देहसे चलें ७ तब श्री वासुदेवजी बोले कि हे राजन् ! महा- मोह कहांगया जिससे तुम मोहित हुए और लोभ मोह युक्तहोकर तमोमार्ग में गिरायेगये ८ तब वेन बोले कि हे विभो ! जो हमने पूर्व समय में पाप किया है तिसी से मोहित हुयेहैं इससे आप हम को इस घोर पाप से उद्धार कीजिये ९ और कृपा करके जपने और पढ़ने के योग्य भी बताइये तब भगवान् बोले कि हे महाभागरा- जन् ! तुमने अच्छा प्रश्न किया तुम्हारे पाप नाशहोगये १० तप- स्या से तुम शुद्धहो अब हम पुण्य को कहते हैं जैसे आपने पूंछा ऐसेही पूर्वसमयमें ब्रह्माजी ने पूंछा था ११ तब ब्रह्माजीसे जो कहा वह सब हम तुमसे कहते हैं एकसमय ब्रह्माजी नाभिकमलमें ध्यानमें स्थित थे १२ तब हम ब्रह्माजीके वर देने के लिये प्रकट होगये तो उन्हों ने बड़ा पुण्यकारी पापनाशनेवाला स्तोत्र पूंछा १३ जिसका वासु- देवस्तोत्र नाम है इच्छा करनेवालों को अच्छी गति देता है स्तोत्रों में श्रेष्ठ है बड़ाभारीहै १४ पढ़ने और जपनेवाले मनुष्योंको सदैव सब सुख देनेवाला है ऐसे विष्णुजीके प्रीति करने वाले श्रेष्ठ स्तोत्र को उपदेश करते भये १५ फिर भगवान् बोले कि अव्यक्त मूर्त्ति मुझसे यह सब संसार व्याप्तहै इस से विष्णुमें परायणमुनि हमको विष्णु कहते हैं १६ जहां प्राणी बसतेहैं और इन में जो विभु बस- ता है वह आदर से विद्वानों ने वासुदेव नाम जाना है १७ जिस से विभु अव्यक्त के लिये अन्त में प्रजाओं को खींचता है तिससे श- रणागतों ने संकर्षण नाम जाना है १८ इंगितमें कामरूप हम बहुत होंगे इस कामना से पुत्रकी इच्छाकरनेवाले विद्वानों ने प्रद्युम्न नाम

हमको जानाहै १९ इस लोकमें सब के स्वामी महादेव और केशव जीहैं योगबल से हम किसी से अनिरुद्धकी नाईं रोके नहींगये२० ज्ञान विज्ञान संयुक्त संसारमें हम विश्वनाम से हैं जाग्रत् अवस्था में चिन्तायुक्त अहमिति अभिमानी हैं २१ तैजस जगच्चेष्टामय इन्द्रियरूप युक्त ज्ञानकर्म समेत स्वप्नावस्था को प्राप्तहैं २२ बुद्धिमान् अधिदैवात्मा संसार के अधिष्ठान गोचर सुषुप्तावस्थाको प्राप्त लोक से उदासीन विकल्पयुक्त २३ तुरीय विकाररहित गुणावस्था से वर्जित साक्षी की नाईं निर्लिप्त संसारमें प्रतिबिंबयुक्त शरीर२४ चिदाभास चिदानन्द चिन्मय चित्स्वरूपयुक्त नित्य अक्षर ब्रह्मरूप हे ब्रह्मन्! इसप्रकारसे हमको जानिये २५ ऐसा पूर्वसमय में ब्रह्मासे विष्णुजी कहकर अपने रूपको अन्तर्द्धान करतेभये और ब्रह्माजी क्षणमात्रमें संसारकी व्याप्ति जानकर कृतार्थ होगये २६ हे अच्छे व्रत करनेवाले राजन्! पृथुकेजन्म से तुमभी शुद्धात्मा होगये तिस परभी इसस्तोत्रसे भगवान् की आराधना करो २७ और प्रसन्नहुये विष्णुजी राजासे यहभी कहतेभये कि हे मानदेनेवाले राजन्! वर मांगिये तब वेन बोले कि हे विष्णुजी! अच्छी गति हमको दीजिये औरपापों से तारिये २८ आपकी शरणमें हम प्राप्तहैं अब अच्छी गति का कारणकहिये तबश्रीभगवान्जी बोले कि हे महाभाग!पूर्व्वसमयमहात्मा अङ्गजीनेभी २९हमारी आराधना की थी तब उनकोभी हमने वर दियाथा कि हे महाभाग!तुम अपने इन शुभ कर्म्मोंसे उत्तम वैष्णवलोकको जाओगे ३० सो हे नृपनन्दन! हे महाभाग! वे तो अपने ही पुण्य कर्म्म से वहां जायँगे अब तुम अपने लिये कोई और वर मांगो३१ और पहलेके वृत्तान्त को सुनो पूर्वसमयमें तुम्हारी माता सुनीथाको बाल्यावस्था में महात्मा सुशंखजीने क्रोधितहोकर शाप दियाथा तब शापजानकर तुम्हारे उद्धारकरनेकी कामनासे अंगकोहम नेवरदिया कि तुम्हारे अच्छा पुत्रहोगा ऐसा तुम्हारेपिता से कहा ३२ ।३४ अब तुम्हारे अंगसे उत्पन्न होकर हमलोकका पालनकरेंगे और स्वर्गमें जैसे इन्द्र शोभित होतेहैं तैसे हम पृथ्वी में स्थित होंगे ३५ और पुत्रआत्माही उत्पन्न होताहै यह सत्यवती श्रुतिहै इससे हमारे

वर से तुम अच्छी गतिको प्राप्त होगे ३६ और हे राजन्! अपनीगति के लिये एक दानही दीजिये क्योंकि सुनीथाको सुशंखजी ने शाप दियाथा कि तेरेदुष्टपुत्रहोगा और हमने तुम्हारे पिता अंगकोवर दियाथा कि तुम्हारे उत्तम पुत्रहोगा इससे विधि और निषेध मैंहींहूं कर्मके अनुरूप फलदाताहूं बुद्धिसे अतीत और गुणोंका ग्रहण करने वालाहूं ३७।३९ दान परमश्रेष्ठ है व दानही सब धर्म्मों को उत्पन्न कराताहै इससे अब तप छोड़कर तुम दानदो क्योंकि दानहीसे पुण्य होताहै ४० व दानसे पाप नष्ट होते इससे दान अवश्यकरो व हे नृपसत्तम! अश्वमेधादि यज्ञोंमे हमारी पूजा करो ४१ व भूमिदानादिक महादान ब्राह्मणोंकोदो क्योंकि सुदानही से भोग मिलतेहैं व सुदानहीसे यश मिलताहै ४२ सुदानहीसे कीर्तिमिलती है सुदानसे सुखमिलतेहैं दानहीसे स्वर्ग मिलता है व स्वर्गका फल दानहीसे प्राणीभोगताहै ४३ व दानभी जो श्रद्धापूर्वक दियाजाता है वह सफल होताहै काल पाकर तीर्थको जावे पुण्यकाफलयहीहै ४४ श्रद्धासेपवित्रचित्तसे सुपात्रब्राह्मणको जो हममें भावकरके महादान देताहै ४५ वह जो२मनसेचाहताहै हम सब उसे देतेहैं वेन यहसुनकर बोले कि दानका काल हमसे कहो कालका लक्षण कैसा होताहै ४६ व तीर्त्थ और पात्रकाभी लक्षण हमसे कहो व हे जगन्नाथ! दानकाभी सब लक्षण विस्तारसेकहो ४७ सो भी जो हमारेऊपर दया हो तो प्रसन्नतापूर्वक सबके लक्षणकहो श्रीवासुदेवजीबोले कि हेनृप! नित्य व नैमित्तिक दोनों दानोंकेकालों के लक्षणकहतेहैं ४८ सूर्य्योदयकी बेलामें सब पाप नष्टहोतेहैं व अन्धकारादिक सबघोररूप मनुष्योंके नाशकहैं इसीसे स्वर्गमें अपनेअंश तेजकेनिधि सूर्य्यको हमने कल्पित किया है ४९ । ५० इससे उनके तेजसे भस्महोकर सब पाप नष्ट होते हैं उदयहोते हमारे अंश सूर्य्यको देखकर जो जलभी देताहै ५१ हे राजन्! तिसका क्या कहना है नित्यही पुण्य बढ़ती है तिस अच्छी बेलाके प्राप्तहोनेमें पुण्यकर्त्ता मनुष्य ५२ स्नानकर जो कोई देवताओं व पितरोंका तर्पण करके फिर श्रद्धासे पवित्र चित्तसे दानदेताहै सो दान दाताकी शक्तिके अनुसार होताहै ५३

व अन्न दुग्ध फल पुष्प वस्त्र ताम्बूल भूषण व सुवर्ण रत्न आदिक जोदे तो उसका फल अनंत होवे ५४ हे राजन् ! ऐसेही मध्याह्न में व पराह्णमेंभी जो कुछदे वह हमारेही उद्देशसेदे तोभी उसका फल अनंतही होवे ५५ खानेपीनेके मीठे पदार्थ व कुंकुमादि लेपकरनेके ऐसेही कर्पूरादि सुगन्धित वस्तु वस्त्र तथा नानाप्रकारकेभूषण ५६ देवे तो भोग और सुखकोपावे यह दानपूजा के अर्थियों का शुभ नित्यकाल मैंनेकहा ५७ अब उत्तम नैमित्तिक भी कहतेहैं तीनोंकालों में निस्सन्देह दानदेनाचाहिये ५८ आत्मा के हितकी इच्छा करने वालेको दानसे शून्य दिन न करना चाहिये हे राजन् ! जिस काल में कुछ दानदियाजाताहै ५९ तो दानके प्रभावसे महाबुद्धिमान् बहुत सामर्थ्यसंयुक्त धनाढ्य गुणवान् बुद्धिमान् व पण्डित निपुणहोताहै ६० जो कोई पक्षभर वा मासभर लगातार दान पुण्य नहीं करता है उस उत्तमभी पुरुष को हम भोजनसे हीनकरदेते हैं ६१ व जो कोई बिना उत्तमभी दानकिये कुछपदार्थ आप अकेले भोजनकरताहै हम ऐसा रोग उत्पन्नकरदेते हैं जिससे सब भोगों का निवारण होजाताहै ६२ उसके शरीर में सदा पीड़ाबनीरहती है इससे कुछ खाने पीनेकी इच्छाही नहींरहती उसे मन्दाग्निसे युक्त करदेतेहैं वा ज्वर से पीड़ित करदेतेहैं ६३ जो लोग तीनकालों में एकमें भी कुछ दान नहीं करते कि ब्राह्मणदेवताओं को खिलावें पिलावें व आप मीठे पदार्थ खाते पीते रहते हैं वे लोग महापाप करते हैं ६४ उनको चाहिये कि बड़ाउग्र प्रायश्चित्तकरें हे महाराज ! बहुत उपवासादि करनेसे उन्हें अपना शरीर दुर्बल करनाचाहिये ६५ जैसे निर्घृणहोकर चर्मकार कुण्ड के ऊपर चमड़े को खड़ाकरके उसके शुद्धहोनेकेलिये अनेक खराबवस्तु भरताहै पर उसे शुद्धकरलेताहै ६६ वैसेही हम उस पापकर्त्ता को शुद्धकरते हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है ओषधियों के सुयोगों से व कडुये क्वाथोंसे ६७ उष्णजलोंके सन्तापोंसे वैद्यरूप धारणकर उसे हम शोधते हैं इसमें अन्तर नहीं पड़ने पाता और लोग उसीके आगे नानाप्रकार के उत्तम मनोवाञ्छित भोगोंको भोगतेहैं व वह बैठादेखताहै ६८ क्या करे दानदेने

में समर्त्थथा पर उत्तम दान तो दियानहीं फिर भोग कैसे भोगनेपावे बस हम उसे किसी बड़े पापरूपसे तापयुक्त करदेते हैं ६९ हे राज-राजेन्द्र ! ये सब नित्यकालके दान हैं जिनने श्रद्धासे पवित्र चित्तकरके अपने लिये दान न किया ७० उनको हम वैसेही दारुण उपायों से जलाते हैं श्रीभगवान्‌जीने कहा कि अब नैमित्तिक पुण्यकाल तुम्हारे आगे कहते हैं ७१ हे नरश्रेष्ठ ! अच्छी बुद्धिसे तत्परहोकर सुनो हे महाराज ! हे नरेश्वर ! जब अमावास्या पूर्णमासी संक्रान्ति व व्यतीपातयोग होताहै व वैधृतियोग तथा एकादशीहो ७२।७३ व माघकी पूर्णमासी व आषाढ़की पूर्णमासी वैशाखी पूर्णिमा तथा कार्त्तिकी व सोमवती अमावास्या मन्वादिक व युगादिक सब तिथियां ७४ गजच्छाया मघानक्षत्र ये सब नैमित्तिक पुण्यकालहैं जो तुम्हारे आगे कहेगये हैं ७५ इनमें जो दान कियाजाताहै उसका जो फलहोताहै वह फल कहते हैं हे नृपसत्तम ! सुनो ७६ हमारे उद्देशसे जो पुरुष भक्तिसे ब्राह्मण को देताहै उसको हम निश्चय करके देते हैं इसमें संशयनहीं है ७७ गृह सौख्य स्वर्गवास मोक्षादिक सब कुछ देते हैं अब दान का फलदायक काम्यकाल तुमसे कहेंगे ७८ सब व्रतों के व सब देवताओं के दानका पुण्यकाल जो २ द्विजोत्तमों ने कहे हैं ७९ व आभ्युदयिक का काल उन सब यज्ञोंमें विवाह यज्ञ सब में उत्तम है ८० फिर पुत्रके जन्मका काल तथा चूड़ाकर्म्म का व व्रतबन्ध का समय देवताओं के मन्दिरादि बनवाने व ध्वजादि चढ़ाने का समय व इन मन्दिरोंकी प्रतिष्ठा का काल ८१ वापी कूप तड़ागादिकों के उत्सर्ग्ग का काल व नवीन गृह बनवाकर वास्तुवर्द्धन विधान का काल व आभ्युदयिक श्राद्धका काल जहां माताओं का पूजन होताहै ८२ उस कालमें सब सिद्धिका देनेवाला दान देवे हे नृपोत्तम ! यह आभ्युदयिक काल कहाता है ८३ हे नरोत्तम ! और पाप पीड़ा निवारण काल कहते हैं मृत्युकाल प्राप्त होनेमें नाश जानकर ८४ यममार्ग के सुख देनेवाले दानदेने योग्यहैं हे महाराज ! नित्य नैमित्तिक काम्य आभ्युदयिक ८५ और अन्त्यकाल तुम्हारे आगे कहा ये कहेहुये काल अपने कर्म के फल देनेवाले हैं ८६ हे

राजन्! अब तीर्थके लक्षण तुम्हारे आगे कहते हैं अच्छे तीर्थों में ये गंगा शोभित हैं और पुण्यकारिणी सरस्वती ८७ नर्मदा यमुना तापती चर्मण्वती सरयू घाघरा सब पाप नाश करनेवाली वेणा ८८ कावेरी कपिला विश्वतारणी विशाला और हे नरोत्तम! गोदावरी तुंगभद्रा नदी हैं ८९ अब पापपीड़ा निवारण करने के लिये अन्य काल कहते हैं सब पापों को नित्यही भय देनेवाली भीमरथी नाम नदी है व देविका कृष्णगंगा आदि सब महानदियां उत्तम कालोंमें हैं ९० इन सबोंके पुण्यकालों में अनेक तीर्थ रहते हैं चाहे ग्राममें हों चाहे वनमें हों नदियां सर्व्वत्र पावन होती हैं ९१ इससे जहां कहीं नदियांहों वहां स्नान दानादिक क्रियायें करने के योग्यहैं जब उन नदियों के तीर्थोंका नाम न जानाहो तो हे राजसत्तम! ९२ हे राजन्! उस तीर्थ को हमारा तीर्थ अर्थात् विष्णुतीर्थ कहनाचाहिये व उस तीर्थ के देव भी हमीं हैं इसमें कुछ संशय नहींहै ९३ जो साधकलोग सब तीर्थोंमें व सब देवोंमें हमाराही उच्चारण करते हैं हे नृपनन्दन! उनके पुण्यका फल हमारे नामसे होजाता है ९४ हे नृपश्रेष्ठ! जितने अज्ञात तीर्थोंके व देवताओं के नामहैं वे सब हमारे नाम से स्नान दानमें पुकारने चाहियें ९५ हे राजेन्द्र! यह ब्रह्माजीने तीर्थों की माला करीहै पृथ्वी में सब ओर स्थित समुद्र सब महापुण्यकारी हैं ९६ हे नृप! इनमें जहां कहीं स्नान दानादिक कियाजाताहै वह सुन्दर तीर्थों केप्रसादसे अक्षय होजाताहै ९७ व सातोसागर भी महातीर्थरूपहैं व हे राजन्! ऐसेही मानसादि सब सर भी तीर्थरूपहैं ९८ झरने पल्वल कहातेहैं ये भी निस्संदेह तीर्थ रूपहैं हे महाराज! छोटी नदियोंमें भी तीर्थ स्थितहैं ९९ सब खातों में कुयेंको छोड़कर ऐसेही सुमेरु आदि सब पर्व्वत भी तीर्थरूपही पृथ्वीतल परहैं १०० यज्ञभूमि व अग्निहोत्र यज्ञभूमि श्राद्ध करनेकी भूमि ये भी सब तीर्थरूप हैं व जितने देवमन्दिर हैं सब तीर्थरूपहैं १०१ ऐसेही होम करनेकी शाला व वेदाध्ययनकी शाला येभी सब तीर्थरूपही हैं व अपने गृहके भीतर गोशाला उत्तम तीर्थ होता है १०२ व जहां सोमयज्ञ करनेवाला यजमान बसताहो वहां भी तीर्थ

सदा प्रतिष्ठित रहताहै व जहां पुण्यरूप पुष्पवाटिका वा साधारण वाटिकाहोतीहै वहां भी तीर्थवासकरताहै ऐसे खालीभूमिकी अपेक्षा जहां कोईभी वृक्षलगाहो सुखकर पिप्पल वट व आम्रका वृक्ष जहां हो वह भी तीर्थही है १०३। १०४ ये सब स्थावरतीर्थ तुम से कहे व पिता माता जंगमतीर्थ महापवित्र हैं व जहां कोई पुराण एकबार भी पढ़ागया हो वा पढ़ाजाता हो व जहां अपना गुरु रहता हो १०५ व जहां पतिव्रता स्त्री रहती हो वह स्थान व अच्छा पुत्र जहां रहताहो १०६ ये भी सब उत्तमतीर्थ गिनेजाते हैं व राजाका गृह भी तीर्थही गिनाजाता है ये सब तीर्थ हमने तुम से कहे यह सुन राजावेन बोले कि हे देवोत्तम! अब हमसे पात्रका लक्षण बताइये जिसे दान देना चाहिये १०७ हे माधव ! प्रसन्नतापूर्वक कृपा करके हम से निरूपण करो श्रीभगवान्‌जी बोले कि हे महाप्राज्ञ राजन्! पात्रका भी लक्षण सुनो १०८ जिसको पवित्र होकर श्रद्धासे महात्माओं को दानदेना चाहिये ब्राह्मण उसमें भी कुलीन फिर वेद शास्त्र पढ़ने में तत्पर १०९ शान्तचित्त इन्द्रियों को दमन कियेहुये तपस्यासे युक्त उसमें भी उज्ज्वल फिर बुद्धिमान् ज्ञानवान् देवताओं के पूजनमें तत्पर ११० सत्यवान् महापुण्य उसमें भी वैष्णव व ज्ञान से भी पण्डित व धर्म्मज्ञ चञ्चलतारहित पाखण्डोंसे विवर्जित १११ बस दान देनेके योग्य ऐसाही ब्राह्मण सत्पात्र समझा जाता है अब और भी सत्पात्र बतातेहैं ऐसेही इन्हीं गुणोंसेयुक्त जो कहीं भगिनी का पुत्रहो तो मनुष्योंमें उत्तमहै ११२ इसको भी सुपात्र जानिये ऐसे ही कन्याका पुत्र सत्पात्र होताहै व हे महाराज! इन्हीं भावोंसे संयुक्त जामाता सत्पात्र होताहै ११३ व जिससे मन्त्रसुने वह गुरु व यज्ञकरानेवाला गुरु महासत्पात्र होताहै हे सत्तम ! दानके योग्य इतने सुपात्र हमने बताये ११४ वेदाचारसे युक्तहों सब सत्पात्रही हैं अब दान देनेके व यज्ञ कराने के अयोग्य विप्र बतातेहैं काने व धूर्त्तको त्यागना चाहिये ११५ अतिकाले ब्राह्मण को दान न देना चाहिये व कपिल रंगवालेको भी न देना चाहिये ब्राह्मणों में एककटारे नेत्रोंके होतेहैं उन्हें भी न देना चाहिये अत्यन्त नीलवर्णवाला भी

वर्जित है जिसके कालेदन्तहों वह भी त्याज्य है ११६ व जिसके नील वा पीलेदन्त हों वह भी वर्जित है गोवध करनेवाला व अत्यन्त कालेदन्तवाला व दाढ़ी रखानेवाला भी वर्जित है ११७ जो किसी अंगसे हीनहो वा किसी अंगसे अधिकहो वा कुष्ठीहो वा जिसके नखों में अपरसआदि कोई रोगहो व जिसके मुख से बहुत लार बहा करतीहो व जिसके शिरकेबाल खौड़ाहोनेसे बिलकुल गिरगयेहों ११८ व जिस किसी विप्रकी स्त्री अन्यके संग भोग करवाती हो तिसको जो ब्रह्माके समान भीहो तोभी दान देना अनुचितहै ११९ हे महाबुद्धियुक्त राजन्! स्त्रीजित अपनी शाखाको छोड़कर और की शाखा के कर्मकर्त्ता रोगी और मृतक के यहां भोजन करनेवाले को भी न देना चाहिये १२० व चोर ब्राह्मण को दान कभी न देना चाहिये चाहे वह अत्रिमुनि के समान भी तेजस्वीहो जो कभी वस्तु पाकर तृप्तही न होताहो उसे भी न देना चाहिये व जो शूद्रादिकों के मुर्दे वा उनकेहाड़ ढोताहो उसे भी न देना चाहिये १२१ अत्यन्त स्तब्ध और विशेषकर मूर्खको भी दान देना योग्य नहींहै व जो वेद शास्त्रसे तो युक्तहो पर सदाचारसे हीनहो वह भी ब्राह्मण दानदेने के योग्य नहीं होता १२२ हे राजेन्द्र! ऐसेको श्राद्धके निकट आने में व दान देनेमें सदा त्यागना चाहिये ॥

चौ० पुण्यदायिफलयुक्तमहाना । दानकहततुमसनश्रुतिमाना ॥
कालतीर्थमहँ पायसुपात्रा । श्रद्धायुत देइय करियात्रा ॥
श्रद्धासम नहिं पुण्य अपारा । नहिं श्रद्धासम सुखसंसारा ॥
श्रद्धासम तीरथ जगनाहीं । संसारिनकहँकतहुँ लखाहीं ॥
यासों श्रद्धा भाव समेता । सुमिरत हमें दान जो देता ॥
पात्र हाथ महँ थोड़उ कोई । होतअनन्ततनिकनहिंगोई ॥
यहिविधिदानकेरफलभूपा । होत अनन्त सुवेद निरूपा ॥
ममप्रसादपावतसुखदानी ॥ बसतस्वर्गनहिंलहतगलानी १२३ । १२७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

दो० चालिसयें के महँकहे नैमित्तिक अरु नित्य ॥
सकलदानभूपालसों श्रीहरिबहुत विचिन्त्य १

इसप्रकार दानपात्रोंका विवेक सुन राजा वेनने पूँछा कि हे भगवन्! हमने पहिले नित्यदानका फल तो आप से सुनाथा अब नैमित्तिकदान देनेका भी फल जो होताहै १ वहभी प्रसन्न होकर यत्न पूर्व्वक हमसे कहिये हमको अभी तृप्तिनहींहुई बरन अभी सुननेकी श्रद्धा बढ़ती जातीहै २ यह सुन श्रीविष्णु भगवान् बोले कि हे नृपोत्तम! अब नैमित्तिकदान तुमसे कहते हैं महापर्व्व पड़नेपर जिसने श्रद्धा से दान ३ सुपात्रों को दिये तिसके पुण्यफल को सुनिये हाथी रथ और घोड़ेका देनेवाला ४ नौकरों समेत पुण्य देशमें हमारेप्रसाद से निस्सन्देह उत्तम राजा होता है ५ जोकि धर्मात्मा ज्ञानवान् बलवान् बुद्धिमान् सब प्राणियों के नहीं जीतने योग्य और महातेजस्वी होताहै ६ महापर्वही के प्राप्त होने में जो कोई भूमिदान देताहै अथवा हे महाराज! गोदान देताहै वह सर्व्व भोगोंका पति होताहै ७ दान पुण्यात्मा ब्राह्मणको बड़े यत्नसे देनाचाहिये जोकोई पात्रका जाननेवाला तीर्थमें पर्व्व में जाकर महादान देताहै ८ तिनके चिह्न कहतेहैं वह भूमिका पति होताहै पर्व्व प्राप्त होनेमें तीर्थ में जो गुप्त दान देताहै ९ उसको शीघ्र निधियों की नाशरहित प्राप्ति होती है और महापर्व प्राप्त होने में तीर्थों में ब्राह्मण को १० सुन्दर वस्त्र सोनायुक्त महादान देता है हे राजन्! तिस दान का पुण्यफल कहते हैं सुगुणवान् वेदपारगामी आयुष्मान् प्रजावान् यश व पुण्यसमन्वित बहुत पुत्रहोते हैं ११।१२ व विपुल धनधान्य समन्वित लक्ष्मी उसके होती है सौख्य पुण्यपाता है व धर्म्मवान्भी होता है १३ महापर्व्व में जो कोई तीर्थ में जाकर यत्न से सुवर्ण की धेनुबनवाकर महात्मा ब्राह्मणको देताहै १४ हे महामते! उसके दानके पुण्यकाफलकहतेहैं हे महाराज! गोदान करनेसे वह प्राणी प्रथम तो यावज्जीव सब सुख भोगताहै १५ व अन्तावस्था में मरकर ब्रह्माकी आयुर्दाय के समान

ब्रह्मलोक में निवास करताहै व जो किसी महापर्व्वमें धेनुको वस्त्र भूषणादिकोंसे भूषितकरके व कुछ सुवर्णसहित किसी सत्पात्रको देता है हे राजेन्द्र ! उसके दानका फल व भोगकाफल कहते हैं १६।१७ उसकेगृहमें दान व भोगयुक्त विपुल लक्ष्मी होती है व वह सब विद्याओं का पतिहोकर विष्णुकी भक्तिसेयुक्तहोताहै १८ व अन्तमें वह मनुष्य तबतक जाकर विष्णुलोकमें निवासकरताहै कि जबतक यह पृथ्वी रहेगी व तीर्थमें जाकर जो कोई ब्राह्मणको भूषण देताहै १९ वह इन्द्रलोकमें जाकर उनके संग विपुलभोग भोगताहै व जो कोई श्रद्धायुक्त किसी महापर्व्व में सुपात्र ब्राह्मणको वस्त्रदेताहै व अन्नसहित भूमिदेताहै वह विष्णुके तुल्य पराक्रमपाकर वैकुण्ठमें जाकर प्रमोदकरताहै २०।२१ व वस्त्रसहित सुवर्ण ब्राह्मणकोदेकर सुखीहो अपनी इच्छा से अग्नि के समान वैकुण्ठमें निवासकरताहै २२ व जो कोई सुवर्ण के कुम्भमें घीभरकर व ऊपरसे चांदीके ढकनेसे बन्द कर ऊपरसे वस्त्र व हारसे अलंकृतकरके २३ पुष्पोंकी मालापहिनाय व यज्ञोपवीतभी कुम्भकेगलेमें डाल वेदमंत्रों से उसकी प्रतिष्ठा कर व पञ्चोपचारसे पूजनकर २४ अथवा पवित्र षोडशोपचारोंसे पूजन करके वस्त्र आभूषणादिसे भूषित कर महात्मा ब्राह्मण को देता है २५ व फिर उसीके सङ्गही कांस्यपात्रके दोहनपात्र और वस्त्रसमेत सोलहधेनु वा कांस्यके दोहनपात्र समेत चारधेनु सोनेकी दक्षिणा समेत २६ वा वस्त्रालंकार से भूषित उसीप्रकारकेदोहनपात्रोंसे युक्त करके द्वादशधेनु किसी सत्पात्र ब्राह्मणको निस्सन्देह देनी चाहिये २७ हे नृपनन्दन ! इसीप्रकारके और भी बहुतसे दानहैं वे तीर्थ व कालको पाकर देने चाहियें परन्तु जो दियाजाय श्रद्धा व भावसे युक्त ही होकर दियाजाय क्योंकि श्रद्धापूर्व्वक देनेसे बहुत पुण्य होताहै श्रीभगवान्जी बोले कि जो दान व्रतके उद्देशसे किसीकामनाके लिये कियाजाता है उसे काम्यदान कहते हैं २८।२९ उस दानके भावसे भावनासे परिभावित होकर तैसेही फल को मनुष्य पाता है इसमें संशय नहीं है ३० आभ्युदयिक दान कहतेहैं जो यज्ञोंमें कियाजाता है हे द्विजोत्तम ! वह दान आभ्युदयिक श्रद्धाद्वारा होताहै ३१ इस

दानके करनेसे बुद्धिकी वृद्धि होतीहै व करनेवालेको दुःख नहीं होता व करनेवाला धर्मात्मा जबतक जीतारहताहै नानाप्रकारके भोग भोगताहै ३२ और इन्द्र के भोग भोगताहै व दाता मरनेपर दिव्यगति भी पाताहै और अपने कुलको हजार कल्पतक स्वर्ग लेजाताहै ३३ इस प्रकार आभ्युदयिकदान तुमसे कहा अब प्राप्तदान कहतेहैं जब प्राणी जाने कि वृद्धता से युक्त हुयेहैं अब शरीर का नाशहोगा ३४ उसको तब दान अपने लिये करने चाहियें इसमें पुत्र पौत्रादिकों की आशा न करनी चाहिये कि हमारे मरजाने पर हमारे पुत्र व और स्वजन बान्धव ३५ बिना धनके कैसे जीवेंगे व बिना हमारे ये सब सुहृद् कैसे निर्वाह करेंगे इस मोह से मूढ़होकर ऐसा न हो कि कुछ भी न दानकरे ३६ व मृतक होजाय तो दुःखसे पीड़ित सब मायामोह से पीड़ायुक्त बन्धुवर्ग बैठकर रोदन करनेलगें ३७ दानों को कोई संकल्प और मोक्षकी चिन्तना करतेहैं परन्तु तिसके मरने में माया मोहमें प्राप्त होकर ३८ लोभी मनुष्य दानोंको बिसरा डालतेहैं नहीं देतेहैं और जो मरताहै वह हे महाराज ! यमराज के मार्गमें अत्यन्त दुःखित होता है ३९ प्यास और भूख से व्याकुल बहुत दुःखों से पीडित होताहै तिससे निस्संदेह सब दान अपनेही हाथों से करडाले ४० हे नृपोत्तम ! किसके पुत्र किसके पौत्र किसकी भार्या संसार में कोई किसी का नहीं है इससे दान देना चाहिये ४१ जब तक अपना ज्ञान अच्छा ठीक बनारहे तभीतक अपनेही हाथों से निस्संदेह दान देना चाहिये उसमें अन्न नानाप्रकारके पान करनेके शर्बतादि पदार्थ ताम्बूल जल सुवर्ण ४२ दोवस्त्र छत्र भूमिकेफल अनेक जलपात्र जलसमेत ४३ विचित्र घोड़े गजआदि वाहन व पालकी नालकीआदि यान नानाप्रकारके चन्दन कर्पूरादि सुगन्धित पदार्थ व यममार्गके सुखदायक पदार्थ ४४ व जो बहुत सुखचाहे तो उपानत् अर्थात् जूता खराऊँ उस समय में दानकरे ॥

चौ० इतने दान सुनहु महिपाला । सत्पात्रनको देय विशाला ॥
सुखसों जाय धर्म्मपुरप्रानी । मारगमहँनाहिंहोयगलानी ॥
यमदूतन सों भूषित सोई । सकलपापयकच्छणमहँखोई ॥

सुखितलहैस्वर्ग्गादि अनूपा। जबविचलैतबहोयसुभूपा४५।४६
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
चत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

दो० इकतालिसे महँ कह कृकलु सुकलादम्पति गाथ ॥
जहां पतिव्रतधर्म्म सब सुकला वर्णि सनाथ १

इतनीबातेंसुन राजावेन फिर बोले कि पुत्र व भार्य्या कैसे तीर्थ होते हैं व माता पिता और गुरु कैसे तीर्थ होते हैं यह हमसे विस्तारसे कहिये १ श्रीभगवान् बोले कि गङ्गाके तीरपर सुन्दर गङ्गा युक्त वाराणसी महापुरीहै उसमें एक कृकलनाम वैश्य बसताथा २ उसकी भार्य्या महासाध्वी वपतिव्रत में परायणथी धर्म्माचारमें नित्य पर रहती व पतिकी सेवामें परायणरहती ३ उसका सुकलानाम था सुरूप युक्त सब उसके अङ्गथे सुन्दरपुत्रभी उसकेथे व चारु मङ्गल युक्तरहती सत्यवचन सदाबोलती शुद्धचित्त रहती उसकासब आकार प्रियथा व अपने पतिको परमप्रियथी ४ ऐसे शुभगुणोंसे युक्तथी व ऐश्वर्य्यवतीथी सबकार्य्य सुन्दरही करती व वह कृकलभी सब वैश्यों में उत्तम अनेक प्रकारके धर्म्म जाननेवाला ज्ञानवान् व गुणीथा ५ पुराणोंके सुनने में सदैव तत्पर श्रोताथा व तीर्थयात्राके प्रसंगसे बहुतसे पुण्य कियेथे ६ व फिर भी एक समय पुण्यमङ्गलकारी तीर्थ यात्रा करनेके लिये श्रद्धासे निकला व वहां ब्राह्मणोंका संगहुआ इससे उनके साथ कुछ वार्त्तालापहुआ ७ फिर धर्म्ममार्गपर वह वैश्य चलनेपर हुआ उसकी पतिव्रता स्त्री उससे बोली सो पतिके स्नेहसेयुक्त उसने कहा कि ८ हे प्रिय! मैं तुम्हारी पुण्य करनेवाली धर्म्मपत्नीहूँ व पतिके मार्गको देखतीहूँ व पतिही की पूजा करतीहूँ ९ व कभी आपको संग नहीं छोड़ केवल तुम्हारी छाया का आश्रयण करके उत्तम धर्म करतीहूँ १० जोकि पातिव्रत धर्म्म नारियोंके लिये पापनाशनेवाला व गतिदायक है व लोक में वह पुण्य स्त्री कहाती है जो पतिकी सेवा में परायण रहती है ११ पतिको छोड़

सुव्रतियों को अलग और कोई तीर्थ नहीं शोभित होता है बस स्त्रीके लिये पतिही स्वर्ग मोक्ष देनेवाला तीर्थ है १२ पतिका वामपाद स्त्री के लिये प्रयाग तीर्थ है व दक्षिणचरण उसके लिये पुष्कर है १३ सो स्त्री अपने पतिके चरणधोकर उसी से स्नान करे क्योंकि स्त्रियोंके लिये पतिके चरणोंका जल प्रयाग व पुष्कर इन दोनों तीर्थों के समान है इस में कुछ भी संशय नहीं है १४ सर्व्व तीर्थमय भर्त्ता होताहै व सर्व्वपुण्यमय पतिहोता है बहुत से यज्ञोंके करनेवाले यजमानको जो पुण्य होताहै १५ वह पुण्य पतिकी सेवा से स्त्री पाती है गयादिक तीर्थोंकी यात्रा करने से जो फल होताहै १६ वह फल पतिकी शुश्रूषा करने से स्त्री को मिलता है अब संक्षेपरीति से कहती हैं सुनो १७ इन स्त्रियों को पतिसेवा को छोड़ और कोई धर्म्मही नहीं है इससे हे कान्त! तुम्हारे सङ्गही सङ्ग सहाय करने में मैं सुखभागिनीहूं १८ अब जहां जहां तुम तीर्थ करने जाओगे संग संग मैं भी चलूँगी इस में अन्तर न पड़ेगा विष्णुजी बोले कि यह सुनकर कृकल वैश्यने सुकुमारता विचारा कि इसका रूप शील गुण भक्ति व नवीन अवस्था से गृहसे बाहर जाने के योग्यहै नहीं क्योंकि जो इसे हम बड़े दुर्गम पर्व्वतोंपर व वनों में तीर्थयात्रा के लिये संग लेजायँगे तो शीत व घाम आदिक के लगने से व मार्ग्ग के श्रम से इसके रूपका नाशहोजायगा क्योंकि इसके सब अंग कमलके गर्भ के समान चमकते हैं १९। २१ वे शीत झञ्झा पवन से काले होजायँगे मार्ग्ग अतिकर्क्कश व चरण इसके अतिकोमल २२ इससे इसको बड़ी पीड़ा होगी व मार्ग्गपर चलने न पावेगी फिर भूख व प्यास से पीड़ित हो नहीं जानते यह कैसी होजायगी २३ यह हमारे सुखका स्थानहै व नित्य हमारे प्राणके समान प्यारी व धर्म्मका आश्रमहै २४ कदाचित् यह हमारी स्त्री नष्ट होगई तो हमारा भी नाशही होजायगा यही हमारी नित्य जीविका है व यही नित्य हमारे प्राणोंकी ईश्वरी है २५ इससे इसको तीर्थ कराने के लिये वनको न लेजायँ केवल हम अकेलेही चलेजायँ एक क्षणमात्रतक वह महात्मा इसीप्रकार चिन्ता करता

रहा २६ उसको चिन्ता करते देख उसने समझलिया कि ये हमको संग नहीं लेजाया चाहते हैं इससे चलनेपर उद्यत अपने स्वामी से वह महाभाग्यवती फिर बोली २७ कि हे महानुभाव ! पुरुषों को पापहीन स्त्री स्वतन्त्र न छोड़नी चाहिये यह पुरुष के धर्म्मका ऐसा मूलहै २८ यह जानकर हे महाभाग ! हमको इससमय अपने संग लेतेचलो श्रीविष्णु भगवान् राजावेनसे बोले कि अपनी प्राणप्रिया के युक्तिपूर्व्वक सब वचन सुन २९ हँसकर कृकलवैश्य फिर उससे बोला कि हे प्रिये ! हम तुमको कभी नहीं त्यागसक्के क्योंकि बड़े धर्म्म से हमने तुम ऐसी प्राणप्रिया भार्य्याको पाया है ३० जिसने धर्मचारिणी पतिव्रता स्त्रीको छोड़दिया हे श्रेष्ठमुखवाली ! उसने दशाङ्ग धर्म्म भी छोड़दिया ३१ हे प्रिये ! तुम्हारा कल्याण हो तिसी से हम तुमको कभी नहीं त्याग करेंगे विष्णुजी बोले कि इसप्रकार बारबार अपनी भार्य्या सुकला से कहकर व समझाकर ३२ उससे विनाबताये रात्रिही में उठकर अकेला चलागया जब पुण्यकारी महाभाग कृकल चलागया तो ३३ प्रातःकाल देवकर्मके समय जब वह शुभ मुखवाली उठी तो अपने पतिको अपने मन्दिरभरमें कहीं न देखकर व्याकुल हुई ३४ व इधर उधर देख रुदन करती हुई अतिदुःखित हुई व दुःख शोकसे पीड़ितहो पति के संगियोंसे पूँछनेलगी ३५ कि आपलोग हमारे भाई बान्धवहैं जो हमारे प्राणनाथ कृकलजी को कहीं आपलोगोंने देखाहो तो हमसे कहो क्योंकि हमारे भर्त्ता पुण्यकर्त्ता व सत्य पण्डित व सब जाननेवाले हैं ३६ । ३७ उन महामति को जो कहीं देखाहो तो बताओ उसका ऐसा भाषित सुन वे महात्मा लोग उस महामतिवाली सुकलासे बोले ३८ कि हे शुभे ! हे सुव्रते ! धर्म्मयात्रा के प्रसङ्गमें तुम्हारे कृकल स्वामी तीर्त्थयात्रा करनेगये हैं तुम क्यों शोच करतीहो ३९ महातीर्थको करके फिर लौट आवेंगे इस प्रकार उन हितकारी पुरुषोंने जब बहुत समझाया ४० तो मनोहर बोलनेवाली सुकला फिर अपने घरको चलीगई व घरमें जाकर करुणा पूर्व्वक बड़े दुःखसे रोदन करनेलगी क्योंकि वह नित्य पतिकी पूजामें परायणथी इससे उसने यह विचारांशकिया कि जबतक हमारे स्वामी न

आवेंगे तबतक हम भूमिपर ऐसेही कुछ विना बिछायेहुये सोवेंगी घृत व तैल कुछ न भोजन करेंगी व न दही दूध खायँगी ४१।४२ व लवण ताम्बूल भी उसने छोड़दिया व हे राजन् ! गुड़ शर्करादि मीठे पदार्थ उसने छोड़दिये ४३ व एकबार खाकर व विना खायेही रह जायाकरे बस उसने कहा कि जबतक हमारा स्वामी आवेगा तबतक निस्सं-देह ऐसेही रहूँगी ४४ भोग विलासोंकी आवश्यकता नहीं इसप्र-कारके दुःखसे युक्तहो शिरके केशोंमें तैल न लगानेसे एक वेणी बँ-धगई वही चोली जो उस दिन धारण किये थी बराबर पहिनेरही इससे अतिमैली होगई ४५ व एकही मलिनवस्त्रभी तबतक पहिने रही व दिनरात्रि मारेदुःखसे हाहाकार मचाती रही ४६ वियोग कें अग्नि से जलकर काली होगई ऐसे दुःख समाचारों से युक्त होकर अतिदुर्ब्बल व विह्वल होगई ४७ व रात्रि दिन रोतीही रहै इससे निद्रा कभी उसे आईही नहीं व हे राजन् ! क्षुधाभी उसे न लगे व दुःखसे बनाय मलिन होगई ४८ तब उसकी सखियों ने आकर सु-कलासे पूँछा कि हे सुकले ! सुन्दर सर्व्वाङ्गवाली ! तू आजकल रोती क्यों है ४९ इससे हे वरानने ! इस दुःखका कारण हमलोगों से कह सुकला बोली कि धर्म्ममें तत्पर हमारे भर्त्ता धर्म्म के अर्त्थ तीर्थयात्रा के प्रसङ्ग से कहीं घूमते हैं व हमको यहीं छोड़गये यद्यपि हम नि-र्दोष पापवर्जित हैं तथापि हमारे स्वामी हमको छोड़गये ५०।५१ हम साध्वी हैं व सदाचारयुक्त पुण्य पतिव्रताहैं परन्तु हमको त्याग हमारे भर्त्ता तीर्त्थ सेवन में तत्पर होकर चलेगये ५२ हे सखियो ! इसी से हम दुःखित हैं व पति के वियोग से पीड़ित रहती हैं जीव का नाश श्रेष्ठ है व विष खाना श्रेष्ठहै ५३ अग्नि में प्रवेश करना उत्तमहै व शरीर नाश होना भलाहै पर क्याकरें कोई भर्त्ता ऐसा निष्ठुर होताहै कि नारी को छोड़कर चलाजाताहै ५४ परन्तु पति के त्याग से प्राणोंका त्याग अच्छा होता है अब हम नित्यका दारुण वियोग नहीं सहसक्तीं ५५ हे सखियो ! इस दारुण वियोगसे नि-त्यही दुःखित रहती हैं यह सुन सखियां बोलीं कि तीर्त्थयात्रा को तुम्हारे पति गये हैं फिर आवेंगे ५६ इससे तुम वृथा शरीर सुखा-

ये आलसीहो व वृथा शोक करतीहो व हे बाले! वृथा तुम ताप करती हो व वृथा भोगों को छोड़तीहो ५७ पीनेवाली वस्तुओंको पानकरो भोजन करनेवाली भोजनकरो जो पूर्व्वजन्ममें तुमने दे रक्खेहैं वे सब पदार्थ भोग के लिये आतेहैं उनको भोगो किसका भर्त्ता किसके पुत्र व किसके स्वजन बान्धव ५८ कोई किसी का संसार में नहीं है न किसी का किसी के साथ कोई सम्बन्ध है पूर्व्वजन्मका फल संसार में सब भोगताहै ५९ जब प्राणी मृतक होजाताहै तो कौन भोजन करताहै व कौन फल देखताहै बस जबतक जीता है प्राणी तभी तक सब संसारी पदार्थोंको खातापीताहै ६० सुकला बोली कि जो आपलोगों ने कहा वह वेदका सम्मत नहीं है क्योंकि जो स्त्री अपने पति से अलग सदा रहती है ६१ वह नारी पापरूप होजातीहै व सज्जनलोग उसको नहीं मानते हैं सखियो! वेदों में यही लिखा देखाहै कि स्त्री सदा अपने पति के संगरहै ६२ पर ऐसा सम्बन्ध पुण्यके संसर्ग से होताहै इसमें सन्देह नहीं है शास्त्रों में स्त्रियों का तीर्थ पतिही पढ़ाहै ६३ इससे स्त्रीको चाहिये कि कर्म मन व वचन से उसी अपने पतिकी सेवाकरे व सत्य भावयुक्त मनसे नित्य उसकी पूजा करे ६४ पतिका दहिना अंग सदैव महातीर्थ है जो गृह की स्त्री तिसी का आश्रय करके रहती है ६५ दान पुण्यों से पूजन करती है तिस दानका जो फल होताहै कि काशी गङ्गाजी पुष्कर ६६ द्वारका अवन्ती केदार और शशिभषण तीर्थ में उतना फल स्त्री सदैव नहीं पाती है ६७ हे सखि! कभी तैसे फल को नहीं पाती अच्छे मुखवाले पुत्र सौभाग्य स्नान दान गहना ६८ वस्त्र अलंकार सौभाग्य रूप तेज यश कीर्त्ति और गुणको पाती है ६९ स्वामी के प्रसाद से सब पाती है इसमें कुछ संशय नहीं है व पतिकी विद्यमानतामें जो स्त्री अन्य तीर्थ व्रतादि करती है ७० उसका सब निष्फल होताहै व पुँश्चली कहाती है स्त्रियोंका रूप यौवनहै ७१ व उस यौवनके लिये स्त्री को पृथ्वीमण्डलमें अकेला अपना पतिहै जो नारी पतिकी सेवा करती है वह सुपुत्रवती होती है उसीका यश सदैव संसारमें होताहै ७२ व जिस स्त्री के ऊपर उसका पति सदा सन्तुष्ट रहताहै वह संसारमें दर्शन करने

के योग्यहै इसमें कुछ भी संशय नहीं है व जो स्त्री अपने पतिसे विरुद्ध रहती है पृथ्वी पर ७३ उसको सुख, रूप व यश कहां मिलसक्के हैं व पुत्र कीर्त्ति कहां मिलसक्के हैं क्योंकि वह सदैव दुःखही भोगती है संसारमें कुछभी सुख उसे नहीं मिलसक्का व सब पापोंकी भागिनी होती है व सब दुःखही दुःख भोगती है ७४ ॥

दो० जा नारीसों तासु पति तुष्ट रहत दिन रैन ।
सब सुर तापर तुष्टहीं रहत लहत सुखचैन ॥
ऋषि मानव सब तुष्टही पतिहि देखि सन्तुष्ट ।
होत नारिसों त्यहि बिना ऋष्यादिक सबरुष्ट ॥
भर्त्ता गुरुपति नाथअरु हैं सब देव महान ।
पति तीरथ युवतीन कहँ और नहीं है आन ॥
रूपवर्ण शृङ्गार अरु भूषण लेप सुगन्ध ।
पर्व छोड़िपतिहित सदा करें युवति शुभबन्ध ॥
भूषण अरुशृङ्गार बिन कबहुँ न पतिहिदिखाहिं ।
जो नारी सुखधर्म्म नित चाहें निज मनमाहिं ॥
स्वामि प्रीति सुखदायिनी पापकरी अप्रीति ।
यासों शाश्वत धर्म्म यह करहिं नारिपति प्रीति ॥
इमिजानत हो धर्म्म सब किमित्यागहु निजस्वामि ।
सुनहु सखिहु इतिहास यहि विषय रहत सबकामि ॥
वसुदेवाकर चरित जहँ पुण्यरु पापाहारि ।
कहत विचारिप्रचारिबहु करिताकर निरधारि ७५ । ८४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुकलाचरितेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

दो० बयालीसयें महँ कह्यो शूकर दम्पति गाथ ॥
नृपइक्ष्वाकुशिकारयुत सुकलासखियनसाथ १

यह सुन सुकलाकी सखियां उससे बोलीं कि हे महाभाग्यवाली! तुमने जिसके वसुदेवा व सुदेवा दो नामहैं उसमें कौनसे आचारदेखे

थे हमसे सत्य कहो १ सुकला बोली कि अयोध्यापुरी में धर्म्म करने में बड़े पण्डित महाभाग सब धर्म्म अर्थ में तत्पर महाराज वैवस्वत मनु के पुत्र २ सर्व्वज्ञ देव ब्राह्मणों के पूजक इक्ष्वाकु नाम महाराजाधिराज हुये उनकी सदा पुण्यकर्म्म में परायण पातिव्रत धर्म्म में निरत ३ सुदेवा नाम भार्य्याथी उसके सङ्ग महाराज ने यज्ञ और विविध प्रकार के तीर्थ किये वह काशी के राजा महात्मा वेदराज वीरकी कन्याथी ४ सत्य आचार में परायण थी उसके संग महाराज का विवाह हुआ ५ इसके सब अंग मनोहर थे और वह सत्यव्रत में परायणथी उस प्रियाके संग मनुष्यों के पुण्यनायक राजाओं में श्रेष्ठ महाराज नित्य विहार करते थे एक समय महाराज उसके साथ वनको गये ६ । ७ व गङ्गाजी के निकट वनमें पहुँचकर सदा मृगया खेलने लगे सिंहों वराहों महिषों व गजों को मार ८ क्रीड़ा करते थे तो उनके सम्मुख अपने पुत्र पौत्रादिकों के साथ एक शूकर आया ९ व उसके पास एक उसकी प्राणप्रिया शूकरीभी थी व वह वाराह बहुतसे शूकरों से घिरा हुआ था १० व स्त्री समेत पुत्र पौत्र गुरु बालकों संयुक्त पर्वत के नीचे अपने पराक्रमसे एकही स्थितथा उस ने दुःखसे जीतनेवाले शिकार में रत राजराजेन्द्र को देखकर और तिन मृगों का नाश जानकर ११ । १२ पुत्र पुत्र और स्त्री से कहा अयोध्या के महाराज महाबली वीर मनुजी के पुत्र इक्ष्वाकुजी इस वनमें १३ शिकार खेलते हैं व देखो बहुत से मृगोंको मारचुके हैं जैसेही हमको देखेंगे महाराज अवश्य आवेंगे इसमें संयश नहीं है १४ अन्य व्याधाओं का तो हमको रंचकभी भय नहीं है परन्तु हमारारूप देखकर महाराज क्षमा न करेंगे १५ बड़े हर्ष से युक्तहो धन्वा बाण लिये हुये हैं उन के संग बहुतसे कुत्ते हैं व अन्य बहुत मृगों के मारने वाले लुब्धकहैं १६ इस से हे प्रिये ! हमारा नाश करडालेंगे इसमें संशय नहीं है १७ यह सुन उसकी पत्नी शूकरी बोली कि जब बहुत से लुब्धक व कुत्ते वनमें दिखाई देने लगें तब हे कान्त ! हमारे इन पुत्र पौत्रादिकों समेत भागकर दूर चले चलना १८ हे स्वामिन् ! अब धैर्य्य व बल छोड़ करके यद्यपि भय

युक्तहो तथापि भागचलो क्योंकि जब बनाय समीप राजाको आये हुये देखोगे तब कौन पौरुष करसकोगे इसका कारण कहिये १६ उसका ऐसा वचन सुन वह शूकरों का राजा अपनी शूकरीसे बोला कि हां भागना तो अच्छाही है क्योंकि नहीं तो इनपापी लुब्धकों के हाथों से मरना पड़ेगा क्योंकि जो बड़े दुराचारी दुष्ट पापी होते हैं वेही मरनेपर इन पर्व्वतोंपर लुब्धकों के वंशमें उत्पन्न होते हैं २० । २१ इससे हम इन पापियों के हाथों से मरने से डरते हैं क्योंकि जब पापियों के हाथों से मरेंगे तो फिर ऐसीही किसी पापयोनि में जन्म पावेंगे इसीसे हे कान्ते ! अपमृत्युसे डरकर किसी पर्व्वत की कन्दरामें दूरजाकर लुकेंगे २२ जब पुण्यात्मा विश्वभरके स्वामी विष्णु भगवान्‌के तेजसे उत्पन्न ये महाराज उस कन्दराके समीप जायँगे तो इनके संग अपने पराक्रम व बलसे हम युद्धकरेंगे २३ यदि अपने तेज से महाराज इक्ष्वाकुजीको जीतलेंगे तो पृथ्वीपर अतुल कीर्त्तिको भोगेंगे कदाचित् हारकर संग्राम में इनपुण्यात्मा के हाथसे मारेजायँगे तो विष्णुलोक में जावेंगे २४ व हमारे अङ्गों से निकलीहुई मज्जासे व मांससे पृथ्वीनाथ महाराज तृप्तहोंगे व उनके तृप्तहोने से सबलोग व देवतालोगभी तृप्तहोंगे इससे महाराज चलेआते हैं २५ हे सुन्दरि ! जो इन्हीं के हाथों से मरणहो तो बड़ा लाभहो व कीर्त्तिभी उत्तमहो तीनोंलोकों में भी यशहो व मधुसूदन भगवान् के लोकको जायँ २६ हम मृत्युके भयसे पर्व्वतकी कन्दरा में भागजाना नहीं चाहते थे किन्तु पापियों के हाथसे मरनेके भयसे भागना चाहतेथे पर अब पुण्यात्मा महाराजको देखकर फिर स्थिर होगये २७ यह नहीं जानते कि पूर्व्व जन्ममें हमने कौनसा बड़ाभारी पापकियाहै जिससे इसमहानिन्द्य शूकरी योनि में उत्पन्नहुये हैं २८ सो अब महाराजके घोर व तीक्ष्ण सैकड़ों बाणजलों से पूर्व्वसञ्चित पापको धोडालेंगे २९ अबपुत्र पौत्र व कन्या कुटुम्बके बालकोंको लेकर तुम पर्व्वतकी कन्दरा में चलीजाओ व हमारा मोह छोड़दो ३० व हमारे ऊपर स्नेहछोड़दो राजाका रूपधारणकिये ये हरिही आगये हैं इससे इनके हाथसे मरकर विष्णुजीके परमपदको जायँगे ३१ देवने

आज हमारेलिये उत्तम स्वर्ग के द्वारके किवाड़ खोल दिये हैं इस से चलेजायँगे ३२ सुकला बोली कि हे सखियो ! तिसमहात्मा शूकरके वचनसुन क्लेशयुक्त उसकी प्यारी ३३ शूकरी बोली किजिस यूथमें पुत्र पौत्र मित्र भाई व और स्वजन बांधवोंसे शोभित आप स्वामी अबतक रहे ३४ इससे आप से भूषित वहयूथ अत्यन्त शोभित होताथा सो हे महाभाग ! विना तुम्हारे वह कैसा होजायगा ३५ हे कान्त ! तुम्हारे ही बलसे गर्ज्जतेहुये सब शूकर व हमारे पुत्र कन्या पौत्रादि पर्व्वत व वनमें निश्शङ्क विचरतेथे ३६ व तुम्हारेही तेजसे निर्भयहो कन्दमूल खाते थे व दुर्ग्गम पर्व्वतोंपर कुंजों में नगरों व ग्रामों में ३७ किसी मनुष्यादिकों से भय नहीं करतेथे व पर्व्वतपर सिंहोंसे भी नहीं डरते थे व तुम्हारे तेजसे पालित थे ३८ अब जब तुम इनको छोड़कर चलेजाओगे तब हमारे ये सब लड़के लड़कियां जोकि अभी बहुधा बालकहैं वे बेचारे दीन व्याकुल होजायँगे व विचेतन भी होजायँगे ३९ ये बालक सदा तुमको देख २ सुखही भोगते थे पर अब जैसे पतिहीन नारी नहीं शोभित होती ४० चाहे अनेक दिव्य रत्न भूषण सुवर्ण वस्त्रादिकों से भूषितहो व अन्यभी नानाप्रकारके परिच्छदोंसे तथा पिता माता भाई बन्धुओं से भी शोभितहो ४१ व सास श्वशुर के पक्षवालों से भी सबसे युक्तहो पर पतिहीनहो तो नहीं शोभित होती व जैसे विना चन्द्रमा की रात्रि नहीं शोभितहोती व विना पुत्र के कुल नहीं शोभितहोता ४२ जैसे विना दीपकके मन्दिर कभी नहीं शोभित होता वैसेही विना तुम्हारे यह शूकरोंका झुण्ड न शोभित होगा ४३ आचार के विना मनुष्य ज्ञानहीन संन्यासी मंत्रहीन राजा जैसे नहीं शोभित होते तैसेही यह शूकर समूह न शोभित होगा ४४ जैसे अन्य सब जन धन धान्य से युक्तभीहो पर विना मल्लाह के समुद्र में नौका नहीं शोभितहोती ऐसेही यह झुण्ड बिना तुम्हारे न शोभितहोगा ४५ जैसे विना सेनापति के सैन्य नहीं शोभितहोता वैसेही हे महामते ! तुम्हारे विना यह शूकरोंका यूथ न शोभितहोगा ४६ जैसे वेदसे हीन ब्राह्मण दुःखी होताहै ऐसेही विना तुम्हारे शूकर झुण्ड दुःखितहोगा कुटुम्बका भार हमारे ऊपर धरके जातेहो ४७

मरण को सुलभ समझा ऐसी प्रतिज्ञा कैसी होगी हे प्रियेश्वर! विना तुम्हारे अपने हम प्राणही नहीं धारण करसक्तीं ४८ हे महामते ! तुम्हारेही सङ्ग स्वर्गभूमि व नरक सबके सुख वा दुःख भोगेंगी यह हम आपसे सत्यही कहती हैं ४९ इस से हे यूथेश ! हम दोनों इस शूकर के झुण्डको लेकर पर्व्वत के दुर्ग्गम स्थान में चलेचलें ५० जीवन छोड़कर लड़नेको जातेहो मरने में तुमने कौनसा लाभ देखाहै यह हम से इस समय बताओ ५१ इतना सुन वह शूकर-राज बोला कि तुम वीरोंका सुन्दर धर्म्म नहीं जानती हो अब हमसे सुनो जब कोई वीर युद्ध करने के लिये किसी वीरके समीप जाकर याचना करताहै ५२ कि हमको युद्धदो क्योंकि समरमें तुम्हारेसाथ हम युद्ध करनेके अर्थ आयेहैं इस प्रकार दूसरे से याचित होनेपर जो नर युद्धदान नहीं करता ५३ सो चाहे कामसे लोभसे वा भयसे अथवा मोहसे जो युद्ध नहीं करता वह सहस्र युगतक कुम्भीपाक नरक में पड़ा रहता है ५४ क्षत्रियों को युद्धदेना परमधर्म्म है इसमें कुछभी सन्देह नहीं है जब किसी के मांगनेपर कोई युद्धदान करता है ५५ वह शत्रुको जीत कीर्त्ति व यश भोगता है व यदि युद्धकरने में मारागया पर पौरुष से निर्भय होकर लड़ा ५६ वह दिव्य वीर-लोकों को पाकर दिव्य भोग विलास करता है जबतक बीस सहस्रवर्ष नहीं बीतते तबतक दिव्यभोग भोगा करताहै ५७ व उस वीरलोक में देवताओं से पूजित होताहै सो ये वीरशिरोमणि मनुजी के पुत्र यहां हमसे युद्ध मांगनेकी इच्छासेही आये हैं इसमें कुछ संशय नहीं है इससे निश्चय हमें इनको युद्ध देना चाहिये क्योंकि ये सनातन विष्णुरूप युद्धके अतिथि होकर आये हैं ५८ । ५९ इस से इनका सत्कार युद्धरूप से हमको करना चाहिये तब शूकरी बोली कि जो महात्मा राजाको तुम्हें युद्ध देनाहै ६० तो हे कान्त ! हमभी तुम्हारा पौरुष देखेंगी कि कैसाहै यहपतिसे कहकर शीघ्रतासे अपने पुत्रों पौत्रों को बुलाकर ६१ बोली कि हे पुत्र पौत्रादिको ! हमारे वचन सुनो युद्धके अतिथि सनातन विष्णुरूप आये हैं ६२ इससे जहां शूकर जावेंगे वहां पर हमकोभी जानाचाहिये अभी जबतक तुमलोगोंके स्वामी ये जीते

हैं ६३ तबतक तुमलोग पर्व्वतकी किसी गुहामें दूर चलेजाओ व हे हमारे वत्सो ! लुब्धकोंसे सदा बचातेहुये सुखसे जीतेरहो ६४ हमको वहां जाना चाहिये जहां ये जायँगे व तुमलोगोंके ये बड़े भाई सब यूथकी रक्षाकरेंगे ६५ व ये आपलोगों के चचालोग आपलोगों की रक्षा सदा करते रहेंगे इससे हे पुत्रो ! तुम सब हमको छोड़कर दूर चले जाओ ६६ वेसब यहसुनकर बोले कि इस पर्व्वत श्रेष्ठपर बहुत कन्द मूल फल जलहैं व यहां किसी का भय नहीं है इससे सुखसे जीवन होता है ६७ सो आप दोनोंजनोंने अकस्मात् भयंकरकहा सो हे मातः! इस का सत्य सत्य कारण हम से कहो क्या है ६८ तब शूकरी बोली कि ये महारौद्ररूप राजा कालरूप यहां आकर प्राप्तहुये हैं व शिकारके लोभसे बहुत से मृगोंको मार वनमें क्रीड़ा करते हैं ६९ ये मनुके पुत्र महाबली व दुर्द्धर्ष हैं और इक्ष्वाकु इनका नामहै बस ये काल-रूपही हैं तुम सबोंको मारडालेंगे इससे हे पुत्रो ! दूर भागजाओ ७० तब वे पुत्र बोले कि माता पिताको छोड़कर जो भाग जाताहै वह महा-पापी कहाता है व महाघोर नरकमें जाताहै ७१ ॥

चौ० मातुपवित्र दुग्धकरिपाना । पुष्टहोत अरु बहु बलवाना ॥
निर्दयह्वै तजि जननी तातहि । चलाजात जो लहतसुघातहि ॥
जाय नरकमहँ शोणित पूया । पीवतकृमि दुर्गन्ध ससूया ॥
यासों जननि मातु पितु त्यागी । हम न जाबनहिं होब अभागी ॥
धर्म्म अर्थयुत कहि इमिबानी । सकल भये उद्यत बड़मानी ॥
बल अरु तेजसहित करिव्यूहा । स्थिरभे सबरणकी करि ऊहा ॥
साहस अरु उत्साह समेता । सब देखहिं भूपहि अगलेता ॥
नादकरत क्रीड़तवनमाहीं । पौरुषयुक्त तनिक भय नाहीं ७२ । ७५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० तैंतालिसें महँ शूकरी शूकर लुब्धकयुद्ध ॥
वीरधर्म्म कहि युवतिसों नृपहतिहित भो क्रुद्ध १

सुकला बोली कि इस प्रकार वे सब शूकर युद्ध करने के लिये उपस्थित हुये और लुब्धकलोग राजाके आगे खड़ेहुये १ हे राजेन्द्र! बड़ा शूकरभी पहाड़की कन्दरामें बड़ा यूथकर व्यूहकर खड़ाहुआ २ यह शूकर कपिल रंगवाला स्थूल पीन अंगयुक्त बड़ीडाढ़ें और बड़े मुखवाला दुःसह था और अत्यन्त भयानक गर्ज्जता था ३ तिन शाल व तालके वनमें खड़ेहुओंको महाराजने देखा उनशूकरोंका वचन सुन मनुके पुत्र प्रतापी महाराजने ४ कहा कि सुनो सबलोगो बलसे दर्पित इस शूरवाराह को पकड़ो व मारो ऐसा उन वीरों से कहकर मनुके पुत्र महाप्रतापी राजा खड़ेहोगये ५ व मृगयाके मदसे मोहित उनके वीर लुब्धकलोग अपने कवच बखतर आदि सुधारकर कुत्तों समेत तैयार होगये६ तब महाबली महाराज बड़ेहर्षसेयुक्तहुये व घोड़े पर चढ़ेहुये चतुरंगिणी सेना संगलिये ७ गंगाके तीरपर गिरिवरों में उत्तम सुमेरुनाम पर्व्वत के नानाप्रकार के रत्नोंसे जटित व धातुओंसे मण्डित नानाप्रकारके वृक्षोंसे अलंकृत शृंगपर खड़ेहो शोभित होनेलगे ८ सुकला अपनी सखियोंसे बोली कि वह पर्व्वतराज बल का धाम किरणों के समूहयुक्त बहुत ऊंचा आकाश को प्राप्त अनेक पर्वतोंसे शोभित प्रकाशितथा ९ और बहुत योजनोंतक निर्मल गङ्गा जीकी धारामें लहरें मोतीके सदृश निर्मल जल के कणों समेत उठतीथीं सब ओर शिलातल धोजाकर स्वच्छथे ऐसा पर्वतश्रेष्ठ अच्छी शोभासे युक्तथा १० उस समय देवता चारण किन्नर गन्धर्व्व विद्याधर सिद्ध व अप्सराओं की शोभासे शोभित होरहा था व नानाप्रकारके मुनिगण व हाथियों से व चन्दन के बहुत वृक्षोंसे शोभितथा व वैसेही देवदारु शाल ताल तमाल कृतमाल के प्रवालों से शोभित था व नानाप्रकार के अन्य वृक्षों से व कल्पद्रुमादिकों से विभूषित था ११ नाना प्रकार की धातुओं से विचित्र था अनेक प्रकार के रत्नोंसे विचित्रित विमान जिनमें सोनेके दण्डथे ऐसा पर्वत स्त्रियोंसे शोभितथा १२ नारियल के सुन्दर वनव सुपारी के वृक्षोंसे शोभित था दिव्य पुन्नाग बकुल व कदली के खण्डों से मण्डित था १३ पुष्प सहित चम्पा पाटल व केतकी के वृक्षोंसे मण्डितथा नानाप्रकार की

वल्लियों के प्रतानों से व पद्मके वृक्षोंसे शोभित था १४ नानाप्रकार के पुष्पोंसे पुष्पित वृक्षोंसे अलंकृत था स्फटिकमणि की शिलाओं पर जमे दिव्यवृक्षों से विराजमान १५ व कन्दराओं में योगीन्द्र व योगिराजों के बसने से आनन्दयुक्त होरहाथा नानाप्रकार के झरनों के चलनेसे अतिमनोहर व नदियों के प्रवाहों से अतिरम्य १६ व नदी के प्रवाह से प्रसन्न संगमों से शोभित व निर्मल जल भरेहुये ह्रद कुण्ड व अल्प जलाशयों से शोभित था १७ व नानाप्रकार के ऐसे शृंगोंसे वह गिरिराज उस समय शोभित होरहा था शल्लकी शार्दूल व मृगोंके यूथोंसे अलंकृत १८ महामत्त मातङ्गोंसे महिषों व रुरुओं से उपशोभित था ऐसेही अनेक भावोंसे गिरिराज विभासितथा १९ सो मनुके पुत्र महावीर इक्ष्वाकुजी ऐसे पर्वत पर उस अपनी स्त्री व चतुरंगिणी सेनासमेत २० व आगे २ कुत्तोंको उनके पीछे लुब्धकों को कियेहुये जहां वह बली शूकर अपनी भार्य्यासमेत २१ व बहुत से शूकरों से रक्षित था व अपने पुत्र पौत्रोंसमेत विराजमान था उस गंगाकेतीर मेरुभूमिमें पहुँचे २२ सुकला अपनी सखियों से बोली कि तब हर्षसे युक्तहोकर वह शूकर अपनी प्रियासे बोला कि हे प्रिये! देख महाबली कोशलाधिपति चलेआते हैं २३ व महाप्राज्ञ राजा हमारे मारने के उद्देश से मृगया क्रीड़ा करते हैं इनके संग देवताओं व दैत्यों के हर्ष करानेवाला युद्ध हम करेंगे २४ यह तो ऐसा अपनी स्त्रीसे कह-रहाथा व महातेजस्वी महाराज धन्वा बाण हाथोंमें लिये सत्यधर्मा-गी अपनी सुदेवानाम महारानी से हर्षित होकर बोले २५ कि हे कान्ते! देखो यह महाबली शूकर गर्ज्जरहाहै व उसके संग महाबल पराक्रमी उसके परिवारवाले भी गर्ज्जतेहैं यह मृगके मारनेवालोंसे दुःसह है २६ हे प्रिये! इसी समय तीक्ष्ण बाणोंसे मारूंगा जो यह महाशूर युद्ध करनेके लिये हमारे पास आवेगा २७ ऐसा स्त्रीसे कह लुब्धकों से बोले कि जैसे यह शूकर शूर है ऐसेही महाशूरों को इसके पास भेजो २८ तब लुब्धकोंने बल तेज पराक्रम युक्त शूरोंको भेजा तो वे गर्जतेहुये दौड़े २९ व वायुवेगसे चले व पहुँचकर तीक्ष्ण बाणोंके जालों व अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रोंसे लगे शूकरों को व

उस वीररूप महावराह को मारने ३० । ३१ सुकला अपनी सखियों से बोली कि लुब्धकलोग बाण तोमर इस प्रकार शूकरके ऊपर छोड़ते भये जैसे मेघपर्वतमें जल छोड़तेहैं जब दृढ़ प्रहार करनेवाले सैकड़ों लुब्धकों से संग्राम में प्राप्त यूथपालक शूकर मारकर निर्जित किया गया ३२ तब अपने पुत्र पौत्र और बान्धवों समेत होकर उसने लुब्धकोंको मारा और डाढ़ोंसे लुब्धकों को काटकर गिराया पांव हाथ गिरनेलगे तब शूकरने लुब्धकोंकी आईहुई गर्जनहीं देखी ३३ अपने तेजसे नाशित और मुखके अग्र और डाढ़ों से लुब्धकों को मार कर राजाके पासगया तब राजा संग्रामकी वाञ्छा न करताभया ३४ फिर क्रोधयुक्त संग्राम में हर्ष समेत होकर शूकर राजाको बहुत भय दिखाकर जबर्दस्ती वनमें उनसे युद्धकी वाञ्छा करताभया ३५ फिर युद्धमें कुशल शूकर संग्राम की इच्छासे थूथुनके आगेसे तीक्ष्णदांत और नहोंसे क्रोधयुक्त होकर पृथ्वीको खोदनेलगा हुंकार के उच्चार गर्वसे विमलराजा को प्रहार करता भया तब आनन्द की रोमाञ्च युक्त राजा विष्णुके समान पराक्रमी शूकर को जानतेभये ३६ शूकर के अतुल पौरुष को देखकर इन्द्र मनसे सहसा वाराहरूप से देवताओंके वैरी शूकर को समझकर और बहुत सेना देखकर उसके नाशने के लिये हाथी भेजते भये और यह राजा से कहते भये कि हाथी को ग्रहणकरो ३७ फिर बहुत वेग युक्त रथ और हाथी भेजते भये तब लुब्धक बाण खड्ग भुशुंडी मुद्गर और फँसरी हाथमें लेकर जहां हाथी घोड़े थे वहां लड़ाई की इच्छा से शब्द करनेलगे और रोंकनेसे भी न रुँकते भये ३८ तब शूकर कहीं २ न दिखाई देताभया और कहींकहीं दिखाई पड़ता भया कहीं डरवाता भया कहीं घोड़ों को मारता भया ३९ फिर रणमें दुर्जय शूकर क्रोध से लाल नेत्रकर वीर योधाओं को मर्दन कर बड़ा शब्द करता भया ४० तब कोशलापुरीके स्वामी तिसको रणमें दुःख से जीतनेवाले बड़ी देहयुक्त मेघों के समान गर्जते हुये और युद्ध करते देखकर ४१ धीरयुक्त होकर समरभूमिमें गर्जने और घूमनेलगे और अपने तेज से वीरोंको प्रकाशित करतेभये मुखों में बिजलीकीनाईं दाढ़ें प्रका-

शितहोतीभई ४२ तब राजा शूकर को उसके बंधुओं समेत देखकर तीक्ष्ण बाणों से और शस्त्रों से एक एकको मारते भये ४३ और सेनावालों से बोले कि हे सेनावाले शूरो! इसको पराक्रम से क्यों नहीं पकड़लेतेहो फिर इससे तीक्ष्ण बाणों से युद्ध करो ४४ तब क्रोधयुक्त महात्मा राजा के वचन सुन सब सेनावाले युद्ध करनेकेलिये उपस्थित हुये ४५ सहस्रों योधा वनमें रण में स्थित शूकर को सब दिशाओं में प्रहार कर भेदन करतेभये ४६ किसी विशाल योधाओं ने संग्राममें बाण समूहोंसे मारा किसी ने चक्र किसी ने वज्रसे मारा ४७ तब पौरुषों से क्रोधयुक्त रक्तकी धारा से भीगाहुआ शूकर रण में कॅमरियों को काटकर बड़े शूकरों समेत पहुँचा ४८ व पहुँचकर घोड़ों हाथियों के पेट मस्तक पैरआदि फाड़चीड़डाले व तीक्ष्ण दांतों से पैदरलोगों को तो विदारणही करडाला ४९ यहांतक कि उस बड़े शूकरराज ने तो अपने थूथुन से गजका मस्तक विदीर्ण करडाला और पांवके नखोंसेवीरोंको नाश किया ५० तब फिर सब लुब्धक व सबशूकर क्रोधकेमारे लाल२ नेत्रकर परस्पर घूम २ कर युद्धकरनेलगे ५१ तब लुब्धकोंकेमारेहुये शूकर व शूकरोंके मारेहुये लुब्धक रुधिरसे अरुण होकर पृथ्वीपर गिरनेलगे ५२ लुब्धकोंने जीव छुड़ाकर शूकरोंको बलसे महीपर गिराया कि वे मृतकहो बिना प्राणके पृथ्वीपर गिरपड़े व कुत्तेभी प्राणों को छोड़ देते भये ५३ व बहुतसे शूकर जो प्राणसहित भूमिपरगिरेथे उन्होंने अपने दांतोंसे क्षितिपर पड़ेहुये घायल लुब्धकोंके अंगनिकट जा जाकर चीड़फाड़डाले ५४ व बहुतसेशूकर बाणोंके आघातोंसे पीड़ितहो पर्व्वतके दुर्गम स्थानों में भागकर जागिरे व बहुतसे कुञ्जोंमें बहुतसे कन्दराओंमें बहुतसे अपने २ घरोंमें जाघुसे ५५ ऐसेही कोई २ लुब्धकभी शूकरोंके दांतों से छिन्नभिन्न होकर प्राणों को छोड़ खण्ड २ होकर स्वर्गको चलेगये ५६ व लुब्धकलोगों के जाल व फांसियां जो लिये थे सब जहां की तहां पड़ीरहगईं व उनलोगों की नसें भी ठौर २पड़ीरहगईं ५७ केवल वह बलके अभिमानयुक्त महावाराह अपनीस्त्री व पांचसात पुत्र पौत्रों समेत खड़ारहगया ५८ तब वह

शूकरी अपने स्वामी शूकर से फिर बोली कि हे कान्त! हमारे व इन बालकोंके साथ चलेचलो ५९ तब प्रीतियुक्त दुःख से पीड़ित प्राणप्रियासे वह शूकर प्रीतिसे बोला कि हम कहांको जायँ टूटफा- टगये हैं हमारेलिये भूतलमें कहीं स्थान नहीं है ६० हे महाभागे हमारे नाशहोनेपर शूकरोंके झुण्ड नष्टहोजायँगे क्योंकि आजतक दोसिंहोंके बीचमें शूकर पानी पीताथा ६१ व दो शूकरों के मध्यमें सिंह नहीं जल पीसक्ताथा शूकरकी जातियोंमें ऐसा उत्तमबल दिखा- ईदेताथा ६२ सो हम समरसे भागजायँ तो उस धर्म्म व बलको नष्टकरें हे महाभागे!बहुत कल्याणदायक धर्म्म हम जानते हैं ६३ जो कोई लोभ व भयसे समरसे भागता है व रणतीर्थको छोड़ताहै वह पापीहोता है इसमें कुछभी संशय नहीं है ६४ व जो तीक्ष्ण शस्त्र समूहको देखकर हर्षितहोताहै वह मानों समुद्र तीर्थ में स्नानकरके उसके पारको जाताहै ६५ व अपने पुरुषोंसमेत वैष्णवलोकको जाता है व जो पुरुष शस्त्रास्त्रयुक्त वीरोंके आनन्द देनेवाली समरभूमिको देख हर्षितहोताहै उसके पुण्यकाफल हमसे सुनो ६६ पद पद पर गङ्गाजीके स्नानका महापुण्य होताहै वरणसे भागकर जो लोभसे घर को चलाजाताहै उसका फलसुनो६७६८ वह जानों अपनी माता के दोषों को प्रकाशित करता है व जानों पुरुष होकर उत्पन्नही नहीं हुआ बरन स्त्रीही होकर जन्मा है हे कान्ते!इस रणभूमिमें सबयज्ञ व सबतीर्थ विद्यमानरहते हैं व महापराक्रमी देवतालोग ६९ कौ- तुक देखा करते हैं मुनि सिद्ध चारणलोगभी कौतुक देखते हैं जहां वीरवीरको युद्धकरनेकेलिये प्रचारता है तीनोंलोक वहां देखनेकेलिये आजाते हैं ७० व समरसे भग्नको तीनोंलोकों के निवासी देखतेहैं व जो पापयुद्धकरता है उस घृणाहीन पापीको शापदेते हैं व बार२ हँसते हैं ७१ व धर्म्मराज उसको दुर्गति दिखाते हैं इसमें कुछ भी संशयनहीं है व जोकोई सम्मुखहोकर युद्धकरके अपने शिरकारुधिर पीताहै ७२ वह अश्वमेधयज्ञका फल पाताहै व इन्द्रलोकमें जाकर बसताहै व हे वरानने!जब शूर समरमें शत्रुओं को जीतताहै ७३ तो वह नानाप्रकारकी लक्ष्मीको भोगताहै इसमेंसंशयनहींहै व जो कोई

सम्मुखयुद्धमें निराश्रयहोकर प्राणछोड़ताहै ७४ वह परमलोक को जाकर देवकन्याओंके सङ्ग भोग करता है इसप्रकारका धर्म्म हम जानतेहैं फिर कैसे समरसे भागें ७५ इन राजाकेसाथ समरमें युद्ध करेंगे इसमें कुछसन्देहनहींहै ये एकतो मनुकेपुत्र दूसरे धीर इक्ष्वाकु जी हैं ७६ व हे वरानने! इन पुत्र पौत्रादिकोंको लेकर तुमजाओ व सुखसेजीवो उसका ऐसा वचन सुन शूकरी बोली कि हम तो तुम्हारे स्नेहके बन्धनोंसे बँधीहैं ७७ क्योंकि हे प्रिय! जबतुम्हारेस्नेह व नाना प्रकारकी रतिक्रीड़ाका स्मरणकरती हैं तो आपको छोड़कर जाया नहींजाता इससे हे मानद! तुम्हारेआगे पुत्रोंसमेत प्राणोंको त्यागूंगी ७८ इसरीति से आपसमें वार्त्ताकर व एक दूसरेका हितचाहते हुये वे दोनों स्त्री पुरुष युद्धकरने का निश्चयकर अपने शत्रुओंकी ओर देखनेलगे ७९ व कोशलापुरी के स्वामी महाराज इक्ष्वाकुजीकी ओर बड़ेक्रोधसे देखने लगे ८० ॥

चौपै० जिमिनभमहँगर्ज्जतमेघा तर्ज्जतचपलासँगअतिवेगा ।
तिमिवहवरशूकर गर्ज्जत भूपर निजदयिताके नेगा ॥
महराजकुमारहिं अतिहि प्रचारहि समरकरनके हेता ।
पुनिपुनितेहिओरा वचनकठोरा बहुविधिसों कहिदेता ॥
गर्ज्जत लखिताही मन उत्साही भूपतिमनहिं विचारें ।
यहएक वराहा रणगुणगाहा करुपुरुषार्थ प्रचारें ॥
नरवीर धुरन्धर भूमि पुरन्दर अश्वारूढ़ तुरन्ता ।
आयहुत्यहि आगे अतिअनुरागे चापकरतशरवन्ता ८१।८२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेत्रयश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

दो० चौवालिसयेंमहँ नृपति श्रीइक्ष्वाकु महान ॥
बध्योशूकरहि सोगयो सुरपुरचढ़ेविमान १

सुकला अपनीसखियोंसे बोली कि अपनी दुर्द्धरसेनाको अति दुर्द्धर शूकरसे निर्जितदेखकर महाराजने दुस्सह व क्रूरस्वभाववाले

उस शूकरके ऊपर बड़ा कोपकिया १ व वेगसे घोड़ेपर चढ़ धनुष हाथ में ले कालाग्निके समान बाण चढ़ाकर शूकरको मारा २ जब श्रेष्ठ पौरुषयुक्त शत्रुनाशक राजा को शूकरराज ने घोड़ेपर चढ़ा देखा तो रणभूमिमें राजा के सम्मुख गया ३ महाराजने दूसरा अतितीक्ष्ण बाणचलाया तब वह उसको भी उल्लंघन कर शीघ्रता से घोड़ेके पांवके पासपहुँचा ४ और घोड़ेको व्यथितकिया तो थूथुन से माराहुआ घोड़ा पृथ्वी में गिरा और शूकर अपनी जातिके शब्दों से गर्जा तब राजा झट उसपरसे उतरकर रथपर सवारहुये ५ तब भूपालमणिने एक ऐसी गदा बड़े बलसे उसकेमारी कि उसका शिर फटगया व पृथ्वीपर गिरपड़ा प्राण निकलगये व उसीसमय विमान पर विद्याधरके रूपसे चढ़कर श्रीहरिलोक को गया जब महाराज केसंग समरमें युद्धकरके शूकरराज मृतकहोकर पृथ्वीपर गिरा तब प्रसन्नहुये देवताओंने महाराजके ऊपर पुष्पोंकी वर्षाकी वे सब पुष्प कल्पवृक्षके थे जिनसे देवताओंने वर्षाकी व कुंकुम चंदनादिकों की भी वर्षा भूपाल के ऊपर की ६।९ व राजाके देखतेही देखते प्रथम विद्याधर का रूप धारणकिया था फिर चतुर्भुजी मूर्त्ति धारणकर दिव्यभूषण वस्त्रादि धारण किये सूर्य्य समान प्रकाशित होनेलगा १० व दिव्यविमानपर चढ़के देवता गन्धर्व्व सिद्धादिकोंसे पूजित हो फिर वह गन्धर्व्वराज होगया क्योंकि पूर्व्वजन्म का भी वह गन्धर्व्वही था इससे हरिपुरमें पहुँच कुछदिन वहां के सुख भोगकर फिर गन्धर्व्वराज हुआ ११ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय

दो० पैंतालिस महँ शूकरी चार पुत्र लै साथ ॥
नृपसों समरभिरीतनय तासुमरो यहगाथ १

सुकला अपनी सखियोंसेबोली कि जब शूकरमारागया तब राजा की ओरके सब शूर लुब्धकलोग पाश हाथोंमेंलिये महादारुणरूप

किये उस शूकरी के ऊपरको दौड़े १ व शूकरी अपने स्वामीको परिवारसहित मरेहुये देख केवल चारपुत्र उसके बचे थे उनको संगले वहां स्थितरही २ व यह उसने विचारा कि इसी समरमें मरकर मेरा पति ऋषि देवताओंसे पूजितहुआ व इसी वीरकर्म्म से वह महात्मा स्वर्गकोगया ३ सो इन राजाकेसंग युद्धकर समरमें मरकर मैंभी पतिकेपास पहुँचूंगी यह चिन्तनाकर फिर उसने अपने बालकों के विषयमें सोचा कि ४ जो ये चारो मेरेबालक जीते रहेंगे तो वंशको धारणकियेरहेंगे व उस हमारे अतिवीर महात्मा पतिकाभी नाम चलाजायगा ५ सो अब मैं किसउपायसे इन पुत्रोंकी रक्षाकरूं इस चिन्ता में युक्तहो व पर्व्वतके दुर्ग्गमस्थान देख ६ व वहां मार्ग्गभी बहुत लम्बा चौड़ा भागनेकेलिये देखकर उसने निश्चयकिया कि बस पुत्रों से कहूं कि इस मार्ग्गहोकर भागजायँ ७ यह दृढ़कर पुत्रोंसे बोली कि हे पुत्रो ! जबतक मैं जीतीहूं व यहां खड़ीहूं तबतक तुमसब यहां से शीघ्र चलेजाओ ८ उनमें जो ज्येष्ठ उसका पुत्रथा वह माता का वचन सुनकर बोला कि माता को छोड़कर मैं कैसे जासक्ता हूं हे मातः ! तुमको छोड़कर चलेगयेहुये मुझको धिक्कारहै व मेरे जीनेको अतिधिक्कार है ९ मैं रणमें शत्रुसे अपने पिता का पलटा लूंगा उसे मारडालूंगा इससे मुझसे छोटे इन तीनों मेरे भाइयोंको लेकर पर्व्वत की कन्दरा में तुम चलीजाओ १० क्योंकि जो कोई माता पिताको ऐसे स्थानपर छोड़कर चलाजाताहै वह महापापी होताहै व करोड़ों कीड़ों से युक्त नरकको प्राप्त होताहै ११ यहसुन दुःखसे व्याकुलहो वह बोली कि हे पुत्र ! तुमको छोड़कर मैं कैसे जाऊं क्योंकि जो कोई अपने पुत्रको छोड़कर कहीं चलाजाताहै वह महापापी होताहै तीनों मेरेपुत्रजावें १२ यह कह आपतो उनके देखतेही देखते बड़े पुत्रकेपास रणमें रहगई व उसके छोटे तीनोंलड़के बड़े दुर्ग्गम मार्गमें चलेगये १३ व तेज बलसे अपने बड़े पुत्र समेत बारंबार गर्ज्जतीरही इतनेमें पवनके वेग के समान शूर लुब्धकलोग आपहुँचे १४ व जिसमार्ग्ग होकर अपने तीनों पुत्रोंको भेजाथा उस मार्ग्गको रोककर ये दोनों माता व पूत खड़ेरहे १५ व लुब्धकलोग खड्ग बाण धन्वा धारण

कियेहुये वहां आये और तीक्ष्ण तोमर चक्र मूसर आदिसे उन दोनों को मारने लगे १६ तब माताको पीछेकर पुत्र उनके साथ लड़ने लगा किसी २ को तो दांतोंसे व किसी २ को थूथुनसे विदीर्णकर दिया १७ व शूरों को नहों से ऐसा नोचा कि सबकेसब पृथ्वीपर गिर पड़े व जब इस प्रकार युद्धकरनेलगा तो महात्मा राजाने उसेदेखा १८ व विचारा कि यह अपने पिताकी अपेक्षा अधिक शूर है इससे महातेजस्वी प्रतापी महाराज इक्ष्वाकुजी धन्वाबाण लेकर उसके सम्मुख उपस्थितहुये १९ व अर्द्धचन्द्राकार अतिचोखेबाणसे उसे मारा महात्मा राजाके उस बाणके लागतेही छाती फटकर वह शूकर भूमिपर गिरपड़ा २० व गिरतेही वह वराह मृतकभी होगया व पुत्रके अतिमोहसे व्याकुल उसके पीछे उसकी माता शूकरी युद्धकरने में प्रवृत्तहुई २१ उसनेअपने तुण्ड के घातसे शूरोंको ऐसा मारा कि बहुत से लुब्धक तो मरगये २२ तब अपने दांतोंसे बड़ी भारी सेनाको विदीर्ण करती हुई वह शूकरी आगेको बढ़ी जैसे कि मन्त्रसे उत्पन्न कृत्या महाभयंकरी होकर सैन्यको काटती फाड़ती चलीजाती है २३ उसको सब सैन्यको संहारकरतीहुई देख महारानी जी महाराज इक्ष्वाकुजी से बोलीं कि हे महाराज ! इस शूकरी ने तो आपकी बड़ी सेना मारी २४ आप इसके मारनेमें कैसे उपेक्षा करते हैं इसका कारण हमसे कहैं तब महाराजने रानीजीसे कहा कि हम मारती हुईभी स्त्रीको कभी नहींमारते २५ क्योंकि हे प्रिये ! स्त्रीके वधमें देवताओंने महादोष दिखाये हैं इससे हम स्त्रीको अपने हाथों से कभी नहीं मारसक्ते न उसके मारनेके लिये किसी को हम भेजीसक्ते हैं २६ इससे हे सुन्दरि ! इसके वधके निमित्त पापसे हमडरते हैं ऐसाकहकर उससमय राजाविश्राम कररहे फिर कुछ न बोले २७॥

चौ० तबलुब्धकयकशार्ङ्गरनामा । लखीशूकरी करतसुत्रामा ॥
जिमिनसुभटरणकरहिंकदापी । तिमिशूकरी करतअतिपापी २८
तिन अतिवेग निशित शरलीना । हती वराही ह्वैगइ छीना ॥
बाण विदीर्ण रुधिर की धारा । बहत कोलिनी देह अपारा २९
शरशोभा शोभितसोकोली । झपटजाय भाज्झर [illegible] ॥

हत्यो तुण्डसों ताहि करारी । घायल भो सो वीरप्रहारी ३०
गिरतसमय तिन कीनप्रहारा । खड्ग उठाय कठोर उदारा ॥
तासुघात व्याकुल भुविसोई । मूर्च्छित कोली सबबल खोई ३१
श्वासलेत कहरत क्षितिमाहीं । लोटत छटपटात बल नाहीं ॥
इमि शूकरी व्यथित भै कैसे । जलबिन मीन दीनहो जैसे ३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणोद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

दो० छीयालिसयें महँ कह्यो शूकरिमुक्ति बहोरि ॥
तिन निजपतिपूरबजनम भाषे चरितनिहोरि १

सुकला सखियोंसे बोली कि राजाकी पतिव्रता महारानी पुत्रोंके ऊपर कृपाकरनेवाली उस शूकरीको पृथ्वीपर पड़ी लोटतीहुई देख बड़ी कृपासे दुःखितहो महादुःखित उस शूकरी के समीप गई १ व शीतल जलसे उसका मुखधो फिर उस रणशालिनीके सर्व्वांग जलसे धोये २ जब पुण्य शीतलजल से वह हनवाई गई तो महारानी से मनुष्य बोली से बोली सो भी बड़े मधुरस्वरसे बोली ३ कि हे देवि! तुमको सुखहो क्योंकि तुमने अपने हाथोंसे मुझको हनवाया तुम्हारे दर्शन से व स्पर्शकरने से मेरेपापोंका ढेर नष्टहोगया ४ अद्भुताकारसंयुत उस शूकरीका अद्भुत संस्कृत भाषाका शब्द स्पष्टता पूर्व्वक सुनकर वह सुदेवा नाम महारानी अपने मनमें कहनेलगी कि ऐसा आश्चर्य हमने देखाहै जोकि स्वर व्यंजनसहित उत्तम संस्कृतवाणी यह शूकरी बोलती है ५।६ इस हर्ष व विस्मयसे उत्तम साहसकरके अपने पतिसे यह बोली कि हे पूज्यमहाराज ! यह अपूर्व्व संस्कृत बोलती है क्याकहूं उसके सुनने से आश्चर्यहोता है पशुयोनि में इसका जन्महै पर वाणी पढ़े लिखे विज्ञानी मनुष्यकी बोलतीहै ७।८ सब ज्ञानवानों में श्रेष्ठ राजा यह सुनकर जोकि उसने अद्भुत व अद्भुताकार कभी न सुनाथा न देखाथा ९ तब अपनी सुदेवा प्राणप्रिया से महाराज बोले कि यदि ऐसा है तो इससे पूछो

कि यह कौनहै १० राजाका वाक्य सुन महारानी सुदेवाने उस शूकरी से पूँछा कि तुम कौन हो तुम में यह बड़े आश्चर्यकी बात दिखाईदेतीहै ११ कि पशुयोनिको पाकर भी मनुष्यकीसी बोली बोलती हो बरन बहुतसे विना पढ़ेहुये मनुष्योंसे भी ज्ञान सम्पन्न और सुन्दर बोली बोलती हो इससे तुम अपने पूर्व्वजन्मके सब कर्म्म हमसेकहो १२ व हे महाभागे! अपने महात्मापतिकेभी विचित्रचरित कहो वह पूर्व्वजन्मका कौन धर्म्मात्मा है जो अपने पराक्रमोंसे स्वर्ग्ग को चला गया १३ अपने व अपने भर्त्ताके सब पूर्व्वजन्मके समाचार कहो ऐसा कहकर रानी तो चुप होरही १४ और शूकरी उसी मनुष्य वाणीसे बोली कि हे भद्रे! जो तुम हमारे व महात्मा इन हमारेप्रिय पति के वृत्तान्त पूँछती हो तो हम प्रथम इन महात्मा अपने पति के चरित कहती हैं जो कि इन्होंने पूर्व्व जन्म में किये थे १५ ये महात्मा महाप्राज्ञ सब शास्त्रों के अर्त्थ जानने में बड़े पण्डित व गानविद्या में बड़ेविज्ञ रंग विद्याधर नाम गन्धर्व्वथे १६ व पर्व्वतों में श्रेष्ठ मनोहर निर्झर व कन्दराओं से युक्त सुमेरुपर्व्वत पर महातेजस्वी मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्यजी १७ चित्तलगाकर तपस्या करते थे वहां पर अपनी इच्छा से विद्याधर गया १८ और उस पर्व्वत में गीतविद्या में अभ्यास किया करता सो स्वर व तालसमेत अति मनोहर इनका गाना सुनकर एक मुनि ध्यानसे चलित मन होगये तबगातेहुये उनगीत विद्याधरनाम गन्धर्व्वसे मुनिराज बोले १९।२० कि आपके इस दिव्यगीत से देव मोहित होते हैं इस में कुछ सन्देह नहींहै जब तुम सातस्वर व पुण्यलयताल भाव मूर्च्छना आदि से युक्त गीतगाते हो तो देवताओं को कौन कहे हम मुनियों का ध्यान चलायमान होजाता है २१।२२ इस से तुम यह स्थान छोड़कर और किसी स्थान को चलेजाओ यह सुन वे गीत विद्याधर नाम गन्धर्व्व बोले कि हम यहां अपने ज्ञान के समान गीत को सिद्ध करते हैं और स्थान को क्योंजावें २३ किसीको कुछ दुःख नहीं देते सदैव मनुष्योंको इस गीतसे सुखही देते हैं क्योंकि सब देवता इस दिव्यगीतको सुनकर प्रसन्न होते हैं २४ हे द्विज! गीतकी ध्वनि में

रत महादेवजी भये हैं गीत सर्वरस कहाताहै और गीतही आनन्द दाताहै २५ शृंगारादिक सबरस गीत से ही प्रतिष्ठा युक्तहैं गीत से उत्तम चारोवेद शोभित होते हैं २६ व गीतही से सब देवगण सन्तुष्ट होते हैं और किसी से नहीं सो ऐसे गीत के गातेहुये हम को आप रोकते हैं २७ हे महाभाग ! इस विषय में आपकाही यह अन्याय दिखाई देताहै यह सुन पुलस्त्यमुनि बोले कि तुमने सत्यकहा गीतका अर्थ बहुत पुण्यदायक है २८ पर हे महामते ! हमारा वाक्य सुनो व मानको छोड़ो हम गीतकी निन्दा नहींकरते वन्दना करते हैं २९ सब चौदहो विद्या गीत के भाव से पढ़ने सेही आती हैं परन्तु जितनी विद्याहैं मुख्यकर ध्यान देकर एकभाव से चित्त लगाने से आती हैं ३० व ऐसेही तप मन्त्र सब एकचित्तता सेही सिद्धहोते हैं हमारे मत से इन्द्रियोंकासमूह बड़ा चञ्चलहै ३१ इससे वह आत्माको सब विषयों में खींचता रहताहै इस से मनको ध्यान से चलादेताहै इसमें कुछभी संशय नहींहै ३२ जहां शब्दरूप व युवती नहीं रहतीं मुनिलोग तप सिद्धकरनेके लिये वहां जातेहैं ३३ यह तुम्हारा गीत पुनीत व बहुतही सुखदायकहै व हे वीर ! हमलोग घर द्वार छोड़कर तपस्याही करने के लिये वनमें आकर स्थितहुये हैं ३४ इससे कितो तुम्हीं अन्यस्थान को चलेजाओ वा तुम न जाओ तोहमीं कहीं चलेजावें यह सुन गीत विद्याधर बोला कि जिस महात्माने इन्द्रियोंकाबल व गर्व जीतलिया हो ३५ वही जयी तपस्वी योगीवीर व साधक कहाताहै हे महामते! जो शब्द सुनकर वा रूप देखकर ३६ ध्यानसे चलायमान नहीं होता वही धीर तप सिद्ध करनेवाला कहाता है हमने जानलिया कि तुम तेजसे हीनहो व काम क्रोध लोभादि छःरिपुओं को जीते नहींहो ३७ हे ब्राह्मण ! जब अपने अंग में कुछ सामर्थ्यही नहीं रखते तो हमारेगीतसे डरतेहो जो हीनवीर्य्य होते हैं वे सब वन छोड़तेरहते हैं इसमें कुछ संशयनहीं है ३८ हे विप्र!यहतो साधारणवनहै इसमें संदेह नहींहै सब देवताओं का सब जीवोंकाहै इससे जैसे यह तुम्हाराहै वैसेही हमारा है ३९ ऐसाउत्तम वन छोड़कर हम क्योंचलेजायँ तुमचाहे चलेजाओ अथवा ठहरो व

जो भावीहै करो ४० उन ब्राह्मणदेवसे ऐसा कहकर गीतविद्याधर चुपहोरहा उन मुनिजीने उसका ऐसा उत्तर सुनकर ४१ अपने मन में चिन्तनाकी कि क्याकरनेसे अब हमारा सुकृतहो यह विचार क्षमाकरके वे महात्मा पुलस्त्य योगी वहांसे अलग चलेगये व अपने कहीं एकान्तमें तप करनेलगे सदैवयोगके आसनमें रहें काम क्रोध मोह और लोभकोत्यागदिया ४२।४३ मनकेसाथही सब इन्द्रियोंको अपने वशमें करलिया इसप्रकार मुनिश्रेष्ठयोगी पुलस्त्यजी स्थित रहे ४४जब मुनिश्रेष्ठपुलस्त्यजी चलेगये तो कालकी आज्ञासे प्रेरित उस गीत विद्याधरने ४५ अपने मनमें चिन्तनाकी कि हमारे भयसे देखो वह मुनि कहीं नहीं दिखाई देता अब नहीं जानते कहांगया व कहांहै व क्या करता है ४६ इसप्रकार विचारकर उसने जानलिया कि ब्रह्माके पुत्र पुलस्त्यहैं व एकान्तमें वन में हैं इससे वह गीतविद्याधर शूकरकारूप धारण करके वहांगया जहांवहांसे जाकर पुलस्त्यजी तप करते थे ४७ वहां पहुँचकर तेजकी ज्वाला से युक्त मुनि को आसनपर बैठेहुये तपकरते देख उन महात्मा ब्राह्मणदेवकी चारों ओर घूमने लगा व जाकर ब्राह्मणोत्तम पुलस्त्यजी के अपने तुण्ड से पेटमें खोददिया पशु जानकर उन महात्मा मुनिने अपराध क्षमा किया४८।४९ फिर मूत्र और पेशाब किया नाच और क्रीड़ा किया फिर गिरपड़े और उठकर फिर चले ५० तब मुनिने पशुजानकर छोड़ दिया जब वह उसी रूपसे फिर आया ५१ व बड़ा अट्टहास मुनि के पास इसने किया व बड़े जोरसे रोदनकिया फिर सुन्दर स्वरसे गीतगाया ५२ उससे मुनिने जाना कि बस यह वही गीतविद्याधर नाम गन्धर्वहै उसका चेष्टित देखकर जाना कि यह शूकर नहीं है ५३ उसके वृत्तांतको जानकर मुनिने कहा देखो पशु जानकर हमने इसे छोड़दिया परन्तु यह दुष्ट अपनी दुष्टताही करताजाता है ५४ यह विचार महात्मा गन्धर्वाधमको महामति मुनिश्रेष्ठने क्रोधकर शापदिया ५५ कि जिससे तुमने शूकरका रूप धारणकर हमको इस रीतिसे तप से चलायमान किया इससे हे महापाप ! तू जाकर इसी शूकरी योनि में जन्मले ५६ जब उन मुनिने शापदिया तो

वह गीत विद्याधर गन्धर्व्व इन्द्रके समीप गया व हे वरानने! कांपताहुआ उनमहात्मा इन्द्रजीसेबोले कि ५७ हे सहस्राक्ष! हमारावचन सुनो हमने आपका कार्यकियाहै दारुण तप करतेहुये मुनियों में श्रेष्ठ पुलस्त्यजी को उस तपसे हमने चलायमान करदिया इससे उन्होंने शाप देकर हमारा देवरूप नष्ट करदिया ५८।५९ ऐसी दुष्ट पशुयोनि में गयेहुये मेरी रक्षाकरो उस गीत विद्याधरका सब वृत्तांत जानकर ६० उसकेसंग इन्द्रजाकर उनमुनि पुलस्त्यजीसे बोले कि हेद्विजोत्तम! इसके ऊपर अनुग्रह करो तुम सिद्धिके जाननेवालेहो ६१ जो इसने आपका पाप किया है क्षमा कीजिये व शाप छुड़ाइये इसप्रकार इन्द्र ने जब प्रार्थना किया तो प्रसन्नबुद्धि ६२ पुलस्त्यजी बोले कि हे देवेश! तुम्हारे कहने से हमने क्षमाकी महाबली मनुके पुत्र महाराज अयोध्याधिपति इक्ष्वाकुजी होंगे वे बड़े धर्म्मात्मा व सब धर्म्मोंके पालक होंगे उनके हाथ से जब इसकी मृत्यु होगी ६३।६४ तब यह फिर अपने गन्धर्व्व शरीरको पावेगा इसमें कुछभी संशयनहीं है॥

चौ० यहवृत्तांतसकलहमगावा। महाराज्ञि सो तुम्हेंसुनावा॥
अब अपनी पूरबजनि केरी। कहत कथा कुछ करब न देरी॥
सो निजपतिसँगसुनहुसुनयनी। जिमिहमपापकीनपिकबयनी॥
पूर्व्वजन्म महँ किय अति घोरा। यासों शूकरिभइउँकठोरा ६५। ६६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

दो० सैंतालिसयेंमहँ कह्यो कोलीराज्ञी पाहिं॥
पूर्व्वजन्मकीनिजकथादुर्गुणजासमनाहिं १

सुकला अपनी सखियोंसे बोली कि सर्व्वांगसुन्दरी सुदेवा उस शूकरीसेबोली कि हे शूकरि! तुम किसपापसे पशुयोनि में उत्पन्न हुई हो और संस्कृत कहतीहो १ इसप्रकार का ज्ञान कैसे हुआ हेशुभे! अपना और अपने स्वामी का चरित्र कैसे जानती हो सब हमसे कहो २ तब शूकरीबोली कि हे श्रेष्ठवर्णवाली! पशुके भावसे मोहसे

हम चुरालीगई हैं खड्गके व बाणोंके प्रहारों से समर में हम गिराईगई ३ हे वरानने ! इससे ज्ञानहीनहोकर मूर्च्छित होगई थीं हे सुन्दरि ! फिर तुमने अपने पुण्यहाथ से हमारा अभिषेक अतिपुण्य शीतलजल से किया सो तुम्हारेहाथसे स्नानहोनेपर हमारा मोहनष्टहोकर हमको छोड़कर कहीं चलागया ४।५ जैसे कि सूर्य्य के तेज से अन्धकार जातारहता है वैसेही तुम्हारे स्नानकरानेसे हमारे पाप सब चलेगये हेशुभे! ६ हे सुन्दर अङ्गोंवाली! तुम्हारे प्रसादसे हमको फिर पुरानाज्ञान होआया हे शुभे! अब हमने जाना कि पुण्यगतिको हम जायँगी ७ अब सुनो हम अपनेपूर्व्वजन्मका वृत्तांत कहतीहैं हे भद्रे! हम पापिनीने जो बहुत पाप किये हैं ८ कलिंग देशमें एक श्रीपुर नाम नगर है वह सब समृद्धियोंसे समाकीर्ण व चारोंवर्णोंके लोगों से सेवितहै ९ उसमें एक वसुदत्त नाम ब्राह्मण रहता था वह ब्रह्मचार में नित्यपर रहता व सत्य धर्म्म में परायण १० वेदवेत्ता ज्ञानवेत्ता पवित्र गुणवान् व धनी था व नानाप्रकारके धनों धान्यों से तथा पुत्र पौत्रों से अलंकृत था ११ हे भद्रे! हम उसी ब्राह्मण की कन्याथीं हमारे कई सहोदर भाई व अन्य बांधव बहुत थे व हे वरानने! अलङ्कार व शृङ्गारोंसे भूषित रहतीथीं १२ हे महामते ! हमारे पिता ने हमारा सुदेवानाम धराया था उन महामति अपने पिताको हम बहुतही प्रियथीं १३ व रूपमें तो ऐसी सुन्दरी थीं कि हमारे समान संसारमें कोई स्त्री न थी इसलिये रूप व यौवन से मतवाली होकर हम बहुधा हँसाकरें १४ व सब उत्तम भूषण धारण किये रहें इससे अत्यन्त शोभित रहतीं हमको देखकर सब हमारे स्वजन बान्धव लोगों ने १५ हम से प्रार्थनाकी हे वरानने ! अब तुम अपना विवाह किसी के सङ्ग करलो इस बातको सुनकर बहुत ब्राह्मणों ने आकर हमको मांगा परन्तु हमारे पिताने न दिया १६ हे महाभागे! वे हमारे पिताजी मारे स्नेह के मोहित थे इसलिये महात्मा हमारे पिताने किसी को हमको न दिया १७ हे बाले ! इतने में हमको बनाय युवावस्था होआई व हमारा वैसारूप देखकर हमारी माता बहुत दुःखित रहा करे १८ व हमारे पिता से कहे कि कन्या क्यों

नहीं किसी को देते किसी उत्तमब्राह्मण महात्माको क्यों नहीं देदेते
१९ हे महाभाग ! यह युवावस्था को प्राप्तहै इस कन्या को किसी
को दीजिये तब एक दिन द्विजों में उत्तम हमारे पिता वसुदत्तजी ह-
मारी मातासे बोले कि हे महाभागे ! हमारा वचन सुनो हे श्रेष्ठरङ्ग
वाली ! हम कन्या के महामोह से मूढ़ होगये हैं २० । २१ इस से
हे शुभे ! जो कोई ब्राह्मण आकर हमारेही गृहमें रहेगा उस जामाता
को कन्यादेंगे इसमें कुछ संशय नहीं है २२ यह सुदेवा हमारे प्राण
से प्यारी है इसमें सन्देह नहीं है इस प्रकार हमारे लिये वसुदत्त
हमारे पिता कहते भये २३ कि इतने में एक दिन कौशिक के कुल
में उत्पन्न सब विद्याओं में विशारद ब्राह्मणोंके गुणों से युक्त शील-
वान् गुणवान् पवित्र २४ वेदपाठसे सम्पन्न इस से सुन्दर स्वरसे
वेदको पढ़ते हुये भिक्षामांगने के लिये एक ब्राह्मणदेव आये उन के
पिता माता कोई नहीं था २५ उन रूपवान् को देखकर महामति
हमारे पिताने पूँछा कि तुम कौनहो २६ तुम्हारा नाम क्या है व
किस गोत्र व कुलमें उत्पन्नहो व तुम्हारा आचार कैसा है हमारे पि-
ताका ऐसा वाक्य सुनकर वे ब्राह्मणदेव वसुदत्तजी से बोले २७ कि
हम कौशिक के वंश में उत्पन्न हुये हैं व वेद वेदांग के पारगामी हैं
शिवशर्म्मा हमारा नामहै व पिता माता से विवर्जितहैं २८ हमारे
चार और भी भाई हैं सब वेद वेदांग के पारगन्ता हैं इसप्रकार अ-
पने कुलका सम्भव शिवशर्म्मा ने हमारे पिता से कहा तब जब शुभ
लग्न आया व उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र आया २९ । ३० हमारे पिता
ने उन ब्राह्मणको हमारा पाणिग्रहण वेद विधान से करादिया व उन
महात्मा अपने पति के सङ्ग हम अपने पिताही के गृहमें रहने लगीं
३१ परन्तु मुझ पापिनी ने ऐसे महात्मा अपने पतिकी सेवा कभी न
की क्योंकि पिता माता के धन के अहङ्कार से मोहित होगईथी ३२
उन महात्मा के अङ्ग तो कभी मैंने न मींजे व न रतिही उन के सङ्ग
प्रेमसे करतीथी और कौन कहे कभी स्नेह सहित वचनभी न उनसे
बोली ३३ बस उनको जब मैं देखूँ तो क्रूरही बुद्धिसे देखूँ ऐसी महापा-
पिनीथी यहांतक कि पुंश्चली स्त्रियों के सङ्ग बैठने उठने वार्त्तालाप

करनेसे मैं भी पुंश्चली होगई ३४ व माता पिता तथा स्वामी और अपने भाइयों का सिखाना कहना नहीं मानतीथी जहां मेरा मनहो वहीं चलीजाऊँ ३५ इसप्रकार मेरे पाप देखकर शिवशर्म्माजी मेरे महाबुद्धिमान् स्वामी श्वसुर वर्ग के स्नेह से कुछभी मुझको न कहैं क्षमाकरते रहें पर कुटुम्ब के लोग सब मुझपापिनी को रोकें ३६।३७ व महात्मा शिवशर्म्माका शील स्वभाव जानकर व मेरा दुराचार जानकर पिता माता अति दुःखित रहते ३८ तब हमारे पाप देख हमारे भर्त्ता एक दिन गृहसे कहीं चलेगये/वह ग्राम देश सब उन्होंने छोड़दिया ३९ जब मेरे भर्त्ता चले गये तो मेरे पिताने बड़ीचिन्ताकी मेरे दुःखों से ऐसे दुःखित हुये जैसे कोई रोगसे पीड़ितहोताहै ४० तब ऐसे दुःखित अपने पतिसे मेरी माता बोली कि हे कान्त! तुम क्यों बहुत चिन्ता करतेहो हमारे आगे अपना दुःख कहो ४१ तब वसुदत्त मेरे पिता मेरी मातासेबोले कि हे प्रिये! सुनो वह ब्राह्मण हमारा जामाता कन्या को छोड़कर कहीं चलागया ४२ व यह पापसमाचारों से युक्त होगई व महापापचारिणी व निर्दय होगई महामति शिवशर्म्मा पतिको इसदुष्टाने छोड़दिया४३जोकि सब कुटुम्ब भरमें परम चतुर विज्ञानी ब्राह्मणथा वह ब्राह्मण अपनी सुशीलतासे व हमारे स्नेहसे भी इस दुष्ट सुदेवाको कभी कुछ नहीं कहता था ४४ अपने सौम्य भावसे रहता न कभी इसकी निन्दा करता न कठोर वचनही कहता सुदेवा तो महापापिनी दुराचारिणी व वह ब्राह्मण बुद्धिमान् पण्डित ४५ अब कुलनाशनी यह दुष्टा सुदेवा कौन कर्म्म करेगी अब हम भी इसको छोड़कर कहीं चलेजायँगे ४६ तब मेरी माता ब्राह्मणी बोली कि हे कान्त! तुमने आज कन्याके दूषण गुणजाने यह तुम्हारेही स्नेह व मोहसे नष्ट हुईहै ४७ क्योंकि चाहे कन्याहो वा पुत्रहो तबतक उसका लाड़ प्यार करना चाहिये जबतक पांच वर्ष का न हो फिर उसे शिक्षाकी बुद्धिसे सदैव फिर मोहसे पालन करे ४८ हां स्नान भोजन वस्त्रादि कराने देनेमें पाप न करना चाहिये जो हो प्रीतिपूर्व्वक देना चाहिये और सुन्दर गुण सुन्दर विद्या सीखने के लिये उसे आज्ञादेकर युक्त करना चाहिये ४९ पिताको

चाहिये कि गुण सिखाने के लिये सदा पुत्र वा कन्या के ऊपर निर्मोह रहे हे कान्त ! पालन पोषण करने में प्रेम जान पड़ता है ५० व गुण के विषय में कभी पुत्रकी न प्रशंसा करनी चाहिये बरन प्रतिदिन ताड़ना करनी चाहिये व सदा कठिनता कह २ कर उसे घुड़कना धमकना चाहिये ५१ कि विद्या बड़े परिश्रम से आती है इस से रात्रिदिन श्रमकर ऐसे वचन स्नेहहीन होकर कहने चाहिये व यह कहना चाहिये कि अभिमान पाप दुराचारको दूरसे छोड़ जब इनको छोड़ेगा ५२ तब तू विद्या में और गुणोंमें निपुण होगा नहीं तो नहीं पिताको तो पुत्रको ऐसी ताड़ना के साथ सिखाना चाहिये व माताको चाहिये कि ऐसेही पांचवर्ष के ऊपर कन्याको ताड़ना देकर स्त्रियों के धर्म्म सिखावे व सासु अपनी बहूको सिखाती रहै व ताड़ना करती रहै ५३ व गुरु शिष्यको ऐसेही ताड़नाकरे तो कार्य्य सिद्धहो अन्यथा नहीं व पतिको चाहिये कि अपनी भार्य्याको ताड़ित कियाकरे व राजाको चाहिये कि अपने मन्त्रीको ताड़ित किया करे ५४ व वीरको चाहिये कि घोड़े को प्रतिदिन चलाया करे ऐसे ही हाथी को हथिवाल घुड़कता धमकता रहे बस इस रीति से शिक्षा करने ताड़नकरने व पालन करने से बुद्धि बढ़ती है ५५ हे नाथ ! इसको तुम्हीं ने सदैव नष्ट किया इसमें कुछ भी संशय नहीं है व तुम्हारेही संग उस शिवशर्म्मा ब्राह्मण ने भी इसे नष्ट किया ५६ क्योंकि उसने भी इसे निरंकुश करदिया बस इसी कारण से यह नष्ट भ्रष्ट होगई हे कान्त ! हमारा वचन सुनो कन्या को तबतक अपने गृहमें रखना चाहिये ५७ कि जबतक आठवर्ष की न हो बस इसके ऊपर पिताके घरमें रहने से कन्या प्रबल होजाती है इससे फिर उसे न रहने देना चाहिये क्योंकि पिताके गृह में रहकर पुत्री जो पाप करती है ५८ वह पाप माता पिता को होता है इससे समर्थ पुत्रीको अपने घरमें न रहने देना चाहिये ५९ बस जिसको देनाहो उसे देकर उसके घरको भेजदेना चाहिये जिस से कि वह वहां रहकर अपने गुणों से अपने पतिको भक्तिपूर्व्वक प्रसन्न करे ६० ऐसा होने से कुलकी कीर्त्ति होती है व पिता सुखसे जीता है

यदि वहां रहकर कुछ पाप करती है तो वह उसका पति भोगता है ६१ व वहां रहने से सदा पुत्रों पौत्रों से बढ़ती रहती है जब पिता कन्याके सुगुण सुनता है तो उसकी कीर्त्ति होती है ६२ हे कान्त! पति सहित कन्या को तो कभी न अपने गृहमें रखना चाहिये हे कान्त! इस अर्थ में एक पुराना इतिहास सुनाई देता है ६३ अट्ठाईसईं चौयुगी के द्वापरयुग में एक उग्रसेन नाम वीर यदुवंशियों में श्रेष्ठ हुये ६४ उनका चरित तुमसे कहती हैं हे द्विज! एकाग्र मन करके सुनो ६५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

दो० अड़तलिसें महँ है कही पद्मावती सुगाथ ॥
सत्यकेतुकी जो सुता उग्रसेन ज्यहि नाथ १

वह ब्राह्मणी सुदेवा की माता अपने पति वसुदत्तजी से बोली कि माथुर देश में जो मथुरा नाम नगरीहै उसमें उग्रसेन नाम एक यदुवंशी शत्रुओंके नाशकर्त्ता हुये १ वे सर्व्व धर्म्म व अर्थ के तत्त्व को जानते व वेदज्ञ बहुश्रुत व बली दाता भोक्ता गुणग्राही व सद्गुणों से युक्त राजा हुये २ वे मेधावी राज्यकरते व प्रजाओं को धर्म्म से पालते इसप्रकारके महाप्रतापी महातेजस्वी उग्रसेनजी ने ३ विदर्भदेश के राजा बड़े पुण्यात्मा सत्यकेतु नाम बड़े प्रतापीकी कन्या महाभाग्यवती कमलमुखी व पद्मनयनी ४ पद्मावती नाम जो कि सत्यधर्म्म में परायणथी उसके स्त्रियोंके सब उत्तमगुण थे जिस के समान उन दिनों में दूसरी कोई स्त्री न थी लक्ष्मी के समानथी ५ यह वैदर्भी सत्य कारण अपने गुणों से शोभित भई सो माथुरदेश के निवासी राजाउग्रसेन ने उस सुलोचना के सङ्ग अपना विवाह किया ६ व उसके सङ्ग सुखसे वे प्रतापी भोग विलास करने लगे उस के शुभगुणों से राजा बहुत प्रसन्न हुये व सदा सुखी होनेलगे ७ उसके स्नेह व प्रीतिसे वे मथुरा के अधिपउग्रसेनजी बड़े आनन्दि-

त होकर रहने लगे वह महाभाग्यवती पद्मावती उनके प्राणके समान प्रिय हुई ८ राजा उसके विना न तो भोजन करें न कुछ क्रीड़ा करें व विना उसके उनको सुख क्षणमात्र भी न मिले ९ इस प्रकार उन दोनों की परस्पर प्रीतिथी व दोनों आपसमें अतिस्नेह करते थे १० महाभाग राजा सत्यकेतु ने अपनी कन्या पद्मावती का स्मरण किया व उसकी माताने भी बहुत दुःखितहो अपनी कन्या का स्मरण किया ११ तब विदर्भ देश के राजा सत्यकेतु ने मथुरापुरी को दूत भेजे वे मनुष्यों में वीर उग्रसेनजी से आदर समेत जाकर बोले कि हे महाराज उग्रसेनजी ! हमलोग विदर्भ देशसे आये हैं विदर्भ देश के राजाने बड़ी भक्ति व स्नेह से आपको बहुत २ पूँछा है १२। १३ व अपना कुशल कहा है व आपका पूँछा है हे महाराज ! राजा सत्यकेतु ने बड़े स्नेह से यह कहा है कि यदि आपकी कुछ अप्रसन्नता न हो तो पद्मावती को देखने के लिये भेजदो सो हे नाथ ! जो तुम प्रीति स्नेह व हित मानतेहो १४ । १५ तो हे महाराज ! इस अपनी महाभाग्यवती प्रीतिरूपिणी को थोड़े दिनों के लिये भेजदो क्योंकि महाराज सत्यकेतु व उनकी रानी कन्या के देखने को बहुत चाहती हैं १६ यह वाक्य सुन राजाओं में उत्तम उग्रसेनजी ने महात्मा सत्यकेतु राजाकी प्रीति स्नेह के कारण अपनी स्त्री को उन दूतों के सङ्ग बिदा करदिया यद्यपि प्रतापी उग्रसेनजीको अपनी भार्य्या पद्मावती प्रियथी १७ । १८ पर क्या करें श्वशुर व श्वश्रू के स्नेह से बिदाही करते बना व महाराजके भेजने से पद्मावती अपने पूर्व्वके घरको बड़े हर्ष से गई १९ जाते २ प्रथम तो अपने पिता माता को फिर सब कुटुम्बके लोगों को देखा व शिर झुकाकर उस सत्यवतीने पिता के चरणों के नमस्कार किया २० व उसमहाभाग्यवती पद्मावती के आनेपर विदर्भ देशके राजा बड़े हर्षित हुये २१ व बहुत भूषण व उत्तम वस्त्रों के देनेसे अपनी कन्या को बहुत बढ़ाया व लालन पालन किया व पद्मावती सुखसे अपने पिता के घरमें रहने लगी २२ व अपनी सखियोंके साथ निश्शङ्क रहनेलगी व उनके सङ्ग जहां चाहे मनमानी घूमाकरे २३ जहां चाहे गृहमें वनमें

व तड़ागों के किनारे महलों में अपनी सखियों के सङ्ग घूमाकरे यहां तक कि मानों फिर पांचवर्ष की बालिका होगई निर्ल्लज्ज वैसेही घूमने लगी २४ हे विप्र ! सदा निश्शङ्क अपनी सखियों के सङ्ग हँसती खेलतीरहै यद्यपि वह पतिव्रता व महाभाग्यवती थी पर मारे हर्ष के जहां चाहे चलीजाय २५ पिता के घरके सुख श्वशुरके घरमें तो दुर्ल्लभ होतेही हैं इस विचारसे खुले बन्धन यथेष्ट सर्व्वत्र आया जाया करे २६ इस मोहभाव से क्रीड़ा में इतनी लोभिनी हुई कि सखियों के सङ्ग सदा वनों में व वाटिकाओं में ही बहुधा विहार कियाकरे २७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवा अध्याय ॥

दो० उग्रसेन दयिता तथा सत्यकेतु दुहिताउ ॥
गोभिलसँग भोगी उनचमयेंमहँ यह गाउ १

ब्राह्मणी बोली कि हे महाभाग ! एक समय वह एक पर्व्वत के ऊपर गई देखा तो कदली के खण्डों से मण्डित वहां का वन अति रमणीयथा १ जोकि शाल ताल तमाल के वृक्षोंसे व नालिकेरों से शोभित था पूगीफल मातुलिंग व सुन्दर जँभीरी निम्बूके तरुओं से विराजमानथा २ चम्पा कठचम्पा पाड़र डांड़ अर्क मन्दार कँदैल अशोक मौनश्रीआदि नानाप्रकार के वृक्षों से अलंकृत था ३ वह पुण्यवान् पर्व्वत सब ओरसे पुष्पित वृक्षोंसे शोभित था व सब कहीं नानाप्रकारके धातुओं से समाकुल था ४ वहांपर गोल एक बड़ा सुन्दर तड़ाग पुण्य निर्म्मल जलसे परिपूर्ण पुष्पित नानाप्रकारके कमलोंसे व सुवर्णके रंगके कमलों से शोभितथा ५ व श्वेतनीरज रक्त कमल नीलपंकज कुमुदआदि पुष्पोंसे मनोहरथा हंस जलकुक्कुट ६ कारण्डवआदि पक्षियों के शब्दों से कूजित था नानाप्रकार के अन्य जलजन्तुओं से समाकुल था व अनेक प्रकार की धातुओं से युक्त भी था ऐसा सब ओरसे सुन्दर तड़ाग था तीरपर पुष्पित नानाप्र-

कारके वृक्षोंपर नानाजाति के पक्षी बोलते थे ७ कोकिलों के सुन्दर स्वरसे उपशोभित व मोरोंके शब्दों से मधुर होरहाथा ८ भ्रमरों के नादसे सब ओरसे शोभित था इस प्रकारका रम्य पर्व्वत व उत्तम वन ९ तड़ाग उसने देखा व सखियों के संग क्रीड़ा करती हुई वैदर्भी पद्मावती १० सब ओर फूलोंसे युक्त पुण्यकारी वनको देखकर चपलता के प्रभाव से स्त्रीभावसे लीलापूर्व्वक ११ व तड़ाग में सखियोंके संग जलक्रीड़ा करती हुई बारबार हँसने व गानेलगी १२ सुखसे उस सरमें वह भामिनी क्रीड़ा करतीरही हे विप्र! वह बड़े सुखसे वहां स्थितरही १३ विष्णुभगवान् राजा वेनसे बोले कि उसी बीचमें गोभिलनाम दैत्य जोकि कुबेरजीका सेवक था दिव्य विमान पर चढ़ा व सब भोगविलास की वस्तु उसपर धरे १४ आकाशमार्ग होकर जाताथा उसने ऊपरही से निर्भय जलक्रीड़ा करती हुई विदर्भराजकी कन्या पद्मावती को देखा १५ जोकि सब स्त्रियों में श्रेष्ठ व उग्रसेन की प्राणप्रिया भार्य्या थी व रूपमें उसके समान लोकोंमें दूसरी योषित् न थी व सर्व्वांग सुन्दरी थी १६ यही जान पड़तीथी कि कितो कामकी स्त्री रतिहै वा श्रीहरिकी स्त्री लक्ष्मी हैं अथवा पार्व्वती देवीहो वा इन्द्राणीहो १७ जैसी स्त्रियों में उत्तम व वर यह दिखाई देतीहै अन्य ऐसी भूमण्डल में नहीं दिखाईदेती १८ नक्षत्रों के मध्य में जैसे पूर्णमासी का चन्द्रमा शोभित होताहै वैसेही यह वरानना गुणरूप व कलाओं से शोभित होतीहै १९ जैसे पुष्करों में राजहंस शोभित होताहै वैसेही यह चारुहासिनी शोभित होतीहै अहोरूप अहोभाव इसका देखाई देताहै २० किसकी यह शोभनबाला है जिसके सुन्दर व गोल मोटे कुचहैं ऐसा अपने मन से कहता हुआ श्रेष्ठ मुखवाली पद्मावती को अच्छी तरह देखकर वह गोभिलदैत्य २१ क्षणमात्र चिन्तना करके कहनेलगा कि भाई यह किसकी है फिर बड़े ज्ञानसे उसने जाना कि यह विदर्भदेशके राजाकी कन्या है इसमें कुछ सन्देह नहींहै २२ व उग्रसेनकी प्राणप्रियाहै और पातिव्रत धर्म्म में परायणहै अपने बलसे यहां स्थितहै व पुरुषों को बड़े दुःखसे मिलने के योग्यहै २३ उग्रसेन महामूर्खहै

जिसने ऐसी श्रेष्ठ स्त्रीको पिताके गृहमें भेजाहै वह उग्रसेन अब भाग्यरहित होगया है २४ इसके बिना कैसे जीसक्ताहै क्या सदैव कूटबुद्धि राजा नपुंसक तो नहींहै जो ऐसी स्त्रीको छोड़दिया है २५ तिसको देखकर गोभिलदैत्य तिसी क्षणसे [illegible] होगया यह पतिव्रता स्त्री पुरुषों को दुःखसे प्राप्त होने योग्यहै २६ कैसे हम जाकर इसको भोग करेंगे क्योंकि काम तो अतीव हमको पीड़ित करता है जो अब बिना इसके संग भोग कियेहुये हम जायँगे तो हमारा मरणही होजायगा २७ इसमें कुछ भी [illegible] नहींहै क्योंकि काम महाबली है इस प्रकार चिन्तासे युक्तहो वह मनसे सोचकर २८ उस दुष्टने मायासे राजा उग्रसेनजीका रूपधारण [illegible] जैसे सांगोपांग उग्रसेन थे वैसाही तद्रूप बनगया २९ व उसीप्रकार की चाल वैसाही बोल बनाकर गोभिल वहां गया जैसे उग्रसेनके वस्त्र व जैसा वेष व अवस्था थी वैसाही बनालिया ३० दिव्यमाला वस्त्र धारण किये दिव्यमाल्य व अनुलेपन लगाये सब आभरणों की शोभासेयुक्त जैसे मथुराके राजा उग्रसेन थे ३१ वैसाही होगया व उग्रसेनमय होके उससमय वह दैत्य परममायासे युक्तहो रूप व तरुणताकी सम्पदासे बनाय वैसाही हो ३२ पर्वत के ऊपर अशोक वृक्षकी छायामें बैठा शिलातलऊपर बैठकर उस [illegible] वीणा का दण्ड अपने हाथमें लिया ३३ व विश्वमोहन गीत सुन्दर स्वरसे गाने लगा वह गीत तालमान व लययुक्त था व निषादादि सातों स्वरोंसे युक्तथा ३४ सो वह दुष्टात्मा पद्मावती के रूपसे मोहित होकर गीत गाने लगा पर्वत के आगे स्थित हो व महाप्रहर्षसे युक्तहुआ ३५ उसका गाना सुन सखियों के मध्यमें प्राप्त श्रेष्ठमुखवाली पद्मावती सखियों से बोली कि यह कौन है जो ताल लयसहित गीत गारहा है यह तो जानो बड़ा धर्मात्मा है जो ऐसे स्वर तालमानसे गाताहै यह गीत तो सत्कार करने के योग्य है क्योंकि सब भावसे युक्त है ३६।३७ इतना कह वह राजकुमारी उत्सुकहोकर अपनी सखियों के साथ वहांगई व देखा तो अशोकवृक्षकी छाया में [illegible] शिलाके ऊपर बैठाहुआ वह दानवों में अधम मुकुट धारण किये पुष्पमाला

सुन्दर वस्त्र धारण किये व दिव्य गन्ध अनुलेपन किये ३८।३९ सब आभरणों की शोभासे युक्त उसे पतिव्रता पद्मावती ने बनाय समीप जाकर देखा तो अपने मनमें कहने लगी कि धर्म्मपरायण मथुरा-नाथ हमारेपति कब यहां आये हमारे महात्मानाथ राज्य छोड़कर इतनी दूर कैसे आये जबतक वह पतिव्रता विचारना चाहे तबतक उस पापी दुरात्माने ४०।४१ आतुर होकर उसको बुलाया कि हे प्रिये! यहां आओ तब वह बहुत चकड़ाई व शङ्कितहुई कि हमारा भर्त्ता यहां कैसे आया ४२ व लज्जित दुःखितहोकर उसने नीचे को मुख करलिया व मनमें कहनेलगी कि मैं पापिनी दुराचारिणी बड़ी निश्शंक ठहरी ४३ मुझको ऐसी धृष्ट देखकर ये महाभाग कोप करेंगे इसमें संदेह नहीं है जबतक वह ऐसा विचारने लगी तबतक उस पापीने ४४ आतुर होकर फिर बुलाया कि हे हमारी प्यारी! यहां आओ हे देवि! हे श्रेष्ठ मुखवाली! हम विना तुम्हारे अपने प्राण नहीं धारण करसक्के इससे यहां चले आये ४५ क्योंकि वहां तो जीही नहीं सक्के थे फिर राज्य कौनकरे तुम्हारे स्नेह के हम लुब्धहैं तुमको छोड़कर हम कहीं नहीं ठहरसक्के इसीसे यहां आये हैं ४६ ब्राह्मणी अपनेपति वसुदत्तसे बोली कि जब उसदुष्टने ऐसा कहा तो लज्जायुक्तहो अपना पतिजान उसके पास वह पतिव्रता गई व उस का मुख देख दुष्ट दैत्यको वह सती छपटी व अच्छी प्रकार आलि-ङ्गनकिया ४७ तब वह दैत्य उसे एकान्त में लेजाकर अच्छे प्रकार उसके संग इच्छापूर्व्वक भोगकिया इस प्रकार गोभिलदैत्य व राजा सत्यकेतुकी कन्या बड़े आनन्दसे रमे ४८ सुकला अपनी सखियों से बोली कि राजा उग्रसेन के कोई अण्डके स्थान में चिह्नथा जब उसे उसने न देखा तो झट उसने अपना वस्त्र धारण करलिया व शंकित तथा अतिदुःखित हुई ४९ व क्रोधयुक्त होकर दानवाधम गोभिलसे बोली कि हे पाप समाचार अधम! तू कौनहै क्या कोई दानवहै ५०॥

चौ० यह कहि शापदेन परबाला। उद्यतभै करिकोप कराला॥
वेपमान पीड़ित दुखभारा। दुष्ट दैत्यसों वचन उचारा ५१
दुष्टकीन मम प्रतिकर रूपा। छलसोंआयहुबानिममभूपा॥

पातिव्रत ममधर्म्म विनाशा । जोउत्तम सबलोक प्रकाशा ५२
वृथाकीन तुम जन्म हमारा । इमिकहि पुनि २ रुदनप्रचारा ॥
शापदानमहँपुनिमनकीना।गोभिलदुखितरुभयहुमलीना५३।५४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुकला चरित्रेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४६ ॥

पचासवां अध्याय ॥

दो० पचासयेंमहँ तो बहुत गोभिल भाष्यो धर्म्म ॥
पुंश्चलि भावारोपकिय कहि पद्मावति कर्म्म १

सुकला सखियों से बोली कि पद्मावतीका ऐसा वचन सुनकर गोभिल दैत्य उससे बोला कि आप मुझको क्यों शाप देना चाहती हैं इसका मुझसे कारण बतावें १ मैं किसदोषसे लिप्तहूँ जिसपर तुम शापदेनेपर उद्यतहुईहो हेशुभे ! मैं कुबेरका भट गोभिल नाम दैत्यहूँ २ अपने दैत्यके आचारसे बर्ताव करताहूँ उत्तम विद्याजानताहूँ वेदशास्त्रका अर्थ व कलाशास्त्रका अर्थ अच्छीतरह जानताहूं अब दैत्याचार मेरा सुनो पराया धन व पराई स्त्री बलसे सदा भोगता हूँ निर्बलता के साथ कभी नहीं भोगता ३ । ४ हम दैत्य हैं इसलिये हमको सदा दैत्योंकाही कार्य्यकरना चाहिये सो अपनी जातिके भावसे बर्तते हैं यह सत्यही तुमसे कहते हैं ५ हमलोग प्रतिदिन ब्राह्मणों के छिद्र देखा करते हैं व उनलोगों के तपकानाश विघ्नों से किया करते हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है ६ व फिर छिद्रही पाकर ब्राह्मणों का नाशभी करडालते हैं इसमें भी सन्देह नहीं है हे भद्रे ! हे श्रेष्ठमुखवाली! ब्राह्मणलोग सदा देवयज्ञ कियाकरते हैं ७ व इस से हम यज्ञों व धर्मयज्ञका नाशकरते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है परन्तु सुब्राह्मणों को व प्रभु नारायणदेवको छोड़कर अन्य ब्राह्मण व अन्यदेवों का नाशकरते हैं ८ व जो स्त्री पतिव्रता होती अपने पतिकी सेवामें सदा तत्पर रहती है इन सबोंको तो हमलोग दूर से बरादेते हैं इसमें भी संशय नहीं है ६ क्योंकि ब्राह्मण व महात्मा हरिका तथा पतिव्रता स्त्रीका तेज दैत्य कभी नहीं सहसके १० पति-

ब्रता के व विष्णु के व सुन्दर ब्राह्मण के भयसे सब दानव व राक्षस श्रेष्ठ तुरही से नष्टहोजाते हैं ११ सो हम [illegible] से महीतलमें विचरते हैं फिर क्यों तुम हमको दुःखदेना चाहती हो हमारा दोष तो विचारो १२ यह सुन पद्मावती बोली कि हमारा धर्म्म व सुन्दर शरीर तुम्हींने नष्ट किया व हम पतिव्रता व साधुहैं और पति के लिये सदा तप करती हैं १३ हे पाप ! अपने मार्ग पर स्थितथीं परन्तु तुमने मायासे हमको भ्रष्ट करदिया इससे हे दुष्ट ! तुमको हम भस्म करडालेंगी इसमें कुछ भी संशय नहीं है १४ यह सुन गोभिल दैत्य बोला कि हे राजपुत्रि ! जो आप मानें तो हम धर्म्मकी बात कहें वह धर्म्म अग्निमें नित्य हवन करनेवाले ब्राह्मण काहै १५ जो दोनों कालों में अग्नि में आहुति देताहै उससमय चाहे कोईभी कार्यलगे पर देवमंदिर को नहीं छोड़ता वह अग्निहोत्री होता है जो प्रतिदिन इसप्रकार से हवन करता रहता है १६ हे वरानने ! अब और भृत्योंका धर्म कहते हैं मन कर्म व वचन से भृत्यको सदा शुद्ध रहना चाहिये १७ व नित्य अपने स्वामीकी आज्ञाकरे पीछे व आगे बैठे वही भृत्य कहाताहै हे देवि ! जो ऐसा करताहै वही भृत्य पुण्य भोगता है इसमें संशय नहीं है यह भृत्यका लक्षण तुमसे कहा अब पुत्रका लक्षण कहते हैं १८ जो पुत्र शुभज्ञाता गुणवान् होकर अपने पिता का पालन करताहै व माताका पालन पितासेभी विशेष करताहै सो भी मनसा वाचा कर्म्मणा १९ उसको दिन२ गंगास्नान का पुण्य मिलताहै व जो इसके विपरीत करताहै माता पिताका पालन नहीं करता वह महापापी होताहै इसमें कुछभी सन्देह नहीं है २० अब उत्तम पातिव्रत धर्म्मका लक्षण कहते हैं हे सुन्दरि ! सुनो वचन से मनसे व कर्म्म से २१ प्रतिदिन पतिकी सेवा करे व भर्त्ता के प्रसन्न होने में आप प्रसन्न रहे कोप न करे २२ उसके दोष न ग्रहणकरे ताड़ित होनेपर भी सन्तुष्टही बनी रहै व पतिके सब कामों के करनेमें सदैव आगे स्थित रहै २३ उसी स्त्रीको पातिव्रत में परायण कहते हैं ऐसेही पुत्रों को चाहिये कि चाहे पिता पतितभी होगया हो व बहुतसे दोषों से युक्तभी हो २४ कोढ़ी वा क्रोधीहोपर

उसको कभी नत्यागे इसप्रकार जो पुत्र पिता माताकी सेवाकरते हैं २५ वे सर्वोपरि श्रीविष्णु भगवान् के परमपदको जाते हैं व इसीप्रकार भृत्यलोग जो अपने स्वामीकी सेवाकरते हैं २६ वे भी स्वामी केप्रसाद से पतिके लोकको जाते हैं व जो ब्राह्मण कभी अग्निहोत्र करना नहीं छोड़ता वह ब्रह्मलोकको जाताहै २७व जो अग्नित्यागी विप्रहै वह शूद्रीका पति कहाताहै व स्वामी को जो भृत्य त्यागताहै वह स्वामिद्रोही होताहै इसमें कुछ संशयनहींहै २८ इससे अग्नि पिता व स्वामी इनको कभी न छोड़े हे शुभे ! ब्राह्मण अग्निको पुत्र पिताको भृत्य स्वामीको न छोड़े यह हम सत्य२ कहते हैं २९ व जो कोई इनको छोड़ते हैं वे नरकको जाते हैं ऐसेही जातिभ्रष्ट रोगी विकल कुष्ठ रोगयुक्त ३० सब कर्म्मोंसेहीन व द्रव्यहीन व पतिकात्याग स्त्री कभी न करे जो अपना कल्याण चाहती हो ३१ व जो स्त्री अपने पति के विपरीत कार्य्य करनेकी इच्छा करती है वह पुंश्चली नारी के समान होती व सब धर्म्म कर्म्मोंसे बाहर समझी जातीहै ३२ व जो स्त्री पति के विदेशादि जानेपर भोग व शृङ्गार करती है व बहुत चन्दनादि सुगन्धित वस्तु धारण करतीहै वह भी पुंश्चली कहातीहै ३३ ऐसे वेदशास्त्रों से संस्कार कियेहुये धर्म्म हम जानते हैं अब जिस हेतु से दानव राक्षस व प्रेतोंको जो आदिसे ब्रह्माने बनायाहै ३४ तुमसे कहते हैं इसमें संदेह नहीं है जितने ब्राह्मण दानव पिशाच राक्षस हैं वे सब धर्मके अर्थ कहे गयेहैं और उन्होंने पढ़ाभी है सब सबके धर्म्म जानते हैं परन्तु दानव धर्म नहीं करते ३५।३६ इससे ज्ञान वर्ज्जित जो मनुष्य विधिहीन कुछ करते हैं वा अन्यायसे कोई कर्म्म करते वेदविधिसे नहीं करते ३७ उन दुष्ट अज्ञानियों को दण्ड देने के लिये हमलोगों को ब्रह्माजी ने बनायाहै इसीसे जो अधम नर विधिहीन धर्म्म करते हैं ३८ उनको हमलोग बड़े दण्डसे सिखाते हैं सो तुमने बडा दारुण व निर्घृण कर्म्म कियाहै ३९ गृहस्थाश्रमके कर्म्मको छोड़ यहां क्यों आईहो व अपने मुखसे कहतीहो कि हम पतिव्रता हैं ४० परन्तु तुम्हारा कोई कर्म्म हम पतिव्रता स्त्रीका नहीं देखते यदि पतिव्रता थी तो पतिको छोड़ यहां क्यों आई ४१ फिर

पति तो उतनी दूरपर बैठा है तुम शृङ्गार भूषण व वेष किसके लिये बनाये हो हे पापे! यह शृङ्गार किस लिये व किसके देखने के लिये किया है हम से कहो तो ४२ भला पतिव्रता स्त्री निश्शङ्क होकर कौन पर्व्वत व वनमें घूमेगी बस हमने तुम पापिनीको बड़े दण्ड देकर सिद्ध किया ४३ क्योंकि तू बड़ी अधर्म्मचारिणी दुष्टा है जो अपने पति को छोड़ यहां आई है वह पातिव्रत धर्म्म तेरा कहांहै हमारे आगे दिखावे तो ४४ तेरा तो पुंश्चली नाम ठीकहै क्योंकि तूने अपने पतिको छोड़ दिया क्योंकि जब स्त्री अपने पतिकी शय्या पर से अलग रही वही पुंश्चली कहाती है ४५ सो अलग शय्या को कौन कहै तू अपने पति से सौयोजन अलग चली आई है अब तेरा पातिव्रत धर्म कहां रहा हां पुंश्चलीका धर्म तो ठीक २ तुझ में दिखाई देताहै ४६ हे निर्लज्जे! हे निर्घृणे दुष्टे! क्या हमारे सम्मुख अपनेको पतिव्रता बताती है तपका भाव तेरे कहां है व तेज बल कहां है ४७ जो कुछ बल वीर्य्य पराक्रम हो हमको अभी दिखाव देखें तो कैसाहै यह सुन पद्मावती बोली कि हे असुराधम! सुन हमारा पिता स्नेहसे पति गृहसे अपने यहां लाया है इसमें कौन पाप हुआ न लोभ से न काम से न मोहसे न मत्सरसे ४८।४९ हम पतिको छोड़ कर यहां आई हैं हां अब हमारे पतिके रूपके बलसे तुझ दुराचारी ने छला ५० तुमको पति जान तुम्हारे सम्मुख हम गईं पर हे दानवाधम जैसेही तुझको हमने मायावी जाना ५१ अब एकही हुङ्कार से तुझको भस्म करती हैं तब गोभिल दैत्य बोला कि सुनो नेत्रहीन मनुष्य नहीं देखते ५२ फिर धर्म्म नेत्रों से रहित तुम हमको कैसे जानतीहो सुनो जब तुम्हारा भाव पिताके गृहमें रहनेको हुआ ५३ तब तुमने पतिका भाव त्याग दिया इससे तुम्हारा ध्यान पातिव्रत धर्म्मसे अलग होगया व ज्ञानसे तुम तभी नष्ट होगईं व तुम्हारा हृदय फूटगया ५४ तुम फिर ज्ञान नेत्रोंसेरहित होकर कैसे हमको जानती हो किसकी माता किसका पिता किसके स्वजन बांधव ५५ सब स्थानों में स्त्रीके लिये एक पतिही श्रेष्ठतर है इसमें संशय नहीं है ऐसा कह दानवोंमें अधम गोभिल हँसकर बोला ५६ कि हे पुंश्चलि!

तुम्हारा हमको कुछ भी भय नहीं है तुम्हारे शापसे हमारा क्या होगा जो तुम हमको देखहीकर कांपती हो ५७ हमारे घरमें चलकर मनोवाञ्छित भोगोंको भोगिये यह सुनकर पद्मावती बोली कि हे पापसमाचर निघृर्ण ! क्या बकताहै ५८ हम अब भी पातिव्रत में परायण सती के भावसेही स्थित हैं जो ऐसा कहेगा तो हे महापाप ! अभी तेरा वधकरूंगी ५९ जब पद्मावतीने ऐसा कहा तो वह एकान्तमें पृथ्वीपर बैठगया व बड़े दुःख से युक्त उस पद्मावती से बोला ६० कि शुभे तुम्हारे पेटके भीतर जो हमने अपना बीज स्थापित कियाहै उससे तीनों लोकों के चोभकरनेवाला पुत्र उत्पन्नहोगा ६१ ऐसा कह गोभिलदानव तो चलागया ॥

चौ० दुराचारि पापी दानव जब । गयहु तहां सों नृप तनयातब ॥
महादुःखयुत ह्वै त्यहिठामा । रोदनकरनलगीसोवामा६२।६३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरितेपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

दो० इक्यानयें महँ शूकरी पद्मावति पति पाव ॥
बहुरि सुदेवा त्यागकी कथाकही अतिचाव १

वह ब्राह्मणी अपने पतिसे बोली कि हे द्विजोत्तम ! जब दुराचारी पाप चित्तवाला गोभिल दैत्य चलागया तो बड़े दुःखसे युक्तहोकर पद्मावती रोदन करनेलगी १ हे द्विजोत्तम ! उसका रोना सुनकर सब श्रेष्ठमुखवाली सखियोंने उस राजकन्यासे रोदनका कारण पूंछा २ कि तुम्हारा कल्याणहो हमलोगों से बताओ क्यों रोतीहो महाराज मथुराके अधिपति कहांगये ३ जिन्होंने तुमको प्रियाकहकर अपने समीप को बुलायाथा इसका कारण सब हमसे कहो तब बड़े दुःखसे बार २ रोदन करतीहुई वह अपनी सखियों से बोली ४ व सब कहा जो बात अज्ञान से होगईथी तब वे सब कांपती और अत्यन्त दुःखयुक्तको पिताके गृहको लिवालेगईं ५ व उसकी माता के आगे उन स्त्रियों ने सब वृत्तान्त कहा इस बातको सुनकर वह रानी

अपने पतिराजा के समीपगई ६ व पति से सब कन्याका वृत्तान्त सुनाया उसे सुन राजा महादुःखी हुआ ७ व बहुतसे वस्त्र भूषणादि दे पालकीपर चढ़ाय कन्याको परिवारयुक्त मथुराको भेजदिया वह अपने पतिके मन्दिर में पहुँची ८ पिता माताने कन्याका दोष छिपा डाला व धर्म्मात्मा उग्रसेन ने देखा कि पद्मावती आई ९ देखकर बड़े हर्षितहुये व अपनी प्राणप्रिया पद्मावतीसे बोले कि हे वरानने! तुम्हारे विना तो हम जीहीं नहीं सक्ते १० हम तुम्हारे गुणोंसे व शीलसे और बड़ी दीप्ति से बहुत प्रसन्न हैं व तुम्हारी भक्तिसे और सत्यवाणीसे पातिव्रतके गुणोंसे अतीवप्रसन्नहैं ११ इसप्रकार पद्मावती अपनी प्रिया भार्य्या से कहकर राजा उग्रसेनजी उसके संग विहार करनेलगे १२ व पद्मावती का वह सबलोगों के भयदेनेवाला दारुण गर्भबढ़ा पद्मावती जानों उस गर्भ का कारण जानतीही थी १३ इससे अपने गर्भ में बढ़तेहुये उस बालक के विषय में रात्रिदिन चिन्ता किया करती थी क्योंकि यह जानती थी कि जो यह लड़का उत्पन्नहोगा तो तीनोंलोकों का नाश होगा १४ इस से इस दुष्टपुत्र से हमारा कुछ भी प्रयोजन नहीं है इसलिये गर्भपात कराने के लिये सब स्त्रियों से बहुधा ओषधियां पूछा करे १५ व महौषधियों को लेकर प्रतिदिन खायाकरे इसरीति से गर्भपात होने के लिये उसने बहुतसे उपाय किये परन्तु वह गिरा नहीं १६ बरन सबलोक भयङ्कर दारुण गर्भ बढ़ताही गया जब बनाय उत्पत्ति का समय आगया तो वह गर्भ अपनी माता पद्मावती से बोला १७ कि हे मातः! तुम क्यों प्रतिदिन ओषधियों के पीने से दुःखित होती हो पुण्य से आयु बढ़ती है व पापसे थोड़े दिन प्राणी जीताहै १८ अपने कर्म्म के विपाकसे प्राणी जीते मरते हैं कोई २ कच्चेही गर्भ से चलेजाते हैं कोई पापी जन्म लेकर तुरन्त मरते हैं कोई कुमारावस्थामें कोई ज्वान होनेपर कोई बाल कोई वृद्ध कोई तरुणही मरते हैं जिसकी जैसी आयुहोती वह उतने दिन जीताहै १९।२० बस सब अपने कर्म्मविपाकसे जीते हैं व मरते हैं ओषधियां मन्त्र व देवता मरण जीवन के निमित्त नहीं हैं इसमें संशय नहीं है २१ परन्तु

हमको आप नहीं जानती हैं कि हम जैसे हैं तुमने भी देखा सुना होगा कि कालनेमि बड़ा बलीथा २२ सब दानवों में महावीर्य्य व तीनों लोकों को भयदायी था सो हम कालनेमि दानव हैं देवासुर संग्राममें विष्णुसे मारेगये हैं २३ सो उनसे अपना वैर साधन करनेके लिये तुम्हारे उदरमें आये हैं सो तुम्हारा साहस हम ने सुना कि गर्भपात के लिये नित्य औषधियां खातीहो अब ऐसा न करो २४ हे द्विजश्रेष्ठ! इस प्रकार माताले कहकर वह गर्भ चुप होरहा व माता ऐसे उग्र गर्भको धारण करके महादुःखसे पीड़ित हुई २५ जब दशमास बीते तो वह महावृद्धिको प्राप्तहुआ पीछे उत्पन्नहुआ वही महाबली कंसहुआ २६ जिसने तीनोंलोकोंके निवासियों को व्याकुल करदिया व फिर वासुदेव भगवान् के हाथसे मारागया इससे मुक्त होगया इसमें कुछ संशय नहींहै २७ हे द्विजोत्तम! हमने ऐसा सुनाहै कि जो काल होनेवाला होगा वह होगा यह सब पुराणोंमें जो निश्चित कहाहै वह हमने तुमसे कहा २८ बस पिता के घरमें रहने से कन्या इसी प्रकार नष्ट होजाती है इससे अपने गृहमें रखनेके लिये कन्या का मोह न करना चाहिये २९ अब इस महापापिनी दुष्टाका परित्याग करके स्थिरहोओ नहीं तो लोकमें महा पाप व दारुण दुःख तो मिलेहीगा ३० हे कांत! आप हमारे साथ लोकमें कल्याणकारक भोग भोगिये तब शूकरी बोली ऐसा वचन अपनी स्त्रीका सुन वे द्विजोत्तम ३१ हमको बुलाकर बोले कि हमने तुम्हारा त्याग किया इतना कहकर हमारे पिताजी ने वस्त्र भूषणादि हमको बहुत दिया ३२ व कहा कि तेरेही दुराचार से द्विजों में उत्तम बुद्धिमान् शिवशर्म्मा चलागया हे दुष्टे! हे कुलदूषण करनेवाली! ३३ इससे जा जहां तेरा भर्त्ता है वहीं तू भी जाकर रह इस में संदेह नहीं है अथवा जहां का रहना तुझको प्रसन्नहो वहां जाकररह ३४ हे महाभागे! हे श्रेष्ठमुखवाली! पिता माता व सब कुटुम्बवालोंने ऐसा कहकर मुझको त्यागदिया तब निर्लज्ज होकर मैं वहांसे चलखड़ीहुई ३५ हे शुभे! परन्तु मैंने बहुतलोगोंसे रहनेकेलिये कहा पर कहीं रहने न पाई जैसेही मुझको देखें कहनेलगें

कि देखो यह पुंश्चली आई ३६ इस प्रकार कुलमान से वर्जितहो घूमती २ गुर्ज्जरदेशमें जो पुण्यकारी सौराष्ट्रदेशहै वहां एक शिव मन्दिर है वहां पहुँची ३७ वहां एक वनस्थल नाम अति प्रसिद्ध वृद्धियुक्त नगरहै वहां क्षुधासे अतिपीड़ितहुई ३८ तब हाथ में मिट्टी का खप्पर ले भिक्षा मांगनेलगी सबके गृहों के द्वारपर दुःखित होकर जाकर मांगूं ३९ जब मेरा रूप देखें तो सबलोग निन्दा करने लगें व कहें कि यह पापाचार करनेवाली आई व फिर भिक्षा भी मुझको नदें ४० इसप्रकारके दुःखों से समाक्रान्त व दारिद्र्य से पीड़ितहो एक दिन घूमती २ मैंने एक उत्तम गृह देखा ४१ वह सदन बड़ी भारी छहरदीवारीसे व बड़ेभारी खावांसे युक्त व वेद शालासे युक्तथा वेदध्वनि उसमें होरही थी व बहुत वेदपाठी विप्रों से भराथा ४२ धन धान्यसे समाकीर्ण व दासी दासों से शोभितथा लक्ष्मी से मुदित उस सुन्दर गृहमें मैं पैठी ४३ परन्तु वह गृह सब ओरसे कल्याणदायक उन्हीं शिवशर्म्माजी का था तब दुःखसे पीड़ित मुझ सुदेवा ने कहा कि भिक्षादो ४४ तब द्विजों में उत्तम शिवशर्म्माने भिक्षाका शब्द सुना व अपनी लक्ष्मीरूप श्रेष्ठमुखी मंगलानाम भार्य्यासे ४५ हँसकर कहा कि यह जोबड़ी दुर्ब्बल भिक्षा के लिये द्वारपर आईहै ४६ इसे बुलाकर हे प्रिये ! हे शुभे ! भोजन देदो तब परमकृपासे युक्तहो उसको आई हुई जानकर ४७ मंगला अपने पतिसे बोली हम प्रिय भोजन देवेंगी यह कह मंगलयुक्तहो मंगलाने ४८ अति मीठे भोजन सुदेवा को कराये जब मैं अच्छीतरह भोजन करचुकी तो महामुनि धर्मात्मा शिवशर्म्मा जी मुझ से बोले कि ४९ ॥

चौ० तुमहोकौनकहांसेआई । भ्रमतजगतमहँ किमिअकुलाई ॥
है तवकार्य्य कौन सबकाहीं । कहु हमसन यहँ कुछभयनाहीं ५०
इमिनिजपतिके सुनि शुभबैना । भाष्यहु जौन महा सुखदैना ॥
स्वरसेलक्षितकरि मैंपापिनि । जानेहुँनिजस्वामिहिसुनुभामिनि ५१
जबदेख्योंनिजपतितबलज्जित । भइउँबहुतविधिदुखसों मज्जित ॥
चारुसर्व्वतनु सुमुखिमंगला । बोलीपतिसों वचन श्रृंखला ५२

को यह तुम्हैं देखिभै व्रीड़ित । अति दुखसों मानो है पीड़ित ॥
कहहुकान्त हमसों समुझाई । यहहै कौन यहां किमि आई ५३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुकला
चरित्रेएकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

दो० बावनयें महँ नरकगत दुःखशूकरी गाथ ॥
लै राज्ञीकर पुण्यगै दिव्य स्वर्गयुत भाव १

सुकला अपनी सखियोंसे व शूकरी इक्ष्वाकु महाराज की रानी सुदेवा से बोली कि मङ्गलाका वचन सुन शिवशर्म्मा बोले कि हे मङ्गले ! जो तुमने इस समय पूँछा उसका उत्तरसुनो जिसलिये तुमने पूँछा है हे वरानने ! वह ऐसाहै १ कि यह बेचारी जो इससमय भिक्षुकीकारूप धारणकरके आईहै हे चारुलोचने ! यह वसुदत्त नाम विप्रकी कन्याहै २ सुदेवा इसका नामहै व हमारी प्यारी भार्य्या है ३ किसी कारणसे देश छोड़कर यहां आगईहै ३ व हेवरानने ! हमारे वियोगके दुःखसे जलीहुईहै हमको जानकर भिक्षुकी के रूपसे तुम्हारेगृहमें आईहै ४ ऐसा जानकर हे भद्रे ! इसका सुन्दर आतिथ्य तुमको करना चाहिये क्योंकि हमारी यही इच्छाहै कि इसका आदरभाव जो तुमसे होसके करो ५ ऐसा पतिका वचन सुन उस बड़े आनन्दयुक्त पतिव्रता मंगलाने ६ हमको स्नानवस्त्र और भोजन कराये रत्न और सुवर्णयुक्त गहने पहनाये७और हमसे अर्थात् सुदेवासे कहा कि हे भद्रे ! हमभी तुम्हारेही पतिकी कामनासे भूषित रहती हैं यह कहकर उसने नानाप्रकारके भूषणों से हमको भूषित किया व विविधप्रकारके भोजन कराये ८ व हमारे पति शिवशर्म्मा जीनेभी हमारा बड़ा मान व आदर किया हे भद्रे ! तब हमारे हृदय में सब प्राणनाशक महा तीव्र इतना दुःखहुआ जिसका अन्त नहीं है ९ उनका वैसामान व अपनी दुष्टताको देख हमारे ऐसी दारुण चिन्ताहुई कि अबतो हमारे प्राण निकलजाते तो अच्छाहोता १० क्योंकि मुझ पापिनीने कभी पतिसे सुवचन नहीं कहाथा वरन इन

विप्र श्रेष्ठकेसाथ पापही किया ११ न कभी इनका पैर धोया न मर्दन किया व न इन महात्माके संग कभी एकान्तमें शयनही किया १२ अब इन महात्मासे पापिनी मैं कैसे बोलसकूंगी उस रात्रिमें ऐसी चिन्ता करतीहुई मैं दुःखके सागरमें डूबगई १३ व ऐसी चिन्ता करतीथी कि मेरा हृदय फटगया व हे वरानने ! शरीरको छोड़ मेरे प्राण निकलगये १४ तब हाथोंमें गदा चक्र खड्ग धारण किये वीर दारुणक्रूर धर्मराजके दूत आये १५ और रोतीहुई अत्यन्त दुःखित मुझको दृढ़ बन्धनवाली जंजीरोंसे बाँधकर यमपुर लेगये १६ मुद्ग-रोंसे ताड़ितहुई दुर्ग मार्गसे पीड़ितभई यमराजके आगे डाटीगई और दूतोंने मुझे यमराजके पास पहुँचादिया १७ तो क्रोधयुक्त महात्मा यमराजने मुझे देखा और अङ्गारसंचय और नरकसंचयमें डालदिया १८ फिर लोहका पुरुष अग्निसे तपाकर अपने स्वामीके छलनेसे मेरेहृदयमें लगायागया १९ अनेकप्रकारकी पीड़ासे अत्य-न्त संतप्त और नरककी अग्निसे तापयुक्त हुई फिर करंभ बालूके ऊपर तेलकी नावमें छोड़ीगई २० तलवारके समान पत्तोंसे छिन्न भिन्न कीगई जलमंत्रसे वाहितहुई व मुझको छिन्न भिन्न करतेहुये यमपुरको लेगये फिर कूटशाल्मलिवृक्ष नरकमें महात्मा यमराज की आज्ञासे छोड़ीगई २१ फिर पीब रुधिर व विष्ठाके कुण्डमें जहां नानाप्रकारके कृमि भरेथे मुझको उसमें लेकरडाला हे राजकुमारि ! कहांतक गिनाऊं एकमें से दूसरे में डालतेहुये सब नरकों में मुझे यमदूतों ने डाला २२ जिनमें कि नानाप्रकारके तीव्र दुःख होतेथे खड्गलेकर बीचसे मुझको चीड़डाला शक्तियोंसे ताड़ित किया २३ अन्य सब नरकोंमें मैं गिराईगई फिर नानाप्रकारकी नारकी योनि-योंमें गिराईगई २४ व उन्हीं धर्म्मराजने सब नरकोंमें मुझको गिर-वाया फिर बगुलीकी योनिमें उत्पन्न होकर बड़े २ दारुण दुःख मैंने भोगे २५ फिर शृगालीकी योनिमें जन्मी फिर कुत्तीकी योनिमें जन्म पाया फिर मुरगीकी योनिमें फिर माज्जारीकी योनिमें फिर मूसकी योनिमें २६ इस रीतिसे जितनी पाप योनियांथीं सबोंमें मेरा जन्म हुआ जिन २ योनियों में जन्म लेनेसे बड़ी पीड़ा होती है धर्म्मराज

ने उन सबोंमें मुझको डलवाया २७ हे नृपनन्दिनि ! इसीक्रमसे मैं भूतलपर आकर शूकरीहुई पर हे महाभागे ! तुम्हारे हाथोंमें अनेक तीर्थ हैं २८ सो उन्हीं हाथोंसे मुझको तुमने स्नान कराया इससे हे श्रेष्ठवर्णवाली ! हे सुन्दरि ! हे देवि ! तुम्हारे प्रसादसे मेरे सब पूर्व्वजन्मके पाप जातेरहे २९ व हे वरानने ! तुम्हारेही तेजके पुण्य से मैंने ज्ञानपाया अब नरकसंकटमें पड़ीहुई मुझको उबारो ३० जो अब उद्धार न करोगी तो फिर दारुण किसी नरकयोनिमें जाऊंगी इससे हे महाभागे ! मुझ दुःखिनीकी रक्षाकरो ३१ पापभावसे मैं इसदशाको पहुँचीहूँ व और कोई मेरा रक्षक नहीं है जिसके शरण में जाऊँ यह सुन सुदेवा महारानी बोली कि हे भद्रे ! पूर्व्वजन्म में हमने कौन पुण्य कियाहै ३२ जिससे तुम्हारा उद्धार करें हमसे इस समय कहो यह सुन शूकरी बोली कि ये मनुके पुत्र महाराज इक्ष्वाकुजी ३३ साक्षात् महाबुद्धिमान् विष्णुभगवान्हैं व आप लक्ष्मी हैं इसमें संदेह नहीं है क्योंकि तुम पतिव्रता महा भाग्यवती व पातिव्रत धर्म्ममें परायणहो ३४ हे भद्रे ! जिससे तुम पतिव्रताहो इससे सर्व्वतीर्थमयीहो व स्वर्ग्गमें भी सर्व्वदेवमयी तुम थीं व अबभी सर्व्वदेवमयीहो ३५ क्योंकि इसलोकमें महापतिव्रताओं में तुम एकहीहो क्योंकि आप अपने भर्त्ताकी शुश्रूषा पुण्यके लिये सदा करती हैं ३६ हे देवि ! हे वरानने ! यदि तुम हमारा प्रिय करती हो तो पति सेवा का एक दिनकाभी पुण्य मुझको देदो ३७ मेरी मातापिता व सनातनी गुरु तुम्हींहो मैं तो पापिन दुराचारिणी झूठी व ज्ञानवर्जितहूं ३८ हे महाभागे ! अब मेरा उद्धारकरो क्योंकि मैं यमराज के दण्डोंसे बहुत व्याकुलहूँ सुकला अपनी सखियोंसे बोलीकि यह सुन महारानीने महाराजकी ओर देखकर कहा ३९ कि हे महाराज ! अब हम क्याकरें सुनो यह पशु शूकरी क्या कहती है यह सुन राजा इक्ष्वाकुजी बोले कि हे शुभे ! यह बेचारी पापयोनिमें पड़ी है ४० इससे इसका उद्धार अपने पुण्यों से करो तुम्हारा बड़ा कल्याण होगा जब इसप्रकार से चारु मङ्गलवती महारानी सुदेवासे महाराजने कहा ४१ तो उन्होंने उस शूकरी से कहा कि हे श्रेष्ठमु-

खवाली ! हमने जो पतिकी सेवाकीहै उसमें एक वर्षका पुण्य तुमको देती हैं जैसेही उन देवी महारानी जीने ऐसा कहाहै कि उसी क्षण ४२ रूपयौवन सम्पन्न दिव्यमालासे विभूषित तेज की ज्वालासे युक्त वह शूकरी दिव्य देहहोगई ४३ सब भूषणोंकी शोभा से युक्त व नानारत्नोंसे शोभितहुई दिव्यरूप होकर दिव्य गन्धानुलेपन से युक्त हुई ४४ व दिव्य विमान पर चढ़कर जा अन्तरिक्ष में होरही व वहीं से मस्तक झुंकाय प्रणाम करती हुई बोली ४५ कि हे महाभागे ! हे सुंदरि ! तुम्हारा कल्याणहो मैं तुम्हारे प्रसादसे पापोंसे छूटकर अति पुण्यतम शुभ स्वर्गलोकको जातीहूँ ४६ इसप्रकार महारानी के प्रणामकर सुदेवा स्वर्गको चलीगई ॥

चौ० सुकलानिजसखियनसोंबोली। वचनसुधासम अतिहिअमोली ॥
कहा सुदेवा चरित अनूपा । तुमसन हम बहुभांति सुरूपा ४७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेसुदेवास्वर्गारोहणंनामद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

दो० तिरपनयेंमहँ देवपति सुनि सुकला दृढ़ताइ ॥
मन्मथसम्मत दूतिका तहँ पठई सो जाइ १
यदपिकरी बहुयुक्तिपर सुकलापहँ न बिसान ॥
तासुवचन वेदान्तसों खण्ड्योसहित बिधान २

सुकला अपनी सखियोंसे बोली कि पुराणोंमें पूर्वसमय हमने ऐसा धर्म्मसुनाहै फिर पतिहीनहोकर अकेले भोगके पदार्थ कैसे भोजनकरके पापिनीहोवें १ इससे अब विना अपने स्वामीके जीव को शरीरमें धारण न करेंगी विष्णुजी बोले कि हे राजन् वेन ! इस प्रकार से उत्तम पातिव्रतधर्म्म सुकलाने कहा २ उसे सुन वे सब श्रेष्ठ स्त्रियां अति हर्षितहुईं व नारियोंको गति देनेवाला परमउत्तम पातिव्रत धर्म्म सुनकर ३ धर्म्मवत्सल महाभाग्यवती उस सुकलाकी सब स्तुतिकरनेलगीं वे सब स्त्रियां व ब्राह्मणलोग व सब देव भी उसकी स्तुति करनेलगे ४ उस सुकलाका ध्यान व पतिकी कामना

विचारकर इन्द्र अपने लोकमें बहुत प्रसन्नहुये ५ व सुकलाका परम भाव विचारनेलगे व फिर कहनेलगे कि इस सुकलाकाभाव व धैर्य्य हम पतित करावेंगे इसमें कुछ संशयनहींहै ६ तुरन्त देवराजने कामदेवका स्मरण किया जैसेही स्मरण किया है कि पुष्प का धनुष हाथ में लिये कन्दर्प वहां आगया ७ अपनी प्रिया रति को भी सङ्गही लाया व इन्द्रको देखकर दोनों हाथ जोड़ सहस्राक्ष से बोला कि ८ हे नाथ! इससमय मेरा स्मरण आपने क्यों किया जो कार्य्यहो सब भावसे आज्ञादीजिये ९ यह सुन इन्द्र बोले कि यह महाभागा सुकला पातिव्रतधर्म्ममें परायण है हे कामदेव! सुनो व इस विषय में उत्तम सहायकरो १० इस महाभागा पुण्यमङ्गला सुकलाको आकर्षितकरो तिस इन्द्रके वचन सुनकर कामनेकहा ११ देवराज बहुत अच्छा ऐसाही करूँगा इसमें संदेह नहीं है हे देव देवेश! तुम्हारे कौतुक के अर्थ सहायकरूँगा १२ ऐसा कह मुनियों से भी दुर्ज्जय महातेजस्वी काम कहनेलगा कि ऋषियों मुनियों सहित देवगणों के जीतनेमें मैं समर्थहूं १३ फिर हे देव! कामिनी के जीतनेमें क्या है जिसके अङ्गों में कुछ बलही नहीं होता क्योंकि हे देव! कामिनियों के अङ्गों में मैं निवास करताहूं १४ मस्तक कुच नेत्र व ग्रीवा के अग्रभाग में सदा रहताहूं व नाभि कटि पीठ दोनों मोटी जांघों में और योनिमंडलमें १५ ओष्ठ दांत व कांखोंमें मेरा वास रहताहै इसमें संदेह नहीं है अङ्गों और प्रत्यङ्गों में सबसे मैं रहताहूं १६ हे देव! नारी हमारा घर है सदैव तहां हम बसते हैं और वहां स्थित होकर सब पुरुषों को निस्सन्देह मारते हैं १७ स्त्री स्वभावहीसे हमारे बाणोंसे सन्तप्त रहती है पिता माता और स्वजन बान्धव रूपवान् गुणवान् को देखकर हमारे बाणों से हत हुई चलायमान होजाती है इसमें संदेह नहीं है विपाककी चिन्तना नहीं करती है १८।१९ व इसी कारणसे जब स्त्रियां किसी सुन्दर पुरुषको देखती हैं तो उनकी योनि से बीजयुक्त जल बहने लगता है इससे हे सुरराज! उस में कुछभी धैर्य्यनहीं है सुकला को मैं नाश करडालूँगा २० इन्द्रबोले कि हे काम! धनीगुणवान् व रूपवान् पुरुष हमहोंगे व कौतुकसे इस स्त्री

को चलायमान करेंगे २१ न काम से न डरसे न लोभसे न कारण से न मोहसे न क्रोधसे चलायमान करेंगे यह हम सत्य सत्य कहते हैं २२ तिसका बड़ा सत्यपतिव्रत हमको कैसे दिखाई देगा इससे जाकर आकर्षण करूंगा मोहही इस में कारण है २३ इस प्रकार कामदेव को आज्ञादेकर इन्द्रजी चले गये जो कि स्वभावही से रूपवान् गुणवान् हैं फिर सब भूषणोंकी शोभासे अंगयुक्त व सब भोग विलासकी सामग्री समेत भोगलीला से समाकीर्ण हो व सब प्रकार से उदारता युक्तहो इन्द्र २४ । २५ जहां वह पतिव्रतादेवी कृकलकी स्त्री सुकलाथी वहां अपनी लीला गुणरूप व भाव जाकर दिखाया २६ परन्तु उस ने इनकेरूप व धनसम्पदा की ओर देखाही नहीं जहां २ वहजाय वहां देखे तो इन्द्र आगे खड़े २७ व साभिलाष मनसे स्थित उन्हीं इन्द्रको देखे इन्द्र नाना प्रकारकी कामचेष्टाओं को दिखाते हुये २८ चौरहा व तीर्थ में जहां २ वह देवीजाय वहां दिखाई दें व सहस्राक्ष वहां उसको भी देखें २९ फिर इन्द्रने एक दूतीको भेजा वह उसके पास गई व महाभाग्यवती सुकलासे बहुत हँसकर बोली ३० कि अहोसत्य अहोधैर्य्य अहोकांति व अहोक्षमा इसके रूपकी तो कोई नारीही संसार में नहीं है ३१ हे कल्याणि ! तुम कौनहो व किसकी भार्य्या होवोगी व जिसकी तुम गुणवती भार्य्याहोगी वह पुरुष पुण्यवान् धनी पृथ्वी में होगा ३२ उसका वचन सुन वह मनस्विनी सुकला बोली कि वैश्यजाति में उत्पन्न धर्म्मात्मा सत्यवत्सल ३३ सत्यप्रतिज्ञ धीमान् एक कृकलनाम महानुभाव वैश्यहैं हम उन्हीं की भार्य्या हैं तुम से सत्यही कहती हैं ३४ सो सुधी धर्म्मात्मा हमारे भर्त्ता तीर्थयात्रा करनेको गयेहैं हे महाभागे! उन हमारे भर्त्ता को गयेहुये ३५ इस समय तीन वर्ष बीतगये हैं इससे उन महात्मा विना हम अत्यन्त दुःखित हैं ३६ यह सब हमने अपना वृत्तान्त तुमसे कहा व आप जो हमसे पूँछती हैं तो आप कौनहैं व क्यों हमको पूँछती हैं ३७ उसका वचनसुन वहदूती उससे आभाषणकर फिर बोली कि भद्रे ! हमको पूँछतीहो तो सब हम तुम से कहती हैं ३८ हे वरवर्णिनि ! हम तुम्हारे पास किसी कार्य्य के

लिये आई हैं सुनो कहेंगी व सुनकर उसे धारणकरो ३९ हे वरानने ! जो निर्दयी भर्त्ता तुमको छोड़कर चलागया उसको लेकर तुम क्या करोगी ४० व सुंदर आचारसमन्वित तुमको छोड़कर जो पापी चला गयाहै हे बाले ! अब नहीं जानतीं कि कहीं मृतक होगया वा जीता है ४१ व जो हो तुम उस पापीका क्या करोगी हमारी जान तो आप बिन प्रयोजन खेद करती हैं अपने इन दिव्य सुवर्ण समान दीप्ति वाले अंगोंको क्यों नष्ट करतीहो ४२ बाल्यावस्थामें मनुष्य इस सुखको नहीं पाता जोकि युवावस्थामें पाताहै क्योंकि बाल्यावस्था में शरीरमें बलतो रहताही नहीं इससे क्रीड़ाका सुख उसको नहीं मिलता ४३ वैसेही वृद्धावस्था में भी क्रीड़ाका सुख नहीं मिलता क्योंकि बुढ़ापाके मारे सब इन्द्रियां शिथिल होजाती हैं इससे हे वरानने ! सब सुख व भोग तरुणावस्थाही में भोगे जाते हैं ४४ जबतक तरुणता रहती है तभीतक मनुष्य भोग विलास करते हैं व सुख भोगादि सब में अपनी इच्छासे मनुष्य क्रीड़ा करता है ४५ जबतक तरुणता है तभीतक भोगभी हैं सो हे भद्रे ! जब तारुण्यावस्था चलीजायगी तो फिर क्या करोगी ४६ हे देवि ! जब वृद्धावस्था आवेगी तो कुछभी कार्य्य न सिद्धहोगा क्योंकि वृद्ध सुख करनेकी इच्छा करता है परन्तु कुछ कार्य्य तो उससे होताही नहीं सुख कैसे करे ४७ जैसे जब वर्षा होजाती है तब सेतुका बांधना वृथा होता है वैसेही तारुण्य बीतजाने पर सुख करने का अनुभवहै ४८ इससे सुखभोगो व मधुपानभी आनन्दसे पान करो हे चारुलोचने ! देखो ये कामबाण तुम्हारे अंगोंको जलाये देतेहैं ४९ रूपवान् गुणवान् धनी व युवा यह पुरुष तुम्हारेलिये आया है यह पुरुष सर्व्वज्ञ व पुरुषोंमें श्रेष्ठहै ५० व हे वरवर्णिनि ! तुम्हारे अर्थ सदा स्नेहहीकेसाथ रहना चाहताहै यह सुन सुकला बोली कि जीवको न बाल्यहै न कभी तरुणताहोतीहै ५१ बुढ़ापाभी नहीं होता अपने आप सिद्ध अच्छी सिद्धि का देनेवाला अमर बुढ़ापारहित व्यापी अच्छा सिद्ध सब जाननेवाला ५२ कामरहित संसार में कामना का देनेवाला आत्मरूप से वर्तमान है जैसे घरका संस्थान है तैसेही

देहका दिखाई देनाहै ५३ जैसे वृद्धावस्थासे देह तैसेही सूत्रसे मन्दिर है अनेकों काष्ठ समूहों से नानाप्रकार के काष्ठ समुच्चयोंसे ५४ मिट्टी और जलसे चारोंओर से बनायाजाता है लेपन करनेवालों से घर लीपाजाताहै चित्र बनानेवालों से काष्ठचित्र होताहै ५५ पहले रूपको प्राप्त होताहै और सूत्रसे घर सूत्रित होताहै फिर दिन दिन में लेपनसे अपने आप पुष्टहोताहै ५६ नित्यही पवन से घर मलिन होजाता है मध्यम वर्तुतकाल घरका कहाता है ५७ तिस घरकी रूपहानि होतीहै तो घरका स्वामी अपनी इच्छा से लिपाता है तब रूपवान् घर होजाताहै ५८ हे दूतिके ! तिस घरकी युवावस्था कही फिर काष्ठसमूहों से बहुत काल में पुराना होजाता है ५९ स्थान से भ्रष्टहोकर इन्द्रियां अलग २ होरहती हैं इससे बल व भार को नहीं सहतीं बस इसी को देह की वृद्धता कहते हैं हे दूषण करनेवाली ! जब गृहको गिरताहुआ जानताहै तो गृहका स्वामी उसे छोड़देताहै ६० । ६१ व दूसरे घरको शीघ्रही चलाजाता है तैसेही बाल्य तारुण्य व वृद्धता ये सब क्षणिक हैं ६२ बाल्यावस्था में ज्ञानहीन होने से बालरूप रहता है केवल वस्त्र अलंकार भूषण व सुन्दर शरीरकी इच्छा करताहै ६३ व चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओंके लेपन व ताम्बूलादि के भक्षणकी इच्छा करताहै जब शरीर तरुणताको पहुँचता है तो अतिरूप होजाता है ६४ तब बाहर व भीतर सब कहीं रसों से उसे पुष्टकरताहै उस पोषणभावसे शरीर पुष्टहोजाता है ६५ व गण्डस्थल पृष्ठ उदर इत्यादि में मांसकी वृद्धि होजाती है ऐसेही और भी सब अंग वृद्धिको प्राप्त होते हैं ६६ इसीप्रकार प्रत्येक अंग रसयुक्त होनेसे रूपवान् दिखाई देने लगते हैं व हे दूतिके ! दन्त ओष्ठ स्तन बाहु कटि पीठ दोनों जंघा ६७ हाथ और पादतल ये सब बढ़जाते हैं व रस मांस दोनों के बढ़ने से सब अंग बढ़ते हैं ६८ व तभी सब अंग स्वरूपयुक्त होते हैं व उन्हीं स्वरूपों से मनुष्य रसबद्ध होताहै ६९ फिर लोक में स्वरूप कौन पदार्थ कहाजाताहै हे दूतिके ! यह शरीर तो विष्ठा व मूत्रका स्थानहै ७० इससे महाअपवित्र वस्तु शरीर है क्योंकि दिन रात्रि

इससे निर्घृण मल मूत्रादि चुआकरते हैं सो हे शुभे ! जलके बुल्ले के समान नश्वर इस शरीर का रूप कैसे वर्णन करती है ७१ जब तक पचासवर्ष नहींबीतते तबतक यह शरीर दृढ़ रहताहै पीछे फिर दिन २ प्रति हीनही सब अंग होतेजाते हैं ७२ दांत शिथिल होजाते हैं व मुखसे राल टपकने लगती है नेत्रों से दिखाई नहीं देता न कानों से सुनाई देताहै ७३ व हे दूतिके ! पैरों से चला नहीं जाता न हाथों से कुछकर्म करसक्ताहै जराकालमें पीड़ितहोकर यह शरीर नष्ट होनेपर आजाता है ७४ वह सब रस वृद्धता के अग्निसे सूख जाताहै फिर सब कुछ करने में असमर्थ होजाता है फिर हे दूतिके ! रूपत्व इसमें कैसे है ७५ जैसे जीर्णगृह क्षय होजाताहै इसमें सन्देह नहीं है वैसेही वृद्धावस्थामें जीर्णशरीर भी नष्ट होजाता है ७६ फिर हमारे रूपको क्या बार २ वर्णन करती है किस कारणसे हमको रूपयुक्त जानती है ७७ जैसे जीर्णघर त्राताहै वैसेही शरीर भी त्राता है व किससे इस पुरुषको बली मानती है जिसके अर्थ तू आई है उसकी कौनसी प्रशंसनीय बात है ७८ व हमारे अङ्गोंमें तुमने कौनसी विलक्षणता देखी इस समय हमसे कह तिसके अङ्गोंसे अधिक वा हीन नहीं है ७९ बस जैसे तेरे अङ्गहैं वैसेही इस पुरुषके व वैसेही हमारे इसमें सन्देह नहीं है फिर किसमें रूप नहीं व भूतलमें रूपवान् नहींहै ८० हे शुभे ! जितने ऊँचे वृक्ष व पर्वतहैं सबका अन्त गिरपड़नाहै ऐसेही कालसे पीड़ित होकर सब प्राणी अन्तमें नाशको प्राप्तहोते हैं ८१ हे दूतिके ! है अरूप पर रूपवान् होकर दिव्य आत्मा पवित्र सबमें टिकाहै सब स्थावर व जङ्गमों में आत्मा वही है ८२ सबों में एक वही शुद्ध आत्मा विद्यमानहै जैसे छोटे बड़े चाहे जैसे घटमें जल भराहो पर वह अकेला शुद्धस्वरूपहै कुछ अन्य२ कुम्भमें भरनेसे और नहीं होजाता व अन्तमें जब घट फूट जाते हैं तो फिर वही अकेला शुद्धजल दिखाई देताहै इस बातको तू नहीं समझती ८३ पिण्डों के नाशसे ऐसेही आत्माभी एक रूप होजाताहै हमने एकहीरूपसे संसार में बसेहुये आत्माको सदा देखा है ८४ सो जिसके लिये आईहै उससे जाकर ऐसेही कहदे कि जो

हमारे सङ्ग भोग किया चाहताहो तो कुछ अपूर्वता दिखावे ८५ सुन जब व्याधि से प्राणी पीड़ित होताहै तो कफसे युक्तहोताहै अङ्ग से रक्त चलायमान होताहै तब स्थानसे भ्रष्ट होजाताहै ८६ सब अङ्ग सन्धियों में भीतर मांस है कफसे नाशको प्राप्त होजाता है अपने रूपको छोड़देताहै ८७ तब शीघ्रही कृमियों से युक्त विष्ठाके भावको प्राप्तहोजाताहै तैसेही दुःख करनेवाले अपने रूपको जब परित्याग करताहै ८८ तब पीछेसे दुर्गन्धयुक्त कीड़ा होताहै व फिर यूका वा कृमि योनियोंमें उत्पन्न होताहै इसमें सन्देह नहींहै ८९ व जबतक नरकों में पड़ा रहताहै तबतक कृमि नानाप्रकारके खजुलीआदि दारुणदुःखदेते हैं शरीरमें व्यथा उत्पन्न करातेहुये वे यूका उसे इधर उधर छटपटवाते हैं ९० वह खजुली नखों से खजुवानेसे कुछशान्त होजाती है तैसेही भोगकी सुनिये इसमें सन्देह नहीं है ९१ अच्छे रसों को मनुष्य भोजन करता पीछे से पान करताहै तो प्राणवायु पाकस्थान को लेजाती है ९२ जो प्राणी भोजन करते हैं तो फिर पाकस्थानको प्राप्तहोजाताहै तब वायु सब मलको गिरादेतीहै ९३ सारभूतरसका रक्तहोजाताहै व जो निर्म्मल शुद्धवीर्य्य होताहै वहतो ब्रह्मस्थानको चलाजाताहै ९४ व जो यहां औरोंको दुःखदेताहै वह अपनेहीसमान दुष्टकृमिसे व्याकुल हुआकरताहै एक स्थान पर उस का वीर्य्य नहीं रहता चञ्चलताको प्राप्त रहताहै ९५ व बहुधा सब प्राणियोंके शिर में पांचकृमि सदा रहते हैं दोतो कर्णमूलोंमें व दो नेत्रोंमें ९६ ये कनिष्ठिका अंगुली के समान होतेहैं लाल इनकी पूँछ होती है हे दूतिके ! व एक नैनूके रङ्गका होताहै व काली उसकी पूँछहोतीहै इसमें संशयनहीं है ९७ हे भद्रे ! उन सबों के नाम कहती हुई हमसे सुन पिङ्गली व शृङ्खली नामके दो कृमि कानों के मूलोंमें रहते हैं ९८ चपल व पिप्पल ये दो कृमि नाकके अग्रभाग में रहते हैं व शृंगली व जंगली ये दोनों नेत्रोंमें रहते हैं ९९ व डेढ़सौ कृमि पुरुषों के माथेके अंत में राई के प्रमाण से रहते हैं १०० सब नि-स्संदेह मस्तक रोगी करते हैं दो बाल तिसके मुखमें विद्यमान रहते हैं १०१ उसी क्षणमें प्राणियों का नाश जानो इस में संदेह नहीं है

अपने स्थानमें स्थित प्राजापत्य के मुखमें १०२ वह वीर्य रसरूप से निस्सन्देह गिरताहै मुख से वीर्य पीताहै तिससे मत्त होजाता है १०३ व तालुस्थान में अतिचञ्चल होता है व जिह्वाके नीचे सूक्ष्म रूपसे इडा व पिङ्गला व सुषुम्णा नामकी तीन नाड़ियां रहती हैं १०४ ये तीनों नाड़ियां चलाकरती हैं व हे दूतिके! सब प्राणियों के कन्दर्प्प में बड़ी भारी खजुहट होती है १०५ इससे पुरुषका लिंग खजुलाने लगताहै व स्त्रीकी योनि जब स्त्री पुरुष दोनों प्रमत्त होजाते हैं तब दोनोंका संगम होताहै यही इसकी व्यवस्था है १०६ ॥

चौ० काय कायसों घर्षण करईं। मैथुन समुझि मोदमन भरईं ॥
नाहिं अपूर्व्व मिथुन महँ कोई। व्यर्थ नारि नर प्रमुदित होई ॥
मो महँ नहिं अपूर्व्व विधि कोई। यासों मैथुन सुखद न होई ॥
मैंनहिंकरहुँकबानिविधिपाहीं।जायकहसिक्किनपहुँचितहांहीं १०७.१०८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

दो० चौवनयें महँ दूतिके सुनिकै वचन सुरेश ॥
ताहि कामरति संगलै गे सुकलाके देश १

श्रीविष्णु भगवान् राजा वेनसे बोले कि जब सुकलाने ऐसाकहा तो वह दूती चलीगई व संक्षेपरीति से उसके वचन कहे सुनकर व विचार करके इन्द्र १ सत्यधर्म्मयुक्त सुकला के वचन मन में गुन कर व उसका साहस व धैर्य्य ज्ञानदेख जानकर २ दूती से बोले कि नारीहोकर ऐसा वचन भूतलमें कोई भी न कहेगी क्योंकि सब उस के वचन योगरूप संसिद्ध व ज्ञानजलसे धोयेहुये हैं ३ यह महाभागा सत्य रूप पवित्र है इसमें कुछ भी संशय नहीं है यह तो सब त्रिलोकीको धारण करसक्ती है ४ यह विचार करके इन्द्र कामदेवसे बोले कि तुम्हारे साथ हम उस कृकलकी प्राणप्रिया को देखने चलेंगे ५ तब बलसे दर्पित मन्मथ इन्द्रसे बोला कि हे देवेश! जहां वह

पतिव्रता है वहां चलो ६ पहुँचतेही हम उसका मान वीर्य बल धैर्य्य सत्य पातिव्रत धर्म्म नाश करदेंगे हे सुरेश्वर ! यह प्रतिज्ञा करके कहते हैं ७ कामका ऐसा वचन सुन इन्द्र बोले कि हे कामदेव ! सुनो हमारे विचार से तुमने बहुत अधिक कहा ८ क्योंकि हमने भी उसे देखा है कि सत्य वीर्य्य व धर्म्म कर्म्मों से युक्त रहती है इससे इस सुकलाको तुम नहीं जीतसक्के वहां तुम्हारा कुछभी पौरुष न चलेगा ९ यह सुन अतिक्रुद्ध हो काम सहस्राक्ष से बोला कि हमने ऋषियोंका व देवताओंका बल नष्ट करदियाहै १० फिर इसका बल कितना है आप देखें हम मन्थनकरते हैं कि नहीं हेदेवेश ! तुम्हारे देखतेही देखते उस स्त्रीका नाश करडालेंगे ११ जैसे नवनीत को अग्नि पिघलादेताहै वैसेही हम अपने तेज व रूपसे उसे पिघलादेंगे १२ इससे चलिये व इससमय उपस्थित महाकार्य्य हमारा देखिये तीनों लोकों के नाशनेवाले हमारी निन्दा क्यों करतेहो १३ विष्णुभगवान् राजावेनसे बोले कि कामका वाक्य सुनकर जाना कि यह काम से असाध्य नहीं है व यहभी विचारा कि अच्छा उस धैर्य्यवती पतिव्रता पुण्यशील के दर्शन होंगे १४ फिर काम से कहा कि अच्छा अब चलकर तुम्हारा वीर्य्य बल देखते हैं यह कह काम व रति व उस दूतीके संग इन्द्र तिस पतिव्रता के वहां गये १५ जहां कि अकेली पुण्यशीला पतिव्रता सुकला अपने पतिका ध्यान करतीहुई अपने गृहमें टिकी थी वह अपने पतिकाध्यान ऐसे करतीथी कि जैसे योगीलोग अतिगोप्य परमेश्वरका करते हैं १६ मदन अतिमोहन रूप धारणकर व लीलायुक्त भोगसहित पुरन्दरको आगेकर वहां को चला व जाकर पहुँचा अतिमनोहर रूप धारण किये काम व इन्द्रको कृकल वैश्यकी पतिव्रता स्त्री सुकलाने देखा १७ । १८ जिसकी शोभा इन्द्रके साथ ऐसी होतीथी जैसी कि कमलों के संग जल की होती है तैसेही सत्ययुक्त स्वभाव तिस पतिव्रता का हुआ १९ देखतेही सुकलाने जानलिया कि इसी पुरुषने प्रथम दूती भेजी थी जो स्त्री इनको गुणका जाननेवाला कहतीथी लीला स्वरूप बहुधा आत्मभाव हमको यह सब दिखाता है २० हमको प्रबल काल

चिन्तनाकर दुष्ट हमारे पतिके गुणोंसे आयाहै रति समेत यह मुझ सतीके पत्थरके भावसे मर्दित कैसे जीवेगा २१ मेरा भाव ग्रहणकर अच्छी बुद्धियुक्त कांत क्या जीताहै हमारा शरीर तो कामादिकों से शून्यहै इससे कुछ चेष्टाही नहीं करसक्ता जैसे कि मृतक कुछ नहीं करसक्ता २२ हां कामके ग्राममें रहनेवाली जो सकाम प्रजाहोंगी वे भले नष्टहोंगी हमारे शरीरमें तो पतिके वियोगसे कामही नहीं है फिर हमारा कोई क्या करेगा क्योंकि जबतक प्राणी जीता रहता है तभी तक जो चाहे करे करावे फिर मरनेपर मृतक शरीर लेकर कोई क्या करसक्ताहै इससे जो यह हमारे संग भोग किया चाहताहै इससेभी अवश्य वार्त्ता करनी होगी पर अभी नहीं २३।२४

चौ० इमिविचारिसोसतीसयानी । गृहप्रवेश निजकीन सुठानी ॥
नियमजानि ताकेमघवाना । तहँथिररहेन कछु कियआना २५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलचरित्रेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

दो० पचपनयें महँ इन्द्रकहि सती कथा बहुमार ॥
समझायहुपुनिमदननिजसैन्यहिदीनप्रचार १

श्रीविष्णु भगवान् वेन से बोले कि सुकला का अभिप्राय जानकर देवराज कामसे बोले कि हे मदन ! तुम्हारी सामर्थ्य नहीं है कि इस पतिव्रताको जीतसको क्योंकि यह ध्यानयुक्त है १ व यह धर्म्मरूप धन्वा अपने हाथ में लिये है व ज्ञान नाम बाण उसपर चढ़ायेहै व युद्ध करनेके लिये यह पतिव्रता सन्नद्ध है जैसे कि समर में अच्छे वीरलोग निर्भय होकर युद्ध करने को सन्नद्ध होते हैं २ इसने तो अपने तेजसे सबको जीतलिया हे पुत्र! अब तुम अपना पौरुषकरो हमतो जानते हैं कि यह तुम्हारे जीतनेमें इस समय समर्थ है इससे अच्छे प्रकार शोच विचारकर युद्ध करने में उद्यत होना चाहिये ३ क्योंकि तुमने पूर्व्व समय में महात्मा शम्भुजीसे विरोध कियाथा तब उन्होंने भस्मही करडालाथा उसका फल यह

हुआ कि तबसे तुम अनंग सत्यही होगये ४ जैसे तुमने पूर्व समय में कर्म किया था तैसेही तीव्रफल प्राप्तहुयेथे निश्चय इसपतिव्रताके साथ निंदित योनिको प्राप्त होगे ५ जे ज्ञानवान् पुरुष तीनोंलोक में महात्माओंके साथ वैर करते हैं वे पापही भोगते हैं दूसरे नाना प्रकारके दुःख भोगने पड़तेहैं व रूपका भी विनाश होताहै ६ इससे अच्छा होगा कि हम तुम दोनों इस महापतिव्रता को छोड़कर अपने स्थानको चलेचलें क्योंकि पतिव्रताके संग भोग करनेका असह्यपापमय फल हम एकबार पाचुके हैं ७ वह चरित्र तुम भी जानते हो गौतमजी ने शाप दियाथा उससे नपुंसक होगयेथे व तुम हमको वहीं छोड़कर भागगये थे ८ पतिव्रताओं के तेजका प्रभाव अतुल होताहै उसके नष्ट करनेको ब्रह्मा व सूर्य्यभी नहीं समर्थ होसक्ते पूर्व्वकाल में अनसूया पतिव्रताके शापसे सूर्य्य को कुष्ठरोग होगया था यद्यपि सूर्य्य ने अनसूयाके पति अत्रिजी का अपराध किया था अपने भर्त्ताकी ओर होकर अपने पातिव्रत धर्मके प्रभावसे उन्होंने सूर्य्यका मार्गही रोंक दियाथा यद्यपि सूर्य्यका बड़ाभारी तेजहै पर सब नष्ट करदिया था व अपने पति माण्डव्यजीकी मृत्यु जानकर उनकी पतिव्रता कौण्डिनी नाम स्त्रीने मृत्युही को शाप देदियाथा ९।१० व अत्रिजी की भार्य्या अनसूयाजी ने अपने पातिव्रत धर्म्म के प्रभाव से ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवदेवों को अपना पुत्र बनाया हे मन्मथ! तुमने इन सतियोंकी कथा न सुनी होगी पतिव्रता सदैव सत्कार योग्य होती हैं ११ ऐसेही द्युमत्सेन राजाकी कन्या महापतिव्रता सावित्री ने मरेहुये अपने पतिको यमलोकसे बुलालिया व उससे सत्यवान् नाम पुत्र उत्पन्न कराया १२ हे काम! भला अग्निकी शिखाको हाथोंसे कौन पकड़सक्ताहै व भुजोंके बलसे तैरता हुआ समुद्रके पार कौन जासक्ता है उसमेंभी गले में शिला बांधकर और रागरहित पतिव्रताको कौन वशकरसक्ता है १३ जब बहुत नीतियुक्त वचन इन्द्रने कामदेव की अच्छी शिक्षाके लिये कहे तब कामदेव सुनकर इन्द्रसे बोला १४ कि आपकी आज्ञासे धैर्य सुहृत्त्व और पुरुषार्थ त्यागकर मैं आया था तिसी के लिये हमको निसत्व

रूप बहुत भययुक्त कहतेहो १५ हे सुरेश! जब हम चलेजावैंगे तब संसार में हमारे यशका नाशहोजायगा और इससे जीतेहुये हमको सबमान विहीन कहेंगे १६ जे देवसमूह दानव और तपस्यासेयुक्त मुनीन्द्र पूर्वसमय में मैंने जीते हैं वे शीघ्रही हमको हँसेंगे कि यह भयानक कामदेव स्त्रीसे हारगया १७ तिससे हे इन्द्र! तुम्हारे साथ जाताहूं इस अबला का बल व मान व तेज व धैर्य्य अभी नष्ट किये देताहूं आप भयभीत न हों १८ इसप्रकार इन्द्रको समझाकर काम ने अपने धन्वापर बाण चढ़ाया व आगेखड़ी हुई क्रीडा से कहा कि आप मायाकरके वहां जायँ १९ जहां कि सुपुण्या सत्यस्थिता धर्म्म जाननेवालियों में श्रेष्ठ वैश्यकी भार्य्या सुकलाहै यहांसे जाकर साहाय्यरूप यह हमारा कामकरो हे प्रिये! २० इसप्रकार क्रीडा से भी कहकर फिर कन्दर्प्प ने समीप में स्थित प्रीतिको तुरन्त बुलाया व उससे कहा कि तुम हमारा यह उत्तम कामकरो कि सुन्दर स्नेहों से इस सुकला को परिभावितकरो २१ जिससे कि इन्द्रको देखकर मारे स्नेह के वह अपने चारुनेत्रों से देखने लगे ऐसे २ प्रभावों व गुणों से भरेहुये वाक्यों से उसको वश करो जिससे इन्द्रही में वह अपना चित्तलगावे २२ ॥

चौ० पुनि कोकिलसों कहाबुलाई । सफल पुष्पतरु बैठहु जाई ॥
कूजहु कलरव सहित विधाना । जासों सुकला करै प्रमाना ॥
पुनि मकरन्द वीरसों बोला । सकल रसास्वादित अनमोला ॥
जाय प्रफुल्लित करहु विशेषी । वैश्य प्रिया दीखै अवलेषी ॥
तुम सब रसनापर ह्वै सुस्थिर । तासु बसहु जासों सो पुष्टिर ॥
इमिनिज सैन्यहि दीन्ह निदेशा । कामभली विधिसों उपदेशा ॥
तीनिलोक मोहन के हेतू । सैन्यहि कह्यहु तबहि झषकेतू ॥
पुनि सुरराज प्रीतिके हेता । जगमोहनहितभयहुसचेता २३।२५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

दो० छप्पनकेरे महँ कह्यो सुकला धर्म्म सँबोधि ॥
सकलज्ञानसुरपतिकुमतिकामकुगतिबहुशोधि १

विष्णुभगवान् राजावेनसे बोले कि उसके सत्यके विनाश करने के लिये कन्दर्प्प व इन्द्र दोनों चले तब इस वृत्तान्त को जानकर सुकला धर्म्म से बोली १ कि हे महाप्राज्ञ धर्म्म! कामकी चेष्टा देखो अब मैं तुम्हारे व अपने पुण्य व महात्मापति के अर्थ २ सुख देनेवाले अपने धनसे भरे पुरे इस स्थान को छोड़ती हूं पर इस शरीररूप स्थानको नहीं छोड़ती ३ क्योंकि इसका वसुप्रिय नामहै व इस उत्तम गृहमें सदा हर्षही बना रहताहै सो यह प्रमत्त बुद्धिवाला अत्यन्त दुष्टकाम इसको नष्टकिया चाहताहै क्योंकि वह हमारा शत्रुरूपहै इसमें कुछ संशय नहीं है ४ जो पतिव्रतास्त्री होती उसकापति तपोरूप ब्राह्मण के तुल्य होताहै इससे इस मेरेशरीर गृहमें भी ऐसाही है व घरका राजा धर्म्महै व सत्यभी है ये सब अवश्य मेरेगृहकी रक्षा करते रहैंगे व जिसके गृहमें सत्य ज्ञान आदि पुष्टहोते हैं हे धर्म्म! वहां तुम बसते हो इसमें सन्देह नहीं है व उसी गृहमें पुण्यभी आकर श्रद्धाके साथ क्रीडाकरताहै ५।६ क्षमा शान्ति व कृपाभी आती हैं मेराभीगृह ऐसाहीहै इससे ये सब बसते बसती हैं ऐसेही सत्य दम दया सौहृद ७ प्रज्ञा निर्ल्लोभ ये सब जिस मन्दिर में मैं रहतीहूं रहते हैं पवित्रता स्वभावभी रहते हैं व कामके बान्धव तो अप्रीति निर्दयता आदि हैं वे मेरेगृह में आनेही नहीं पाते अहिंसा सहनशीलता वृद्धि धन्यता ये सब मेरेगृहमें निवास करती हैं हे धर्म्मराज! ८।९ व गुरुओंकी शुश्रूषाभी व लक्ष्मीयुक्त विष्णुभगवान्का ध्यानभी मेरेगृहमें रहताहै व अग्नि आदि सब देवताभी मेरेगृहमें सदा आते हैं १० मोक्ष मार्ग्ग का प्रकाश व ज्ञानदीपभी मेरेगृहको प्रकाशित करताहै इन सबों के व धर्म्मात्माओं व पतिव्रताओं के सङ्ग सदा मैं बसती हूं ११ व साधु श्रोतालोगभी मेरेगृह में सदा रहते हैं इनके सङ्ग हे धर्म्मजी! तुम मेरे गृहमें बसते हो व जितने

साधु स्वभाववाले तपस्वी हैं वेभी मेरेगृह में रहतेहैं व इन्हीं के संग स्वच्छन्दता से लीलापूर्व्वक मैं आनन्द से विचराकरती हूं १२ व जगत्स्वामी वृषवाहन तीन नेत्रवाले ईश्वर भी मेरे गृह स्वरूप शरीर में पार्वतीयुक्त सदा बसते हैं वे मङ्गल करते हैं १३। १४ सो गृहरूप महादेवजी से प्रार्थनाकर संसारसे पार होऊंगी ऐसा मेरा सदन है उसको दुष्ट मदन नाशना चाहता है १५ एकसमय जो विश्वामित्र उत्तम तपकर रहेथे इतने में मतवाले कोकिलों को व कामको सङ्गले मेनकानाम अप्सरा वहां आई पर उसका कुछ वहां किया नहींहुआ गौतमकी महापतिव्रता प्यारी शुभस्त्री अहल्याको इसीदुरात्मा कामने सत्यसे चलायमानकरदिया १६।१७ व सत्य धर्म्म जाननेवाले बहुतसे मुनि तथा बहुतसी बेचारीपतिव्रता स्त्रियां इसदुष्टात्मा कामके अग्निसे जलगईं १८ वही दुर्धरदुःसह अत्यन्त सत्यमें निष्ठुर पापी काम नित्य मुझको देखताहै सत्य कहां ठहरताहै १९ व मुझको अकेलीजान हाथोंमें धनुर्ब्बाण लिये बीतिहोत्र नाम अपने सैनिकोंके संग मारनेके लिये आता है व पापकरनेके लिये पाखण्डकिये अपाखण्डी हम लोगों के खण्डन करने में उद्यत है व पाप बुद्धिसे पापीमदन मुझको पीड़ादेना चाहताहै इसके तेजसे जलीहुई मैं अब अन्य नयेगृहमें चलीजातीहूँ जो नवीनहो व उसमें की स्त्रियों का पति कोई महाप्रबल राजाहो पुण्यात्माकृकलका यह मंगल व कल्याणदायक गृह है जिसका सुकलानाम है उसके भस्म करने को यह दुष्ट काम उद्यत है २०।२४ व यह बलीइन्द्रभी उसी कामके साथलगा है इससे आता है कामही के संग जाने में जो दुर्दशाहुई है उसपूर्व्ववृत्तान्त का स्मरण नहीं करता जोकि अहल्या केसंग भोगकरने से नपुंसक होगया था पीछे बड़ी प्रार्थना करने से फिर पौरुष को पाया था वहां से काम तो प्रथमही भागखड़ाहुआ था २५।२७ इन्द्र ने दारुण दुःखभोगे थे व बड़ाभारी शाप गौतम-जीने दियाथा कृकलकी प्रिया पुण्यचारिणी इस सुकला के २८ यह कामसंयुक्त इन्द्र मारनेमें उद्यतहैजैसे इन्द्र समेत काम न आवे तैसा करो २९ हे महाबुद्धिमान्! बुद्धिमानों में श्रेष्ठ धर्मराज तब धर्म-

राजबोले कि तेज कम करदूंगा और कामकी नाश ३० यह एक उपाय मैंने देखाहै तिसको यहां देखो यह महा बुद्धिमती के शकुन जाननेवाली रूपचारिणीहै ३१ पुण्यकारी स्वामीका आगमन शकुनके प्रभाव से स्वामी के आगमन से ३२ स्वस्थ चित्त निस्संदेह होजाय दुष्टोंसे नाशको प्राप्त न हो यह कह प्रज्ञाको भेजा वह सुकला के गृहकोगई ३३ व ज्योतिर्वित्पण्डित बनकर बड़ाशब्द करतीहुई पहुँची तब सुकलाने बड़ामान वपूजन धूप दीपादि से उसका किया ३४ वह ब्राह्मणका रूप तो धारणही कियेथी प्रथम विचारलीथी कि हमसे कुछ सुकला पूँछेगी पर जब उसने कुछ न पूँछा तो आप विप्ररूप से बोली ॥

चौ० तवपतिआवनवैश्यकुमारी । होइहिगये दिवसतिन चारी ॥
स्थिरमति होहु न करहु सँदेहू । सतयेंदिन आपनपतिलेहू ३५।३६
यह सुनि मंगल वचन पुनीता । प्रमुदितभई सुथिरकरिचीता ॥
धर्म्म शकुनसुनि निश्चयजाना । स्वामिआगमनमनत्तलचाना ३७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेपंचाशत्तमोध्यायः ५६

सत्तावनवां अध्याय ॥

दो० सत्तावनयें महँ मदन प्रेरितक्रीड़ा जाय ॥
सुकलाकहँलाईवनहिं सुरपपासयहगाय १

श्रीविष्णुभगवान् राजावेनसे बोले कि जब ब्राह्मणकेरूपसे क्रीडा ने सुकला के पति के आगमन की कथा कही भी पर पुरुष जान-कर सुकला पतिव्रता ने बिशेषकुछ न पूँछा तब वहाँसे जाकर क्रीडा फिर एक पतिव्रतास्त्रीका वेषधारणकर चारुपतिव्रता सुकलाके गृह मेंगईवउसको आईहुई देख वह सत्य स्वरूप युक्त धन्यरूप सुकला आदर समेत बोली सुन्दर पुण्यवाक्योंसे क्रीडाकी बड़ी पूजाकी तब क्रीडा मुसुकाकर विश्वविमोहन वचन बोली कि सखि! और तो हमारे सब अच्छा है परन्तु हमारे स्वामी कहीं बिदेश को चलेगयेहैं १।२ वे हैं तो बड़ेगुणज्ञ व प्रबल धीर विद्वान् महिमा युक्त अत्यन्त पुण्या-

मा परन्तु अत्यन्त पापिनी हमको छोड़कर कहीं चलेगयेहैं इस बात को क्रीडाने बहुत पल्लवित करके विधिपूर्व्वक जब सुकलासे कहा तो उसे सुनकर सुकलाने अपने शुद्ध भावसे क्रीडासे पूँछा कि हे सुन्दरि! तुमको तुम्हारेपति क्योंछोड़गये ३।४ उसने कहा कि छोड़ने का कारण मैं नहीं जानती मैं तो जिस २ कामकी इच्छा वे करते थे सब तुरन्त करतीथी व सब पुण्य कर्म्म करके अपने भर्त्ताके वचन मानतीथी व सदा उन्हींका ध्यान स्मरण कियाकरती थी व एकान्तमें सदा अपने गुणों से उनको प्रसन्न करती थी शुश्रूषा से सदा प्रसन्न रखतीथी ५।७ यह सुन सुकलाने कहा कि हमभी कर्म्म मन वचनसे अपने स्वामी की सेवा यथाशक्ति सदा करती थीं आज्ञा के प्रतिकूल कभी नहीं चलीं परन्तु यह कुछ हमारे पूर्व्वजन्म के कर्म्मका बिपाकहै जिससे हमारा भर्त्ता हम अभागिनी को छोड़ कर चलागया ८ हे सखे! मैं अपने जीव व देहको न धारण करूंगी पति से हीन निर्घृण स्त्रियां कैसे जीवती हैं ९ रूप शृङ्गार सौभाग्य सुख संपदा महाभाग स्वामीही स्त्रियोंको शास्त्रों में कहा है १० क्रीडा यह सुन कुछ न बोली कुछ बिचारने लगी व सुकलाने जो क्रीडा ने क्रीडा के अर्थ कहा उसको सत्यही माना ११ व जाना कि यह हमसेभी अधिक प्रतिव्रताहै इससे वह पतिदेवता महाभागा सुकला उसके विश्वास में आगई व अपने पूर्व्वके पति सेवा रूप कर्म्म क्रीडासेकहे जब सुकलाने अपने पूर्व्वके समाचार संक्षेपसे कहे जैसे कि उसका पति उसे छोड़ पुण्य तीर्थयात्रा करने को गया था व उसको संग नहीं लेगया था १२।१३ हे मनस्विनि! जैसे २ उसको इन्द्रकी ओरसे दुःख मिले सत्य तप सब उसने क्रीडा से वर्णन किये व क्रीडा भी पतिव्रता का वेष धारण कर वहीं रहने लगी १४ एक दिन उस क्रीडा ने सुकलासे कहा कि हे सखे! देखो एक दिव्यवन तुमको दिखावें जो दिव्यवृक्षोंसे अलंकृत रहता है १५ वहां एक तीर्थभी ऐसा पुण्यदायक है कि ब्रह्महत्यादि महापातकों का नाशकरताहै नानावल्ली वितानोंसे व विविध प्रकार के पुष्पोंसे शोभित रहताहै १६ हे श्रेष्ठमुखवाली! अब पुण्य के हेतु

हम तुम दोनों जनी चलें ऐसे मायारूप वचन सुन एक दिन वह सुकला क्रीडाके साथ उस वनको गई वह नन्दनवनही के समान उत्तम था सब ओरसे सुगन्धित पुष्प फूलरहे थे सैकड़ों कोकिला नाद कररहीथीं १७। १८ भ्रमर मधुर शब्दोंसे सबओरसे गारहे थे कूजतेहुये पुण्य पक्षियोंके शब्दों से वह वन मनमनारहा था १९ चन्दन आदि सुगन्धित वृक्षोंसे विराजित था सब भोगोंसे सम्पूर्ण व पापी वसन्तऋतुसे युक्तथा २० वसन्त व कामने सुकला के मोहनेके लिये बनायाथा उस क्रीडाके साथ सुकला उस सर्वभावन वनमें पैठी २१ जोकि सुखदायी और पुण्यकारी था हे राजन्! उसके साथ सुकला वन देखतीभई और मायाके भावको नहीं जाना २२ फिर देव मूर्ति से प्रकाशित इन्द्रजी आये और तिसी दूती के साथ कामदेवभी तहाँ आगया २३ सब भोगोंके पतिहोकर कामलीला से युक्त इन्द्रकामसे बोले कि यह सुकला प्राप्तहै २४ हे महाभाग! प्रहारकीजिये क्रीडा के आगेस्थितहै क्रीडाने मायाकरके तुम्हारे निकट प्राप्त कियाहै २५ अब पौरुष दिखाओ जो होतो निश्चयकरो यहसुन कामदेवइन्द्रसे बोला कि प्रथम तुम अपना दिव्य रूपसुकलाको दिखाओ तब हमअपने पांच दारुणबाणोंसे इसेमारेंयह सुन इन्द्रबोले कि हे मूर्ख! वह तेरापौरुष कहांहै जिसके बलसे तूने तीनोंलोकोंकी बिडम्बनाकीथी २६।२७ अब हमारे आश्रयसे इससे युद्धकरना चाहताहै तब काम बोला कि उन देवदेव महादेव शूलीने २८ पूर्व समय में जबसे हमाराशरीर नष्टकिया है तबसे हमारे शरीरही नहीं है जब पुरुषको देखकर स्त्री इच्छा करती है तो हम फिर शरीर धारणकरके उसके शरीर में प्रवेशकरते हैं व जब पुरुष स्त्रीको देख मैथुनकी इच्छा करताहै तो उसके शरीरमें प्रवेशकरके प्रेरितकरते हैं २९।३० स्त्रीने पूर्वसमय जिसरूपको देखा उसके भीतर प्रवेशकरके फिर उसीरूपका स्मरण मैं कराताहूँ यदि पुरुषने प्रथम स्त्रीको देखा तो उसके अङ्ग २ में प्रविष्टहोकर उस स्त्रीकेरूपका स्मरण बार २ कराताहूं ३१ अदृष्टको आश्रयकर पुरुषको मैं उन्माद युक्त कराताहूँ तैसेही निस्संदेह नारी रूपको भी उन्माद युक्त

करताहूँ ३२ हे इन्द्र ! स्मरणसे स्मर हमारा नाम हुआ है तिसको देखकर तैसाही रंगवस्तुरूप आश्रय करताहूं ३३ अपने तेजके प्रकाश से बाध्य बाधकताको प्राप्त होता है नारी रूपको आश्रयकर धीर पुरुषको मोहित करताहूं ३४ पुरुषको आश्रयकर अच्छी स्त्रीको मोहित करताहूं हे इन्द्र ! रूपहीन मैं हूँ हमको रूपदीजिये ३५ आपके रूपको आश्रयकर तिसयथेप्सितको साधन करूंगा ॥

चौ० इमिकहिसुरपतिसोंकरिक्रोधा । कामप्रबलविजयीबड़योधा ॥
परमसखा ऋतुराजहि टेरा । पुष्पायुध करि निजमन हेरा ३६
कृकलबधू पातिव्रत भूषित । सुकला सबविधि पापअदूषित ॥
तासुहननकी करि अभिलाषा । मदन वसन्त पाहिं यह भाषा ३७
उद्यत होहु हनत हम याके । नयन माहिं शर पञ्चक बांके ॥
यहकहि मनसिज बाणचलाये । ललकि हिये सुकलाकेछाये ३८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनो
पाख्यानेसुकलाचरित्रेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

दो० अट्ठावन महँ इन्द्र अरु सगण मदन लहिहारि ॥
सुकलासों निजगेहगे यहकह बहुत विचारि १

श्रीविष्णुभगवान् राजा वेनसेबोले कि वैश्यकी प्राणप्रियासुकला महापतिव्रता क्रीडाके साथ उस मायारूपवनमें प्रवेशकर सब ओर से मनोहर सघनवन देखकर उस सतीने उसी अपनीसखीसे पूछा १ कि यह पुण्यदायक दिव्य मनोभिराम सिद्ध व सब श्रेष्ठ कामप्रवरोंसे युक्त वन किसका है हे सखे ! हमसे कहो२ इतनासुन क्रीडा बोली कि सब गुणों से युक्त पुष्पों से आकुल कामफलों से युक्त अपने स्वभाव से परिमथनशील कामने बनाया है सब ओर देखो तो कैसादिव्य है ३ ऐसावाक्य सुनकर बड़ेहर्ष से युक्तहोकर सुकलाने जो चारो ओरदेखा तो दुरात्मा कामके बड़े वृत्त देखे ४ व सब ओरसे पवन के आकर्षणसे सुगन्ध चला आताथा व वायु पुष्प गन्धकी लपटों से सनाहुआ सब ओरसे आरहा था ५ वह सुगन्ध

अपने आप सुकलाके घ्राणोंमें पैठाजाताथा वह वरांगना अपने आप पुष्पोंकी सुगन्ध को नहींसूँघती थी ६ व उन पुष्पों के रसोंको उस महापतिव्रताने न ग्रहणकिया उसमें भ्रमण तो करतीरही परन्तु कामदेव के उन सुखदायक पदार्थों से रहितरही ७ वृक्षोंके लाल २ जोपत्र कामने बनायेथे सब लज्जितहोकर भूतलपर गिरपड़े मञ्जरियोंसे पुष्प अपनेआप उसके आगे गिरे पर उसने न सूँघा ८ तिससे जीताहुआ यह लवरूप रस भूमि में गिरा फिर अत्यन्त दीनात्मा मकरंद फलसे भूमिमें गिरा ९ उन पुष्पोंकेरसों कोकेवल मक्षिका खातीथीं जैसे रणमें मरा तैसेही मक्षिकासे खायाहुआ नदीके प्रवाहके साथ बहताथा १० पवन मारेलज्जाके अति मन्द २ बहनेलगा तिसको पक्षी हँसने लगे सुखमानन्द निर्भर अनेकप्रकारके शब्दों से चलतेभये ११ वनके बीचमें वृक्षोंमें स्थित पक्षीलोग प्रीति से रहते भये इस प्रकार सुकलासे पराजित होकर सब नीचेहोगये १२ तब प्रीति से काम की स्त्री रतिजाकर सुकला से हँसकर बोली कि हे भद्रे ! तेरा कल्याणहो अच्छीतरह से तो आई अब प्रीतिपूर्व्वक इन इन्द्रके संग विहारकर १३ इन्द्र महात्माको तुम्हारा निर्मलरूप इष्ट है जो तुमको इष्टहो तो कहिये मैं निस्सन्देह लेआऊंगी १४ सूतजी बोले कि उन स्त्रियों को बतलाती हुई देखकर अच्छे वचन सुनकर बोली कि रतिको ग्रहणकर मेरा महाबुद्धिमान् स्वामी चलगया है १५ जहां मेरा स्वामी स्थित है तहां मैं भी पति संयुक्त रहूंगी तहां कामना मेरीजानेकी है इसमें मेरी प्रीति है यहदेह आश्रयरहित है १६ रति और प्रीति दोनों ये वचन सुनकर लज्जित होगये और लज्जितही दोनों जहां महाबलवान् कामथा वहां गईं १७ इन्द्रकी देहमें महावीर काम आश्रित था धनुषको खींचता नेत्रको लक्ष्य और महाबलवान् था इस वीरसे रति और प्रीति दोनों बोलीं १८ कि हे महाप्राज्ञ ! यह दुर्जय है अपने पौरुष को त्यागिये पतिकी कामना वाली महाभाग्यवती और सदैव पतिव्रता है १९ तब कामदेवजी बोले कि इसको महात्मा इन्द्र का रूप देखना चाहिये हे देवि! जो देखेगी तो निस्सन्देह मैं मारूंगा २० तब इन्द्र अन्यवेष

धारणकर महारूपवान् उसके पीछे २ घूमनेलगे २१ सब भोगके पदार्थोंसे समाकीर्ण व सब आभरणोंसे भूषित दिव्यमाला दिव्य वस्त्र धारणकिये दिव्यसुगन्धित अनुलेपन लगाये २२ उस दूतीके संग वहां आकर आगे खड़ेहुये जहां वह पतिव्रता सुकलाथी व वह दूती सत्यचारिणी महाभागा सुकला से बोली २३ जैसे कि पूर्व्ववाली दूती प्रीतिसे बोलीथी कि हेसखि ! यहां आयेहुये इन पुरुषोत्तमको तुम क्योंनहीं मानतीहो २४ यहसुन सुकलाबोली कि हे भद्रे ! तुम्हारा कल्याण हो मैं अपने भर्त्ताके महात्मा पुत्रोंसे रक्षितहूं किसी का मुझ को भयनहींहै २५ क्योंकि वे बड़ेशूरहैं व पुरुषों का रूप धारणकिये सबओरसे मेरीरक्षा करतेरहतेहैं मैं स्वतन्त्र नहींहूं सदा अपनेपतिके कर्मके करने में व्यग्र रहतीहूं २६ हमारे साथ रमण करते हुये आप क्यों न लज्जित होंगे २७ मरणसेभी निर्भय आप कौन आये हैं तब इन्द्रबोले कि वनके मध्यमें प्राप्त तुमको इसप्रकार देखती हैं २८ तुमने शूरस्वामी के पुत्र कहेहैं कैसे हम देखें हमारे आगे दिखाइये २९ तब सुकला बोली कि अपने सब वर्ग के स्वामी भावमें प्रवेश कराकर धृति बुद्धि गति मति इनसे सत्य को संन्यास कराय अचल सब धर्म वाला नित्य युक्तमहात्मा मदन बलसहित धर्मात्मा सदैव मेरी रक्षाकरते हैं ३० हमको दमगुण पवित्रता से धर्म सदैव इस प्रकार रक्षाकरता है जितनी देर में नेत्र फड़कता है उतनाभी अवकाश मुझे नहीं है व न हमको अवकाश है देखो हमारे आगे सत्य खड़ा है व शांति क्षमा भी खड़ी है महाबलवान् ज्ञान भी खड़ा है व बड़ाभारी यश भी हमारे सम्मुख खड़ा है व हमारी सदा रक्षा करता है व दृढ़ बन्धनों से हम को ऐसे बांधे हैं कि किसी ओरको मुख नहीं करसक्तीं इसके विशेष हम अपने गुणों से भी नित्य रक्षित हैं ३१ व सत्यादिक सब सदा हमारी रक्षा किया करते हैं व धर्म्म बुद्धि दम पराक्रमादि सबके सब रक्षा करते रहते हैं ३२ जब इतने हमारी रक्षाकरते हैं तो क्या हमारी बलसे प्रार्थना करती है ३३ आप कौनहैं जो निर्भयहोकर दूतीके साथ आये हैं सत्य धर्म्म पुण्य ज्ञानादिक बड़ेप्रबल रक्षक हैं व ये सब हमारे

पतिकी आज्ञासे सदा हमारी रक्षाकरते हैं ३४ व दम शान्ति में परायण हम अपने आपभी रक्षितरहती हैं हमको जीतने को साक्षात् इन्द्रभी समर्थ नहीं हैं ३५ व यदि रूपधारणकरके काम भी आवेगा तो वह भी न जीतसकेगा क्योंकि हम सत्यादिकोंसे सदारक्षित रहती हैं ३६ इससे काम के बाण निरर्थकहोंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है यहां से भागजा नहीं तो धर्मादिक महाभट तुझीको मारडालेंगे ३७ दूरहो भागजा यहां इस समय न खड़ी हो व जो रोकने परभी खड़ी रहेगी तौ भस्म होजायगी ३८ क्योंकि विना हमारेपति और किसी पुरुष में ऐसी शक्ति नहीं है जो हमारारूप देखसके जैसे अग्नि काष्ठ भक्षण करता है वैसेही वह हमारा भक्ष्य होजायगा इस में संदेह नहीं है ३९ ऐसा सुनकर इन्द्रने कामकी ओर देखकर कहा कि इस का पौरुषदेखो अब अपने पौरुषोंसे इस के संग युद्धकरो ४० यह कहकर इन्द्रादिक जैसे आये थे वैसेही अपने २ स्थानों को चलेगये शाप के भयसे आतुरहुये कि ऐसा न हो कि चलेजाने पर भी शापदे ४१ जब सब चलेगये तो महापतिव्रता सुकला पतिके ध्यानसे पुण्यसंयुक्त अपने गृहको आई ४२ ॥

चौ० सर्वतीर्थमयसबसुखदाई । पुण्ययज्ञमयस्वगृहसुहाई ॥
सुकला पातिव्रत परनारी । महीपाल निज गेह पधारी ४३

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेऽष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

दो० उनसठमहँ मगकृकल सों बिन भार्य्याके धर्म्म ॥
सफलहोतनाहिं यहकहा धर्म्म अपर नाहिंकर्म्म १

श्रीविष्णुभगवान् राजावेन से बोले कि इतनेमें कृकलवैश्य सब तीर्थोंकी यात्राकर अपने गृहको चला व सब साथियों समेत बड़े आनन्द से आताथा १ मार्गमें चिन्तना करता था कि संसार मेरा सफल हुआ अब मेरे पितर तृप्त होकर स्वर्गको जायँगे इससें सं॰

शय नहींहै २ तबतक धर्म उसके पितामहोंको बांधकर प्रत्यक्ष उस के आगे आन खड़ाहुआ व आगेसे बोला कि तेरा उत्तम पुण्यनहीं है ३ दिव्यरूप धारण कियेहुये बड़ी देहयुक्त होकर कृकलसे बोला कि तुमको तीर्थफल नहीं है वृथा परिश्रम कियाहै ४ अपने आप सन्तोष कररहे तेरा उत्तमपुण्य नहीं है ऐसा सुनकर कृकलवैश्य अतिदुःख से पीड़ित हुआ ५ व बोला कि आप कौनहैं जो मुझसे ऐसा कहते हैं किस कारण से पितामहों को बांधाहै व किस दोषके प्रभावसे इसका कारण हमसे कहिये ६ कैसे तीर्थका फल नहीं है वहमारी यात्रा कैसे सफल नहींहै सब हमसे कहो यदि इसका फल जानतेहो ७ तब धर्म बोले कि जो कोई पवित्र अत्यन्त पुण्यकारिणी अपनी भार्य्या को छोड़कर तीर्थयात्रादि धर्म्म करनेजाता है उस के पुण्यका सब फल वृथा होजाता है इसमें संशय नहीं है ८ धर्म्माचारमें पर पुण्यरूप साधुव्रत में परायण पातिव्रतमें रत सुगुणवती व पुण्य के ऊपर वत्सल अपनी भार्य्याका परित्याग करके जो कोई धर्म्म कार्य करनेजाते हैं उनका कियाहुआ धर्म्म सब वृथा होजाताहै इसमें संशय नहींहै ९ । १० सब आचारों में पर भव्यरूप धर्म्म साधन में तत्पर अतिशय पतिव्रता व सर्व्वदा ज्ञानमें तत्पर ११ इस प्रकार के गुणोंसे युक्त जिसकी महापुण्य पतिव्रता भार्या होती है उसके गृहमें महा पराक्रमी देवगण सदा टिके रहतेहैं १२ व गृह केमध्यमें टिकेहुये उसके पितरलोग उसका कल्याण चाहतेहैं गंगादि पुण्य नदियांवसब सागर भी उसके गृहमें रहतेहैं इसमें अन्यथा नहीं है १३ जिसके गृहमें पुण्यमें तत्पर पतिव्रता स्त्री होती है उसके गृहमें सब यज्ञ धेनु व ऋषिलोग रहतेहैं इसमें अन्यथा नहीं है १४ वहीं विविध प्रकारके पुण्यकारी सब तीर्थ रहते हैं भार्य्या के योगसे ये सब वहां स्थित रहते हैं इसमें अन्यथा नहीं है १५ पुण्यरूप भार्य्याही होने से उत्तम गृहस्थी का धर्म्म होता है व गृहस्थाश्रम से श्रेष्ठ कोई धर्म्मभूतल पर नहींहै १६ गृहस्थका गृहही पुण्य सत्यपुण्ययुक्त होता है हे वैश्य ! गृहस्थकाघर सर्व तीर्थमय व सर्व्व देवमय होताहै १७ क्योंकि गृहस्थाश्रम के आश्रित

होकर सब जन्तु जीतेहैं इससे गृहस्थाश्रम के समान अन्य आश्रम हम नहीं देखते १८ जिस पुरुष के घर में मंत्र अग्निहोत्र देवताओं की पूजाहोती सब सनातन धर्म दान आचार वर्तमान रहतेहैं १९ इस प्रकार जो भार्यासे हीन होताहै तिसका घर वन समान है यज्ञ और अनेकप्रकारकेदान नहीं सिद्धहोतेहैं२० स्त्री हीन पुरुषके महाव्रत सब पुण्यकारी अनेक प्रकार के धर्म कर्म सिद्ध नहीं होतेहैं २१ धर्मसाधन के हेतु भार्य्या के समान तीर्थ नहीं है इसको तुम सुनो गृहस्थका तीनोंलोकमें और धर्म नहींहै २२ पुरुषके जहां स्त्री हैवहीं घरहै अन्यथा नहीं है गांव अथवा वन में सब धर्मका साधन होता है२३ भार्य्याके समान कोई तीर्थ नहींहै न भार्य्या के समान कोई सुखही है न भार्य्याके समान कोई पुण्यही तारने के लिये व हितके लिये है २४ हे नराधम! सो धर्म्मयुक्त पतिव्रता अपनीभार्य्याको छोड़कर और धर्म युक्त घरकोछोड़कर तीर्थयात्राको जाता है तेरे धर्म्म काफल कहां है २५ क्योंकि स्त्री विना जो तीर्थ श्राद्ध दान तूने किया उसदोष से तेरे पूर्व्वज पितामह बँधुआ हैं २६ तुम चोरहो जिसनेविना स्त्रीके श्राद्ध दानादिकियेवे चोरहैं जिन्होंनेतुम्हारे हाथ कादियालिया व खाया तुमने विना अपनी स्त्रीके जो अन्न श्राद्धमें दिया उसका कुछभी पुण्यनहींहुआ २७ क्योंकि पुत्र वह है जो श्रद्धापूर्व्वक श्राद्धकरै व भार्य्याके हाथ के बनाये हुये पिण्डलेकर दानकरे ऐसा करनेसे जो पुण्यहोताहै उसकाफल कहतेहैं २८ अमृतके पानसे जैसे मनुष्योंको तृप्तिहोतीहै तैसेपितरों को श्राद्ध सेहोती है हम सत्य सत्य कहतेहैं २९ क्योंकि गृहस्थीकेसब धर्म्मोंकी स्वामिनी भार्य्या होतीहै सोहे मूढ़! तूनेउससे छलकरके चोरीसे तीर्थयात्राकी इससेतेराकियाहुआसबवृथा हुआ ३० ये तेरे पितामहभी चोरहुये जिन्होंने विना स्त्रीके सङ्ग दियेहुयेको ग्रहणकिया क्योंकि भार्य्याकेहाथके पकायेहुये अन्न अमृतोपम हैं ३१ क्योंकि उनको पितर हर्षित मन से भोजन करतेहैं उसीसे तृप्तहोते हैंव सन्तुष्टभी होते हैं ३२ इससे विना भार्य्याके पुरुषका धर्म्म नहीं सिद्ध होता॥
चौ० भार्य्यासम नाहिं तीरथकोई। सद्गतिदायि पुरुषकहँहोई॥

भार्य्या बिनकर पुण्यबहूता । विफल होय सब नहिंमजबूता ३३।३४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखंडभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५६ ॥

साठवां अध्याय ॥

दो० सठयें के महँ कृकलसह सुकला कीनशराध ॥
तासों ब्रह्मादिक मुदित वर दै हरे पराध १

यह सुनकर कृकलवैश्य धर्म्मजीसे बोला कि मेरी सिद्धि कैसेहो व मेरे पितरोंकी मुक्ति कैसेहो हे धर्म्मराज ! वह विस्तारपूर्व्वक हम से इसीसमय कहो १ धर्म्मजी बोले कि हे महाभाग! गृहको जाओ तुम्हारे विना तुम्हारी भार्य्या बहुत दुःखितहै इससे धर्म्मचारिणी अपनी पत्नी को जाकर संबोधन करो २ व गृहमें जाकर उसीके हाथ से पायस व पिंड बनवाकर श्राद्ध दानकरो व पुण्यतीर्त्थों का स्मरण करके उत्तम देवताओं की पूजाकरो ३ तब तीर्त्थयात्रा करने की तुम्हारी सिद्धिहोगी क्योंकि विना भार्य्याके जो कोई धर्म्म करना चाहताहै ४ वह गृहस्थाश्रम को लोपकर अकेले वनको जावे संसार में उसका किया विफल होताहै उसको देवता नहीं मानते हैं ५ व जब गृहस्थ अपनी गृहिणी के संग यज्ञ करता है तो उसके सब यज्ञ सिद्धहोते हैं व अकेले धर्म अर्थ साधन के लिये समर्थ नहीं होताहै ६ विष्णुजी बोले ऐसा कहकर धर्म्म जैसे आये थे वैसेही चलेगये व धर्म्मात्मा कृकल भी अपने गृहको चला ७ व अपने घरमें पहुँचकर उस बुद्धिमान् ने अपनी पतिव्रता स्त्री को देखा व उसने भी पतिके संग जो भारवाहक गयाथा उसके कहने से जाना कि हमारा स्वामी आया ८ तब उस स्त्रीने धर्मके जाननेवाले स्वामीको देखकर स्वामी के आने में पुण्यकारी मंगलाचार किया ९ फिर धर्म्मात्मा ने धर्मका विचेष्टित कहा तब महा भाग्यवती ने आनन्द देनेवाले स्वामी के वचन सुने १० और धर्मवाक्यकी प्रशंसा की व मान किया विष्णुजी बोले कि पहुँचने के पीछे उस कृकल वैश्यने अतिपुण्यदायक ११

श्राद्ध देवपूजा के गृह में स्थित होकर उस पतिव्रता भार्य्या के संग
किया तब पितर देव व गन्धर्व्व विमानों पर चढ़कर आये १२ व
मुनिलोग भी आये सबके सब उन दोनों महात्मा स्त्री पुरुषोंसे बोले
उनमें हम व ब्रह्मा और पार्व्वतीसहित महादेव १३ सब देव गन्ध-
र्व्वादि इस तुम्हारी स्त्रीके सत्य से बहुत संतुष्टहुये व फिर सब देव-
गण महात्मा व धर्म्मज्ञ सत्य पण्डित उन दोनों स्त्री पुरुषों से बोले
भी कि १४।१५ हे सुव्रत! स्त्री समेत तुम्हारा कल्याणहो वरमांगो तब
कृकल बोले कि हे सुरोत्तमो! किसके पुण्य के प्रसंग से वा तपस्या
से १६ आपलोग स्त्री समेत हमको वरदेने के लिये आये हैं तब
इन्द्र बोले यह चारुमंगलरूप पतिव्रता महाभाग्यवती सुकलाहै १७
इसके सत्यसे हमलोग संतुष्ट होकर वरदेने के लिये आये हैं जो
चाहो वरमांगो संक्षेप से पूर्वका वृत्तान्त कहा है १८ जब अपनी
भार्य्याके पातिव्रतादि धर्म्मयुक्त माहात्म्य देवताओं के मुखोंसे सुना
तो भर्त्ता अत्यन्त हर्षितहुआ व उसके संग वह धर्म्मात्मा अति
प्रसन्नहो व प्रेमके मारे व्याकुल नेत्र होगया १९ व बार बार
उन दोनोंने उन देवताओंके दण्डवत् प्रणाम किया व कहा कि हे
महाभागो! जो सनातन आप तीनों देवदेव प्रसन्नहुये हों २० व
अन्य देवता व ऋषिलोगभी प्रसन्न हुयेहों तो मेरे ऊपर कृपा क-
रके यह वरदें कि जन्म २ हम दोनों देवताओं की भक्तिही किया
करें २१ व आप लोगोंके प्रसादसे धर्म्म व सत्यमें हमारी प्रीति हो
पीछे स्त्री और पितामहों सहित हम श्रीवैष्णवलोकको जायँ बस हे
देवदेव! यदि हमारे ऊपर सन्तुष्टहुये हो तो यही वरदेवो और कुछ
हमको न चाहिये तब सब ब्रह्मादि देवदेवेश बोले कि ऐसाही हो
हे महाभाग! जो २ चाहतेहो सबहोगा २२।२३ फिर उन दोनोंके
ऊपर सब देवताओंने फूलोंकी वर्षाकी गीतके तत्त्वके जानने वाले
गन्धर्वों ने महापुण्यकारी ललित सुन्दर स्वर से गीतगाये अप्स-
राओंने नाचकिया फिर गन्धर्वों समेत देवता अपने २ स्थानोंको
२४।२५ वर देकर उस पतिव्रता सुकलाकी स्तुति करतेहुये चलेगये
हे महाराज! तुमने पूँछा था कि भला स्त्री कैसे तीर्थहोती है सो

नारी तीर्थ इस प्रकारसे होती है हमने कहा अब और क्या पूँछते हो वह भी कहैं २६ ॥

चौ० यहतुमसनहमभूप बखाना । पुण्याख्यान पुनीत पुराना ॥
जो यहि सुनत भूप सो प्रानी । छूटत अघगण सौं हमभानी २७
श्रद्धा सों सुकला की गाथा । जो नारी सुनि नावे माथा ॥
सो सौभाग्य पौत्र सुत पावै । सत्य लहै निजपति मनभावै २८
धन अरु धान्य मोदयुत लहई । पति सँग सुखसों नित्य विहरई ॥
जन्म जन्म पातिव्रत धर्म्मा । पावै भावै स्वामिसुकर्म्मा २९
ब्राह्मण पढ़े वेदविद होई । क्षत्रिय पढ़ि विजयी नहिं गोई ॥
वैश्य पढ़े धन धान्य समेता । होय न संशय गुनहु सचेता ३०
शूद्रपढ़े करि आदर जोई । सुख सुत धन युतसों नितहोई ॥
अरु सब साधारण नरनारी । यहि पढ़िहोत धर्म अधिकारी ३१
सदाचार युत सदा सुखारी । विपुल धान्यधन रमा विहारी ॥
धर्म्म कर्म्मकारक अघ हीना । होत वंश महँ अतिहि प्रवीना ३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

दो० इकसठयें महँ सुत तिरथ सूचन हित कह गाथ ॥
कुण्डलसुत पितृ भक्ति अरु पिप्पल तप यकसाथ १

यह इतिहास सुनकर राजावेन श्री विष्णुभगवान् से बोले कि सब तीर्थोंसे उत्तमोत्तम भार्य्यातीर्थ आपने कहा अब पुत्रोंके तारनेमें श्रेष्ठ पितृतीर्थ हमसे कहिये १ श्री भगवानूजी बोले कि महा क्षेत्र कुरुक्षेत्र में एक महाप्राज्ञ कुण्डलनाम ब्राह्मण अपनी भार्य्या समेत रहते थे कुण्डल महात्मा का सुकर्मानाम सज्जन पुत्रहुआ २ पिता माता धर्म के जाननेवाले शास्त्र में निपुण महात्मा थे वे अति वृद्ध होने के कारण दोनों प्राणी पीड़ित रहते थे ३ परन्तु उनदोनों की सेवा बड़ी भक्ति व कृपा से उनका पुत्र करताथा जो कि बड़ाधर्म्मज्ञ व भावनायुक्त था वह रात्रिदिन माता पिताकी शुश्रूषा छोड़

कुछ अन्यकार्य्य करताही न था ४ व उसी अपने पिताही से उसने चारोवेद व अनेक शास्त्र पढ़ेथे इससे आचारमें तत्पर चतुर धर्म्मज्ञ व ज्ञानमें वत्सल था ५ माता पिताके चरणादि सब अंग अपनेही हाथों से चापे पाद भी प्रक्षालन करे स्नान भोजनकी सब क्रिया अपनेही हाथों से ६ बड़ी भक्तिसे करे व उनके स्वभाव के अनुकूल सब कर्म करतारहै यहांतक कि सेवा करते २ तन्मय होगया हे राजेन्द्र! ध्यानदेकर माता पिताकी ऐसी शुश्रूषा उसनेकी ७ सूतजी इसी कथा को शौनकादिकों से कहते थे इससे बोले कि उन्हींदिनों में महात्मा कश्यपजी के कुलमें एक पिप्पलनाम विप्र था ८ वह मत्सर व आत्मा को जीतकर निराहार तप करताथा दया और दान युक्तथा इंद्रियोंको दमन करलियाथा व काम क्रोधसे रहित होकर ९ शांतिमें परायण व ज्ञान ध्यानमें तत्पर वह ब्राह्मण दशारण्य देश को गया वहां सब इन्द्रियों को जीतकर मनसहित सबों को अपने वशमें करलिया और तपस्या करतारहा १० तिनके तपके प्रभावसे सुन्दर युगमें लड़ाई छोड़कर प्राणी सगेभाइयों के समान बसते थे ११ मुनिलोग तिसकी तपस्या देखकर विस्मयकरते भये कि किसीने ऐसातप नहींकिया जैसा इसमुनिने किया १२ इन्द्रादिक देवता बड़े विस्मय को प्राप्त हुये इसकी तपस्या बड़ी तीव्र शम इन्द्रिय संयम १३ निर्विकार उद्वेगहीन काम क्रोधरहित शीत वात घाम को सहता पर्वतकी नाईं स्थित था १४ विषयमें विमुख धीर मनसे अतीत संग्रहथा जब वह द्विजसत्तम किसीका शब्द सुनता १५ तो उस स्थान को छोड़ अन्यत्र चलाजाता व वहां एकाग्रमनकरके ब्रह्मके ध्यान में मग्न होजाता इससे उसका कमल समानमुख सदा आनन्दयुक्त रहता १६ यहांतक कि सुस्थिरहो ध्यान करते २ वह धर्म्मवत्सल पत्थर व काष्ठके समान होगया चेष्टारहित पहाड़की नाईं स्थित भया तपस्या से क्लेशयुक्त शरीर अत्यन्त श्रद्धावान् निन्द्रारहित था इसप्रकार का धर्म्म व ध्यान करते २ उसको सहस्रवर्ष बीतगये १७। १८ इससे च्यूँटियों ने उसके ऊपर बामी व व्यमौर लगाई १९ उसी बामी के बीचमें बैठाहुआ वह पिप्पल जड़की नाईं स्थित

होकर बड़ा तप करतारहा २० व उसके ऊपरसे कालेसर्प सब ओर से लपटगये और पिप्पलु को काटते भये परन्तु उस उग्रतपस्वी के अङ्गों में अतिउल्वण सर्पों का विष प्रवेश न करसका न उसके सुकुमार अंगोंको भेदनहीं करसका तिस ब्राह्मणके तेजसे सर्प शांति को प्राप्तहोजातेभये २१।२२ व उसके शरीर से प्रकाशित तेजसेयुक्त बहुत ज्वाला निकलने लगीं जैसे कि अग्नि से लपकें निकलती हैं वैसेही उस तपस्वी के अंगों से जैसे इन्धनों के बीचमें प्रवेशकरके अग्नि प्रकाशित होताहै और जैसे मेघोंके बीचमें प्रवेशकर किरणों से सूर्य्य प्रकाशित होताहै २३।२४ वैसेही वह ब्राह्मण बामीके बीचमें तेजसे प्रज्वलित होताथा सर्पलोग बड़े क्रोधसे अपने विषारीदांतों से काटते थे २५ परन्तु उस विप्रके शरीर के चर्म्म को नहीं छेद सक्के थे हे राजेन्द्र ! इसप्रकार तप करते २ सहस्रवर्ष बीतगये व वह महात्मामुनि वैसेही त्रिकाल बराबर तप करतारहा शीत घाम व वर्षा अपने ऊपर सहतारहा २६ व उस महात्मा ने वायु भक्षण के विशेष और कुछ नहीं भक्षण किया २७।२८ तीनसहस्र वर्षतक वायु भक्षण किये तप करतारहा तब देवताओंने उसके शिरपर पुष्पों की वर्षाकी २९ व कहा कि हे महाभाग ! तुम ब्रह्मज्ञहो व धर्म्मज्ञहो इस में कुछ सन्देह नहीं है व सर्व्वज्ञानमयहो सो अपनेही कर्म्म से तुम ऐसे हुयेहो ३० इसलिये जो २ मनोरथ तुम चाहतेहो सब तुमको प्राप्तहोंगे अन्यथा नहीं कहते व सब काममयी सिद्धि तुमको अपने आप होगी ३१ जब पिप्पल महात्मा ने ऐसे वचन सुना तो भक्ति से मस्तक झुकाकर सब देवताओं के प्रणामकर ३२ बड़े हर्षसे युक्त होकर देवताओं से यह वचनबोला कि यहसब विश्वहमारे वशमें जैसे होजाय ३३ हे देवेन्द्रो ! ऐसा आपकरें व हमको सब विद्या आजावें हे नृपोत्तम ! ऐसा कहकर वह मेधावी विश्रामकररहा ३४ देवताओं ने कहा सब ऐसाही होगा जैसा तुम चाहतेहो इसप्रकारका वरदेकर देव सब चलेगये ३५ उन विप्रोंके जानेके पीछे श्रेष्ठ ब्राह्मण पिप्पल नित्यही ब्रह्मण्य साधनकर संसार वश करने की चिन्तना करते भये ३६ तबसे लेकर श्रेष्ठ ब्राह्मण पिप्पल विद्याधर के पदको प्राप्त

होकर जहां चाहैं तहां जासकेभये इस प्रकार वह पिप्पल विद्याधर होगया इसलिये देवलोकों का ईशहो सर्व शास्त्रों में विशारद हो-गया३७।३८एकसमय महातेजस्वी उस पिप्पलविप्रने अपनेमनसे यह चिन्तना की कि हमको देवताओंके वरदेनेसे जो अवश्य भी थे सब हमारे वश्य होगये ३९ अब इसकी परीक्षाभी करलेनी चाहिये ऐसा विचारकर जिस २ को चिन्तना की उसको अपने वशमें कर लिया ४० ऐसा होनेसे जो उसके मनमें संकल्प विकल्प था सब जातारहा व उसने विचारा कि अब लोकमें हमारे समान और दू-सरा पुरुष कोई नहीं है ४१ सूत शौनकादिकों से बोले कि जब महा-त्मा पिप्पलने अपने मनमें ऐसी कल्पना की तो उसके मनका भाव जानकर एक सारसपक्षी तालाब के किनारे अचछेस्वर से पिप्पलसे बोला ४२ । ४३ कि इस प्रकार क्यों अभिमान करते हो सबके वशकी आत्मा की सिद्धि हम नहीं मानते ४४ वश्यावश्य इस अ-र्वाचीनकर्म पराचीन को तुम नहीं जानते हो हे पिप्पल ! तुम मूढ़ बुद्धिहौ ४५ तुमने तीन सहस्र वर्ष तपस्या की है तिसीसे व्यर्थ अभिमान करतेहो ४६ कुण्डल का धीर बुद्धिमान् सुकर्मा नाम जो पुत्र हुआ तिसके सबसंसार वश होगया सो इस समय सुनिये ४७ अर्वाचीन पराचीन को वही बुद्धिमान् जानताहै हे पिप्पल ! संसार में तिसके समान ज्ञानी नहीं है ४८ कुण्डल के पुत्र सुकर्माके सदृश तुम नहीं हौ उसने न तो दान दिया न ज्ञानकी परिचिन्ता कभी की ४९ न होम यज्ञादि कोई कर्म्मकिया न किसी तीर्थयात्राके लिये गया न अग्निकी उपासना की ५० व हे विप्र ! न कभी उसने उत्तम धर्म्म सेवन किया सदा स्वच्छन्दचारी बनारहा व ज्ञानात्माभी बना रहा परन्तु पिता माताकी सेवा सदैव की ५१ वेदाध्ययन किया सब शास्त्रके अर्थको जाना इससे हमारे मतसे जिस प्रकार उस सुकर्मा नाम बालक के ज्ञान है ५२ वैसा ज्ञान तुम्हारे नहीं है वृथा क्यों अहंकार करतेहो यह सुन पिप्पलब्राह्मण उससारससे बोला कि आप कौन हैं जो पक्षीकारूप धारणकर हमारी ऐसी निन्दा करतेहैं ५३ हमारे ज्ञानकी क्यों निन्दा करतेहो बताओ तो पराचीन ज्ञान कैसा

है सो हमसे विस्तार से कहो व यह भी कि तुमको इस बातका ज्ञान कैसे हुआ ५४ अब अर्व्वाचीन व पराचीन की सब गति हमसे विस्तारपूर्व्वक कहो व हे पक्षिश्रेष्ठ ! तुम ज्ञानपूर्व्वक समझकर हमसे कहो ५५ व हे पक्षिराज ! तुम ब्रह्मा किंवा विष्णु अथवा रुद्र तो नहीं हो तब वह सारस पक्षी बोला न तुम्हारे तपका भावही है न उस बालक के समान तपका फलही तुम में है ५६ जो तुमने इतना तप किया है उसका समाचार सुनो कुण्डलके पुत्र उस बालकमें जैसा गुण है ५७ वैसा तुम्हारे ज्ञान नहीं है और तिस पदको नहीं जाना व हे द्विजोत्तम ! उसी बालकसे जाकर हमारा रूपभी पूँछलेना ५८ वह धर्म्मात्मा सब ज्ञानसे कहदेगा ॥

चौ० इमिसुनिसारसवचनरसाला । जोसबभांतिपुनीतविशाला ॥
पिप्पलगयहुदशारणदेशा ॥ सुनिखगवरकरपरमनिदेशा ५९।६०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादे वेनोपाख्यानेएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

दो० बासठयेंमहँ पिप्पलहु गयहु सुकर्म्मातीर ॥
तिनभाषी पितुमातुकी भक्तिमहाव्रतधीर १

विष्णु भगवान् राजा वेन से बोले कि हे नृपोत्तम ! कुण्डल के सत्य धर्म्मोंसे समाकुल आश्रमको व महाभक्तिसे अन्वित शान्त सर्व्व पिप्पल गये तब सुकर्माको देखा कि पिता माताकी सेवा करते १ सत्य पराक्रमी महारूप महातेज महाज्ञान से युक्त २ माता पिता के चरणोंके पास बैठे ज्ञाननिधि ३ कुण्डलके पुत्र सुकर्म्मा महात्मा हैं पिप्पलनाम विप्र वहां आये व उनको आयेहुये देखकर सुकर्म्माने आसनसे उठकर द्वारही पर जाकर अतिवेग से उनका अभ्युत्थानकिया व कहा कि हे महामते ! हे महाभाग द्विजाग्र ! यहां आओ ४।५ यह कह आसनपाद्य अर्घ्य आचमनीय सब उनको दिया व फिर कहा कि हे महाप्राज्ञ ! निर्विघ्न तो हो व कुशल तो विद्यमानहै ६ व निरामय तो है और यहभी कहा कि हे पिप्पल ! जिस

कारण से तुम्हारा आगमन यहां हुआ वह सब हम तुमसे कहतेहैं ७ तीन सहस्र वर्षतक जब तुमने तपकिया तो हे महाभाग! तुमने देवताओं से वरपाया ८ वश्यत्वभी तुमने पाया और यथेच्छगमन भी पाया इससे तुम मत्तहोगये अपनेको न जाननेसे बड़ाभारी गर्व्व तुमने किया ९ तब तुम्हारा सब चेष्टित एक महात्मा सारस ने देखकर मेरानाम तुमसे कहा कि उसमें उत्तमज्ञानहै १० तब पिप्पलजी बोले कि नदी के तीरपर जिस सारसने हम से तुमको सब ज्ञानमय बतायाहै प्रथम बताइये वह कौनहै ११ यह सुन सुकर्म्मा विप्र बोले कि नदीके किनारे आपसे जिन्होंने वार्त्तालाप कियाहै उनको तुम महात्मा परमेश्वर ब्रह्माजी जानो १२ और क्या पूछते हो कहो वहभी तुमसे कहेंगे विष्णुजीबोले ऐसा कहकर धर्म्मात्मा सुकर्म्माजी विराम कररहे १३ तब पिप्पलजी फिर बोले कि हमने भूतलपर सुनाहै कि सब संसार तुम्हारे वशमेंहै सो हे विप्र! यह कौतुक हमको यत्नसे दिखाओ १४ तब धर्म्मात्मा सुकर्म्मा पिप्पल जीसे बोले कि सब जगत् हमारे वश्यात्वश्यहोनेका कारण देखो १५ इन्द्रादि लोकपाल व अग्निआदि सब देवगण व विद्याधरादिक सब हमारे बुलाने पर आते हैं फिर विसर्ज्जन करने से चले जाते हैं इतना कहतेही इन्द्रादि देवगण वहां आये व महात्मा सुकर्म्माजी से बोले १६।१७ कि किसलिये आपने हमलोगों का स्मरणकियाहै हे विप्र! इसका कारणकहो तब सुकर्म्माजी बोले कि ये पिप्पलनाम विद्याधर यहांआयेहैं १८ इन्होंने हमसेकहा कि विप्र तुम्हारेवशमें सब विश्व है सो हमने इन महात्माके विश्वासके लिये आपलोगोंको बुलाया है १९ अब अपने २ स्थानों को जाओ यह देवताओंसे सुकर्म्माने कहा तब सब देवगण महात्मा सुकर्म्मासे बोले २० कि हे विप्र! व हे विद्याधर! हमलोगोंका दर्शन सफल होताहै इससे जो तुम्हारे मनकोरुचताहो वह वर मांगो तुम्हारा कल्याण हो २१ वह तुमकोदेंगे इसमें सन्देहनहींहै यह सुरोत्तमों ने कहा तब भक्ति से देवताओं के प्रणामकर उन द्विजोत्तमने वर मांगा कि हे देवेन्द्रो! माता पिता के चरणों में हमको अचल भक्ति

देखो बस यही उत्तम वर आपलोगोंसे मांगते हैं २२।२३ व हमारे पिता वैष्णव लोकको जायँ एक यह उत्तम वरदो व ऐसेही माता जीभी उसी लोकको जायँ बस और कुछभी वर नहीं चाहते २४ तब देवगण बोले कि हे विप्रेन्द्र ! पिता के भक्त तो तुमहो उसी तुम्हारी पितृभक्ति से हमलोग सदा तुम्हारे ऊपर प्रीतियुक्त रहते हैं २५ हे महाराज ! ऐसा कहकर सब इन्द्रादि देव अपने लोक को चले गये इस रीति से सुकर्म्माजी ने सब अपना ऐश्वर्य्य पिप्पल को दिखादिया २६ व पिप्पल ने भी महाअद्भुत कौतुक देखा तब धर्म्मात्मा पिप्पल कुण्डलके पुत्र सुकर्म्मा से बोले कि २७ अर्व्वाचीन व पराचीनरूप कैसे होते हैं हे कहनेवालों में श्रेष्ठ ! दोनोंका प्रभाव हम से कहो २८ तब सुकर्म्माजी बोले कि अब पराचीन रूपका चिह्न तुम से कहते हैं जिससे इन्द्रादि सबदेव व चराचर विश्व प्रमोहित होरहाहै २९ व जो सब विश्व में व्यापक प्रभु सब में प्राप्त संसारका स्वामी है उसका रूप किसी योगी ने भी नहीं देखा ३० वेद कहता है कि ऐसा है पर उसको भी कहने की शक्ति नहीं है इससे नहीं कह सक्ता क्योंकि वह पदहीन कररहित नासिकाहीन अकर्ण व मुखवर्जितहै ३१ परन्तु तीनों लोकों के रहनेवालों के सब कर्म क्षण क्षण के किये हुये देखता रहताहै व उन लोगों के कहेहुये व अन्तःकरण के सब वचन अच्छीतरह विना कानके सुन लेता है ३२ है गतिहीन पर सब कहीं चला जाता है व उसका कुछरूप नहीं है पर सर्व्वत्र दिखाई देताहै हाथ उसके नहीं पर सब पदार्थों को अच्छेप्रकार ग्रहणकरताहै व पादहीनहै पर अतिवेग से दौड़ताहै ३३ व हे विप्र ! वह सबकहीं देखाई देताहै व विना पैरों से सब कहीं पहुँचताहै व जिसको सब देवेन्द्र तथा तत्त्वदर्शी मुनिलोग भी नहीं देखते ३४ व वह उन सबोंको देखताहै व्यापक विमलसिद्ध सिद्धिके देनेवाले सब के नायकको ३५ महायोगी धर्म अर्थ के जाननेवाले तेजोमूर्ति व्यासजी जानते हैं आकाश एकवर्ण अनन्त ३६ सो यह निर्मलरूप [illegible] श्रुति कहती है व्यासजी और मार्कण्डेयजी तिस पद को जानते हैं ३७ अब अर्वाचीन को कहते हैं एकाग्र

मन होकर सुनो जब भूतात्मा संहारकर अकेलेही रहे ३८ जलमें शेषजी के ऊपर शय्याबनाकर बहुतकाल जनार्दनजी सोये ३९ तब जलके अन्धकार से तपेहुये योगी महामुनि मार्कण्डेयजी स्थानकी इच्छाकर घूमनेसे कष्टयुक्तहो ४० घूमते २ शेषकी शय्यापर सोतेहुये करोड़ सूर्य्यों के समान प्रकाशित सुन्दर आभरणों से भूषित ४१ दिव्यमाला और वस्त्रधारे सब व्यापियों के ईश्वर योगनिद्रामें प्राप्त मनोहर शङ्ख चक्र गदा धारण किये दिखलाई पड़े ४२ और महा भाग्यवती काले अञ्जनके समान काली डाढ़ों से कराल मुखवाली भयानकरूपयुक्त एकस्त्री भी दिखाईदी ४३ तब उस स्त्रीने महामुनि मुनिश्रेष्ठजी से कहा कि मत डरो फिर पांच योजन के विस्तारवाले कमलपत्र में ४४ महादेवी ने मार्कण्डेयजी को बैठाला और कहा कि केशवजी सोते हैं अब तुमको डर नहीं है ४५ तब योगियों में श्रेष्ठ मार्कण्डेयजी बोले कि हे भामिनि ! तुम कौनहो इस प्रलयमें तुम्हीं रहगईहो ४६ जब मुनिने देवीसे इसप्रकार पूछा तब आदर समेत देवी बोली कि हे ब्राह्मण! जो शेषकी शय्यापर केशवजी सोते हैं ४७ इनकी वैष्णवीशक्ति मैंहूं जो यहां कालरात्रि कहातीहूं हे विप्रेन्द्र सब मायासे युक्त हमको इसप्रकार जानो ४८ संसार के मोह के लिये पुराणों में महामाया कहातीहूं ऐसा कहकर देवी अन्तर्द्धान होगई ४९ मार्कण्डेयजी के देखते हुये देवीके जाने में भगवान्‌की नाभि में सुवर्ण के समान दीप्तिवाला कमल उत्पन्नहुआ ५० कमल से महातेजस्वी लोकपितामह ब्रह्माजी उत्पन्न हुये ब्रह्मा से सब स्थावर जङ्गम संसार उत्पन्न हुये ५१ इन्द्रादिक लोकपाल अग्नि इत्यादिक देव सब ब्रह्मासे उत्पन्न हुये विष्णुजी राजा वेनसे कहते हैं कि हे राजन् ! अर्वाचीन स्वरूप मैंने तुमको दिखाया ५२ यह अर्वाचीन स्वरूपहै पराचीन निराश्रयहै जब वह देह दिखलाताहै तब देहरूप वे होजाते हैं ५३ हे पिप्पल! ब्रह्मादिक सब लोक अर्वाचीन हैं जे तीनों लोकमें मनुष्य होते हैं वे अर्वाचीनहैं ५४ और वह भूतात्मा पराचीनहै जिसको योगीजन देखते हैं यह मोक्षरूप परंस्थान परब्रह्म स्वरूप ५५ अव्यक्त अक्षर हंस शुद्धसिद्धियुक्तहै हे विद्याधर!

पराचीनका जो रूपहै वह तुम्हारे आगे ५६ सब कहा और क्या तुम से कहैं तब पिप्पल बोले कि हे सुव्रत ! किससे तुम्हारे महाज्ञान उत्पन्न हुआहै ५७ अर्वाचीन की गति और पराचीनकीभी गति जानते हैं तीनों लोकका श्रेष्ठ ज्ञान तुममें इसीप्रकार वर्तमानहै ५८ हे सुव्रत ! तपस्याकी परानिष्ठा को नहीं देखते हैं यजन याजन तीर्थ वा तपस्या तुमनेकी है ५९ तिसका प्रभाव कहिये किस से तुमको सब ज्ञान प्राप्तहुआ है तब सुकर्मा बोले कि तप नहीं जानते देहको सुखलाया नहीं ६० यजन याजन वा तीर्थ साधन नहीं जानते पुण्य काल सुन्दर कर्म से उत्पन्न ध्यान मैंने नहीं साधा ६१ केवल पिता माता की पूजन जानताहूं दोनों हाथ से माता पिताके नित्यही ६२ पुण्यकारी चरणों को धोताहूं अङ्गचापता स्नान भोजनादिक करा-ताहूं ६३ तीनों कालमें ध्यानमें लीन दिन दिन में साधन करताहूं तिन माता पिता के चरण जलको दिन दिन में ६४ भक्ति भाव से पीता और अच्छे भाव से पूजन करताहूं जबतक हे पिप्पल ! मेरे माता पिता जीवते हैं ६५ तबतक हमको अतुल लाभहै शुद्धभाव चित्त से दोनों को हम पूजते हैं ६६ स्वच्छन्द लीलापूर्वक चलते हैं इसप्रकार हम बर्तते हैं हमको अन्य तपस्यासे क्या है देह के सुखलाने से क्या है ६७ अच्छी तीर्थयात्रा और अन्य पुण्यों से इस समय में क्याहै सब यज्ञों का जो फल प्राप्तहोताहै ६८ वह फल मैंने पिताकी और माताकी सेवामें देखाहै माता पिता की सेवा पुत्रों को गतिकी देनेवाली है ६९ सब कर्मों में सर्वस्व तीनों लोकमें सारभूत है माता की सेवासे पुत्रको लोक होताहै ७० तिसीप्रकार पिताकी शुश्रूषासे भी होताहै बड़ी पुण्य होती है गङ्गा गया पुष्कर तहांही हैं ७१ पुत्रके जहां माता पिता स्थितहैं इसमें सन्देह नहीं है और भी पुण्यकारी अनेक प्रकार के तीर्थ तहां हैं ७२ ये पुत्रको पिताकी सेवा से होते हैं पिताकी सेवा से तिस दान तपका फल ७३ अच्छे पुत्रको होता है और धर्म से श्रमही है पिताकी सेवा से अत्युत्तम पुण्य पुत्र पाताहै ७४ अपने कर्म का सर्वस्व यहां और परलोक में है जीवते हुये अपने माता पिताकी ७५ पुत्र होकर सेवाकरे तिसके पुण्यफल

को सुनिये तिसके ऊपर देव पुण्यवत्सल ऋषि ७६ और तीनों लोक प्रसन्न होते हैं माता पिता के चरणों को नित्यही धोताहै ७७ तिस को दिन दिन में गङ्गा स्नान का फल होताहै पुण्यकारी मिठाइयों से जो माता पिता को ७८ भक्तिसे नित्यही भोजन कराता है तिस के पुण्य को हम कहते हैं पुत्रको अश्वमेध यज्ञ का फल होताहै ७९ पान छादन भोजन पीनेवाले भोजन और पुण्यकारी अन्नसे भक्तिसे जो माता पिता की पूजन करताहै ८० वह सर्व ज्ञानी होताहै यश और कीर्त्ति पाता है माता पिताको देखकर आनन्द से पुत्र बोलताहै ८१ तिसके ऊपर प्रसन्न होकर निधि उसके घरमें बसती हैं गौवें सदैव पुत्रको सुख देतीं और प्रसन्न होती हैं ८२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातृपितृतीर्थ माहात्म्येद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

दो० तिरसठयें महँ मातु पितु सेवनकेर विधान ॥
जासों होवें पुत्र के सकल काम अरु ज्ञान १

सुकर्माजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ ! तिन माता पिताके स्नान करानेमें जो जलके कण पुत्र के सब अङ्ग में पड़ते हैं १ तो पुत्र को सब तीर्थ के स्नान के समान फल होताहै पतित विकल वृद्ध सब कर्मों में अशक्त २ व्याधि युक्त और कोढ़ी पिता माताकी जो पुत्र सेवाकरता है तिसके पुण्य को हम कहते हैं ३ तिसके ऊपर विष्णुजी प्रसन्न होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं है और वैष्णव लोक को जाता है जो योगियों को भी नहीं मिलता ४ पिता माता विकल दीन वृद्ध और महारोगीहों ऐसे को जो पापबुद्धि त्याग करदेताहै ५ तो पुत्र घोर कीड़ेयुक्त नरक को पाताहै और वृद्ध माता पिता का बुलाया हुआ ६ पुत्र होकर जो न जावे तो तिसके पापको हम कहते हैं वह मूर्ख मैला खानेवाला गांवका सुअर होताहै इसमें सन्देह नहीं है ७ सहस्र जन्मतक सुअर होने के पीछे फिर कुत्ता होता है पुत्रके घरमें स्थित बूढ़े माता पिताको ८ जो विना भोजन कराये आप खाता है

वह सहस्रवर्ष तक मूत्र और मैला खाता है ९ और दोसौ जन्म तक वही पापी पुत्र काला सांप होता है वृद्ध माता पिता का जो अपमान करताहै १० वह दुष्ट सौ करोड़ जन्म तक मगर होता है जो पुत्र माता पिता को कटुक वचन कहताहै ११ वह पापी व्याघ्र होकर फिर वृक्ष होताहै जो दुष्टबुद्धि पुत्र माता पिता का मान नहीं करताहै १२ वह सहस्र युग तक कुम्भीपाक में बसता है पुत्रों को माता और पिताके समान तीर्थ तारने और कल्याण करनेके लिये इसलोक और परलोकमें नहीं है हे महाप्राज्ञ! तिससे हम पितृदेव और मातृदेवको पूजते हैं जिससे सब देवोंमें श्रेष्ठ योगी होवें और माता पिताके प्रसाद से उत्तम ज्ञान प्राप्त हुआहै १३ । १५ ये सब तीनोंलोक हमारे वश हुये हैं इन महात्मा देव वासुदेवजी की अर्वाचीन गति हम जानते हैं हे महामते! और पराधीन गति को भी जानते हैं पिता माता के प्रसादसे हमारे सब ज्ञान उत्पन्नहै १६।१७ कौन विद्वान् पिता माता को पूजन न करै सांगोपांग वेद और शास्त्र पढ़ने से क्या है जिसने पिता और माता को नहीं पूजा तिसके वेद निरर्थक हैं १८ । १९ हे विप्र! यज्ञ तपस्या दान पूजनों से क्याहै तिसके सब विफल होजाते हैं जिसने माता २० और जीवते हुये पिता जो कि घरमें स्थितहैं उनको नहीं पूजा यही पुत्रका धर्म है और मनुष्यों में यही तीर्थ है २१ यही पुत्रका निश्चित मोक्ष व यही शुभ जन्म का फलहै इसमें कुछ संशय नहीं है व यही पुत्रका यज्ञ दानहै २२ कि पिताकी पूजा नित्य भक्तिभावसे करता रहै जो पुत्र इसप्रकारसे पिता माताकी सेवा करताहै कि जिनसे उत्पन्न हुआ है व जिनसे पालित पोषित हुआहै २३ बस उसके तीर्थ दान यज्ञ तप का फल यही है व जिसने माता की उपासना की उसको सब यज्ञों का फल मिलताहै इसमें सन्देह नहीं है २४ व जिसने नित्य सुन्दरी भक्तिके साथ पिताकी उपासना की है उसकी सब पुण्यदेने वाली यज्ञादिक क्रिया सिद्ध होती हैं २५ इस अर्थ में हमने धर्म्म शास्त्र भी सुनाहै कि पुत्रको चाहिये कि पिता की भक्तिमें नित्यही तत्पर रहै २६ पिताके सन्तुष्ट होनेपर पूर्व्वकाल में राजा पूरुने बड़ा सुख

पाया व पिता के रुष्ट होने पर पूर्व्वकालमें यदुजीने महापाप पाया २७ क्योंकि उनके पिताने उनको शाप दिया था ऐसा जानकर मैंने अपने वृद्ध माता पिता की सेवा भक्तिसे की है २८ व इन्हीं दोनों जनों के प्रसाद से महाफल पाया २९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेमातापितृतीर्थ माहात्म्येत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

दो० चौंसठयें महँ नहुष सुत नृपययाति वृत्तान्त ॥
मातलिसों तनुआत्मके विषय विचारनितान्त १

ये समाचार सुन पिप्पल विप्रने प्रश्न किया कि पिता के प्रसाद के भावसे पूरुजीने कैसे उत्तम सुखपाया व भोगा सो हमसे विस्तार सहित कहो १ व पापका प्रभाव भी दूसरे ने कैसे भोगा हे द्विजो-त्तम ! सब हमसे विस्तार से कहो २ सुकर्म्मजी बोले कि सुनो पाप-नाशन चरित कहेंगे जिसमें नहुष व उनके पुत्र महात्मा ययातिका वृत्तान्तहै ३ सोमवंश में उत्पन्न नहुषनाम राजाहुये उन्होंने अतुल दान धर्म्म अनेक किये ४ व नानाप्रकार के उत्तम यज्ञ किये सो भी सब उत्तम २ अश्वमेध और वाजपेय यज्ञ सौ सौ किये व और भी बहुत से किये ५ अपने पुण्यके प्रभाव से इन्द्रलोकको प्राप्तहुये सब धर्म्म युक्त गुणसहित अपने पुत्र ययाति को राजा बनागये ६ जोकि सत्यसम्पन्न धर्म्मवीर्य्य व महामति थे जब राजा नहुष ऐन्द्रपद भो-गने लगे तो उनके पुत्र ७ ययाति सत्ययुक्त प्रजाओं को धर्म्म से पालनेलगे अपने आप जा २ कर प्रजाओंके कर्म्म देखते व जो २ यज्ञादि धर्म्म सुनें व जो २ पुण्यतीर्थ सुनें उसकी यात्राकरें व सब धर्म्म कर्म्म सदाकरें ८ । ९ यज्ञ तीर्थ दान पुण्यादिक करतेहुये धर्म्म-पूर्व्वक वे मेधावी राज्यकरते धर्म्म के अनुकूलही सब कार्य्य करते इसप्रकार राज्यकरते २ राजा ययातिको अस्सीसहस्र वर्ष १० बीत गये व उन महात्माके राज्यमें कुछ अन्तर न पड़ा राजा ययातिजी के उन्हींके बल व वीर्य्य के समान चार पुत्रहुये ११ हे पिप्पल ! उन

के नाम कहते हैं एकाग्रमन होकर सुनो उनके ज्येष्ठपुत्र महाबल प-
राक्रमी यदुनामहुये १२ व एक पूरुनाम पुत्रहुये तीसरे अनुनाम
हुये व चौथे द्रुह्युनाम धर्मात्मा हुये १३ इस रीतिसे महात्मा यया-
तिजी के चारोपुत्र तेज पौरुष व पराक्रमसे अपने पिताही के तुल्य
हुये १४ व बहुत दिनों तक राज्यकरके उन धर्म्मात्मा ययाति जीने
ऐसा राज्यकिया कि उनका यश तीनों लोकों में बहुतहुआ १५ श्री-
विष्णु भगवान् राजा वेन से बोले कि हे राजन्! एकसमय में देवर्षि
नारदजी ब्रह्माजी के पुत्र इन्द्र के देखने के लिये इन्द्रलोक को गये
१६ अग्निसमान तेजस्वी विप्र सर्व्वज्ञ ज्ञानपण्डित नारदजी को
आयेहुये देखतेही देव इन्द्र आसनपर से उठे १७ व प्रणाम करके
मधुपर्कादि से शिरझुकाकर भक्तिपूर्व्वक उनकी पूजाकी और अपने
पुण्यकारी सिंहासनपर बैठाकर मुनिश्रेष्ठ से पूँछा कि १८ आप का
आगमन कहां से इस समय हुआ व उसका कारण क्या है हे महा-
मुने विप्र! आपका कौन प्रिय इससमय हमकरें १९ नारदजी बोले
कि हे देवराज ! जो तुम भक्तिसे बोले सब कुछ तुम ने किया हम
तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हुये अब तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कहते हैं
सुनो २० इस समय हम महीलोकसे आकर तुम्हारे मन्दिर में प्राप्त
हुये हैं सो तुम्हारे देखनेही के लिये आये हैं और नहुषको भी देख
आये हैं २१ इन्द्र बोले कि आज कल सत्यधर्म्म से कौन राजा
पृथ्वी का सदैव पालन करताहै व आपभी सर्व्व धर्म्म से युक्त
वेद शास्त्र पढ़े हुये ज्ञानवान् व गुणीहो २२ व वेदज्ञ ब्राह्मणप्रिय
ब्रह्मण्य वेदवादी शूरवीर यज्ञकर्त्ता दाता व भक्तिमान्हो २३ नारद
जी बोले कि इनगुणों से युक्त तो अतिबली राजा नहुषका पुत्र यया-
ति है जिसके सत्य व वीर्य्य से सब लोक प्रतिष्ठितहैं २४ आपके
समान भूलोक में नहुष का पुत्र ययाति है आप स्वर्गमें हैं और ऐ-
श्वर्य बढ़ानेवाला ययाति पृथ्वी में है २५ हे महाराज ! पितासे श्रेष्ठ
पृथिवीका पति ययाति है उसने सौ अश्वमेध और सौ वाजपेय यज्ञ
किये हैं २६ और अनेकप्रकारके दान भक्तिसे दिये हैं लाखों करोड़ों
गोदान किये हैं २७ कोटि होम व लक्षहोम किये हैं भूमिदानादिक दान

ब्राह्मणों को दियाकरता है २८ व सब साङ्गोपाङ्ग से सुरूपवान् धर्म्म का परिपालन करनेवाला है इन सब गुणोंसे युक्त नहुष का पुत्र महाराज ययाति २९ पृथिवी पर राज्य करता है अस्सीसहस्र वर्ष तक सत्य धर्म्म के साथ पृथ्वी का राज्य उस धर्म्मात्माने किया है जैसे स्वर्गमें आप राज्य करते हैं ३० मुनीश्वर नारदजी से ऐसा सुनकर मेधावी इन्द्र धर्म्म के पालनसे डरे और पीछे से कहा ३१ कि हां सुकर्माजी बोले सौ अश्वमेधयज्ञ करके इसके पिता नहुष ने पूर्वकालमें हमारा राज्य बहुत दिनों तक कियाथा यहां ऐन्द्रपद पर आकर वह वीर देवराज होगया था ३२ जब इन्द्राणी के सङ्ग भोगकरने की इच्छाकी तो फिर नीचे गिरादिया गया उसी अपने पिताके तुल्य पराक्रमी यहभी महाराज है ३३ तो यह भी इन्द्रपद पर आजायगा इसमें सन्देह नहीं है इससे जिस किसी उपायसे उस राजा को स्वर्ग को लानाचाहिये ३४ इस प्रकार से इन्द्रने अपने मनमें चिन्ता की और तिससे डरा ययाति राजाके बड़े भयसे ३५ इन्द्र ययाति के लेने को दूत मातलि सब काम युक्त नहुषके विमान समेत भेजते भये मातलि जहां नहुषके पुत्र ययातिजी थे वहां पहुँचा देखा तो जैसे सभामें विराजमान इन्द्र शोभित होते हैं ३६ । ३८ वैसेही धर्म्मात्मा ययाति जी अपनी सभामें शोभित होरहेथे सो जाकर सत्यभूषण महात्मा राजा से मातलि बोला कि ३९ हे राजन्! हम देवराजके सारथि हैं हमारा वचन सुनो हम इन्द्र के भेजेहुये तुम्हारे समीप इस समय आये हैं ४० जो देवराज ने तुमसे कहाहै वह एकाग्र मन होकर करो इसी समय आप इन्द्रलोकको चलें क्यों कि देवराज ने कहाहै कि अब पुत्रको राज्य दे अन्त्येष्टि कर्म्म उत्तम करके आवें महातेजस्वी इलराजा यहीं आकर बसते हैं ४१ । ४२ क्योंकि पुरूरवा महावीर्य्यवान् विप्रचित्ति शिवि मनु इक्ष्वाकु राजा ४३ बुद्धिमान् सगर नहुष तुम्हारे पिता ऋतवीर्य शन्तनु ४४ भरत युवनाश्व कार्तवीर्य ये सब बहुत यज्ञोंको कर स्वर्ग में आनन्दित रहते हैं ४५ व इन राजाओं के तुल्य और भी यज्ञकर्म्मों में तत्पर राजा यहां आकर निवासकरते हैं सबके सब अपने अपने कर्म्मों से

स्वर्ग में भी इन्द्रही के सङ्ग प्रमुदितहोतेहैं ४६ फिर तुम सब धर्म्म जाननेवाले और सब धर्मों में स्थितहैं हे महीपते ! इन्द्रके सङ्ग स्वर्ग में आनन्द कीजिये ४७ यह सुन ययातिजी बोले कि हमने कौन सा कर्म्म किया है जिससे देवराज इन्द्रजी अपने साथ स्वर्गसुख भोगनेको बुलाते हैं मातलि सब हमसे कहो ४८ तब मातलि बोले कि हे राजेन्द्र ! अस्सीसहस्रवर्ष पर्य्यन्त तुमने जो दान पुण्य यज्ञादि कर्म्मोंका साधन कियाहै ४९ हे महाराज ! उन्हीं अपने कर्म्मों से स्वर्गको चलो हे महीनाथ ! चलके देवराजजी से सख्यकरो ५० व पञ्चभूतात्मक इस शरीरको यहीं भूमिपर छोड़ कर चलो व दिव्य शरीर धारणकर अपने मनमाने भोग वहांचल कर भोगो ५१ तुम्हारेभोगके लिये सब पदार्थ स्वर्ग में जैसे तुमने यहां दान पुण्य यज्ञतपकिये हैं वैसे २ बनकर तैयारहुये हैं ५२ महाराज ययातिजी बोले कि हे मातलिजी! जिसशरीरसे पृथ्वीपर बहुत से सुकृत और पाप सिद्धहोते हैं उसको यहींछोड़कर उसी के इकट्ठे किये हुये पदार्थोंके भोगने को कैसे चलें ५३ मातलि बोले कि हे नृप ! जहां इन पृथ्वी जल वायु तेज आकाश पञ्चतत्त्वों से यह शरीर उत्पन्न हुआ इसे वहीं छोड़ दिव्य शरीर से सब लोग स्वर्ग में जाते हैं ५४ व अन्य सब मनुष्यभी जोकि पाप पुण्य सब के साधक हैं वे भी इसशरीरको यहीं छोड़कर नीचे वा ऊँचे को जाते हैं ५५ राजा ययाति बोले कि हे मातलिजी ! इसी पञ्चात्मक शरीरही से पुण्य पापकरके मनुष्य ऊपर वा नीचे को जाते हैं ५६ तो फिर क्या विशेषता हुई जो शरीर को भूमिही पर छोड़कर जाना होताहै जो पाप पुण्यकही प्रभाव से देहका पात होताहै ५७ तो हे सूत ! मर्त्य लोकमें यह प्रत्यक्ष दृष्टान्तही दिखाई देताहै पाप व पुण्यकरने की कुछ विशेष अधिकता न हुई ५८ जिस शरीर से मनुष्य यहां सत्य धर्मादि इकट्ठाकरता है उसको मनुष्य यहां कैसे छोड़े ५९ आत्मा व काय ये दोनों मित्ररूप हैं फिर काय मित्रको छोड़कर आत्मा चला जाता है ६० मातलि बोले कि हे राजन् ! तुमने सत्य कहा आत्मा कायको यहां छोड़हीकर जाताहै क्योंकि आत्माका कायकेसंग कुछ

सम्बन्धही नहीं है ६१ क्योंकि यह शरीर सदा पंचत्वरूपही रहता है देखो जबसे उत्पन्न होताहै सदैव जर्ज्जरही बनारहता है वृद्धावस्था से पीड़ित होता है और व्याधियों से सदैव दूषित रहता है ६२ व जब जरा के दोषोंसे यह काय प्रभग्न होजाता है तो फिर यहां का रहना नहीं चाहता आकुल व्याकुलहो जीवको छोड़कर आप चलाजाता है ६३ धर्म्म सत्यसे जो पुण्य उसने किये हैं व दान नियम संयम किये हैं व अश्वमेधादि यज्ञ तीर्थ संयम जो कुछ उसने धर्म्म कर्म्म किये हैं ६४ व जो तप पुण्य और भी किये हैं वे इस जरा को नहीं रोंकसके व न वे पातकही शरीरको दुःख देनेवाली वृद्धता को निवारित करसके हैं ६५ तब राजा ययातिजी फिर बोले कि जरा कहां से उत्पन्न होती है व क्यों शरीरको पीड़ित करती है हे सूत! यह हमसे तुम विस्तार से कहनेके योग्यहो ६६ मातलि बोले कि हे नृपोत्तम! हम तुम से जराका कारण कहते हैं जिससे कि यह कायके मध्यमें उत्पन्न होती है ६७ यह शरीर पृथिव्यादि पांचभूतों से बना है इसी से पांचों से सदा युक्त रहताहै व हे राजन्! जिससे कि इन सबों से यह उत्पन्न होता है इसी से काय कहाता भी है ६८ जब यह वह्निसे प्रज्वलित होता है तो इसमें से रस उत्पन्न होताहै उस रससे धूम उत्पन्न होताहै व धूमसे मेघ होते हैं ६९ व मेघों से जल उत्पन्न होता है व जलसे पृथ्वी होतीहै फिर वह पृथ्वी ऋतुकाल को प्राप्त होतीहै जैसे कि नारी रजस्वला होती है ७० उससे गन्ध उत्पन्न होताहै व गन्धसे फिर रस होताहै रससे अन्न होताहै अन्न से वीर्य होताहै इसमें संदेह नहीं है ७१ वीर्य से कुरूप देह होताहै जैसे पृथ्वी गन्धोंको उत्पन्न करती है रसों से पृथ्वी तलमें चलतीहै ७२ तैसेही देह नित्यही रसके आधार सब ओर चलताहै तिससे गन्ध उत्पन्न होता है गन्ध से फिर रसहोताहै ७३ हे राजन्! रससे महावह्नि होती है इस में दृष्टान्त देखिये जैसे काष्ठ से अग्नि होतीहै और फिर काष्ठ को प्रकाशित करदेती है ७४ तैसेही देहके मध्यमें रससे अग्नि उत्पन्न होती है वही नित्यही संचारकर देहको पुष्ट करती है ७५ जबतक रसकी

अधिकता होती है तबतक जीव शांतिमान् होता है तैसेही अग्नि चारप्रकारकर क्षुधारूपसे वर्तमान होताहै ७६ फिर यह तीव्र जल समेत अन्नकी इच्छा करताहै तो अन्न और जलके दानको पाताहै ७७ अग्नि रक्त को चारप्रकार करती है तैसेही वीर्यकोभी इस में संदेह नहीं है तिससे फिर सब देहका नाश करता यक्ष्मरोग होताहै ७८ रस की अधिकता होती है तब अग्नि शांत होजाती है रससे पीड़ित हुआ तो ज्वररूप होजाता है ७९ ग्रीवा पीठ कटि गुदा और सब सन्धियों में अग्नि स्थित होता है देह में अग्नि वर्त्तमान होता है ८० जब रस की आधिक्य होती है तो काय को पुष्ट करती है रस जब कुछ बन्धनको प्राप्त होता है उसीसे बल होता है ८१ व उसी बलसे फिर काम उत्पन्न होता है वह इस शरीर का शल्यरूप होता है ८२ व वही कामाग्नि कहाता है वह बलका नाश करता है मैथुनके प्रसङ्गसे देहमें विनाशभाव को प्राप्त होजाताहै ८३ जब पुरुष स्त्रीका हाथ पकड़ता है तब कामाग्नि से पीड़ित होताहै व मैथुनके प्रसङ्ग से फिर उसकी इन्द्रियको मूर्च्छा आजाती है ८४ व शरीर तेजहीन होजाता है और बलकी हानि होती है जब बलहीन होजाता है तो अग्नि की प्रेरणा से दुर्बल होजाता है ८५ व उस वह्नि के प्रचार से पुरुषके शरीरमें शुक्र व शोणित उत्पन्न होता है व जब शुक्र व शोणित दोनों का नाश होजाताहै तब देह शून्य होजाता है ८६ व तब काय में अनिलोलुपता उत्पन्न होतीहै तब शरीर की आकृति अतिप्रचंड होकर बिगड़ उठती है व अंगोंमें बिवर्णता छाजाती है उससे दुःखके मारे सन्तप्त होकर काय बुद्धिहीन होजाता है ८७ व जब कभी नारी को देखता वा सुनताहै तब चित्त सदैव उसी में लगकर भ्रमण करनेलगता है व कायमें तृप्ति नहीं होती चित्त लोलुप होकर उसीमें दौड़ता रहता है ८८ फिर सुरूपवती व अरूपवती सब स्त्रियों में उसका चित्त जाताहै तब मांस व शोणित के संक्षय से काय बलहीन होजाता है ८९ व कामाग्नि से नाशित होनेके कारण शरीरमें पलित आजाता है बस तब उसी से शरीर में दिन दिनमें जरा आजाती है ९० तब

सुरतमें नारीकी चिंतना करता है जैसे वार्द्धषिक नर करता है तैसे तैसे इस के तेजकी हानि होती है ६१ तिससे देह नाशहोजाता है फिर जरारूप अग्नि उत्पन्न होता है इसमें सन्देह नहीं है ६२ ॥

चौ० तब तनु में दारुण ज्वरहोई । प्राणिप्राणनाशक नहिंगोई ॥
स्थावर जङ्गम सकल जरार्दित । पीड़ितहोत तासुपरिमर्दित ॥
बहु पीड़ा पीड़ित ह्वै सारे । नष्टहोत करि दीन पुकारे ॥
यहकहिइन्द्रसारथीमातलि । कीनविरामयुक्तिकहिकैभलि ९३ । ६५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेमातापितृतीर्थ कथनेचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

दो० पैंसठयें महँ पुनि नृपति मातलिकर संवाद ॥
ज्यहि सुनि भूपतिके मिटे मन के सकल विषाद १

राजा ययातिजी मातलिसे बोले कि हे मातलिजी ! यह शरीर धर्म्मका रक्षकहै पर तोभी आत्माके संग स्वर्ग को नहीं जाता इसका कारण हमसे कहो १ मातलि बोले कि हे भूपाल ! पृथिव्यादि पंच महाभूतों की संगति आत्माके साथ नहीं है केवल एक स्थान पर रहते पर वे पांचों आत्मासे संगति नहीं रखते २ इनपांचोंके एकत्र होने से यह शरीर बनकर शोभित होनेलगता है परन्तु जब ये सब जरा से पीड़ित होते हैं तब अपने २ स्थान को चले जातेहैं ३ हे महाराज ! रस अधिक वाली पृथ्वी प्रकल्पित है फिर रसोंसे भीगी हुई पृथ्वी कोमल होतीहै ४ तो चींटी और मुसरियोंसे भेदन कीजाती है फिर छिद्र होजाते हैं बामी बड़ीभारी होजातीहै ५ तैसे देहमें गण्डमाला विचर्चिका उत्पन्न होजाती हैं फिर यह देह कीड़ोंसे काटा जाताहै ६ तो शीघ्रही पीड़ा करनेवाले गुल्म होजातेहैं इन दोषों से युक्त यह देहहै तो प्राणोंके संग कैसे स्वर्गको जासके ७ यह शरीर पृथिव्यादिकों का भाग है अपनी पृथ्वी में मिलजाता है स्वर्ग को नहींजाता क्योंकि जैसेही पृथ्वी वैसेही शरीर जहां पृथ्वी रहती उसीमें मिलकर रहजाताहै ८ हे पार्थिवोत्तम ! यह हमने तुमसे सब

वर्णन किया जो कि तुमने शरीर व आत्मा के विषयमें पूँछा ६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थमाहात्म्येपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

दो० छासठयें महँ नहुषसुतसों मातलि यह गाव ॥
सृष्टि देहकी मलिनता भाव शुद्धि करि चाव १
पुनि पिप्पलरु सुकर्म्म द्विज कर संवाद अनूप ॥
मातु पिता सेवा सुतहि पुण्य अधिक सुनि रूप २

ययातिजी बोले कि हे मातलिजी! जो शरीर पापसे पतित होता है व धर्म्म से भी पतितही होता है तो पुण्यकरने में भूतलपर कुछ विशेषता हम नहीं देखते १ व जैसे पूर्व्वजन्म में पतितहोकर इस जन्ममें हमलोगों का शरीर उत्पन्नहुआ है फिर अबकी पतितहोकर कैसे उत्पन्नहोगा यह हम से विस्तार सहित कहो २ मातलि बोले कि नारकी पुरुषों का शरीर अधर्म्म करने के कारण जबरदस्ती उत्पन्न करायाजाता है इस से एक क्षणमात्रमें सब पृथिव्यादि भूतों से उत्पन्न होजाता है ३ ऐसेही एक धर्म्मकरने के कारण देवताओं का शरीर भी पञ्चभूतों के सारसे बहुत शीघ्र उत्पन्न होताहै ४ व कर्म्मों के मिलने से जो महात्माओंके शरीर उत्पन्नहोते हैं व पंचभूतों के एकमें मिलनेसे चार प्रकारके होते हैं ५ उद्भिज्ज स्थावर जाननेचाहिये तृण गुल्मादि रूपी कृमि कीटपतंगादिक स्वेदज हैं ६ अंडज सब पक्षी सांप मगर हैं जरायुज मनुष्य चौपाये जानने चाहिये ७ तहां जलसे भूमि सींचीगई व ऊपरसे सूर्य्य की ऊष्मा व नीचेकी शीतलता से युक्तहुई फिर वायुने उसे आकर्षित किया तो खेतों से बीज जमआये बस वृक्ष वल्ली अन्नादि उत्पन्न होआये ८ जैसे कि स्त्रीकी योनि जब पुरुषके संयोगसे संसिक्त होती है व फिर उष्णता पहुँचती है तब मृदु होजाती है बस बीज उसमें स्थित होजाताहै ९ उसी सेमनुष्यादिकों की उत्पत्ति होती है ऐसेही शीतलता व उष्णताके योग से बीजसे अंकुर निकलआते हैं व अंकुरसे फिर पत्ते निकलते

हैं फिर पत्तेसे नाल फिर नालसे काण्ड व काण्डसे प्रभव १० प्रभव से दुग्ध व दुग्ध से तण्डुलकी उत्पत्तिहोती है फिर तण्डुल परिपक्क होने से ओषधियां पकीहुई होजाती हैं उन्हीं ओषधियों कोही अन्न कहतेहैं ११ वे यव आदि व धानपर्य्यन्त श्रेष्ठ होते हैं जिनके फलों में सारांश होताहै वे मुख्य ओषधियां कहाती हैं नहीं तो क्षुद्र तो बहुतहैं १२ इन्हीं ओषधियोंको पकनेपर काटकर फिर माड़तेहैं तब ओखड़ी में कूटकर सूपसे पछोड़ कर जलभरकर आग पर चढ़ाकर पकातेहैं और १३ छः प्रकारके रसके स्वादु निकालते हैं फिर उनको पाक कर भक्ष्य भोज्य पेय लेह्य चोष्य खाद्य पदार्थ बनाते हैं तिन के भेद ६ और मधुर आदिक ६ गुण हैं १४ । १५ फिर वह अन्न कवल बनाय २ भोजन करतेहैं उन्हीं कवलोंके परिपाकके रससे सब प्राण पुष्टहोते हैं १६ व जो विना अग्नि में परिपक्क किये अन्न खायेजाते हैं उनसे भीतर का पवन वैर रखताहै इससे उसकेभीतर प्रवेश क-रके बिगाड़ देताहै व जठराग्नि भी उसे कम पचाताहै इसलिये उस से विकार उत्पन्न होजाते हैं व जो अग्निमें पक्क करके पदार्त्थ भक्षण किये जाते हैं उनको जाठराग्निभी अच्छे प्रकार पाचित करताहै नहीं तो सामान्यतः कच्चे पक्के जो पदार्त्थ भोजनकिये जातेहैं उदर में पहुँचतेही पवन उनमें प्रवेश करके जलको अलग करदेता है व अन्नको शुष्क करके अलग १७ फिर उदरके अग्निके ऊपर जल को स्थापित करता है व जलके ऊपर उस अन्न पिण्ड को स्थापित करता तदनन्तर अग्निके नीचे वह पवन जाकर उसे धमताहै फिर पवन से धमायाहुआ अग्नि जलको अतिउष्ण करदेताहै उस अति उष्ण जल के संयोग से अच्छे प्रकार पचकर सब ओरको फैलताहै १८ । १९ व फैलनेहीके समय दो स्थानोंपर होजाताहै एक रस रूप होकर व दूसरा मलरूप होकर वह मल कीट बारह स्थानों में होकर बाहर को निकलताहै २० दोनों कान दोनों नेत्र दोनों नासिका के पुट जिह्वा दन्त ओष्ठ शिश्न व गुद रोम व सब देहपर का चर्म्म बस उस अन्नकी कीट और पसीना निकलने के येही बारह मार्ग्ग हैं २१ हृदयसे सब नाड़ियां कर चरणादिकों में लगी व बँधी रहती

हैं व उन्हीं नाड़ियों के मुख में होकर वह अन्नरस सर्व्वत्र पहुँचताहै २२ व उसी रससे नाड़ियां प्राणोंको परिपूर्ण करतीहैं व प्राण सब देह भरको तृप्त कराते हैं २३ व प्राणों में जो नाड़ियां टिकी हैं उनमें शरीर की ऊष्मा से जो जो पचने के योग्य होते हैं सब पचजाते हैं २४ व उन्हींसे त्वचा मांस हड्डी मज्जा मेदा रुधिर उत्पन्न होतेहैं रक्त से रोम और मांस उत्पन्न होते हैं केश तथा सब नसें मांस से होती हैं २५ व नसों से मज्जा व हड्डियां होती हैं व मज्जा और हड्डियों से नख उत्पन्न होते हैं व मज्जाही के अधिक होनेसे बल होता है व बीज प्रभव से होता है २६ ये बारहों के परिणाम हमने तुमसे कहे बस देहका मुख्य परिणाम कामहै शुक्रही से देह की उत्पत्ति होतीहै २७ मैथुनके समयमें योनि में जैसा निर्दोष होता है वा शुक्र में निर्दोष होताहै वह स्त्री के रुधिर के सङ्ग मिलकर एक होजाताहै निर्दोष दोनोंहुये तो शुद्ध सदोष हुये तो अशुद्ध उत्पत्ति होती है २८ सृष्टि होने में शुक्रही कारण होता है व उसी बीजके द्वारा अपने कर्म्मों से जीव योनि में पैठता है २९ पुरुषका शुक्र व स्त्रीका शोणित गर्भाधान के समय एकमें मिलजाते हैं सो दोनोंके मिलने से एक रात्रि में तो कलल अर्थात् कुछ ढबैलेरङ्गका होजाता है फिर पांच रात्रियोंमें वही कलल बुल्ला होजाताहै ३० व एक मासमें फिर पांच प्रकार का होजाताहै अर्थात् ग्रीवा शिर स्कन्ध पृष्ठ वंश व उदर ये एक मासमें बन जातेहैं ३१ हाथ पैर बगलें कटि ये सात दो मासों में बनते हैं व जितने जोड़ हैं वे भी दूसरेही मास में बनते हैं ३२ व तीन मासों में सैकड़ों सन्धि बनजाते हैं व चार मासों में हाथों पैरों की सब अंगुलियां बनती हैं ३३ मुख नासिका व कान पांच मासों में होते हैं दांतों के जमने के स्थान जिह्वा नख ३४ व कानों के छेद ये सब छठें मास में होते हैं पायु लिङ्ग उपस्थ वृषण ३५ व गात्रों के सब सन्धि ये सब सातयें मास में होते हैं अङ्ग प्रत्यङ्ग सम्पूर्ण केशसहित शिर ३६ सब अवयव स्पष्टतापूर्व्वक जाके अठयें मासमें होते हैं फिर किसी अङ्गमें कुछ न्यूनता नहीं रहती इसप्रकार से जब आठमासका गर्भ होता है तो उसको भूँखभी ल-

गती है ३७ इसी से जब माता छः प्रकार के रस भोजन करती है उस का कुछ रस उसके भी मुखमें जाताहै व उसको सब रसोंका ज्ञान होजाताहै व दिन २ उसको भूँख बढ़ने लगती है ३८ जब इसप्रकार से शरीर पूर्ण होजाताहै तो फिर जीव स्मृति पाताहै व सुख दुःखभी जानताहै व फिर उसको अनेक जन्म का स्मरण आताहै निद्रा स्वप्न कोभी जानताहै ३९ कि मैं मरा था फिर उत्पन्न हुआ व फिर मरा फिर हुआ व नानाप्रकारकी सहस्रों योनियां मैंने अनेकबार देखीं ४० पर अबकी जैसे मेरा जन्महो व संस्कार जैसेहीहों वैसेही अपने कल्याण के कर्म्मकरूं जिससे फिर गर्भ में वास न हो व यहभी चिन्तना करताहै कि जैसेही अबकी गर्भ से निकला कि संसारसे निवृत्त होनेवाला ज्ञान जानूँगा ४१।४२ इसप्रकार गर्भके दुःखों से पीड़ितहोकर कर्म्म के वशीभूतजीव गर्भही में मोक्षके उपायकी चिन्ताकरने लगता है ४३ जैसे कि पर्व्वतों से दबाहुआ कोई दुःखसे स्थित होता है ऐसेही ओझड़ी से बँधा हुआ प्राणी दुःख सहित अपना समय बिताता है ४४ व जैसे किसीको समुद्रमें डूबनेमें दुःख होताहै वैसेही वह दुःखसे आकुल होताहै गर्भ के जलसे सब अङ्ग उसके भीगेहुये होते हैं व अतिव्याकुल रहताहै ४५ जैसे कि कोई अग्नि से तपाये हुये कराहके तैलमें पड़कर छटपटाता है वैसेही गर्भ में पेटकी अग्नि से कष्ट पाताहै ४६ फिर अग्नि के समान तीक्ष्ण सूजियों से छिन्न भिन्नाङ्ग होकर दुःखित होताहै जो दुःखसूजियोंके लगनेसे होताहै उससे अठगुना गर्भ में दुःख होताहै ४७ गर्भ वाससे कष्टदायक और कहीं का वास नहीं होताहै प्राणियों को अतुल दुःख व सुघोर सङ्कट गर्भवासमें होताहै ४८ ये चर स्थिर सब प्राणियों के गर्भका दुःख अपने गर्भ के अनुरूप से कहा ४९ गर्भ से कोटिगुण पीड़ा जब जन्म के समय योनि में दबताहै तब होती है यहांतक कि ऐसे सङ्कीर्णमार्ग्ग से निकलने से देही मूर्च्छित होजाताहै ५० जैसे ऊखकोल्हू में पीड़ित होतीहै वैसेही जन्मके समय प्राणी योनिसङ्कट में पड़कर पीड़ित होताहै जब जब गर्भ से निकलने पर प्राणी होताहै तो प्रबल प्रसूतिका पवन प्रेरणा करताहै व अधोमुखकरके नीचेको गिराय।

जाताहै ५१ व महादुःख भोगताहै व रक्षा अपनी कहीं से नहीं पाता जैसे कोल्हू में ऊख पेरी जाती है व पीड़ित होती है ५२ वैसेही योनि यन्त्रमें पीड़ितहोकर प्राणी दुःखित होताहै व गर्भ के भीतर जब तक रहताहै नेत्रमूँदे राल कफयुक्त ओझरी से बँधा ५३ रक्त मांस वसा से लिप्त व विष्ठा मूत्रका पात्र बनारहताहै केश लोम नखसे ढँका व रोगोंका उत्तम स्थान ५४ आठ झरोखासे भूषित मुखही एकबड़ा द्वार रहताहै दो ओष्ठ दांत जीभ गला ५५ कफ पित्तयुक्त नाड़ी स्वेद प्रवाह रहताहै व वहां जब रहता तभी वृद्धताके शोकको करताहै कि जन्म लेनेपर जरा अवश्य समय पाकर आवेगी व काल चक्रभी आवेगा ५६ इसप्रकार काम क्रोधसे युक्त रहताहै पवनोंसे मर्दित रहता है नानाप्रकारके भोगविलासोंकी इच्छा से आतुर गूढ़ व रागद्वेषके वशानुग रहताहै ५७ व सब उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग जरायुसे वेष्टित रहते हैं ऐसा प्राणी बड़े संकटसे योनिमार्ग होकर बाहर निकलताहै ५८ जब उत्पन्न होताहै तो वैसेही विष्ठामूत्र व रुधिर से लपटाहुआ होता है व इस मनुष्यादि के शरीर को हड्डियों का पिंजड़ा समझना चाहिये ५९ इस शरीर में साढ़े तीन करोड़ तो रोम होते हैं यह शरीर सूक्ष्म व स्थूल के भेदसे दोप्रकार का होताहै सूक्ष्म अदृश्य व स्थूल दृश्य रहताहै व इसमें एक कोटि नसें होती हैं ६० । ६१ व अपवित्र पसीना भीतर रहताहै बत्तीस दांत होते हैं व बीस नख ६२ पित्त कुड़व भर होताहै बीस टकाभर तो इसमें वसा रहतीहै व दश टका भर कफ ६३ व पांच अर्बुदटका भरसे किसीका शरीर अधिक नहीं होता दशटकाभर मेदा तीन टकाभर रक्त व रक्त से चौगुनी मज्जा शरीर में होती है ६४ शुक्र इसमें आधे कुड़वभर होताहै व वही प्राणियों का बल होताहै व एक सहस्र पल मांस का सब प्रमाण होता है ६५ व सौ टकाभर रक्त इसमें मुख्य होताहै व विष्ठा मूत्र अप्रमाण होताहै हे राजन् ! गृहरूप देहमें इतने २ ये पदार्थ नित्य रहते हैं इसीमें आत्मा का वास है ६६ सब अशुद्ध पदार्थों से भराहुआ होता है व शुक्र शोणित के संयोगसे देह उत्पन्न होताहै ६७ व नित्यही विष्ठा मूत्रसे परिपूर्ण रहता है इसी से अपवित्र कहाजाता है

जैसे विष्ठासे भराहुआ घड़ा भीतर बाहर सब अपवित्र होताहै ६८ ऐसेही ऊपरसे धोनेआदिसे स्वच्छ रखनेपरभी भीतर विष्ठामूत्र भरे हुये के कारण बाहर भीतर सब कहीं अपवित्र होताहै जिस शरीर में जाकर अतिपवित्र पंचगव्य व पायस आदि पदार्थभी ६९ शीघ्र अपवित्र होजाते हैं तिससे यह देह अपवित्र है व नानाप्रकारके उत्तम अन्न व जल जिस शरीरमें जाकर ७० शीघ्र भ्रष्ट होजाते हैं उससे और कौन अपवित्र अधिक होगा हे लोगो ! देखते नहीं कि प्रतिदिन इस शरीरसे कितना मल सब छिद्रों के द्वारा बाहर निकलताहै फिर उस मलके रहने का आधार यह देह कैसे पवित्र होसक्ता है यह देह पंचगव्य कुश जलादिकों से शुद्ध करनेपर भी ७१।७२ चिताके अग्नि के समान अपवित्र होता निर्म्मल नहीं होसक्ता जिससे निरन्तर कफ मूत्रादि अपवित्र वस्तुओं के सोते बहाकरते हैं जैसे पर्वत से जलके झरने बहते हैं वह ऐसा अपवित्र देह कैसे शुद्धहो ७३।७४ सब ओर से अशुचि इस शरीरकी शुद्धि किसी एक अंग में भी नहीं होसक्ती दिन वा रात्रि में मिट्टी व जलसे शुद्ध करने पर भी हाथकी शुद्धता नहीं होती और मनुष्य विरागको नहीं पाते हैं इस शरीर को धूपादि सुगन्धित पदार्थों से धूपित भी करो ७५।७६ पर इसकी दुर्गंधि नहीं मिटती बनीही रहती है जैसे नवाई हुईकुत्तेकी पूंछ तैसेही जातिही से काली ऊन कभी सफ़ेद नहीं होती तिसीप्रकार शुद्ध कीहुई मूर्ति निर्मल नहीं होती अपनी भी विष्ठाको सूँघ देखकर लोग नाक मूँदलेते हैं विरागको नहीं प्राप्त होते हैं यह बड़ा भारी मोहका माहात्म्यहै व इससे सब जगत् मोहितहै ७७।७८ कि शरीर से निकलेहुये मलको सूँघकर तो नाक मूँदते हैं व शरीर को सूँघकर नहीं जो अपने शरीरको तुच्छ समझ इससे विराग नहीं करता ८० फिर उसको और क्या विराग कारण उपदेश दिया जावेगा सब जगत् पवित्रहै केवल देहही अपवित्रहै ८१ कि जिसके मलके स्पर्श से पवित्र भी पदार्थ अपवित्र होजाते हैं दुर्गंधि मिटजाने के लिये मृत्तिका व जलसे शौच करना कहाहै ८२ परन्तु इन दोनों से शौच करनेके पीछे जब भावसे शुद्धि

कीजाती है तब शरीरकी शुद्धि होती है क्योंकि चाहे गंगाजी के सब जलसे व ढेरकी ढेर मृत्तिकासे शौचकरै ८३ परन्तु दुष्टात्मा दुर्गन्ध देहवाला पुरुष नहीं शुद्धहोता तीर्थ स्नान और तपस्यासे दुष्टात्मा मनुष्य नहीं शुद्ध होताहै ८४ कुत्तेको चाहे तीर्थ में भी धोवे पर वह शुद्ध नहीं होता ऐसेही जिसका अन्तःकरण दुष्टहै उसको जो अग्नि आप आकर शुद्धकरें तोभी नहीं शुद्धहोता ८५ दुष्टात्माको न स्वर्ग पवित्रकरे न मोक्ष न अग्नि इससे जो भावसे शुद्धहै वह परमशौच युक्त कहाताहै व सब कर्म्मोंमें उसीका प्रमाण होताहै ८६ ऊपरसे चिह्न चाहे जैसे रक्खे परन्तु भावसे सब पापों को दूरकरे व मनसे धर्म्मकी वृद्धिकरे ८७ पतिव्रता और तरहसे पुत्रको औरही तरहसे पतिको चिन्तना करती है बस जिसका जैसा स्वभाव होता उसका वैसा अभिप्राय होताहै ८८ जो स्त्रीको आलिंगन करे पर भावसे हीन कभी न करे विविधप्रकारके भोजन मिलें परन्तु उनको भी न खावे ८९ अभावसे मिलने से सबरसहीन होजाते हैं व भावसे मिलनेसे सब रस युक्त होते हैं ८९ इससे सब यत्नोंसे चित्तको शुद्ध करो बाहरके शोधन से क्या है ९० यदि भाव पवित्र हुआ तो यह शुद्धात्मा प्राणी स्वर्ग और मोक्षको पाताहै ज्ञान जलसे देहके मल धोवे वसद्वैराग्यकी मृत्तिका बनावे ९१ व अविद्या राग रूपमल मूत्रोंको धोवे इसप्रकारसे स्वभावहीसे अपवित्र शरीरको शुद्धकरे ९२ क्योंकि यह शरीर केलाके खम्भेके तुल्य निस्सारहै सो ऐसे दोषी देहको जो प्राज्ञ शिथिल समझताहै ९३ वह संसारको अतिक्रमण कर डालता है व दृढ़तापूर्वक ग्रहण करके स्थित होता है इसप्रकारसे महाकष्ट युक्त जन्ममें नाना प्रकारके दुःख होते हैं ९४ व पुरुषोंके अज्ञानके दोषसे व नानाप्रकार के कर्म के वशसे गर्भ में टिकेहुये प्राणी को जो मति आती है वह उत्पन्न होने में नष्ट होजाती है ९५ अथवा योनिसंकटमेंसे निकलने से मूर्च्छित होजाने केकारण से वह बुद्धि जाती रहती है अथवा बाहर के पवनके लगतेही प्राणियों को मोह होजाताहै ९६ इससे जैसेही उत्पन्न होताहै कि ज्वर से पीड़ित होजाने के कारण मोहको प्राप्त होताहै व उसी बड़ेभारी ज्वर से महामोह उत्पन्न होताहै ९७ जब

बनाय मूढ़ होजाताहै तो शीघ्रही उसकी स्मृतिका भ्रंश होजाताहै व स्मृतिभ्रंश होने से व पूर्व्व जन्मके कर्म्म के वशसे ९८ उस प्राणी की प्रीति उसी जन्ममें होजाती है व ऐसा मूढ़ होजाता है कि अकार्य्य कर्म्म करने लगताहै ९९ न आत्माको जानताहै न अन्य किसीको जानताहै न देवताओंकोही जानता है न परमकल्याण की बातें सुनताहै व नेत्र सहित है पर नहीं देखताहै १०० व समान मार्ग्गपर भी चलनेपर पद २ पर गिर २ पड़ता है बुद्धि विद्यमान भी होती है पर पण्डितों के समझानेपर भी नहीं समझता १०१ इसी से लोभके वशीभूत होकर इस संसारमें नानाप्रकार के क्लेशों से क्लेशित होताहै गर्भ के स्मरण के न रहने के कारण शिवजी का कहा हुआ शास्त्र भी भूलजाताहै १०२ जोकि दुःख कहने के लिये स्वर्ग्ग व मोक्षका साधक है व जिसके जानने से धर्म्म अर्थ प्राप्त होताहै १०३ सो यहां आकर अपना कल्याण नहीं करते यह महा अद्भुत है जिससे कि बुद्धि इन्द्रियों के विषय को अच्छेप्रकार नहीं जानती इससे बाल्यावस्थामें महादुःख होताहै १०४ बोलने की इच्छा करता है पर क्याकरे बोल नहीं सक्ता व चञ्चल वायु भी बालपनमें बहुत दुःखदेती है दांतों के निकलने से बड़ा दुःख होता है १०५ व नानाप्रकारके बालरोगों से पीड़ित होताहै व बालग्रहों से भी पीड़ा होती है प्यास व भूँखके मारे कभी २ बहुत पीड़ित होता है १०६ व मोहसे बालक विष्ठा व मूत्रभी खा पी लेताहै व कौमारावस्था में कर्णवेध आदि संस्कार करने से माता पिताके ताड़नों से १०७ व अक्षर आदि के पढ़ने को गुरुआदि के शासनसे बालक बहुत दुःख पाते हैं व प्रमत्तेन्द्रिय होने के कारण कामरागादिकों से पीड़ित होते हैं १०८ इसप्रकारसे बाल्यावस्था के पीछे युवावस्था आती है उसमेंभी रोगोंकी वृद्धिके कारण सुख नहीं होता व सब ईर्षा करने से दुःख व मोहके कारण पीड़ित होताहै १०९ नेत्र रक्तपित्तके कारण अरुण रहते हैं इससे महादुःख मिलता है व कामाग्नि के खेद से रात्रिमें नींद नहीं आती ११० फिर दिनमें धन उपार्ज्जनकी चिन्ता से सुख कैसे मिलसक्ता है स्त्री को देखकर युवावस्था में पुरुषों के

काम के बिन्दु चूने लगते हैं १११ पर वे सुखके लिये नहीं होते जैसे कि पसीने के बिन्दु सुखके लिये नहीं होते जैसे पापी कोढ़ी को कीड़ों के ताड़न करने से सुख होताहै ११२ वैसेही पुरुषों को स्त्रियों के सङ्ग प्रसङ्ग करने से सुख होताहै जैसा सुख प्राणी धनके उपार्जन करने में मानताहै ११३ वैसेही स्त्रीके सङ्ग भोग करने से होताहै उस से अधिक नहीं मनुष्य को सोई वेदनाहै जिसके बिना चित्त निवृत्ति है ११४ परस्पर पहले प्राप्त अन्तमें और प्रकार की होवै तैसेही बुढ़ापासे ग्रस्त रोगों से युक्त ११५ अपूर्वकी तरह से आत्मा होजाता है क्योंकि बुढ़ापा से पीड़ित रहता है जो देखतेहुये भी विराग युक्त नहीं होता उससे और अचेतन कौनहै ११६ बुढ़ापासे युक्त प्राणी स्त्री पुत्रादिक बांधव और दुराचारी नौकरों से अशक्त होनेके कारण अनादरको प्राप्त होताहै ११७ बुढ़ापासे युक्त धर्म अर्थ काम और मोक्ष के साधन करने में नहीं समर्थ होताहै इससे चाहिये कि युवावस्थाही में धर्म्म आचरणकरे ११८ क्योंकि जब वृद्धावस्थामें वात पित्त कफादिकोंकी विषमता होगी फिर वही तो व्याधि कहावेगा व वातादिकों के समूहही से यह देह बनाहै ११९ इससे इसको व्याधिमय शरीर जानना चाहिये वातादिकों के व्यतिरिक्त सब व्याधियों का तो पिंजराही देहहै १२० इससे नानाप्रकारके रोगोंसे शरीरी अनेक प्रकारके दुःख पाताहै वे दुःख अपनेही आत्माको जान पड़ते हैं और तुमसे क्या कहें १२१ इस देहमें एक सौ एक मृत्यु स्थितहैं तहां एक काल संयुक्तहै सौ आगंतुहैं १२२ जो आगंतु कहे हैं वे तो औषधोंसे निवृत्त भी होजाते हैं परन्तु काल मृत्यु जप होम व विशेष दान देनेसे भी नहीं शान्त होता १२३ व जब मृत्यु नहीं होना तब विषादिकों के खालेने से भी नहीं होता व न विना काल आये अकाल मृत्यु किसी का होता है १२४ फिर मृत्यु होने के समयमें मारने के लिये विविध प्रकार के व्याधि व सर्प्पादिजीव खड़े होजाते हैं व विष जलकी धारा अग्नि येही सब प्राणियों के मरने के द्वारहैं १२५ व चाहे अपने आप धन्वन्तरिहों पर मरण के समय सब रोगों से पीड़ित को नहीं आराम करसक्ते हैं १२६ व काल जब आजाताहै तो कोई उसको वशीभूत

नहीं करसक्का कि वह छोड़कर चलाजाय न औषध न तप न दान न माता न बांधव काल से पीड़ित नरकी रक्षा करसके हैं १२७ रसायन तप जाप योग सिद्ध महात्मा ये कोई भी मृत्युको नहीं हटासके व बड़े २ विज्ञानी भी मरनेपर कोटियों योनियों में जाकर जन्मलेते हैं व मरने पर कर्म्म के अनुसार देह पाते हैं व देह भेदसे जो पुरुषों का वियोग होताहै १२८ । १२९ उसको मरण कहते हैं पर परमार्त्थ से नाश नहीं होता जब कर्म्म के वशीभूत होकर प्राणी महापथ को प्राप्त होताहै १३० उसमें जो दुःख मरण के समय पाताहै वैसा कभी नहीं पाता मार्ग्गमें अतिदुःखित होके हा तात ! हा मातः ! हा कांत ! ऐसा कह २ कर बड़े आर्त्तस्वरसे रोदन करते हैं व पुकारते हैं १३१ जैसे मण्डूक को सर्प्प निगलजाताहै ऐसेही मृत्यु सब जन्तुओं को निगल लेताहै तब बान्धवोंसे त्यागा हुआ व प्रियों से घिराहुआ १३२ ऊर्ध्वश्वासें लेता हुआ व उष्ण श्वासें लेने से मुख सूखे हुये लोग खट्वापर पड़ेहुये बार २ मोहित होते हैं १३३ व मूर्च्छित होकर इधर उधर हाथ पैर फटकारते हैं खट्वापर से भूमिपर आने की इच्छा करते हैं व भूमिपर से खट्वाकी व खट्वा पर से फिर पृथ्वी पर आने की इच्छा करते हैं १३४ व विवश होजाते लज्जा छोड़देते मूत्र व विष्ठा देहमें लगी होती कण्ठ तालु ओष्ठ सूखजाते हैं बार २ पानी पीने को मांगते हैं १३५ व पड़े २ चिन्ता करते हैं कि हमारे मरने पर हमारे ये सब द्रव्य किसके होंगे इतने में यमराज के दूत कण्ठ में फांसी लगाकर खींचनेलगते हैं १३६ व सबके देखतेही देखते मरने लगताहै तो कण्ठ घुरघुराने लगता है व जीव इस शरीर से निकल कर दूसरे सूक्ष्म शरीर में प्रविष्ट होजाता है जैसे तृणजलौका नाम कीड़ा आगेके तृणको पकड़कर पीछेवाले तृणको छोड़देताहै १३७ जब देहान्तर को प्राप्त होताहै तो जीव पूर्व्वदेह को छोड़ताहै विवेकियों को मरण से अधिक दुःख किसी से प्रार्थना करने में होताहै १३८ क्योंकि मरण में एक क्षणमात्र का दुःख होताहै व प्रार्थना करने से अनन्त दुःख होताहै देखो जगत् भरके रक्षक श्रीविष्णुभगवान् वामनताको प्राप्तहुये १३९ फिर उनसे अधिक श्रेष्ठ कौन है

जो मांगे व लघुताको न प्राप्तहो यह अमृतोपमज्ञान हमने तुमसे कहा १४० इससे माता पिता व गुरुसे भी बार २ न प्रार्थनाकरे इस मांगने में प्रथम दुःख व मध्य में दुःख अन्तमें देने के समयमें भी दारुण दुःख होताहै १४१ इससे किसी से कुछ पदार्थ मांगने के समान और कोई दुःख नहीं है व वर्त्तमान भूत इतने दुःख जो हमने कहे १४२ उनको पुरुष नहीं शोचते न जन्मको शोचते और न उससे विरागको प्राप्त होते हैं देखो अतिआहार करने से महादुःख होताहै व विना आहार करनेसे उससे भी अधिक दुःख होताहै हां मध्यम भोजन करने से कुछ सुख होताहै वह कियाही नहीं जाता फिर सुख कहां मिलसक्ता है क्षुधा सब रोगों से व्याधि श्रेष्ठ है क्योंकि रोग तो औषध करने से शान्त होजाते हैं इससे क्षण-मात्रही दुःख देते हैं परन्तु क्षुधाकी पीड़ा ऐसी है कि पुरुष के सब बलका नाशही करडालती है १४३ । १४५ जैसे अन्य महारोगों के होने से नर मरजाताहै ऐसेही क्षुधा से युक्त होने से भी मृत-कही होजाता है व जिह्वाके आगे वर्त्तमान अन्नादिक के रसमें भी कौनसा सुखहै १४६ क्योंकि जबतक प्राणी युवा रहताहै तभीतक तो जिह्वाको रसादिका सुख जान पड़ताहै व जैसेही वृद्धावस्था आती है फिर तो वह बहुधा गलेके नीचेही नहीं उतरता फिर सुख कैसे हो बस क्षुधाके तापसे तापितपुरुषोंके लिये केवल अन्नही औषधकी नाईं है और कुछ भी नहीं १४७ सो भी परमार्थता से कुछ सुखकेलिये नहीं होता क्योंकि मरना तो एकदिन पड़ताहीहै फिर सुख किसकाम का ठहरा हां जो सब कामों से विवर्जित रहे उसका कल्याण अ-मृतके तुल्य होताहै उसमें भी जो नेत्रोंसे देखनेका काम न लियाजा-य तो सबओर से जीवको अन्धकारही जानपड़े तो कौनसा सुखहो जो नेत्र मूँदेरहे तो सुखको पकरताहै व जो देखतारहे तो नानाप्रका-रके रूपों के देखने से व उनमें लगजानेसे आत्माही हतहोताहै १४८। १४९ पुरुष सुखकेलिये खेती वाणिज्य नौकरी चाकरी गोरक्षादि करते व और भी नानाप्रकारके परिश्रम करतेहैं व उससे जो पाते हैं उसको सुखसमझते हैं प्रातःकाल मूत्र और पाखाना फिरना दुपहरमें भूख और

प्यास से १५० तृप्त कामनासे बाधितहोते हैं रात्रिमें प्राणी निद्रासे सोते हैं द्रव्यके पैदाकरने में दुःख इकट्ठाकीहुई द्रव्यके रक्षणकरने में दुःख १५१ द्रव्यनाश में दुःख द्रव्यके खर्च में दुःख द्रव्ययुक्तको कहां सुखहै चोर जल अग्नि भैयाचार और राजा से १५२ नित्यही द्रव्यवानोंको डरहै जैसे देहधारियोंको मृत्युसेहै परन्तु जैसे पक्षीलोग आकाशमें मांसभक्षण करते व व्याघ्र सिंहादि पृथ्वी में मांसभक्षण करतेहैं १५३ व जलमें मछलियां जलके विकार बहुतसे खाती हैं व आनन्दित रहती हैं ऐसेही धनवान् लोग अपने धनके भोग से आनन्दित रहतेहैं इससे सम्पत्ति से विनोद करतेहैं शोकहोने से दुःखही मानते हैं १५४ द्रव्यके इकट्ठा करनेके समयमें खेद करते हैं कब सुख का देनेवाला द्रव्यहोगा जो धनादिकोंके बटोरने में उद्विग्न रहता है पीछे उसको सबसे निःस्पृह होना पड़ताहै १५५ इससे वह धनका स्वामी छोड़ने के समय बहुत दुःखीहोताहै उससे बढ़कर और कोई दुःख नहीं होताहै हेमन्तके शीतसे व ग्रीष्म के तापसे वर्षाकीधारा से धनादि उपार्ज्जन करनेवालों को १५६ वात घाम व वृष्टिसे नानाप्रकारके दुःख होतेहैं फिर उनको सुख कहां से आया विवाह कार्य्य करने में भी नानाप्रकार के दुःख होते हैं व फिर उससे उत्पन्न लड़के बालों के विवाहादिक उठाने से दुःखही होते हैं बस इसीप्रकार यह विश्वमूर्ख होकर नानाप्रकारके कर्म्मों से घिराहुआ रहता है जब पुत्रादिकों को कोई दांत वा नेत्र में रोग हुआ तो उसे देख रोदन करताहै कि हा बड़े कष्टकीबातहै अब मैं क्याकरूं १५७। १५८ वाहन खोगया खेती भ्रष्टहोगई भार्य्या बड़ी प्रबलहुई पिता माता वृद्धहुये थे महिमानआये हैं नेत्रफूटगये हैं बस इत्यादि कर्म्म गृहके देख २ सदा दुःखितही रहता है १५९ मेरी स्त्री के छोटा बालक है इससे रक्षण कौन करेगा इसका शोक करताहै व विवाह के समय नहीं जानते कन्याको कैसा बर मिले १६० बस इन चिन्ताओं से तिरस्कृत कुटुम्बवालों को सुख कैसे होसक्ताहै १६१ ॥

कुं० ॥ चिन्ता जाहि कुटुम्बकी होत पुरुष कहँ जब्ब । ताके श्रुत गुण तुरतही नष्ट होतहैं तब्ब ॥ नष्टहोतहैं तब्ब यथा काचेघटमाहीं ।

जलभरनेसों टपकजात ठहरत तहँ नाहीं॥ इमि देहहिं के संग सकल बिज्ञान भनिन्ता। नष्टहोत हैं तासुजासु स्वकुटुम्बीचिन्ता १६२॥
व राज्य पानेपर भी इससे मिलाप करनाहै इससे बिगाड़ करना है इस चिन्ताके मारे कहांसुख मिलसक्ताहै क्योंकि उसमें तो पुत्रसे भी भय बना रहताहै कि ऐसा न हो कि किसीयुक्तिसे हमको मार कर राज्य यह न लेले फिर उसमें सुख कैसे है १६३ व उसकी जाति वाले प्रायः सब उसके वैरी रहते हैं व उससे ईर्ष्या करते रहते हैं क्योंकि एकही उसी राज्यके अभिलाषी सब होते हैं इससे परस्पर कुत्तोंकासा कलह हुआ करताहै १६४ इससे हे राजन्! राज्यादिमें भी पुरुषको कोई सुख नहीं मिलता केवल सुख उसीको मिलता है जो सबको छोड़कर निर्भय हो एकान्तमें बैठ रहताहै १६५ देखो बड़ाभारी महाराजाधिराज कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन को प्रतापी ऋषिके पुत्र अकेले परशुरामजी ने युद्धमें मारडाला १६६ व उन महात्माका भी वीर्य्य महाराज दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी ने नष्ट करदिया १६७ जरासंधने रामजी के यशको तेजसे नाश किया जरासंध को भीमसेनने मारा भीमसेन को हनुमान्जी ने परास्त किया १६८ हनुमान्जी सूर्यजी के फेंकेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े व जिन अर्ज्जुन ने महाबल से दर्प्पित निवातकवचनाम दानवों को मारडाला उनको पीछे से गोपालों ने जीतलिया सूर्य्य बड़े प्रतापसे युक्तभी हैं परन्तु कभी २ बादलों से आच्छादित होजाते हैं १६९।१७० व उन बादलों को पवन दूर २ उड़ा लेजाताहै व उस पवनके वीर्य्य को पर्व्वतों ने जीतलिया व पर्व्वतों को अग्नि जलादेता है उसको जल शान्त करदेता है १७१ उस जलको सूर्य्य शोषलेते हैं व सूर्य्य जलादि सब ब्रह्माजी के एकदिन में नष्ट होजाते हैं १७२ व ब्रह्माभी पितरों व देवताओं के संग परार्द्ध द्वय कालके अन्तमें परमात्मा शिव में मिल जाते हैं १७३ इस प्रकार इस संसारमें सर्व्वोत्तम बलवान् परमात्मा जगन्नाथ अव्ययको छोड़ और कोई नहीं है १७४ ऐसा सातिशय परमेश्वरको जानकर प्राणीको चाहिये कि अतिमान न करे इस प्रकारके जगत् में कौन देवता वा पण्डित १७५ कोईभी सर्व्ववेत्ता

नहीं है व न अत्यन्तमूर्खही कोई है जो जबतक कुछ जानताहै तब तक पण्डित कहाता है १७६ परन्तु सदा उसका प्रभाव समान नहीं बनारहता कहीं २ ऐसा एकआधा मनुष्य वा देव दिखाई देताहै कि जिसका प्रभाव जन्मपर्यन्त एकसा चलागयाहो १७७ दानव लोग कभी २ देवताओं को जीतलेते हैं फिर देवगण उनको जीतलेते हैं एकान्ततः सदा एकहीका जय वा पराजय नहीं हुआ करता १७८ राजा भी दो वस्त्र व प्रस्थमात्र भोजन कुछ पीनेका पदार्थ सवारी शय्या सब व बैठने के लिये एक चौकीआदि इतनेहीका अधिकारी है अन्य पदार्थ तो दुःखदहैं क्योंकि उनकी देखाभाली उसको करनी पड़ती है १७९ सैकड़ों शय्या व मन्दिरहों पर उसके अधिकारमें एक खट्वामात्र रहती है व हज़ारों जलपात्र गृह में रहते पर सब दुःखद केवल एक जलपात्रसे उसका प्रयोजन चलताहै १८० प्रातःकाल सब नगरनिवासियोंके शब्दकेसहित नगारों का शब्दहोना केवल राज्यका अभिमानमात्र है कि हमारे गृहमें नगारे बाजते हैं १८१ सब आभरण भार रूपहैं व सब आलेपन भी मलही हैं व सब गाना मुहबाना है व सब नाचना उन्माद का साजना है १८२ इस प्रकारके राज्यभोगों से जो विचारकरे तो कहां सुखहै क्योंकि परस्पर जीतने की इच्छा कियेहुये राजाओं को विग्रहकी चिन्ता बनीरहती है १८३ प्रायः लक्ष्मीमदवाले नहुषादिक बड़े राजा स्वर्ग में प्राप्तहुये और फिर पृथ्वी में पतित हुये लक्ष्मीसे कौन सुखपाताहै १८४ व स्वर्गमेंभी कहां सुखहै क्योंकि दूसरे की शोभा अधिकदेख वहां भी तो स्पर्द्धा करनेलगते हैं क्योंकि अपने से ऊपरवाले देवोंको जब अधिक शोभावान् देखते हैं तो इच्छाहोती है पर वह उनको नहीं मिलता १८५ क्योंकि मनुष्य जितना यहां दान पुण्यादि करताहै उतनाही स्वर्ग्ग में भोगने को मिलताहै किसीका अधिक देखकर उसे कैसे मिले तब वहां मन करता है कि अबकी भूमिपर जन्म होगा तो अधिक पुण्य दान यज्ञादि करेंगे १८६ जब पुण्य क्षीणहुआ कि फिर पृथ्वीपर गिरपड़े व ऐसेही अन्य देवगण भी पुण्यक्षीण होनेपर स्वर्ग्ग से पृथ्वीपर गिरते हैं १८७ सुखकी अभिलाषाही में निष्ठा कियेहुये देवोंका जब स्वर्ग्गसे पातहोताहै तो

अकस्मात् पतित होनेके कारण स्वर्ग्गवासियोंको भी दुःखही होता है १८८ इसप्रकार विचार करनेपर स्वर्ग्ग में देवताओंको भी कुछ सुख नहीं है स्वर्ग्ग के सुख भोगने से जो कर्म्म यहां करके स्वर्ग्ग को जाताहै उनका नाश होजाताहै १८९ वहां फिर महादारुणकष्ट स्वर्ग-वासियोंको होताहै यह कष्ट तो ऐसाही होताहै जैसे नरकवासियोंको होताहै जोकि यहां मन वचन व शरीरसे तीनप्रकारके पापकरके जाते हैं वे भोगते हैं १९० पापीलोग जैसेही नरकमें पहुँचते हैं कि कु-ल्हाड़ियों से उनके अङ्ग छिन्न भिन्न करडालेजाते हैं तो पत्थरों की वर्षा ऊपरसे होती है कहीं २ वृक्ष उखड़ २ ऊपर गिरते हैं कहीं प्र-चण्ड पवनका वेग चलताहै कहीं २ उठाकर एकस्थान से दूसरे में फेंक दियेजाते हैं १९१ कहीं २ मर्दन करडालेजाते हैं कहीं २ गजोंसे मर्दन कराते व कहीं २ अन्य प्राणियोंसे कहीं २ दावानलोंसे जलाये जाते कहीं २ अत्यन्त शीत में डाल दियेजाते हैं व कहीं कहीं अन्य स्थावरों वा जङ्गमों से दुःखपाते हैं १९२ ऐसेही बड़े २ विषधर क्रोधी सर्प्पों से कटाये जाते हैं जिससे दारुण दुःख उत्पन्नहोते हैं दुष्टोंका घात लोकही में पाशोंसे बांधकर यमदूत करते हैं १९३ व फिर कीटादि योनियों में बार २ जन्म लेना पड़ता है व सर्प्पादिकोंकी यो-नियों में भी जन्मना पड़ताहै इसप्रकार अनेक प्रकारके दुःख भोग-ने पड़ते हैं १९४ पशुओं की आत्मा का शमन दंड से ताड़न नाक के छेदने से त्रास कोड़ा से ताड़न १९५ बेंत काष्ठादिक निगड़ों और अंकुश से अंगबन्धन भाव मनसे क्लेशों से भिक्षा युद्धादि से पीड़न १९६ अपने यूथ के वियोगों से जबर्दस्ती लाकर बांध-ने में इसप्रकार पशुओं की देहों में अनेक प्रकार के दुःख होते हैं १९७ वर्षा शीत व घामसे बड़ादुःख मिलता है व ग्रहोंसे पक्षियों से अत्यन्त दुःख मिलते हैं ऐसेही अन्यभी बड़े २ शरीरवाले प्रा-णियोंसे दुःखमिलता है इसप्रकार नानाभांति के दुःख प्राणीको हो-तेहैं १९८ गर्भवास में दुःख जन्महोने पर भी मनुष्यों को सब दुःखहीदुःख हैं क्योंकि बाल्यावस्थामें सुचाल चलने के लिये गुरु-शिक्षा होनेसे दुःखमिलता है १९९ व युवावस्था में काम व नाना

प्रकारके रागोंसे और ईर्षा से अपनेआप दुःख होते हैं कृषी वाणिज्य सेवा गोरक्षादि कर्म्मोंसे भी दुःखही होते हैं २०० व वृद्धतामें जरा व व्याधियों से पीड़ित होने से दुःखहोते हैं व मरण में महादुःख और किसीसे कुछ मांगने में उससे भी अधिक महादुःख होता है २०१ राजा अग्नि मेघ चौर व शत्रुओं से महादुःख मिलते हैं व धनकी रक्षामें धननाश और धनके खर्चमें नानाप्रकारके दुःख मिलते हैं २०२ कार्प्पण्य मत्सर दम्भ और धनकी अधिकता में महाभय बनारहता है अकर्त्तव्य करनेमें प्रवृत्त धनवानों को तो सदा दुःखही दुःख रहते हैं २०३ ब्याजलेना भृत्योंकीसी वृत्तिहै व परतन्त्रताको दासत्व कहते हैं इष्ट अनिष्टके योगसे संयोग हज़ारों तरहके होतेहैं २०४ दुर्भिक्ष पड़नेपर अभाग्यता मूर्खता व दरिद्रता किसीके अधीन होकर रहना व राजासे विग्रह ये सब नरकहैं २०५ परस्परके तिरस्कार का दुःख व परस्परका भय परस्परसे क्रोधहोना ये सब दुःख राजाको राजाओं से रहते हैं २०६ भावोंकी अनित्यता कृतकाम्य देहधारी को होतेहैं परस्पर एक दूसरेका मर्म्म भेदन किया करताहै व नित्य एक दूसरेकी पीड़ा चाहता है २०७ परस्पर पापके भेदसे लोभीहैं व अन्योन्य एक दूसरे को भक्षण भी करलेता है जिससे कि इत्यादि दुःखों से चर अचर सब भय युक्त रहता है २०८ नारकी योनिवालों से लेकर मनुष्य पर्य्यन्त सबको ये दुःख होतेहैं इस से पण्डित को चाहिये कि इन सबोंको त्यागे जैसे इस कन्धेपरसे उतारकर भारको दूसरेकन्धेपर धरनेसे मनुष्य सुस्ताना समझताहै २०९ ऐसेही सब संसार एक दुःखदके करनेसे दूसरे दुःखदको सुखद समझता है इसीप्रकार परस्पर की अतिशयता को देख मारे दुःख के व्याकुल होकर देवलोग भी सदा दुःखितही बनेरहते हैं व बहुतदिनों के पीछे जब उनका पुण्य क्षीण होता है तो फिर मनुष्यादिकों में जन्म पातेहैं २१०। २११ व विविध प्रकारके रोग देवलोकमें भी होतेहैं यज्ञका शिर कटाहुआ अश्विनीकुमारोंने जोड़ा २१२ तिसीदोष से यज्ञके सदैव शिरकारोग होताहै सूर्यके कोढ़ वरुणकेजलोदर २१३ पूषाके दाँतोंकी विकलता इन्द्रके भुजोंका रुकना चन्द्रमा के बड़ा

भारी क्षयीरोग है २१४ व दक्षप्रजापति के बड़ाभारी ज्वर बहुतदि-
नोंतक बनारहा व कल्प २ में बड़े २ देवताओंका भी नाश होताहै
२१५ व द्विपरार्द्धावसानमें ब्रह्माका भी नाशहोताहै व दक्षकी कन्या
जो कि उनकी पौत्रीथी ब्रह्माने उससे भोगकरना चाहाथा २१६ प-
रन्तु जब वह देवी अपने योगाभ्यास से अन्तर्द्धान होगई तो ब्रह्मा
भी उसको शाप देतेभये जहां काम क्रोध स्थित रहते हैं वहां उसी
प्रकारके दोष हुआ करते हैं २१७ व सब दुःखभी वहां स्थित रहते
हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है वृद्धता व जन्म मरण सब भोजन
करना हविका भोजन २१८ स्त्रीका वधकरना कामासक्तहोना व पा-
ण्डवों के दलमें सारथ्यकरना श्रीकृष्णचन्द्रजी को भी पड़ा व रुद्रने
क्रोधकर त्रिपुरको भस्मकिया व दक्षका यज्ञविनाशा २१९ ऐसेही स्क-
न्दकाभी जन्महुआ व सहस्रों क्रीड़ायें उन्हों ने कीं इसीप्रकार तीनों
देवदेवभी रागादिकों से युक्तरहते हैं २२० व जो इन तीनों से परे
सनातन शान्त परिपूर्णस्वामी है वह मुक्तिदायक है ऐसेही सब ज-
गत् परस्परकी अतिशयतामें स्थित रहताहै २२१ व नानाप्रकारके
दुःखों से व्याकुल रहता है ऐसा जानकर इस संसार से निर्म्मोह
होनाचाहिये क्योंकि निर्म्मोह होनेसे विराग होताहै व विरागसे ज्ञान
की उत्पत्ति होतीहै २२२ ॥

चौ० ज्ञानपाय परमेश्वर जानी । अनघअनादि सकलगुणखानी ॥
परब्रह्म परमात्महि पावै । कोटि जन्मके पाप नशावै ॥
सब दुखरहित स्वस्थचित होई । ह्वै निर्म्मुक्त सुखी नर सोई ॥
पुनि सर्व्वज्ञ पूर्ण ह्वै मुक्तिग । मुक्ति कहावत नर ह्वै भुक्तिग ॥
यह तुमसन सब चरित सुनावा । जो पूँछ्यहु भूपति मनभावा ॥
धर्म्माधर्म्म विवेक सुहावन । होत ज्ञान सों अतिशय पावन ॥
अब चलिये ययाति नृप आपू । इन्द्र बुलावत हैं गत पापू ॥
अपरकथाकुछपूछनचहहू । तोपुनिगुनिमनमहँसोंकहहू २२३ । २२५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
पितृमातृतीर्थमाहात्म्येषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

दो० सरसठयें महँ नरन के भाषे कर्म्मविपाक ॥
तहँ प्रसङ्ग सों पापकर जनन जात कह नाक १

इतनी कथा सुन राजाययाति मातलिसे बोले कि हमारे भाग्य के प्रसंग से आपने हमको दर्शन दिया व इन्द्र के सारथि आप हमारे अतिथिहुये यहभी हमारे भाग्यहीका प्रभावहै १ मनुष्य लोग मर्त्यलोक में नित्य दारुण पापकरते हैंहे मातलिजी! उनके कर्म्मोंका विपाक हमसे इस समय कहो २ मातलि बोले कि सुनो हम पापाचार का लक्षण कहेंगे उसके सुनते २ महाज्ञान इस लोक में होताहै ३ जो कोई वेदोंकी निन्दा करतेहैं वा वेदविहित आचारकी निन्दा करते हैं ज्ञानी पण्डितों ने इसको महापापों में बताया है ४ व जो कोई सब साधुओं को पीड़ित करता है यहभी महापातक है प्रायश्चित्तही से जाता है ५ व जो कोई अपने कुलके आचार को छोड़कर अन्य कुलका आचार करता है यह भी बड़ाघोर पाप कृत्यके जानने वालों ने कहा है ६ व जो कोई माता पिताकी निन्दा करता है वा अपनी भगिनी को ताड़ित करता है व फूफू की निन्दा करता है वह भी महापापी है ७ हे राजन्! श्राद्धकाल आने पर भी पांच कोसके भीतर में टिकेहुये कन्यासहित अपने जामाता और नाती को जो नहीं निमन्त्रण देकर बुलाता ८ वा अपने बहनोई व बहिन को नहीं बुलाता व औरों को बुलाता खिलाता है चाहे कामसे वा क्रोध से वा भयसे ९ तो उसके पितर श्राद्ध में भोजन नहीं करते व विश्वेदेव भी परित्याग करके चलेजाते हैं यह पाप पिताके मारनेके समान होता है १० व दानके कालमें भी जो दान के समय ब्राह्मण के आजाने में बड़े दानको छोड़ कुछको दान देवे ११ व एक को दान दे व औरोंको कुछ भी न दे तो यह अतिघोर पाप दान का नाश करनेवाला कहा गया है १२ व यजमान के गृह में जितने ब्राह्मणहों जो उनको छोड़कर दान करता है वह दानका लक्षण नहीं है १३ धर्म आचार से युक्त आश्रित ब्राह्मणको सब उपायों से

बहुत दान देवे १४ मूर्ख विद्वान् न गिने ब्राह्मण सदा पालने योग्य है बहुत दानोंसे दाता सब पुण्योंसे युक्त होताहै १५ व जहां सदाका पूज्य ब्राह्मण आवे व उसकी पूजा किसीकारणसे न कीजाय व औरोंकी कीजाय १६तो उसके दान हवन सब निष्फल होजाते हैं इसमें संदेह नहीं है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य चौथावर्ण शूद्र १७ पुण्यकालमें आश्रित ब्राह्मण चाहे पढ़ा लिखाहो वा मूर्खही ब्राह्मणहो जो उसको दान दे तो उसके पुण्यका फल हमसे सुनो १८ अश्वमेधयज्ञ करनेका फल होता है कोई मनुष्य किसी कार्य्य के लिये किसीके समीप आवे तो यदि उसके करने से होसक्ता हो तो उसे विमुख न करे १९ और ब्राह्मण तिस समय श्राद्धकर्ममें आवे तो दोनोंकी भोजन और वस्त्रोंसे पूजा करै २० ताम्बूल दक्षिणा देवे क्योंकि ऐसा करनेपर उसके पितर अत्यन्त प्रसन्नहोते हैं श्राद्ध भोजन किये हुये ब्राह्मणको सदैव दान दक्षिणा देनाचाहिये २१ जो श्राद्धकर्त्ता नहीं देता तो उसको गोहत्या के समान पाप होताहै तिससे श्रद्धासे दो ब्राह्मणों की पूजा करे धनहीन में एकहीको पूजे क्योंकि इनमें से कुछ भी करने से ब्रह्महत्या का दोष उसे लगताहै व ऐसेही श्राद्धकर्त्ता भी जो ऐसा करताहै ब्रह्महा होता है इससे श्राद्ध करनेवाले व भोजन करनेवाले दोनों को ब्रह्मचर्य्य से रहकर ऊपरके लिखेहुये आचार से रहना चाहिये २२।२३ हे नृपोत्तम ! जब व्यतीपात वा वैधृतियोग आवे व अमावास्या तिथि आवे वा क्षयाह की तिथि आवे तो ब्राह्मणादि तीनों वर्णों को इनमें श्राद्ध करना चाहिये २४ हे महाराज ! जैसे यज्ञमें ऋत्विज् करै वैसेही श्राद्ध में सदैव ब्राह्मण करने चाहिये २५ जाननेवाला मनुष्य विना जानाहुआ ब्राह्मण श्राद्ध में न करै जिसका वंश और तीन पीढ़ी जानताहो उसे करै २६ जो ब्राह्मण आचारसे युक्तहो उस को श्राद्धमें निमन्त्रितकरे जिसका कुल न जानता हो उसे आचारसे विचारना चाहिये २७ श्राद्ध [illegible] में शुद्ध वेदवेदाङ्ग का पारगामी जाना हुआही ब्राह्मणहो २८ तब श्राद्ध दान करना चाहिये तिससे ब्राह्मण को निमन्त्रणकरै और अपूर्व आतिथ्य करै २९ अन्यथा जो पापी करता है वह निश्चय नरक को जाताहै तिससे दान श्राद्ध और

पर्वों में श्राद्ध करना चाहिये ३० श्राद्ध दान में पहले ब्राह्मण की परीक्षाकर श्राद्ध दान करै ब्राह्मण के विना भोजन कराये तिसके घर में पितर भोजन नहीं करते हैं ३१ व जिस श्राद्धमें ब्राह्मणों को भोजन नहीं दियाजाता पितर कर्त्ता को शाप देकर चलेजातेहैं व वह महापापी होताहै चाहे ब्रह्मा के समान भी हो ३२ व जो आचार नहीं करता मोहसे श्राद्धके दिन मैथुनादि कर बैठताहै वह महापापी जानाजाताहै व सब धर्म्मों से बाहर समझा जाता है ३३ जो लोग वैष्णव वा भोगदाता शैव ब्राह्मणको त्याग देते हैं वा ब्राह्मणके धर्म्म की निन्दा करते हैं उनको महापापी जानना चाहिये ३४ व जो शिव के आचारको त्यागदेते हैं वा शैवोंसे वैर करते हैं व जो हरिकी निन्दा करते हैं व ब्राह्मण मात्र से वैर रखते हैं ३५ व जो आचार की निन्दा करते हैं वे महापापी हैं पहले श्रेष्ठ ज्ञानयुक्त पुण्यकारी भागवत पूजनी चाहिये ३६ फिर विष्णुपुराण हरिवंश मत्स्य वा कूर्म और पद्मपुराण पूजना चाहिये जे पूजते हैं तिनके कल्याण को हम कहते हैं ३७ तिसने प्रत्यक्ष मधुसूदन देवको पूजा तिससे वैष्णव ज्ञान विष्णु के प्रियको पूजै ३८ देवस्थान में नित्यही वैष्णव पुस्तक को पूजै तिसके पूजने से लक्ष्मीपतिजी पूजित होजाते हैं ३९ हरिकी ज्ञानवाली पुस्तक की विना पूजा किये जे गाते और लिखते हैं और विना जाने तिसको देते सुनते उच्चारण करते हैं ४० लोभसे कुत्सित ज्ञान नियमसे बेंच डालते हैं और इष्ट मित्रको विना झारी बहारी भूमि में बैठा देते हैं ४१ हरिका ज्ञान यथा क्षेम प्रत्यक्ष से प्रकाशित करै जो समर्थ होकर पढ़ाहै परन्तु प्रमाद करता है ४२ वा अपवित्र आप अपवित्र स्थानमें उसे पढ़ता है वा सुनताहै वह भी पापी होता है यह संक्षेप रीति से ज्ञानका माहात्म्य व प्रकार हमने तुमसे वर्णन किया अभी और ज्ञानकी बातें कहते हैं ४३ जो विना गुरुकी पूजा किये उससे शास्त्र सुनता है व विना उसकी शुश्रूषा किये भाव से आज्ञा भंग करनेलगताहै ४४ व जो गुरुवचन का प्रमाण नहीं करता व उसको बहुधा उत्तर देता है व गुरुका कर्म्म उसके करने से होसक्ताहै पर उसकी उपेक्षा करताहै ४५ व गुरु दुःखित अशक्त वि-

देश गये शत्रुओं से पीड़ित हों पर पापी मनुष्य गुरुको छोड़कर कहीं चलाजाता है ४६ वह महापापी गिना व समझा जाताहै व जो कोई किसी स्थान पर पुराण पढ़ाजाताहो व उसमें विघ्न करता है तिसके पाप को हम कहते हैं वह तबतक कुम्भीपाक नाम नरक में पड़ा रहताहै कि जबतक चौदह इन्द्र भोग करते हैं ४७ व पढ़तेहुये गुरु की जो पापी उपेक्षा करताहै वह बहुत दिनोंतक घोर नरकों में निवास करता है ४८ व जो अपनी पतिव्रता भार्य्या व आज्ञाकारी पुत्र और मित्रका अनादर करता है इसका पाप भी गुरुनिन्दा समान होताहै ४९ ब्राह्मण का मारनेवाला सोना चुरानेवाला मदिरा को पीनेवाला गुरु की शय्या पर जानेवाला और पांचवां तिनका संयोगी ये महापापी कहाते हैं ५० क्रोध द्वेष लोभ व भयसे विशेष करके ब्राह्मण की कोई हानि करता है वह ब्राह्मण का मारनेवाला होताहै ५१ व जो मांगते हुये निर्द्धन ब्राह्मण को बुलाकर पीछे से कहदेता है कि हमारे पास कुछ नहीं है वह ब्रह्मघाती कहाता है ५२ जो विद्याके अभिमान से सभा के मध्य में ब्राह्मण को निस्तेज वा उदासीन करता है वह ब्राह्मण का मारनेवाला कहाता है ५३ व जो मिथ्या गुणों से अपनी प्रशंसा करता है व जो गुरु से विरोध करता है वह भी ब्रह्मघाती कहाता है ५४ व क्षुधा तृष्णा से व्याकुल होकर भोजन करने की इच्छा कियेहुये किसी प्राणी के विषय में जो विघ्न करता है उस को पण्डित लोग ब्रह्मघाती कहते हैं ५५ सब मनुष्यों का चुगल छिद्र ढूंढ़नेमें तत्पर उद्वेजन करनेवाला और क्रूर ये भी ब्राह्मण के मारनेवाले हैं ५६ देवता ब्राह्मण और गौवोंकी पहले दीहुई और कुछ कालसे नष्ट हुई भूमिको हरलेताहै तिसको ब्राह्मण का मारनेवाला कहते हैं ५७ जो ब्राह्मण की द्रव्य हरलेताहै जो कि धरोहर धरीथी तिसको उत्तम ब्रह्महत्याके समान पाप होता है ५८ पञ्चयज्ञ कर्म्म के अग्निहोत्र को करके फिर छोड़ देताहै व माता पिता गुरुकी कूट करताहै वहभी ब्रह्मघाती कहाताहै ५९ व जो कोई शिवभक्तों का अप्रिय करताहै और अभक्ष्य मांस मत्स्यादि भोजन करताहै व जो प्राणियों को मारा करताहै ६० गौवों के गोठ

में वन में ग्राम में व नगर में अग्नि लगादेताहै ये सब घोर पाप मदिरापानके समानहैं ६१ व जो दीन किसीका सर्व्वधन हरलेताहै व परस्त्री गज व अश्व किसीके हरलेताहै व गो भूमि चांदी कपड़ा ओषधियों के रस ६२ चन्दन अगर कूपर कस्तूरी रेशमी वस्त्र हर लेताहै और पराई धरोहर हरलेताहै येसब पाप सुवर्ण हरनेकेसमान होते हैं ६३ व कन्या जब वरके योग्यहुई व वह देता नहीं उसे भी सुवर्णही हरनेका पाप होता है व जो पुत्र वा मित्रकी भार्य्या को वा बहिनों में गमन करताहै ६४ व जो विना विवाहीहुई किसी कन्याके संग भोग करताहै व जो ब्राह्मण क्षत्रिय होकर पासी कोरी चमार आदि अन्त्यजोंकी स्त्रीके संग भोग करताहै व अपने वंशकी किसी स्त्री से भोग करताहै उसे गुरुकी स्त्री के संग भोग करने के समान पाप होताहै ६५ व अन्य भी महापापों के तुल्य पाप जो कहेहैं वे सब पातकहैं उनसे कम उपपातकहैं ६६ ब्राह्मणोंको देने को कहकर फिर जो नहीं देताहै व फिर ब्राह्मण का स्मरण नहीं करता यह उपपातकों में गिना जाताहै ६७ ब्राह्मणकी द्रव्य का हरना व मर्य्यादी के विपरीत करना अतिमान अतिकोप करना व दम्भ कृतघ्नता ६८ व और जगह विषय में आसक्त होना कृपणता व मत्सरकरना परस्त्रीगमन करना साध्वी कन्याको दूषित करना ६९ व परिवित्ति वा परिवेत्ताको कन्या देना वा उनके यहां यज्ञ कराना ये भी उपपातकों में हैं ज्येष्ठकी विद्यमानतामें जो कनिष्ठ भाई अपना विवाह करे वा राज्य भोगने लगे व ज्येष्ठ का विवाह न हुआहो व उसको राज्य न दियाहो तो ज्येष्ठपरिवित्ति व कनिष्ठपरिवेत्ता कहाताहै ये दोनों देव पितृकार्य्य से रहित होजाते हैं ७० व जो पुत्र मित्रकी स्त्री स्वामी को धनके अभावमें परित्याग करदेताहै वा भार्य्या साधु तपस्वी ७१ धेनु क्षत्रिय वैश्य स्त्री शूद्र व शिव विष्णुके पूजन के वृक्ष बिल्व तुलसी पिप्पल आमलकी आदिको जो काटता है व पुष्पवाटिका फुलवाड़ी आदि का विनाश करताहै ७२ व जो जनों के रहनेवाले स्थानों में थोड़ी भी पीड़ा करताहै ऐसेही जो अपने भृत्यवर्गों को पीड़ित करताहै वा पशु धन धान्य वन किसी के हरलेताहै ७३ व

सब धान्यों में जो किसीप्रकार का विघ्न करताहै पशुकी चोरी यज्ञके अयोग्यों को यज्ञ कराना यज्ञ तड़ाग वाटिका पुत्र स्त्री इनको जो बेंच डालताहै ७४ तीर्थयात्रा व्रतादि सुकर्म्म इनको जो बेंचते हैं व जो स्त्री के धनसे जीते हैं स्त्री की भगसे अत्यन्त जीवित रहते हैं ७५ व जो अपना धर्म्म बेंचते हैं व धर्म्मका वर्णन करते हैं व जो पराये दोष कहते व जो पराये छिद्र देखाकरते हैं ७६ जो परधन हरने की अभिलाषा करते हैं व परस्त्री को कुदृष्टि से देखते हैं हे महाराज ! सब पाप गोघातके समान हैं जो सब अस्त्र शस्त्र बनाता है व गऊ हरलेता व जो गऊ को बेंचता और जो अपने नौकर चाकरों के ऊपर निर्दयी होता व जो पशुओंको दमन कराताहै ७७। ७८ व जो मिथ्यावचन बोलताहै व मिथ्यावचन सुनताहै व जो स्वामि-द्रोही गुरुद्रोही मायावी चञ्चल शठ ७९ स्त्री मित्र पुत्र बालक वृद्ध दुर्बल आतुर नौकर अतिथि बन्धु इन सबको भूखेहुये छोड़कर आप भोजन करताहै ८० व जो लोग मीठे उत्तम पदार्थ अकेले भोजन करते हैं व औरों को मांगने परभी नहीं देते वे पृथक्पाकी कहाते हैं व सब वेदवादियों में निन्दित होते हैं ८१ व जो अजिते-न्द्रिय किसी कार्य्यके करनेकेलिये नियमोंको ग्रहण करके फिर नहीं करते और मदिरा पीनेवालों से युक्त होकर जे पराई स्त्री में गमन करते ८२ क्षयरोगसे पीड़ित प्यास और भूंखसे आतुर गऊको यत्न से नहीं पालते वे गऊ के मारनेवाले नारकी हैं ८३ सब पाप में रत चौपाये और खेतके काटनेवाले व साधु विप्र गुरुओं और गऊको ताड़ित करताहै ८४ व जो अपनी पतिव्रता स्त्रीका परित्याग करतेहैं व जो आलस्यके वशीभूतहोकर बार २ सोताही रहता है ८५ व जो दुर्बलोंको जे नहीं पुष्टकरते नाशहुओं को नहीं ढूंढ़ते वा भारसे पी-ड़ित मनुष्योंको औरभी पीड़ित करतेहैं वा घावयुक्तको चलातेहैं८६ सब पापमें रत व जो पापियों के संग बैठकर एकत्र भोजन करतेहैं व जो अंग भंग घाव रोगसे पीड़ित गोरूप भूंखसे आतुर ८७ इनका पालन यत्नसे नहीं करते ये सब नरकको जाते हैं व जो पापीलोग बैलों के अण्डे कुटाते हैं ८८ व गाइयों के बछड़ोंको बाधा करवाते

हैं वे सब महानारकी होते हैं जो आशाकरके द्वारपर आयेहुये भूँख प्यास श्रमसे पीड़ित ८९ अतिथिको नहीं मानते वे नरकगामी होते हैं अनाथ विकल दीन बाल वृद्ध व बीमारके ऊपर ९० जो मूढ़ दया नहीं करते वे सब नरकगामी होते हैं व ब्राह्मण होकर जो बकरियां पालता है वा भैंसोंको गाड़ी हल आदिमें जोतता है व शूद्रकी स्त्री और दासीको अपने घर बैठालेता है ये भी सब नरकगामी होते हैं ९१ व शूद्रहोकर जो कोई ब्राह्मण वा क्षत्रियके आचारकरने में प्रवृत्तहोता है ब्राह्मण होकर जो राज बढ़ई दरजी आदि शिल्पियों का कामकरता है व किंड़िहिरआदि बनाता है वा वैद्यकी करताहै और देवताके मन्दिर में जीविकालेकर पूजाकरताहै ९२ नौकर और मन्त्री के कर्मके करनेवाले सब नरकजाते हैं जो कहे हुयेको अतिक्रमणकर अपनी इच्छासे करलेताहै ९३ वह नरकों में पचता है और जो वृथा दण्डदेता है वह अधिकारी उत्कोचक और चोरों से पीड़ित होताहै ९४ जिस राजाकी राज्यमें प्रजा नरकोंमें पचते हैं और जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य पापवर्त्ती राजा को ग्रहण करते हैं वे भी निस्संदेह घोरनरकों में जातेहैं पराईस्त्री से गमन करनेवालेव चोरोंको जो पाप होताहै वह न रक्षाकरनेवाले राजा को होताहै परस्त्रीगामी व चोरों से रक्षा न करनेवाले राजा को वेही नरक होतेहैं जोकि परस्त्रीरतोंको व तस्करोंको होते हैं व जिसके राज्यमें चोर अचोरके समान व अचोर चोरोंके समान समझे जाते हैं ९५।९७ कुछ निर्णय नहीं होता उस राजा को नरक होता है व घृत तैल अन्न पानादि मधु मदिरा मांस आसव ९८ गुड़ ऊख दुग्ध शाकादि मूल फल दधि तृण इन्धन पुष्प पत्र व कांस्य के पात्र ९९ जूता छतुरी पालकी कोमल आसन ताम्र सीसक पित्तल व जलसे उत्पन्न सब पदार्थ १०० बाजा बाँस घरकीसामग्री ऊन कपास रेशम वा रेशमीवस्त्र व भेड़ी ऊँटके रोमोंसे वनेहुये कम्बलादि १०१ रुई सूक्ष्मवस्त्र लोभसे जोकोई इनकी चोरी करता है वा नानाप्रकार की औरही द्रव्य हरलेताहै १०२ वह शीघ्र नरकों में जाता है थोड़ी सरसोंभरभी दूसरेकी द्रव्य हरताहै तो निस्संदेह नरकमें जाता है बहुत वा थोड़ी दूसरेकी द्रव्य १०३।१०४

हरकर मनुष्य निस्संदेह नरकको जाता है इसी प्रकारके पापों से मनुष्य १०५ शरीरघातन के लिये पहलेके आकारको प्राप्तहोते हैं फिर शरीर में स्थित यमराजकी आज्ञासे यमलोकको जातेहैं १०६ मार्ग में यमदूत अतिकराल ताड़ना करते हैं व उनके सङ्गजाने से महादुःख भोगते हैं फिर धर्म्मराज की आज्ञासे पापी देव मानुष वा तिर्य्यग्योनियों में जन्मपातेहैं १०७ धर्मराज शासन करनेवाले विनय आचार युक्त और प्रमादसे मलिन आत्मावालों को अनेक प्रकारके घोरवधों से पीड़ित करतेहैं १०८ यहां तो विनय आचार युक्तको देख दण्डदेनेवाला चाहे कुछ शील संकोच भी करजाय परन्तु यमराजजी कुछभी शील संकोच नहीं करते पापानुसारदण्डदेही देते हैं परस्त्रीगामी व चोरों को तथा अन्याय करनेवालों को १०९ राजा दण्डदाता कहा है छिपेहुओंको धर्मराज हैं इससे जो कोई कुछ पापकरे भी उसको चाहिये कि उसका प्रायश्चित्तभी यहीं अपने वित्तकुलके अनुसार करडाले ११० नहीं तो वहां जाकर कोटि कल्प पर्य्यन्त नरक भोगकरते हुये पापके फल भोगनेहोंगे ॥

चौ० कर्म्मकरत वा आनकरावत । अनुमोदित करि त्यहिहरषावत ॥
कर्म्मवचन मनसों जो प्रानी । जात अधोगति सत्यबखानी ॥
धन अरु धान्य नारि परिहारी । उनकी गति संक्षेप उचारी ॥
पापकारि नर नारिन केरी । कही विचित्र कुगतिकी ढेरी ॥
अपर कहेंका कहहु भुआला । जो पूँछन तुम चहत रसाला ॥
धर्म्म अधर्म्म सकलफल गाउब । भलीभांति नृपतुम्हें सुनाउब ॥
बोले हरि सुनु भूप महाना । इमिमातलि सबकीन बखाना ॥
धर्म्म प्रसङ्ग ययाति नृपाला । सुनिगुनि मनपुनि मयहुनिहाला ॥
सकल अधर्म्म प्रसङ्ग सुनावा । तासु त्यागकर यत्न बतावा ॥
पुनियममार्ग कहन सो लागा । राजासुनतसहित अनुरागा १११११५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डे भाषानुवादेवेनोपाख्यानेपितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

दो० अड़सठयें महँ कह बहुत दान मान करिजोय ॥
विप्रनकहँ आदरकरे यममग सुखलहसोय १

राजा ययातिजी बोले कि हे मातलिजी ! अधर्म का फल सब हमने सुना अब धर्मका फल कहिये क्योंकि धर्म फल सुननेमें हम को कौतूहल है १ मातलि फिर राजा ययातिजी से बोले कि इन सब पापों के करनेवाले चार प्रकार के जन सब यमपुरको जातेहैं जहां नानाप्रकारके घोरभय दिखाई देतेहैं जिससे सब प्राणी विवश हो-जातेहैं २ गर्भके भीतरहीसे वा उत्पन्न होनेसे बाल्यावस्थासे अथवा तरुण अवस्था से व मध्यमावस्था से पुरुष स्त्री वा नपुंसक वा वृद्ध सबको पाप करनेपर यमपुर जाना पड़ताहै ३ वहां प्राणियोंके शुभा-शुभ कर्म्मोंका विचार होताहै विचार सब देखनेवाले चित्र गुप्तादिकोंके सङ्ग और मध्यस्थ लोग करते करातेहैं ४ ऐसे प्राणी यहां कोई नहीं हैं जो यमपुरको नहीं जाते व उनके विचारेहुये कर्म्म अवश्य भोगने पड़तेहैं ५ वहां जो शुभकर्म्म करनेवाले सौम्यचित्त व दयायुक्त लोग होतेहैं वे लोग सौम्यमार्ग्ग होकर यमपुरको जातेहैं ६ जो कोई यहां ब्राह्मणोंको जूता खराऊँ आदि देतेहैं वे लोग बड़े भारी विमानपर चढ़ सुखसे यमालय को जातेहैं ७ व जो यहां ब्राह्मणको छत्र दान करते हैं वे मेघोंकी छायामें जातेहैं व वस्त्र देनेवाले सुन्दरवस्त्र धारण कियेहुये जातेहैं ८ व पालकी के देनेसे वहां विमानपर चढ़कर सुखसे जातेहैं व नालकी तामदानादि सुखासन देनेसे उन्हींपर चढ़कर सु-खपूर्वक प्राणी जाताहै ९ व पुष्पवाटिका वा साधारण वाटिकाके देने-वाले पुष्पकविमानपर चढ़कर शीतल छायामें सुखसे यमपुरको जाते हैं १० व विष्णु शिव देवी आदि देवताओंके मन्दिर बनवाने वाले लोग व संन्यासियों योगियों के स्थान बनवानेवाले अनाथ मंडपों के बनवानेवाले दिव्य मकानों के भीतर २ होकर धर्म्म राजपुरको जातेहैं ११ देव अग्नि गुरु व ब्राह्मण व माता पिताकी पूजा करने-

वाला भी १२ उत्तम गृहों के भीतरही भीतर होकर आनन्दपूर्वक सब देखता भालता चला जाताहै ॥

कुण्डलियां ॥

श्रद्धासोंगुणयुक्तदुखभरेजननकोजोय । अल्पवस्तुहूदेतनरअति प्रसन्नचितहोय ॥ अतिप्रसन्नचितहोयदानकरु युतअभिलाषा । सो सुखसोंयमलोकजाय निर्ग्गत मदमाषा ॥ जासोंबुधजन सकल सदा भाषहिंयहश्रद्धा । दानवहीहै श्रेष्ठ दीनकरिकै जोश्रद्धा १३ हितसों श्रद्धासहित जो दान करत चितलाय । वारिमात्र तृणधान्य कुछसो असंख्यह्वैजाय ॥ सोअसंख्य ह्वैजाय नहींयामहँ कछुशङ्का । वर्णत हैंश्रुतिशास्त्र विप्रदीन्हें यहडङ्का ॥ विनयसनयकरि पात्रकाहिंदेवत जो चितसों । सोपावतफल सकलदान सोजोकियहितसों १४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातृपितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

दो० उन्हत्तरें महँ स्वर्ग्ग के उपयोगी सब धर्म्म ॥
मातलिकह्यो ययातिसों पिप्पलपाहिंसुकर्म्म १

मातलि राजाययातिजी से बोले कि जो धर्म्म हमने इस समय कहे हैं शिवजीने अपने तन्त्रमें कर्म्मयोगके प्रसंगसे बहुत प्रकार के कहेहैं १ वे सब धर्म्म हिंसादि दोषों से निर्म्मुक्तहैं व क्लेश परिश्रम रहित सब प्राणियोंको हित शुद्ध सूक्ष्म परिश्रमवाले बड़े फल देने-वाले २ अनन्त शाखाओं में कलित शिवमूलही में एक आश्रित ज्ञान ध्यान सुन्दर फूलोंसे युक्त सनातन शिवधर्म हैं ३ उन धर्म्मों को सनातन शिवजी धारण करतेहैं इसलिये सब शिवभक्तोंको भी धारण करने चाहियें व इसीसे वे शिवधर्म्म कहातेहैं जिससे कि सं-सारसागरके तारक हैं ४ अहिंसा क्षमा सत्य लज्जा श्रद्धा इन्द्रिय संयम दान यज्ञ करना तप दान ये दश धर्म्म के लक्षणहैं ५ इन्हीं सबोंसे क्रमसे वा उत्क्रम से शिवधर्म्म बनाहै यद्यपि ये धर्म्म अकेले शिवजीकेही कहेहुये हैं पर सबके उपयोगी हैं ६ जैसे यह पृथ्वी

सब प्राणियों का साधारण स्थान है इससे सर्व्व साधारण के लिये उत्तमहै व शिवभक्तों के लिये तो अत्युत्तमहै ७ जैसे इस पृथ्वीपर सब प्राणियोंके भोगविलासके पदार्थ विद्यमानहैं ऐसेही नानापुण्य विशेषता से शिवपुरमें भी सबभोगहैं ८ जबतक सबप्राणी शुभाशुभ फल भोगते हैं तबतक भोगते हैं व जब शिव धर्म्मका फल भोगतेहैं तो उसी अकेलेही से सब भोग भुक्त होजाते हैं ९ जिसको पात्रविशेषके दानादि देनेमें श्रद्धा है उसको शिवपुरमें जाकर बैठे २ सब भोग भोगने को मिलते हैं इससे प्रियतर व उत्तम भोग सब शिवपुर में स्थितहैं हेमहाभाग ! इससे स्वर्ग्गादि जीतनेकी इच्छासे पुण्यधर्म्म सदा करने चाहियें क्योंकि उस शिवपुरमें सर्व्वाधिपत्य नहीं है किंतु आत्मभोगाधिपत्यहैं जितने दान पुण्य यहां करोगे उतनेही भोगने को मिलेंगे १०।१२ कोई २ ज्ञान योगमेंरत मनुष्य उस शिवपुर में जाकर मुक्त होजाते हैं फिर और भोगमें तत्पर संसार में लौट आते हैं १३ तिससे मुक्तिकी इच्छा करै तो भोग की आसक्ति को छोड़देवे विरक्त शान्तचित्तात्मा शिव ज्ञानको प्राप्त होता है १४ जिनके महादेवजी में हृदयहैं और प्रसंगसे शिवजी को पूजते हैं तिनको ईशजी भावके अनुरूपसे स्नान देते हैं १५ सो वेही लोग जो यहां एकबार भी शिवका पूजन करते हैं उनकेपाप हत होजाते हैं उनको यमलोकमें भी नानाप्रकारके भोगविलास शिवजी देते हैं १६ व जो शिव विष्णु आदि देवों की आराधना यहां नहीं करते वे प्राणी बड़े दुःखभारसे पीड़ित होकर मरते हैं जो किसी को अन्न-दान करताहै वह पुण्यदाता कहाताहै व प्राणदाता जानो सर्वदाता होताही है १७ इससे अन्नदान करनेसे सब दानों का फल होता है तीनोंलोकों में जितने रत्न व भोग करनेके योग्य स्त्रियां और वाहन हैं १८ अन्नदानही के फलके भीतर सबहैं क्योंकि अन्नदानसे यहां वहां सर्वत्र प्राणी सुखी रहताहै जिसके अन्नखाने व जलपीने से पुष्टाङ्ग होकर कोई पुण्यकर्म्म करताहै १९ उसमें से आधा पुण्य अन्नदाता को व चतुर्थांश जलदाताको मिलताहै इसमें संदेह नहीं है धर्म्म अर्थ काम व मोक्षों का परमसाधन देह है २० व उसकी

स्थिति अन्न और जलादि पान करने के पदार्थों से होती है इससे अन्नदान सब का साधक होताहै अन्नसाक्षात् ब्रह्माका रूपहै व अन्न विष्णु रूपहै तथा अन्नही शिवरूप है २१ इससे अन्नके समान कोई दान न हुआहै न होगा व जल तीनोंलोकों का भी जीवन कहाता है २२ क्योंकि वह पवित्र दिव्य शुद्ध व सर्व्व रसायन है अर्थात् इसके विना कोई भी रस नहीं बनसक्ता यमपुरके ये आठदान बड़े उपयोगी हैं १ अन्न २ जल ३ घोड़ा ४ धेनु ५ वस्त्र ६ शय्या ७ सूत्र ८ आसन २३ इससे इतने दान अवश्य करने चाहियें इन दानों व धर्म्मों के करने से धर्म्मराजके पुरको जिससे कि प्राणी सुख से जाता है इससे इनका दान व धर्म्म अवश्य करना चाहिये व हे नृपनन्दन! जो लोग क्रूर कर्म्म हिंसादि करते हैं व अन्य महापाप करते व दानसे वर्ज्जित हैं २४।२५ वे नरकमें पड़कर दारुणदुःख भोगते हैं व वैसेही दान करनेवाले वहीं सुख भोगते हैं २६ क्योंकि सुख उन्हींकेलिये बने हैं जो सुकर्मकरनेमें निरतहैं वे लोग अप्रमेय गुणों से युक्त यथेच्छगामी सब कामना देनेवाले विमानों पर चढ़कर व सब प्राणियोंके उपकारक असंख्य पुण्यफल भोगतेहुये सहस्र चन्द्रमाके समान दिव्य व सूर्यके तेज के समान दीप्तिवाले शिवलोक को जाते हैं व जो शिवके भक्त होते हैं वे उसी शिवलोकही में जाते हैं जोकि सब गुणसंयुक्त रुद्रलोक भी कहाताहै २७। २८ व रुद्रके क्षेत्र काशी आदिमें मरेहुये सब जंगम शिवलोकको चलेजाते हैं ॥

चौ० एकहु दिन जो शिव आराधै। भक्ति सहित पूजन करिसाधै ॥
सोउ जाय शिवपुर नर आसू। जो बहु पूजै कहँ का तासू ॥
वैष्णव विष्णु ध्यान महँ चातुर। विष्णुभक्ति भूषित नहिं आतुर ॥
ते वैकुण्ठ जाहिं हरि रूपा। ह्वैसुखलहहिं स्वमनअनुरूपा ॥
ब्रह्म भक्ति भूषित जो प्राणी। जात तहां जहँ वसुविधि वाणी ॥
यासों सदा ईश सिवकायी। करें भली विधि नर समुदायी ॥
अथवा करै भक्ति हरिकेरी। लहै तुरत नर मुक्ति घनेरी ॥
ज्ञानवान ह्वै जो हरि ध्यावै। सो वैकुण्ठ जाय मुद पावै ॥
इमिश्री विष्णु प्रभाव सुकर्म्मा। अरु शुभ कियेसकल निजधर्म्मा ॥

देश प्रभाव सकल दुखनासी । पुरुष होत वैकुण्ठ निवासी ॥
अरु शिवभक्त जाहिं शिव लोका । मुदित होहिं तहँ विगत विशोका ॥
प्राणि ऊर्द्ध्वगति हेतु विचारो । है शिवलोक अशोक निरारो ॥
शिवपुर सों ऊपर हरिलोका । विगत विकार अपार अशोका ॥
तहँ सब वैष्णव मानव जाहीं । जो हरिध्यान निरतशकनाहीं ॥
ब्राह्मण जाहिं ब्रह्मपुर पावन । जो सबभांति द्विजनमनभावन ॥
यज्ञकर्म्म रत जो द्विज पुंगव । वेदवादि कोविद गुण संगव ॥
ब्रह्मलोक ते बसहिं सदाहीं । पुनरावृत्ति न लहहिं कदाहीं ॥
जो क्षत्रिय रणमाहिं प्रचारी । करत युद्ध खड्गादि प्रहारी ॥
इन्द्रलोक ते जाहिं न शंका । मुदित वदन सुनते सुर डंका ॥
अन्य पुण्यकारी नरनारी । पुण्यलोकमहँहोहिंविहारी३०।३६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
पितृतीर्थेययातिचरित्रेएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

दो० सत्तरवें महँ कह विविध यमयातना अनेक ॥
जो पावत पापीपुरुष जिन नहिं कीन विवेक १

मातलि राजाययाति से बोले कि महातीव्र व दारुण यमपीड़ा का वर्णन करते हैं जिसे सब क्रूर ब्राह्मण के मारनेवाले पापी पुरुष भोगते हैं १ कहीं तो तीव्रअग्नि से जलतेहुये पापीप्राणी पचते हैं व कहीं २ दारुण सिंह व्याघ्र वृक व अन्य दंशक जन्तुओं से पीड़ित होते हैं २ कहीं महाजोंकों से व कहीं महा अजगरों से कहीं अतिभयङ्करी मक्षिकाओंसे व कहीं सर्प्पोंके उल्बण विषोंसे ३ कहीं मत्त हस्तियों के यूथोंसे जोकि बड़े बलसे ऊंचे से नीचेको गिरादेते हैं व कहीं मार्ग्गको तीक्ष्ण शृंगोंसे खोदतेहुये बैलोंसे ४ कहीं दुष्टों की देहमें बाधा करनेवाले बड़ी २ सींगोंवाले भैंसोंसे कहीं अतिरौद्र डाकिनियों से कहीं अति विकराल राक्षसों से ५ व कहीं महाघोर व्याधियों से पीड्यमान पापी चलेजाते व बड़ी तराजू पर चढ़ेहुये दावानल में जलते हैं ६ महाप्रचण्ड वायुसे महावेग से कांपते हैं

महापाषाणकी वर्षासे सब ओरसे भेदनको प्राप्तहैं ७ वज्रपातकेसमान शब्दवाली दारुण उल्कापात होरहीं और प्रदीप्त अंगारकीवर्षा से पीड़ित जातेहैं ८ बड़ीधूलिकी वर्षासे पूरित यमराज के यहांजाते हैं ॥

चौ० जोनरपापकरतअतिदारुण। भोगतसोफल जासु न बारुण ॥
इमिकरि पाप विशेष अभागे। पापी नरक जाहिं यकलागे ॥
नरकजाहिं भोगहिं अरुरोवत। अतिपीड़ा पीड़ित तनुगोवत ॥
पर न होत रक्षा क्यहु भांती। गिनीजात तिनकी अघपांती ॥
यह सब पुण्यरुपाप विवेका। तुम सन कहे महीप अनेका ॥
अपर कहें तुमसनका उत्तम। साधन धर्म कहहु सो वित्तम९।१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने पितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

दो० इकहत्तरयें महँ कह्यो गुण बहुलोकन केर ॥
पर वैष्णव शाम्भव उभय गुणवर्णे सुघनेर १

इतनी कथा सुन राजा ययातिजी मातलिसे बोले कि जो तुमने उत्तम धर्म्म अधर्म्मका विषय हमसे वर्णन किया वह तो हमने सुना परन्तु अब फिर हमारे श्रवण करनेकी इच्छा और है इससे जो पूँछें सो सुनाओ १ अब आप देवताओं के लोकोंका संस्थान हमसे बतावें व जिस पुण्यके प्रसंगसे जिसने जो लोक पायाहो वहभी हमसे कहें २ मातलि बोले कि अच्छा जिस २ तपसे जिसने जिस लोक की प्राप्तिकी है सबका योग हम कहेंगे व सुख भोगदेनेवाले देवताओं के वासस्थान भी कहेंगे ३ व धर्म्मका भावभी कहेंगे जोकि लोगोंने परिश्रम से अलग २ उपार्ज्जन कियाहै व ऊपरके लोकोंका स्वरूप भी क्रमके साथ कहेंगे ४ उनमें राक्षसों का ऐश्वर्य्य आठगुणोंसे युक्तहोता है इससे वे देवताओं के व नरोंके भी समान होतेहैं ५ व राक्षसों के सोलह गुण राजा होतेहैं व जो उनसे शेषहैं वे सब पवित्र व तेजस्वी होते हैं ६ गन्धर्व्वों के वायव्य याक्ष सबहैं इन्द्रके पाञ्चभौतिक चालीस बड़े गुणहैं ७ चन्द्रमा का दिव्य मानस है

संसारके स्वामी पाञ्चभौतिकहैं बुध प्रजापति ईशोंसे अहंकार गुण में अधिक हैं ८ ब्रह्माजी के चौंसठगुण अधिक तेजहै व ऐश्वर्य्यभी इतनेही गुण अधिकहै व विष्णु भगवान्का ऐश्वर्य्य व गुण ब्रह्मासे असंख्यगुण अधिक है पर वे तो सनातन ब्रह्महैं इसलिये वहां ब्रह्म पदमें सब शून्यहीहै कुछभी गुण नहीं है ९ ऐसेही श्रीशिवके पुरमें सब दिव्य ऐश्वर्य्यहै व सर्व्व कामनाओंको पूरा करताहै इससे शिवकेभी अनन्तगुण ऐश्वर्य्यहैं ९।१० व आदि मध्य अन्तहीन विशुद्ध उनका लक्षणहै व सब देवताओंका प्रकाशक सूक्ष्म अनौपम्य परसे पर ११ सुसम्पूर्ण जगद्रूप पशुओंकेपाश छुड़ानेवालास्थानहै जोइस स्थानको पहुँचजाताहै उसको सदाके लिये भोग भोगनेको मिलते हैं १२ व ईशके प्रसाद से तिसके समान विमान होताहै व जो ये नक्षत्रों के किशोरों रूप दिखाई देते हैं १३ उनमें अट्ठाईस अच्छी दीप्तिसे पुण्यात्माओं को प्रकाशित हैं जो कोई ईश्वर के कभी कभी संपर्क से कौतुक और लोभसे नमस्कार करते हैं उस विमान को वे प्राप्त होते हैं व जो कोई प्रसंग से भी शिवजीका नाम कीर्त्तन करता है १४ । १५ वा उनके नमस्कार करताहै उसके सब कर्म्म सफल होते हैं ये इतनी सब महागतियां शिवजी के कर्म्म में हैं १६ इससे विना कर्म्म किये पुरुषों को ईशके अनुभाव से आनन्द नहीं होता प्रसङ्ग से भी जो लोग शिवका स्मरण करते हैं १७ वे अतुलसुख पाते हैं फिर जो शिवमें परायण हैं उनको क्या कहनाहै व जो मनुष्य ध्यान से विष्णु भगवान्की चिन्ता करते हैं १८ वे उस विष्णुभगवान् के परम उत्तमसर्व्वोपरि स्थानको जातेहैं हे नरोत्तम! शैव व वैष्णव रूप दोनों एकरूपके हैं १९ दोनों महात्माओंके रूपों में अन्तर नहीं है क्योंकि एकहीरूप दोनों हैं शिव विष्णुके रूपहैं व विष्णु शिव के रूपहैं २० शिवके हृदय विष्णुहैं व विष्णु के हृदय शिवहैं व एकही मूर्त्ति ये तीनों हैं पर ब्रह्मा विष्णु महेश येतीननाम होगयेहैं २१ तीनों में अन्तर कुछ नहींहै पर गुणोंमें भेदहैं हे राजेन्द्र! तुम शिवकेभक्त हो व वैसेही भगवद्दासहो २२ इससे ब्रह्मा विष्णु महादेव तीनों देव तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहैं हे राजन्! तुम्हारे कर्म्म से अच्छे प्रकार त्रि-

श्वस्तहैं व तीनों वर देनेपर उद्यत हैं २३ व हम तो तुम्हारे समीप इन्द्रजीकी आज्ञासे आयेहैं ॥

चौ० यासों प्रथम इन्द्रपद जाहू । पुनि ब्रह्मा को सुपद लहाहू ॥
पुनि शिवपद कहँ कियहु पयाना । तहँ रहि कुछ दिन भूप महाना ॥
प्रलय दाह वर्जित पुनि जायहु । विष्णुलोक कहँ तब हरषायहु ॥
तहँ सों पात कबहुँ नहिं होइहि । बस्यहुसदा तुमकहँ हरिगोइहि ॥
दिव्यगामि सब गामि विमाना । यह हम तुमसन भूप बखाना ॥
यासों जाय दिव्यसुर भोगा । भोगहु चलि ह्वैकै गतशोगा ॥
जो वाञ्छित सो भोगहुनीके । सकल विचारहुकरि मनठीके ॥
चढ़िकै पुष्पक नाम विमाना । भूप अबहिं तहँ करहुपयाना ॥
मौन भये मातलि कहि येहू । सुनु द्विज अब तव गयेहु सँदेहू ॥
नहुष तनय राजाग्र्ययाती । मुदित भयहुसुनिबातप्रभाती २४।२७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थेययातिचरित्रेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

दो० बाहत्तरयें महँ नृपति मातलिसों कह येह ॥
हमन स्वर्गकहँ चलब यहँ करबनाकनसँदेह १

पिप्पलजी सुकर्म्माजी से बोले कि हे महाप्राज्ञ ! राजाययातिजीने मातलिका वचन सुनकर फिर क्या किया यह हमसे विस्तारसे कहो १ हे प्राज्ञ ! सर्व पुण्यमयी पुण्यकारिणी और पापनाशिनी यह कथा है हमको सुनने की इच्छाहै हम इसके सुनने से अभी तृप्त नहींहुये २ यह सुन सुकर्म्माजी बोले कि सब धर्म्मधारियों में श्रेष्ठ व नृपों में सत्तम राजा ययातिजी इन्द्र के सारथि आयेहुये दूत उनमातलि से बोलेकि ३ हे मातलिजी ! हम अपने इस शरीरको न छोड़ेंगे न स्वर्गको विना इस पार्थिव शरीर के आवेंगे इस में कुछभी संशयनहीं है ४ यद्यपि तुमने प्रथम ऐसे शरीर के बहुत से दोष कहेथे व गुण अवगुण भी कहे ५ परन्तु न हम अपना शरीर छोड़ेंगे न स्वर्गको आवेंगे सो यहां से जाकर देवदेव पुरन्दर से यह कहो ६ कि हे म-

हामते! एकाकी शरीरसे व अकेले जीवसे सिद्धि नहीं होसक्ती क्योंकि यह सांसारिक व्यवहार है ७ कि प्राण विना शरीर नहीं रहसक्ता व विना शरीरके प्राण नहीं रहते इन दोनोंकी मैत्री है इससे हम इन दोनोंको सङ्गही लावेंगे अलग २ न छोड़ेंगे ८ जिस शरीरके प्रसाद से यह प्राण अपने मनमाने अनेक भोग विलास करताहै व बहुत सुख भोगताहै ९ ऐसा जानकर अब प्राण कैसे शरीरको छोड़ स्वर्गके सुख भोगनेके लिये चलाजाय हे मातलिजी! यद्यपि यहां रहनेसे महा दुष्ट दुःखदायक महारोग उत्पन्न होंगे १० व जराके दोष से नानाप्रकारके पाप भी इस शरीर से असामर्थ्य के कारण होंगे पर अभी तो देखो हमारा शरीर पुण्ययुक्त सोलह वर्षकासा है ११ यद्यपि जन्मसे लेकर अबतक पचासवर्ष बीतगये तथापि अभी हमारे शरीर का नूतनही भाव दिन २ होता चला आताहै १२ हे दूत! हमारी पचासवर्ष की अवस्था हुई परन्तु जैसे सोलहवर्ष के पुरुष की देह शोभित होती है १३ तैसेही बलवीर्य युक्त हमारा देह शोभित होताहै न हमको ग्लानि है न हानिहै न श्रम है न व्याधियां हैं न जराहै १४ हे मातले! हमारे देहमें अभी धर्म्म उत्साहित कररहाहै व सर्व्व अमृतमय परमऔषध देताहै १५ पाप व्याधिनाशने के लिये पूर्व्व समयमें हमने धर्म्म बहुत किये हैं उसी से हमारा शरीर शोधित है व रोगके दोष भी कुछ नहीं प्रकट होते १६ यह सब हृषीकेश भगवान्के ध्यानसे व नामके उच्चारणसे हे दूत! हम उत्तम रसायन नित्यकरते हैं १७ इसी से हमारे व्याधिदोष व पापादि प्रलयको चलेगये संसारमें जब कृष्णनाम महौषध विद्यमान है १८ तोभी पापव्याधि से पीड़ितहोकर मनुष्य मरते हैं महामूढ़ कृष्णनामरसायनको नहीं पीते १९ कि हे मातले! उसीज्ञानसे व ध्यानसे पूजाभाव से सत्य से दान पुण्य से हमारा शरीर निरामय है २० पापही से प्राणियों को रोगादिकी पीड़ाहोती है व पीड़ासेही प्राणियोंका मृत्यु होताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है २१ इस पुण्य व सत्य के आश्रयसे मनुष्योंको धर्म्म करना चाहिये यह पंचभूतात्मककाय सैकड़ों स्थानों पर जुड़ने के कारण महाजर्ज्जरहै २२ इसको मनुष्य जोड़ता नहीं

रहता जैसे स्वर्णकार टूटे फूटे भूषणको जोड़ता रहताहै इसमें नाना प्रकार के भय लगे हैं क्योंकि अनेक धातुओं से यह बनाहै २३ हे विप्र ! शतखण्डमय इस शरीरको जो जोड़ता रहताहै वह बुद्धिमान् है व जोड़ने के लिये केवल एक हरिका दिव्यनामहै उससे जोड़ता रहै २४ पञ्चात्मक इसमें जो खण्डहैं वे सौ सन्धियों से जर्जरहोरहे हैं बस हरिनाम से जोड़ने से सब काय धातुओं के समान होजाता है २५ हरिकी पूजासे व विचारसे ध्यानसे व नियमसे सत्यभावसे दानसे काय नवीन होजाताहै २६ ऐसा करने से शरीर के दोष नष्ट होजाते हैं व हे मातले! व्याधिभी सब नष्ट होजाते हैं बाहर व भीतर पवित्र होजाताहै दुर्ग्गन्धि आती नहीं २७ व हे सूत ! उन विष्णु भगवान् के प्रसादसे परमपवित्रता होजाती है इससे हम स्वर्ग्ग को न जायँगे यहीं स्वर्ग्ग बनावेंगे २८ तपसे व प्रभावसे व अपने धर्म्म के प्रभाव से इसी महीतलपर स्वर्ग्ग बनावेंगे बस उन्हीं चक्री भगवान्के प्रसाद से इसी को स्वर्ग्ग रूप करेंगे २९ ऐसा जानकर तुम जाओ व इन्द्रसे कहो सुकर्म्माजी बोले तब राजाका कहना सुनकर वह सारथि ३० आशीर्व्वाद देकर व महाराजसे बिदाहोकर चला गया व जाकर जो कुछ महात्माराजाने कहा था इन्द्र से कहा ३१ ॥

चौ० सुनिमातलिकेमुखनृपवाणी । जोययातिनृप निजमुखभाणी ॥
ताहि स्वर्ग्ग आनन के हेतू । कीन विचारबहुतसुरकेतू ३२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थेययातिचरितेद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० तीहत्तरयें महँ कह्यो ज्ञानामृत सुस्तोत्र ॥
जासुपढ़े सबनरनको होतविष्णुही गोत्र १

पिप्पल मुनिने फिर सुकर्म्मा से पूँछा कि जब इन्द्र के सारथि महाभाग मातलि चले गये तो नहुषजीके पुत्र धर्म्मात्मा ययाति महाराजने क्या किया १ सुकर्म्माजी बोले कि जब देवदूत मातलि चलेगये तो राजा ययाति चिन्तना करने लगे श्रेष्ठ दूतों को बुला

कर शीघ्रही धर्म अर्थ युक्त वचन बोले २ कि हे श्रेष्ठदूतो ! उत्तम पुर देश सब द्वीप संसार में जावो हमारे धर्मयुक्त वचन करो भगवान् के सुन्दर मार्ग से मनुष्य प्राप्तहों ३ सुन्दर पुण्यकारी भाव अमृत सदृश ध्यान ज्ञान पूजन तपस्या यज्ञ दान पुण्यादिकों से मधुसूदन भगवान् की पूजा करो अन्य सब लोक के विषयों को छोड़दो ४ व सर्व्वत्र शुष्क आर्द्र स्थावर जङ्गमों में एक श्रीमुरारिजी को देखने लगो व मेघों में भूमि पर सब चराचरों में व अपने सब देहों में भी श्रीविष्णुजीही को देखने लगो ५ व उन्हीं के उद्देशसे दान पुण्य सब करनेलगो व सबों में परिपौत्रिक अतिथि के भावों से केवल देववर नारायणही को मानकर पूजन करनेलगो तो थोड़ेही कालमें दोषों से छूटजावोगे ६ व जो कोई लोभ व मोह से हमारी आज्ञा न करेगा उस निर्घृण चोर निकृष्ट मनुष्यको दण्डहोगा ७ राजाके ऐसे वचन सुनकर दूत लोग अति हर्षित होकर जा २ कर सब पृथ्वी में सब प्रजाओं से महाराजकी आज्ञा कहने लगे ८ हे ब्राह्मणादि सब लोगो ! महाराज के पृथ्वी में लायेहुये पुण्यकारी वैष्णव अमृतको पीवो जोकि दोषों से विहीन परिणाम में मीठाहै ९ श्री केशव क्लेशहर्त्ता श्रेष्ठ आनन्दरूप परमार्थस्वरूप दोषहारी राजाका लायाहुआ श्रीहरि का नामामृत सब लोग पानकरो १० खड्गपाणि मधुसूदन श्रीनिवास सगुण सुरेश दोषहर्त्ता राजा के लायेहुये नामामृत को सब लोग पानकरो ११ हे लोगो ! कमलेक्षण पद्मनाभ जगदाधार जगदीश श्रीहरिका नामामृत दोषहर्त्ता राजाका लेआयाहुआ पानकरो १२ व हे लोगो ! पापापहारी व्याधिविनाशन रूप आनन्ददायक दानवदैत्यनाशन दोषहारी श्रीहरिका नामामृत राजाका लायाहुआ पानकरो १३ यज्ञाङ्गरूप चक्रपाणि पुण्यकी खानि सुखदाता असद्रूप श्रीहरि का नामामृत दोषहारी राजाका लाया हुआहै तिसको लोगो पानकरो १४ हे लोगो ! संसारके वास स्थान विमल विराम राम रमण मुरारिजीका दोषहारी राजाका लायाहुआ नामामृत पानकरो १५ व हे लोगो ! आदित्यरूप अन्धकारों के विनाशक व अन्धकार कमलों के लिये चन्द्रप्रकाशरूप दोष हरनेवाला

राजाकालायाहुआ श्रीविष्णुजीका नामामृत पानकरो १६ यह नामामृत नाम स्तोत्र जो कोई विष्णुभक्त नियतात्माहोकर प्रभातकाल पढ़ेगा वह मुक्ति को पावेगा इसमें कारण विचारना न चाहिये १७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेपितृतीर्थवर्णनेययातिचरितेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

दो० चौहत्तरयें महँ सकल प्रजा भूप इकरूप ॥
विष्णुभजन पूजनकरत जाहिसुने यमचूप १

सुकर्माजी पिप्पलसे बोले कि इसप्रकार से सब दूतलोग ग्रामों में देशों में द्वीपोंमें नगरों में जाकर कहते थे कि हे लोगो ! सुनो राजा की आज्ञाहै कि तुम सब लोग सब प्रभावों से श्रीहरिकी पूजाकरो १ व यज्ञ दान बहुत तप धर्माभिलाष पूजनों से श्रीमधुसूदनजीका ध्यानकरो महाराजकी यही आज्ञाहै २ इसप्रकारका पुण्यकारी प्रघोषण सुनकर पृथ्वीपरके रहनेवाले सब लोग तबसे श्रीहरिका पूजन ध्यान करने गाने व जप करनेलगे ३ वेदके मन्त्रोंके पढ़नेसे व तन्त्रों के मन्त्रों से अमृत के सदृश पुण्यकारी स्तोत्रों से श्रीकेशवजीकी आराधना भगवान् में मन लगाकर मनुष्य करनेलगे व व्रत उपवास नियम दानों से भी ४ अपने देह चित्त और वाणी से उत्पन्न सब दोषोंको छोड़कर लक्ष्मीनिवास जगन्निवास श्रीवासुदेवकीपूजा राजा की आज्ञासे प्रेममें रत सब मनुष्य करनेलगे ५ इसप्रकारकी आज्ञा राजाकी क्षितिमण्डल भरमें होगई इससे वैष्णवभावसे सब लोग पूजन करनेलगे ६ ज्ञान में पंडित लोग नामों से व कर्मों से पूजा करनेलगे व उन्हीं विष्णु भगवान् का ध्यान उन्हीं का पूजन अर्चन करके सब उन्हीं में परायण होगये ७ जितना सब भूमण्डल है व जहां तक सूर्य्य तपते हैं वहां तकके सब मनुष्य भागवत होकर प्रकाशितहुये ८ विष्णुके ध्यानके प्रभावसे व पूजा स्तोत्रोंसे सब मनुष्य आधिव्याधियों से विहीन होगये ९ सब के सब शोकरहित सुपुण्यात्मा व तपस्वी वैष्णव होगये हे विप्र ! उनचक्री भगवान्‌जीके प्रसाद

से सब मानव ऐसे होगये १० कि सब रोगोंसे वर्ज्जित दोष और रोष से हीन सब ऐश्वर्य संयुक्त अमर बुढ़ापा रहित व धनधान्य से युक्त श्रीविष्णुजी के प्रसादसे होगये ११ । १२ व सब पुत्र पौत्रादिकों से भरेपुरे श्रीभगवान्‌जी केही प्रसादसे हुये व हे महाभाग ! उन मनुष्यों के द्वारोंपर नित्यही कल्पवृक्ष अत्यन्त पुण्यकारी सब कामफलका देने वाला व धेनु सब मनोरथों को पूरण करनेलगीं व चिन्तामणि आदि महामणि सब के वाञ्छित पूरे करनेलगे १३।१४ व उनलोगों के गृहों में पुण्यकारी ये सब कामोंको देनेलगे सब मनुष्य पुत्र पौत्रों से शोभित होकर अमर होगये १५ व श्रीविष्णुजी के प्रसाद से सब सब दोषोंसे विहीन होगये व सर्व्व सौभाग्योंसे सम्पन्न महामंगलों से युक्तहुये १६ व सुपुण्यदानों से संयुक्त ज्ञानध्यानमें परायणहुये न कभी दुर्भिक्षहो न व्याधि न कभी मनुष्योंका अकाल में मरणहोने लगा १७ व उन धर्मज्ञ ययातिराजाके राज्य करने के समयमें सब वैष्णव होगये इससे सबके सब विष्णुके व्रतमें परायणहुये १८ व उन भगवान्‌जीके ध्यान करनेसे सब उन्हींके भावसे भूषितहुये व उन्हींमें तत्पर हुये व हे द्विज- सत्तम! उनलोगों के गृह दिव्य व पुण्य होगये १९ सबके मन्दिर स- फ़ेद पताकाओं से व शंख चक्र गदा और ध्वजाओं से युक्तहुये २० व पद्मादिकों से भी अङ्कितहोकर प्रकाशित होनेलगे व सबके गृह विमानों के तुल्य होगये व सबके गृहों की भित्तियां सुन्दर चित्रों से चित्रित होने से विचित्रहोगईं २१ व सबके गृहों केद्वारों पर और दे- वादिकों के पुण्यस्थानों में हरी २ घाससहित दिव्य वृक्षोंके वन ल- गगये २२ व तुलसी के वृक्ष तो सब के यहां हरिमन्दिरों के आंगनों में लगगये व सदैव पुण्य दिव्य मन्दिर प्रकाशित हुये २३ व सर्व्व- त्र वैष्णवभाव होने के कारण मङ्गलही मङ्गल दिखाई देनेलगे व भू- र्ल्लोक भर में जहां सुनो शंख का शब्द २४ सुनाई देता जिसके सु- नाई देने से सबदोष पाप नष्ट होजाने लगे शंख स्वस्तिक पद्म सब के गृहोंके द्वारों पर व भीतियों में २५ विष्णुकी भक्तिसे युक्त नारियोंने बनादिये व सब वर्णके लोग ठौर २ ताल स्वरसमेत गीत गानेलगे उसमें यह नहीं कि टप्पा ठुमरी आदि रागिनियां गाईजायँ किन्तु

विष्णुकेध्यान करनेवाले नानाछन्दोंके श्लोकगाये जानेलगे २६। २७

हरिगीतिका ॥

मुरारि हरि वामन वराह नृसिंह गावहिं ध्यान कै ।
माधव रमेश कुजेश मेश सुरेश मानहिं मान कै ॥
कमलाक्ष केशव कान्ह कान्हर काम पूरण गावहीं ।
कमलेशकृष्ण कृपालु कालियकदनकाहि मनावहीं ॥
इमिशरणभरण सुभव्यकरण रमेश चरणसुपूजहीं ।
जपकरहिंधरहिंहृदयसदा पुनिऔरनाहिंमनदूजहीं ॥
यकविष्णुध्यावहिंसबभुलावहिं सुकृतपावहिंतेभले ।
वैष्णवसमाजसुसाजभ्राजविराजअघदारिददले २८।२९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरितेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

दो० पचहत्तरयें महँकह्यो जिमि हरि अरु नरलोक ॥
एकरूप ह्वै नृप भजन सों सब भये अशोक १

सुकर्म्मा पिप्पलसे बोले कि विष्णु कृष्ण हरि राम मुकुन्द मधुसूदन नारायण विष्णुरूप नारसिंह व अच्युत १ केशव पद्मनाभ वासुदेव वामन वाराह कच्छप मत्स्य हृषीकेश सुराधिप २ विश्वेश विश्वरूप अनन्त अनघ शुचि पुरुष पुष्कराक्ष श्रीधर श्रीपति हरि ३ श्रीनिवास पीतवास माधव मोक्षद व प्रभु ३ इत्यादि नाम उच्चारण करतेहुये मनुष्य सदा विचरने लगे ४ ऐसा सब नर बाल वृद्ध करनेलगे व कुमारियां स्त्रियां सब अपने २ घरों में बैठीहुई व श्रीहरिको गाती हुई सदैव अपने गृह के कर्म्म करतीं ५ व बैठे सोते जागते ध्यान लगाते व ज्ञान करते समय माधवहीका स्मरण करते व बालक लोग बालक्रीड़ा करनेके समय गोविन्दही को प्रणाम करते ६ इस तरह दिन रात्रि हरिही का मधुर नाम कहते हे द्विजसत्तम ! विष्णुका उच्चारण सर्व्वत्र सुनाई देता ७ सब मनुष्य भूतल देवताओं के मन्दिरों में प्रासाद कलशों के आगे ८में वैष्णव प्रभावसे युक्त होगये जैसे

सूर्य्य के किरण सब कहीं दिखाते हैं वैसेही चक्र प्रकाशित होगये जो भाव वैकुण्ठ में दिखाई देताहै वह भूतलपर दिखानेलगा ९ उस समय भूतल व विष्णुजी में कुछ अन्तरही नहीं दिखाई देता उस महात्मा पुण्यात्मा राजाने भूतल व विष्णुलोककी समताकरदी १० नहुषके पुत्र वैष्णव ययाति राजाने वैकुण्ठ व भूतलका एकही भाव करदिया ११ भूतल और विष्णुका अन्तर नहीं दिखाई देताभया जैसे वैकुण्ठमें वैष्णव लोग विष्णु भगवान्‌का उच्चारण करते हैं १२ उसीप्रकार का उच्चारण मनुष्य लोग भूतलपर करनेलगे व हे विप्र! दोनोंलोकोंके सब भावएकहीसे दिखाई देनेलगे १३ क्योंकि भूतलपर जरा व रोग का भयनहीं रहगया सबमनुष्य मृत्युहीनप्रकाशितहोगये वैकुण्ठकी अपेक्षा दानभोगका प्रभाव भूमिपर अधिक दिखाई देने लगा १४ पुत्र पौत्रादिकोंका पुण्यकारी सुख मनुष्य भूतलपर अधिक देखते थे व अन्यभी बहुत से सांसारिक सुख मनुष्यलोग भूतलपर अधिक भोगनेलगे थे १५ विष्णुके प्रसाद के दानसे व उपदेश से मनुष्य सब व्याधियों से हीनहोकर सदैव वैष्णवही होगये १६ ऐसेही राजाने स्वर्गलोक का प्रभाव पृथ्वीपर करदिया पच्चीसहीवर्षों में उस महाराज ने ऐसा किया १७ कि सब मनुष्य रोगहीन होगये व ज्ञान ध्यान में परायण होगये व सब यज्ञदान में तत्पर हुये व सब दयाभाव से युत १८ सब उपकारमें रत पुण्यात्मा धन्य व यश के पात्र होगये सब धर्म्म कर्म्मों में पर व विष्णु भगवान्‌के ध्यानमें सब परायण १९ व राजाके दिये हुये ज्ञानसे सबके सब वैष्णवही होगये श्रीविष्णु भगवान् राजा वेन से बोले कि हे नृपसत्तम! उन महात्मा राजा का चरित सुनो २० वे सर्व्व धर्म्म में पर व विष्णुकी भक्तिमें नित्य संलग्नहुये व राज्य करते करते राजाको एक लाखवर्ष पृथ्वीमें बीते २१ परन्तु शरीर ऐसा नवीन बनारहा जैसे कि पच्चीस वर्षकी अवस्थावालेका रहताहै सो रूप व अवस्था दोनोंसे पच्चीसही वर्षके विदित हो शोभित होते २२ व उन श्रीविष्णुजी के प्रसाद से प्रबल और पुष्ट वैसेही बनेरहे मनुष्यभी पृथ्वी में स्थित होकर यमराजके यहां नहीं जातेभये २३ व रागद्वेष से सब रहितरहते क्लेश

की फँसरीसे वर्जित होते सब सुखी रहते बराबर दान पुण्य करनेमें तत्पर रहते व सब धर्म्म में परायण थे २४ व जितने प्राणीथे सबों की प्रतिदिन पुत्र कन्यासे बढ़तीही होती चलीजाती जैसे प्रत्येकवर्ष में दूर्व्वाकी शाखायें पृथ्वीपर फैलती बढ़ती हैं २५ वैसेही सब मनुष्य पुत्र पौत्रादिकों से फैलते बढ़ते थे सब मृत्युदोषसे विहीन होगये इससे चिरकाल तक जीतेही बने रहते २६ सबके शरीर स्थिर और सुखी रहते क्योंकि जरारोगसे तो सब रहितही होगयेथे सब मनुष्य भूतल पर पच्चीसही वर्षके दिखाई देते २७ व सब सत्य आचारमें पर व विष्णुके ध्यानमें परायण रहते उन भगवान् चक्रधारी जी के प्रसाद से २८ सबके सब दान भोगमें परायण होगये यद्यपि मर्त्यलोकमें बसते थे परन्तु मृतक कोई भी सुनाई नहीं देता २९ शोक कोई देखताही नहीं न दोष कोई करता ॥

चौ० स्वर्गलोक कर जो रह रूपा । मर्त्यलोक कर स्वइ नरभूपा ॥
हरिप्रसाद सों भयहु अनूपा । किमिवर्णौं कहुतासु स्वरूपा ॥
जब यमदूत भूत ढिग आवहिं । तब हरिदूत तिन्हेंतड़ावाहिं ॥
रोदन करत जाहिं यम पाहीं । कहैं विष्णुचर कर्म्म तहांहीं ॥
सोसुनि मनगुनि प्रेतअधीशा । राजभक्ति जानी जगदीशा ॥
चिन्ता करनलगे नृपचेष्टित । समभिरहेचुपगुनिहरिवेष्टित ३०।३५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० छीहत्तरयें महँ कह्यो यम जिमिगे पुरऐन्द्र ॥
सुरपतिसुनितिनवचनतहँ कामपठवजहँत्त्मेन्द्र १

सुकर्म्मा जी पिप्पलसे बोले कि यमराज जी सब दूतोंके साथ देवसमूहों के बीचमें बैठेहुये इन्द्रके देखनेको स्वर्ग में जातेभये १ धर्म्मराज को आतेहुये सुरराज ने देखा इसलिये शीघ्रतायुक्त उठकर उनको उत्तम अर्घ्य दिया २ व पूँछा कि हमारे आगे सब अपने आनेका वृत्तान्त कहो देवराज का ऐसावचन सुनकर ३ धर्म्मराज

राजा ययाति के सब चरित कहते हुये बोले कि हे देवेश ! सुनो जिसलिये हमारा आगमन यहां हुआ है ४ जिस कारणसे हम आये सब तुमसे कहते हैं राजानहुष के पुत्र महाराज वैष्णव महात्मा ययाति ने ५ पृथ्वीतलपर सब छोटेबड़े मनुष्यों को वैष्णव करडाला व वैकुण्ठके समान मर्त्यलोकका रूपकरडाला ६ मनुष्य सब जरारोगसे रहित होकर अमर होगये पाप नहीं करते झूंठ नहीं बोलते ७ काम क्रोधसेहीन लोभमोहसे वर्जित दानशील महात्मा व सबधर्म्म में परायण होगये ८ व सब धर्म्मों से अनामय श्री नारायणजी की पूजा करते हैं इससे सब मनुष्य पृथ्वीतल पर वैष्णव धर्म्मसेयुक्त ९ सब निरामय शोक रहित व सबकी सदा युवावस्थाही बनी रहती है जैसे दूर्व्वा सब ओर पृथ्वी में फैलतीहै १० वैसेही सबपुरुष पुत्र पौत्र प्रपौत्रों से बढ़ते फैलते हैं उनके पुत्र पौत्र प्रपौत्र वंशों से वंशान्तरको प्राप्त होगये ११ इसप्रकार सब वैष्णव होकर जरामृत्यु से रहित होगये यह सब मर्त्यलोक में राजा ययातिके कारण हुआ १२ व कुछ काम न रहनेके कारण हमभी पदसे भ्रष्ट होगये हैं इस प्रकार तुमसे अपने कर्म्म के विनाशनेवाला सब वृत्तांत कहा १३ ऐसा जानकर हे इन्द्र ! लोक का हितकरो जो तुमने हमसे पूंछाथा सो हम सब तुमसे कहा १४ व हे इन्द्र ! इसीकारण से तुम्हारे पास हम आये हैं इन्द्र बोले कि हमने बहुत दिनहुये तब उन महात्मा को यहां बुलाने के लिये दूत भेजाथा सो हे धर्म्मराज ! हमारे दूत से उन्होंने कहा कि हम न आवेंगे हम स्वर्ग्ग के अर्थी नहीं हैं इस से स्वर्गको न आवेंगे १५ । १६ व हम सब पृथ्वी मण्डल स्वर्ग्ग रूप बनालेंगे ऐसा कहकर राजा प्रजाओं को पालनेलगा १७ व उसके धर्म्म के प्रभावसे हम यहां बैठेहुये सदा डरते हैं यह सुन धर्म्मराज कहनेलगे कि जिस किसी उपायसे बने तिस राजाको यहां बुलालो १८ हे महाभाग देवराज ! जो हमारा प्रियकरना चाहो तो ऐसा करो धर्म्मराजका यह वचन सुनकर सुरराजने १९ सब प्रकार से इस विषय में बड़ी चिन्तनाकी कि क्या करना चाहिये शोच विचारकर इन्द्रने कामदेव और गन्धर्वों को बुलाकर उनसे कहा कि

तुम व मकरन्द व तुम्हारी स्त्री रति ये सब भूतलको जाओ व उन महात्मा राजा ययातिको जैसे बने यहां लाओ वही उपाय तुमलोग करना जिससे राजा यहां चलेही आवें २० । २१ बस अब हमारी आज्ञासे तुम लोग अभी भूलोकको चलेजाओ इसमें संशय नहीं है इस बातको सुन काम बोले कि आप दोनोंका पुण्यकारी प्रिय हम करेंगे इसमें संदेह नहीं है २२ । २३ इतना कहकर सब चले व राजा ययातिजीके निकट पहुँचे व वहां पहुँचकर नटोंका रूप धारणकरके सबके सब राजाको आशीर्वाद दे राजा से अच्छा नाटक कहते भये २४ तिनके वचन सुनकर पृथिवीकेपति बुद्धिमान् ययातिजी अच्छे पण्डितों से देवरूपिणी सभाकरते भये २५ व नहुषके पुत्र ज्ञान विज्ञानमें निपुण राजा आपभी सभामें आये और उनका नाटक देखा २६ ब्राह्मणरूपी वामनजीकी उत्पत्ति वा चरित्रका नाटक भया ऐसा रूप सबोंने धारण किया कि लोकमें किसी का उससमय वैसाथाही नहीं व गीतभी ऐसा उत्तम सुन्दर स्वरसे गाया कि उसकेभी अनुरूपका कोई न गासके २७ इसप्रकार गाती स्त्री अपना अद्वितीय रूप दिखाने लगी व हाव भाव गीत विलास सब दिखाने लगीं २८ उस गाने व कन्दर्प की माया से धर्म्मात्मा ययातिजी कुछ मोहितहुये क्योंकि वे सब दिव्यभाव व चरितथे २६ कामदेवजीने राजा बलिका जैसा रूप पूर्व समयमें विंध्यावली रानीका जैसारूप और वामनजीका जैसारूप था तैसाही रूपकिया ३० कामदेवजी आपही सूत्रधार हुये वसंत पारिपार्श्वक हुये प्रसन्नपतिवाली रति नटीका वेष धारण करतीभई ३१ यह रतिने पथ्यके भीतर नृत्य करती भई और भीतरही घूमती भई महा बुद्धिमान् मकरन्द राजा को क्षोभित करता भया ३२ जैसे जैसे राजा उत्तम नाच देखे गीत सुने तैसेही तैसे महा प्रभाव युक्त मकरन्द नटी के प्रणीत से राजा को मोहित करै ३३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थेययातिचरित्रेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

दो० सतहत्तर अध्याय महँ नृपलखि युवती दोय ॥
कामविवश पूँछा सुना तासु चरित यह गोय ॥ १

सुकर्मा पिप्पलसेबोले कि कामके गानेके नादसे व ललितहास्यसे फिर राजा ययाति ऐसे मोहितहुये कि नटोंके समान होगये १ दिशा पेशाबकरके आये व विना पैर धोये वैसेही आसनपर बैठगये जैसे कि नटलोग बैठजाते हैं २ यह इतनी अशुद्धता पाकर कामने इन्द्रका कार्य करलिया राजाको वृद्धावस्था प्राप्त करदिया ३ जब नाटक बन्द हुआ राजा वृद्धावस्थासे युक्त होगया तो वे कामादि अपने २ स्थान को चलेगये व धर्म्मात्मा महाराज ययाति कामासक्त मन होगये ४ काम मोह से ऐसे मोहित हुये कि बनाय विह्वल विकलेन्द्रिय होगये ऐसे धर्म्मात्मा राजा पर विषयों से अपवाहित अतिमुग्ध होगये ५ एकसमय मोह राग के वश में प्राप्त राजा मृगया खेलने के लिये क्रीड़ा करते २ वनकोगये ६ वहां महात्मा राजाके क्रीड़ा करनेके समय उपमा रहित एक चारसींगोंका मृग आया ७ वह सब अङ्गों से सुन्दरबना था व रोम सब उसके सुवर्णके थे व रत्नोंकीसी उसकी ज्योतिथी इससे अतिदर्शनीय चित्रविचित्र व मनोहर था ८ उसे देखतेही धनुर्बाण धारण कियेहुये राजा अतिवेगसे उसके पीछे दौड़े उन मेधावी ने यह माना कि यह कोई दैत्य आयाहै ९ इसप्रकार वह मृग राजाको बड़ीदूरतक अपने पीछे २ दौड़ालेगया बड़े वेगसे जो राजा का रथ उसके पीछे दौड़ा उसके खेदसे महाराज अतिश्रमित होगये १० व राजा देखतेहीरहगये वह मृग वहीं अन्तर्द्धान होगया व राजाने अद्भुत नन्दनवनके सदृश वन देखा ११ वह वन दिव्यवृक्षों सेयुक्त दिखाई देनेलगा जहां देखो पञ्चमहाभूतों से बनेहुये नानाप्रकार के पदार्थ दृष्टिगोचर होनेलगे बड़े २ भारी चन्दनों के वृक्षों से व पुण्यकेलों के झमेलों से मनोहर होगया १२ बकुल अशोक पुन्नाग नालिकेर व तिन्दुओंसे मण्डित दिखाई देनेलगा सुपारी खजूर कोकाबेलि शतावरी १३ कचनार चम्पा आदि नानाप्रकारके वृक्षों से व अन्य सब ऋतुओं

में फरनेवाले वृक्षों से शोभित देखपड़ा पुष्पोंकी सुगन्धिसेयुक्त केतकी व पाड़र डांड़ के वृक्षोंसे भूषित १४ उत्तम तालाबदेखा जोकि पुण्य-कारी जलसे पूर्ण पांचयोजनका चौड़ा १५ हंस चकई चकवासे युक्त जलके पक्षियोंसे शब्दयुक्त व कमलोंसे मुदित श्वेतकमलों से विराजित १६ व रक्तकमलोंसे व पीले पङ्कजोंसे शोभित नीलपद्मोंसे प्रकाशित व बैंजनीरंगवाले नीरजों से अत्यन्त शोभित १७ मत्तभ्रमरों से स-र्वत्र नादित इसप्रकार के सब गुणोंसे युक्त वहां एक उत्तम तड़ाग देखा १८ वह पांच योजन का चौड़ा व दशयोजन का लम्बा था व सब दिव्य भावों से वह तड़ाग अलंकृत था १९ रथके वेगसे चलने के कारण जो राजाको कुछ श्रमहुआ था व उस वनमें तालाब के कि-नारे एक अतिशीतल आँबकी छायामें राजा बैठगये व कुछकाल वि-श्रामकर २० स्नानकर कमलों से सुगन्धित व शीतलजल पानकिया जोकि सब श्रमके मिटानेवाला और अमृतके तुल्य मीठा था २१ जब इसप्रकार वृक्षकी छायामें राजा बैठे तो अतिमनोहर ताललय स्वरादिकों से युक्त गाना सुनाई दिया २२ व यह जान पड़ा कि मानों कोई दिव्यस्त्री गानकररही है महाराज गीतके बड़े प्रियथे। चि-त्तलगाकर सुननेलगे २३ व चिन्ताकरने कि यहां वनमें स्त्रीका गाना कहां से सुनाईदिया इसप्रकार धर्मात्मा महाराज चिन्ता करतेहीथे कि तबतक एक अतिश्रेष्ठ बड़े मोटे करिहाँव और कुचोंवाली अतिमनोहर स्त्री २४ राजाके देखतेही देखते उसी वनमें आई जोकि सब आभरणों से शोभित अङ्गवाली व शीलसुलक्षणों से युक्तथी २५ वह आकर राजाके आगे खड़ीहुई उससे महाराज बोले कि तुम कौनहो व कि-सकी भार्य्या बना चाहतीहो २६ व किस अर्थ यहां आईहो इसका सब कारण तुम हमसे कहो हे पिप्पल! राजाके पूँछनेपर उसने कुछ भी २७ शुभ अशुभ राजासे न कहा वैसेही वह श्रेष्ठमुखी मन्द २ मुसकाती खड़ीरही व फिर अत्यन्त हास्यकरके वीणा हाथमें लिये हुई वहां से चलखड़ी हुई २८ यह दशा देख महाराज बड़े विस्मित हुये व शोचने लगे कि हमने इससे सम्भाषणभी किया पर इसने कुछ भी उत्तर न दिया २९ यह विचार कर पृथिवीपति ययातिजी

फिर चिन्ता करनेलगे कि जो मृग हमने चारसींगोंवाला अच्छेवर्ण का देखा था ३० हमको जान पड़ताहै कि यह उसीकी स्त्री होगी सत्य हम जानते हैं कि बस वह कोई सत्य मायारूप दानवों का था ३१ नहुषके पुत्र राजा ययाति एकक्षणभर चिन्तना करके फिर उस की ओर देखकर विचारने लगे कि तबतक वह स्त्री उसी वनमें ३२ अन्तर्द्धान होगई व अन्तर्द्धान होते समय राजाकी ओर देखकर बहुत हँसी व इसी अन्तरमें फिर सुन्दर स्वरताललययुक्त गीत राजा ने सुना व जहां वह गीतकी महाध्वनि सुनी वहीं अति शीघ्रतासे राजा गये व देखा ३३ । ३४ तो सहस्र पखुरीवाले कमलों से युक्त उसी पुष्करके तीरपर दिव्यशील गुणरूपसम्पन्न ३५ दिव्यलक्षणयुक्त दिव्य भूषणों से भूषित व दिव्यभावों से युक्त वीणा हाथमें लिये एक स्त्री शोभित होरही है ३६ व तालमान लयस्वर से युक्त मधुरगीत गारही है व उसगीतके प्रभावसे चराचरको मोहित करारही है ३७ देव मुनिगण दैत्य गन्धर्व्व व किन्नर सबों को मोहित कररही है व रूप तेजशालिनी उस विशालनयनी को देखकर ३८ राजाने विचारा कि बस इसचराचर संसारमें ऐसी और कोई नारी नहीं है यद्यपि राजाको प्रथमही नटने वृद्धकर दिया था ३९ तथापि उस समय फिर राजाके सर्व्वाङ्ग में महाकाम प्रकट होगया जैसे कि घृतके पड़तेही कैसाही मूर्च्छित अग्निहो पर उससे धूम निकलनेही लगताहै ४० ऐसेही उसस्त्री को देख राजाके अङ्गसे काम प्रकटहोआया व कामसे युक्त राजा उस सुन्दर लोचनवाली को देखकर बोला ४१ कि इसप्रकार की रूपवती संसारके मोहन करनेवाली स्त्री मैंने नहीं देखी राजाक्षणमात्र चिन्तनाकर काममें आसक्तमन होगया ४२ तिसके विरहसे तिससमय राजा लुब्ध होगया कामकी अग्निसे जलता और कामज्वरसे पीड़ित भया ४३ कि यह कैसे हमारीहोगी कैसे भाव होगा जो कमलमुखी कमलनयनी यह स्त्री हमको आलिंगनकरै ४४ प्राप्तहो तो जीवन सफलहो इसप्रकार चिन्तना कर पृथिवीपति धर्म्मात्मा ययातिजी ४५ उससे बोले कि हे शुभे! तुमकौनहो व किसकी स्त्री हो प्रथम हम ने जिसस्त्रीको देखा था वही फिरभी तुम दिखाईपड़ीं

४६ इससे तुमसे पूँछते हैं कि तुम कौनहो इतने में फिर दो स्त्रियां दिखाईदीं तब धर्म्मात्मा राजाने प्रथमवाली से पूँछा कि तुम्हारेपास यह दूसरी कौन नारीहै हे कल्याणि ! हमसे सब कहो हमतो नहुष के पुत्र हैं ४७ व सोमवंश में उत्पन्नहुयेहैं और सप्तद्वीपवती पृथ्वी के स्वामीहैं व हे देवि ! ययाति हमारानाम है व तीनों लोकों में हम विख्यात हैं ४८ व हमारा चित्त चाहताहै कि तुम्हारे साथ भोगकरें इससे हे भद्रे ! हमको संगम दो व हमारा प्रियकरो ४९ हे भद्रे ! जो २ पदार्थ तुम चाहोगी सब तुमको देंगे इसमें संशय नहीं है हे वरवर्णिनि ! हम दुर्ज्जय कामसे पीड़ित हैं ५० अब उस कामसे हम दीन की रक्षाकरो हम तुम्हारे शरणहैं राज्य सब पृथ्वी व शरीर तुम्हारे समर्प्पण है ५१ व तुम्हारे संगम में तीनोंलोक तुमको देंगे राजा के वचनसुन कमलनयनी वह स्त्री ५२ विशाला नाम अपनी सखी से बोली कि राजासे हमारी उत्पत्तिका स्थानबताओ व हमारे पिता माताकाभी नाम बताओ ५३ व हमारा एकाग्रभाव भी इन राजाके आगे निवेदन करो उस स्त्री का वाञ्छित जानकरविशाला मधुर वचनों से राजासे बोली कि हे नृपनन्दन ! सुनो कामको पूर्व्वकाल में देवदेव महादेवजी ने भस्मकरडाला था ५४ । ५५ तब उसकी स्त्री रति पतिहीन होजाने के कारण बहुत रोई वह रति सदा इसी सरोवर में रहती थी ५६ उसका बड़े ऊँचे स्वर से करुणापूर्व्वक रोदन सुनकर बड़ीकृपासे युक्तहुये देवता ५७ हे राज-राजेन्द्र! शङ्करजीसे यह वचन बोले कि हे महादेवजी ! कामको फिर जिआदो ५८ क्योंकि यह बेचारी रति पतिहीन होने से कैसे जीवेगी सो हमारे स्नेहसे इसे काम से संयुक्तकरो ५९ महादेवजीने कहा कि हे महाभागो ! अच्छा कन्दर्प्पको हम फिर जिआदेंगे अब आज से यह शरीर से तो हीनहोगा और सब के अङ्गों में रहेगा अनङ्ग इस का और एक नामहोगा ६० व यह वसन्त ऋतुका मित्र होगा इस में सन्देह नहीं है व अतिदिव्य शरीर धारण करेगा अन्यथा न होगा ६१ इसप्रकार महादेवजी के प्रसादसे काम फिर जिआ ऐसा आशीर्व्वाददेकर महादेवजी कामसे बोले ६२ कि हे काम ! यहां से

जाओ व अपनी प्रिया रति से मिलो तब स्थिति व संहार करनेवाला महातेजस्वी काम महादेव पार्व्वतीजी की आज्ञालेकर ६३ फिर इस तालपर आया क्योंकि यहां उसकी स्त्री दुःखयुक्त रतिथी सो हे राजन्! यह कामसरहै व वह रति यहां अबभी रहती है ६४ महाभाग मन्मथ तो जानों भस्मही होगया था तब से रति यहीं विद्यमान है व सदा दुःखिनी रहती है रतिके कोपसे दारुण उत्पन्न हुआहै ६५ इससे उसकी जलाई हुई रति अति मूर्च्छित रहती है हे नरोत्तम! पतिहीन होने से सदा अश्रुपात किया करती है ६६ उसके दोनों नेत्रों से जो आँसुओं के बूँद गिरते हैं उनसे सब सुखनाशक महा शोक उत्पन्न होताहै ६७ व उन्हीं आंसुओं से जराभी उत्पन्न होती है व उन्हीं से दुर्बुद्धि वियोग भी होताहै जो कि प्राणोंका नाश करताहै ६८ व दुःख और सन्ताप भी उन्हीं आंसुओं से उत्पन्न हुये हैं व सुखनाशिनी दारुण मूर्च्छाभी उन्हीं से उत्पन्न हुई है ६९ व शोकसे कामज्वर उत्पन्नहुआहै व विभ्रमभी शोकही से उत्पन्न हुआहै व शोकही से प्रलाप उत्पन्नहुआ व प्रलापसे विह्वलता और उन्माद उन्माद से मृत्यु ७० बस ये सब विश्वके नाशक उसी के आंसुओंके बिन्दुओंसेही उत्पन्नहुये हैं रतिके समीप में उत्पन्न हुये इससे सब तापयुक्त अंगवाले ७१ मूर्तिधारणकिये व सद्भावगुणोंसे संयुक्त हुये व कामभी किसी के कहने से यहां आया ७२ तब काम को आये हुये देखकर रति महानन्दसे युक्तहुई व तब उसके दोनों नेत्रों से जलकेभीतर आनन्दके आंसुओं के बिन्दुगिरे हे महाराज! उन से सब चापल्यता से प्रजा उत्पन्नहुई प्रथम प्रीति हुई उससे ख्याति व लज्जा ये दो हुई ७३।७४ व उन्हीं से महानन्द व दूसरी शान्ति उत्पन्नहुई इसी शान्ति से शुभ व सुख संभोग देनेवाली दो कन्या उत्पन्नहुई ७५ व लीला क्रीड़ा मनोभाव व संयोग भी उत्पन्नहुयेव महाराज रतिके वामनेत्र से जो आनन्दके आंसुओंके बिन्दु गिरे थे ७६ हे राजन्! जहां जल में पड़े थे वहीं से एक सुन्दर कमलजामा व उसीकमल से सुन्दरमुखी यह स्त्री उत्पन्नहुई है ७७ इसका अश्रुबिन्दुमती तो नामहै और रतिकी कन्याहै व इसकी प्रीति

से सुख कर हम इसके समीप सदा रहती हैं ७८ सखीके भावसे सदैव प्रसन्न रहती हैं व विशाला हमारानामहै व हम वरुणकी कन्या हैं ७९ सो स्नेह से इसके पास सदा रहती हैं व स्नेहही का बर्त्ताव इसके संग बर्त्तती हैं हे राजन्! यह सब इसका व अपना वृत्तान्त हमने तुम से कहा ८० यह सुमुखी यहां पतिपाने की इच्छासे तप करती है इतनासुन राजाययाति बोले कि हे शुभे! तुमने सब कहा व हमने सब जाना अब जो हम कहते हैं सुनो ८१ यह सुमुखी रतिकीपुत्री हमींको भजे यह बाला जो कुछ चाहतीहो हम इसे सब कुछ देंगे ८२ हे कल्याणि! अब ऐसा करो जिसमें यह हमारे वश में होजावे यह सुनकर विशाला बोली कि हे भूपाल! इसका नियम हम कहती हैं उसे सुनो युवावस्था से युक्त सब कुछ जाननेवाला वीर लक्षण देवराजके समान धर्म्माचारसमेत८३।८४ तेजस्वी महाप्राज्ञ दाता यज्ञ करनेवालोंमेंश्रेष्ठ गुणोंके धर्म भावका जाननेवाला पुण्यका पात्र ८५ लोक में इन्द्र के समान सुन्दर यज्ञों से धर्म्म में तत्पर सब ऐश्वर्य्य से युक्त जैसे नारायण भगवान् होते हैं ऐसेही वह भी हो ८६ देवताओं का प्रिय व ब्राह्मणों का अतीव प्रियकरनेवाला ब्रह्मण्य वेदतत्त्व जाननेवाला तीनोंलोकों में विख्यात विक्रम ८७ इन सब गुणों से युक्त व तीनोंलोकों से पूजित सुमतिवाला सुन्दर प्रीति करनेहारा ऐसा पुरुष जो होगा वही इसका पति होगा अन्यथा न होगा ८८ यह सुन राजाययाति बोले कि इनसब गुणों से युक्त आयेहुये हमको जानो इसी के अनुरूप भर्त्ता हमको ब्रह्माके बनाये हुये जानो इसमें कुछ भी सन्देह नहींहै ८९ विशाला बोली कि हे राजन्! आपको पुण्यसे बढ़ेहुये हम तीनोंलोकों में जानती हैं व जो २ गुण हमने कहे वास्तव में सब आपमेंहैं ९०परन्तु एक ही दोषसे यह तुमको अपना पति बनानेको नहीं मानती बस वही हमको भी सन्देहहै कि आप विष्णुमयहैं ९१ ययातिजीबोले कि जिस महादोषसे यह हमको अपना पति बनाने को नहीं चाहती उसे हमसे कहो व जिससे यह हमारे ऊपर प्रसाद से सुमुखीहो हम वही करें ९२ विशाला बोली कि हे पृथ्वीनाथ!तुम अपना दोष कैसेनहीं

जानते वृद्धावस्था से तुम्हारा शरीर व्याप्त है बस इसी से यह तुम को अपना पति बनाने को नहीं मानती ९३ ऐसा अप्रिय उसका वचन सुन राजा बड़े दुःखसे युक्त होकर उस विशालासे फिर बोला कि ९४ हे भद्रे! जरादोष हमारे शरीर में किसके संसर्ग से हुआहै यह हम नहीं जानते कि जराका आगमन कैसे हुआ ९५ जो २ दुर्लभ पदार्थ तीनों लोकों के यह चाहतीहो वे सब हम इसको दिया चाहते हैं उत्तम वर मांगो ९६ विशाला बोली कि जब तुम वृद्धता से हीनहोओ तो तुम्हारी यह प्रियाहो हे राजन्! यह निश्चय तुमसे हम सत्य २ कहती हैं ९७ सो हे राजन्! इस विषय में एक श्रुति है कि पुत्र भाई व भृत्य चाहे जो हो जिसके अंगमें जराआती है उसके अंगों में फैलही जाती है ९८ सो यदि किसी के तरुणताहो उससे तुम ग्रहणकरो व अपनी जरा उसको दो पर वह भी जो राजीहो तो ऐसा होसक्ता है ९९ सो जो कोई तुमको कृपाकर अपना रूपदे तो उसको पुण्य होगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है १०० दुःख से इकट्ठा की हुई पुण्य और को दीजावे तो अच्छी पुण्य उसीकी होजायगी वही पुण्यका फल भोगकरेगा १०१ हे राजन्! इससे तुम अपने पुत्रसे तरुणता ग्रहणकरो व वृद्धावस्था और पुण्य देवो हे महाराज! जाकर सुन्दरता ग्रहणकरके फिर आओ १०२ जो तुम इसके संग भोग करना चाहते हो तो तो ऐसा करो ऐसा राजा से कहकर विशाला विश्राम कररही १०३ सुकर्म्माजी बोले विशालाका ऐसा वचन सुनकर राजा उससे बोले कि हे महाभागे! ऐसाहीहो हम तुम्हारा वचन करेंगे १०४ कामासक्त मूढ़ राजा ययाति गृह में आकर अपने पुत्रोंको बुलाकर यह वचन अनु पूरु यदु तुर्व्वसु अपने प्यारे सबसे बोले कि हे पुत्रो! हमारी आज्ञा से यह करो जिसमें हमको सुखहो १०५। १०६ सब पुत्र बोले कि शुभ वा अशुभ चाहे जैसाहो पर पिताका वाक्य पुत्रों को करना चाहिये इससे आप शीघ्रही कहिये व कियाहुआही समझिये इस में कुछ सन्देह नहीं है १०७॥

चौ० इमिसुनि वचनसुतनकेराजा। कामातुर प्रमुदित मन भ्राजा॥

बोले पुत्रन सों करिप्रीती । मदनातुर जानें किमि नीती १०८ ।

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातापितृ तीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

दो० अठहत्तर अध्याय महँ निज पुत्रन पहँजाय ॥
नाहुष वयमांगीलही नहिंपुनि लहि तहँआय १

ययाति बोले कि हे पुत्रो! तुममें से दुःखदायिनी हमारी वृद्धता जो एक भी कोई ग्रहण करे व धीरहोकर तुम लोगों के मध्य में से अपनी तरुणता हमकोदे १ और यह उत्तम स्वरूपदे क्योंकि इस समय हमारा मन कामासक्तहो एकस्त्री में लगकर अत्यन्त चञ्चल होगयाहै २ इससे जैसे पात्रमें स्थित जलको अग्नि खलभलाता व सन्तप्त करता है वैसेही हमको कामका अग्नि सन्तप्त करता है व इससे हमारा मन कामासक्त होकर अत्यन्त चलायमान होरहाहै ३ सो हे पुत्रो! एक कोई दुःखदायिनी हमारी जराको ग्रहण करे व अपनी तरुणता हमको दे जिसमें हम कामसुख भोगें ४ जो कोई उत्तम पुत्र हमारी जराको ग्रहण करेगा वही राज्य भी भोगेगा व हमारा धन्वा भी वही ग्रहण करेगा ५ व उसीको धन धान्यादि अच्छी सम्पत्तिका सुखभी होगा व विपुल सन्ततिभी उसीके होगी व कीर्ति यश भी उसीके होंगे ६ पुत्र बोले कि हे महाराज! आप तो धर्म्मात्माहैं इससे प्रजाओंको सत्यसे पालते हैं फिर आपका इस प्रकारका चञ्चल भाव कैसे होगया ७ राजा ययाति बोले कि हमारे पुरमें पूर्व समयमें नाचनेवाले लोग आये उनके नृत्य देखने से हमारा चित्त कामसे सम्मोहित हुआ ८ व हे पुत्रो! वृद्धावस्था से देह व्याप्त होगया तबसे हमारा मन कामसे ऐसा व्याकुल होगया है कि कहतेही नहीं बनता इसी दशामें हम वनको गये वहां हमने ९ एक सुमुखी दिव्यरूपवती स्त्री देखी व हे पुत्रो! हमने उससे पूछा तो वह सती तो कुछ नहीं बोली १० उसकी एक विशालानाम सखी अतिचारु

चतुर है उसने हमसे शुभ व हमको सुख देनेवाला यह वचन कहा कि ११ जो तुम जराहीन होओ तो यह तुमको प्रसन्नकरे सो इसप्रकार तिसके कहेहुये वाक्यको अंगीकार कर हम अपनी जरामिटाने के लिये घर आयेहैं १२ व उसीके लिये तुम लोगोंसे ऐसा कहा कि हमको कोई अपनी तारुण्यदे व हमारी जरा लेऐसा जानकर हे पुत्रो! हमारे सुखका देनेवाला कर्म्म तुममें से एकको करना चाहिये १३ यह सुन उनमें अनुनाम पुत्र बोला कि पिता व माता के प्रसाद से पुत्र शरीर पातेहैं व हे राजन्! धर्म्म भी पण्डितलोग इसी शरीरही से करतेहैं १४ व पुत्रोंको माता पिताकी शुश्रूषा विशेष रीतिसे करनी चाहिये परन्तु नवयौवन अवस्थाका देना नहीं होसक्ता १५ क्योंकि हे नृप! मनुष्य प्रथमावस्थाहीमें विषयवासनाको भोगतेहैं सो इस समय हम लोगों के भोगका समयहै इससे हम तुम्हारी जरा नहीं लेसक्के न अपनी तरुणता देसक्केहैं क्योंकि आप बहुत दिन सुख भोगचुकेहैं अब वृद्धहुये हैं ऐसे सुखोंके भोगनेकी कौन आवश्यकता है अब इस अवस्थामें जो ऐसे भोगकरोगे तो आपका जीवन भी न होगा १६।१७ इससे हे महाराज! हम तुम्हारा वाक्य न करेंगे इस प्रकार राजासे ज्येष्ठपुत्र अनुने कहा १८ अनुका वाक्य सुनकर क्रुद्ध होकर राजा ययाति बोले व यद्यपि धर्म्मात्माथे पर मारे रोषके अरुण नेत्र कर उसको शाप दिया १९ कि हे पापचेतन! तुमने हमारी आज्ञाका अपध्वंस किया इससे तुम सब धर्म्म से बाहर होकर पापी होओ २० शिख से विहीन होकर वेदशास्त्र से विहीन होओ व सब आचारों से तुम विहीन होगे इसमें संशय नहीं है २१ ब्रह्महा मद्यप दुष्टात्मा व सत्यवर्जित भी होगे व नराधम तुम अतिकोप के कर्म्म करनेवाले होओगे २२ मदिरा बेंचनेवाले मूर्ख पापी व गोघाती भी तुम होओगे दुष्कर्म्म करनेवाले व ब्रह्मद्वेषी सदा होगे २३ व परस्त्री गामी और महाप्रचण्ड लम्पटहोगे व सदा दुष्टबुद्धि होकर सर्व्वभक्षी होओगे २४ व अपने गोत्रकी स्त्री के संग भोगकरोगे व सब धर्म्मों का नाश करोगे पुण्य ज्ञानसे विहीन व कोढ़ी भी होओगे २५ व तुम्हारे पुत्र पौत्रभी ऐसेही सब पुण्योंके नाशनेवाले म्लेच्छ अत्यन्त

पापी होंगे इसमें सन्देह नहीं है २६ इसप्रकार अनुको शाप देकर यदुनाम अपने दूसरे पुत्र से राजा ययाति बोले कि हमारी जराको धारण करो व अकंटक राज्यभोगो २७ तब हाथजोड़कर यदु राजा से बोले कि हे तात ! हम जराका भार नहीं उठासक्ते इससे कृपा कीजिये २८ अतिशीत लगना मार्ग्गमें न चलने पाना दन्तादिकोंके न रहनेसे कदन्न भोजन करना वृद्धस्त्रियों का सङ्गहोना व सब अपने मनके प्रतिकूल कामोंका देखना ये पांच जराके लक्षणहैं २९ इससे हे राजन् ! हम अभी पहिलीही अवस्था में वृद्धता के दुःख नहीं सहसक्ते व हम क्या कोईभी ज्वानीही में बुढ़ापेको नहीं धारण करसक्ता इससे अब हमारे ऊपर क्षमाकीजिये ३० हे द्विजनन्दन ! यह सुन क्रुद्धहोकर राजाने यदुकोभी शापदिया कि तेरे वंशमें उत्पन्नहोकर कोई कभी न राज्य के योग्यहोगा ३१ बल व तेज व क्षमा से हीन व क्षत्रिय धर्म्मसे वर्जित सब तेरेवंशके होंगे जिससे तुम हमारी आज्ञाके प्रतिकूलहो इससे ऐसा होगा सन्देह नहीं है ३२ यह सुनकर यदु बोले कि महाराज हमतो निर्दोषहैं आपने क्यों शाप दिया अब हमदीनके ऊपर कृपाकरो व प्रसन्नहोओ ३३ ययाति राजा बोले कि हे पुत्र ! देवदेव श्रीविष्णु अपने अंशसे तुम्हारे कुलमें अवतारलेंगे तब तुम्हाराकुल पवित्र होजायगा ३४ यदु बोले कि हे महाराज ! हम निर्द्दोष पुत्र को आपने शापित किया जो हमारे ऊपर दया हो तो अब अनुग्रह कीजिये ३५ राजा बोले कि जो ज्येष्ठपुत्र पिताके दुःखों को हरता है वह राज्य का भाग भोगताहै व भारउठाताहै ३६ तुम भक्ष्य अभक्ष्य सब करोगे इसमें संशय नहीं है परन्तु तुमने हमारी आज्ञा का नाश किया इससे हमने महादण्ड से तुमको घातित किया ३७ व अब अनुग्रह नहीं होसक्ता तुम्हारी जैसी इच्छाहो वैसा करो यह सुन यदु बोले कि हे नृप ! जिससे तुमने हमारा राज्य कुल व रूप नष्ट किया ३८ इससे अब हम व हमारे वंश का पति जोई होगा दुष्ट होगा अब हमभी कहते हैं कि तुम्हारे वंश में नाना भेद के क्षत्रिय होंगे ३९ उनके ग्राम व देश और स्त्रियों को व रत्नों को बड़े२ कोप करनेवाले महाबलवान् भोगेंगे इसमें संशय नहीं है ४०

व हमारे वंश से जो तुम्हारे शाप से तुरुष्क व म्लेच्छ उत्पन्नहोंगे वे भी सब भोग करेंगे जिनको कि तुमने दारुण शापोंसे नाशित किया है ४१ ऐसा राजासे कहकर यदु बहुत क्रुद्धहुये तब महाराज ययाति और भी क्रुद्धहुये और फिरसे शापदिया ४२ कि अच्छा जो तुम्हारे वंशसे उत्पन्न म्लेच्छादिक हमारी प्रजाओंका नाश करेंगे तो तुम हम से सुनो जबतक चन्द्रमा सूर्य्य पृथ्वी नक्षत्र तारागण रहेंगे ४३ तब तक जितने म्लेच्छ उत्पन्नहोंगे कुम्भीपाक नरक में गिरेंगे व रौरव नरकमें भी पड़ेंगे तब राजाने सबसे छोटे तुर्व्वसु नाम पुत्रको बालकों के संग खेलतेहुये देख बुलाकर बालक जान राजाने उससे कहा कि तुम तो लड़केहो तुमसे क्याकहें जाकर खेलो ४४।४५ फिर शर्म्मिष्ठा केपुत्र पुण्यात्मा पूरुको बुलाकर उससे कहा कि हेपुत्र! हमारी जरा तुम ग्रहणकरो ४६ व हमारा दियाहुआ अतिपुण्यदायक शत्रुरहित राज्य भोगो यह सुन पूरु बोले कि हे देव! राज्य हम न भोगेंगे क्यों आप अभी भोगते हैं भोगें ४७ पर आपकी आज्ञासे जरा हम ग्रहण करतेहैं दीजिये व हमारी तरुणतासे अभी सुन्दररूप धारणकरके ४८ विषयासक्तचित्तसे आप नानाप्रकारके भोग विलासकीजिये हेमहा- भाग! जबतक इच्छाहो तबतक तिसके साथ विहार करो ४९ जब तक हम जीवेंगे तबतक आपकी वृद्धावस्था धारणकिये रहेंगे जब पूरुने ऐसा कहा तो महाराज ययाति ५० अतिहर्षित होकर उस पुत्र पूरुसे बोले कि हे वत्स! जिससे कि तुमने हमारी आज्ञा नहीं हतकी बरन अच्छेप्रकार से की ५१ इससे बहुत सुखके देनेवाला तुमको देंगे जिससे हमारी वृद्धावस्था ग्रहणकी और अपनी युवाव- स्था दी ५२ तिससे हेमहामते! हमारी दीहुई राज्यभोगो हेराजन्! जब राजाययाति ने पूरुसे ऐसा कहा तो ५३ पूरुने अपनी तारुण्य राजाको दी व उनकी जरावस्था आप ग्रहणकी पिता पुत्रके अवस्था बदलतेही ५४ उसीक्षण राजा युवा होगये व पूरु वृद्धहोगये राजाका रूप ऐसा दिखाई देनेलगा जैसा कि सोलहवर्ष के अतिस्वरूपवान् पुरुषका होताहै ५५ बड़ेरूपसे युक्त हो राजा मानो दूसरे कामदेवही होगये धनुष् व सब पृथ्वीका राज्य छत्र पंखा सब आसन गज ५६

कोश देश सबसेना चामर रथ जो पदार्थथे सब महात्मा पूरुको राजा ने देदिये ५७ व उन धर्म्मात्मा राजाने कामासक्तहोकर उसस्त्री की चिन्तना की व उसी स्वच्छ जलवाले काम नाम तड़ागपर राजा ययातिजी गये ५८ जहां कि वह अश्रुविन्दुमती नामस्त्री थी व उस विशालनयनी चारुपीन कुचवाली मनोहर स्त्रीको देख ५९ कामसे अतिव्याकुल मन होकर राजा विशाला से बोले कि हे महाभागे ! हे चारुलोचने विशाले ! जराको त्यागकरके व तारुण्यको ग्रहणकरके हम आगये अब हम तरुण होकर आये हैं इससे तुम्हारी यह सखी हमको भजै ६० । ६१ व जो जो यह चाहती हो वह वह देंगे इसमें संशय नहीं है यह सुनकर विशाला बोली कि जब अब आप दुष्ट जराका परित्याग करके आये ६२ तो एक दोषसे औरभी लिप्तहोने से यह आपको अपना पति नहीं बनाना चाहती यह सुनकर राजा बोले कि जो निश्चय से हमारा दोष तुम जानती हो तो कहो ६३ उस गुणरूप दोषको हम अभी छोड़देंगे इसमें संशय नहींहै ६४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरितेऽष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उनासीवां अध्याय ॥

दो० ऊनासी अध्याय महँ मदनसुता अरु भूप ॥
क्रीड़ाकरि हयमेधमख कीन गमन सुनि चूप १

राजाके वचन सुनकर विशालाबोली कि हे महाराज ! जिस आपके शर्म्मिष्ठा व श्रेष्ठमुखवाली देवयानी नाम दोस्त्रियां विद्यमान हैं वहां अन्यस्त्रीका सौभाग्य भूतलपर कैसे होसक्ता है १ हे महाभाग ! तिससे कैसे आप इसकेकार्य्यवशहोंगे आप सापत्नभावसेयुक्त पति हैं २ हे महाराज ! जैसे सर्प्पसहित चन्दनका वृक्ष भूतलपर होताहै ३ ऐसेही आपभी सौतियों से वेष्टित हैं क्योंकि सपत्नियां भी सर्प्पहीके समान होतीहैं ॥

दो० अनल प्रवेश सुवर शिखर पतन श्रेष्ठ नहिं शङ्क ॥
प्रबलसौति सँग नहिं भलो लहतअनेक कलङ्क ४

ये सब श्रेष्ठहैं परन्तु सपत्नीयुक्त पति अच्छा नहीं बस यद्यपि आप रूपतेजयुक्तहैं पर सौतिसहितहैं सौतिरूप विषयुक्त ५ प्रिय कान्तवर को गुणसागरको अपना पति बनाना नहीं चाहती यह सुन राजा बोले कि न अब हमारा देवयानी से कुछ प्रयोजन है न शर्म्मिष्ठाही से ६ इस अर्त्थ में सत्यधर्म्म समन्वित हमाराकोश देखो तब अश्रुबिन्दुमती बोली कि हम राज्य भोगकरने की इच्छा नहीं करतीं केवल तुम्हारे शरीरसे हमारा प्रयोजनहै ७ जो जो हम कहेंगी सो सो तुमको निश्चय करनाहोगा बस इस अर्त्थके लिये हे धर्म्मवत्सल! अपना हाथ हमको दीजिये ८ जो कि बहुत धर्म्मों से युक्त व चारु लक्षण सहितहै राजा ययाति बोले कि हे बरवर्णिनि! हम प्रतिज्ञाकरते हैं कि आजसे तुमको छोड़ अन्य स्त्रीको अपनी भार्य्या न बनावेंगे व हमारा राज्य सब पृथ्वी शरीर और खजाना भोगो यह हाथ तुमको दियाहै ९।१० व जो अन्यभी किसी कार्य्य के लिये कहोगी सब हम करेंगे अश्रुबिन्दुमती फिर बोली कि हे महाराज! इसपर तो हम तुम्हारी भार्य्याहोंगी ११ यह सुनकर राजा हर्षसे व्याकुल नेत्रहुये व राजा ययातिजी ने गान्धर्व्व विवाहकी रीतिसे १२ उस कामकन्या के साथ अपना विवाह करलिया व वे महात्मा राजा उसके साथ क्रीड़ा करनेलगे १३ समुद्र के किनारोंपर वनों में व उपवनों में सुन्दर पर्व्वतों पर नदियों के तटोंपर १४ उसके संग यथेष्ट भोगविलास करनेलगे क्योंकि तारुण्य तो प्राप्तही होचुकीथी उसके संग भोग करते राजाको बीस सहस्रवर्ष बीतगये १५ व बराबर महात्मा राजाययाति रमतेरहे श्रीविष्णु भगवान् राजा वेनसे बोले कि इस प्रकार महाराज ययाति उस स्त्री से मोहितहुये १६ इस विषय में इन्द्रके अर्त्थ कामदेवहीका सब प्रपंचथा जिससे राजेन्द्र मोहित होगये सुकर्म्माजी पिप्पलसे बोले कि हे पिप्पल! पृथिवीपति राजा ययाति १७ उसके मोहसे कामसे व ललित सुरतादि से ऐसे मोहितहुये कि कामकन्या के वशीभूत होकर अब उनको यही नहीं विदित होताथा कि दिनहै कि रात्रि है बनाय उसीमें लीनही होगये १८ तब एक समय सुन्दर नेत्रवाली अश्रुबिन्दुमती मोहित नम्र वश में प्राप्त राजाययाति से बोली १९

कि हे कान्त! हमारे गर्भहै तिससे हमारा मनोरथ करो एक अश्व-
मेध यज्ञकरो २० राजा बोले कि बहुत अच्छा ऐसाही होगा हम
तुम्हारा प्रिय करेंगे इतना कहकर राजाने अपने पूरु श्रेष्ठ पुत्र को
बुलाया जो राज्य भोग में वाञ्छा नहीं करताथा २१ जैसेही महा-
राजने बुलाया कि भक्तिसे शिर झुँकातेहुये पूरु आये व दोनों हाथ
जोड़कर राजाके प्रणाम किया २२ फिर भक्तिसे माथ नवाकर उस
अश्रुबिन्दुमती के भी चरणों के प्रणाम किया व बोले कि हे राजन्!
आज्ञा दीजिये आपके बुलाने से हम आये २३ हे महाभाग! अब
क्याकरें आपके दास और नम्रहैं राजा ययातिजी बोले कि हे पुत्र!
अश्वमेध यज्ञ की सब सामग्री इकट्ठीकरो २४ ब्राह्मणोत्तमोंको बुला-
कर ऋत्विक् बनाओ व सब पृथ्वीमण्डल के खण्ड मण्डलेश्वर
राजाओं को बुलाओ यह सुनकर महातेजस्वी परमधार्मिक पूरुजी ने
२५ जैसा उनके महात्मा पिताने कहा वैसेही सब यज्ञकी सामग्री
इकट्ठी की व उस कामकन्या के सङ्ग ग्रन्थिबन्धनकर महाराज यया-
तिजी यज्ञ करने के लिये दीक्षितहुये २६ व अश्वमेध यज्ञ किया
उसमें अनेक दान महाराज ने दिये व ब्राह्मणों को तो बहुत अनन्त
दान दिया २७ व अन्य दीन लोगों को भी विशेषकर दान पृथ्वी-
पतिने दिये व यज्ञके अन्तमें महाराज उस श्रेष्ठमुखी प्राणप्रिया से
बोले २८ कि हे बाले! अब और तुम्हारा प्रिय क्याकरें सो कहो वह
सब हम करेंगे चाहे साध्यहो वा असाध्य २९ सुकर्म्माजी पिप्पल
से बोले कि जब राजाने ऐसा कहा तो वह महीपाल से बोली कि हे
महाराज! हे पापरहित! हमारे गर्भहै हमारी यह इच्छाहै उसे आप
पूरणकरें ३० प्रथम इन्द्रलोक को चलें फिर ब्रह्मलोक को तदनन्तर
शिवलोक को चलें फिर हे महाराज! वहांसे श्रीविष्णु लोकको चलें
हमारे यह सब देखनेकी बड़ी भारी अभिलाषाहै ३१ हे महाभाग! जो
हम तुमको अति प्रियहों तो हमको सब दिखाओ जब राजासे उस
ने ऐसा कहा तो उस अतिप्रिया से राजा बोले ३२ कि हे वरारोहे!
बहुत अच्छा बड़े पुण्यकी बात कहतीहो पर स्त्री के स्वभाव से चप-
लता व कौतुक से ऐसा कहतीहो ३३ क्योंकि यह तुम्हारा कहाहुआ

कार्य्य सर्व्वथा हम से तुम से दोनों से असाध्यहै वह पुण्यदान यज्ञ तपस्यासे साध्यहै ३४ अन्यथा साध्य तुम्हारा कहाहुआ नहीं है तुम ने जो पुण्य मिश्रित कहा वह असाध्यहै ३५ मनुष्यलोक से इस शरीरसे पुण्यकर्त्ता मनुष्य स्वर्गको गयाहुआ न सुना न अब तक देखा ३६ हे वरारोहे ! जो तुमने कहा वह असाध्यहै हे प्रिये ! और करेंगे जो तुमको प्रियहो सो कहो ३७ ॥

चौ० अश्रुबिन्दुमतियहसुनिबोली । वचनपरमप्रियअतिहिअमोली ॥
सत्य सत्य हम कहत महीपा । सब तव साध्यअहै कुलदीपा ॥
तप व्रत दान यज्ञ शुभ कर्म्मा । क्षत्रियवरके अपर सुधर्म्मा ॥
सब तुम महँ नहिं तुम्हें समाना । मर्त्यलोक महँ आन महाना ॥
तेज क्षात्र बल सब तुम माहीं । भूप प्रतिष्ठित संशय नाहीं ॥
तासों ममप्रिय यह नृपकरहू । वचन विचारि हृदयमहँ धरहू ३८।४० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

असीवां अध्याय ॥

दो० अस्सी के अध्याय महँ नूतन सौतिहि देखि ॥
देवयानि शर्म्मिष्ठ मिलि तासुसङ्ग विद्वेखि १

पिप्पल मुनि ने सुकर्म्मा से पूँछा कि हे द्विजोत्तम ! जब कामकी कन्या अश्रुबिन्दुमती को राजा ययातिजीने ब्याहलिया तो उन प्रथमकी दोनों पुण्यवती भार्य्याओं ने क्या किया १ महाभाग्यवती शुक्राचार्य्य की कन्या देवयानी व वृषपर्व्वा दैत्यराजकी कन्या शर्म्मिष्ठा उनदोनोंका चरित हमारे आगेकहो २ सुकर्म्मा बोले कि जब राजाययाति कामकन्याको ब्याह करके अपने गृहकोलाये तो उसके साथ मनस्विनी देवयानी बड़ी स्पर्द्धा करनेलगी ३ तिसीके लिये दो पुत्र उसके शापितहुये तब क्रोधसे आकुल आत्मा होकर यशस्विनी देवयानीने शर्मिष्ठाको अपने पास बुलाकर उनसे बोली ४ बल रूप तेज दान पुण्य सत्य पुण्यव्रतों से शर्म्मिष्ठा व देवयानी दोनों एकहोकर कामकन्याके साथ वैरभावकरनेलगीं ५ जब दोनोंका दुष्टभाव काम-

कन्याने जाना तो राजासे उसने उसीक्षण सब कहा ६ तब महाराजने क्रोधकरके देवयानी के पुत्र यदुको बुलाया व कहा कि शर्मिष्ठाको अभी मारडालो व शुक्रकीपुत्री देवयानीको भी ७ पुत्र यह हमारा प्रियकरो जो कल्याण चाहतेहो पिताकी ऐसी बातसुनकर यदु ८ राजासे बोले कि हे तात! दोषवर्जित अपनी इनदोनों माताओं का हम न वध करेंगे ९ क्योंकि माताके वधमें वेदवादी पण्डितों ने बड़ा दोष कहाहै इससे हे महाराज! हम इनदोनों का वध न करेंगे १० हे महाराज! चाहे माता हज़ारों दोषोंसे युक्तहो ऐसेही बहिन कन्या इन को ११ पुत्र व भाई कभी नहीं मारते ऐसा जानकर महाराज इन दोनों माताओंको हम नहीं मारते १२ यदुकी बात सुनकर क्रुद्धहो राजा बोले व पीछे से ययाति राजाने शापभी दिया १३ कि जिससे हे पाप! तुमने हमारी आज्ञा आज नहीं की इससे हमारे शापसे मलिन हो तुम जाकर अपने मामाकी सेवाकरो १४ इसप्रकार यदु अपने पुत्रको शापदेकर राजाययाति पुत्रके शाप देनेके पीछे अपनी उस नवीन स्त्रीके संग १५ फिर क्रीड़ा करनेलगे सुखसे भोग विला-सभी किया करें व विष्णु भगवान्‌जी के ध्यानमें तत्परभी रहाकरें ॥

चौ० अश्रुबिंदुमतिविपुलसुलोचनि।पतिसँगरमतकरतनहिंशोचनि ॥
चारुसर्व्व तनु विमल विलासिनि । नृपसँग भोगे भोग सुवासिनि ॥
इमि महान बलवान ययाती । भोगत भोग न गनु दिनराती ॥
अक्षय अमर जरा नहिं काऊ । सकल प्रजा इमि सुखी सुभाऊ ॥
विष्णुध्यानरत सब नरनारी । भजनपरायण राज्यकरारी ॥
नृपतपसोंसबप्रजासुखारी । प्रमुदितरहतलहतहितभारी १६।१९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

10.4.60

इक्यासीवां अध्याय ॥

दो० रतितनया नृपसों कह्यो बहुत इक्यासी माहिं ॥
स्वर्ग्ग चलन कहँ कालगति भूपकही शक नाहिं १

सुकर्म्माजी पिप्पलसे बोले कि दान पुण्यादियुक्त महात्मा यया-

ति का विक्रम देखकर महाप्राज्ञ इन्द्रजी सदा भयभीत रहते थे १ इस लिये उन्हों ने मेनका नाम अप्सरा को दूतता करने के लिये भेजा व कहा कि हे महाभागे! जाकर हमारा सन्देश कहो २ कामकन्या से ऐसा कहना कि इन्द्रने यह कहाहै कि किसी उपाय से अब राजाको तुम यहां लाओ ३ यह सुनकर इन्द्रकी भेजीहुई मेनका वहां गई व इन्द्रके कहेहुये सब वचन उससे कहे ४ इतना कहकर कामकन्याके कहनेसे मेनका तो चलीगई व मेनका के चलेजाने पर मनस्विनी रतिकी पुत्री ५ यशस्विनी राजासे धर्म्म संकेत वचन बोली कि हे राजन्! तुम सत्य वचनकी प्रतिज्ञा करके हमको पहले यहां लाये ६ व अपना हाथ हमको पकड़ाकर अङ्गीकार किया व घरमें लाये हमने कहाथा कि राजन् जो २ हम कहेंगी वह तुमको करना होगा ७ सो हे वीर! तुमने हमारा कहा नहीं माना इससे अब तुमको छोड़कर हम अपने पिताके मन्दिरको चलीजायँगी ८ यह सुन राजा बोले कि हां हे देवि! जो तुमने कहा वह हमने नहीं किया इसमें सन्देह नहीं है अब असाध्यको छोड़ कोई साध्य कार्य्य कहो देखो कैसे करते हैं ९ अश्रुबिन्दुमती बोली कि इसी लिये हमने सब लक्षण सम्पन्न सब धर्म्मसमन्वित आप ऐसे भर्त्ताको ग्रहण किया है १० यही जाना था कि आप सब कुछ करसक्तेहैं ऐसा कोई कार्य्य नहीं है जिसे आप न करसकेंगे क्योंकि सब धर्म्मों के कर्त्ता व पुण्यकर्म्मों के स्रष्टा ११ तीनोंलोकों के साधक जानाथा क्योंकि तीनोंलोकों में आपके समान कोई नहींहै व तुमको सब वैष्णवों में अतिश्रेष्ठ विष्णुभक्त हम जानती हैं १२ इसी आशासे हमने आपको पूर्व्वकालमें भर्त्ता बनाया था कि जिसके ऊपर विष्णुभगवान्का प्रसाद होताहै वह सर्व्वत्र जासक्ता है १३ हे राजेन्द्र! चराचर इन तीनों लोकों में उसको कुछ दुर्लभ नहींहै इससे हे सुव्रत! आपकी गति सब लोकोंमें है १४ विष्णुजी के प्रसाद से आकाश में जानेकी उत्तमगति आपमें है क्योंकि इस मर्त्यलोकमें आकर तुम्हींको १५ ऐसी सामर्थ्य है कि हे वसुधाधिप! सब प्रजाओंको जरापलित से हीन करदियाहै राज्यभरमें कोई वृद्ध होनेही नहीं पाता और मृत्युहीन मनुष्य किये हैं हे महाराज! सब

मनुष्योंके गृहोंके द्वारोंपर १६ अनेक कल्पवृक्षके पेड़ तुम्हींने लगवा दियेहैं व हे महाराज! जिन तुमने मनुष्योंके गृहोंमें कामधेनु लेकर १७ एक २ सबके यहां बँधवादी हैं कि सदाके लिये स्थिरहैं उन सब मनुष्यों को तुमने सब कामोंसे सुखी करदियाहै १८ कुलीनोंके एक२ गृहमें सहस्रों मनुष्य दिखाई देते हैं ऐसी बंशकीवृद्धि मनुष्यों की तुमने कीहै १९ यमराज और इन्द्रके विरोधसे इस मृत्युलोकको तुमने व्याधि व पापसे विहीन करदियाहै २० अपने तेजके अहंकार से भूतलको स्वर्ग के तुल्य करलिया है व सबको अपना प्रभाव तुमने ऐसा दिखाया है कि महाराज तुम्हारे समान भूतलपर कोई भी नहींहै २१ व न पूर्व्वकाल में भी ऐसा हुआहै न अब और कोई होगा हम आपको जानतीहैं कि आप सब धर्म्मों के प्रकाश करने वालेहैं २२ इससे हमने आपको भर्त्ता बनायाहै सो हमारे आगे आप ऐसा कहतेहैं कि हम इन्द्रलोकादिको जायही नहींसक्के हम तो जानती हैं कि हमारे आगे यह बात आपने हास्य करनेके लिये कहदी अब सत्य २ कहिये २३ यदि तुम्हारे सत्य व धर्म्महै तो हेमहाराज! देवलोकों के जानेमें और आकाशके जानेमें हमारी उत्तमगति नहीं है २४ सो अब सत्य वचनको छोड़कर जो तुम स्वर्ग नहीं चलोगे तो तुम्हारे वचन कूटहोंगे इसमें सन्देह नहींहै २५ जो पूर्व्व समय में सुकृत तुमने कियाहै सब भस्मीभूत होजायगा इतना सुन राजा ययाति बोले कि हे भद्रे! तुमने सत्य कहा हमको साध्य असाध्य कुछ भी नहींहै २६ श्रीनारायण स्वामी के प्रसाद से तीनों लोकों में हमको सब साध्यही है स्वर्ग्ग नजाने में तुम कारण हमसे सुनो २७ जब हम स्वर्गको जायँगे तो फिर देवगण हमको मर्त्यलोकको न आने देंगे तब फिर हे वरानने! हमारे सब मनुष्य प्रजालोग २८ हमारे न होने से मृत्युयुक्त होजायँगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इसीसे हम स्वर्ग्गको जाना नहीं चाहते यह हमने सत्य २ तुमसे कहा २९ यह सुन अश्रुबिन्दुमती देवीबोली कि हे महाराज! सब लोकोंको देखकर फिर हम व आप संगही संगचले आवेंगे हमको इस विषय में बड़ी श्रद्धाहै सो इसको पूरण कीजिये ३० राजाययाति बोले कि अच्छा

तुमने जो कहा सब ऐसाही करेंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है महा-
तेजस्वी भी महाराज ययातिने ३१ स्त्रीसे ऐसाकहकर चिन्तना करने
लगे कि मत्स्य जलके भीतर रहते हैं पर वेभी जाल में बँधजाते हैं
३२ पवन के समान वेगवाला भी मृग बागुरा में बँधजाताहै सहस्र
योजनमें स्थित मांसको पक्षी देखताहै ३३ पर दैवसे मोहित कंठमें
लगीहुई फँसरी को नहीं देखता कालही सम व कालही विषम का-
लही सम्मान कराताहै कालही हानि देताहै ३४ व कालही अनादर
कराताहै व वह जहाँ कहीं विद्यमान रहताहै पुरुषको दाता और
वही दीन करडालताहै ३५ जितने स्थावर जंगमप्राणी हैं चाहे स्व-
र्ग में हों वा भूतलपरहों सबकहीं काल पहुँचताहै व कोईभी उसको
रोक नहीं सक्ता वह सब को समय पर ग्रासकरजाताहै ३६ काल
आदि और नाशरहित धाता जगत् का पर कारणहै वह काल म-
नुष्यों को पचाता है जैसे वृक्ष में आहित फलहै ३७ न मंत्र न तप
न दान न मित्र न बान्धव कालसे पीड़ित पुरुषकी रक्षाकरसक्तेहैं ३८
ये तीन कालके कियेहुये पाश होते हैं किसीके मिटाये नहीं मिटते
एक विवाह दूसरा जन्म तीसरा मरण जब जहां जिसके संग होने
को होताहै होहीजाता है ३९ जैसे मेघ आकाश में पवनके वशी-
भूत जहां तहां भ्रमण करते हैं वैसेही यह जगत् कर्म्मयुक्त कालसे
भ्रमण करायाजाताहै ४० सुकर्म्मा पिप्पलसे बोले कि कर्म्मयुक्त इस
कालकी उपासना सब मनुष्य किया करते हैं काल कर्म्मको प्रेरित
किया करता है उसको काल नहीं करता है ४१ उपद्रव घातकदोष
सर्प्पव्याधि ये सब कर्म्म की प्रेरणा से मनुष्य के ऊपर कालपाकर
आजाते हैं ४२ पुण्यसे युक्त जितने उपाय सुखकेलिये कियेजाते हैं
वे सब कर्म्म से युक्त रहते शुभ वा अशुभ दिखाई देते हैं यह नहीं
कि सुखकेलिये किये जायँ तो उनसे सुखही हो ४३ कर्म्महीके अ-
नुसार भाग मिलता है व कर्म्महीके अनुसार बान्धव मिलते हैं व
कर्म्महीं पुरुषको सुख दुःखकी प्रेरणा करता है ४४ सुवर्ण वा चांदी
जैसे गलाकर बनाने से एक रूपका भूषण बनजाता है वैसेही प्राणी
अपने कर्म्मके वशीभूत होकर बँधकर एकरूप दिखाई देता है ४५

आयु कर्म्म धन विद्या व मरण ये पांच जब प्राणी गर्भमें रहता है तभी उत्पन्न कियेजाते हैं ४६ जैसे मिट्टीका पिण्डलेकर कुम्हार जो २ चाहता है सो २ बनालेता है इसीप्रकार पूर्वके किये कर्म कर्ताको प्राप्तहोते हैं ४७ देवत्व मनुष्यत्व पशुत्व वा पक्षित्व तिर्यक्त्व स्थावरत्व सब अपने कर्म्मों से मिलते हैं ४८ जो जिसने कर रक्खाहै वही उसको भोगताहै जैसे अपनाही किया दुःख व अपनाही किया सुख सब कोई भोगता है ४९ गर्भही से जिसकी जैसी शक्तिहोती है उसीके अनुसार पूर्व्वदेह कृत सुखादि सब भोगते हैं पृथ्वीमें कोई मनुष्य अपने कर्म नहीं छोड़ते हैं ५० कोई भी बलसे वा बुद्धि से उसके विपरीत करने में समर्थ नहीं होसक्ता अपने कियेहुयेही दुःख वा सुख सब भोगते हैं ५१ व कारणही पाकर मनुष्य नित्य कर्मबन्धोंसे बँधता है कि जैसे सहस्रों धेनुओंकेबीचमें खड़ीहुई अपनीही माताको बछड़ा पहिचानलेताहै ५२ ऐसेही शुभ वा अशुभ कर्म्म करनेवाले के पीछे २ चलताहै विना भोग किये कर्म्म का नाश नहीं होसक्ता ५३ इस पूर्व्वजन्म के कियेहुये कर्म्म के विपरीत कोई नहीं करसक्ता अतिशीघ्रताके साथ दौड़ते हुये पुरुषके पीछे २ वह भी दौड़ताहै ५४ व सोतेहुये के साथ सोताहै जैसा कर्म्म पूर्व्व में किया है वैसाही उसके पीछे लगा फिरताहै बैठेहुये के समीप बैठजाताहै व चलतेहुये के पीछे २ चलताहै ५५ कुछ करतेहुये के संग करता है इसप्रकार छाया के समान संगही कर्म्म रहता है जैसे छाया व घाम से नित्य सम्बन्ध रहता है ५६ ऐसेही कर्म्म व कर्त्ता का परस्पर सम्बन्ध रहताहै ग्रह रोग विष सर्प्प शाकिनी राक्षस ५७ ये मनुष्य को पीछे से पीड़ित करते हैं जब कि प्रथम कर्म्म से पीड़ित होलेता है जिसको जहां पर सुख वा दुःख भोगना होताहै ५८ उस को मानो रस्सी से बांधकर जबर्दस्ती भाग्य वहां पहुँचा देताहै इस से प्राणियों के दुःख वा सुख के उत्पन्न करनेवाला भाग्यही प्रभुहै ५९ क्योंकि अपने मनसे प्राणी कुछ और विचारताहै चाहे जागता हो वा सोताहो पर भाग्य उसके विपरीत वध करता वा बन्धनमें डालदेताहै चिन्तित कार्य्य नहीं होने देता ६० जिसकी रक्षा किया

चाहता है शस्त्र अग्नि विष दुर्गम स्थानों से बचालेताहै चाहे वह अरक्षितभीहो पर दैव रक्षा करलेताहै ६१ व जिसको दैव अर्थात् भाग्य नाशताहै उसकी रक्षा नहीं दिखाई देती जैसे पृथ्वी में वीर्य्य अन्न व धन रहते हैं ६२ ऐसेही शरीरमें कर्म्म रहते हैं व उत्पन्न भी होते हैं जैसे तेल न रहने से दीपक बुझजाताहै ६३ ऐसेही कर्म्मक्षय होजानेपर प्राणी नाशको प्राप्त होजाताहै व कर्म क्षय होनेहीपर तत्त्व ज्ञानी लोग मृत्युका होना भी कहते हैं ६४ प्राणी के रोगादि बहुतसे मृत्युके हेतु होते हैं राजा ययातिने कहा कि ऐसेही यह हमारे पूर्व्व कर्म्म का विपाकहै अन्यथा नहीं है ६५ कि स्त्री रूप होकर मृत्युका कारण हुआ है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है कहां से हमारे गृहमें एक नाचनेवाली नटी व बहुत से नट आगये थे ६६ जिनके प्रसंगसे जरा हमारे शरीर में प्रवेशकर आई सो उसको भी हम पूर्व्वजन्महो का कर्म्म समझते हैं नहीं तो काहेको वे आते व काहेको हम उनकी ओर देखते काहे को वृद्धता आती ६७ इससे कर्म्महीको प्रधान मानना चाहिये उपाय निरर्थकहैं देखो पूर्व्वही काल में देवराजने हमारे बुलाने के लिये उत्तमदूत ६८ भेजाथा सो हमने वैसे उत्तमदूत मातलि का कहा न किया उसी का यह कर्म्मविपाक है जो इससमय दिखाई देताहै ६९ ऐसी चिन्तामें पर राजा बड़े दुःखसे युक्तहुये व कहनेलगे कि यदि इससमय हम इसका वचन प्रीति से सर्वथा नहीं करते ७० तो सत्य व धर्म्म दोनों जाते हैं इसमें कुछभी सन्देह नहीं है इससे अब इसका वचन करनाही है ॥

चौ० जो ममपूर्व्वजन्म परिपाका । प्रकट्यो सोय सत्य हम आंका ॥
दैव दुरतिक्रम नहिं सन्देहा । जो भावी होइहि गत नेहा ॥
इमि चिन्तापर भूप ययाती । पुनिसुस्थिर है गनि गुण पांती ॥
क्लेशहरण हरिशरण पहूँचे । करन ध्यान लागे मन ऊँचे ॥
नमन ध्यान स्तुति सीतावरकी । कीन्हभली विधि मतिनकुतरकी ॥
गयहुशरणत्यहिमनहिमनावा।पाहिरमाप्रियशरणहिआवा७१।७४॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

दो० बायासी महँ नृपति निज राज्य पूरुकहँ दीन ॥
राजनीति उपदेश किय बहुविधि भूपप्रवीन १

सुकर्म्माजी पिप्पल से बोले कि परमधार्म्मिकराजा जब इसप्रकार चिन्तना करनेलगे तब श्रेष्ठमुखी वह रतिकी पुत्री बोली १ कि हे महामति भूपाल ! आप किस बातकी चिन्ता कररहे हैं बहुधा स्त्रियां सब चंचल होती हैं इसमें सन्देह नहींहै २ परन्तु हम चंचलता के भावसे आपको चलायमान नहीं करतीं हम अब आपके पासका रहना नहीं चाहतीं ३ जैसे अन्य स्त्रियां लोकमें लोभ व मोहसे लम्पटहोकर चपल भावसे अकर्त्तव्य कार्य्य करने को कहाकरती हैं ४ वैसा हम नहीं कहतीं किन्तु हमारे हृदयमें लोकों के देखनेकी श्रद्धा है व देवताओं के दर्शन मनुष्यों को अत्यन्त दुर्ल्लभहैं ५ हे राजन् ! हम उन्हीं का दर्शन किया चाहतीहैं हमसे कहो जिसमें जो कुछ दोष पाप हमारे संगसे हुयेहों देवदर्शन से मिटजायँ ६ आपतो ऐसी चिन्ता करते हैं जैसी कि कोई प्राकृतिकजन करताहै वजैसे कोई महाभय से डराहुआ और मोहके गर्त्त में पड़ाहुआ करताहै ७ हे महाराज ! चिन्ता छोड़ दो तुम स्वर्ग्गको न चलो जिससे तुमको दुःखहो वह हमको कभी न करना चाहिये ८ जब उसने ऐसा कहा तो राजा उस वरांगनासे बोले कि हे देवि ! हमने जो चिन्तन किया है वह इस समय हमसे सुनो ९ हे प्रिये ! हमने आजतक अपना मानभंग कभी नहीं देखा जब हम स्वर्ग्गको चलेजायँगे तो प्रजा दीन होजायगी १० व दुष्टात्मा यमराज रोगोंसे प्रजाको पीड़ित करेगा परन्तु जो हो अब हम तुम्हारे साथ स्वर्ग्गलोक को चलेंगे ११ ऐसा उससे कहकर राजा ने पुत्रों में उत्तम व सर्वधर्म्मज्ञ जरायुक्त महामति पूरु को बुलाया १२ कि हे वत्स ! हे सर्व्वधर्म्मज्ञ ! यहां आओ तुम धर्म्मको अच्छेप्रकार जानतेहो हे धर्मात्मन् ! हमारी आज्ञासे धर्म तुमने पालन कियाहै १३ हे तात ! अब हमारी जरा हमको दो व अपनी तरुणता ग्रहण करो व कोश वाहनसहित व रत्न धन धान्यसमेत समुद्रपर्यन्त

यह हमारा राज्यभोगो हे महाभाग! हमारी दीहुई गांव वन देशसमेत पृथ्वी के सुख अच्छीतरह भोगो १४। १५ हे पापरहित ! प्रजाओं का पालन पुण्य सदा करतेरहना दुष्टोंको सदा दण्डदेतेरहना और साधुओं का परिपालन नित्य करना १६ सो हे वत्स! दण्ड व पालन दोनों मन्वादि धर्म्मशास्त्रों के अनुसार करना व हे महाभाग! अपने कर्म्म से विधिपूर्वक ब्राह्मणों की १७ पूजाकरना व भक्तिसे उनका पालनकरना क्योंकि वे तीनों लोकों में सबसे पूज्य होते हैं पांचयें सातयें दिन कोश देखते रहना १८ व प्रसाद धन भोजनों से सेना का पूजन नित्य करते रहना दूतों को नेत्र बनाये रहना व दान में सदा निरतरहना १९ व मन्त्र नित्य एकान्तमें बैठकर पण्डितोंकेही संगकरना हे पुत्र! अपने आत्माको सदा नियतरखना और शिकार कभी न खेलना २० स्त्रियों में व कोशमें व सेनामें विश्वास कभी न करना कि ये हमारे वशमें हैं सब पात्रों का व कलों का संग्रह करते रहना २१ व पुण्यात्मा होकर यज्ञों से श्रीविष्णुभगवान् की पूजा सदा करतेरहना प्रजाओं के सब कण्टकों को प्रतिदिन मर्दन करते रहना २२ हे पुत्र ! प्रजाओं को सब वाञ्छित सुख सदा देना व उनको अच्छेप्रकार पालते रहना २३ अपनी विवाहिता स्त्रीके संग नित्य भोगकरना परस्त्रीगमन कभी न करना परधन लेने के लिये दुष्टमति कभी न करना २४ हे वत्स ! वेदों की व शास्त्रों की चिन्ता सदा सर्व्वदा करते रहना हे वत्स ! ऐसा करतेहुये व शस्त्र शास्त्र में सदा निपुणरहना २५ सदैव संतुष्टरहना और अपनी शय्यामें निरत होना गज अश्व व रथ इनपर चढ़नेका अभ्यास सदा रखना २६ ॥

चौ० इमिसुतकहँअनुशासनदयऊ । आशिषयुत ताकहँकरिलयऊ ॥
निज करसों सिंहासन पाहीं । थाप्यो सब धन दै शक नाहीं २७
लै निज जरा दई तरुणाई । ताकी ताहि सहित निपुणाई ॥
स्वर्ग गमनकी करि मति भूपा । सुस्थिर भयहु भव्यअनुरूपा २८

इति श्रीपाद्म्येमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

दो० प्रजहि बहुत समझाय नृप रहन कह्यो क्षितिमाहिं ॥
पर सब भूपति संगही गे हरिपुर चितचाहिं १
सुतहि राज्य दै नीति कहि दयितायुत हरिलोक ॥
गे नृप हरिपुर ख्याति कहि तीरासीमैं अशोक २

सुकर्म्माजी पिप्पलसे बोले कि इसके अनन्तर महाराज ययाति जीने अपनी द्वीपोंकी सब प्रजा बुलाई व महाहर्षके साथ उनसे यह वचन कहा कि १ इन्द्रलोक ब्रह्मलोक व शिवलोक देखते हुये सब पापनाशन व प्राणियों को गतिदायक वैष्णवलोकको २ इस अपनी भार्य्या के साथ हम जाते हैं इसमें अब कुछ सन्देह नहीं है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्र जो सब हमारी प्रजाहो ३ सुख से अपने २ परिवारके साथ यहां निवासकरो अब यह महाभाग पूरु आपलोगों का पालक नियत कियागयाहै ४ इससे अब राज्य में स्थापित धीर यही है दुष्टों को दण्ड देता रहेगा जब ऐसा राजा ने कहा तो सब प्रजा भूपति से बोली ५ कि हे नृपोत्तम ! सब वेदों में व पुराणों में सुनाई देताहै कि धर्म्मही परमज्ञानहै पर देखा किसीने नहीं ६ पर हमलोगोंने दशोअंगोंसे युक्त सत्यवल्लभ धर्म्मको देखाहै वह सोमवंश में राजानहुषके गृह में उत्पन्नहुआहै ७ हाथ पाद मुखादि से युक्तहो सब आचारोंका प्रचार कररहाहै ज्ञान विज्ञानसे सम्पन्न व पुण्योंका महानिधिहै ८ हे महाराज ! गुणोंका आकर व सत्यमें महापण्डित है जिस महाधर्म्म को सत्यवान् महापराक्रमी सदा कियाकरते हैं ९ उस धर्म्मको मनोहर रूप धारण किये हमलोगोंने देखा सो आप हैं सो काम के कर्त्ता ऐसे सत्यवादी आपको १० कर्म्म मन व वचन तीनों से हमलोग कभी नहीं छोड़सक्के इससे जहां आप वहां हम लोग भी क्योंकि हमलोगोंके सुख व पुण्य आपही हैं ११ इससे जो आप नरकमें भी जावें तो हमलोग भी चलें इसमें कुछभी सन्देह नहीं है हे महाराज ! विना आपके हमलोगों को स्त्रियों से क्याहै व धनों से क्या भोगों से क्या जीनेसे क्याहै तिससे यहां कारण जीनेसे नहीं है

हे राजेन्द्र! तुम्हारे साथ हम लोग चलेंगे अन्यथा न होगा १२।१३
इसप्रकार तिन प्रजाओंके वचन सुनकर बड़े हर्षसेयुक्त राजा प्रजाओं
से बोले १४ कि सब अच्छे पुण्यकर्ता मनुष्यो! हमारेसाथ आओ फिर
राजा उस काम कन्या के साथ रथपर चढ़ा १५ जो रथ कि हंसके
वर्णवाला चन्द्रमा के बिम्बका अनुकरण करनेवाला था चामर और
व्यजन चलरहे हैं व्यथारहित था १६ और तिस पुण्यकारी सुन्दर
बड़े पताका से जैसे देवताओं से देवोंके राजा पुरन्दर शोभित होते
हैं १७ वैसेही ऋषियों वन्दीजनों चारणों और प्रजाओं से स्तुति
कियेगये नहुषके पुत्र ययाति आप शोभित होते हैं १८ सब प्रजालोग
वाहनों पर चढ़ २ कर राजा के समीप आये कोई हाथियों पर कोई
घोड़ोंपर कोई रथोंपर चढ़कर आये व सबोंने स्वर्गजानेकी तैयारी
की १९ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र व वैसेही अन्य अन्त्यज चण्डाला-
दिभी सब विष्णुके ध्यान में परायण वैष्णव मनुष्य चले २० उन
सबोंकी पताका श्वेतरंगकी उनमें सुवर्ण के दण्डलगे सबके सब शंख
चक्रसे अंकित दण्डों की पताका अपने अपने ऊपर लगाये थे २१
इससे प्रजाओं के समूह में सब पवनसे प्रेरित पताका शोभित
होतीथीं व दिव्य तुलसीकी माला सब धारणकिये थे व तुलसीदलों
से शोभित होते थे २२ व सब दिव्य चन्दन के सुगन्ध से युक्त व
दिव्य अरगजादि अनुलेपन अंगों में लगाये दिव्यवस्त्रों से शो-
भित व दिव्य आभरणों से भूषित २३ व सबलोक सुरूप धारण
किये राजाके समीप उपस्थितहुये इसप्रकार सैकड़ों लाखों कोटियें
प्रजायें आकर इकट्ठी हुईं २४ व अर्व्व खर्व्व सहस्र तक सबलोग
आकर प्राप्तहुये व उन महाराज ययातिजीके सङ्ग चलने पर उद्यत
हुये क्योंकि सब लोग चाहे किसी वर्ण के क्यों न हों वैष्णवथे इससे
सब पुण्यकारी थे २५ विष्णुके ध्यान में सब पर थे व जप दान में
परायणथे सुकर्म्मा पिप्पल से बोले कि इसप्रकार महाहर्षित होकर
सबके सब चलनेपर उद्यतहुये २६ तब अपने पूरु पुत्रको अपने
राज्य पर अभिषेककर महाराज ययातिजी इन्द्रलोकको गये २७ व
उन महात्मा राजाके तेज पुण्य धर्म्म व तपसे वे सब प्रजालोग

उत्तम श्रीविष्णुलोक को चलेगये २८ जब राजा इन्द्रलोकमें पहुँचे तो सब देव गन्धर्व किन्नर चारण इन्द्र सहित अगुआनी लेने के लिये राजाके सम्मुख आये २९ व उन नृपोत्तम की पूजा करतेहुये इन्द्रजी बोले कि हे महाराज ! आप अच्छे प्रकार तो आये हमारे घर में प्रवेश करो ३० यहां अब दिव्य पुण्य अपने मनमाने भोग भोगो व नानाप्रकारके विहार करो तब राजा ययातिजी बोले कि हे महाप्राज्ञ सहस्राक्ष ! अब हम तुम्हारे दोनों चरणकमलों के ३१ प्रणामकरते हैं व ब्रह्मलोकको जाते हैं तब देवताओंसे स्तुति कियेगये राजा ब्रह्मलोक में पहुँचे ३२ तब महातेजस्वी ब्रह्माजी मुनिवरों के साथ पाद्य अर्घादि सुन्दर विष्टरोंसे राजाकी आतिथ्य करतेभये ३३ और बोले कि तुम अपने कर्म्म से विष्णुलोक को जावो जब ब्रह्मा ने ऐसा कहा तो शिवमन्दिर को गये ३४ तब महादेव व पार्व्वती ने उनका बड़ा आतिथ्य सत्कार किया व पूजाभी बड़ी की और उनसे कहा ३५ कि हे राजेन्द्र ! तुम बड़े कृष्णभक्तहो इससे हमारेभी बड़े प्रियहो अब हमारेही मन्दिरमें निवासकरो ३६ व सब भोगों को यहां भोगो जो कि मनुष्योंको बड़े दुःख से प्राप्त होते हैं हे राजेन्द्र ! हममें व श्रीविष्णुमें कुछ अन्तर नहीं है इसमें कुछ सन्देह नहींहै ३७जो रूपधारण किये विष्णुहैं वही शिवहैं इसमें कुछभी संशय नहीं है व हे राजन् ! जो शिवहैं वही सनातन विष्णुहैं ३८ दोनों में कुछ अन्तर नहीं है इससे ऐसा हम कहते हैं पुण्यात्मा तुम विष्णुजी के भक्तहो इसीसे तुमको यहां रहने का स्थान बताते हैं ३९ इससे हे पापरहित महाराज! तुम यहां ठहरो जब शिवजी ने ऐसाकहा तो श्रीहरिवल्लभ राजा ययातिजी ४० भक्तिसे मस्तक झुकाकर शङ्करजीके प्रणामकर बोले कि हे महादेवजी ! जो आपने इससमय कहा वह सत्यहै ४१ आप दोनों में अन्तर नहीं है एकही मूर्त्तिहो दो होगयेहो पर हमको अब विष्णुलोक जानेकी इच्छाहै इससे तुम्हारे चरणोंके प्रणाम करते हैं ४२ तब महादेवजी ने कहा महाराज बहुतअच्छा वैष्णवलोक को जाइये जब शिवजीनेभी आज्ञादी तो राजा ययाति वहांसे चले ४३ तब देवलोकनिवासी महापुण्य विष्णुके वल्लभ वैष्णवलोग राजाके आगे

नृत्य करनेलगे ४४ व पापनाशन शङ्खशब्द व बड़े सिंहनाद करने लगे व सब चारणलोग कुछ इच्छासे नहीं योंही राजा की पूजा करने लगे ४५ व बड़े गानविद्यामें चतुर शास्त्रमें निपुण गन्धर्व्वलोग सुन्दर स्वर से राजाका यश गानेलगे ४६ व ऋषि तथा देववृन्द स्तुतियां करनेलगे अतिसुरूपवती अप्सरा महाराज ययाति की बड़ी सेवा करनेलगीं ४७ गन्धर्व्व किन्नर सिद्ध व चारण पुण्यमङ्गलों से राजाकी स्तुति करनेलगे इसीप्रकार साध्य विद्याधर पवन वसु ४८ रुद्र आदित्य लोकपाल दिक्पाल तीनोंलोकों के निवासियोंसे स्तुति कराते हुये राजा ययातिजी ने ४९ जाकर उपमा रहित विष्णुलोक को देखा जो कि निरामय व सुवर्ण के विमानों से सर्व्वत्र शोभित होरहाथा ५० वह लोक हंस कुन्द व चन्द्रके सम श्वेतरङ्गके विमानों से शोभित व सैकड़ों महलों से शोभित मेरु मन्दराचल के समान ऊँचे धवरहरों से उपशोभित ५१ व शिखरों से अपने ऊँचेवाले आकाशको छूतीहुई अट्टालिकाओं से युक्त व अन्यनानाप्रकार के शिखरोंकी चमकसे जाज्वल्यमान होने से कलशों से अतिशोभित ५२ जैसे तारागणों से यह आकाश प्रकाशित होता है वैसेही विमानों की शोभा से वह लोक प्रकाशित होता बड़ी प्रज्वलित ज्वालाओं से ऐसा प्रकाशित मानों नेत्रों से सब ओर देखरहाथा ५३ व नाना प्रकार के सब रत्नों से व हरिलोक मानों दांतों से हँसरहा था व मानों उन नानाप्रकार के दिव्य पदार्थों से विष्णु के वल्लभ वैष्णवों को अपने यहां आनेको बुलाता था ५४ व ध्वजाओं के व्याज से मानों कहताथा कि तुमलोगों के पाप दूरको उड़ादेंगे पवनके चलने से कम्पित ध्वजाग्रों से यही विदित होताथा व सुवर्णकी डांड़ी लगे हुये व घण्टा बँधेहुये चामरों से सर्व्वत्र शोभित होरहा था व सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित गोपुर अट्टालिकादिकों से विराजमान था ५५।५६ गवाक्षोंसे व जालमालाओंसे व मनोहर वातायनोंसे अति शोभित बाहर के खावां व प्राकार से जोकि सुवर्ण के बनेथे अत्यन्त शोभित ५७ तोरणों से व बड़ी बड़ी पताकाओं से व नानाप्रकार के मंगल शब्दों से शब्दायमान होरहाथा व कलशों के ऊपर मणियों

के ओपर ऐसी युक्तिसे धरेथे कि देखनेवालोंकी दृष्टिमें उनकी चका-
चौंधी लगती थी ५८ सौ कक्षायें ऐसी बनीथीं कि स्थलपर मानों
जलसे भरीहुई दिखाती थीं दण्ड व छत्र युक्त सुवर्णके अनेक प्रकार
के कलशों से देदीप्यमान होताथा ५९ वर्षाकाल के मेघोंके आकार
मन्दिर शोभित थे कलशों से शोभित थे जैसे नक्षत्रों से आकाश
शोभित होताहै ६० दण्ड समूह पताका नक्षत्रों के समूहकी समान
दीप्तिवाले थे तैसेही स्फटिकमणि के आकार व शङ्ख चन्द्रकी कान्ति
के समान नाना धातुमय देव मन्दिरों से उपशोभित था व कोटियों
अर्ब्बुदों सर्व्वभोगयुक्त विमानों से वह श्रीहरिलोक शोभित होता
था जिन लोगों ने शंखचक्रगदाधर श्रीरमानिवासजी की आराधना
कीथी वा करते हैं ६१।६३ उन धवरहरोंपर व उन हरिपुरके म-
न्दिरों में भगवान् के प्रसाद से वे लोग निवास करते हैं व सब पुण्य
रूप दिव्य भोगविलास के पदार्थों से भरेपुरे ६४ मन्दिरों में पुण्य
कर्मवाले सब पापरहित वैष्णवलोग निवास करतेथे ऐसे पुण्य गृहों
से श्रीविष्णु मन्दिर शोभित होता ६५ व नानाप्रकार के चन्दनादि
घने वृक्षों से समाकीर्ण होने से अत्यन्त शोभित होता वहां जितने
वृक्षथे सब सब कालोंमें फलेफूले बने रहते उनसे वह हरिपुर अलं-
कृत होरहाथा ६६ व वापी कूप तड़ाग सारसों से उपशोभित था व
उनमें हंस कारण्डव कह्लार कमल ६७ शतपत्र महापत्र पद्म उत्पल
विराजित थे आदि पक्षी व कमल विहरते थे तथा सुवर्णसे बनेहुये
के समान तालाबों से विराजमान था ६८ इस प्रकार इन सबोंसे व
देवताओं के देव श्रीहरिकी पुष्पवाटिकाओं से अलंकृत सब शोभा
से युक्तथा अन्य भी दिव्य शोभाओं से समाकीर्ण व वैष्णवों से शो-
भितथा ६९ व देववृन्दों से समाकीर्ण मोक्षके उत्तम स्थान ऐसे वैकु-
ण्ठको नहुष के पुत्र राजा ययातिजीने देखा ७० व सब प्रकार के
तापोंसे वर्ज्जित दिव्य श्रीहरिपुरमें राजा ययातिने प्रवेश किया व
सर्वक्लेशनाशन अनामय ७१ सब आभरणों से भूषित विमानों के
मध्यमें एक सर्व्वोपरि विमानपर बैठेहुये श्रीनारायणजी के दर्शन
राजाको हुये ॥

चौ० पीताम्बर धृत जगके नाथा । श्रीवत्साङ्क महाद्युति साथा ॥
वैनतेय कृत वाहन नीके । परसे पर लक्ष्मीपति ठीके ॥
सर्व्वदेव लोकप परमेश्वर । सबकी गति सर्व्वग भुवनेश्वर ॥
परमानन्द रूप गुण सागर । मोक्षदानि शुभखानि रमावर ॥
महापुण्य वैष्णवगण सेवित । सकल लोक पालकन निषेवित ॥
देव वृन्दयुत नुत गन्धर्व्वा । किन्नर चारणादि सुरसर्व्वा ॥
अरु अप्सरा सहस्र निषेवित । रमा निवास रमासों सेवित ॥
क्लेशहारि नारायण जी के । कीन प्रणाम भूप अति ठीके ॥
निज दयिता युत बारहि बारा । कीन प्रणाम महीप उदारा ॥
पुनि भूपति सँग वैष्णव जेते । गयेहते सब मानव तेते ॥
सबन भूप सँग कीन प्रणामा । विनय विधान सहित अभिरामा ॥
पादाम्बुज पहँ प्रणमत देखी । भक्तिसहित गतमान विशेखी ॥
तब श्रीहरि भूपति सों भाषा । नृप सन्तुष्ट काह अभिलाषा ॥
मांगहु वर सब देहहुँ तोहीं । लखहु प्रसन्न महीपति मोहीं ॥
तुम मम भक्त न कछु सन्देहू । यासों करिकै कहत सनेहू ॥
यह सुनि भूपति वचन उचारा । सुनिय कृपालु दयालु उदारा ॥
देव देव जो भयहु प्रसन्ना । मधुसूदन म्वहिं गुनत प्रपन्ना ॥
तो निज चरण दास्य अब दीजै । नाथ कृपाकरि अभय करीजै ॥
श्रीहरि बोले सुनहु महीपा । एवमस्तु लहु भक्ति सुदीपा ॥
महाराज अब मम पुर माहीं । बसहु सदा कछु संशय नाहीं ॥
यह हरिवच सुनि भूप ययाती । प्रमुदित मन करि शीतल छाती ॥
विष्णुप्रसाद पाय त्यहि लोका । बस्यहु तहां सब भाँति अशोका ॥
नित्य विष्णु सँग विहरत नीके । यथा तहां सब वैष्णव टीके ॥
उत्तम हरिपुर विगत त्रिबाधा । तहँ दयितायुत नृप सबसाधा ७२।८३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेपितृ तीर्थवर्णनेययातिचरित्रेस्वर्गारोहणंनामत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

दो० चौरासी अध्याय महँ पिता आदि गुरु सेव ॥
पिप्पल सुन्यो सुकर्म्म सों गयहु स्वर्ग्ग जहँ देव १

सुकर्म्माजी पिप्पल से बोले कि दिव्य बहुत पुण्यदायक पुत्रोंको तारनेवाला व पापनाशन यह चरित हमने तुमसे कहा १ जोकि यह ययातिजी का चरित लोकमें प्रसिद्ध है व प्रत्यक्ष में दिखाई देताहै कि पिताकी भक्ति करने से पूरुने तो राज्य पाया व अनुने दुर्ग्गति भोगी २ पितृतीर्थ के प्रभाव से व कोपसे जैसे हुये तैसे फिर कहते हैं यह चरित पुत्रोंको तारनेवाला पुण्य यश बढ़ानेवाला व धनधान्य देनेवाला है ३ यदु और अनु दोनों शापयुक्त भये परन्तु पितृतीर्थ मातृतीर्थ के तुल्य नहीं है क्योंकि मातृतीर्थ अधिक अभीष्टफल देता है ४ क्योंकि पिता पुत्रको किसी न किसी इच्छाही के लिये बुलाता है व माता जब कभी क्या बार २ पुत्र २ कहकर बुलाया करती है उसके बुलानेपर जानेसे जो पुत्रको फल होताहै वह हमसे सुनो ५ जब माताके बुलानेपर बड़े हर्षके साथ पुत्र उसके समीप जाता है तो पहुँचतेही गंगास्नान का फल पाताहै ६ जो महायशस्वी माता पिताके पांव धोताहै वह उनके प्रसादसे सब तीर्थके फल भोगताहै ७ जो देह चापता है वह अश्वमेध के फल को प्राप्तहोताहै व जो पुत्र गुरुजी को भोजन व वस्त्रदेता व स्नानकराता है ८ उसको पृथ्वी दान करनेका फल मिलता है क्योंकि जैसे गंगाजी सर्व्वतीर्थमयी हैं ऐसेही माता सर्व्वतीर्थमयी है इसमें सन्देह नहीं है ९ व जैसे लोकमें बहुत पुण्यमय समुद्रहैं ऐसेही मुख्य पिताभी होतेहैं क्योंकि सब पुराने पण्डितोंने यही कहा है १० व जो पुत्र माता वा पिताको दुःख देताहै वह रौरवनरकमें जाताहै इसमें सन्देह नहीं है ११ जो गृहस्थपुत्र अपने वृद्ध माता पिताका पालन पोषण नहीं करता वह गृहस्थपुत्र नरकको जाता और निश्चय कष्टको पाताहै १२ व जो दुर्बुद्धि पापीपुरुष गुरुको दुःख देताहै उसका निस्तार किसी प्रकारसे नहींहोता यह बात सब पुराण व कविलोग कहते हैं १३ सुकर्म्माजी

पिप्पलसे बोले कि हे विप्र! ऐसा जानकर भक्तिसे मस्तक झुकाय हम प्रतिदिन अपने पिता माताकी पूजा कियाकरते हैं १४ हमारे गुरु हम को बुलाकर चाहे करने के योग्य कार्य्य करने को कहते हैं वा करने के अयोग्य कहते हैं परन्तु हम बिना विचारेही शक्तिसे तुरन्त उसको करते हैं १५ इसीसे हमको यह गतिदायक परमज्ञान होगयाहै इन्हीं दोनों जनों के प्रसादसे इस संसारमें भूत भविष्य व वर्त्तमान तीनों कालोंकेवृत्तान्त हम जानतेहैं १६ गृहस्थपुरुष भूमण्डलमें कहीं स्थित होकर कुछभी कार्य्य करते हैं पर हम यहीं बैठे २ जानजाते हैं मानों सब हमारे आगेही होता है हे पिप्पल! सो पृथ्वीहीपर के वृत्तान्त हम नहीं जानते किन्तु स्वर्ग्ग में १७ सबसे नीचे नागलोग रहते हैं उनकी भी गति यहीं बैठे हुये हम जानते हैं इन्हीं दोनों जनों के प्रसाद से तीनों लोक हमारेवश में हैं १८ इससे हे विद्याधर श्रेष्ठ पिप्पल! अब तुम जाओ व भगवान् को पूजो ॥

चौ० इमिपिप्पलकहँजबहिंप्रबोधा। विप्रसुकर्म्मा बहुविधिशोधा ॥
आज्ञा लै प्रणाम करि फेरी। पिप्पल गयहु स्वर्ग्ग नहिं देरी ॥
बहुरि सुकर्म्मा निजगुरु सेवा। करन लगे जिमि पूजत देवा ॥
जिमि नित पूजत रह्यो सदाहीं। तिमिपुनि करतमुदितमनमाहीं ॥
इमि पितृतीर्थ कहा तुमपाहीं। करि विचार कछु संशय नाहीं ॥
कहहुवेन अब काह बखानों। वाञ्छितवर्णहुनिजमनमानों १९।२१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेमातापितृतीर्थमाहात्म्यवर्णनंनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

पचासीवां अध्याय ॥

दो० पञ्चाशीत्यध्याय महँ दिवोदास तनयाहु ॥
दिव्या देवीके भये इक्कइस बार विवाहु १

यह सुनकर राजावेन ने श्रीविष्णुभगवान्‌जीसे पूँछा कि हे देव-देवेश भगवान्! तुम्हारे प्रसादसे हमने भार्य्यातीर्थ व उत्तम पितृ-तीर्थसुना १ व हे हृषीकेश! बहुतपुण्यका देनेवाला मातृतीर्थभी तुमने कहा अब प्रसन्नहोकर गुरुतीर्थ हम से कहिये २ श्रीभगवान् जी

बोले कि हे राजन्! सब पापहरनेवाला शिष्यों के गति का दायक उत्तम गुरुतीर्थ हम तुमसे कहेंगे ३ जो कि शिष्योंके लिये परम पुण्य धर्मरूप सनातन परतीर्थ परज्ञान व प्रत्यक्षफल देनेवालाहै ४ हे राजेन्द्र! जिसके प्रसाद से इस लोकमें व परलोक में भी परमफल शिष्यलोग भोगते हैं परलोकमें सुख व यहां कीर्त्ति पाते हैं ५ व हे राजेन्द्र! जिस महात्मा गुरुके प्रसाद से शिष्यलोग प्रत्यक्ष में सचराचर तीनोंलोक देखते हैं ६ व हे नृपनन्दन! सब लोकोंका व्यवहार व आचार व विज्ञान शिष्य पाताहै व मोक्षको प्राप्त होताहै ७ जैसे सब लोकोंके प्रकाशक सूर्य्य हैं वैसेही शिष्योंका प्रकाशक व उत्तमगति गुरु होताहै ८ हे नृपोत्तम! रात्रिमें चन्द्रमा सर्व्वत्र प्रकाशकरताहै तेज से सब चराचर अधिकारको साधताहै ९ व गृहोंके भीतर में दीपक प्रकाश करताहै व तेजसे सब अन्धकारको नाशताहै १० अज्ञान तमोरूप से अत्यन्त घिरेहुये शिष्यको शिक्षा व ज्ञानके उपदेशों से सदागुरु प्रकाशित करताहै ११ सूर्य्य दिनमें प्रकाश करते हैं व चन्द्रमा रात्रिमें सदा प्रकाश करते हैं व गृहमें दीपकसे रात्रिमें प्रकाशहोता है व सदैव अन्धकार नाशकहै १२ व रात्रि दिन व गृहान्तरमें शिष्य के सदा प्रकाशक गुरुलोग होते हैं व शिष्योंके सब अज्ञानान्धकार को दूरकरते हैं १३ इससे हे महीपाल! शिष्यों का परमतीर्थ गुरुहै ऐसा जानकर शिष्यको चाहिये कि सदा पूजनकरे १४ क्योंकि गुरु परमपुण्यमय होते हैं इससे शिष्य उनको त्रिविधकर्म्मसे प्रसन्नकरें क्योंकि गुरुओं के प्रसन्न होने में फिर कुछभी दुर्ल्लभ नहीं होता हे विप्र! इसी अर्थ में महात्मा च्यवनजीका एक बहुत पुराना इतिहास सुनाई देताहै जोकि सब पापोंको हरताहै भार्गवकुलमें एक मुनियों में सत्तम च्यवनजी हुये १५ । १६ हे नृपोत्तम! उनको एकसमय बड़ी चिन्ता उत्पन्नहुई कि हम महीतलपर कब ज्ञानसम्पन्न होकर विचरेंगे १७ इस चिन्तासे वे मुनिश्रेष्ठ ज्ञानकी इच्छा किये दिन रात्रि चिन्तनाकरें इसप्रकार चिन्ताकरते २ उन महात्माकी मति हुई कि १८ अब हम अभीष्ट फल देनेवाली तीर्थयात्रा करें गृह खेत आदि भार्या पुत्र धन सब छोड़कर १९ तीर्थ यात्रा के प्रसङ्ग

से पृथ्वीपर विचरने लगे हे नृप ! उन्होंने उलट पुलटकर कई बार गंगाजी की यात्राकी २० व ऐसेही उन मुनीश्वर ने नर्म्मदा व सरस्वती नदीकी यात्रा लोम अनुलोम की रीति से की व गोदावरी आदि और सब महानदियों की यात्रा तथा समुद्रकी यात्राकी २१ व हे नृपोत्तम ! ऐसेही सब और पुण्यक्षेत्र व पुण्य तीर्थोंकी यात्रा की व पुण्य देवताओंकी मूर्त्तियोंके इसी यात्राकेव्याजसे वे मुनि घूमते रहे २२ व सब उत्तम उत्तम तीर्थोंकी यात्रा करडाली इससे उनका शरीर ऐसा निर्मल होगया कि सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित होनेलगा २३ व च्यवनजी दीप्तिसे प्रकाशितहो पवित्रात्मा होगये व उस कर्म्म से अतिदेदीप्यमान होगये घूमते घूमते फिर क्षेत्रों में उत्तम २४ नर्म्मदा के दक्षिणतटपर अमरकण्टक नाम स्थान पर पहुँचे जहां कि सब को गतिदायक महालिंगहै २५ वहां सिद्धिनाथ उन महेश्वरजीके नमस्कार पूजन व स्तुतिकर फिर ज्वालेश्वर के दर्शन करके अमरेश्वरके दर्शन किये २६ फिर ब्रह्मेश कपिलेश व मार्कण्डेयेश्वर के उत्तम दर्शन किये इस प्रकार यात्राकर ॐकारनाथ के मुख्यस्थान में आये २७ वहां शीतल व श्रमनाशिनी वटवृक्षकी छाया में पहुँचे व भृगुवंश में उत्तम च्यवनजी सुखसे उस छाया में बैठे २८ व वहां उन्होंने पक्षियों का शब्द सुना वह दिव्य भाषा व दिव्य ज्ञान से युक्तथा २९ वहां बहुत कालसे उस वृक्षपर एक शुक रहता था कुञ्जल उसका नाम था व धर्मात्मा था चार उसके पुत्र थे व उसकी भार्य्याभी थी ३० उसके चारपुत्र अपने पिताके आनन्द करनेवाले थे हे राजेन्द्र ! तुम्हारे आगे उन के नाम कहते हैं ३१ ज्येष्ठका तो उज्ज्वल नाम था व दूसरे का समुज्ज्वल तीसरे का विज्वल व चौथेका कपिंजल ३२ हे महामते ! इस प्रकार कुञ्जल के चार पुत्रथे उस पुण्य शुकके वे सब पिता माताके भजनमें परायण थे ३३ व पर्व्वतों के ऊपर व द्वीपों में यथेष्ट सदा घूमा करते व जब भूँख प्यास लगती तो आप वहां से दिव्य फल खाते व अमृतके समान स्वादुवाला जलपानकर आते ३४ । ३५ व जो परम उत्तम दिव्य फल होते वे अपनी माता और पिताके लिये देते उनमें भी जो अच्छे

परिपक्क व स्वादुयुक्त होते वेही आदरके अर्थ माताको ढूँढ़ २ कर लाते थे व जो अपनी माताके लिये लाते बड़ी भक्तिभाव से लाते व उनको उनके माता व पिता खाकर सन्तुष्ट होते तो उन अपने पुत्रो के साथ बैठकर आनन्द से उस वटवृक्षपर पढ़ते ३६ । ३७ व क्रीड़ा में रत होकर सबके सब विलसित होते व खेल करते व जब सन्ध्या समय आता तो सब अपने पिता के पास आजाते थे ३८ व सबेरेजाकर दोपहर के समय अपने पिताके लिये यत्न से भोजन लाते व सन्ध्यासमय में भी लाया करते सो उस दिन महात्मा ब्राह्मण च्यवनजीने देखा ३९ तब सब पक्षी भी पिताके सुन्दर खोलखल में आये व पुत्रोंने अपनी माता व पिता के चरणों में आकर प्रणाम किया ४० और भोजनके फल माता पिता के आगे धर सब पितासे बोले पिताने उत्तम पुत्रोंका मानकिया ४१ और माताने कृपाकर प्रीतिसंयुक्त वचनों से मान किया तब पुत्र माता पिता के ठण्ढी पखनों की हवा करते भये ४२ फिर दोनों पक्षियोंने पुत्रों का खोल-खल बनाया और दोनों ने अच्छे पुत्रोंको आशीर्वाद दिया ४३ तब पुत्रोंने अमृत के समान पुष्ट आहार दिया तो दोनों पक्षियों ने प्रीति से भोजन किया ४४ और करोड़ तीर्थोंसे उत्पन्न निर्मल जल पिया अपने स्थान में सुख से संतुष्ट मन होगये ४५ फिर सुन्दर पापना-शिनी कथा कहते भये श्रीविष्णुभगवान् राजा वेनसे बोले कि तब उनका पिता कुंजल अपने ज्येष्ठ पुत्र उज्ज्वल से बोला ४६ कि हे पुत्र ! आज तुम कहांगयेथे व वहां तुमने क्या अपूर्व देखा व पुण्य-कारी सुना हे पुत्र ! वह हमसे कहो ४७ कुंजल नाम अपने पिताका वचन सुनकर वह उज्ज्वल भक्तिसे कांधा झुँकाकर अपने पितासे बोला ४८ और मस्तकसे प्रणामकरके मनोरम कथा कहनेलगा कि हे महाभाग ! मैं तो नित्य प्लक्षद्वीपको जायाकरताहूँ ४९ व बड़े उद्यम से वहां से आहार लेआता हूँ उस प्लक्षद्वीप में अनेक देशहैं ५० व बहुत से पर्वत नदियां व वन तड़ागहैं ग्राम व पत्तन पुर नगरादि बहुतहैं व सब सुप्रजाओं से आनन्दयुक्तहैं ५१ व सदासुखसे सन्तुष्ट हर्षित लोग वहां बसते हैं सब दान पुण्य जप श्रद्धा भक्तिसे संयुक्त

रहते हैं ५२ उस प्लक्षद्वीप में सत्यधर्म्मपरायण पुण्यमति दिवोदास नाम बड़ाभारी राजा रहता है उस राजाके एक अपत्यरत्न अत्युत्तम कन्या ५३ गुणरूपशीलसे अतिमङ्गलवती है उसका दिव्यादेवीनाम है व रूपमें आजकल उसके तुल्य भूतलपर कोई स्त्री नहीं है ५४ उसको उसके पिताने एक समय देखा तो वह बनाय रूप व तारुण्यसे युक्त होने से सुन्दरमङ्गलवती होचुकीथी ५५ उसको पतिके योग्य देख कर राजादिवोदासजीने विचारा कि अब तो यह विवाहके बनाय योग्यहुई यह कन्या हम किसको दें व वरभी जो कोई महात्मा होता उसीको देते ५६ इसप्रकार चिन्तामें तत्पर होकर उन राजोत्तम ने रूप देशके राजामहात्मा चित्रसेनको रूपादिक में अपनी कन्या के समान देखकर उनको अपने यहां बुलाया उन महात्माने अपनी कन्या बुद्धिमान् चित्रसेनकोदी ५७।५८ परन्तु हे राजन् ! विवाहही के समय किसी कारणसे राजा चित्रसेन मृतक होगये ५९ तब धर्म्मात्माराजा दिवोदासनेबड़ी चिन्ताकी ब्राह्मणोंको बुलाकर उनसे पूँछा ६० कि इस हमारी कन्याके विवाहके समय में चित्रसेन स्वर्ग को चलेगये तो अब इस कन्याका कैसा कर्म्महोना चाहिये आपलोग हमसे कहें ६१ ब्राह्मण लोग बोले कि हे राजन् ! कन्याका विवाह तो वेदविधानसे होहीगया व पति इसका मृतक होगया है कुछ संग नहीं किया ६२ धर्म्मशास्त्र में तो यों दिखाई देताहै कि किसीमहामानसी व्यथा वा व्याधि से युक्तहो वा विवाह करके तुरन्त त्यागकरके पतिचलाजाय अथवा संन्यासी होजाय ६३ व केवल विवाहहीभरहुआ हो तो वह कन्या बिना विवाहिताही समझीजाती है इससेउसका फिर से विवाह करना चाहिये जबतक वह रजस्वला न हो तब तक उस को दूसरे पतिको देना चाहिये ६४ पिता फिर वेदविधि से उसका विवाहकरे इसमें सन्देह नहीं है हे राजन् ! धर्म्मशास्त्रविशारदों ने ऐसा कहा है ६५ इससे इसका भी विवाह फिर से करदेना चाहिये ब्राह्मणोंने यह राजासे कहा ब्राह्मणोंकी प्रेरणासे धर्मात्मा दिवोदास ने ६६ कन्या के विवाहके लिये फिर उद्यम किया व दिव्यादेवीको राजा ने फिरदिया ६७ उन महात्मा पुण्यकारी राजाका रूपसेन नाम

था जिनको फिर दिया जैसेही विवाह हुआ कि तुरन्त वह भी राजा मृतक होगया ६८ जब महादेवी दिव्यादेवी का वह भी पति मृतक होगया तो तब राजाने अन्य तीसरे पतिके संग विवाह करदिया वह भी विवाह होतेही मरा यहांतक कि विवाह होतेहीहोते इक्कीस पति उस दिव्यादेवी के मृतकहुये तब वह महाप्रतापी राजा दिवोदास महादुःखीहुआ ६९।७० व अपने मन्त्रियोंको बुलाकर उसने निश्चय किया सबका सम्मतहुआ कि अबकी स्वयंवर करके कन्या दीजाय इस बातको विचारकर ७१ प्लक्षद्वीपके सब राजालोग इकट्ठे किये गये व उनसे कहागया कि धर्म में तत्पर तुमलोग स्वयंवर के लिये बुलायेगयेहो ७२ उसका रूप व गुण सुनकर मृत्युके भेजेहुये सब राजालोग आये व उस स्त्रीको देखकर परस्पर संग्राम करनेलगे कि जिस में सब मूढ़ मारेगये एक भी न बचा ७३ इसप्रकार वहां के महात्मा क्षत्रियों का महानाश हुआ व दिव्यादेवी मारे दुःख से पीड़ित होकर वनमें जाकर ७४ रोदन करनेलगी यद्यपि बड़ी मनस्विनी थी हे तात ! मैंने यह अपूर्व समाचार देखा है ७५ सो हे तात ! इसका कारण हमसे विस्तार सहित कहो ७६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनोपाख्यानेपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

दो० छीयासी अध्याय महँ दिव्यादेवी केर ॥
पूर्व जन्म वृत्तान्त जहँ कीन पापके ढेर १

तब कुंजल बोला कि हे वत्स ! उस दिव्यादेवीका पूर्व जन्मका कर्म हम कहते हैं जो २ पूर्वजन्म में उसने कियाहै कहतेहुये हम से सुनो १ पापनाशिनी महापुण्य वाराणसी पुरी है उसमें महाप्राज्ञ सुवीरनामएकपुरुष रहताथा २ वह वैश्यकी जाति में उत्पन्नबहुत धन धान्यसे युक्तथा उसकी महाभाग्यवती भार्य्याका चित्रानाम था ३ वह कुलके आचारको छोड़कर अनाचारही करती थी अपने पति को तो नहीं मानती व स्वच्छंदवृत्ति से बर्तती थी ४ धर्म्म पुण्य से तो वि-

हीन रहती व पापकर्म्म किया करती अपने पतिको नित्य बकती झकती व गालियां दिया करती व बात में कलह किया करती क्यों कि उसे कलह करना बहुतही प्रिय था ५ व नित्य परायेही गृहमें रहाकरे व दिनराति परायेघरों में घूमाकरे व प्राणियों में पराये अवगुण सदा ढूँढ़ाकरे व महादुष्टा थी ६ साधु की निन्दा सदा किया करे व सदा अच्छेलोगों को बहुत अकारण हँसाकरे इसके अनाचार बड़े २ पाप जानकर उस महात्मा सुवीर ने निन्दा की ७ और उस दुष्टा व्यभिचारिणीका परित्याग करदिया एक अन्य वैश्यकी कन्या के संग अपना दूसरा विवाह करलिया व उसके संग वह अपने सब कार्य्य करनेलगा ८ सदा धर्म्म आचार पुण्य दान अपनी स्त्रीके संग वह धर्म्मात्मा करनेलगा सुवीर की निकाली हुई प्रचण्ड वह चित्रा अब और पृथ्वीपर जहां पावे भ्रमण कियाकरे ९ घूमते घूमते२ पापी दुष्ट पुरुषोंकी अत्यन्त संगति उससे हुई अब वह पापिनी उन लोगों की दूती बनकर १० साधुओंके घर भ्रष्ट करनेलगी पतिव्रता स्त्रियों को लोभमें डालकर उन पापियों के पास पहुँचाया करे ११ ऐसे विश्वास के वचन उन बेचारी छलछिद्ररहित सीधी पतिव्रताओं के पास कह पातिव्रत को भंग कराया करे साधुओं की परमभक्त स्त्रियों को भी ले ले कर और लोगों को सौंप दे १२ इसप्रकार उस महापापिनी चित्राने सैकड़ों गृह महात्माओंके भ्रष्ट करादिये व इसकेविशेष वह महादुष्टा सैकड़ों पति पुत्रों से विरोध कराती फिरे १३ व बहुतसे साधुओं के मन उनके समीप बारबार जा जा कर ऐसे बिगाड़े कि वे भी पाप करनेलगें व ऐसी ऐसी लड़ाइयां सज्जनों में भी पहुँचते२ वह दुष्टा करादे कि जिनका कुछ वारापार नहीं १४ इसप्रकार सैकड़ोंघर नष्ट भ्रष्ट करके व आप महामहाभ्रष्ट होकर वह दुराचारिणी मृतकहुई यमराज ने बहुतसे दण्डदेकर उसको अच्छीरीति से सिखलाया १५ यहांतक कि जितने महाघोर रौरवादि नरकथे सबों में क्रमसे एकमें से निकालकर दूसरे में डलवाया व नानाप्रकार के दण्ड उस दुष्टा चित्राको उन्होंने दिये १६ सो कुछ आश्चर्य्यकी बात नहीं है जो जैसा कर्म्म करताहै वह वैसा

भोगताही है उसने सैकड़ों गृह उजारडाले उसी पापके अनुसार उसको दण्ड भी दिये १७ व जैसे उसने पूर्व्वजन्म में सैकड़ों भले मानुषोंके घर उजाड़े थे वैसेही दुःखको भोगतीहै १८ विवाह का समय प्राप्तहोने में भाग्यहीन होने से पति मृत्यु को प्राप्त होजाता है १९ जैसे सैकड़ों घर उजाड़े तैसेही सैकड़ों वर मरे इक्कीस विवाहहुये २० जो तुमने हमसे दिव्यादेवीका वृत्तान्त पूँछाथा वह हमने तुमसे कहा बस यही उसके पूर्व्वजन्म का कर्म्म था जिस के कारण ऐसा हुआ २१ यह सुन उज्ज्वल शुक फिर अपने पितासे बोला कि तुमने पूर्व्वजन्मका कियाहुआ दिव्यादेवीका वृत्तान्त हम से कहा हमने जाना कि उसने गृहभंगनाम महाघोर पाप किया २२ परन्तु अब यह बताइये कि प्लक्षद्वीप के महाराज दिवोदासकी कन्या किस पुण्यसे महाकुलको प्राप्तहुई २३ हे तात ! यह हमको बड़ा सन्देहहै इस से हमसे कहो ऐसी महापापिनी राजाकी कन्या कैसे हुई २४ यह सुन कुंजल उसका पिता उससे बोला कि अब चित्राने जो पुण्यकियाथा वह भी सब तुमसे कहते हैं हे उज्ज्वल पुत्र ! सुनो जो पुण्य पूर्व्वजन्म में उसने किया था २५ घूमते घूमते एक महा-प्राज्ञ कोई सिद्ध संन्यासी वहां आगया था वह मैले कुचैले भी कुछ वस्त्र धारण नहीं किये था दण्ड कमण्डलुमात्र उसके पासथा २६ व एक लँगोटीमात्र धारणकिये हाथही उसके पात्र थे व नङ्गधडङ्ग ऐसा ही था दैवयोग से आते आते चित्राके घरके द्वारपर पहुँचा २७ वह मौनीथा व सब बालमुँड़ाये रहता अपने आत्मा व इन्द्रियों को भलीभांति जीते था आहार को उसने जीतलिया था इससे निरा-हारही था व सब वेदशास्त्रों के निश्चय अर्थ को जानता था २८ परन्तु कहीं दूरसे आया था इससे बहुतही थकगया था व घाम लगनेसे बहुत व्याकुल होगयाथा व हे पुत्र ! मारे मार्ग के श्रमसे अतिखिद्यमान था इससे बहुतही प्यासा था २९ चित्राके द्वारपर आकर छाया में खड़ाहोगया उस चित्राने भी देखा कि यह कोई महातमा है व बहुतही इस समय श्रमसे पीड़ित है ३० इससे उस महात्माकी उस चित्राने बड़ी सेवाकी अपने गृह से झट जलवायु

उसके पैर धोये व बैठने के लिये उत्तम आसन दिया ३१ व कहा कि हे तात ! इस कोमल आसनपर सुख से विराजिये व क्षुधा दूर करने के लिये उत्तम अन्न भोजन कीजिये ३२ और अपनी इच्छा से परितुष्ट शीतल जल पीजिये ऐसा कहकर बैठाकर देवताओं के समान तिसको पूजकर ३३ अपने हाथों से उसके पैर ऐसे मींजे कि उसका सब मार्ग का श्रम जातारहा पर और उस के कहने से उस महात्मा ने भोजन भी किया व जलपान भी किया ३४ इस प्रकार उसने तत्त्वार्थदर्शी सिद्धको सन्तुष्ट किया व सन्तुष्ट होकर वह सर्वधर्म्मात्मा कुछ काल तक उसके यहां ठहरारहा ३५ व जब उसकी इच्छा हुई तब उठकर वह महायोगी चलागया उस महात्मा महाभाग सिद्धके चलेजाने पर ३६ थोड़ेही दिनों में अपने कर्म्मके वश से वह चित्रा मृतकहुई व धर्म्मराज ने बड़े बड़े दण्डदेकर बड़े दुःख उसे दिये ३७ व वह चित्रा बड़े बड़े दुःख देनेवाले बहुत से नरकों में पड़ती रही व सहस्रयुगपर्यंत दुःख उसने भोगे ३८ भोग के अन्त में फिर उसने मनुष्य का जन्मपाया व जो कि पुण्यवानोंमें श्रेष्ठ उस महासिद्ध की पूजा उसने पूर्व्वजन्म में की थी ३९ उसी पुण्यका यह फल हुआ कि पुण्यवान् महाराजके घर में उत्पन्न हुई व क्षत्रियों के उत्तम कुलमें महाराज दिवोदासजी की कन्याहुई ४० व दिव्यादेवी ऐसा उसका श्रेष्ठ नाम हुआ उस ने सुन्दर अन्न व मीठा शीतल जल उस महात्मा को बड़ी प्रीति से दिया था ४१ उसी दान का महाफलोदय उस ने भोगा जोकि राजकुमारीहो नाना प्रकार के पदार्थ भोजन किये मीठे अन्न व शीतल जल सदा उसको खाने पीने को मिले ४२ व दिव्यभोग भोगती हुई अपने पिताके मन्दिर में विराजती रही व उसी सिद्धही के प्रसाद से राजकन्या भी हुई४३ व जो उसने गृहभङ्गरूप महापापकर्म्म किया था उसके प्रभावसे वह दिव्यादेवी सदा विधवाके दुःखभोगतीरही ४४ यह सब हमने दिव्या देवी का कियाहुआ कर्म्म तुमसे कहा और तुमसे क्या कहें जो पूँछनाहो पूँछो सब हम तुमसे कहेंगे ४५ तब उज्ज्वल अपने पितासे फिर बोला किअब हमसे यह कहिये किहमने उसको रोदन करतीहुई महादुःख

से पीड़ित वनमें देखा है सो अब वह बेचारी अकेली वनमें रोतीहुई उस महादुःख व शोक सन्तापसे कैसे छूटैगी ४६ । ४८ विष्णुजी राजा वेनसे कहनेलगे कि अपने पुत्रका उत्तम वचन सुन एकक्षणमात्र तक विचारांशकर महाबुद्धिमान् कुंजल फिर अपने पुत्रसे बोला ४९ कि हे महाभाग वत्स ! सुनो हम सत्यहीसत्य कहते हैं हम पापयोनि पक्षीहुये थे तब सब पूर्व्वजन्म के ज्ञान हमको भूलगये थे ५० कुछ भी ज्ञान नहीं रहगयाथा परन्तु इस वृक्षके नीचे बैठेहुये इन महात्मा भृगुवंशी च्यवनके प्रसंग से ५१ व नर्मदा नदी के प्रसाद से और श्रीविष्णु महाराजके प्रसाद से हमको फिर ज्ञान हो आया मोक्ष स्थान निवृत्त होगया ५२ अब उत्तम मोक्षमार्ग उपदेश को कहते हैं पाप से छूटकर वह ऐसी होगई जैसे अग्नि से सोना होजाता है ५३ अग्नि के संगसे अपने रूपके समान शुद्ध होजाताहै हे महाप्राज्ञ! भगवान् के ध्यान से शीघ्रही तिस महात्मा के ५४ जपकरने व होम और व्रत करने से पापियों के पाप नष्ट होजाते हैं व जैसे सिंहके भय से सदा हाथी मदको छोड़देता है ५५ वैसेही श्रीकृष्णभगवान् के नामों के उच्चारण करने से पाप नष्ट होजाते हैं व जैसे गरुड़के तेज से बड़े विकराल नाग विषहीन होजाते हैं ५६ वैसेही ब्रह्महत्यादिक पाप चक्रपाणि के नामके उच्चारणसे नष्टहोते हैं और किसी उपायसे नहीं मिटते ५७ इससे यह चित्रा जब पुण्य श्रीविष्णुभगवान्जी के सौ नाम जपेगी जोकि सब पापोंके नाशकहैं सो भी जो चित्तको स्थिर करके काम क्रोधसे रहित होकर ५८ व सब इन्द्रियों का संयम करके अपने शरीरको रक्षितकरके उनके ध्यानमें प्रतिष्ठित होकर एकीभूत हो व एकाग्रचित्तकरके ५९ जब जपेगी तो उसकी मुक्ति होजायगी और परमज्ञान प्राप्तहोगा इससे उसको चाहिये कि विष्णुजी में अपने चित्तको बनाय लगादे व योगयुक्त होकर विष्णुशतनाम जपे ६० इतना सुन फिर उज्ज्वल बोला कि हे तात ! प्रथम हमसे इस समय परमज्ञान कहो पीछे ध्यान व्रत व पुण्य श्रीविष्णुशतनाम कहो ६१ कुञ्जल बोला कि परमज्ञान कहते हैं जिसे किसी ने नहीं देखा इससे हे पुत्र ! मलवर्जित केवल मोक्ष सुनो ६२ सूतजी इसी कथा को

शौनकादिकों से कहने लगे कि हे महामते ! जैसे पवनरहित स्थान पर स्थित व वायु से वर्जित दीपक अच्छे प्रकार प्रज्वलित होकर सब अन्धकारको नष्ट करताहै ६३ ऐसेही सब दोषोंसे हीन आत्मा निराश्रय होताहै व निराशहोकर निर्मल रहताहै वह आत्मा न किसी का शत्रुहै न किसी का मित्र ६४ न शोक न हर्ष न लोभ न मत्सर अकेला विषाद हर्षों से सुख और दुःखों से छूटजाताहै ६५ व सब विषयों से इन्द्रियों को वह आत्मा अलग करदेता है तब वह केवल ज्ञान होजाताहै व मोक्षको प्राप्त करदेताहै ६६ जैसे अग्निके कर्म्मके प्रसङ्गसे दीपक तैलको तब अच्छेप्रकार जलाताहै जबकि हे राजेन्द्र ! बत्ती के आधारसे निस्सङ्ग पवनसे रहित होताहै ६७ व तभी तैलको जलाकर शुद्ध कज्जलको दीपक उगिलताहै तब हे महामते ! दीपके आगे एक काली रेखा दिखाई देनेलगती है ६८ व अपने तेजसे वह टेम तैलको अपने आप खींचती है इसी प्रकार इस शरीररूप मिट्टीके दीपक में कर्म्मही तैल होताहै उसेभी शुद्ध करनाचाहिये ६९ अर्थात् वह कर्म्म विषयों को प्रत्यक्ष करके कज्जलरूप बनाकर दिखादेता है व प्रज्वलितहो निर्म्मल होकर अपने आप प्रकाशित होने लगता है ७० वह शरीर क्लेशसंज्ञक क्रोध लोभादिक वायुरूपों से रहित होजाता है तब निश्चय व निस्स्पृहहो तेज आप इस शरीर में चमकने लगताहै ७१ व अपनेही स्थानपर टिकाहुआ अपने तेज से तीनोंलोकों को ऐसा ज्ञानी देखने लगता है केवल ज्ञानरूप यह हमने तुमसे कहा ७२ अब उन श्रीविष्णुभगवान्‌जी का ध्यान कहते हैं वह दो प्रकार का है एक तो केवल ज्ञानरूप ज्ञाननेत्र से दिखाई देताहै ७३ उसे परमार्थपरायण योगयुक्त महात्मालोग निद्रा रहित सबको देखतेहुये देखते हैं ७४ जिस के हाथ पांव नहीं हैं पर सब ओर जाता है स्थावर जंगम सब त्रैलोक्य को ग्रहण करता है ७५ नाक और मुखसे हीनहै पर सूंघता और खाता है जिसके कान नहीं हैं पर सब सुनता है सबका साक्षी संसार का पतिहै ७६ रूप नहीं है पर रूपमें संबद्ध है पंचवर्ग के वशमें प्राप्त सबलोक का जो प्राण और चराचरों से पूजित है ७७ जिह्वा नहीं है पर सब कहता

है वेद शास्त्रों के पीछे २ चलता है उस के त्वचा नहीं है पर स्पर्श उस का सब कोई करसक्ता है ७८ है वह विरक्त पर सब में आनन्दरूप होकर सदा टिका रहता है पर उसका कुछ आधार नहीं है कि जिसपर वह बैठताहो वह निर्जर ममत्वहीन न्यायी सगुण निर्म्मल अजन्मा ७९ अवश्य पर सबके वश्यात्मा सबकुछ देनेवाला व सब जाननेवालाहै उसका धाता इस संसारमें कोईभी नहीं क्योंकि वह व्यापक होने से सर्व्वमय है ८० इस प्रकार जो उस परमात्मा महात्मा को सर्व्वत्र देखताहै वह अमूर्त अमृतोपम परमस्थानको प्राप्तहोताहै ८१ अब उस महात्मा परमात्माका दूसरा ध्यान कहते हैं जोकि मूर्त्ताकार होने से साकारहै पर जितने साकार होते हैं सब आमययुक्त निराकार होते हैं ८२ व जिसकी वासना से सब अतुल ब्रह्माण्ड वासितहैं व इसीसे उसका वासुदेव नामहै ८३ उस के शरीरका रंग वर्षतेहुये मेघके समान श्यामहै व सूर्य्य के तेज से भी अधिक प्रकाशित रहताहै चतुर्भुजी उसकी मूर्त्तिहै और सब देवदेवों काभी ईश्वरहै ८४ उसके दक्षिण हस्त में सुवर्ण व रत्नों से विभूषित शंख रहताहै सूर्य बिम्ब के समान आकारवाले चक्र और कमल स्थितहैं ८५ व महाअसुरों के नाश करनेवाली कौमोदकी नाम गदा बायें हाथ में उसी महात्मा के विराजती है ८६ व अति सुगन्धित महापद्म दूसरे दहिने हाथ में रहताहै वे कमला के प्रिय करनेवाले श्रीविष्णुभगवान् सदा अपने आयुधों से शोभित हुआ करते हैं ८७ गलेमें शंखकेसमान तीनरेखाहैं व उसीकेसमान चढ़ा उताराहै मुख गोलहै व कमलपत्रके समान नेत्रहैं इसप्रकार रत्नोंके समान चमकते हुये दांतों से हृषीकेशजी प्रकाशित होतेहैं ८८ व उनके अधर विद्रुमके समान अरुणहैं हे पुत्रक! श्रीपुण्डरीकाक्षजी अतिमनोहर किरीटसे शोभित रहते हैं ८९ विशाल रूप व महाप्रकाशित व कौस्तुभमणि से केश जनार्दन भगवान् का रूप चमकता है ९० व सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित कुण्डल दोनों कानों में धारण किये शोभित होतेहैं व पुण्य श्रीवत्स के चिह्नसे श्रीहरि सदा राजित होतेहैं ९१ केयूर कंकण गजमुक्ताओं के हार से शोभित जो

मुक्ता नक्षत्रों के समान प्रकाशित होताहै उनसे युक्त दिव्य शरीरसे सदा शोभित होते हैं विजय और जीतनेवालों में श्रेष्ठ १२ श्रीगोविन्दजी पीताम्बर को धारण कियेरहते हैं रत्नों से जटित मुँदरियों से सब हाथोंकी अंगुलियां शोभित होती हैं १३ सब आयुधों से व दिव्य आभरणोंसे श्रीहरि सम्पूर्ण हैं ॥

चौ० वैनतेय आरूढ़ मुरारी। लोक विकर्त्ता जगदुपकारी ॥
त्रिभुवन नहिं त्यहि उपमा योगू। किमि पटतरै मूढ़ यह लोगू ॥
इमि अनन्य मनसों नर जोई। ध्यावत पावत सब सुख सोई ॥
छूटत सकल पापसों प्रानी। हरिपुर जात न मृषा बखानी ॥
यह जगदीश ध्यान हम गावा। उभय भेद सुत तुम्हैं सुनावा ॥
अब सबपाप निवारणकारी। श्रीहरि व्रत भाषत शुभधारी १४।१६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थवर्णनेषडशीतितमोऽध्यायः८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

दो० सत्तासी अध्याय महँ श्रीहरिकर शतनाम ॥
है सुस्तोत्र विचित्र अरु सो सब भांति ललाम १

कुञ्जल अपने पुत्रसे बोला कि अब श्रीहरिके सब व्रत कहते हैं जिनसे श्रीहरिकी आराधना कीजाती है जया विजया जयन्ती जोकि सब पापोंको नाशती है १ त्रिस्पृशा, वञ्जुली, तिलदग्धा, अपरा, अखण्डा, आचारकन्या, मनोरथा २ ये तो व्रतहुये व एकादशी के तो बहुत से भेद हैं व अशून्यशयनव्रत व जन्माष्टमी ये दोनों महाव्रतहैं ३ इन महापुण्यकारी व्रतोंके करनेसे ब्रह्महत्यादि पाप प्राणियोंके नष्ट होजाते हैं हम यह सत्य २ कहते हैं इसमें सन्देह नहीं है ४ कुञ्जल बोला कि उन महात्मा श्रीविष्णुजी का पापराशियों के नष्ट करनेवाला स्तोत्र अब तुमसे कहते हैं हे पुत्र ! उस स्तोत्रका विष्णुशतनाम नामहै व सब मनुष्योंको गतिदायकहै ५ उन कृष्णदेवका उत्तम शतनाम अब कहतेहैं हे पुत्रोत्तम! तिसकोसुनो ६ विष्णुशतनामके ऋषि व छन्द सब बताते हैं व हे महाभाग ! सब पातकों के शुद्ध करनेवाला देव

भी बताते हैं ७ विष्णुशतनामके ऋषि ब्रह्मा विष्णु देवता अनुष्टुप् छन्दहै ८ सब कामनाकी सिद्धि के लिये सब पापों के नाशके अर्थ में विनियोग है अस्यविष्णोःशतनामस्तोत्रस्य ब्रह्माऋषिर्विष्णुर्देवतानुष्टुप्छन्दस्सर्व्वकामनासिद्ध्यर्थंसर्व्वपापक्षयार्थे विनियोगः ६ नमाम्यहंहृषीकेशं केशवम्मधुसूदनम्॥ सूदनंसर्व्वदैत्यानान्नारायणमनामयम् १० जयन्तंविजयंकृष्णमनन्तंवामनन्ततः ॥ विष्णुंविश्वेश्वरम्पुण्यंविश्वाधारंसुरार्चितम् ११ अनघन्त्वघहन्तारन्नरसिंहंश्रियःप्रियम् ॥ श्रीपतिं श्रीधरं श्रीदं श्रीनिवासम्महोदयम् १२ श्रीरामम्माधवम्मोक्षं क्षमारूपञ्जनार्दनम् ॥ सर्व्वज्ञंसर्व्ववेत्तारंसर्व्वदंसर्व्वनायकम् १३ हरिम्मुरारिङ्गोविन्दम्पद्मनाभम्प्रजापतिम् ॥ आनन्दञ्ज्ञानसम्पन्नं ज्ञानदञ्ज्ञाननायकम् १४ अच्युतंसबलञ्चन्द्रञ्चक्रपाणिम्परावरम् ॥ युगाधारञ्जगद्योनिम्ब्रह्मरूपम्महेश्वरम् १५ मुकुन्दन्तंसुवैकुण्ठमेकरूपञ्जगत्पतिम् ॥ वासुदेवम्महात्मानम्ब्रह्मण्यम्ब्राह्मणप्रियम् १६ गोप्रियङ्गोहितंयज्ञं यज्ञाङ्गंयज्ञवर्द्धनम् ॥ यज्ञस्यापिसुभोक्तारं वेदवेदाङ्गपारगम् १७ वेदज्ञंवेदरूपन्तं विद्यावासंसुरेश्वरम् ॥ अव्यक्तन्तम्महाहंसंशङ्खपाणिम्पुरातनम् १८ पुरुषम्पुष्कराक्षन्तु वाराहन्धरणीधरम् ॥ प्रद्युम्नंकामपालंच व्यासंव्यालम्महेश्वरम् १९ सर्व्वसौख्यम्महासौख्यम्मोक्षंचपरमेश्वरम् ॥ योगरूपम्महाज्ञानंयोगिनां गतिदम्प्रियम् २० मुरारिंलोकपालंतं पद्महस्तंगदाधरम् ॥ गुहावासंसर्व्ववासम्पुण्यवासम्महाभुजम् २१ वृन्दानाथंबृहत्कायं पावनं पापनाशनम् ॥ गोपीनाथंगोपसखंगोपालंगोगणाश्रयम् २२ परात्मानंपराधीशंकपिलंकार्यमानुषम् ॥ नमामिनिश्चलंनित्यंमनोवाक्कायकर्मभिः २३ नमामिविजयंकृष्णन्नारायणमनामयम् ॥

अर्थात् हृषीकेश १ केशव २ मधुसूदन ३ सर्व्वदैत्यसूदन ४ नारायण ५ अनामय ६।१० जयन्त ७ विजय ८ कृष्ण ६ अनन्त १० वामन ११ विष्णु १२ विश्वेश्वर १३ पुण्य १४ विश्वाधार १५ सुरार्चित १६।११ अनघ १७ अघहन्ता १८ नरसिंह १९ श्रीप्रिय २० श्रीपति २१ श्रीधर २२ श्रीद २३ श्रीनिवास २४ महोदय २५।१२ श्रीराम २६ माधव २७ मोक्ष २८ क्षमारूप २९ जना-

र्द्दन ३० सर्वज्ञ ३१ सर्व्ववेत्ता ३२ सर्व्वद ३३ सर्व्वनायक ३४ । १३ हरि ३५ मुरारि ३६ गोविन्द ३७ पद्मनाभ ३८ प्रजापति ३९ आनन्द ४० ज्ञानसम्पन्न ४१ ज्ञानद ४२ ज्ञाननायक ४३ । १४ अच्युत ४४ सबल ४५ चन्द्र ४६ चक्रपाणि ४७ परावर ४८ युगाधार ४९ जगद्योनि ५० ब्रह्मरूप ५१ महेश्वर ५२ । १५ मुकुन्द ५३ वैकुण्ठ ५४ एकरूप ५५ जगत्पति ५६ वासुदेव ५७ महात्मा ५८ ब्रह्मण्य ५९ ब्राह्मणप्रिय ६० । १६ गोप्रिय ६१ गोहित ६२ यज्ञ ६३ यज्ञाङ्ग ६४ यज्ञवर्द्धन ६५ यज्ञभोक्ता ६६ वेदवेदाङ्गपारग ६७ । १७ वेदज्ञ ६८ वेदरूप ६९ विद्यावास ७० सुरेश्वर ७१ अव्यक्त ७२ महाहंस ७३ शंखपाणि ७४ पुरातन ७५ । १८ पुरुष ७६ पुष्कराक्ष ७७ वाराह ७८ धरणीधर ७९ प्रद्युम्न ८० कामपाल ८१ व्यास ८२ व्याल ८३ महेश्वर ८४ । १९ सर्व्वसौख्य ८५ महासौख्य ८६ मोक्ष ८७ परमेश्वर ८८ योगरूप ८९ महाज्ञान ९० योगिप्रिय ९१ । २० मुरारि ९२ लोकपाल ९३ पद्महस्त ९४ गदाधर ९५ गुहावास ९६ सर्व्ववास ९७ पुण्यावास ९८ महाभुज ९९ । २१ वृन्दानाथ १०० बृहत्काय १०१ पावन १०२ पापनाशन १०३ गोपीनाथ १०४ गोपसख १०५ गोपाल १०६ गोगणाश्रय १०७ । २२ परात्मा १०८ पराधीश १०९ कपिल ११० कार्यमानुष १११ निश्चल ११२ नित्य ११३ इनको मन काय कर्मों से नमस्कार करते हैं २३ इस शतनाम स्तोत्रसे जो कोई पुण्यकर्त्ता श्रीविष्णुजीकी स्थिर मनसे स्तुति करताहै वह सब लोक छोड़कर पुण्यसे पवित्रहोकर श्रीमधुसूदनजीके लोकको जाताहै २४ यह नामोंका सैकड़ा महापुण्य व सब पापोंका शोधक है जो कोई अनन्यमनसे व ध्यानलगाकर इसे जपता है २५ वह पुण्यात्मा नर नित्य गङ्गास्नान का फल पाता है इससे सुस्थिरहो एकाग्रमन से इसे जपै २६ जो मनुष्य इन्द्रियों को अपने वशमें करके नियम में स्थितहोकर इस स्तोत्र को तीनों कालोंमें जपता है उसको अश्वमेध यज्ञका फलहोता है इसमें कुछ सन्देह नहीं है २७ व जो कोई एकादशीका व्रत रहकर श्रीमाधवजी के आगे इस स्तोत्र को पढ़ताहुआ जागरण करता है तिसके पुण्य

को हम कहतेहैं २८ पुण्डरीक यज्ञके फलको मनुष्य पाताहै और तुलसी जीके समीपमें स्थितहोकर मनसे जो मनुष्य जपताहै २९ वह मनुष्य वर्षभरमें राजसूय यज्ञके फलको भोगता है शालग्रामकी मूर्त्ति और द्वारकाकी मूर्त्ति जहांहो ३० दोनोंके समीपमें सुखकी इच्छा करनेवाला जपकरै तो बहुत सुखको भोगकर अपने समेत कुलको तारदेताहै व जो कार्त्तिक मासमें प्रातःकाल स्नानकरके मधुसूदनजीकी पूजाकरके ३१ । ३२ यह स्तोत्रपढ़ताहै वह परमगतिपाता है ऐसेही जो माघ-स्नायी पुरुष भक्तिसे मधुसूदनजी की पूजाकरके ३३ हृषीकेशजीको ध्यानकर इसस्तोत्रकोपढ़ता है वा सुनताहै वह सुरापानादिक पापोंको त्यागकर हे पुत्र! श्रीजनार्द्दन भगवान्‌जीके परमपदको निर्विघ्न जाता है जो मनुष्य श्राद्धके समय ब्राह्मणोंके भोजन करतेहुये कालमें ३४ । ३५ यह शतनामस्तोत्र जपे तो इस सर्व्वपातकनाशक स्तोत्रके पाठ से उसकेपितर सन्तुष्टहों व तृप्तहोकर परमउत्कृष्टगतिको पावें ३६ ॥

चौ० ब्राह्मणपढ़ै वेदनिधि होई । क्षत्रिय पढ़ै लहै महि सोई ॥
वैश्य सदा जो जपत निरालस । धनपावत अरु मनभावतयस ३७
शूद्र पढ़ै जो नित चितलाई । यहँ सुखलहि पुनिद्विज ह्वैजाई ॥
जन्मान्तर महँ द्विजतनुपाई । वेदपाठ अधिकारि कहाई ३८
यासों सुखद मोक्षप्रद येहू । है सुस्तोत्र न तनिक सँदेहू ॥
जो यहिपढ़ै रमेश प्रसादा । सर्व्वसिद्धिलहिविगताविषादा ३९

इति श्रीपाद्मयेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डे भाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु तीर्थवर्णनेच्यवनचरित्रेसप्ताशीतितमोध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

दो० अट्ठासी अध्याय महँ उज्ज्वलसों सुनि कर्म्म ॥
राजसुता हरिभजनकरि हरिपुर गई अमर्म्म १

कुंजल अपने पुत्रसे बोला कि हे पुत्र ! श्रीविष्णुभगवान्‌जी के व्रत स्तोत्र महाज्ञान व ध्यान जो कि सब पापोंके नाशक हैं हमने तुमसेकहे १ सो ऐसेही जब वह इनचारोंको करेगी तो देवोंके दुर्लभ श्री विष्णुभगवान्‌के लोकको जायगी २ इससे यहांसे जाकर सुबाहुराजाकी

से कहो प्रथम तो अशून्यशयन नाम व्रतराजका विधान उससे कहो ३ फिर महाज्ञान ध्यानादि भी कहना जिस से उस महायशस्विनी राजकन्या का उद्धार हो तुमने पूँछा व हमने पुण्यद पापनाशन व्रत कहा ४ अब हे महाभाग ! जावो २ इतना कहकर वह चुप होरहा श्रीविष्णु भगवान् राजा वेनसे बोले कि जब उज्ज्वलके पिता कुंजल ने ऐसा उससे कहा ५ तो वह महामति धर्म्मात्मा अपने पिता माता के चरणों के प्रणाम करके हे राजन् ! वह उज्ज्वल तुरन्त प्लक्षद्वीप को गया ६ व फिर नाना धातुओं से समाकुल सब ओर कल्याणकारक उस पर्व्वतपर गया जो कि नानारत्नमय ऊंचे शिखरों से शोभित होरहाथा ७ व हे नृप ! नानाप्रकार के उज्ज्वल जलोंसे सम्पूर्ण झरनोंके प्रवाहोंसे उपशोभित होता था व उस पर्व्वतोत्तम पर स्वच्छ जलवाली बड़ी २ बहुतसी नदियां विद्यमान थीं ८ व किन्नर गन्धर्व्व वहां सुस्वर रागों से गानकरते अप्सराओं से समाकीर्ण व देवसमूहों से आकीर्ण था ९ सिद्ध चारणों से संयुक्त व मुनिवृन्दों से उपशोभित था व नानाप्रकार के पक्षियोंके नादोंसे सर्व्वत्र परिनादित था १० ऐसे पर्व्वत पर लघुपराक्रमी उज्ज्वल पहुँचकर देखा तो उस पर्व्वतपर बड़े सुस्वर से वह राजकन्या रोदन कररहीथी ११ व बार २ रोदन करतीहुई उससे वह यह वचन बोला कि हे कल्याणि ! तुम कौनहो व इस समय क्यों रोदन करतीहो १२ हे महाभागे ! तुम किसके आश्रितहो व तुम्हारा किसने अप्रिय कियाहै हमसे अपने दुःखका सब कारण अभी कहो १३ तब दिव्यादेवी बोली कि हे महाभाग ! इस समय में हमारेकर्म्मों का विपाक है विधवा होकर दुःखसे यहां स्थितहूं १४ हे महाभाग ! आप कौनहैं कृपाकरके हमारे ऊपर आप पीड़ित हैं पक्षीका रूपधारे उत्सवसमेत कहतेहो १५ इसप्रकार राजकन्याका कहाहुआ सब सुनकर वह उज्ज्वल पक्षी बोला कि हे महाभागे ! हमपक्षी हैं तुम्हारे ऊपर कृपासे पीड़ितहैं १६ हे भद्रे ! पक्षीका रूपधारे न हम सिद्धहैं न ज्ञानी हैं तुमको बड़े ऊँचेस्वरसे रोदनकरती हुई सुनकर व देखकर १७ अब तुमसे पूँछते हैं कि हे देवि ! अपने रोने का कारण हमसे कहो तब उसने अपने पिताके गृहके सब वृत्त कह

सुनाये १८ जिसप्रकार दुःख देनेवाले भये यथासंख्य सब कह सुनाये तो संक्षेपरीतिसे सुनकर उस महात्मा उज्ज्वलने १९ उस दुःखित राज-कन्या से कहा कि जैसे विवाहहीके समय तुम्हारे बहुतसे पति मृतक होगये हैं २० व तुम्हारे स्वयंवरके निमित्त बहुतसे क्षत्रिय नष्टहुये हैं यह सब तुम्हारा चेष्टित मैंने पितासे कहा है २१ क्योंकि हे सुलो-चने ! यह तुम्हारे अन्य जन्म का किया हुआ पापहै हमारे पिताने बड़ी कृपासे हम से सब कहा है २२ उसी दोषसे संपुष्ट तुमने ये सब दुःख भोगेहैं यह सब कारण पिता ने कहा है २३ पूर्व्व जन्मके कियेहुये कर्म्मोंका फल तुम भोगतीहो जब उज्ज्वलने ऐसा कहा तो सुनकर वह राजकन्या दिव्यादेवी २४ उस महात्मा पक्षी उज्ज्वलसे फिर बोली कि अब मैं आपके प्रणाम करतीहूं मुझ दीन के ऊपर आप कृपाकरें २५ अब मेरे पूर्व्व जन्मके पापकी निष्कृति आपकहैं व कृपाकरें व उसका जो कुछ पुण्यकारी हमारे पापों का शुद्ध करने वाला प्रायश्चित्तहो सोभी आप बतावें २६ जिससे पापों से मैं शुद्ध होजाऊं व पुण्यरूप होकर शुद्धलोक को चलीजाऊं हे महाभाग ! इन मेरे पापोंका प्रायश्चित्त दया करके मुझसे कहें २७ तब उज्ज्वल नाम पक्षी बोला कि हे महाभागे ! तुम्हारे अर्थ तो हमने अपने पिता से पूँछा था इससे हमारे पिताने बहुतही उत्तम प्रायश्चित्त बतायाहै २८ हे महाभागे ! सब पातकों के शोधक उसको तुम करो प्रथम हृषीकेश भगवान्‌का ध्यानकरो फिर उनका शतनामस्तोत्र जपो २९ फिर नित्यही ज्ञानमें पर होकर उनके उत्तम व्रतकरो पापनाशन पुण्यदायक अशून्यशयन व्रत करो ३० यह धर्मात्मा उज्ज्वल ने महात्मा श्रीविष्णु का सब ज्ञानप्रकाशक महाज्ञान ध्यान व्रत स्तोत्र उस राजकुमारी से कहा ३१ विष्णुजी राजावेन से बोले कि उससे सबको अच्छेप्रकार ग्रहण करके उसी निर्ज्जन वनमें सब द्वन्द्वों से नि-वृत्त होकर वह तप करने लगी ३२ प्रथम आहारको जीत कर निरा-धार होकर उसने अशून्यशयन नाम व्रत किया उसके करने में काम क्रोध से विहीनहुई व सब संयम अपनी इन्द्रियोंके करलिये ३३ हे महाराज! इन्द्रियोंके महामोहको तो उसने दूरकरदिया जब चौथावर्ष

प्राप्त हुआ तब श्रीभगवान् जनार्दनजी प्रसन्नहुये ३४ व उसको वर देनेकी इच्छा से वरनायक वरदाता प्रभु वहां आकर प्राप्तहुये और तिसको अपना रूप दिखाया सूतजी ३५ शौनकादिकों से बोले कि तब इन्द्रनीलमणि व सजलजलदश्याम शंख चक्र गदा धारण किये हुये सब भूषणोंकी शोभासे युक्त कमल हाथ में लिये श्रीविष्णुभगवान् के आगे ३६ हाथ जोड़ थर थर कांपतीहुई एक चरणके बल खड़ी होकर प्रणाम करती हुई गद्गद वचनों से मधुसूदनजी से बोली कि ३७ हे महाराज ! आपके दिव्य तेजसे मैं यहां स्थित नहीं होसक्ती इससे आप दिव्य रूप हुये कौन हैं कृपाकर हमारे आगे ३८ प्रसन्न होकर कहो यहां आपका क्या कार्य्य है महामते ! सब प्रसन्नहोकर कहो ३९ हे जगन्नाथ ! सो भी आप के रूप व नामको तो मैंजानती नहीं इंगितों से व तेजसे जानतीहूं कि आप देवहैं क्या आप ब्रह्माहैं वा विष्णुभगवान्हैं वा शङ्करजी हैं ऐसा कहकर प्रणाम करके पृथ्वी पर दण्डवत् पड़गई ४०।४१ तब प्रणाम करती हुई उस राजकन्या से श्रीजगन्नाथजी बोले कि हे शोभने ! तीनोंदेवोंमें कुछ अन्तर नहीं दिखाई देता ४२ जिसने ब्रह्माकी पूजाकी वा शङ्करकी पूजाकी उससे हम नित्य पूजित होजाते हैं इसमें विचारणा करनेकी आवश्यकता नहीं है ४३ ये दोनों देव हमसे भिन्न नहीं हैं नित्यही तीनोंरूपवालाहूं व जिन्हों ने हमारी पूजाकी उनसे वे दोनों भी पूजित होजाते हैं ४४ हम हृषीकेशदेवहैं तेरे ऊपर कृपा करनेको आये हैं इस पुण्यस्तोत्रसे व इस व्रतसे व तेरे नियम से हम बहुत प्रसन्नहुये ४५ क्योंकि इन के करने से तू अब निष्पाप होगई इससे हे शोभने ! जो चह हमसे वर मांगले दिव्यादेवी बोली कि हे हृषीकेश ! हे कृष्णदेव ! जयहो हे क्लेशापहारक ! ४६ आपके चरणारविन्द युगलके प्रणाम करतीहूं हे सुरेश्वर ! मेरा उद्धारकरो हे चक्रपाणे ! जो मुझको वर दियाचाहते हो तो मेरे ऊपर प्रसन्नहोवो ४७ व अपने दोनों चरणकमलकी भक्ति मुझको दीजिये हे पापरहित ! व हे जगन्नाथ ! मुझको रोगरहित मोक्षका मार्ग्ग दिखावो ४८ व हे वैकुण्ठ ! हे जनार्दन ! यदि सन्तुष्ट हुये हो तो दासभाव दीजिये श्रीभगवान् बोले कि हे महा-

भागे ! ऐसाहीहो तू सब पापों से छूटगई इससे योगियों को सदैव दुर्लभ परम वैष्णवलोकको अभी हमारे प्रसादसे चलीजा४९। ५० जब महात्मा माधवजीने ऐसा वचन कहा तो दिव्यादेवी दिव्यहोगई व सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित होनेलगी ५१ व सब मनुष्योंके देखतेही देखते सब आभरणों से भूषित होकर दिव्य माला पहिने व दिव्यहार धारणकिये ५२ दाह प्रलयसे वर्जित वैष्णवलोकको चलीगई ॥

चौ० पुनि उज्ज्वलपक्षी गृहआवा। समाचार निज पितहि सुनावा ॥
सो सुनि कुंजलभयहुसुखारी। हर्षितह्वैहरिनाम पुकारी ५३।५४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासी अध्याय ॥

दो० नावासीयें महँ कह्यो चारिहंस दुइ व्याध ॥
चारियुवति यकसँग हते तरीं न वे अपराध १

विष्णुजी राजावेन से बोले कि इसके पीछे कुंजल अपने पुत्र समुज्ज्वलसे बोला कि हे पुत्र ! अब कहो तुमने कहीं क्या अपूर्व्व देखाहै १ वह हमसे प्रीतिपूर्व्वक कहो हमारे इस समय सुननेकी इच्छाहै जब कुंजल ने अपने पुत्रको ऐसी आज्ञादी और आप चुप होरहा तो वह २ विनय से शिर झुकाकर अपने पितासे बोला कि देववृन्दों से युक्त यह जो हिमवान् पर्व्वतश्रेष्ठ है ३ हे पिताजी ! मैं अपने व आपके आहारके लिये उसी पर जाताहूं व वहां वह कौतुक देखताहूं जोकि अन्यत्र कभी देखा न सुनाथा ४ उसपर एक स्थानहै जो अनेक ऋषिगणों से व अप्सराओंसे शोभितहै व बहुत कौतुकों की शोभा से युक्त व नाना मांगल्य पदार्थों से युक्त है ५ व बहुत पुण्यफलों से युक्त व नानाप्रकारके वनोंसे शोभित होताहै व अनेक कौतुकों से निरन्तर परिभासित रहताहै मनका मोहनकर्त्ता है ६ हे तात ! वहां एक अपूर्व्व मानससर हमने देखा उसमें बहुत से हंस क्रीड़ा किया करते हैं पर एक दिन एक ऐसा हंस आया ७ वह

कृष्णरंगकाहै व उसी प्रकारके फिर तीन और भी हंस वहां आगये
बस वे चार तो नीले रंगके हैं अन्य सब श्वेतरंग के हंस जैसे कि
होते हैं वैसेहैं फिर रौद्राकार अतिभयंकररूपिणी ८।९ करालदंष्ट्रावाली
चारस्त्रियां कि जिनके शिर के बाल ऊपरको उठे थे व अतिभया-
नक लगते थे वहां आईं ये उस मानससर में पीछे को आईं १०
फिर जो कृष्णरंग के हंसथे उन्हों ने मानससर में स्नान किया व
उनमें की तीन स्त्रियों ने भी स्नान किया व और सब हंसों ने मा-
नसमें स्नान न किया ११ तब वे स्त्रियां उनको हँसीं जिनने कि स्नान
नहीं किया था व हँसनेके समय उन्होंने बड़े दारुण दांत निकालेथे
तब उस सरसे एक बड़े शरीरका हंस निकला १२ पीछे से तीन और
निकले उनको देख परस्पर विवाद करतेहुये अन्य हंस वहांसे आकाश
मार्ग्ग होकर उड़े १३ व उन्हीं के संग वे महाभयंकरी स्त्रियां भी उड़ीं
व जाकर सब पक्षी तो विंध्याचल के एक पुण्यकारी शिखरपरके एक
वृक्षकी छाया में १४ बैठे क्योंकि वे बेचारे दारुणदुःखों से जलेहुये थे
उनलोगों के देखतेही देखते वहां पर एक भिल्ल आनपहुँचा १५ वह
मृगों को पीड़ा देकर हाथमें धन्वा बाण लिये आकर सुखसे शिला
तल पर बैठगया १६ पीछे से अन्न व जललेकर उसकी भिल्ली वहां
आई व अपने पतिको देखनेलगी पर पूर्व्व के लक्षण उसके जाते
रहे थे १७ इससे उसने समझा कि यह मेरा पति नहीं है इसलिये
दूसरी ओर देखनेलगी व उसका पति तेजस्वी होगया था यह|नक कि
जैसे सूर्य्य आकाश में शोभितहोते हैं वैसेही वह शोभित होनेलगा
था १८ उसको अन्य पुरुष जानकर वहां से चलखड़ीहुई तब व्याधा
बोला कि हे प्रिये ! यहां आ तू हमको क्यों नहीं देखती है १९ अरे हम
तो क्षुधा से पीड़ित तुझकोही देखरहे हैं उसका वचन सुन वह उसकी
व्याधी शीघ्रही लौटी २० व अपने पति के पास पहुँचकर बहुत वि-
स्मित हुई कि यह महातेजस्वी कौन पुरुषहै क्या कोई देव तो नहीं
है जो मुझको बुलाता है २१ यह विचारकर वह व्याधी प्रकाशयुक्त
तेजवाले अपने पति उस भिल्लसे बोली कि हे वीर ! यहां तुमने क्या
कियाहै व तुम दिव्य लक्षण पुरुष कौन हो २२ सूतजी शौनकादिकों

से बोले कि जब व्याधी ने ऐसा कहा तो वह व्याधा अपनी प्रिया व्याधी से बोला कि हे कान्ते! हम तुम्हारे वल्लभहैं व तुम हमारी प्रियाहो २३ तुम क्यों हमको नहीं पहिचानती कैसे शंका हुईहै अरे हम क्षुधा से पीड़ित होनेसे जल और अन्नकी राह देखरहे हैं २४ व्याधी बोली कि राक्षस के समान काले वर्ण का लाललाल नेत्रवाला काले वस्त्र पहिने सब प्राणियोंको भय करनेवाला हमारा पति तो ऐसाथा २५ आप कौन हैं जो दिव्य देह धारण कियेहुये हैं पर हम भिल्ली को प्रिया कहकर बुलाते हैं यह हमको संशय उत्पन्नहुआ है इससे हमारे आगे सत्य २ कहो २६ तब वह व्याधा बोला कि हमारा यह कुलहै व यह नाम यह ग्राम ऐसी २ हम क्रीड़ा करते हैं व ये २ हमारे चिह्नहैं व पुत्र पुत्रीहैं जब सब बातें उसने अपनी स्त्री के आगे कहीं तो उसको विश्वासहुआ २७ तब वह व्याधी हर्षितमन हो अपने पतिसे बोली कि तुम्हारा शरीर ऐसा कैसे होगया कि अब तो तुम उजले वस्त्र धारण कियेहो २८ कहिये यह कैसे हुआ इस विषयमें हमको बड़ा आश्चर्य है तब पूँछती हुई अपनी प्राणप्रिया से वह व्याधा बोला कि २९ सूतजी शौनकादिकोंसे कहते हैं कि हे प्रिये! यद्यपि हम मृगों के मारनेवाले व्याधा हैं सो तो तुम जानतीहीहो पर इसका वृत्तांत कहते हैं सुनो नर्म्मदा नदीके उत्तर किनारे पर एक संगमहै ३० सो हम घामसे बहुत व्याकुल होकर वहां गये ३१ उस संगम में स्नान किया व जलपान किया व अच्छे प्रकार वहां बैठे उठे फिर वहांसे चले आये तबसे हमारा शरीर इसप्रकार का तेजस्वी होगयाहै ३२ व तभीसे ये औरभी शुक्लवस्त्र हमारे पास आगये हैं व यह वही नीलका रँगाहुआ चोलनहै उसमें स्नानकरतेही उजला होगयाहै व इसीसे प्रथमके सब लक्षण बदल जानेही से कुल और स्थानसे तुमने हमको चीन्ह नहीं पाया ३३ तब वह व्याधी अपने पतिको लक्षित कर पुण्यका संभव जानकर अपने भर्त्ता से बोली कि वह संगम हम को भी दिखावो ३४ तो हमभी भोजन व पीने के पदार्त्थ पीछेसे तुमको देंगी जब व्याधा से उसकी प्रियाने ऐसा कहा तो वह अतिवेगसे चला ३५ व जाकर अपनीप्राण-

प्रिया को वह पापनाशकर्त्ता संगम दिखादिया व उसीके पीछे २ वे जो कालेरंग के हंस वहां आकर बैठेथे वे भी उस नर्म्मदाके संगम परको उड़े चले गये व उन सबों के देखतेही देखते और मेरे देखते हुये३६।३७प्रथम उसके पतिने स्नान किया फिर उसव्याधीने स्नान किया स्नान करतेही दोनों दिव्य कान्ति समेत दिव्य देह धारे ३८ दिव्य वस्त्र अनुलेपन धारण कियेहुयेहोगये दिव्यमाला और वस्त्रधारे दिव्य चन्दन अरगजादि लगाये ३९ व दोनों वैष्णव विमान पर चढ़के मुनियों व गन्धर्व्वों से पूजितहो वैष्णवलोकको चले गये व वहांके रहने वाले वैष्णव लोग उन दोनों की पूजा करते भये ४० व और दोनों स्त्री पुरुष महात्माओं की स्तुति की और स्वर्गमार्ग से चले गये और पक्षी शब्द करते भये यह हमने देखा ४१ व जो वे चारों कालेपक्षी उनके पीछे गयेथे उनकी ऐसी दशा देख उन्होंनेभी उसमें स्नान किया उनकेभी दिव्य देहहोगये क्योंकि वह तीर्थ पापनाशक तो थाही इससे दिव्यदेह धारण किये हुये जल पीकर बाहर निकले ४२।४३ फिर जो चार वे कालेरंगकी महाविकरालरूपवाली स्त्रियांथीं उन्होंनेभी वहांजाकर उसी संगममें स्नान किया परन्तु वे स्त्रियां स्नानमात्रही से उसी समय मरीं बड़ी दूरतक उन के रोदन का शब्द सुनाई देताथा वे यमलोकको गईं हे तात! यह भी चरित हमने वहांदेखा तब वहांसे वे हंस उड़े व अपने स्थानको चलेगये ४४।४५हे तात!यह हमने प्रत्यक्ष देखा सो आपसे कहा सो वे काले पखनों की बड़ी देहवाली धार्तराष्ट्र वे स्त्रियां कौनथीं ४६ हे तात! प्रसन्नता से उनके वृत्तांत हमसे कहो व जो मानससरके भीतर से वे कालेकौवों के रंगके हंस निकले थे वे कौन हैं व फिर उनकी कौन दशा हुई होगी हमसे कहो वे प्रथम कृष्णताको कैसे प्राप्त हुये व फिर उस संगममें स्नान करने से शुद्ध कैसे होगये ४७।४८ व वे स्त्रियां स्नान करतेही मृतक होगईं ॥

चौ० यह मम हृदय घोरसन्देहा। भयहु तात जो भाष्यहुँ येहा ॥
ज्ञानविचक्षण हौ तुम ताता। यासों नाशहु याहि प्रभाता १
ह्वै प्रसन्न मम ऊपर आजू। करहु तात अब कृपा समाजू ॥

इमिनिजजनकहिकह्योसमुज्ज्वल । पुनिकीन्होविरामगतसबछल४६।५१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थवर्णनेच्यवनचरित्रेएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बे अध्याय ॥

दो० नब्बे के महँ इन्द्रसब तीर्थन काहिं बुलाय ॥
पापनाशकी शक्ति तिन पूँछी है यह गाय १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि इसप्रकार सब अपने पुत्र समुज्ज्वल के वचन सुन धर्म्मात्मा वह कुञ्जल अपने सुत से बोला कि १ हे तात ! स्थिरमन करके सुनो हम पापनाशन सब सन्देह विध्वंस करनेवाला चरित्र कहते हैं २ वह इन्द्रलोक का वृत्तान्त है जहां के समाचार प्रायः कौतुकयुक्तही होते हैं एकसमय उन महात्मा इन्द्रदेवकी सभा में ३ नारदमुनिसत्तम सहस्राक्षदेव पुरन्दर के देखने की इच्छा से अकस्मात् आगये सूर्य्य के तेज के समान प्रकाशित उन मुनिसत्तम को आयेहुये ४ देखकर इन्द्र बड़ेहर्ष से अपने आसन परसे उठकर उनको अर्घ्य पाद्य दिये ५ व फिर दोनोंहाथ जोड़कर प्रणाम किया व पुण्यकारी कोमल आसनमें उन द्विजोत्तम को बैठाकर ६ अतिप्रणतहो परमश्रद्धा से उनसे पूँछा कि इससमय आपका आगमन कहां से हुआ व उसका जो कारणहो इससमय हम से कहें ७ जब देवराज ने ऐसा कहा तो महामुनि नारदजी उन से बोले कि इससमय पृथ्वी परसे आपके देखने की इच्छासे यहां आये हैं ८ वहां पर नाना २ देशों में नानाप्रकारके पुण्यतीर्थों में श्रद्धासे स्नानकिया व देवताओं पितरोंका तर्प्पण किया और अनेक तीर्थ देखे ९ जो तुमने पूँछा सब हमने अपने आगमन का वृत्तान्त कहा तब इन्द्र बोले कि हे महामुने ! आपने तो अनेक पुण्यक्षेत्र व तीर्थ देखे हैं १० भला ऐसा भी कोई तीर्थ व सुपुण्य क्षेत्र देखाहै कि जिसमें स्नान करने से ब्राह्मणका मारनेवाला ब्रह्महत्या से छूट जाय व मदिरा पान करनेवाला पापसे छूटे व गऊ का मारनेवाला सुवर्ण का चोर उस पापसे छूटे ११ व हे महाभाग ! स्वामी के साथ

द्रोह करने वाला व स्त्रीवध करनेवाला कैसे सुखी हो नारदजी बोले कि हे सुरेश्वर ! गयादिक जितने तीर्थ पृथ्वी पर हैं १२ उनकी विशेषता हम पाप नाशनेकी नहीं जानते हमारे जान तो सब पुण्यहैं व सब दिव्यहैं व सब पापोंके नाशनेके कारण समानहैं १३ हे पुरन्दर! हम तो सब तीर्थों को ऐसाही जानते हैं अविशेष व विशेष इससमयहमनहीं जानते हैं १४ अबतुम उन तीर्थों को गतिकादाता विश्वास जैसे बने करलो इसप्रकार महात्मा नारदजी के वचन सुनकर । १५ इन्द्रने पृथ्वी परके सब तीर्थों को स्वर्ग्ग को बुलाया जितने तीर्थ भूतल परथे सबके सब मूर्त्तिधारण करके इन्द्रकी आज्ञा से तुरन्त वहां पहुँचे १६ व सब हाथ जोड़े व भूषण वस्त्रादि दिव्य धारण किये तेजसे युक्त मूर्त्तियों को धारणकिये १७ कोई तीर्थ स्त्री का स्वरूप धारणकिये व कोई पुरुषका स्वरूप बनाये सुवर्ण व चन्दन के समान प्रकाशित दिव्यरूप सब किये १८ व कोई कोई तीर्थ मोती के समान झलकतेहुये रूप धारण किये कोई २ तपायेहुये सुवर्ण के रङ्गके रूप बनाये कोई २ उसी सुवर्ण के रङ्गमें कुछ अधिक अरुणता के रूप किये १९ कोई २ शुक्ल रूपों से भासित कोई पीले रूपसे कोई कमलके रङ्गके मूर्त्ति धारणकिये २० सूर्य के तेज के समान प्रकाशित बिजली के तेजके समान और कोई अग्निके सदृश सभा में प्रकाशित हुये २१ सब गहनों की शोभासे युक्त शोभितहुये हार कङ्कण केयरमाला चन्दन २२ धारे सुगन्ध लगाये और कमण्डलु हाथमें लिये सभामें आये २३।२४ गङ्गा, नर्मदा, पुण्या, चन्द्रभागा, सरस्वती, देविका, बिंबिका, कुब्जा, कुञ्जला, मञ्जुला, भानुमती, पुण्या, पारा, सुघर्घरा, शोणा, सिन्धु, सौवीरा, कावेरी, कपिला २५ कुमुदा, वेदनदी, पुण्या, सुपुण्या, महेश्वरी, चर्म्मण्वती, लोपा, सुकौशिकी २६ सुहंसी, हंसपादा, हंसवेगा, मनोरथा, सुरुथा, स्वारुणा, वेणा, भद्रवेणा, सुपद्मिनी २७ नाहली, सुमरी, दूसरी पुण्या, पुलिन्दिका, हेमा, मनोरथा, दिव्या, चन्द्रिका, वेदसंक्रमा २८ ज्वालाहुताशिनी, स्वाहा, काला, कपिञ्जला, स्वधा, सुकला, लिङ्गा, गम्भीरा, भीमवाहिनी २९ वद्रीची, वीरवाहा, लक्षहोमा, अघापहा, पाराशरी,

हेमगर्भा, सुभद्रा, वसुपुत्रिका ३० हे नरेश्वर ! इतनी नदियां मूर्त्तिधारण किये हुये आईं सब सब आभरणों की शोभा से युक्त व कुम्भ हाथों में लिये अच्छेप्रकार पूजित आईं ३१ प्रयाग, पुष्कर अर्घदीर्घ, मनोरथा, महापुण्या, वाराणसी ब्रह्महत्याव्यपोहिनी ३२ द्वारावती, प्रभास, अवन्ती, नैमिषारण्य, चण्डक, महारत्न, महेश्वर, कलेश्वर ३३ कालिंजर, ब्रह्मक्षेत्र, माथुर, मानवाहक, माया, कांती तथा अन्य विविधप्रकार के तीर्थ ३४ अरसठतीर्थ व सौकड़ोर नदियां गोदावरी आदि सब इन्द्रकी आज्ञासे आईं ३५ और भी द्वीप२ के सब तीर्थ जो कि बड़े थे सब मूर्त्तिधारण किये हुये आये व सब इन्द्रके आदेशकारी होकर वहां पहुँचे व सबों ने देवताओं के ईश इन्द्रजी के प्रणामकिया ३६। ३७ सूतजी बोले कि सबों ने देवराज से कहा कि हे देवदेव ! हमसे कहिये तुमने क्यों हम लोगों को बुलायाहै ३८ हे देवराज ! हम लोगों से सब कारणकहो तुम्हारे नमस्कार है इसप्रकार सब तीर्थों के वचन सुनकर देवराज उन सबों से बोले ३९ कि हे महातीर्थो ! तुम लोगों में ब्रह्महत्या नाशने में कौन समर्थ है व गोवधनाम महापाप के नाशने में कौन व स्त्रीवध महाघोर पापके विदारण करने में कौन समर्थ है ४० स्वामिद्रोह से उत्पन्न महापाप के व मदिरापान नाम दारुणपापके विनाशने में कौन सुवर्ण चोराने से उत्पन्न व गुरुनिन्दा से समुद्भूत पाप के विदारणमें कौन समर्थ है ४१ व गर्भपात कराने के दोषको कौन समर्थ नाशकरसक्ता है राजा से द्रोह करने से जो महापीड़ा देनेवाला महा पाप होताहै उसके नाशने में कौन समर्थ है ४२ व मित्रद्रोह करने से जो महापाप होताहै व विश्वासघात करने से जो घोरपाप होता है देवमूर्त्ति तोड़ने में जो महापाप होताहै व कहीं का कोई चिह्न बिगाड़डालने में जो पाप होताहै ४३ व ब्राह्मणों की जीविका नाश करने में जो पाप होतेहैं व गउओं के चरने की भूमिके जोतने बोनेमें जो महापाप होताहै किसी के गृहके जलादेने में व देवमन्दिर जला देने में जो दोष होते हैं ४४ व सोलह महापाप व गुरु आदिकी अगम्य स्त्रियों के संग गमनकरने से जो पाप होते हैं स्वामी के त्याग-

ने से जो महापाप होता है व रणमें स्वामी को छोड़कर भागआने से जो अघ होताहै ४५ इन पापोंको कौन समर्थ उत्तम तीर्थ नाश करसक्ता है आपलोगों के मध्यमें कौन ऐसा समर्त्थ है कि इन पापों के करनेवाले प्रायश्चित्त न करें व उनके पापोंको नष्टकरसके ४६ सो सब इन देवताओं के देखते २ व नारदजी के समक्षमें अच्छे प्रकार विचारि करके व संचिन्तन करके आपलोग कहें ४७ जब महात्मा देवराजने ऐसा शुभवचन कहा तो सब तीर्त्थलोग तीर्थराज से सलाह कर बोले ४८ कि हे देवराज ! सुनो हमलोग कहेंगे तुम्हारे नमस्कारहै जितने सब तीर्त्थहैं सबसाधारण रीतिसे सामान्य पापोंको मिटासक्तेहैं ४९ परन्तु ब्रह्महत्या गोहत्याआदि महापापों को नहीं मिटासक्ते उन महाघोर पापों के नाशने में ५० प्रयाग पुष्करादि अर्घतीर्थ समर्त्थ हैं व महापुण्या वाराणसीपुरी उन पापों के विनाशने में समर्त्थ है ५१ बस महापातकों के नाशनेमें प्रयाग पुष्कर वाराणसी अर्घतीर्थ येही चार तीर्त्थ समर्त्थ हैं व उपपातकों के नाशकरने के लिये चार अमित पराक्रमी हैं ५२ पुष्करादिक महाबली हैं इनको ब्रह्माजीने प्रतिष्ठित कियाहै तीर्थोंका ऐसा वचन सुनकर देवराजने बड़े हर्षसे युक्तहोकर उनतीर्त्थोंकी स्तुतिकी ५३ । ५४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानवे अध्याय ॥

दो० इक्यानवें महँ पातकी चारि भये यकठौर ॥
एक दूसरे की कथा पूँछी कही न और १

कुञ्जल अपने पुत्र से बोला कि इसप्रकार तीर्थों से पूँछकर उन को तो बिदा किया जब गौतमजी की स्त्री अगम्या अहल्या के साथ इन्द्रने भोगकिया तो उनको ब्रह्महत्या लगी १ उस महापातक के करनेसे इन्द्रको सब देवताओं व ब्राह्मणों ने छोड़दिया तब निरालम्बवनिराश्रय हो इन्द्र तप करनेलगे तब सब देवता यक्ष किन्नरव ऋषिलोगों ने तप करने के पीछे इन्द्रकी पूजाकेलिये उनका अभिषेक

किया ३ हे पुत्र ! सब देवादि मालवदेशको इन्द्र को लेगये व वहां कुम्भों में जल भर२कर उनसे इन्द्रको स्नान कराया ४ फिर उनको लेजाकर वाराणसीपुरी में स्नान कराया फिर प्रयाग तीर्थराज में स्नान कराया फिर अर्घतीर्थ में स्नानकराया ५ तदनन्तर उन महात्माको पुष्कर तीर्थ में स्नापित कराया इस स्नान कराने में सब ब्रह्मादि देवता व मुनियों के वृन्द संग थे सब स्नान कराते थे यक्ष, नाग, सर्प, गन्धर्व, किन्नर, वेदमन्त्रों से सब इन्द्र को स्नान कराते फिरते रहे ६ । ७ मुनिलोग भी नानाप्रकारके पापनाशन मन्त्र पढ़ते थे जब इसप्रकार इनचार तीर्थोंमें स्नान कराया तो महात्मा महाभाग इन्द्र शुद्धहुये ८ व अगम्यागमन से जो ब्रह्महत्या हुईथी वह जातीरही व अगम्यागमनका दोष नष्टहोगया ब्रह्महत्याका नाम भी न रहगया जो कि गौतमकीस्त्री के सङ्ग भोगकरने से हुईथी ९ उस महापुण्यसे ऐसे शुद्ध हुये कि प्रथमही के समान फिर प्रकाशित होने लगे तब अति प्रसन्न होकर इन्द्रने उन तीर्थों को वरदिया १० कि आप लोग तीर्थों के राजाहैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है हमारे प्रसादसे पवित्रहौ जिससे तुम लोगों ने हमारा बड़ाभारी पाप नष्ट करदियाहै इससे अब और भी तुम लोगों का अधिक माहात्म्यहोगा व कैसाही पापी तुम लोगों में आकर स्नान करेगा तो शुद्ध होजायगा इस प्रकार उन तीर्थोंको वरदेकर फिर मालवदेश को इन्द्रने वर दिया ११ । १२ कि जिससे तुम ने हमारे शरीरका बहुतसा श्रमदायक मल हरलिया इससे तुम अन्न पान धन धान्य से अलंकृतहोगे १३ हमारे प्रसाद से ऐसा होगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है तुममें सदा सुकाल बनारहेगा इससे तुम पुण्यवान् देश कहाओगे १४ इस प्रकारसे मालवदेश को वर देकर देवोंके राजा इन्द्र मालव देशसे सब देवताओं के सङ्ग अपने स्थान इन्द्रपुरी को चले गये चेत्र सब तीर्थ मालवदेश भी अपने स्थानोंको गये सूतजी शौनकादिकों से बोले कि तबसे फिर वाराणसीपुरी प्रयाग व अर्घतीर्थ और पुष्कर इन चारों तीर्थों ने उत्तम राजपदवी पाई १७ कुञ्जल बोला कि मालव देशमें एक विदुरनाम क्षत्रिय था उस ने मोहके प्रसङ्ग से पूर्वसमय

में एक ब्राह्मण को मारडाला १८ तब वह शिखासूत्ररहितहो तिलक से वर्जित भीखमांगने लगा व कहता फिरे कि ब्रह्महत्या किये हुये मदिरा पियेहुये मुझको भिक्षान्न देतेजाओ इस प्रकार प्रत्येक गृह के द्वारे द्वारे कहता हुआ वह क्षत्रिय घूमाकरे १९ । २० व ऐसेही वह घूमते घूमते सब तीर्थों मेंभी होआया परन्तु हे द्विजसत्तम ! उस की ब्रह्महत्या न मिटी २१ तब एक दिन एक वृक्षकी छायामें बैठकर जलते हुये चित्तसे वह विदुरनाम क्षत्रिय पापी बड़े दुःख व शोकसे युक्तहुआ २२ उन्हीं दिनों में एक चन्द्रशर्म्मानाम ब्राह्मण महामोह से पीड़ित होकर मगधदेशमें बसता था उस दुष्ट ने मोहसे अपने गुरुको मारडाला था २३ इससे उसके स्वजन वर्ग्गोंने व बन्धुवर्ग्गों ने उस दुरात्मा को छोड़ दिया था वहभी वहां आया जहां कि वह विदुरनाम क्षत्रिय बैठाथा २४ वहभी शिखासूत्र से हीन होनेके कारण ब्राह्मण के चिह्नों से रहितथा उसे देखप्रथम विदुरदुरात्माने उस ब्राह्मण से पूँछा २५ कि आप कौनहैं जो ऐसे दुर्भाग्ययुक्त दुःखित मन दिखाई देते हैं विप्र के चिह्नों से विहीनहैं सो आप क्यों पृथ्वी पर घूमते हैं २६ जब विदुर क्षत्रिय ने ऐसा कहा तो ब्राह्मणों में अधम उस चन्द्रशर्म्मा ने जैसा पूर्व्वकाल में किया था सब कहा २७ व जो महाघोरपाप गुरुके गृहमें बसते हुये ने किया था वहभी कहा जो कि महामोह में आजाने से क्रोधसे आकुलित होकर किया था २८ कि मैंने क्रोध के वशीभूत होकर अपने गुरुजी को मारडालाहै उसी पाप से इस समय जलताहूं यह कहा चन्द्रशर्म्माने अपना सब वृत्तान्त इस रीति से निवेदित किया व उससे पूँछा २९ कि आप कौनहैं जो दुःखित होकर वृक्षकी छायामें बैठेहुये हैं तब विदुरनेभी अपना सब वृत्तान्त संक्षेपसे कहा ३० उसी समय में मार्ग्ग के श्रम से दुःखित कोई तीसरा ब्राह्मण वहां आया उसका वेदशर्म्मा तो नाम था व वह भी बहुत पाप कियेथा ३१ तब उससे प्रथम के आये हुये उन दोनों ने पूँछा कि आप कौनहैं जो बहुत दुःखित दिखाई देते हैं तुम पृथ्वी पर क्यों भ्रमण करतेहो अपना भाव हम लोगों से कहो ३२ तब वेदशर्म्मा ने अपना किया हुआ सब कर्म्म दोनों

से कहा जो कि उस ने अगम्यागमन किया था ३३ व इस से सब अन्य लोग और स्वजन बान्धवों ने उस को धिक्कार दिया था कि जिस पापसे लिप्त होकर पृथ्वीपर घूमताथा ३४ फिर जिसने मदिरा पान कर लिया था एक वंजुल नाम बनियां वहां आया जोकि विशेषकरगोघातीथा उससे उन तीनोंने पूर्व्वरीत्यनुसार पूँछा कि तुम कौन हो ३५ तब उसने भी जो पातक पूर्व्व समय में किया था सब कहा व वहभी उसी स्थानपर बैठगया ३६ इसप्रकार वहांपर चार महापापी इकट्ठे होगये किसीने किसी के भोजन आच्छादन के लिये कुछ न पूँछा परस्पर वार्ता करते भये न एक आसनपर बैठते न एक बिछौने पर सोते ३७। ३८ इसप्रकारके दुःख युक्त वे चारो नानातीर्थों में संगही संग गये ॥

चौ० पर तिनके अतिघोरसुपापा । नहिं छूटे तनु तापित तापा ॥
नहिं सामर्थ्य तीर्थ महँ काऊ । जो करतो तिन पाप नशाऊ ॥
विदुरादिक समस्त ते पापी । कालिंजर महँ गये सतापी ॥
जोगीश्वरचहुँदिशिविख्याता।तब अघहरणसुपुण्यप्रदाता ३९।४०॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबे अध्याय ॥

दो० बानबे के महँ सकल वे काशीआदि अन्हाय ॥
कुञ्जारे वासङ्ग महँ भे विशुद्ध यह गाय १

कुंजल अपने पुत्रसे बोला कि कालंजरमें आकर वे सब महा पापोंसे जलतेहुये व विचेतन दुःखितहो हाहाकार करते हुये रहने लगे १ वहां एक महायशस्वी कोई सिद्ध आया उसने उन सबोंसे पूँछा कि तुमलोग किस दुःखमें दुःखितहो २ उन सबोंने अपना वृत्तान्त उस महाप्राज्ञ सिद्धसे कहा भी व वह सब ज्ञानों में विशारद भी था इससे उसने कृपाकर यह कहा कि ३ जब सोमवती अमावास्याहो तो प्रयाग वा पुष्कर अर्घतीर्थ अथवा वाराणसीपुरी में ४

तुम सबलोग पहुँचो उनमें भी काशी वा प्रयागमें क्योंकि सोमवती में गंगाका अधिक माहात्म्यहै व इन दोनों तीर्त्थों में गंगाहैं जैसेही स्नान करोगे तुरन्त मुक्त होजाओगे ५ पाप सब छूटजायँगे व शरीर निर्म्मल होजायँगे इसमें कुछभी सन्देह नहींहै जब उस सिद्धने ऐसा उपदेश किया तो सबोंने हाथ जोड़कर उसके प्रणाम किया ६ व सबके सब कालंजरसे शीघ्रही चलखड़ेहुये व पापोंसे पीड़ित वे लोग जाकर वाराणसी में पहुँचे व वहां स्नान किया ७ फिर प्रयाग को गये वहांसे पुष्करको गये ऐसेही अर्घतीर्थमें भी घूमते घामते स्नान करते रहे एक समय सोमवारको अमावास्या पड़ी तब महापुरी काशीजीमें ८ विदुर चन्द्रशर्म्मा वेदशर्म्मा व मदिरा पीनेवाला पापी वह बंजुल वैश्यचारो पहुँचे ९ चारो महादुर्द्धर्ष पापीथे परन्तु उससोमवतीके पर्व्वमें गंगाजीमें सबोंने स्नानकिया व स्नानमात्रहीसे सबके सब गोवध आदिक पापोंसे छूटगये १० क्योंकि वे ब्रह्महत्या गुरुहत्या सुरापानादिक पापों से युक्तथे व उनके ये सब पाप नष्ट होगये सो क्यों न वे पापोंसे छूटजाते ११ क्योंकि पापोंसे लिप्त लोगों के अघ मिटानेही के लिये पुष्कर अर्घ्यतीर्थ व पापनाशक प्रयाग तीर्त्थराज पृथ्वीपर हैं व ऐसेही वाराणसीपुरी भी सबके पापही नाशने के लियेहैं १२ व वे चार कृष्णवर्ण के हंस होकर आकाश में उड़नेलगे व फिर उन्होंने हंसके शरीर में घूम २ कर सब तीर्थोंमें स्नानकिया १३ परन्तु सब तीर्त्थोंके जलोंमें स्नान करने से उनकी कृष्णता नहीं मिटी तब फिर भी भूतलपर जितने सुन्दर २ पुण्यतीर्त्थ हैं उनमें उन्होंने क्रमसे स्नानकिया १४ हेमहाराज ! जिन२ तीर्त्थोंमें उन्होंने स्नान किया वे सब हंस रूपसे अत्यन्त दुःखित तीर्थ जातेभये १५ पातक रूपिणी स्त्रियां चारों ओर घूमती भईं अड़सठ अच्छे तीर्थों में हंस रूपसे घूमती भईं १६ और तिन महातीर्थों के साथ फिर पापसे आकुल मन होकर मानससर में आये १७ परन्तु हे महाराज ! वहां स्नान करने से भी पाप न छूटा तब लज्जित होकर मानससर तीर्त्थ हंसका रूप धरके १८ वहां से उड़गया हे पुत्र ! जिसको कि तुमने बड़ा भारी एक हंस देखने को बताया था इसके पीछे वे सब काले हंसों

के रूप के पापी नर्म्मदाके उत्तर तीरपरके उस संगमपरगये जोकि पापों का नाशक है १९ सो नर्म्मदा व कुब्जा के उस संगम में स्नानमात्र से सब पापों से सबकेसब निर्म्मुक्त होगये क्योंकि वह संगम सब देवताओं व सिद्धों से निषेवित रहता है २० वे अपनी कृष्णताको छोड़कर श्वेतताको प्राप्तहोगये व जिस जिस तीर्थ में वे हंसजाते थे सबमें स्नानकरते थे २१ परन्तु जो उन्हींके रंगकी काली वे चारस्त्रियां थीं उनके संग जाती तो थीं पर स्नान किसी तीर्थमें नहीं करती थीं देखकर हँसतीथीं इसी से पापनहींगया तो-यालत्त से कुब्जा के श्रेष्ठपाप २२ भस्महोगये तब वे स्त्रियां मृतक होगईं ब्रह्महत्या गुरुहत्या सुरापान अगम्यागमनके पाप २३ नर्म्म-दा और कुब्जा के नाशकिये भस्महोगये और जो नदी के किनारे मृतकहुईं वेभी हतहुईं २४ अड़सठ अच्छे तीर्थों में हंसरूप से हंस के साथ आये तिसको तुम मानससर जानो २५ चारकाले हंस थे उनके नाम मुझसे सुनो प्रयाग पुष्कर उत्तम अर्घतीर्थ २६ चौथी काशीजी ये चारों पापके नाशनेवाले हैं ब्रह्महत्यासे युक्त चारों घूमतेथे २७ ये तीर्थ दुःखसे तीर्थोंमें घूमें परन्तु उनके घूमते हुए भी घोर-पाप न गये २८ कुब्जा के संगम में शुद्ध और निश्चय पाप से छूट गये पुण्य सब तीर्थों में यह संमत है २९ उन में तब से प्रयाग तो सब तीर्थों के राजा होगये क्योंकि जब इन्द्र ने बुलाया था तब वे तीर्थराज न थे सब तीर्थों में घूमते घूमते कुब्जा व न-र्म्मदाके संगम में स्नान करनेही से तीर्थराजहुये क्योंकि अन्य तीर्थ तभीतक गर्ज्जते हैं जबतक कि नर्म्मदा नहीं देखते ३० जोकि ब्रह्महत्यादि पापोंके नाशने के लिये प्रतिष्ठित है ऐसेही कपिला व नर्म्मदाका संगमभी सब पापोंके नाशने में समर्थ है ३१ मेघनाद के संयोग में और उरु संगम में भी सबपाप नाशते हैं महापुण्य-कारी महामन्त्र और सब ओर दुर्ल्लभ नर्म्मदा है ३२ ॐकारेश्वर में भृगुक्षेत्र में व नर्म्मदाकुब्जा के संगम में भी मनुष्यों को नर्मदा दुःख से प्राप्तहै व माहिष्मतीनाम पुरी के पास सुरोत्तमतीर्थ है ३३ एक ऐसाही वहां त्रिटंकासंगम नाम तीर्थ है व श्रीकण्ठतीर्थ संगमेश्वर

तीर्थ भी हैं बहुत कौन कहे जहां जहां नर्म्मदा नदी है सब कहीं दुर्लभही है व सब पुण्यों से समाकुल है ३४ ॥

चौ० महापुण्य तीर्थनकी माला । करत बिनाश पापके जाला ॥
उभयमध्य जहँ तहँ नर कोई । स्नानकरत बिन पातक होई ॥
जहँ नर्म्मदा अपरनदि सङ्गम । होय कहूँ सुन्दर हृदयङ्गम ॥
तहां सनान करे जो कोई । अश्वमेध फल पावत सोई ॥
यह तुमसन सुत हम सब भावा । जो तुम पूँछ्यहु करि अभिलाषा ॥
इमिकहिहुसरेसुतसोंकुञ्जल । पुनितिसरेसोंबोल्यहुगतछल ३५।३७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबे अध्याय ॥

दो० तीरानबयें महँ कह्यो यकवन में सरएक ॥
तहँदुइपुनिदुइमिथभखे मांसनकीन बिबेक १

कुञ्जल ने अपने तीसरे पुत्र बिज्वलसे कहा कि पुत्र पृथ्वीमेंघूमते तुमने क्या अपूर्व आश्चर्य देखा है वह हमसे कहो यहांसे आहारके अर्थ जिस देशको जातेहो व वहां जो कुछ हे पुत्र ! शुभ वा अशुभ जो आश्चर्यकी बात देखते सुनते हो हमसेकहो १।२ तब बिज्वलनाम उसका तीसरापुत्र बोला कि मेरुपर्व्वतपर एक आनन्द नाम का वनहै वह दिव्य वृक्षों से समाकीर्ण व फल पुष्पमय सदा रहताहै ३ देववृन्दों से समाकीर्ण व मुनि सिद्धों से युक्त रहता है सुरूपवती अप्सराओं से व गन्धर्व्व किन्नर सर्पों से भी उपशोभित रहता है ४ वापी कूप तड़ागों से व नदियों से व झरनों से भूषित है व वह दिव्य आनन्दकानन पुण्यात्मा नानाप्रकारके भावों से प्रकाशितहै ५ व किरोड़ों हंस कुन्दइन्दु के समान उज्ज्वल विमानों से समाकुल रहताहै गन्धर्व्वादिकों के सुन्दर गानेके कोलाहलोंसे व वेदध्वनियों से शब्दित रहता है ६ व भ्रमरों के निनादों से सर्व्वत्र निनादित रहताहै व चम्पा चन्दन आम के फूल अनेक वृक्षों से अतिप्रकाशित लगताहै७ ऐसा वह आनन्दवन उत्तमहै कि नानाजाति के पक्षी उसमें

अनेकप्रकारकी बोली बोलाकरतेहैं उनके कोलाहलसे युक्तहै ८ इस प्रकारसे शोभित आनन्दवन हमने सुशोभित देखा उसमें एक अति विमल सरहै व सागरके समान शोभित होताहै ९ व कमलों की शुभ सुगन्धि से युक्त पुण्यजलों से पूर्णहै नाना प्रकारके जलजन्तुओं से व हंस कारण्डवादि जलपक्षियों से युक्त है १० इस प्रकार का सुन्दरसर उसवनके मध्य में विराजमान है वह देव गन्धर्वों से शोभित व मुनिसमूहों से अलंकृत रहता है ११ किन्नर नाग चारण व गन्धर्वों से अत्यन्त शोभित है हे तात ! वहांपर मैंने आश्चर्य देखा है जो कहने को समर्थ नहींहूं १२ सुन्दरविमान और कलशों से उपशोभितहै छत्रदण्ड और पताकाओं से प्रकाशितरहता है १३ सब भोगसे युक्तहै किन्नर गानकरते हैं गन्धर्व अप्सराओंसे शोभायमानहै १४ वहांपर एक महासिद्ध बैठाहै जिसकी स्तुति सब तत्त्ववेदी ऋषिलोग करते हैं रूपमें तो ऐसा अद्वितीय है कि मर्त्यलोक में कोई दूसरा वासी कहीं दिखाईही नहीं देता १५ वह सब आभरणों की शोभासे शोभित व दिव्यमाला धारण करनेसे अलंकृतहै व महारत्नों से बनीहुई एक माला उसकी छातीपर विराजती है १६ उसी सरके समीपमें स्थित एक श्रेष्ठमुखवाली स्त्रीदेखा कि जिसके सुवर्णकी गुटिकाओं के बीच २ में बड़ी २ मोतियों से १७ गुहीहुई माला गले में विराजती है कङ्कणादि अन्य सब भूषणों सेभी भूषितहै दिव्यवस्त्र धारणकिये व चन्दनादि सुगन्धों से अनुलेपित है वह सिद्ध तो बैठाहीथा उसीप्रकार का एक और महादिव्य पुरुष विमानपर चढ़ा हुआ वहां आया जिसकी स्तुति नानाप्रकारके लोग करते थे व गीतें गाय गाय सुनाते १८ उसके संग रतिके समान रूपवती एक स्त्रीभी उसी विमानपर चढ़ीहुई आईथी जिसके पयोधर व पश्चाद्भाग अति पीनथे व सब भूषणों की शोभा से उसके अङ्ग शोभित थे इस लिये सब प्रकारसे वहभी उसी के आकारकी थी १९ उन दोनों को हमने विमान पर चढ़े हुये आते देखा दोनों रूप लावण्य माधुर्य्यादि गुणों से व सब शोभा से युक्तथे २० विमान पर से उतरकर दोनों उस तड़ाग के तटपर आये व हे तात ! उन महात्मा कमलके समान

नयनवाले स्त्री पुरुषों ने उस सरमें स्नान किया २१ फिर दोनों स्त्री पुरुषों ने शस्त्रलेकर परस्पर काटकर एक दूसरे का थोड़ा थोड़ा मांस भक्षण किया जब ये दोनों खाचुके तो उसीप्रकार के दो और आये २२ प्रातःकाल में कमल के समान नेत्रवाले स्त्री पुरुषों ने रूप में वैसेही शव देखे २३ उसमें पुरुष देवों के समान था जैसा रूप उस की भार्य्याका था वैसाही जो इस दूसरे के सङ्ग स्त्री आई उसका था तो इन दोनों मेंकी जो स्त्री थी शस्त्र से काट काट अपने पति का मांस खानेलगी उसका मांस खाते खाते वह स्त्री बनाय रक्त से भीग गई व वैसेही फिर उस पुरुषने उस स्त्री का मांस भक्षण किया २४।२६ क्षुधासे पीड्यमान होकर उन दोनों नेभी परस्पर मांस भक्षण किया व इतना इतना मांस दोनों ने खाया जिससे दोनों तृप्त होगये २७ व उस सरका जलपीकर फिर दोनों सुखी होगये कुछ काल वहां स्थित रहकर फिर विमान पर चढ़कर चले गये २८ फिर हे तात ! दूसरे दिन हमने एक और आश्चर्य्य देखा कि रूपसौभाग्यसम्पन्न सुन्दर लक्षणवाली दो स्त्रियां वहां आईं २९ तो उन्हों ने भी मांस खाया व दोनों मांस भक्षणके पीछे अति दारुण शब्द करती हुईं हँसीं ३० फिर नित्यही दोनों अपने मांसोंको खावें स्नानादिककर हमारे देखतेही मांस भक्षण करें ३१ फिर एक दिन हे तात ! भयानक आकार युक्त दो स्त्रियां और आईं इनके बड़े विकराल डाढ़ थे व अतिविभीषणरूपथे ३२ येदोनों आतेही कहने लगीं कि हमको देवो हमको देवो ऐसा बार २ कहने लगीं वनमें बसतेहुये हमने ऐसे चरित्र देखे ३३ कि नित्य वे दोनों आते हैं व एक दूसरेका मांस काट २ कर भक्षण करते हैं व फिर उन दोनों के शरीर पीछेसे पूर्ण होजातेहैं नित्यही उतर कर वे दोनों और और भी हमारे देखतेहुये पूर्वोक्त सदृश चेष्टा करते हैं ३४।३५ सो तो आश्चर्य्य हमने देखाहै उसका कारण आपसे पूँछतेहैं कि यह सब सन्देहही के करानेवाला वृत्तान्तहै प्रसन्न चित्तसे इसके वृत्त हमसे आपकहें ३६।३७ किजो पुरुष स्त्री समेत विमानपर चढ़कर वहां आया व दिव्यरूप धारण कियेहुये था वह कमलनयन कौनहै ३८ व वह स्त्री कौनहै जो मांस

भक्षण करती है व वे पुरुष स्त्री कौन हैं जो कि परस्पर एकदूसरे का मांस भक्षण करते ३९ व उनको इस प्रकार मांस खातेहुये देखकर जो दो स्त्रियां हँसती थीं हे तात! वे कौन हैं हमसे कहो व जो दो स्त्रियां और आईं और देवो २ कहती थीं वे कौनहैं ४० उन दोनों महाभयङ्करी स्त्रियों केभी वृत्त बताओ हे तात! हेसुव्रत! यह हमारा संशय तुम काटो ४१ हे महाराज! ऐसा कहकर वह विज्वल नाम पक्षी फिर चुपहोरहा इसप्रकार तीसरे पुत्र विज्वलसे पूंछे गये ४२ कुञ्जलजी च्यवनजी के सुनते २ सब वृत्तान्त कहते भये ४३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेत्रिनवतितमोऽध्यायः

चौरानबे अध्याय ॥

दो० चौरनवें महँ निजतनय सों कुंजल कहयेह ॥
दानसुसाहु महीपसों जैमिनि जिमिसहनेह १

यह सुनकर कुञ्जल शुक अपने पुत्र विज्वलसे बोला कि हेसुत! सुनो हम सब कारण कहेंगे जिससे वे दोनों वैसे अपने मांसभक्षी हुये १ सर्व्वत्र शुभाशुभ कर्म्मही कारण होतेहैं इसमें कुछभी संशय नहीं है हे पुत्र! पुण्यकर्म से पुरुष सुख भोगताहै २ व पापयुक्त कर्म्मसे दुःख भोगता है व सूक्ष्म कार्य्य के विचारमें शास्त्रहीकी द्वारा ज्ञान होताहै यों साधारण रीति से नहीं ३ मुनिलोग शास्त्रकी द्वारा अपने २ धर्म्म को फिर २ विचार कर करते हैं इससे मनुष्यभी निपुण मनसे जानकर तब कर्म्म करनेका प्रारम्भ करते हैं ४ जिसमें उस कर्म्मकी पूर्णता व फल अच्छे प्रकारहों देखो इन्धन कैसाही शुष्कहो पर जब अग्निमें डालो तो उसमें सब ओर ज्वालाओंसे ५ जल निकलने लगताहै जिससे वह गीला होजाताहै ऐसेही हे वत्स! जैसा अन्न जल मनुष्य खाता पीताहै वैसाही उसका रूप उस परिपक्व अन्न के रसके कारण होताहै इसमें कुछ संशय नहींहै जो जैसा करताहै वैसा भोगताहै ६ । ७ कर्म्मही प्रधान है जो वर्षारूपसे वर्त्तमानहै जैसा बीज किसान खेतमें बोताहै ८ हे तात! वैसाही फल भी भोगताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है ऐसेही जैसा कर्म्म किया

जाताहै वैसाही फलभी भोगने पड़ता है ९ विना कर्म्म किये कोई क्षणभरभी नहीं रहसक्ता इससे कर्म्महीके वशीभूत पुरुष रहताहै संसारमें कर्म को भागी और कर्म के सम्बन्धी बांधव हमलोगहैं १० कर्म पुरुष को सुख दुःख में प्रेरित करतेहैं सोना वा चांदी जैसा रूप पाते हैं ११ तैसेही पूर्वकर्म के वशके पीछे चलताहुआ प्राणी भी पाताहै आयु, कर्म्म, धन, विद्या व मरण ये पांच जब प्राणी गर्भही में रहताहै तभी नियत करदिये जाते हैं जैसे मिट्टी का पिण्ड हाथमें लेकर कुम्हार जैसा पात्र चाहताहै उससे बनालेता है १२ । १३ ऐसेही जैसा कर्म्म प्राणी करते हैं उसी के अनुसार देवता मनुष्य पशुत्व पक्षित्व आदि मिलते हैं १४ व सर्प्पादि योनि को स्थावर भाव को भी प्राणी अपनेही कर्म्मों से जाते हैं बस वही वह भोगताहै जिसने जो कियाहै १५ बस अपने आप कियाहुआ सुख व अपनेही आप किया दुःख प्राणी भोगताहै गर्भ की शय्या को ग्रहणकर पूर्व देहिक भोगताहै १६ पूर्व्वदेहके कियेहुए कर्म्म के फलको छोड़कर प्राणी और कुछभी नहीं भोगसक्ता जैसा जिसने किया है वही भोगेगा पूर्व्वजन्म के कियेहुये कर्म्म के विपरीत कोई भी पुरुष बलसे वा बुद्धि से नहीं करसक्ता १७ सब अपनेही किये हुये सुख वा दुःख लोग भोगते हैं हेतुओं से व कारणों से जो अन्यथा करने लगते हैं वे आप अहङ्कार से बाधित होजाते हैं १८ जैसे सहस्रों धेनुओं के बीचमें खड़ीहुई अपनी माताहीको बछड़ा चीन्हकर पहुँचताहै ऐसेही शुभ वा अशुभ कर्म्म करनेवाले को पहिचानकर उसी के पीछे लगताहै १९ विना भोग किये कर्म्म का नाश नहीं होसक्ता इससे पूर्व्व जन्मके कियेहुये कर्म्म बन्धन से बँधाहुआ पुरुष उसके विपरीत कैसे करसक्ता है २० शीघ्रताके साथ दौड़ते हुये के साथ ही साथ कर्म्मभी दौड़ताहै व उसके बैठजानेपर कर्म्मभी बैठजाताहै जैसा कि उसने पूर्व्वमें कियाहै २१ खड़े होजाने पर खड़ा होजाता है व चलतेहुयेके पीछे २ चलने लगता है कर्म्म करते हुये के साथ कर्म्म करनेलगताहै जैसे छाया सब अनुकरण करती है वैसेही कर्म्म भी २२ जैसे छाया व घाम का नित्य परस्पर सम्बन्धहै ऐसेही कर्म्म

का सम्बन्ध इस शरीरसे होताहै उपसर्ग विषयहैं उपसर्ग वृद्धावस्था-
दि हैं २३ ये सब प्रथम कर्म्मसे पीड़ित पुरुषको पीछे पीड़ित करते
हैं जिसको जहां दुःख वा सुख भोगनाहै २४ उसे वहां कर्म्म बलसे
रस्सी से बांधकर जैसे तैसे पहुँचादेताहै ऐसा प्राणियों के सुखदुःखकी
प्राप्तिके उपायकहे हैं २५ बस इसके अन्यथा नहीं होसक्ता सोतेजागते
चलते फिरते कर्म्महीके अनुसार सब होताहै जो भाग्य के विपरीत
किया चाहता है वह आप मारा जाताहै २६ जो वस्तु नष्ट होने पर
नहीं होती उसकी रक्षा शस्त्र, विष, दुर्ग्गम स्थानों से भी होतीहै जैसे
कि पृथ्वी में वृक्ष गुल्म तृणादिकोंके बीजोंकी रक्षारहतीहै २७ ऐसेही
शरीरमें कर्म्म रहते हैं समयपाकर उत्पन्न होजाते हैं जैसे तैलके क्षय
होने पर दीपक बुझजाता है २८ ऐसेही कर्म्मके क्षयहोने से शरीर
नष्ट होजाता है व कर्म्महीं क्षयहोनेपर तत्त्वज्ञानीलोग मृत्युकाहोना
भी बताते हैं २९ व मृत्युके कारण विविधप्रकार के रोगोंको बताते
हैं इससे मृत्युआदि के होने में कर्महीकी प्रधानता है ३० जो कर्म्म
पूर्व्वजन्म में किया जाताहै वह इसजन्म में भोगाजाता है हे तात !
जो प्रश्न तुमने हमसे इससमय पूछाहै ३१ इस अर्त्थ में हमने यह
तुमसे कहा कि वे दोनों अपने पूर्व्वजन्म के कर्म्मभोगते हैं जिनका
दारुण कर्म्म तुमने आनन्दवन में देखा है ३२ अब उन दोनोंके पू-
र्व्वजन्म के कर्म्म कहते हैं हे वत्स ! चित्तलगाकर सुनो हे तात !
कर्म्मभूमि यही है अन्य भूमियां भोगके अर्त्थ हैं ३३ जोकि नागा-
दिकों के लोकहैं उनमें जाकर यहां के कियेहुये पुण्यदानादिकों के
फल प्राणी वहां भोगते हैं कुछ कर्म्म नहीं करते सूतजी शौनकादि-
कों से बोले कि चोलदेश में महाप्राज्ञ रूपवान् गुणवान् व धीर
एकसुबाहु नाम राजाहुआ उसके समान पृथ्वीपर दूसरा और कोई
राजा नहीं है वह राजा विष्णुजी का महाभक्त महाप्राज्ञ वैष्णवों का
आतिथ्य करनेवाला ३४ । ३५ व मन वचन कर्म्म तीनोंप्रकार के
कर्म्मोंसे श्रीमधुसूदनजी का ध्यान करता था व अश्वमेधादिक सब
यज्ञ उस राजसत्तम ने किये थे ३६ उस राजाके पुरोहित जैमिनि
नाम ब्राह्मणथे उन्होंने राजा को बुलाकर यह वचन कहा ३७ कि

हे राजन्! सुन्दर २ दान देतेरहो जिनसे सुख भोगने को मिले दाता लोकों को तरता है व फिर मृतक होकर जन्म नहीं लेता ३८ व दान से सुख पाता है और निरन्तर यशभी पाता है व दानही से मनुष्योंके बीचमें अतुलकीर्त्ति होतीहै३९ वजबतक दाताकी कीर्त्ति मर्त्यलोक में बनीरहती है तबतक कर्त्ता स्वर्ग में स्थित रहता है इसीसे दान दुष्कर होता है देने में नहीं समर्थ होता है ४० इससे सब प्रयत्नों से मनुष्यों को सदा दान देना चाहिये यह सुन राजा सुबाहु बोला कि हे द्विजोत्तम ! दान व तप दोनों में कौन कर्म्म सुदुष्करहै ४१ व किसका अधिक फलहै सोहमसे कहो तब जैमिनि बोले कि पृथ्वीपर दानकरना थोड़ाभी अतिदुष्करतर होताहै क्योंकि हे राजन्! यह बात प्रत्यक्ष लोकमें रहनेवालों में दिखाई देती है कि अपने प्रिय प्राणोंको छोड़कर लोभसे मोहित लोग धनके अर्थ ४२। ४३ समुद्र में व अग्निमें भी पैठ जातेहैं व अपनी जीविकाके लोभ से बहुतलोग नीचवृत्ति करलेते हैं ४४ व इसी प्रकार बहुतसे ऐसे कर्म्म करते हैं जिसमें बहुतक्लेशवाली अनेकजीवों की हिंसा होतीहै व बहुत लोग खेती करते हैं ऐसे २ दुःखोंसे इकट्ठा कियाहुआ धन प्राणोंसे भी अधिक प्रियतर होताहै ४५ इससे हे पुरुषव्याघ्र ! धन देना बड़ा दुष्कर कर्म्म है पर न्यायसे इकट्ठा कियाहुआ धन ४६ सोभी श्रद्धापूर्वक देना बहुतही कठिनतरहै सोभी सत्पात्र को देना उससे भी अधिक दुष्कर है क्योंकि धर्म्मसुता श्रद्धादेवी पवित्र करतीहै व विश्वभर को तारती है ४७ सबको उत्पन्न करती है व संसारसागर से तारती है व सब पदार्त्थ श्रद्धा करनेवाले को देती है महात्मालोग श्रद्धाही से धर्म्मका साधन करते हैं धनोंसे नहीं ४८ क्योंकि मुनियों के पास एक कौड़ीका भी धन नहीं था पर श्रद्धा धर्म्मके बलसे स्वर्ग को चलेगये हे नृपोत्तम! नानाप्रकार के भेदोंसे दान अनेक हैं ४९ परन्तु अन्नदान से पर और कोई भी दान प्राणियों को गति देनेवाला नहीं है इससे जलसहित अन्नदेना चाहिये ५० मधुर पुण्यकारी वचनसे युक्त अन्नसे अधिक कोई दान न यहीं के लिये उपयोगी है न परलोकही के लिये ५१ न तारनेही के लिये

अन्य कोई दान है न हित व सुख सम्वृद्धि के लिये जो निर्म्मल चित्तसे व श्रद्धासे विधिपूर्व्वक सत्पात्र को अन्न दियाजाता है ५२ उस एक अन्नदेने का फल पुरुष भोगता है भोजन करने के समय उन कवलोंमें से एक कवल देदेना चाहिये व मूठीभर पसर भर जितनाही होसके अन्नदेनाचाहै इसमें सन्देहनहीं है ५३ उससे वह एक कवल वा मूठी पसरभर अन्न अक्षय होजाता है व [illegible] होता है व जो न पसरभर होसके न मूठीभर होसके ५४ तो किसी अमावास्या संक्रान्ति पूर्णमासी आदि पर्व्वमें श्रद्धापूर्व्वक एकब्राह्मण को भक्तिसे भोजन कराद तो हे राजन्! एकभी प्रधान अन्नके दान से जन्मान्तरमें नित्य अन्नको भोजन करताहै ५५।५६ क्योंकि पूर्व्व जन्ममें भक्तिसे जिसने थोड़ाभी अन्नदान किया है जन्मान्तरको पाकर नित्य वह प्राणी यथेष्ट अन्नभोजन करता है ५७ व जो कोई नित्य ब्राह्मणोंको अन्नदान करते हैं वे अन्न देनेवाले मनुष्य जन्मान्तर में मीठे स्वादुयुक्त अन्न भोजन करनेको पाते हैं ५८ ॥

चौ० वेदपारगामी ऋषिलोगा। अन्नदान कहँ कहैं सुभोगा॥
प्राणरूप है अन्न न शंका। अस्तोऽक्षय यह अन्न अनंका॥
अन्नदान जिन कीन कदापी। प्राणदान तिन कीन अमापी॥
यासों अन्नदान भूपाला। करहु यत्नसों होहु कृपाला॥
इमिसुनि जैमिनि वचनलहीना। पुनि पूँछ्यहु मुनिसों कुलदीपा॥
ज्ञानीपरमसहात्मामुनिसों। भलीभांतिनृपनिजचितगुनिसों ५९।६१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पञ्चानबे अध्याय ॥

दो० पञ्चानबयें महँ कहे स्वर्ग चिह्न अरु दान ॥
जिन्हें सुनत नरनरनको होत [illegible] ज्ञान १

राजा सुबाहु बोले कि हे द्विजसत्तम! अब तुमसे स्वर्ग के गुण वर्णनकरो तब ये सब दान स्वाभाविक हम करेंगे १ जैमिनि बोले कि स्वर्ग में विविधप्रकारके दिव्य गन्धर्वादिक सब उद्यान रम्य [illegible]

काम पूरणकरनेवाले व पुण्यदायकहैं २ सब कालों में फरनेवाले वृक्षों से सब ओरसे शोभितहैं व अप्सराओं से सेवित दिव्यविमान वहां हैं ३ व सब वहां के प्रदेश समान और इच्छा से सर्व्वत्र जानेवाले हैं व तरुण सूर्य्य के किरणों के समान मोतियों की झालरें लगी हैं ४ व चन्द्रमा के मण्डल के समान उज्ज्वल सुवर्ण के पर्य्यङ्कोंपर बिछीहुई दिव्य शय्यायें सुख देनेवाली वहां विद्यमान हैं वे अन्य भी सब कामनाओं से समृद्ध व सब दुःखों से विवर्ज्जितहैं ५ व वहां सब पुण्यात्मालोग सुखसे विचराकरते हैं जैसे पृथ्वी में विचरतेहैं वहां न नास्तिकलोग जाते हैं न चोर न अजितेन्द्रिय पुरुष ६ न क्रूरस्वभाव वाले न चुगुली करनेवाले न कृतघ्नलोग न मानीलोग जाते हैं व सत्य बोलनेवाले तपमें स्थित दयावान् शूरवीर क्षमा करनेवाले लोग वहां निवास करते हैं ७ यज्ञकरनेवाले और जो पुरुष दानदेने का स्वभाव रखते हैं वे सब वहीं जाते हैं वहां रोग, जरा, मृत्यु, शोक, जाड़ा, घाम नहीं हैं ८ वहां किसीको क्षुधा पिपासा तो लगतीही नहीं ग्लानि नहीं विद्यमान होती ये व और भी स्वर्ग्ग के बहुत से गुणहैं हे महाराज ! ९ व वहां जो दोष हैं उनको भी एकाग्रचित्त होकर इससमय सुनो जो कुछ शुभकर्म्म प्राणी यहां करताहै उसी का फल वहां भोगता है १० वहां फिर कुछ कर नहीं सक्ता यही बड़ा भारी दोष है व पराई श्रीशोभा देखकर असन्तोष बनारहताहै यह भी दोषहै ११ फिर जैसेही उनका दान पुण्यका फल चुकजाता है कि एकाएकी वहां से पतन होजाता है यहां जो कर्म्म प्राणी करता है उसका फल वहीं भोगताहै १२ हे राजन् ! कर्म्म भूमि यही लोक है व फलभूमि स्वर्ग्गभूमि है यह सुन राजा सुबाहु ने फिर पूँछा कि स्वर्ग्ग में तो तुमने इतने दोष बताये १३ अब कोई निर्दोष स्थानहो तो बताइये जैमिनिजी बोले कि निर्दोष, तो अन्य कोई लोक नहीं है ब्रह्मा के लोक में दोषहै १४ इसी से बुद्धिमान् स्वर्गकी प्राप्तिकी इच्छा नहीं करते हैं ब्रह्माके लोकसे ऊँचे विष्णुजीका परमपदहै १५ वह शुभ सनातन ज्योति परब्रह्म कहाता है वहां मूढ़ विषयी पुरुष नहीं जाते १६ व न दम्भी भययुक्त द्रोही

पापी लोभी मोही क्रोधीलोग कभी वहां जातेहैं व जो ममताहीन निरहंकारी निर्द्वन्द्व संयतेन्द्रिय होते १७ व जो ध्यानयोग में रतहोते हैं वे साधुलोग वहां जाते हैं जो तुमने हमसे पूँछा सो सब हमने कहा १८ स्वर्ग्ग के गुणदोष सुनकर राजा सुबाहु कहनेवालों में श्रेष्ठ महात्मा जैमिनिजी से फिर बोले कि हे मुनिराज ! हमारे स्वर्गजाने की इच्छा नहींहै इससे हम वहां न जायँगे क्योंकि वहां से तो फिर नीचे को गिरना पड़ताहै वह कर्म्म नहीं हम करसक्के १९।२० इससे हे महाभाग ! केवल दानही एक कर्म्म हम न करेंगे क्योंकि उसके करने से स्वर्गवास होताहै फिर वहांसे पातभी नीचे को होताहै २१ ऐसा कहकर धर्मात्मा राजा सुबाहुने फिर कहा कि ध्यान योग से हम श्रीविष्णु भगवान् की पूजा करेंगे २२ जिससे कि प्रलय काल में भी दाहसेरहित उस श्रीविष्णुपदको जायँगे तब जैमिनिजी फिर बोले कि हे महाराज ! तुमने सत्यकहा व सब कल्याणसेही युक्त कहा २३ इसीसे सब धर्मशील राजालोग श्रीविष्णुकी पूजा महायज्ञोंसे करते हैं जिनमें सब प्रकारके दान देते हैं २४ व यज्ञों में सबसे प्रथम अन्नदान करते हैं फिर वस्त्र ताम्बूल देते हैं फिर कांचन भूमिदान व गोदान करते हैं २५ इसीसे सुन्दर यज्ञ करने से प्राणी श्रीवैष्णव धाम को जाते हैं हे राजन् ! दानसे सब तृप्त होते हैं व सन्तुष्ट होजाते हैं २६ तपस्वी महात्मा नित्यही पूजन करते हैं भिक्षा मांग कर अपने स्थानको आते हैं २७ फिर भिक्षाके द्रव्य के भागकरते हैं ब्राह्मण को एक भाग गऊ के ग्रासके समान देते हैं २८ और तपस्वी मनुष्य परोसियोंकोभी एक भाग देते हैं तिस अन्नके दान से मनुष्यफलको भोगते हैं २९ भूंख और प्याससे हीन विष्णुलोक में जाते हैं हे राजेन्द्र ! तिससे आपभी न्याय से इकट्ठा किया धन दीजिये ३० दानसे ज्ञान और ज्ञानसे सिद्धिको प्राप्त होगे ॥

चौ० जोनरयहआख्यानपुराना । सुनिहिपढ़िहिगाइहि करिमाना ॥
सकलपाप तजि हरिपुरजाइहि । नाना सुख तहँ सो जनपाइहि ३१।३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छानबे अध्याय ॥

दो० छीयानवयें महँ नरक स्वर्ग जातकरि जोय ॥
पुरुषस्वई वर्णन कियो आनकह्यो नहिं कोय १

राजा सुबाहुजी ने अपने पुरोहित जैमिनिजीसे फिर पूछा कि कैसे कर्म्मों के करने से मरनेपर मनुष्य नरक को जाते हैं व स्वर्ग को कैसे कर्म्मोंके करने से मरनेपर जाते हैं यह हम से आप कहने के योग्य हैं १ जैमिनिजी बोले कि जो ब्राह्मणलोग पुण्यकारी ब्राह्मणों के कर्म्म छोड़कर लोभसे मोहित होकर कुकर्म्मोंके करने से जीविका करते हैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं २ व जो पुरुष नास्तिक भिन्न मर्य्यादवाले काम विषयमें उन्मुख दम्भ करनेवाले कृतघ्नहैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं ३ ब्राह्मणों से धन देने को सुनाकर जे धन नहीं देते हैं और ब्राह्मणोंकी द्रव्य के हरनेवाले हैं वेभी मनुष्य नरकगामी हैं ४ व जो पुरुष चुगुली करते हैं व जो मानी और मिथ्यावादी होते हैं व अतिअनर्थ वचन सदा बोला करते हैं वेभी मनुष्य निश्चय नरकगामी होते हैं ५ जो लोग परधन हरलेते हैं व पराये दूषणों को औरोंसे कहाकरते हैं व पराई स्त्रीके सङ्ग भोग करते हैं वे भी मनुष्य निश्चय नरकगामी होते हैं ६ व जो मनुष्य प्राणियों के मारडालने में सदा निरत रहते हैं व पराई निन्दा में रत हैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं ७ कूप तड़ाग पौसरा व बड़े बड़े सरों के विदारण करने व बिगाड़नेवाले मनुष्य निश्चय नरकगामी होते हैं ८ जो लोग अपने स्त्री पुत्र भृत्यवर्गों और अतिथियों को शिक्षादेने को छोड़ तथा उनके विपरीत करते हैं व पितरों देवताओं की पूजा [illegible] के कारण नहीं करते वेभी मनुष्य नरकगामी होते हैं ९ जो कोई संन्यासी वैखानसादि [illegible] को दूषितकरते हैं व अन्य आश्रमों को भी दूषते हैं व अपने मित्रोंको दूषते हैं वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १० व जो लोग आद्यपुरुष ईशान सब लोकों के महेश्वर श्रीविष्णु भगवान्‌जीकी चिन्तना नहीं करते वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं ११ ब्राह्मण, यज्ञ, कन्या, सुहृद्,

साधुलोग व माता पिताआदि गुरुओं को जो लोग दूषते हैं वे नरकगामी होते हैं १२ काष्ठों से, लोहोंकी शलाकाओं से, शून्य पत्थरों से वा कांटों से जो लोग मार्ग रूँधदेते हैं वे निश्चय नरकगामी होते हैं १३ जो लोग किसी भी प्राणीका विश्वास नहीं मानते व कामसे पीड़ितहैं और सब प्राणियोंके संग कुटिलता करते हैं वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १४ जीविका से हीन भोजनकरने के लिये आयेहुये ब्राह्मणोंको जो निषेध करते हैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं १५ व जो पुरुष किसीके खेत जीविका व गृहका छेदन करते हैं व प्रीति का छेदन करते हैं और किसीकी लगीहुई आशाका छेदन करतेहैं वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १६ व शस्त्रोंके बनानेवाले व बाणोंके बनानेहारे व धन्वाओंकेभी बनानेवाले व हे राजेन्द्र! इन शस्त्रादिकोंके बेचनेवालेभी नरकगामीहोते हैं १७ अनाथ व्याकुल दीन रोगी व वृद्धको देखकर जिन मूढ़ों को दया नहींआती वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १८ जोलोग किसी व्रतादिके करने का नियम करलेते व वे अजितेन्द्रिय पुरुष चंचलतासे पीछे को छोड़ देते हैं व नष्ट भ्रष्ट करदेतेहैं वे भी निश्चय नरकगामी होतेहैं १९ हे राजन्! इतने हमने नरकगामी मनुष्य कहे अब जो स्वर्गलोकको जाते हैं उनको कहते हैं सुनो २० सत्यसे तपसे क्षान्तिसे दानसे व अध्ययन से जो लोग धर्म्म करतेहैं वे मनुष्य स्वर्गगामी होतेहैं २१ व जो मनुष्य होम निरतहोते ध्यान देवताओंकी पूजामें तत्पर होते हैं दान करते हैं वे महात्मालोग स्वर्गगामी होते हैं २२ जो पवित्रहोकर पवित्र देशमें बैठकर वासुदेवमें परायणहो विष्णुको पढ़ते व गाते हैं वे मनुष्य स्वर्गगामी होतेहैं २३ जो मनुष्य माता पिताकी सदा आदर समेत सेवा करतेहैं दिन में कभी सोते नहीं वे मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं २४ जो मनुष्य सब हिंसासे निवृत्त साधु के संगी सब के हितमें युक्त हैं वे मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं २५ जो मनुष्य सब लोभों से निवृत्त रहते हैं मनकी सहतेहैं व सब किसी के आश्रयी रहते वे मनुष्य स्वर्गगामी होतेहैं २६ व हे भारत! शुश्रूषाओं से और तपस्याओं से जो गुरुओंको मानदेते हैं व दान किसी

का लेते नहीं वे मनुष्य स्वर्ग्गगामी होते हैं २७ सहस्रसे व्याप्त सहस्रके देनेवाले और सहस्रों की रक्षा करनेवाले मनुष्य स्वर्ग्गगामी होते हैं २८ भय पाप घाम शोक दारिद्र्य व व्याधिसे व्याकुल पुरुषोंको जो लोग नहीं छोड़ते वे स्वर्ग्गगामी होते हैं २९ हे भारत ! जो अतिरूपवान् होकर व युवावस्था को पाकर भी जितेन्द्रिय और धीर रहते हैं वे नर स्वर्ग्गगामी होते हैं ३० व हे भारत ! सुवर्णदान करनेवाले गोदान करनेवाले व भूमि देनेवाले व अन्न वस्त्र देनेवाले पुरुष स्वर्ग्गगामी होते हैं ३१ व जो पुरुष मांगने से हर्षित होते हैं व दानदेकर फिर प्रियवचन कहते हैं व दान के फलकी इच्छा नहीं करते वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ३२ हे परन्तप ! जो पुरुष मन्दिर धान्य अपने आप उत्पन्न करके दान करते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ३३ व जो लोग अपने शत्रुओंके भी दोष कभी नहींकहते व गुणोंका कीर्त्तन करते हैं वे स्वर्ग्गगामी होतेहैं ३४ व जो नर पराई लक्ष्मीदेखकर व्यथित नहीं होते न मत्सर करतेहैं व हर्षितहो प्रशंसाकरते हैं वे स्वर्ग्गगामी होतेहैं ३५ व जो महात्मा पुरुष प्रवृत्तिमार्ग्ग में व निवृत्तिमार्ग्ग में भी वेद व शास्त्रहीके कहने के अनुसार कर्म्मकरते हैं वे स्वर्ग्गगामी होतेहैं ३६ जो लोग छल करनेके अभ्यासको जानतेहीनहीं न अप्रिय बोलनाजानते हैं व सदा प्रियवचन बोलनेहीको मुख्यज्ञान समझते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ३७जो पुरुष क्षुधा तृष्णा श्रमसे पीड़ित होनेपर भी नामभाग करते हैं व हंतकारके करनेवाले हैं वे नर स्वर्ग्गगामी होते हैं ३८ व वापी कूप तड़ाग पौसरा गृह और पुष्पवाटिका को बनवाते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ३९ जो पुरुष असत्य बोलनेवालों के विषय में भी सत्यही बोलते हैं व सरलता से हीनों के संगभी सरलता रखते हैं व जो शत्रुओं के संगभी हितही करते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ४० व चाहे जिस किसी कुल में उत्पन्न हुयेहों पर उनके सैकड़ों पुत्रहों व सौ वर्षतक जीवें व सब के ऊपर दयाकरतेरहें व सदाचार करतेरहें वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ४१ व जो नर दान देनेसे सब दिनों को सफल करते हैं व नित्यही व्रत ग्रहण करते हैं वे स्वर्ग्ग-

गामी होते हैं ४२ जो मनुष्य गालीदेनेवालेको व स्तुति करने वाले को तुल्यदृष्टि से देखते हैं व आप सदा शान्तात्मा व जितात्मा बनेरहतेहैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ४३ जो लोग कष्टमें पड़ेहुये ब्राह्मणोंकी व स्त्रियोंकी रक्षाकरते हैं और नौकरोंकी भी रक्षा करते हैं वे पुरुष स्वर्ग्गगामी होते हैं ४४ गंगाजी के तटपर पुष्करतीर्थ में व विशेष करके गयामें जो लोग पितरोंके लिये पिण्डदेते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ४५ जो नर संयम करके इन्द्रियों के वशमें नहीं पड़ते व लोभ भय क्रोध कभी नहीं करते वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ४६ जो पुरुष अपने शरीर में काटतेहुये जुआं खटमल डांसआदि जन्तुओं की रक्षा अपने पुत्रके समान करते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ४७ जो लोग विधिपूर्वक ज्ञानका संचय करते रहते हैं व सुख दुःखादि द्वन्द्वों को सहते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ४८ जो पवित्र पुरुष कर्म्म मन व वचन से पराई स्त्रीके संग भोग नहीं करतेव पवित्रचित्त रहते हैं वे सतोगुणी मनुष्य स्वर्ग्गगामी होतेहैं ४९ जो लोग निन्दित कर्म्म करतेही नहीं जो कुछ करतेहैं वेदशास्त्र पुराणसे विहित करते हैं व अपनी शक्तिको जानते हैं वे स्वर्ग्गगामी होते हैं ५०

चौ० यहहमतुमसनसबनृपगावा । अरुनिश्चयकरिसकलसुनावा ॥
दुर्ग्गतिसुगतिसदानरपावत । निजकर्म्मनसोंनिजमनभावत ५१

चौपैया ॥ जो नर प्रतिकूला नहिं अनुकूला करत आन के संगा । सो नरकहिं जाई ढोलबजाई यहनहिं मृषाप्रसंगा ॥ जो करु सब केरो सुहित घनेरो निजजीवन भर प्राणी । सो सबसुख पावत निज मनभावत सत्य सत्य यह वाणी ५२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबे अध्याय ॥

दो० सत्तानबयें महँ कह्यो हरिपुरगमन निपात ॥
नृप सुबाहु बमदेव मुनि करि संवाद कुबात १

कुञ्जल अपने तीसरे पुत्र विज्वल से बोला कि राजा सुबाहु

इस प्रकार जैमिनि से अधर्म्म व धर्म्मकानिर्णय सुनकर फिर उन मुनिसे बोले कि १ हे द्विजोत्तम! हम धर्म्म करेंगे पुण्यकरेंगे जगद्योनि वासुदेव भगवान्‌की सदैव पूजाकरेंगे २ तब सब कामों से पूजित राजा आनन्दसे होम करने व जप करनेसे मधुसूदनजी को पूजते भये यज्ञकर तप करके विष्णुभगवान्‌के लोक को चलेगये परन्तु वहां पहुँचने पर उन्होंने देवदेव श्रीविष्णुभगवान् को न देखा ३ । ४ व बड़ी भारी जीवके पीड़ा करनेवाली क्षुधा और तृष्णा राजाको वहां लगी ५ व राजाकी स्त्री भी वहां संग गई दोनों राजा रानी तीव्र क्षुधा पिपासासे पीड़ितहुये व जब हृषीकेश भगवान्‌जी के दर्शन न हुये तो बड़े दुःखसे युक्त हुआ ६ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि राजा स्त्री समेत इसप्रकार क्षुधा से जब व्याकुल हुआ व अनेक पीड़ाओंसे व्याकुलहुआ ७ व मारे भूंख के इधर उधर घूमने दौड़नेलगा यद्यपि सब आभरणों की शोभासे युक्त था व सुगन्धित चन्दनादि लगाये था वस्त्रधारेथा ८ पुष्पोंकी माला धारण किये हार कुंडल कंकणोंसे शोभित था व रत्नोंकी दीप्तिसे शोभित था ९ इस प्रकार दुःखित राजा पाठकों से स्तुति को प्राप्त दुःख शोकसे युक्त होकर अपनी स्त्री से बोला १० कि हे सुशोभने! तुम्हारे साथ हम विष्णुलोक को प्राप्तहुये ऋषियों से स्तुति को प्राप्त विमानपर चढ़कर आये ११ किस कर्म से यह क्षुधा अत्यंत बढ़ी है और विष्णुलोक को प्राप्त होकर मधुसूदनजी को नहीं देखा १२ हे भद्रे! सो क्या कारणहै जो बड़े फलको हम नहीं भोगते अपने कर्म से यह दुःख वर्त्तमान हुआहै १३ रानी इस प्रकार राजाके वाक्य सुनकर उनसे यह बोली १४ कि हे राजन्! आपने सत्य कहा धर्म का फल नहीं है वेदशास्त्र और पुराणोंमें जे ब्राह्मणलोग पढ़तेहैं १५ कि यहा आनेपर दुःखशोक नहीं होता सब दोषों से प्राणी छूटजाता है जैसेही श्रीविष्णु चक्रधारी भगवान्‌जी के नामोंका उच्चारण पुरुष करता है १६ कि पुण्यात्मा महाभाग होजाता है व इसी से सब महात्मालोग सदा जनार्दन भगवान् का ध्यान करते रहतेहैं व इसी से तुमने भी देवदेव शंख चक्र गदा धारण कियेहुये श्रीहरिकी

में श्रेष्ठ राजा से वामदेवजी बोले ३२। ३३ कि हे राजेन्द्र! तुमको हम दिव्य ज्ञान से विष्णुके धर्म्म जाननेवाले व श्रीविष्णु के भक्त चोलदेशके राजा जानतेहैं ३४ इस अपनी तार्क्ष्यानाम भार्य्यासमेत कुशलसहित तो आये राजा बोला कि हे विप्र! हां हम निरामय हो इस विष्णुलोक में आये ३५ क्योंकि हमने परमभक्तिसे देवदेव जनार्दन भक्तिसे प्रसन्न जगन्नाथजी की आराधना की है पर यहां आनेपर सुरेश्वर देवदेव कमलापति के दर्शन हमको क्यों नहीं होते व हे तात! हमको क्षुधा व अत्यन्त घोर तृष्णा बहुत बाधित कर रही है ३६। ३७ उन दोनों से शान्तिको नहींपाते न सुखपाते हैं हे मुनिसत्तम! यह दुःख का कारण हमारे उत्पन्न हुआहै ३८ इसका कारण प्रसन्नतासे सुमुख होकर तुम हमसे कहो ३९ वामदेवमुनि बोले कि हे राजेन्द्र! तुम श्रीकृष्णदेव के भक्त सदैवहो यद्यपि तुमने परमभक्तिसे मधुसूदन भगवान्की आराधना की है व भक्तिके उपचारों से स्नानादिक चंदन पुष्पादिकों से पूजाकी है ४० परन्तु सब जगतों के पति श्रीविष्णुजीको नैवेद्य फलोंसे तो तुमने कभी नहीं दी व न कभी दशमीतिथि में तुमने एकभक्त व्रतकिया व न उस दिन ब्राह्मणको अच्छा भोजन दिया एकादशीके दिन तुमने भोजन नहीं किया ४१।४२ विष्णुको उद्देशकर तुमने ब्राह्मणको भोजन नहीं दिया अन्न सदैव अमृतरूपसे पृथ्वी में स्थितहै ४३ किसी ब्राह्मणको कभी तुमने थोड़ा भी अन्नदान किया अन्नदान विशेषकर तुमने किसीको कभी दियाही नहीं हे महाराज! पृथ्वीपर जितनी ओषधियां उत्पन्न होती हैं उन ओषधियों के नाना भेदहैं हमसे सब सुनो ४४ कडुये, तीते, कसैले, मीठे, खट्टे व खारी छः प्रकारके रस होते हैं ये सब हींग आदि सामग्रियों के डालनेसे नानारूप होजाते हैं ४५ व सब अन्न अमृतरूप होकर पुष्टि करनेके हेतु होते हैं इससे सब अन्नोंका अच्छे प्रकार संस्कार करके औषध व्यंजनयुक्त ४६ विष्णुरूप सब देवताओंको लोग देते हैं व विष्णुरूपी पितरोंको भी ब्राह्मणों के हाथोंपर धराकर अन्नही दियाजाता है ४७ फिर अतिथियों को देकर घरवाले परिवारों को दियाजाताहै फिर उसके पीछे आप भोजन करता है

जैसाकरे वैसा फलभोगे ६२ पूर्वसमय देवता पितर व ब्राह्मणों को तुमने कभी मीठा अन्न जल सुन्दर मन से नहींदिया ६३ जो सुन्दर मीठे स्वादुयुक्त अन्न पान होते थे तुम आप खालेते थे कब तुमने किसी को कुछ दिया ६४ बस अमृतसदृश अन्नों से केवल तुमने अपना शरीरही पुष्ट किया है जिससे कि तुमने अपने शरीरही का पालन पोषण कियाहै इससे अब तुमको क्षुधालगरही है ६५ हे राजन्! मनुष्यों के सुख दुःख जन्म मृत्यु का कारण कर्महीं है इससे तिस कर्म के फलको भोग करो ६६ पूर्वकालमें महात्मा अपने कर्म से स्वर्गको प्राप्त हुये हैं फिर कर्म के नाश होने से पृथ्वी में प्राप्त होगये ६७ नल भगीरथ विश्वामित्र युधिष्ठिर कर्महीं से अपने काल से स्वर्गको प्राप्तहुये हैं ६८ भाग्यही पुराना कर्म है तिसी से दुःख और सुखको प्राप्त होताहै हे राजन्! तिसके उल्लंघन करने में कौन ईश्वर समर्थ है ६९ हे नृपश्रेष्ठ! अब तिसी से स्वर्ग में प्राप्तभी तुम्हारे भूंख और प्यास से उत्पन्न वेगहै तिसी से दुष्ट तुम्हारा कर्म है ७० हे नृपसत्तम! जो तुमको भूंखका प्रतीकार अभीष्टहो तो जाकर आनन्दवन में स्थित अपनी देह को भोगो ७१ तुम्हारी यह महारानी भूंख से अत्यन्त दुर्बल दिखाई देती है यह सुन राजा सुबाहु बोला कि भला हम यहां से पतित होकर कितने कालतक अपनी स्त्री समेत मर्त्यलोक में रहेंगे ७२ व कब हमारे ऊपर भगवान् का अनुग्रह होगा हे महाभाग! यह हम से कहो हे मुनिसत्तम! किस द्रव्य के दानसे क्या पुण्यहोता है ७३ हे महाप्राज्ञ! जो इससमय प्रसन्न हो तो कहो वामदेवजी बोले कि हे महामते! अन्नदान से महासुख जलदान देने में है ७४ वे मनुष्य स्वर्गही भोगते हैं कभी पापों से पीड़ित नहीं होते जो मनुष्य कभी दाननहीं देते ७५ वे सबभी मरण के समय अवश्य देते हैं पहिलेही से अन्न जलदान देना योग्यहै ७६ व छतुरी जूता खराऊँ सुन्दर लोटा पृथ्वी सोना व धेनु ये आठ दान जो दे ७७स्वर्ग में फिर उसे क्षुधा तृष्णा नहीं लगती सो सुन्दर अन्नदान करनेसे तो क्षुधा नहीं लगती वह तृप्तियुक्त रहताहै ७८ व जलदान करने से तीव्र तृष्णा फिर उस को नहीं लगती सदैव तृप्त रहताहै

खड़ाऊं व छत्रदान करने से ७९ वहां छाया पाताहै व जूता देने से वाहन वहां मिलताहै जूताके दान सेभी वाहनही पाताहै और भी कहते हैं ८० व भूमिदान करने से सब कामों को प्राणी पाता है व हे महाराज ! गोदान करने से पुरुष सदैव रसों से पुष्ट होता है ८१ व सबसुख भोगताहुआ स्वर्गलोकमें निवास करताहै व गोदानकरने से दाता अच्छे प्रकार वहीं तृप्तहोताहै इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ८२ व गोदानहीके करने से पुरुष नीरोग रहता है सुखयुक्त संतुष्ट और धनवान् होता है व सुवर्ण दान करने से प्राणी के देहका रंग व रूप बहुत अच्छा होजाता है इस में संदेह नहीं है ८३ व श्रीमान् रूपवान् दानी और रत्नभोक्ता वह प्राणी होताहै व मृत्युकाल में भी जो कोई तिलदान करताहै ८४ वह सब भोगों का पति होकर विष्णुलोक को जाता है इसरीति से दान विशेष करने से परम सुख यह प्राणी पाताहै ८५ गोदान भूमिदान अन्न जलदान हे राजन् ! जब तुम जीते थे कभी ब्राह्मणों को नहीं दिया ८६ फिर मरणके समयमेंभी नहीं दिया इसीसे तुमको यहां क्षुधा लगतीहै हे तात ! कर्म्म के वशीभूत यह कारण तुमसे हमने वर्णन किया ८७ जैसा कर्म तुमने कियाहै वैसाही फलभोगो राजा सुबाहु बोला कि हे मुनिसत्तम! अब हमारी क्षुधाकी शान्ति कैसेहो ८८ इसक्षुधाने शरीर को शुष्क करदिया और अत्यन्त तापित करतीहै हे द्विजश्रेष्ठ ! क्षुधा मिटनेकेलिये कुछ प्रायश्चित्त बताओ ८९ जैसे इस हमारे घोरकर्म्म की शांतिहो वामदेवजी बोले कि हे नृपोत्तम ! विना भोगकिये इसका प्रायश्चित्त कुछ नहीं है ९० इससे अपने कर्म्मका फल स्वस्थहोकर आप सब भोगें अब जहां तुम्हारा व तुम्हारी स्त्रीका शरीर पतितहुआ है ९१ वहां यहांसे शीघ्रही जाओ इसमें संदेह नहींहै दोनोंजने उस अपने शरीर का अक्षय मांस भक्षण करो ९२ बस अपना २ दोनों जने शरीर भक्षणकरो इसमें संदेह नहीं है राजा बोला कि भला हम अपना २ मांस कितने समयतक भक्षण करेंगे ९३ हे महाभाग ! सो कहिये वह वचन हमारे प्रमाणहैं वामदेवजी बोले कि जब तुम किसीके मुखसे महापातकनाशन वासुदेवस्तोत्र सुनोगे तब तुम्हारी

मुक्तिहोजायगी हे राजन् ! यह सब हमने तुमसे कहा अब जाकर अपना २ मांस भोजनकरो ९४ । ९५ यह सुनकर राजा सुबाहु वहां से चला व अपनी स्त्री सहित अपने २ शरीर का मांस खाने लगा ९६ नित्य अपने २ शरीर का मांस राजा रानी खालियाकरें व नित्य शरीर पूरा होजायाकरे इसप्रकार नित्य राजा व रानी शरीरका मांसही भक्षणकरे ९७ जैसे २ भक्तिसे राजा अपने शरीरको भक्षणकरे वैसे २ वहां स्त्रियां हँसती जायँ इसका भेद हम तुमसे बताते हैं ९८ वे स्त्रियां प्रज्ञा व महासाध्वी अनपायिनी श्रद्धा थीं सो दोनों राजा के चरित्रको नित्यही हँसती थीं ९९ क्योंकि जब प्रज्ञा प्रेरणाकरती थी तब श्रद्धायुक्त विष्णुके लिये उद्देशकर ब्राह्मणोंको अन्न देनेको सङ्कल्प कर नहीं दिया था १०० इस प्रकार अपने शरीर का मांस नित्य अमृत सदृशरसों से राजा रानी खाते थे १०१ हे सुव्रत ! फिर सौ वर्ष के अन्त में महामुनि वामदेवजी को स्मरणकर आत्माकी निन्दा करनेलगे १०२ कि न देवताओं को कभी दिया न पितरों को न ब्राह्मणों को न अतिथियों को व न अन्य वृद्धोंकोही विशेषकर दान दिया १०३ व दीनों को भी नहीं दिया कृपा करके आतुरको भी नहींदिया इसीसे राजा अपने शरीरका मांस खाताथा और अपने कर्मकी निन्दा करताथा १०४ स्त्री समेत अपना २ मांस खातेहुये राजा का कर्म्म देखकर श्रद्धा व प्रज्ञा बार २ हँसती थीं कि हे पाप चेतन ! हे राजन् शुभात्मा ! तिस कर्मविपाकको हँसताहै हमारे सङ्गके प्रसंगसे आपने न दान दिया १०५।१०६ राजासे प्रज्ञा हँसतीहुई कहे कि हे महाराज ! वह ज्ञान तुम्हारा कहां गया जिससे मोहित होगये १०७ लोभ मोहसे ऐसे युक्तहुये कि अब तमोगर्त्त में गिरा दियेगये अब दुःखसागर में पतित तुम्हारी रक्षा वह नहीं करता १०८ कि जिससे तुम दानमार्ग्गको छोड़कर लोभमार्ग्गको प्राप्तहुये अब क्षुधायुक्तहोकर भार्य्यासहित आनन्दसे अपना २ मांस भक्षणकरो १०९ इसप्रकार भार्य्यासमेत राजा सुबाहुको वह प्रज्ञा हँसे हे पुत्र ! यही उन दोनों स्त्रियोंके हँसनेका कारणथा ११० जब राजा अपना देह भक्षणकरनेलगे व तब दो दारुणरूप धारणकरके

स्त्रियां सदैव कहतीथीं कि देओ देओ १११ हे महाप्राज्ञ! वे भीम व दारुणरूप धारण किये क्षुधा व तृष्णार्थी जलसहित अन्न राजासे बार बार मांगतीथीं ११२ जो तुमने पूँछा हमने सब तुमसे कहा अब और तुम से क्या कहें सो कहो ११३ तब विज्वल बोला कि हे तात! वासुदेवाभिधान स्तोत्र हमसे कहो जिसके सुननेसे राजा सुबाहुकी मुक्तिहोगी व राजा विष्णुजीके परमपद को जायगा ११४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

अट्ठानबे अध्याय ॥

दो० अट्ठनवें महँ स्तोत्र श्री वासुदेव अभिधान ॥
उज्वलकह्यो सुबाहुसों नहिं यामहँ कुछ आन १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि जब उसके महात्मापुत्र उज्वल ने ऐसा पूँछा तब कहनेवालों में श्रेष्ठ कुंजलने श्रीविष्णुजीका पुण्यकारी स्तोत्र कहा १ प्रथम शान्ति देनेवाले व पुष्टि बढ़ानेवाले सबकामों के दाता ज्ञानवर्द्धन सर्व्व क्लेशनाशन श्रीहृषीकेशजीका ध्यानकरके फिर नमस्कार करके वासुदेवजी का स्तोत्र जो कि सब कल्याणदाताहै वासुदेवनाम परमेश्वर को परमप्रिय व पुण्य बढ़ानेवाला २ । ३ ऐसा कुंजल का कहाहुआ वासुदेव नाम स्तोत्र विज्वल के लिये प्रकाशित हुआ ४ वासुदेवजी का नाम अप्रमेय पुण्य बढ़ानेवाला है पक्षियोंमें श्रेष्ठ विज्वल पितासे सब प्राप्तकर ५ तहां जानेका विचार करता भया इसप्रकार जाने को बुद्धिकिये ज्ञानके पारगामी उपकारमें उद्यत पुत्रसे धर्मात्मा कुंजल बोला ६ । ७ कि हे पुत्र! जिससे राजा का पाप जायगा उसका उपायकरो अब यहां से शीघ्रही जाकर राजा सुबाहु के आगे जो स्तोत्र हमने कहाहै पढ़ो ८ जैसे २ राजा उत्तम स्तोत्र सुनेगा वैसेही वैसे ज्ञानमय होगा वह स्तोत्र वही है जो कि हमने तुमसे कहाहै इसमें संदेह नहीं है ९ यह सुन अपने पिताकी आज्ञासे अतिवेग से वहांसे उड़कर विज्वल पुण्य आनन्दवन में पहुँचा १० व वृक्षकी शाखापर बैठकर स्तोत्र पढ़ने के लिये उद्यत

हुआ देखा तो राजा विमान पर चढ़ाहुआ वैकुण्ठ से चलाआता था ११ प्रथम मनमें विज्वल विचारता था कि देखें स्त्रीसमेत राजा कब आवे और इस स्तोत्र से कब हम पापसे छुड़ावें १२ तबतक किंकिणी जालसे मंडित विमान प्राप्त होगया जो कि घंटाके शब्दसे युक्त वीणा और वेणुसमेत १३ गंधर्वोंके स्वरसे शब्दयुक्त अप्सराओं सहित सब काम देनेवाला अन्न वा जलसेहीनथा १४ तिस विमानमें स्त्रीसमेत राजा सुबाहु स्थित थे फिर सुतार्द्दयनाम अपनी स्त्रीके साथ राजा आकर विमान परसे उतरे १५ तीक्ष्ण शस्त्रलेकर जबतक उस पड़ीहुई अपनी लोथको काटाचाहे कि तबतक विज्वलने पुकारा कि १६ हे हे पुरुषशार्दूल ! आप देवता के तुल्यहैं व ऐसा निर्घृण कर्म्म करते हैं कि क्रूरोंसे भी न होसके १७ हे पुरुषशार्दूल ! यह क्या भाग्यकेविपर्य्यय का कर्म्महै यह ऐसा दुष्कृत साहसका कर्म्म सर्वदा लोकमें निन्दित है १८ वेदाचार से विहीन शव मांसभक्षण करना आप कैसे करते हैं इसका कारण सब हमसे जैसेबने वैसे कहैं १९ इसप्रकार महात्मा उस विज्वलका वचन सुनकर राजा अपनी स्त्रीसे बोला कि २० हे प्रिये ! सौवर्ष बीतगये व प्रतिदिन मुझपापीने यही मांस खाया पर जैसा यह आज कहता है ऐसा कभी किसीने नहीं कहा २१ व हमारा हृदय क्षुधा के मारे अतीव पीड़ित होरहाहै अब हमारी उत्कण्ठा इसके वचन के सुनने में लगगई है चित्तमें शान्ति होगई है २२ जबसे सब दुःखका शांति देनेवाला इसका वाक्य सुना व तबसे हमारे चित्तमें बड़ा आह्लाद हुआ है २३ नहीं जानते यह कोई गन्धर्व्व है कि देवताहै वा इन्द्र आपही तो नहीं हैं जो पूर्वसमयमें मुनिने कहा था वह मुनियों का वचन सत्यहै २४ यह अपने पतिका प्रिय वचन सुनकर पतिव्रता रानी बोली २५ कि हे नाथ ! तुमने सत्य कहा यह उत्तम आश्चर्य है हे कांत ! जैसे तुम्हारे चित्त में वर्तमान है वैसेही मेरे भी चित्तमें वर्तमान है २६ हितकारी की नाई पक्षीका रूप धारे यह कौन पूंछता है इसप्रकार राजा प्रियाका वचन सुनकर २७ हाथजोड़कर पक्षी से बोला कि हे महाप्राज्ञ ! तुम्हारा आना अच्छेप्रकार तो हुआ पक्षीका रूप धारण किये हे

महाराज ! २८ हम अपनी स्त्रीसहित तुम्हारे चरणकमलों में शिरसे प्रणाम करते हैं हमारे ऊपर आपका प्रसादहो २९ पक्षीके रूपसे आप अतिपुण्यवचन कहते हैं पुरुष जैसा पूर्व्वजन्ममें करताहै ३० चाहे पुण्यकरे वा पाप वही इस जन्म में भोगता है इतना कह अपना सब वृत्तान्त संक्षेप रीतिसे सुबाहुने विज्वल से कहा ३१ जैसा कि कुंजलने विज्वल से बताया था जो अब आप बतावैं कि आप कौन हैं जो ऐसे धर्म्म की बात कहते हैं ३२ यह सुन पक्षियों में श्रेष्ठ विज्वल सुबाहु राजा से बोला कि शुकों की जाति में उत्पन्न कुंजल हमारे पिता का नामहै ३३ उनके हम तीसरे पुत्र हैं व विज्वल हमारा नामहै हे महाभुज ! न हम देवता न गन्धर्व और सिद्धभी नहीं हैं ३४ तुम्हारा यह दारुण कर्म्म हम नित्य देखते हैं कहो कबतक यह बड़ा कर्म साहस तुमकरोगे यह हमसे कहो राजा सुबाहु बोले कि जब वासुदेवाभिधान स्तोत्र जो पूर्व समय में ब्राह्मणों ने कहाहै ३५।३६ हम सुनेंगे तब हमारी मुक्ति होगी यह पुण्यात्मा संयतात्मा मुनिने कहा है ३७ तब हम पाप से निस्सन्देह मुक्तहोंगे यह सुन विज्वल बोला कि मैंने तुम्हारे लिये पितासे पूछा उन्होंने जो मुझ से कहा ३८ वह वासुदेवाभिधानस्तोत्र सुनाते हैं सावधान होकर सुनो ३९ इस वासुदेवाभिधान स्तोत्रका अनुष्टुप् तो छन्दहै नारद ऋषि है ॐकार देवता सब पाप नाशने के लिये व अर्थ, धर्म्म, काम, मोक्ष सिद्ध होनेके लिये इसका विनियोगहै ॐन-मोभगवते वासुदेवाय ॥ पावन परमपुण्य वेदज्ञ वेदमन्दिर विद्याधार भवाधारव प्रणव के हम नमस्कार करते हैं ४० निराधार निराकार सुप्रकाश महोदय निर्गुण गुण सबद्ध व प्रणवरूप तुम्हारे नमस्कार है ४१ महाकान्त महोत्साह महामोहविनाशन सब जगत् के विस्तार करनेवाले गुणों से अतीत तुम्हारे नमस्कार है ४२ जो सर्वत्र होकर प्रकाशितहोताहै प्राणियोंके ऐश्वर्य्यको बढ़ाताहै अभयहै विभुसंबद्ध शिवॐकाररूपीके नमस्कारहै ४३ जिसको गायत्री सामवेद सदा गा-याकरता है व जो सब गीतरूपहै व जिसको गीत बहुतप्रियहै शुभ है व जो गन्धर्व्वरूप गीतका भोक्ता है उस प्रणवरूप के नमस्कार

है ४४ विचार वेदरूप यज्ञस्थ व भक्तोंकेऊपर कृपाकरनेवाले व सब लोकोंकी उत्पत्ति के स्थान उन ॐकाररूपी के नमस्कारहै ४५ जो संसाररूपी समुद्रमें मग्न सब प्राणियों के तारने के लिये नौकारूप से विराजमान होताहै उस ॐकाररूपीके प्रणामहै ४६ जो सब लोकों में एक रूपसे बसताहै व एक प्रकारका नहीं है धाम मोक्षरूपसे उन ॐकाररूपी शिवके नमस्कारहै ४७ सूक्ष्म सूक्ष्मतर शुद्ध निर्गुण गुणनायक प्राकृत भावोंसेवर्जित वेदकेस्थानके हमारानमस्कारहै ४८ देव दैत्य वियोगों से और तुष्टियों से व कर्मों से सदा वर्जित रहताहै देवताओं व योगियों से जो ध्यान करने के योग्य है उस ॐकारके नमस्कार है ४९ जो व्यापक है इससे विश्वके वृत्तको जानता है व परमशुभ विज्ञानरूप है शिव शिवगुण शान्तस्वरूप उस प्रणवईश्वरके नमस्कारहै ५० व जिसकी मायामें प्रवेशकरके ब्रह्मादिक देवता व असुर परम शुद्धरूप मोक्षकेद्वारको नहीं जानते उस ॐकाररूपी के नमस्कारहै ५१ आनन्दकन्द विशुद्धबुद्धिशुद्ध हंसपर और गणनायक उन वासुदेवजी के निरन्तर नमस्कारहै जिनकी महाप्रभाहै ५२ व जो श्रीपांचजन्य नाम शंखसे विराजमान व सूर्य्यकीसी प्रभा से प्रकाशित सुदर्शननाम चक्र हाथमेंलिये व गदा कमल हाथों में लिये उन वासुदेव जीके हमसदा शरणमें हैं ५३ वेद गुह्य सगुण चराचरके गुणोंकेआधारभूत सूर्य्य अग्निके समान तेजस्वी उन वासुदेवजीके शरणमें हैं ५४ जिनको क्षुधाके निधान विमल सुरूप आनन्दके प्रमाणसे विराजमान पाकर देवादि तीनोंलोक जीते हैं उन वासुदेवजी के शरण में हैं ५५ अन्धकार घनोंको अपने हाथों से नाशकरते हैं नित्यही परिकर्म हेतु हैं उदयको प्राप्त सूर्य के समान प्रकाशित तेजस्वी हैं तिन वासुदेव की हम शरण में प्राप्तहैं ५६ जो सब जगह सूर्य प्रभावों से प्रकाशितहोताहै सुखाता और रसको देताहै जो प्राणियों के भीतर प्राप्त वायु है तिन वासुदेवकी हम शरण में प्राप्त हैं ५७ वे देवदेव अपनी इच्छाके अनुरूप से सब लोकों और राजाओंको पालते हैं और तारनेमें जो नावरूप से वर्तमान हैं तिन वासुदेव की हम शरणमें प्राप्त हैं ५८ अन्तर्गत लोकमय सदैव स्थावर जंगमोंको पचाताहै स्वाहा

मुख और देवसमूहों के हेतु तिन वासुदेव की हम शरण में प्राप्तहैं ५९ अच्छे पुण्यकारी सबरसों से साथही पुष्ट करताहै सौम्यलोकमें सुखका देनेवाला और जो निर्मल तेजसे अन्नोंको पुष्ट करताहै तिन वासुदेव की हम शरणमें प्राप्तहैं ६० सबजगत् विनाशका हेतुहै सबके आश्रय सर्वमय सर्व और इन्द्रियोंके विना विषयोंको जो भोगताहै तिन वासुदेव की हम शरण में प्राप्तहैं ६१ जीव स्वरूप से स्वमूर्त सचराचर लोकों को पालन करते निःकेवल ज्ञानमय सुशुद्ध तिन वासुदेवकी हम शरणमें प्राप्तहैं ६२ दैत्यों के नाश करनेवाले दुःख के नाश का मूल शान्त परशक्तिमय विशालहैं जिनको देवता प्राप्त होकर विनयको प्राप्त होते हैं तिन वासुदेव की हम शरणमें प्राप्त हैं ६३ सुख सुखान्त सुखके दाता सुरेश ज्ञानके समुद्र मुनियों के रक्षा करनेवाले देवोंके ईश सत्य के आश्रय सत्य गुणमें बैठेहुये तिन वासुदेव की हम शरण में प्राप्तहैं ६४ यज्ञांगरूप परमार्थरूप मायायुक्त लक्ष्मी के पति उग्रपुण्य विज्ञान में एक और संसारोंके निवास तिन वासुदेवकी हम शरण में प्राप्तहैं ६५ समुद्रकेबीच में शेषजी की विशाल शय्या में जो सोते हैं तिन वासुदेवजी के दोनों चरणकमल हम नित्यही नमस्कार करतेहैं ६६ पुण्यसे युक्त नित्यही कल्याणकरनेवाले अनेकों तीर्थोंसे सेव्यमान तिन वासुदेवजी के पापनाशकरनेवाले दोनों चरणकमलहैं ६७ जो चरणकमल लालकमलकी दीप्तिकेसमान कमल अच्छा चिह्न और जयसे युक्त घुंघुरू और मुँदरियों से अलंकृत श्री वासुदेवजीके हम नित्यही नमस्कार करते हैं ६८ देवता सिद्ध मुनि सर्प्पोंके स्वामी भक्ति से सदैव नमस्कार करतेहैं तिन श्रीवासुदेवजी के पुण्यकारी चरणकमलों को हम नित्यही नमस्कार करते हैं ६९ जिनके चरण के जलमें मज्जन करते हुये पवित्र पापरहित प्रसन्न मुनि मोक्षको प्राप्त होतेहैं तिन वासुदेवकी हम शरणमें प्राप्तहैं ७० जहां विष्णुजीका चरणजल रहता है तहां सदैव गङ्गादिक तीर्थ रहतेहैं पापदेहयुक्तभी जो अब पीते हैं वे शुद्धहोकर मुरारिजी के मन्दिरको जाते हैं ७१ चरणजल से अभिषेक भये मनुष्य जो उग्र पापों से युक्त देह भी हों तो भी वे मुक्तिको प्राप्तहोते हैं तिन परमे-

श्वर के चरणों को हम निरंतर नमस्कार करते हैं ७२ महात्मा चक्रधारी की नैवेद्यमात्र खाने से मनुष्य सब अर्थयुक्तहोकर श्रीवाजपेययज्ञके फलको पाते हैं ७३ नारायण नरकके नाशनेवाले माया स हीन सकल गुणजाननेवाले हैं जिनको ध्यान करतेहुये अच्छी गतिको प्राप्तहोतेहैं तिन वासुदेवकी हम शरण में प्राप्तहैं ७४ जो ऋषि सिद्ध और चारणगणों से वन्दना के योग्यहै देवों से सदा पूजितहै जो संसार के सृष्टि हेतुकरने में ब्रह्मादि देवोंका प्रभुहै जो संसाररूप महासमुद्र में गिरेहुये का उद्धार कर्त्ता है वत्सल है तिन के श्रेष्ठ पवित्र चरणों को भक्तिसे हम नमस्कार करते हैं ७५ जो यज्ञ के मण्डप में देवताओं से देखेगये सामवेद के जाननेवाले सामवेदके गाने में कुतूहल युक्त तीनों लोकमें एकही प्रभुहैं और राजा बलिको कल्याण करनेवाले नेत्रों से पापहीन करते हैं तिनके परम पवित्र दोनों चरणकमलों को हम वन्दना करते हैं ७६ ब्राह्मणों के मण्डलमें यज्ञ में प्रकाशित होरहे ब्रह्म की शोभा से शोभित दिव्य तेजसे करमय इन्द्रनीलके समान देवों के हितकी कामना से अच्छी देहसे उत्पन्न राजा बलिसे तीन पद मांगतेहुये कि हमको तीनपद दीजिये ऐसे प्रभु वामन की हम वन्दना करते हैं ७७ तिन वामन जी के देखने के लिये सूर्यमण्डल में मुनिगण प्राप्त हुये और आकाश चन्द्रमा और सूर्यको पांवसे आच्छादित करतेभये तिन चक्रधारी के देवता उससमय नाशको प्राप्तहोरहे थे और देह संसारभर का निवासस्थान है तिन अतुल भगवान् के विक्रमको हम नमस्कार करते हैं ७८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेऽष्टनवतितमोध्यायः ९८ ॥

निन्नानबे अध्याय ॥

दो० निन्नानबे अध्याय में हरिदर्शन लहि भूप ॥
स्तोत्रपाठ सुन देवतनु भयहु बहोरि अनूप १

विष्णुजी राजावेन से बोले कि पवित्र परमपुराण पापना-

शन पुण्यमय कल्याणरूप धन्य सुसूक्तरूप परमसुजाप्य स्तोत्र सुनकर राजा अत्यन्त सुखीहुआ १ क्षुधा तृष्णा दोनों जातीरहीं इस से वह देवकी उपमाका होगया व भार्य्याभी उसकी रूपसे शोभित होनेलगी व दोनों पापनिबन्धन से छूटगये २ देवों से परिवारित हरिभक्तियुक्त सुसिद्ध विप्रोंसे युक्त शंख चक्र कमल गदा और तलवार के धारणकर्ता श्रीविष्णु देवदेव वहां आये व पापरहित राजाके समीप पहुँचे ३ उनकेसङ्ग नारद भार्गव व्यास पुण्यात्मा मार्कण्डेय बाल्मीकि नाम विष्णुभक्त मुनि व ब्रह्माजीके पुत्र वशिष्ठजी भी आये ४ व और भी पुण्य महात्मालोग श्रीहरिके चरणारविन्दकी भक्तिसे युक्त गर्ग महात्मा हरिभक्तियुक्त जाबालि रैभ्य कश्यपआदि श्रीहरि के सङ्ग सब आये ये सब विष्णुकेप्यारे भागवतों में श्रेष्ठ धन्य और पापरहित थे व श्रीवासुदेवजी की चारोंओर खड़ेहोकर राजा सुबाहु की अनेक प्रकारोंसे स्तुति करनेलगे ५। ६ अग्निआदि सब देवता ब्रह्मा हरि व सब देवियां मिलकर सुन्दर मधुर मनोहर गीतगानेलगे व गन्धर्व्वराजादि सुन्दर गान करनेवाले लोग आये और वेभी गाते भये ७ मुनिलोग सुन्दर वेदयुक्त परमार्थ समेत सुन्दर पुण्यकारी स्तोत्रोंसे स्तुति करतेभये तब देव हरि राजाको देखकर मनोहर वचन बोले ८ कि हे राजन्! जो इष्टहो वह वरमांगो हम तुमकोदेंगे क्योंकि तुमने प्रसन्न किया है हरिजीके वचन सुनकर राजा श्रीमुरारिजीको आगे कहतेहुये देखकर ९ जोकि नीलकमल सम श्यामस्वरूप मुर राक्षस के मारनेवाले पुरुषों के अधिनाथ शंख चक्र तलवार गदा धारण किये थे व लक्ष्मीसमेत रत्नोंसे प्रकाशित कङ्कण हारादिकों से भूषित परमेश्वरको १० जिनकी रविकीसी प्रभाथी देवसमूहों से सेवित थे बड़े मोलके हार और गहनों से भूषित थे व दिव्यगन्ध अनुलेपन कियेथे ऐसे श्रीहरिको देखकर राजाने सुन्दर भक्तिभावोंसे पृथ्वी पर गिरकर दण्डवत् प्रणामकिया व कहा कि आपके निरन्तर प्रणामहैं आपकी जयहो हे भगवन्! मैं तुम्हारा दासहूँ व सदाका भृत्यहूँ मैं आपके उत्तम भावसे युक्तभक्ति नहीं जानता स्त्रीयुक्त आये हुये शरणमेंप्राप्त मेरी रक्षाकरो हे माधवजी! ब्राह्मण मनुष्य धन्यहैं

जोकि सदैव आपके ध्यानमें मनलगायेहुये रहते हैं ११। १३ शिव माधव ऐसा उच्चारण करतेहुये अत्यन्त निर्मल वैकुण्ठ को जाते हैं और आपके चरणकमल से निकलेहुये पुण्यकारी जलको जो शिरमें लगाते हैं १४ वे मनुष्य सब तीर्थों से उत्पन्न जलमें स्नानकर हरिजीके सुन्दर धामको जाते हैं १५ मेरे योग भक्ति ज्ञान क्रिया कुछ भी नहींहै किस पुण्यके सङ्गसे हमको वरदेतेहो १६ श्रीहरि बोले कि महापातकनाशन वासुदेवाभिधान स्तोत्र तुमने पुण्यात्माविज्वलके मुखसेसुनाहै इससे पापरहित १७ और मुक्तिके भागीहुये इसमें कुछ सन्देहनहींहै अब चलकर हमारेलोकमें मनोरम दिव्यभोग भोगो राजा सुबाहु यह सुनकर बोला कि हे देव! जो मुझदीनको आप वरदिया चाहतेहैं तोप्रथम उत्तम वर इन प्रज्वलजीको दें १८।१९ श्रीहरिजी बोले कि विज्वलका पिता कुञ्जल बड़ा पुण्यात्मा व ज्ञानवान् है हे महाराज! वासुदेव महास्तोत्र नित्य पढ़ता है २० इससे पुत्रों व स्त्रीसमेत वह हमारे लोकको जायगा क्योंकि जोई कोई इस स्तोत्र को जपता है उसको हम सदैव फल देतेहैं २१ जब ऐसा शुभवचन कहा तो राजा श्रीकेशवजीसे बोला कि हे केशव! इस महापुण्यस्तोत्र को आप सफलकरें २२ श्रीहरिजी बोले कि हे महाराज! सत्ययुग में जो मनुष्य इसेसुनेंगे तो तुरन्त मोक्ष पावेंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है २३ व त्रेतामें एक मासभर सुननेसे व द्वापरमें छः मासतक श्रवणकरने से व एक वर्षभर तक सुनने से मनुष्य कलियुगमें २४ स्वर्गको वा गतिदायक वैष्णवलोक को जायँगे जो कोई ब्राह्मण स्नानकर तीनोंकाल वा एककालमें इस स्तोत्रको पढ़ेगा २५ जो२ चाहेगा सबकाम उसके होंगे क्षत्रिय जयको पावेगा और धन धान्य से अलंकृत होगा २६ वैश्य सुनकर लक्ष्मीयुक्त होगा जो कोई शूद्र इसे सुनेगा वह सुखी होगा व जो कोई अन्त्यज को सुनावेगा तो पापसे मुक्तहोगा व सुनानेवाला तो कभी घोर नरकको नहीं देखेगा हमारे इसस्तोत्रके प्रसादसे सर्वसिद्धहोगा २७।२८ व जो कोई श्राद्ध में ब्राह्मणोंके भोजन के समय इसे पढ़ेगा हे महाराज! उसके पितर तृप्तहोकर श्रीवैष्णवलोक को जायँगे २९ व तर्प्पण करने के पीछे

ब्राह्मण वा क्षत्रिय जपकरें तो उनके पितर जो कोई इस हर्षितमन होकर अमृत पावेंगे ३० जो कोई होमोंके करनेके समय यज्ञोंमें भाव से इसे पढ़ेगा तो वहां विघ्न न होंगे व सब कार्य्यों की सिद्धिहोगी ३१ पर्व्वतादि विषम दुर्ग्गमस्थान में वा व्याघ्रादि के संकट में व चौरोंके संकटमें जो कोई इस स्तोत्रको पढ़ेगा तो ३२ वहां शान्ति होजायगी हे महाराज ! इसमें कुछभी संशय नहीं है अन्य सब सेवकोंको चाहिये कि जब राजद्वार को चलें ३३ तो इसे पढ़कर चलें इस वासुदेवाभिधान स्तोत्र को ब्रह्मचर्य्य से स्नानकर क्रोध लोभसे वर्जित होकर मनुष्य दशहज़ार जपै ३४ वासुदेवको पूजनकर प्रयत मनहोकर तिल तण्डुल घी मिलाकर दशांश हवन करना चाहिये ३५ व जितने श्लोक स्तोत्रमें हैं प्रतिश्लोक होमकी आहुति ध्यान से मनुष्यों को डालनी चाहिये ऐसा करनेवाले के समीप हम नित्य ही दासकी नाईं टिकेरहते हैं ३६ कलियुग में यह स्तोत्र दास्यको प्राप्त होजायगा वेदके भङ्ग प्रसंग से जिस किसीको न देवे ३७ परन्तु जहां कहीं इसका पाठहोगा सब कार्य्योंकी सिद्धिहोगी हे भूप ! सुनो हमने इसप्रकार इसस्तोत्रको सफल किया ३८ इसको ब्रह्माने रचा फिर रुद्रने जपा तब ब्रह्महत्या से मुक्तहुये व इन्द्रभी इसीके जपने से पापोंसे छूटे ३९ ॥

चौ० देव सिद्ध ऋषि गुह्यकआदी । विद्याधर नर विगतविवादी ॥
सब यह स्तवन पढ़त करिछोहू । मनवाञ्छित पायहु गतमोहू ॥
जो मम पढ़िहि कबहुँ सुस्तोत्रा । पुण्य पुत्र धन धान्य सुगोत्रा ॥
सो पाइहि यामहँ न विचारा । करनचही सुनिवचन हमारा ॥
इमि कहि भूपति सों भगवाना । कह्यहु भूप अब करहुपयाना ॥
गहहु हमार पाणि पुनि चलहू । बसहुलोक ममसदा अचलहू ॥
जब हरि निजकर भूपहि दीना । देव स्वर्ग्गमहँ अतिमुदकीना ॥
दीन दुन्दुभी बहुत बजाई । किन्नर गन्धर्व्वन तब गाई ॥

श्रेष्ठ अप्सरा नाचनेलगीं फूलों की वर्षा देवता सब ऋषि करते भये और वेदके स्तोत्रों से स्तुति करनेलगे तब स्त्रीसहित राजा हरि लोक को जाता भया ४० । ४१ तो देवसमूहों से स्तुति कियेहुये

राजा को देखकर विज्वल प्रसन्न मन होकर महाप्रभाव युक्तहोकर शीघ्रतासे जहां माता पिता थे वहां आगया ४५ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे च्यवनचारित्रेनवनवतितमोऽध्यायः ९९ ॥

सौ अध्याय ॥

दो० सौंअध्यायमहँ किय तृतिय सुत कैलास बखान ॥
यक नारी यक पुरुष की भाषी कथा महान १

विष्णुजी राजावेनसे बोले विज्वल उसी नर्म्मदा नदीके सुन्दर तट परके वट वृक्षपर आया कि जहां उसका पिता था व आकर पिता के प्रणामकरके १ वासुदेवाभिधान स्तोत्रकी महिमा उस महामति धर्मात्माने अपने पिता से सब यथाक्रम कही २ कि जैसे श्रीविष्णु भगवान्जी ने आकर सुन्दर वर दिया सब प्रसन्न मनहोकर उसने वर्णन किया ३ व कुञ्जलने अच्छेप्रकार ध्यान देकर सब वृत्तान्त सुना तब बड़े हर्ष से युक्तहोकर विज्वल पुत्रको आलिंगन कर ४ उसे कहा कि हे वत्स ! तुमने महात्मा राजाके लिये पुण्यकिया जोकि वासुदेवजी के कीर्त्तनसे महापुण्यकारी उपकार किया ५ इस प्रकार तिस पुत्रसे कहकर आशीर्वाद देकर देव समान पुत्रकी बार बार स्तुति करतेभये ६ और च्यवनजी के देखतेही देखते सुन्दर नदी के किनारे स्थितरहे यह सब तिन महात्मा वैष्णवों का वृत्तान्त तुमसे कहा ७ हे महाराज ! और क्या तुमसे कहें इतनी कथा सुनकर राजावेन ने श्रीविष्णु भगवान्जी से कहा कि शंख पात्रमें अमृत हमारे पीने के लिये आपने दिया ८ तो पृथ्वी में उसके पीने की श्रद्धा किस मनुष्य को न हो इससे उत्तम वैष्णव ज्ञान सदैव जो आपने कहा उसके सुनने में हमारी तृप्ति नहीं हुई है अमृतरूप पानकियाहै सुननेमें हे देवदेवेश ! हमारी श्रद्धा बढ़ती है ९।१० अब प्रसन्नहोकर कुञ्जलका चरित हमसे कहिये कि वह वृत्तान्त सुनकर उस महात्माने अपने चौथे पुत्रसे फिर क्या कहा ११ हे देव ! वह हमसे विस्तारपूर्व्वक कृपाकर कहिये श्रीभगवान्जी बोले कि सुनो

हम कुञ्जलका चरित तुमसे कहेंगे १२ व च्यवनमुनिका भी बहुत कल्याण युक्त चरित्र कहेंगे हे नरश्रेष्ठ ! यह पुण्य बढ़ानेवाला पाप-नाशनेहारा आख्यान १३ जो कोई मनुष्य भक्तिसे सुनताहै वह सहस्र गोदानका फलपाताहै १४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवन चरित्रेशततमोऽध्याय १०० ॥

एकसौएक का अध्याय ॥

दो० इकसौइक अध्यायमहँ कुञ्जल सुन्यो विचित्र ॥
निजचौथेसुत शिवचरित पितुसों कह्योसुचित्र १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि देवदेव हृषीकेशजी नृपोंमें उत्तम अंगके पुत्र राजावेन से पापनाशन बड़े कल्याण युक्त आख्यान को कहते भये १ कि कल्याणदायक कुञ्जलमहात्मा और च्यवन ब्राह्मण का वृत्तान्त हमसे सुनो हम कहते हैं २ विष्णुजी बोले कि धर्म्मात्मा कुञ्जलने आनन्द युक्तहो अपने चौथे पुत्रको बुलाकर उससे कहा कि जिसका कपिञ्जल नाम था ३ कि हे पुत्र ! तुम जब भोजन के लिये जाते हो तो क्या अपूर्व्व देखते हो व कहां जातेहो ४ हे महाभाग ! जो कुछ पुण्यदायक चरित्र तुमने देखाहो हम से अवश्य कहो यह सुनकर कपिञ्जल बोला कि हे तात ! जो आपने पूँछा है तो हम अपूर्व्व कहते हैं ५ जोकि किसीने न देखाहोगा न सुनाहोगा न हमनेही कभी किसीसे सुनाथा वह अब हम इस समय आपसे कहते हैं हे पिताजी ! सुनिये ६ व ये सब हमारे भाईलोग भी सुनें व माताजी तुमभी सुनो चन्द्रमा के समान श्वेत कैलास नाम पर्व्वत श्रेष्ठ है ७ जोकि नानाप्रकार के धातुओं से समाकीर्ण व नानाप्रकार के वृक्षोंसे उपशोभित है व पुण्यशुभ गङ्गाजलसे सब ओरसे क्षालित होताहै ८ व दिव्य सहस्रों नदियों के प्रवाह उसपर चलते हैं जिनसे अनेक प्रकारके जल उत्पन्न हैं ९ महागिरिमें जल समेत सहस्रों तालाबहैं सुन्दरी नदियाँहैं जोकि हंस और सारसों से सेवितहैं १० पुण्यदेनेवाली और पापनाशनेहारीहैं तिसपर्व्वत श्रेष्ठ

में अनेकप्रकार के फूलेफले वनहैं ११ जोकि अनेकप्रकारके वृक्षों से युक्त शुभहरेहैं और पर्व्वत किन्नरों के समूहों से युक्त अप्सराओं से आकुल १२ गन्धर्व्व चारण सिद्ध देवसमूहों से सुशोभित दिव्य वृक्षवनोंसे युक्त दिव्यभावोंसे आकुल १३ सुन्दरशोभा युक्त दिव्य गन्धों और अनेकप्रकार के रत्नोंसे युक्तहै स्फटिकमणियों की सफ़ेद शिलाओंसे उपशोभित १४ व हे राजन्! सूर्य्यके तेजके समान तेजोंसे विराजमान व मनोहर गन्धवाले चन्दन के वृक्षोंसे और नीले पुष्पों वाले बकुलोंसे १५ व और भी नानाप्रकारके पुष्पमय वृक्षोंसे सब ओर अलंकृत व पक्षियोंके दिव्य मधुरनादों से नादित १६ भ्रमरों के शब्दों से शब्दायमान वृक्षसमूहों से शोभित कोकिलों के नादसे वनसमेत पर्व्वतशोभित होरहाथा १७ कोटि गणोंसे समाकीर्ण वहां पर शिवजी का मन्दिर है जोकि किरणों से उज्ज्वल पुण्यकारी पुण्य राशिके पत्थरोंकाहै १८ सिंह गर्जरहे हैं सैरिभहाथी और दिशाओं के हाथियों के सुन्दर शब्दों से चारोंओर शब्द युक्त १९ अनेकप्रकारके मृग और वानरगणों से आकुल गुहाओं में मुरैलोंकी वाणी से शब्द समेत २० नानाप्रकारकी लेपनकूट कन्दराओं से शोभित व कँगूरोंसे विराजमान नानाप्रकारके झरनों व ओषधियों से विराजित २१ इस प्रकारके दिव्य सुन्दर गुणयुक्त पुण्यकारी पुण्यस्थानों से युक्त पुण्यकीराशि महापर्व्वत पुण्यकारी मनुष्यों से सेवित है २२ व पुलिन्द भिल्लकोलों से भराहुआ व विकट शिखरों और कोटों से पर्वतराज प्रकाशितहै २३ व अन्य नानाप्रकारके पुण्य शुभ कौतुक मङ्गलोंसे विराजमान व गङ्गाजीके बहुतसे प्रवाहोंसे शब्दायमान २४ ऐसेमहादेवजी के गृहयुक्त कैलास पर्व्वत पर हे तात! हमगये वहां पर जो आश्चर्य्य हमने देखा वह कभी न देखाथा न सुनाथा २५ सो हे तात! अब सब सुनिये तुमसे कहतेहैं उस पर्व्वतराजका एक बड़ाभारी शिखर है जोकि पुण्यकारी बड़ेउदयवाला है २६ हे महाभाग! वहांसे गंगाजी का पाला दूधके समान सुन्दर वर्णवाला प्रवाह वेगसे पृथ्वीपर गिरता है जोकि शब्दसे भूषितहै २७ कैलास के शिरको पाकर विस्तृत दशयोजन का बड़ाभारी गंगाजी का सर

है २८ जोकि पुण्यकारी विमल बहुत जलसे विराजित है सबओर कल्याणभावको प्राप्त बड़े हंसों से शोभितहै २९ हंस पुण्यकारी दिव्य मीठे सामवेद के उच्चारसे वहांपर शब्दकरते हैं तिससे सर विराजमान है ३० तिसके किनारे शिलामें हिमवान् की कन्या रूप द्रविणशालिनी शिरके बाल खोले हुई बैठीथी ३१ दिव्यरूपसे युक्त गुणों से सम्पन्न व दिव्य लक्षणों से युक्त दिखाई देती दिव्यअलङ्कारों से भूषित विराजमान होतीथी ३२ नहीं जानते कि वे पर्व्वत राजहिमवान् की कन्या पार्व्वतीहैं वा समुद्रकी कन्या लक्ष्मीजीहैं कि तो ब्रह्माजी की पत्नी ब्रह्माणी हैं वा अग्निकी भार्य्या स्वाहा ३३ वा महाभाग्यवती इन्द्राणी वा चन्द्रमाकी स्त्री रोहिणी है हे तात! इस प्रकारकी रूपकी सम्पत्ति और सुन्दर स्त्रियों के नहीं दिखाई देती जैसा रूप सम्भाव व गुण शील उस स्त्रीका दिखाईदेताहै ३४ । ३५ वैसा रूप लक्षण अप्सराओं का भी नहीं है कि जैसा विश्वमोहन अंग हमने देखा ३६ शिलामें बैठी दुःख समेतभी थी उसका कोई बन्धु उसके समीप नहीं था इससे बड़े स्वरसे रोदन करती थी ३७ व मोतियों के समान निर्मल बहुत से आंसु सरमें गिरातीथी ३८ वे आंसुओं के बिन्दु मोती के समान उस बड़ेजल में गिरते उनसे दिव्यकमल वहां उत्पन्न होते चलेजाते जिनमें कि महासुगन्ध आताहै ३९ इस प्रकार उन सब आंसुओं से कमलही उत्पन्न होते हैं व फिर वे असंख्य पुष्प गङ्गाजी के जलमें उतराते हैं ४० फिर वेगसे जितने कमलके पुष्प गिरते हैं वे गङ्गाजी के प्रवाहमें बहते हैं वह गङ्गाजीके प्रवाहका मध्य हंसवृन्दों से सुसेवित है ४१ गङ्गाजी का प्रवाह तिसी स्थान से निकला है कैलास के सुन्दर कन्दरावाले रत्ननाम शिखरको प्राप्तहोकर ४२ दो योजन का विस्तृतजलसे पूर्ण वर्तमान प्रवाह है जो कि हंसवृन्दों से युक्त जल के पक्षियों से आकुलहै ४३ हे तात ! मुनिसमूहों से सेवित निर्म्मल प्रवाहमें अनेक वर्णवाले कमलहैं ४४ जो प्रातःकाल आंसुओं से उत्पन्न कमल होते हैं वे बहुत सुगन्धित गङ्गाजल में डूबते ४५ निर्मल जल भरे हुये प्रवाहमें उतराते हैं मध्यमध्यमें सुन्दर हंस और जलके पक्षी शब्द

करते हैं ४६ सूतजी शौनकादिकों से कहते हैं और हे पिताजी ! मैं आपसे कह रहाहूं तिस रत्नपर्व्वत में रत्नेश्वर महादेवजी देवता दैत्यों से पूजित सदैव स्थित रहते हैं ४७ तहांपर मैंने किसी पुण्यात्मा मुनि को देखा जो कि जटाभारसे युक्त वस्त्रहीन दण्डधारे ४८ निराधार निराहार तपस्या से अत्यन्त दुर्बल दुर्बलअङ्ग हाड़समूहों से युक्त त्वचामात्र से आच्छादित थे ४९ महात्माजी के सब अङ्गों में भस्मलगी थी सूखे गिरेहुये पत्तोंका भोजन करते थे ५० शिवभक्ति में बैठेहुये दुराधार महातपस्वी आंसुओं से जो सुगन्धित कमल उत्पन्नहों ५१ उनको गंगाजी के जलसे लेकर देवदेव रत्नेश्वर महादेवजी को पूजनकरताहै वह गीत और नाचमें निपुण ५२ महादेव जी के द्वारमें स्थितहोकर गाता नाचता और मठमें आकर धर्मात्मा सुन्दर स्वरोंसे रोताहै ५३ हे तात ! हे कहनेवालों में श्रेष्ठ ! यह मैंने अपूर्व देखा है प्रसन्न होकर जो आप कारण जानतेहों तो मुझसे कहें ५४ वह महाभाग्यवती कौन स्त्री थी और हे तात ! क्यों रोती थी और वह देव पुरुष क्यों देव महेश्वरजी को पूजता था ५५ यह सब सन्देहकारण हम से विस्तारसे कहिये जब कपिंजल पुत्रने महाबुद्धिमान् कुंजलजी से इस प्रकार कहा तो कुंजलजी मुनि के सुनतेही सुनते विस्तारसे कहने लगे ५६ । ५७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेएकाधिकशततमोऽध्यायः १०१ ॥

एकसौ दोका अध्याय ॥

दो० द्व्यधिकसवें महँ पितु कह्यो सुतसों नन्दनगाथ ॥
जहँ शिवसँग गिरिजाप्रकट किय यक नारिसनाथ १

कुंजलजी बोले कि हे पुत्र ! जो तुमने हमसे पूँछा सब हम इस समय तुम से कहते हैं जिससे कि उन दोनों का ज्ञान तुमको होगा १ स्त्रियों में उत्तम महादेवी पार्व्वतीजी एक समय क्रीड़ा करतीहुई महात्मा महादेवजी से यह वचन बोलीं कि २ हे महादेवजी ! हमारे पेटमें गर्भ है इससे उत्तम वन हमको आप दिखावें ३ महादेवजी

बोले कि बहुत अच्छा ऐसाही होगा हे महादेवि ! अब देवताओंसे युक्त पुण्यदायक द्विजसिद्धों से सेवित नन्दन नाम वन तुमको दिखावेंगे ४ ऐसा उन देवीजी से कह उनके व अपने सब गणों के सङ्ग महादेवजी नन्दनके चलने में उत्सुक हुये ५ इस लिये सर्व्वांग सुन्दर, दिव्य, पुष्ट व आभरणों से युक्त घण्टा माला पहिने किंकिणी जालों की माला धारे ६ चामर व पुण्य वस्त्रों और मोतियों की मालाओं से शोभित हंस व चन्द्रमा के समान उज्ज्वल सुन्दर लक्षण युक्त अपने नन्दीश्वर नाम वृषभपर ७ आरूढ़हुये उनकेसङ्ग किरोड़ा गण थे जैसे कि नन्दी, भृङ्गी, महाकाल, स्कन्द, चण्ड, महोदर ८ वीरभद्र, गणेश, पुष्पदन्त, मणीश्वर, अतिबल, सुबल, मेघनाद, घटावह ९ घण्टाकर्ण,कालिन्द, पुलिन्द, वीरबाहुक, केशरी, किङ्कर, चण्डहास, प्रजापति १० इन गणोंको छोड़ औरभी सनकादि महा तपस्वी लोग व अन्य भी किरोड़ों गणों से युक्त होकर शिवजी ११ देवता किन्नरों से सेवित उस नन्दनवन में इन बहुतसे गणों से युक्त पार्वती समेत पैठे १२ व देवेश महादेवजी ने पार्व्वती जीको सब नन्दनवन दिखाया जो कि अति सुन्दर नानाप्रकारके वृक्षों से संयुक्त बहुत पुष्पादिकों से भराहुआ १३ दिव्य केलोंके वनोंसेयुक्त व फूलेहुये चम्पाके वृक्षों से विराजमान पुष्पित मल्लिका व मालतियों से शोभित १४ नित्य पुष्पित पाड़रकी शाखाओंसे शोभित व चन्दनादि सुगन्धित महावृक्षों से विराजमान १५ देवदारुओं के वनों से सेवित व अन्य बहुत बड़े ऊँचे २ वृक्षों से समाकुल, सरल, नारियल, सुपारी १६ खजूर, कटहल के फलभार से झुकेहुये वृक्षों से शोभित परिमल,कृतमाल,तमाल,शालके पुण्यवृक्षोंसे समाकुल १७ अग्निके तेजके तुल्य प्रकाशित सप्तपुर्णी के वृक्षों से सुशोभित तालके व और भी बहुत से सुगन्धित पुष्पों की शोभासे सदैव शोभित १८ जामुन, नींब, मातुलिंगादि वृक्षों से समाकुल, नारंगी, सिन्धुवार, प्रियाल, शाल, तिन्दुक १९ गूलर, कैथा, राजजम्बू के वृक्षोंसे शोभित बड़हल आदि महकतेहुये वृक्षोंकी शोभा व सुगन्धिसे समाकुल २० व आम फलराजादि मेघों के समान नीलवृक्षों सेयुक्त नीलदिव्य शालके और

जालाओं के वनों से शोभित २१ सूर्य के समान विशाल तमालों से सेवित था ऐसे पुण्यकारी नन्दनवनको शिवजीने दिखाया २२ व बहुत घने जोकि और सब नीलवनकेसमान वृक्षोंसे शोभित सबकाम फलसे युक्त कल्याण फल देनेवाले २३ महापुण्यकारी कल्पवृक्षों से शोभित नन्दनवनहै और अनेकप्रकारके पक्षियोंके मीठेस्वरोंसे नाद युक्त है २४ कोकिलाओं के पुण्यकारी मीठे शब्दों समेतहै मकरन्द के लोभी पक्षियों के शब्द से नादित है २५ अनेकप्रकार के वृक्षों और अनेकप्रकार के मृगसमूहोंसे भी युक्तहै वृक्षोंसे अनेकप्रकारके सुगन्धित फूल पृथ्वीमें गिरते हैं २६ तब सुगन्धों से पूजितहुई की नाईं पृथ्वी वह प्रकाशित होतीहै वहांपर महापुण्यकारिणी कमलकी सुगन्ध से निर्मल बावली हैं २७ जोकि जलोंसे पूरित हंस चकई चकवासे सेवित जलकी सुगन्ध से पूजित सागरके समान तालाबों से २८ सबओर नन्दनवन प्रकाशितहै अप्सराओंके समूह विमान सुन्दर कलश और सुशोभन सोनेके दण्डोंसे युक्तहै २९ नन्दनवन राज अमृतयुक्त महलों से जहां तहां प्रकाशित है किन्नरोंके महागणोंसे ३० गन्धर्व सुरूपवती अप्सराओं से देवताओं के विनोदोंसे मुनिवृन्दों से सुन्दर योगियों से ३१ सब जगह नन्दनवन शोभित है इस प्रकार देवी समेत महानुभाव महात्मा शिवजी पुण्यवानों के निवासके स्थान सुखकी खानि शान्ति गुणोंसे युक्त ३२।३३ सूर्य्य तेजकेतुल्य प्रकाशित इस प्रकारके नन्दनवन में पार्व्वतीजी सहित श्रीमहादेवजी ने सबओर उनको दिखाकर फिर सूर्य्यतेज से प्रकाशित पुष्पों व फलोंसे युक्त कल्पवृक्ष नाम महावृक्षको देखा ३४ व ऐसे कल्पवृक्षको देखकर पार्व्वती जी श्रीशिवजीसे बोलीं किहेनाथ! इस वृक्षकानाम बताओ क्याहै क्या यह पुण्यवानोंकी मूर्त्ति है ३५ वा तेजस्वियोंमें श्रेष्ठ सूर्य्य है यह सुनकर शिवजी देवीजी से बोले कि इसकी प्रतिष्ठा बड़ी शुभहै जैसे देवताओं में मधुसूदन भगवान् श्रेष्ठहैं ३६ नदियोंमें गंगाजी श्रेष्ठहैं व जैसे सब सृष्टि करनेवालोंमें ब्रह्मा श्रेष्ठहैं व अमृतस्राव होनेके कारण जैसे चन्द्रमा सबतारागणों में श्रेष्ठ है व धारण पोषण करनेवालों में जैसे पृथ्वी श्रेष्ठ है ३७ व

जैसे सब हाथियों में ऐरावत नाम हाथी श्रेष्ठ है व जैसे सब जलाशयोंमें समुद्र श्रेष्ठहै हे देवि ! जैसे सब महौषधियों में अन्न श्रेष्ठहै व पर्वतों में जैसे हिमवान् श्रेष्ठहै ३८ सब विद्याओं में जैसे ब्रह्मविद्या श्रेष्ठ होती है व जैसे सब मनुष्यों में राजा श्रेष्ठ होता है वैसेही यह सब वृक्षोंमें श्रेष्ठ कल्पवृक्षहै सबकाअतिथि व देवराज का परमप्रिय है ३९ यह सुन पार्व्वती जी बोलीं कि हे महाराज ! वृक्षराज कल्प॰ वृक्ष के सब शुभ पुण्यकारी गुण हमसे कहो ऐसा सुन महादेवजी अपनी प्रिया पार्व्वतीजीसे बोले कि ४० जो २ लोग भूतलपर पुण्य करते हैं व स्वर्ग्ग को आते हैं वे देवरूप होकर इसी कल्पवृक्ष के प्रसादसे यहां वाञ्छितपद भोगते हैं व सब सुखकरते हैं ४१ और इसीसे पुण्यकारी तपस्वी सब होते हैं यह जीत्राधिक रत्नमय दिव्य और यहां भी दुःखसे प्राप्तहोने योग्य है महाप्रधान देवता इसको पाकर सुख भोगते हैं ४२ शिवजीका वचन सुनकर व आश्चर्य्यभूत समझकर पार्व्वतीजीने अपने मनसे संकल्प किया कि इसमेंसे जो दिव्य एकस्त्री निकलती तो अच्छाथा ४३ यह संकल्प करतेही सब दिव्य वस्त्र भूषणों से भूषित अतिरूप शील गुणवती एक स्त्री उस कल्पवृक्ष से निकलआई व पार्व्वतीजी ने उसको ग्रहण किया उस का रूप ऐसा था मानों विश्वभर के मोहनेके लिये व कामकी सहायताकरने ४४ व क्रीड़ा करने के लिये सुख सिद्धिरूप उत्पन्न होकर वहां आईथी व उसके नयन कर चरण सब कमलके तुल्य कोमल बड़े आदिथे व सब सिद्धिरूप थी व उसका मुख कमल के तुल्य कर पङ्कज के समान देहकारंग तपाये हुये सुवर्ण के रंगका ४५ व सब विमलतेज केशनील व घूँघुरवाले बड़े लम्बे पर बहुतही पतले और चीकने नम्र व लालरेशम से अच्छे प्रकार बँधे सुगन्धित पुष्पगुहे व सुगन्धित लेपअतर इत्यादि लगाये हुये ४६ पाटी उसकी ऐसी दृढ़ व चीकनी बनीथी कि देखतेही बनता था केशपाशों में मोतियों की मालापुहीथीं जैसे वृक्षोंपर ओसके बिन्दु प्रातःकाल शोभित होतेहैं ४७ व पाटीकेनीचे मस्तकपर पीततिलक बृहस्पति के समान शोभितहोता वह तिलककेसर व कस्तूरी घिसकर लगायागया था व अपने

तेजों से विराजित होता था ४८ व केशपाशके नीचेका तिलक उत्तम शोभाकोप्रकाशित कराता था व केशोंके बीच २ में जो मोतियोंकीलड़ें लगी थीं अत्यन्त शोभित होती थीं ४९ जैसे पूर्णमासी का चन्द्रमा प्रकाशित होता है वैसेही मुख प्रकाशित होताथा मुखकी गोलाई व प्रकाश पूर्णमासी के चन्द्रमाके समान शोभित होताथा पूर्णमासी के चन्द्रमा में भी कलङ्क रहता है व दिनमें उसका कुछ प्रकाश नहीं रहता पर उसका मुख निष्कलंक व रात्रि दिन सदा प्रकाशित रहता क्योंकि सदा हृष्टपुष्ट बनारहता था व चन्द्रमा कृष्णपक्षमें प्रतिदिन कलाहीन हुआकरता है व वह सदा कलाओंसे पूर्णथा वह सकलंक व मुख निष्कलंक था कमलमुखी सब गुणोंसे उपपन्न उसको देखकर व अपना गन्ध उसमें देखकर कमल पवन लगतेही कांपनेलगे कि हम में ऐसा गन्ध नहीं है ५० । ५३ इससे सहसासे लज्जितहोकर वह जाकर सदैव पानीमें रहनेलगा कोई २ नियत मतिवाले कहतेहैं कि कामका कोश समुद्रमें रहताहै ५४ इसीसे वह अपनी कलाओंसे सुन्दरदाँतोंको रत्नरूप दिखाताहुआमानों हँसता था ओष्ठ पक्के कुँदुरू के समान अरुण उससे शोभायमान मुखथा ५५ सुन्दरभौंहें सुन्दर नासिका सुन्दर कान रत्नों से भूषित सुवर्णकी कान्तिके समान दीप्ति संयुक्त कपोल थे ५६ ग्रीवामें तीनरेखा शोभित थीं वे रेखासौभाग्य शील शृङ्गारों से थीं ५७ कठिनपीन व गोले उसके कुचकुम्भ मानों कामराज के अभिषेक के लिये निर्म्मितहुये थे ५८ कन्धे दोनों ऐसे समान शोभायुक्त थे कि वैसे कहीं दिखाईही नहींदेते भुजभी दोनों समान चढ़ाउतार सब शुभलक्षणयुक्तथे ५९ कर कमलोंकी अँगुलियां पांच पांचोंकेसमानथीं व सब दिव्यलक्षण संयुक्तथीं ६० नखयुक्त अँगुलियां सब सीधा व मध्यमासे दोनों ओरोंको कुछेक यथाक्रम नीचेको झुँकतीगई थीं तीक्ष्ण नख जलबिन्दुके समान थे ६१ उसके अङ्गों का रंगभी पद्महीके समान था इससे जान पड़ता था कि मानों सब प्रकार से वह पद्मिनीही थी ६२ सब अङ्ग सब लक्षणों से सम्पन्न होनेके कारण परमसुन्दर लगते थे चरण दोनों अति कोमल लाले कमलके सदृश नम्रथे ६३ व चरणोंके नखोंकी ज्योति रत्नोंके प्रकाश

के समान प्रकाशित थी जैसे शास्त्रों में कहा है तैसे उसके अंगों में सब रूपथे ६४ व सब आभरणों की शोभा से शोभित हार कङ्कण नूपुरयुक्त क्षुद्रघण्टिका से शोभित ६५ नीले रेशमी वस्त्रों से भूषित दिव्य लाल कंचुकधारेथी इससे बड़ी शोभाको प्राप्तथी ६६ ऐसी स्त्रीको पाकर कल्पवृक्षसे प्रसन्नहोकर पार्वतीजी फिर महादेव जीसे बोलीं ६७ कि हे स्वामिन् ! जैसा तुमने इस कल्पवृक्षका माहात्म्य कहा कि जो कुछ चाहो सब देसक्ता है हमने सब देखा क्योंकि हमारे संकल्प करतेही यह स्त्री उत्पन्नहोगई बस जैसा प्रभावहै हमने सबदेखा ६८ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि ऐसा पार्व्वती जी महादेवजी से कहतीही थीं कि इतने में उस स्त्रीने आकर उन दोनों के भक्तिसे चरणकमलोंमें प्रणामकिया ६९ व बोली कि आप ने हमको क्यों उत्पन्न किया इसका कारण कहिये ७० श्रीपार्वतीजी बोलीं कि वृक्षका कौतुक देखने के लिये व महत्त्व जानने के लिये हमने तुमको उत्पन्नकराया है ७१ हे भद्रे ! तुम्हारे रूपकी सम्पदा से शीघ्रही फलको प्राप्तभई लोकमें अशोकसुन्दरी तुम्हारा नाम होगा सब सौभाग्यसम्पन्न होकर तुम हमारी पुत्री कहाओगी इस में कुछभी सन्देह नहीं है ७२ ॥

चौ० सोमवंश भूषण महिपाला । नहुषनाम जो परमविशाला ॥
जो पुनि होइहि इन्द्र पुनीता । तापत्नी तुमहोब विनीता ७३
इमि दै वरगिरिजा निज धामा । शिवयुतगईं परमअभिरामा ॥
गिरि कैलास सुहावन पावन । जो सबभांति विचित्रबनावन ७४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

दो० तीन अधिक सवयेंमहँ हुण्ड शैलजा कन्य ॥
वार्त्तातातप दैत्य कर है विचार नहिं अन्य १
आयु भूपतप अत्रिसुत सों पायहु वर पूत ॥
यहवर्णित यामहँ सकल बहुत भांति मजबूत २

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि वह सब स्त्रियों में श्रेष्ठ अशोकसुन्दरी सब काम गुणोंसे युक्त पुण्यकारी नन्दनवनमें विहार करनेलगी १ व उसके संग औरभी बहुतसी सुरूपवती देवताओंकी कन्याभी खेलती थीं उनके संग मन्द २ हँसती हुई गाती नाचती सब भोगोंको भोगनेलगी २ एकसमय विप्रचित्तिनाम दैत्यका पुत्र स्वेच्छाचारी महाकामी अतितीव्रस्वभाव हुण्डनाम दैत्य नन्दनवन में आया ३ उसने सब आभरणों से भूषित अशोकसुन्दरी को देखा व उसके देखनेसे वह दैत्य कामबाणोंसे अतीव व्याकुल हुआ ४ व उससे बोला कि हे शुभे ! तू कौनहै व किसकी स्त्री वा कन्याहै व किस कारणसे इस नन्दनवनमें आई है ५ इतना सुनकर अशोकसुन्दरी बोली कि सुनो हम अतिपुण्य शिवजीकी कन्याहैं व कार्त्तिकेयजीकी भगिनी हैं व पार्वतीजी हमारी माता हैं ६ व बालभाव से क्रीड़ा करनेके लिये इस नन्दनवनमें आई हैं आप कौनहैं और किसलिये हमसे ऐसा पूछतेहैं ७ तब हुण्डबोला कि हम विप्रचित्ति दैत्यके पुत्र हैं सब गुण लक्षणों से युक्तहैं हुण्ड ऐसा हमारा नाम है व बलवीर्य्य मद से उद्धत हैं ८ हम दैत्योंमें सबसे श्रेष्ठहैं देवलोक व मर्त्यलोक में भी तप व यश करने में हमारे तुल्य और कोई नहीं है ९ अन्य नागलोकादिकों में भी हमारे समान रूपवान् कोई नहीं है सो हे विशालनयने ! हम तुमको देखतेही कामके बाणोंसे मारेगये १० अब तुम्हारे शरण में हैं प्रसन्नतासे सुमुखी होओ व हमारी प्राणप्यारी तुम अपने आप होओ ११ इतना सुनकर अशोकसुन्दरी बोली कि सुनो सब सम्बन्धका कारण हम तुमसे कहेंगी इसलोकमें जितनी स्त्रियां वा पुरुष उत्पन्नहोते हैं उनको पति वा स्त्री जो मिलनेवालेहोते हैं वेही मिलते हैं १२ हे हुण्ड ! संसारमें यही व्यवस्था है परन्तु ऐसा होतानहीं जिसका जिसके संग विवाहहोनेवाला होताहै होता है कुछ किसीके चाहने से नहींहोता १३ परन्तु एक कारण है जिससे हम तुम्हारी स्त्री नहीं होती हे दैत्यराज ! वह वृत्तान्त हमसे चित्तलगाकर सुनो १४ हे महामते ! जब हम वृक्षराज कल्पवृक्ष से उत्पन्नहुई तब पार्वती हमारी माताने हमारे लिये यह सङ्कल्प करदिया १५ व

वह सङ्कल्प महादेवजी के सम्मतसे भी उन्होंने किया था वह यह है कि महाप्राज्ञ धर्म्मात्मा सोमवंश में १६ बड़े विजयी वीर्य्य में विष्णु भगवान्केही समान तेजसे अग्निके तुल्य सर्व्वज्ञ सत्यवादी व धनमें कुबेरके समान १७ यज्ञकरने में तत्पर महादानी सुरूप में कामकेतुल्य धर्म्मात्मा गुणशील में महानिधि नहुष नाम महाराज हैं १८ सो महादेवजीके सम्मतसे पार्व्वतीजी ने हमारे लिये उन्हीं नहुष को पति नियत करदिया है व कहाहै कि उनसे सब गुणयुक्त सुन्दर पुत्र तुम पाओगी १९ तिससे महादेवजी के प्रसाद से संसारमें इन्द्रोपेन्द्र के समान मनुष्यों के प्यारे राजर्षिवीर ययातिजीको प्राप्त होंगी २० हम पतिव्रता स्त्री हैं इससे अब यहां से चलेजाओ व सर्व्वथा भ्रांतिछोड़ो २१ तब हँसकर हुण्ड बोला कि देवी व महादेव ने तुम्हारे लिये योग्यपति नहीं नियतकिया न उचित वचनही कहा २२ क्योंकि धर्म्मात्मा राजा नहुष तो बहुत दिनों के पीछे सोमवंश में उत्पन्नहोंगे फिर आप तो उनसे बहुत जेठी होंगी व वे अवस्था में बहुत छोटेहोंगे फिर तुम्हारा उनका विवाह कैसे होगा २३ छोटी स्त्री श्रेष्ठ होतीहै पुरुष छोटा श्रेष्ठ नहींहोता है भद्रे ! वह पुरुष तुम्हारा कब स्वामीहोगा २४ इसी प्रकार तुम्हारी युवावस्था नाश होजावेगी युवावस्थाही के बलसे सदैव स्त्रियां रूपवती होती हैं २५ पुरुषोंको प्यारीहोती हैं हे श्रेष्ठमुख और वर्णवाली ! स्त्रियों को युवावस्थाही सहामूल है २६ तिसीके आश्रयसे सब मनोकामना भोगतीहैं भला यह कौन जानता है कि कब राजा आयुके पुत्र नहुष होंगे २७ युवा- वस्था अब वर्त्तमानहै सब वृथा [illegible] जाती रहे वह [illegible] में नहींआया जब आवेगा उत्पन्न होगा फिर [illegible] युवावस्था [illegible] रहेगी २८ कब वह युवावस्थासे युक्त तुम्हारे योग्य होगा इससे अब यौवनके प्रभावसे [illegible] मधुपानकरो २९ [illegible] ! हमारे सङ्ग सुखसे क्रीड़ाकरो हुण्डके ऐसे वचन [illegible] की कन्या [illegible] ३० साहस करके फिर दानवेन्द्र से बोली कि देखो [illegible] चौयुगी के [illegible] में ३१ [illegible] धर्म्मात्मा [illegible] वसुदेवकेपुत्र होंगे [illegible] रुक्मिणी कन्या [illegible]

को अपनी भार्य्या बनावेंगे ३२ जोकि प्रथम चौयुगी के सत्ययुग में उत्पन्नहुई है वह तो उनसे तीनयुगों की जेठी है ३३ पर बलदेवकी प्राणप्रिया भार्य्याहोगी सो भविष्य द्वापर युगके अन्तमें ऐसा होगा ३४ इसके विशेष एक गन्धर्व्वकी कन्या मायावती नाम हुई उसको दानवों में उत्तम शम्बरासुर हरलेगया ३५ उसके पति श्री कृष्णजी के पुत्र बड़े बलवान् प्रद्युम्नवीर यादवेश्वरों के आनन्द देनेवालेहोंगे ३६ यह बात महाभाग महावेदवादी व्यासादिकमहात्माओंने लिखाहै ३७ हे दैत्य ! ऐसा देखाजाताहै हिमवान्की कन्या संसारके रक्षाकरनेवाली पार्व्वतीजी ने हमसे कहा है ३८ तुम जो ऐसा कहतेहो तो केवल कामातुर होनेके कारण हमारे पानेके लोभ सेही कहतेहो यह बड़े पापकी वार्त्ता है पापसे युक्त व वेद शास्त्र से रहितहै ३९ शुभ वा अशुभ जो जिसके लिये भाग्य में लिखाहै पूर्व्व कर्म्म के अनुसारसे वही उसको मिलताहै ४० देवताओं व ब्राह्मणों के मुखसे जो सत्य वचन निकलता है वह अन्यथा नहीं होता ४१ हमारे भाग्यको पार्व्वतीजी ने जान लिया है तब उन्हों ने कहा है कि तेरा विवाह राजा नहुषके साथ होगा सोभी अपने आप नहीं महादेवजी के भी सम्मत से कहाहै ४२ हे दैत्य ! ऐसा जानकर चलेजाओ अपने मनकी भ्रान्ति मिटादेओ तुम मन चलायमान न करो तुमको सामर्थ्य नहीं है जो हमारे संग ऐसा करसको ४३ क्योंकि पतिव्रता चित्तमें दृढ़होती हैं इससे कौन हमारा मन चलायमान करने में समर्थहै हम महाशापसे भस्मकरदेंगी यहांसे अभी चलाजा ४४ ऐसा उसका वचन सुनकर बली दानवेन्द्र हुण्डनेभी मन से चिन्तना किया कि अब यह हमको कैसे मिले ४५ यह मायावीहुण्ड चिन्तना कर वेगसे उस स्थान से निकल कर अशोकसुन्दरी को वहीं छोड़कर अंतर्द्धान होगया दूसरे दिन फिर तमोमयी मायाकरके ४६ दिव्य मायामय स्त्रीका रूप कर मायाही से कन्या रूप होगया ४७ श्रेष्ठकारिहांववाली हास्य लीला से युक्त वह माया रूपी कन्या अशोकसुन्दरी के पास आई ४८ और उनसे स्नेहयुक्त ही की नाईं बोली कि हे सुभगे ! तुम कौनहो और किसकीहो जो कि

तपो वनमें स्थितहौ ४९ हे बाले! हे सुभगे! किस लिये अत्यन्त दुष्कर काम सुखानेवाला तपकरतीहौ सो हमसे कहो ५० तब मायारूपी अभिलाष समेत दानव के कहेहुये शुभवचन सुनकर शीघ्रही ५१ अत्यन्त दुःखयुक्त अशोकसुन्दरी ने अपनी उत्पत्ति का सुन्दर वृत्तान्त जैसे पूर्वसमय में हुआ और सब तपस्याका कारण कहा ५२ परन्तु उस दुरात्मा दानवकी माया का रूप नहीं जाना अच्छे हृदय होने से उसने कहा ५३ तब हुण्ड फिर उससे बोला कि हे देवि! तुमतो पतिव्रताहो साधु व्रत में परायण साधुशील समाचार से युक्त साधुचारा महापतिव्रताहौ ५४ हे भद्रे! हम पतिव्रता पातिव्रत धर्म्म में परायण रहती हैं हे सुभगे! महापतिव्रता हम स्वामी के लिये तप करती हैं ५५ हमारे पतिको दुरात्मा हुण्ड दैत्य ने मारडालाहै व उसके नाश करने के लिये हम घोर बड़ातप करती हैं ५६ सो अब पुण्यकारी हमारे स्थानपर चलो गङ्गातीर में हमारा आश्रम है इसके विशेष औरभी विश्वास कराने के लिये बहुतसे वचन उस स्त्रीरूपधारी हुण्डने कहे ५७ तब हुण्ड के साथ सखीका भावकरके शिवजी की कन्या मोहितहुई तब मोहित उस शिवकुमारी को हुण्ड माया से अतिमनोहर अपने स्थानपर लेगया हे पुत्र! प्रथम तो उसने गङ्गाके समीप अपना पुर बतायाथा परन्तु जब वह संग चली तो लेजाकर वह मेरुके शिखर पर वैदूर्य्य नाम पुरमें पहुँचा ५८।५९ जोकि सब गुणों से युक्त सब सुवर्णही से बनाहुआथा बड़े२ ऊँचे धवरहरोंसे समाकुल था व कलश दण्ड चामारादि नानाप्रकारके पदार्थोंसे वह पुर शोभितथा ६० नानाप्रकारके वृक्षोंसे भरेहुये मेघों के समान नील वनोंसे शोभित होराथा वापी कूप तड़ाग व नदी आदि जलाशयों से शोभित होताथा व नाना प्रकारके चित्रविचित्र मन्दिर महारत्न और सुवर्ण संयुक्त और भी बहुतसे वहां बने थे व सब कामोंसे समृद्ध दानवके ६१।६२ उस पुरको अशोकसुन्दरीने अतिसुन्दरता के साथ बनाहुआ देखा फिर पूँछा कि हे सखे! यह किस देवताका स्थानहै हमसे कहो ६३ तब वह स्त्रीवेषधारी हुण्डदैत्य बोला कि यह स्थान दानवेन्द्र हुण्डका है

जिसको कि तुमने पूर्व्वकाल में देखा है हे महाभागे ! उसीका यह है हम वही हुण्डही हैं ६४ हे वरवर्णिनि ! हम मायासे तुमको यहां लायेहैं ऐसा अपना नाम कहकर फिर सोनेसे बनेहुये अपने मन्दिर में अशोकसुन्दरीको लेगया ६५ जोकि नानाप्रकारके मन्दिरोंसे युक्त कैलास के शिखर के तुल्य था वहां लेजाकर सिंहासन पर बैठाकर कामसे पीड़ित होकर ६६ वह दैत्य हाथजोड़कर अतिविनयसे बोला कि ६७हे भद्रे ! जो २ वस्तु तुम चाहोगी सब तुमको देवेंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है इससे कामसे पीड़ित हमको हे विशालाक्षि ! भजो ६८ अशोकसुन्दरी बोली कि दानवेश्वर तुम हमको चलायमान नहीं करसक्ते हम मनसे नहीं यहां आईं तुम मायासे हमको यहां लाये हो ६९ हे दानवाधम ! तुम ऐसे महापापियोंको वा देवोंको हम बड़े दुःख से मिलने के योग्य हैं इसमें सन्देह नहीं है इससे बार २ न बक ७० तप तेजसे जाज्वल्यमान स्कन्दजी की भगिनी बड़े रोषोंसे जलाती हुई व उस दानवके नाश करने की इच्छासे कालकी जीभही के समान अपनी जिह्वा लपलपाती हुई ७१ फिर बोली कि हे पाप-रूप दानवाधम ! तूने यह उग्र कर्म अपने नाशके लिये कियाहै ७२ व अपने वंश व परिवारके भी विनाशनेहीके लिये कियाहै तूने प्रज्व-लित अग्निकी शिखाके समान हमको अपने गृहमें पहुँचायाहै ७३ जैसे कि अशुभ कुक्कुटपक्षी सब शोकोंसे युक्त होताहै व जिसके गृहमें रहताहै उसका नाश करताहै ७४ ऐसेही हम पतिव्रताओं का हाल होताहै कि जो दुष्ट हमलोगों को छलसे अपने घरको लेजाताहै पहुँ-चतेही उसके धन समेत कुल व परिवार वंशका नाश करडालती हैं इससे जो कोई हमको अपने गृहमें रखना चाहताहै वह अपने गृहका नाश चाहता है ७५ सो हम वैसेही तुम्हारा नाश चाहती हुई तुम्हारे गृह में आई हैं इससे तुम्हारे पुत्र धन धान्य सब का इस समय नाश करेंगी ७६ व जीव कुल धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सबोंको नाश करके तब अब हम तुम्हारे घरसे जायँगी इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ७७ हे दुष्ट ! हमको आयुके पुत्र नहुषजी के लिये परम दुष्कर तप करती हुई को जैसे तू यहां लायाहै ७८ वैसेही हमारा भर्त्ता आकर तेरा

नाश करेगा क्योंकि हमारे निमित्त जो उपाय तूने कियाहै उस को पूर्व समय देवने देखा था ७९ यह लोककी कथा सत्य है जिसे बुद्धिमान्लोग गाया करते हैं व प्रत्यक्ष लोक में दिखाई देता है परन्तु कुबुद्धिवाले लोग नहीं देखते ८० जिसको जहां सुख वा दुःख भोगना होताहै वही वहां जाकर भोगताहै इसमें सन्देह नहीं है ८१ इससे अब अपने इस कर्म का फल महीतल में जाकर भोग करो व पीछे परस्त्रीगमन करनेवाले जिस नरकमें जाते हैं उसमें जापड़ो ८२ सुतीक्ष्ण व सुन्दर धारवाले खड्ग के ऊपर जैसे कोई नहीं अँगुली धरसक्ता वैसेही हमको इस समय जानो ८३ भला गर्ज्जते हुये क्रुद्ध विकराल सिंहके मुखके बाल साहसके आकारसंयुक्त कौन प्राणी सम्मुख जाकर उखाड़ सक्ताहै ८४ सत्याचारयुक्त दम समेत नियत चित्त तप करती हुई हमारे सङ्ग भोगकरनेकी इच्छा जो तुम ने की है वह अपने नाशहीकी इच्छाकी है ८५ क्योंकि जो कालेनाग के जीतेही जीते कोई मणि लेनेकी इच्छा करताहै तो वह कालही की प्रेरणासे चाहताहै ८६ सो हे मूढ़ ! कालकी प्रेरणाही से मोहित तुम्हारी ऐसी कुमति हुई है उसे क्यों नहीं देखते ८७ आयुके पुत्र नहुषको छोड़कर कौन हमको देख सक्ताहै और हमारे रूपके देखने से नाशको प्राप्त होगा ८८ इस प्रकार तिससे कहकर शोक दुःखयुक्त नियत नियमयुक्त वह पतिव्रता गङ्गाजीके किनारे गई ८९ पूर्वसमय में तो पति पानेकी इच्छासे उसने परमतप कियाथा परन्तु अब तुम्हारे वधकरने के लिये फिर दारुणतप करेंगी ९० जब तुमको महात्मा नहुषजी से मारेहुये देखेंगी क्योंकि हमारे सङ्कल्परूप बाण काले नागके दांतों के समानहैं ९१ रणमें रक्तभरे केश खुलेहुये मृतक तुमको पड़ेहुये देखकर फिर हम अपने पति नहुषजी के समीप को जायँगी ९२ ऐसा निश्चयकरके गङ्गाजी के उत्तम तटपर स्थित होकर अशोकसुन्दरी हुण्ड के नाश करने के लिये तप करनेलगी ९३ ॥

हरिगीतिका ॥

जिमि अनल ज्वालाकी सुमाला सकललोक सँहारई । नहिं तनिक सोऊ प्रलय जिमि अहँ तुरत सकल बिदारई ॥ तिमि क्रोध

युत त्रिदशेशपुत्री हुण्डनाशन के लिये । तपकरनलागी सुरनदी तट समझिकै सब निज हिये ९४ ॥

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि ऐसा कहकर शिवजी की कन्या अशोकसुन्दरी गङ्गाजी के तीरपर जाय स्नानकर अपने पुर काञ्चनपुरके समीप ९५ तप करनेलगी व सङ्कल्प करदिया कि यह तप हम हुण्डदैत्यके नाश के लिये करती हैं इस प्रकार बाला अशोकसुन्दरी सत्यवादिनी होकर तप करने लगी ९६ हुण्डभी दुःखित होकर शापसे जलेहुये चित्तसे अत्यन्त वचनरूप अग्नियों से जलताहुआ अपने मन में चिन्तना करनेलगा ९७ व फिर उस ने कम्पननामदैत्य को बुलाकर कहा कि हमको बड़ा भारी शाप हो गयाहै क्योंकि हमने एक स्त्रीका पातिव्रत भङ्ग करना चाहा था ९८ इससे उस शिवकी कन्या अशोकसुन्दरी नाम स्त्रीने शापदिया कि तू मेरे पति नहुष के हाथों से मरेगा ९९ परन्तु अभी नहुष उत्पन्न नहीं हुआ आयुकी स्त्री अभी गर्भिणीही है जैसा करने से वह नहुष उत्पन्नही न हो वैसा उपायकरो १०० यहसुनकर कम्पन दैत्य बोला कि किसी युक्ति से आयु की भार्य्या तुम यहां हरलाओ बस इसी प्रकारसे तुम्हारा शत्रु न उत्पन्न होगा १०१ नहीं यदि वहां जानेपर आयुकीस्त्री गर्भिणी समझपड़े तो उसका गर्भही डरवाकर पातितकर डालो इसी प्रकारसे तुम्हारा शत्रु न उत्पन्नहो १०२ दुष्टात्मा नहुष के जन्म कालकी राह देखतेरहो आयुकी स्त्रीको यहां लेआकर पापी नहुषको पेटहीमें मारडालो १०३ इसप्रकार कम्पनसे सम्मतकरके वह दानव हुण्ड नहुषके मारडालने के यत्नमें उद्यत हुआ १०४ श्री विष्णुभगवान् राजा वेनसे बोले कि ऐलके पुत्र महाभाग आयु नाम राजाहुये ये धर्म्मात्मा पृथ्वीभरके महाराज सत्यव्रत में परायणहुये १०५ उपेन्द्रके समान तपस्या यश और बलमें थे अत्यन्त पुण्यकारी दानयज्ञों से सत्य और नियम से १०६ एक छत्रसे सब धर्म जाननेवाले राजा पृथिवी में राज्य करते भये पर सोमवंशका भूषण १०७ पुत्र कोई इनके न था इससे बड़े दुःखीहुये व उन धर्म्मात्मा ने चिन्तना की कि हमारे पुत्र कैसे हो १०८ जब राजा आयु को

ऐसी चिन्ताहुई तो एकाग्रचित्त होकर उन्होंने पुत्रके लिये बड़ी २ युक्तियां कीं १०९ अत्रिके पुत्र महात्मा महामुनि दत्तात्रेयजी के समीपगये परन्तु उस समय वे मदिरा पान करने से अरुण नेत्र किये एक स्त्री के संग क्रीड़ा कररहे थे ११० वरन वारुणी से मत्त बहुतसी स्त्रियों के मध्यमें विराजमान एक सब स्त्रियों में श्रेष्ठ शुभ स्त्री को अपने क्रोड़पर बैठायेहुये १११ बड़ी प्रीति से गाते नाचते थे मदिरा बारबार पीते थे यज्ञोपवीत भी निकाल डालाथा क्योंकि महायोगीश्वरों में उत्तम तो थेही ११२ दिव्य पुष्पों की माला व मोतियों का हार पहिने थे दिव्य चन्दनलगायेहुये मुनीश्वरजी विराजते थे ११३ उनके आश्रम पर जाकर व उन मुनीश्वरजी को देखकर राजाने शिर झुकाय पृथ्वीपर गिरकर दण्डप्रणाम किया ११४ पर वे धर्म्मात्मा अत्रिजीके पुत्र योगिराज दत्तात्रेयजी राजा को भक्तिसे आगे आये देख ध्यानमें स्थित होगये ११५ इसीप्रकार तिस राजाको सौवर्ष बीतगये तो उसकी निश्छल शांतियुक्त मानस भक्ति देखकर ११६ बुलाकर बोले कि हे नृप! तुम किस लिये क्लेश करतेहो हम तो ब्रह्माचारसे हीनहैं ब्राह्मणता हमारे कभी नहीं है ११७ हमतो मदिरा पीनेवाले मांसखानेवाले हैं एक स्त्री में सदैव आसक्त हैं इससे वर देनेमें हमको शक्ति नहीं है तुम अन्य किसी ब्राह्मण की शुश्रूषा करो ११८ यह सुन महाराज आयु बोले कि हे महाभाग! आपके समान ब्राह्मणोत्तम परमेश्वर तीनों लोकों में कोई नहीं है जो सब काम देसके ११९ आप अत्रिके वंशमें गोविन्द परमेश्वर आकर अवतरे हैं ब्राह्मण का केवल रूपही धारणकियेहैं पर हैं साक्षात् गरुड़ध्वज भगवान् १२० हे देवदेवेश! हे परमेश्वर! तुम्हारे नमस्कार है हे शरणागतवत्सल! हम तुम्हारे शरणमें हैं १२१ हे हृषीकेश! हमारा उद्धारकरो तुम मायाकरकेही इस संसार में स्थित हो व इस विश्वमें स्थित प्रजाओं के तुम धारण करनेवाले व विश्वके नायकहो १२२ जगन्नाथ मधुसूदन आपको हम जानतेहैं हमारी रक्षा करो व हे विश्वरूप! तुम्हारे नमस्कार हैं १२३ कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि बहुत कालके पीछे दत्तात्रेयजी [illegible] ने राजा

से बोले कि हमारा वचन करो १२४ मनुष्यकी खोपड़ीमें मदिराका अदहन देकर मांस पकाओ वह हमको भोजन करनेको देओ ऐसा वचन सुनकर पृथ्वी के पति आयु राजाने १२५ खोपड़ी उठाकर उसमें मदिरा भरकर शीघ्रही मांसकाटकर अच्छेप्रकार परिपक्वकरके अपने हाथसे १२६ ब्राह्मणको दिया तब प्रसन्न होकर वे ब्राह्मणसत्तम १२७ भक्ति का प्रभाव तथा गुरुशुश्रूषा देखकर नम्रमन राजा से बोले कि १२८ हे राजन् ! जो फल पृथ्वीपर दुर्ल्लभहो वह वर हम से मांगो जो २ चाहतेहो हम सब तुमको इस समय देवेंगे १२९ इतना सुनकर राजाआयु बोले कि हे मुनिसत्तम ! जो आप कृपाकर सत्य वर दिया चाहते हैं तो गुणोंसे युक्त सर्वज्ञ पुत्र हमको दें १३० जिसके देवताओं के समान वीर्य्य और अच्छा तेजहो व समर में देवता दानव उसको न जीतसकें क्षत्रिय घोर राक्षस दानव किन्नरादि कोई उससे, जीत न सकें १३१ फिर वह देवता ब्राह्मणों का भक्तहो व प्रजाओं के पालने में विशेषहो यज्ञ करनेवाला दानपति शूर व शरणागतवत्सलहो १३२ सब कुछ देनेवाला व सुख भोगने वाला महात्मा वेदशास्त्रों में पण्डितहो धनुर्व्वेदमें निपुण व सब शास्त्रों में परायण १३३ अनाहतमति व धीर संग्राममें सदा अपराजित इस प्रकारके गुणोंसे युक्त सुन्दर रूपवाला व हमारे वंश के धारण करने वाला पुत्र हमको दीजिये हे विभो ! जो कृपाकरके वरदान दिया चाहतेहो तो ऐसाही पुत्र दीजिये १३४।१३५ दत्तात्रेयजी बोले कि ॥

चौ० एवमस्तु भूपति सुत तोरे । ऐसो होय अनुग्रह मोरे ॥
गृहकुलवंशकारि अतिचातुर । पुण्यकर्म्म करवरदन आतुर ॥
वैष्णव अंशसहित गुणधारी । होइहि तनय विप्रहितकारी ॥
सार्व्वभौम भूपति सुरराजा । सरिसहोयगो सब गुणभ्राजा ॥
ऐसो तनय नहीं सन्देहू । भूपति दीन त्वरित तुम लेहू ॥
यहफल लै निज नारिहि देहू । दशयेंमास पुत्र शुभलेहू ॥
इमि दै वर फल नृपहि मुनीशा । आशिषदीन कीन नहिं रीशा ॥
अन्तर्द्धान भयहु त्यहिधामा । सब नारिनयुत पूरणकामा १३६।१३९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेऽधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

एकसौचारका अध्याय ॥

दो० वेदोत्तरशततम महँ राज्ञी स्वप्न प्रभाव ।
कहशौनक नृपसों यही सकलवृत्तवर गाव ॥

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि जब महाभाग महामुनि दत्तात्रेयजी चलेगये तो महाराज आयु अपने पुरको आये १ व हर्षित होकर इन्दुमती के गृह में प्रविष्टहुये जोकि लक्ष्मीयुक्त सब सामग्री से भरेपुरे के कारण इन्द्रभवनही के तुल्यथा २ आकर अपने राजकाज करने लगे जैसे इन्द्रपुरीका राज्य इन्द्र करते हैं व स्वर्भानुकी कन्या अपनी भार्य्या इन्दुमती रानीके संग राज्य करने लगे ३ महाराज से फलपाकर खाकर दत्तात्रेय के वचनसे महारानी इन्दुमतीने दिव्य तेजयुक्त गर्भ धारणकिया ४ उसीके दूसरी रात्रि में रानीने स्वप्नमें उत्तम बहुत मङ्गलदाता रात्रि में देखा ५ फिर सूर्य्य के समान प्रकाशित एक पुरुषको रात्रिमें अपने गृहको आतेहुये देखा फिर मोतियोंकी माला पहिने श्वेतवस्त्र धारण किये ६ व श्वेतही पुष्प की माला कण्ठमें धारणकिये सब भूषणों से भूषित दिव्य गन्ध अनुलेपन किये ७ शङ्ख चक्र गदा तलवार हाथोंमें लिये चतुर्भुजी मूर्त्ति धारण किये चन्द्रमाके बिम्बके समान छत्रधारे ८ महातेजकी शोभा से शोभित दिव्य आभरणों से भूषित हार कङ्कण बहूँटा नूपुर धारण किये ९ चन्द्रमा के बिम्बके अनुकरण करनेवाले दो कुण्डलों से विराजमान कोई इसप्रकार महाप्राज्ञ पुरुष आया १० व इन्दुमतीको बुलाकर पूर्णमासीके चन्द्रमाके समान उजले सम्पूर्ण शङ्खसे जोकि रत्न व काञ्चनसे बँधाहुआ था उससे इन्दुमतीको जलसे स्नानकराया फिर एकसहस्र शिरका कुण्डलवाला श्वेतनाग ११।१२ महामणियुक्त धाम ज्वालासे आकुल इन्दुमती के मुखमें छोड़ा फिर मोतियोंका माला कण्ठमें पहनाया फिर महायशस्वी कमल हाथमें देकर अपने स्थानको चलागया जोकि महामणि जटित सब भूषणों से भूषित १३।१४ इसप्रकार के उत्तम महास्वप्न उसने देखे व सबके सब अपने पति आयुजीसे कहे १५ यह सुनकर महाराज चिन्तना करने

लगा व गुरुजी को बुलाकर उनसे उत्तम स्वप्नका वृत्तान्तकहा १६ और महाभाग सर्वज्ञ ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ शौनक गुरुसे राजा बोले कि हे महाभाग ! हे द्विजोत्तम ! आज रात्रि में मेरी स्त्रीने १७ ब्राह्मणको घरमें जातेहुये देखाहै यह स्वप्नका कारण क्याहै तब शौनकजी बोले कि हे राजन् ! तुमने जो बुद्धिमान् दत्तात्रेयकी सेवा करके वरपायाहै भला जो सुन्दरगुणयुक्त पुत्रके हेतु फल तुमने दत्तात्रेयजीसे पायाथा उसे क्याकिया किसको दिया १८ । १६ राजाने कहा वह तो हमने अपनी स्त्रीको देदिया था ये राजाके वचन सुनकर महाबुद्धिमान् द्विजश्रेष्ठ शौनकजीने कहा २० कि दत्तात्रेय के प्रसादसे अब तुम्हारे घरमें उत्तम पुत्र उत्पन्न होगा वह श्रीविष्णुजी के अंशसे युक्तहोगा इसमें कुछ संशय नहींहै २१ हे राजेन्द्र ! स्वप्न का कारण तुमसे कहा और कुछ नहीं व इन्द्र उपेन्द्र के समान दिव्य वीर्य्यवाला पुत्र होगा २२ व वह धर्म्मात्मा सोमवंशका बढ़ानेवाला होगा धनुर्वेद व वेद का पण्डित होगा २३ ऐसा कहकर शौनक अपने गृहको चलेगये व राजा रानी बड़ेहर्ष से युक्तहुये २४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेचतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

दो० यकसैपँचयें महँ नहुष जन्महरण प्रतिपाल ॥
जिमिभोसो वर्णितकियो कुञ्जलबहुतविशाल १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि यहांकी तो यह व्यवस्था हुई कि राजा रानी वरदान पाकर अपने घरकोआये व फिर रानी सहित राजाभी आनन्दपूर्व्वक नन्दनवनमें क्रीड़ाकरनेके लिये गये वहांपर हुण्डका भेजाहुआ कम्पन दैत्य आया उसने पिता से बड़ा दुःखदायक वचनसुना जिसको आनन्द से चारण और सिद्ध कह-तेथे कि राजा आयुके ऐसा पुत्र होनेवालाहै जो पराक्रममें विष्णुके तुल्य होगा व हुण्डका नाश करडालेगा ऐसा अप्रिय दुःखदायक वचन १।२ सुनकर उस कम्पनने आकर हुण्डकेआगे सबकहा सब

वृत्तान्त दुःखदायक संक्षेप से अपने मित्रके मुख से सुनकर हुण्ड विस्मित हुआ व अशोकसुन्दरी के पहले दियेहुये शापका स्मरण किया ४।५ कि इसीलिये वह अशोकसुन्दरी तपस्या कररही है व उस दानवेन्द्र हुण्डने इन्दुमती रानीके गर्भ नाशकरनेका ६ बड़ा भारी उद्यमकिया व जाकर रूप बदलकर नित्यही छिद्रदेखताहुआ वह दैत्य रानी के समीप रहनेलगा ७ व रूप गुण उदारतासेयुक्त रानीको देखनेलगा व दिव्यतेजसेयुक्त विष्णुजीके तेजसे सदा महाराज्ञी को रक्षित देखने लगा ८ दिव्य तेजसे युक्त सूर्य्यबिम्ब की समान तिसके समीपमें रक्षा करनेके लिये सदैव स्थित रहे ९ और दुष्ट दानव तिसको दूरही से अनेक प्रकार की बड़ी उग्र अत्यन्त भयानक बहुत विद्या दिखलावे १० गर्भ के तेजसेयुक्त विष्णुके तेज से रक्षित इन्दुमतीके मनमें कभी भय न हो ११ तब दानव विफल हुआ व उसका उद्यम निरर्थक हुआ उस दुष्ट हुण्ड के मनका इष्ट न पूराहुआ १२ इसप्रकार सौ वर्ष पूरेहोगये व गर्भ बनाय पूराहो गया तब स्वर्भानुकी कन्या इन्दुमती ने रात्रि में श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्न किया उस पुत्रकी शोभा आकाश में सूर्य्य के समानहुई १३ । १४ सूतजी शौनकादि ऋषियोंसे बोले कि महादुष्ट कोई दासी सूतिका घरसे आई वह अपवित्र आचार संयुक्त महामंगल कहती थी १५ तिस दासी से सब जानकर दानवों में अधम वह हुण्ड दासी के अङ्गों में प्रवेश करके राजाआयुके मन्दिर में चलागया १६ उसकी माया से मोहित होकर सबके सबलोग वहां सोरहे थे तब हुण्ड उस देवगर्भ के समान पुत्रको लेकर चल दिया १७ व वह दानवाधम अपने काञ्चन नाम पुरमें पहुँचा व अपनी प्रिय विपुला भार्य्या को बुलाकर उससे बोला १८ कि शत्रुरूप इस महापापी बालक को अभी मारडालो व फिर भोजन बनानेवाले को देवो १९ कि वह यही मांस आज हमारे भोजन के लिये बनावे इस में नाना प्रकार के सुगन्धित पदार्थ लगाकर मांस झटपट तैयार करे हे महाभागे ! आज हम पाककर्त्ता के हाथोंका बनायाहुआ इसी बालक पापी का मांस भक्षणकरेंगे इसमें कुछभी संशय नहींहै २० अपने पतिके ऐसे

वचनसुनकर दैत्यकीस्त्री अत्यन्त विस्मितहुई कि आज हमाराभर्त्ता कैसे निर्घृणता को प्राप्तहोकर निष्ठुरहोगया २१ जोकि सब लक्षणों से सम्पन्न देवगर्भके तुल्य प्रकाशित किसीके इसबालकके खाने में उद्यतहुआहै नहीं जानती किसीके इस लड़केको निर्घृणहोकर क्यों भक्षण किया चाहताहै व कैसे कृपाहीन होगयाहै २२ ऐसा अपने मनमें विचारांश करके दयायुक्तहो फिर अपने पतिसे कारण पूँछने लगी कि तुम इसबालकको क्यों भक्षण कियाचाहते हो २३ व बड़े क्रोधसे अत्यन्त निर्लज्जहोकर क्यों ऐसा कहते हो हे दानवेश्वर ! इसका सब कारण तत्त्वसे हमसे कहो २४ यह सुनकर दुरात्मा हुण्ड ने अपनी स्त्रीसे सब अपना दोष वृत्तांत व अशोकसुन्दरी का शाप सब संक्षेपरीतिसे २५ उसे सुनकर उसकी स्त्रीने विचारकिया कि इस बालक का वध सत्य कियाजाय नहीं तो पतिही का वधहोगा २६ यह विचारकर मारेक्रोधके मूर्च्छितहोकर विपुला नाम हुण्डकी भार्या मेकला नाम अपनी दासी को बुलाकर उससे बोली कि २७ हे मेकले ! इस दुष्टमनवाले बालकको शीघ्रलेजा व भोजन बनाने वाले को दे कि वह आज हुण्डके भोजनके लिये इसीका मांस रींधे २८ मेकला बालक को लेजाकर भोजन बनानेवाले को बुलाकर उससे बोली कि राजाकी आज्ञा करो आज इसी बालक का मांस बनाओ २९ तब उसका ऐसा वचन सुनकर उस महात्मा पाककर्त्ता ने बालक को हाथसे लेकर शस्त्र निकालकर उसके मारने पर उद्यत हुआ ३० तब देवदेव श्रीदत्तात्रेयजी के तेजने उस बालककी रक्षा करली तब वह बालक बार२ हँसने लगा ३१ उसको हँसते हुये देख करवह पाककर्त्ता कृपायुक्त हुआ तबवह कृपायुक्त दासी उससे बोली कि ३२ हे महामते ! यह बालक तुम से अवध्यहै क्योंकि देखो तो कैसे दिव्य लक्षण इसके हैं हम जानती हैं कि किसी अच्छे कुलका यह बालक है ३३ यह सुनकर वह पाककर्त्ता जिसका सूदभी नाम होताहै उस दासी से बोला कि हे भद्रे ! तुम ने सत्य कहा यह वचन तुम्हारा कृपायुक्त है राजलक्षणयुक्त रूपवान् किसी का पुत्र है ३४ फिर दुष्टात्मा दानवाधम हुण्ड इसको क्यों भक्षण किया चाहताहै

जिसकी रक्षा पूर्व्वजन्म के सुकर्म्म से होतीहै ३५ वह सब आपदों से बचजाता है व नाना प्रकारके दुर्गम स्थानों में जाकर भी जीताही रहता है जिसका कर्म्म सहायक होता है वह अग्निके बीचमें गिर कर व समुद्रमें डूबकर भी बचजाताहै ३६ इससे धर्म्म पुण्यसमेत सदा कर्म्म करना चाहिये इस में सन्देह नहीं है ३७ क्योंकि ऐसेही कर्म से पुरुष आयुष्मान् होताहै व सुखभी ऐसेही कर्म्म से पाताहै कर्म्मही सब का तारक व पालकभी है व कर्म्मही जागते हुयेकी रक्षा किया करताहै ३८ कर्म्मही नित्यमुक्ति देताहै व मित्रोंका स्थानभी कर्म्मही देताहै पुण्य दानयुक्त कर्म्म व प्रियवचनयुक्त कर्म्म ३९ सदा उपकार करताहै इस से बुद्धिमान्को चाहिये कि सदा पुण्यादिसहितही कर्म्मकरे क्योंकि उसकी रक्षा सदा कर्म्मही करताहै इसमें सन्देह नहीं है ४० अपने कर्म्महीसे प्रेरित और योनि को प्राप्त होता है पिता माता अन्य स्वजन बान्धव क्या करसक्ते हैं ४१ जो कर्म्म से निहत होताहै वह नष्टही होजाताहै सूतजी बोले कि कर्म्मका रक्षित किसी का मारा मरताही नहीं ४२ उसी कर्म्मसे वह बालक रक्षित था इस से उस पाककर्त्ता के मन में दया आगई नहीं तो जोपूर्वकर्म का वश न होता तो उस दुष्टके मनमें क्यों कृपा आती व उसीबालक के कर्म्मकी प्रेरणा से वह दासीभी कृपायुक्त होगई ४३ इस से उन दोनों ने राजा आयुके सुन्दर लक्षणवाले पुत्रकी रक्षाकी रात्रिमें हुण्डसे छिपाकर वे दोनों ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठजी के पुण्यकारी आश्रमपर उस बालक को लेगये पुण्यकर्म्म करनेवाली उस दासी ने उन महात्मा के द्वारपर बालकको पौढ़ाकर आप अपने स्वामीके स्थान पर चलीआई व उस पाक करनेवाले से हरिण का वधकराके उस का मांस परिपक्व कराके ४४।४६ हुण्ड को भोजन कराया तब दुष्ट हुण्ड बहुत हर्षित हुआ कि अब तो शत्रु मारा गया व अशोकसुन्दरी का शाप व्यर्थहुआ ४७ यह विचारांश करके दानवों का ईश्वर हुण्ड अतीव हर्षितहुआ कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि जब विमल प्रभात हुआ तो मुनिसत्तम वशिष्ठजी ४८ अपने आश्रम से बाहर निकले तो देखा सब देव लक्षणों से युक्त सुवर्ण व

चन्द्रमा के समान प्रकाशित सुन्दर लोचनवाला पुत्र पड़ा है उसै देख बोले कि हे मुनिलोगो ! यहां आकर देखो तो यह किसका बालक है व रात्रिमें कौन हमारे द्वारपर फेंकगयाहै यह देव गन्धर्वोंके गर्भ के समान प्रकाशित राजलक्षणसंयुक्त ४९ । ५१ करोड़ कामके स-दृशहै मुनिलोगो देखो तो उसको देखकर सब द्विजवर कौतुकसंयुक्त प्रसन्न हुये ५२ और महात्मा आयुके पुत्र को देखते भये धर्मात्मा वशिष्ठजी ने जो ज्ञानदृष्टि से बालक को देखा ५३ तो विदित हुआ कि सत्य २ यह राजा आयुका पुत्रहै व ऐसे चरित्रसे यहांतक पहुँचा है व उस दुष्ट हुण्डकी प्रवृत्तिभी मुनिने जानली कि वह लायाहै ५४ बस झटपट मुनिराज ने कृपा करके दोनों हाथों से उस बालक को उठालिया ५५ जैसेही दोनों हाथों से द्विजवर वशिष्ठजी ने उस बा-लक को उठायाहै कि देवताओं ने बालक के ऊपर पुष्पोंकी वर्षाकी व गन्धर्व किन्नरादि ललित सुन्दर स्वरयुक्त गीत गाने लगे ५६ व ऋषि लोग मन्त्रोंसे उस महाराज कुमारकी स्तुति करनेलगे वशिष्ठ जी तिसको देखकर तिसी समय वर देतेभये ५७ कि नहुष यह नाम तुम्हारा संसारमें प्रसिद्ध होगा बालभावों से हुषित नहीं होता ५८ तिससे नहुष तुम्हारा नाम होगा और देवोंमें पूज्य होगे फिर द्विजो-त्तम वशिष्ठजी तिसका जातकर्मादिक कर्म करते भये ५९ व्रतदान विसर्ग गुरु शिष्यादि लक्षण सम्पूर्ण वेद पद क्रमसमेत षडङ्ग ६० और सब शास्त्रों को वशिष्ठजी से पढ़ता भया फिर महाबुद्धिमान् बालक रहस्यसमेत धनुर्वेद ६१ ग्राहमोक्षयुक्त दिव्य शस्त्र अस्त्र ज्ञान शास्त्रादिक न्याय राजनीति गुणादिकों को भी ६२ वशिष्ठजी से शि-ष्यरूप से भक्तियुक्त होकर सीखता भया इसप्रकार अत्यन्त सुन्दर नहुष सब विद्याओंसेयुक्त हुआ ६३ और वशिष्ठजी के प्रसादसे धनुष् और बाण धारण करनेवाला भया ६४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे माहात्म्येच्यवनचरित्रेपञ्चोत्तरशततमोऽध्यायः १०५ ॥
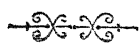
एकसौ छः का अध्याय ॥

दो० यकसै छठयें महँ नहुष विद्यापठन बहोर ॥
ताजननी अरुजनककर अतिविलापकहवोर १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले वहां जब पुत्र तुरन्तही सूतिकागृह से उठागया तो स्वर्भानुकी कन्या महाभाग्यवती आयु की भार्य्या देवताओं के समान रूपवाले अपने पुत्रको न देखकर १ महाहाहाकार करके वह वरवर्णिनी रोदन करनेलगी व कहने लगी कि सब राजलक्षणयुक्त हमारा बालक कौन हरलेगया २ हे वत्स! तुमको हमलोगोंने तपस्या दान यज्ञों बड़े २ दुष्कर नियमों व दारुण कष्टों से पाया ३ व महात्मा दत्तात्रेयजी ने सन्तुष्ट होकर अपने पुण्यप्रसादसे दिया था हाय! उस पुत्रको कौन हरलेगया कह व्याकुल होकर इसप्रकार रोनेलगी ४ हा! पुत्र हा! वत्स हा! तात हा! बाल हा! गुणमन्दिर कहांहो व कौन तुमको लेगया हमसे पुकारकर कहो ५ तुम सब सोमवंशके भूषणहो इस में कुछ सन्देह नहीं है सो हमारे प्राणों समेत तुमको कौन यहां से हरलेगया ६ हे वत्स! सब राजलक्षणों से युक्त दिव्य लक्षणों से विभूषित कमलदललनयन तुमको कौन हरलेगया अब हम कहां जायँ व क्याकरें ७ हम यह स्पष्ट जानती हैं कि अन्य जन्मके किये हुये कर्म्म नहीं मिटते विना भोग किये छुट्टी नहीं मिलती नहीं जानती कि पूर्व्वजन्ममें हमने किसकी धरोहर खाई है तिससे हमारा पुत्रहरगयाहै ८ वा पापिनी मैंने पूर्वजन्ममें किसीसे छल कियाहै तिस कर्मका दुःख भोगतीहूं अन्यथा नहीं है ९ हम रत्न की अपहारिणी हुई इससे हमारा पुत्ररत्न उठागया हम जानती हैं कि भाग्यहीने दिव्य अनुपम गुणोंकी खानि इस हमारे पुत्र को हरलिया है १० अथवा उन ब्राह्मणदेव ने हमारे कर्म्मकी वितर्कणा अच्छे प्रकार नहीं की उसी से हमने ऐसा महादारुण पुत्रशोक पाया है इस में सन्देह नहीं ११ अथवा जन्मान्तर में हमने किसी बालक के सङ्ग विरोध कियाहै उसी पापसे यह दारुण पुत्रशोक हमने पाया है १२ अथवा वैश्वदेवकर्म्म के समय ब्राह्मण

लोग व्याहृतियों से हवन करते होंगे तब कोई ब्राह्मण आया होगा उसको अन्न न दिया होगा १३ इसप्रकार अपने भाग्यसे कहकर स्वर्भानुकी पुत्री इन्दुमतीरानी महादारुण शोक से करुणा से व्याकुलहुई १४ व शोकहीं से विह्वल होकर पृथ्वीपर गिरकर मूर्च्छित होगई व फिर ऊर्ध्वश्वास लेतीहुई बिना बछड़ेकी धेनुके समान रोदन करनेलगी १५ ऐसेही बालकको हरगया सुनकर राजा आयुभी बड़े शोकसे दुःखितहो धैर्य्य छोड़ रोदन करनेलगे १६ व कहने कि जो इसप्रकार पुत्रहरगया तो इसमें कुछभी सन्देह नहींहै कि तपका कुछफल नहींहोता व दानका भी कुछफल नहींहोता १७ ॥

चौ० दत्तात्रेय परममुनि ज्ञानी । ह्वै प्रसन्न मनवच अरुबानी ॥
सब गुणयुतसुत दीन विचारी । किमिसोमृषाभयहुयकबारी १८
ता वरमहँ किमि विघ्न दिखाई । विधिगतिकछुनहिंपरतलखाई ॥
इति चिन्तापर भयहु महीपा । अतिदुःखितविलपतकुलदीपा १९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेषडधिकशततमोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय ॥

दो० यकसै सतयें महँ कह्यो नारद आयु महीप ॥
नहुषतनय आगमन ज्यहि सुनिदम्पतिभेदीप १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि तब नारदमुनि स्वर्गसे राजा आयुके यहां आये व आकर उन्हों ने कहा कि राजन् क्यों शोचकररहे हो १ हां तुम्हारा पुत्र हर तो गया है पर वह कुशलपूर्व्वक है हम अच्छेप्रकार जानते हैं हे महामते! वह तो देवादिकों काभी राजाहोगा ऐसा जानकर तुम शोच न करो २ वह सर्व्वज्ञ व गुणी व सब विज्ञान संयुक्त व सब कलाओं से सम्पूर्ण होकर फिर तुम्हारे गृहको आवेगा ३ हे महाराज ! जो तुम्हारे देवोंकेगुण समान बालकको हरलेगया है वह अपने घरको अपना काल लेगया है इसमें कुछभी संशय नहींहै ४ सो उसका नाशकरके वह महावीर्य्य पराक्रमी होकर तुम्हारापुत्र शिवजीकी कन्याके साथ तुम्हारे समीप

आवेगा ५ व तुम्हारा पुत्र अपने तेजसे इन्द्र व उपेन्द्रके समानहोगा अपनेही कर्म्मोंसे इन्द्रपदवी भोगेगा ६ ऐसा राजा आयुसे कहकर अनुग समेत राजाके देखतेही नारदजी सहसा से चलेगये ७ फिर महाभाग देव नारद के चलेजाने पर राजाने पुत्रके समाचार नारद के कहने के अनुसार अपनी रानी से कहे ८ कि हे भद्रे! जो देव श्रेष्ठ के समान उत्तम पुत्र हमको दत्तात्रेयजी ने दिया है वह विष्णु के प्रसादसे कुशलपूर्व्वक है ९ हे वरानने! जो हमारे गुणयुक्त पुत्र को हरलेगया है उसका शिर काटकर यहां लावेगा १० यह हमसे नारदजी ने कहा है इससे हे भद्रे! अब शोच न करो कार्य व धर्म्म के नाशनेवाले इस महामोहको छोड़देओ ११ पति के ऐसे वचन सुनकर इन्दुमती रानी पुत्रका आगमन सुनकर महाहर्षवती हुई १२ क्योंकि उसने समझा कि जैसा नारदजी ने कहाहै वह वैसाही होगा व दत्तात्रेय ने हमको जरामरणरहित पुत्र दिया है सो यह अर्थभी सत्यहीहोगा इसमें सन्देह नहीं है ऐसा चिन्तवन करके मनसे द्विजपुङ्गव दत्तात्रेयजी के नमस्कारकिया १३ । १४ ॥

चौ० अत्रितनय दत्तात्रयजी के । चरणकमल विनवौं करिठीके ॥
जासु प्रसाद लह्यों सुतचारू । पुण्यपराक्रम सहित विचारू १५
यह कहिरही मौनगहि रानी । दुःखितह्वै मनमहँकरि ग्लानी ॥
सुत आगमन सुने पुनि सोई । नहुषनाम जान्यहु मुनिगोई १६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनाहुषाख्यानेसप्तोत्तरशततमोऽध्यायः १०७ ॥

एकसौआठका अध्याय ॥

दो० यकसै अठयें महँ कह्यो मुनि नृपकुलको वृत्त ॥
आयु नहुष शिवकीसुता हुण्डआदि शुभवृत्त १

कुञ्जलजी अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि ब्रह्माजी के पुत्र महातेजस्वी तपस्वियोंमें श्रेष्ठ वशिष्ठजी नहुषको बुलाकर उनसे यह वचन बोले कि १ अब तुम शीघ्र वनकोजाओ व वहांसे फलफूल लाओ मुनिका वाक्यसुन नहुष वनको जातेभये २ वहांपर बलवान्

नहुष कुछ अच्छा वृत्तान्त सुनतेभये कि आयुके पुत्र धर्म्मात्मा महा बुद्धिमान् जिनका वियोग बाल्यावस्थाही से माताका रहा व इन्हीं के अतिवियोगसे आयुकी भार्य्या रोदन कियाकरती ३ । ४ व इसी के लिये अशोकसुन्दरी ने परमदुष्कर तप किया व कहती थी कि इन्दुमती अपने पुत्रको नहीं जानती कब देखे ५ जो कि धर्म्मज्ञ नहुषनाम उसके पुत्रको दानव हर लेगया है ऐसा विचारती हुई शिवजीकी श्रेष्ठपुत्री बाला अशोकसुन्दरी आयुके पुत्रके सुखीरहने के विचारसे आलम्बरहित होकर बराबर तप करती रही सो आयुके पुत्र नहुषजी से कब मिलेगी ६ । ७ इस प्रकारका सांसारिक वचन आकाश में चारणोंसे भाषित धर्म्मात्मा नहुष ने सुना इससे वे वि-भ्रमयुक्त होगये ८ व वशिष्ठजी के आश्रमपर लौट आये व सब महात्मा वशिष्ठजी से उन्होंने निवेदन किया ९ कहने के समय में दोनों हाथजोड़ भक्तिसे शिर झुकाकर तपस्वियों में श्रेष्ठ महाप्राज्ञ वशिष्ठजी से बोले कि १० हे भगवन्! चारणों के कहेहुये अपूर्व व-चन हमसे सुनो यह नहुष आयुका पुत्रहै व अपनी माता इन्दुमती से अलग करलियागया है सो दुष्ट दानव इन्दुमती माता से इसे वियोजित किया है व शिवकीपुत्री बाला अशोकसुन्दरी इसीकेलिये अत्यन्त दुश्चर तप करती है ११ । १२ उसका अन्य कुछ प्रयोजन नहीं है केवल वीर नहुषही के लिये तप करती है यह सब हमने सुनाहै १३ अब आपसे पूछते हैं कि धर्म्मात्मा आयु कौनहैं और कल्याणकारिणी इन्दुमती कौन है अशोकसुन्दरी कौन है व नहुष कौन कहाता है १४ यह हमको संशय हुआहै उसे आप मिटाने के योग्यहैं भला अन्यभी कोई महाप्राज्ञ नहुष यहांहै १५ हे तात! यह सब व और भी जो कारणहो हम से कहो वशिष्ठजी बोले कि आयु धर्म्मात्मा बली सप्तद्वीपवती पृथ्वीका आजकल महाराजाधिराज है १६ व सत्यरूपा यशस्विनी इन्दुमती उनकी भार्य्या है उस में उन प्रतापी राजा ने गुणके मन्दिर आपको पुत्र उत्पन्न किया है जो तुम सोमवंशके भूषणहो व महादेवजी की कन्या गुणों से भूषित व रूप समन्वित सुभगा मनोहर हँसनेवाली अशोकसुन्दरी है वह तुम्हारे

लिये आलस्यरहित होकर तपोवन में तपकरती है १७।१९ उसके भर्त्ता आपको ब्रह्माजीने योगसे उत्पन्न कियाहै वह गङ्गाजी के तीर पर योगाभ्यास करनेमें तत्पर होरहीहै २० उसको अकेली पतिव्रता तप करती हुई देखकर जो कि रूप गुण उदारतामें युक्त सुभगा व कमलेक्षणाथी हुण्डनाम दानवेन्द्र कामबाणों से पीड़ित हुआ व उसके समीप जाकर कहा कि हमारी स्त्री होवो २१। २२ इस प्रकार उसका वचन सुन उस तपस्विनी ने कहा कि हे हुण्ड! साहस न कर व बार २न बक २३ हे वीर! हम तुम्हारे प्राप्त होने योग्य नहीं हैं विशेषकर पराई स्त्री हैं क्योंकि देवदेव ब्रह्माजीने हमारे लिये आयुके पुत्र महाबली २४ नहुष नाम मेधावीको भर्त्ता नियत कियाहै इसमें सन्देह नहीं है जोकि देवोंसे दियेगये व महातेजस्वी हैं सो तू इस बातको अन्यथा किया चाहताहै २५ इससे हम तुझे शापदेंगी जिससे तू भस्म होजायगा ऐसा उसका वचन सुन कामबाणों से पीड़ित २६ वह दुष्ट आपभी एक स्त्री बनकर छलसे अशोकसुन्दरी को अपने स्थानपर लेगया तब हे महाभाग! जैसेही उसने जाना कि यह हुण्ड दैत्य है वैसेही उसने उस दानवाधमको शाप दिया २७ कि महाराज नहुषके हाथ से तेरी मृत्यु होगी जब तुम उत्पन्नही नहीं हुये थे तभी उसने ऐसा कहाथा २८ सो हे वीर! आयुके पुत्र तुमको जन्म पातेही हुण्ड पापी अपने यहां उठालाया व अपनी जान मार रींधकर खाभी लिया परन्तु उसके पाककर्त्ता ने तुम्हारी रक्षा करके दासीने तुम को हमारे स्थान पर पहुँचादिया २९ जब तुम वनको गये तो तुमको देखकर चारण किन्नरों ने तुमसे यही वृत्तान्त कहा हे वत्स! वही हमने तुमसे वर्णन किया ३० इससे अब पापी दानवाधम हुण्डको जाकर तुम मारो व दोनों नेत्रों से आंसुओं की धारा छोड़ती हुई उस अशोकसुन्दरी के आंसु पोंछो ३१ फिर अपने पिताके गृहको जाकर अपनी माता इन्दुमतीका प्रबोध करो उस दानवेन्द्र के निपातसे मानों अपने माता पिताको बन्दीखानेसे छुड़ाओ और अशोकसुन्दरीके भर्त्ता होओ यह हमने तुम्हारे इस प्रश्नका कारण कहा ३२।३३ ऐसा नहुषसे कह कर महामति वशिष्ठजी विश्राम कररहे फिर ३४ ॥

चौपैया ॥

इमि मुनि बानी सब सुखखानी सुनिकै नहुष महाना ।
गुनिके मनमाहीं अतिहर्षाहीं बहु तिनअचरज माना ॥
पुनिकरिअतिकोपा अतिहिसुचोपा तावधंहितनृपनन्दा ।
मुनिआयसुपाई अतिसुखदाई मनमहँभयहु अनन्दा ३५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनाहुषाख्यानेऽष्टोत्तरशततमोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनवका अध्याय ॥

दो० यकसैनवयें महँ कह्यो विदुर किन्नरराज ॥
शिवतनयासों नहुषके गुणयशवंशसमाज १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि बाण हाथमें ले धनुष धारण कर नहुष तपस्वियों में श्रेष्ठ वशिष्ठ के नमस्कारकर प्रसन्न कर जाते भये १ जो कि आयुके पुत्र गुणसमेत सुरूपवान् देवों के समान देवगुणों से युक्त हैं जब नहुष बालक को वशिष्ठजी के आश्रमपर पहुँचाकर मृगका मांस परिपक्ककरके उस दुष्ट हुण्डदैत्य को उसके पाककर्त्ता ने खिलाया तो उस मांस के रससे अतिपुष्टहोकर दैत्यने अपने शत्रुका मांसजानकर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष से भक्षण किया फिर परमानन्दित होकर अशोकसुन्दरी के समीप गया २।४ व कालसे उपहतचित्त होकर उस महापतिव्रता स्त्रीसे बोला कि हे भद्रे ! आयुके पुत्र तुम्हारे पति को हमने भक्षण करलिया ५ इससे हे पवित्रअङ्गवाली ! अब हमींको भजो व अपने मनमाने भोगभोगो आयुहीन उस मनुष्यको लेकर तुम क्याकरोगी ६ यह सुनकर तपस्विनी शिवजी की कन्या अशोकसुन्दरी बोली कि हमारा भर्त्ता देवताओं का दिया हुआहै इससे अजर व दोषरहित है ७ उस हमारे पतिकी मृत्यु तो महात्मा देवताभी नहीं देखसक्के ऐसा उसका वचन सुनकर उस दुरात्मा दानव ने ८ बड़े ज़ोरसे हँसकर उस विशालाक्षीसे कहा कि हे सुन्दरि ! हमने तो आजही आयुके पुत्रका मांस खायाहै ९ उस दुरात्मा नहुषको तो हम उत्पन्नहोतेही उठालाये उसका ऐसा

वचन सुनकर अतिदारुण कोपकरके १० सत्यप्रतिज्ञा करनेवाली तपस्या से महातेजस्विनी अशोकसुन्दरी बोली कि हमारे सत्य नियम व तपसे आयुका पुत्र चिरजीवीहोगा ११ हे दुराचार! यदि जीनाचाहताहै तो यहां से अभी चलाजा नहीं तो हम फिर तुझको शापदेंगी इसमें कुछभी संशय नहीं है १२ पाककर्त्ताने राजासे कहा कि हे महाराज! इसको छोड़कर औरको आश्रय करो १३ पाककर्त्तासे भेजाहुआ पापी हुण्ड दैत्य शीघ्रतासे अपनी प्यारी स्त्रीके पास गया १४ और उस प्रिया से सब वृत्तांत कहा और दासी और पाककर्त्ता ने जो किया उसको नहीं जाना १५ सूतजी शौनकादि ऋषियों से बोले कि वह तपस्विनी अशोकसुन्दरी बड़ी तपस्या करतीहुई बड़े शोक व दुःख संतप्त होकर बनाय दुर्बल होगई १६ व अपने प्रिय कान्तकी चिन्ता व ध्यान बार २ करनेलगी कि दैत्यलोग विविध प्रकारके उपायों से क्या नहीं करते हैं १७ उपाय जाननेवाला अपनी बुद्धि से उद्यमसे अनेक प्रकारके भावोंसे सदा सब कार्य्य सिद्धकिया करता है १८ मायाकेही उपायसे वह पापी पूर्व्वकालमें हमींको हरलेगया था ऐसेही आयुके पुत्रकोभी माया से उसने मारडाला हो तो क्या आश्चर्य्य है १९ भाग्यके कारण जो पदार्थ होनेवाला होताहै वह कभी २ उद्यम करने से नष्टभी होजाताहै व कभी नहींभी नष्टहोता २० कभी २ उद्यम का फल श्रेष्ठहोजाताहै कभी २ कर्म्मकाफल परन्तु जो भावी भावहै वह कैसे नष्ट होसक्ताहै व यहभीहै कि जिसको भाग्य मारा चाहतीहै वह नहीं ठहरसक्ताहै २१ व जो विशेषरीति से हमारी माता पार्व्वतीजी ने कहाथा तेरा नहुष पतिहोगा यह बात कैसे मिथ्याहोसक्ती है वह महाभाग्यवती इसप्रकार बार२ चिन्तना करतीथी २२ कि इतनेमें विद्वरनाम किन्नर बड़ा शरीर धारण किये नाभीके ऊपरका शरीर तो उसकाथा पर नीचेका नहीं २३ द्विभुजी उसकी मूर्तिथी वंशी हाथ में थी हार और कंकण से शोभित था अङ्गों में दिव्य गन्ध लगायेथा वह अपनी स्त्री समेत अशोकसुन्दरी के पास आकर २४ उस निरानन्दा महादेवजी की कन्या से यह बोला कि हे देवि! तुम चिन्ता किसलिये करतीहो आयेहुये हमको

विद्वरनाम किन्नर जानो हम विष्णुजी के भक्त हैं इससे देवताओं ने तुम्हारे समीप हमको भेजाहै अब आपको नहुषके विषयमें कुछभी दुःख न करना चाहिये २५।२६ क्योंकि पापी हुण्डने उन बुद्धिमान् के मारडालने के लिये उद्यम कियाथा व आयुके पुत्रको हरलीला-याथा २७ परन्तु देवताओंने विविध प्रकार के उपायों से आयुपुत्र की रक्षाकी पर हुण्ड यही जानता है कि आयुके पुत्रको हमने हर लिया है २८ व भक्षणभी करलियाहै हे विशालाक्षि ! हे शुभे ! आपको सुनाकर वह अधम दानव चलागया २९ व अपने पूर्वजन्म के कर्मके विपाकसे महापुण्यात्मा व यशस्वी नहुष पूर्वजन्मके इकट्ठे कियेहुये कर्म्म से तुम्हारे भर्त्ता जीतेहैं ३०पुण्यहीके बलसे जिनकी जितनी आयु बनाई जाती है उतनी होती है परन्तु पाप के बल से वही आयुष् नष्टहोजाती है व पुण्यात्माओं की आयु जो पापात्मा घातक पुरुष नष्ट किया चाहते हैं ३१ वे दुरात्मा महापापी पराये तेजके नाशक आप नष्टहोजाते हैं ३२ पर नहीं मानते महात्माओं का यश मिटाने के लिये बार २ यत्न कियाकरते हैं व विष शस्त्रादि नाना प्रकारके उपायों से उनका वध कियाचाहते हैं यह नहीं जानते कि यह अपने पुण्यकर्म्मों से रक्षितहै ३३ हुण्डादिक महापापी अनेकप्रकारके भेदबलयुक्त मोहन स्तम्भनादिकोंसे पीड़ा देतेहैं ३४ हे महाभागे ! सुकृतके प्रयोग से पूर्वजन्मके इकट्ठे हुये से पुण्यवान् रक्षित रहताहै ३५ परन्तु उन पापियोंके सब उपाय पुण्यात्माओंके विषयमें विफल होतेहैं देवता व पुण्यों से रक्षित महात्मा पुरुषों को मन्त्र यन्त्र तन्त्र विष अग्नि शस्त्र बन्धन घातक कुछभी नहीं दुःख देसके जो उसके विषय में कुछ करते हैं वे भस्म होजाते हैं व वह पुण्यात्मा तो जहांका तहां स्थित रहता है ३६ । ३७ हे शुभे ! वीर आयुपुत्र के रक्षक देवतालोग हैं कि यह नहुष वीर सब पुण्योंका सञ्चय व सब तपस्याओं का निधान है ३८ इसी से बलवानों में श्रेष्ठवीर नहुष की रक्षा हुई सत्य तप पुण्य संयम दमादिकों से उनकी रक्षाहोगई ३९ अब तुम वृथा क्यों दारुण दुःख सहती हो अकारण शोक को छोड़ो वह धर्म्मात्मा विना माता पिताके भी वन

में जीताहै ४० व तपोबलसे तपस्वी वशिष्ठजी पालन करतेहैं व वह वेदवेदाङ्गों के निश्चय को जानता है व धनुर्वेदमें अतीव विचक्षण है ४१ जैसे चन्द्रमा अपनी कलाओं से सदा शोभित होताहै वैसेही अपने तेज व कलाओं से नहुष शोभित होता है ४२ व विद्या महापुण्य तप व यशों से रिपुवीरोंके मारडालनेवाला व देवताओं को अतीवप्रिय महात्मा नहुष है ४३ हुण्ड दैत्य को मारकर वह वीर तुम्हारे समीप आवैगा व विवाहकरेगा पीछे से पृथ्वी में एक राजा होगा ४४ और महायोगी होगा जैसे स्वर्ग में इन्द्र हैं हे भद्रे! तुम तिससे इन्द्रके समान अच्छे पुत्रको प्राप्त होगी ४५ ययाति नाम पुत्र होगा वह धर्म्मज्ञ प्रजापालन में तत्पर होगा रूप उदारता गुण युक्त सौ कन्या भी होंगी ४६ हे देवि! पुण्य विक्रम नहुष महाराज जिनके पुण्यों से इन्द्रलोक को जावेंगे और इन्द्रपदवी को भोगेंगे ४७ व धर्म्मात्मा ययाति नाम पुत्र तुम्हारे होगा वह महाराजाहोकर प्रजाओं का पालन सबजीवों के ऊपर दयामें पर होकर करेगा ४८ उसके महापराक्रमी चार पुत्रहोंगे सबके सब बलवीर्य्य से युक्त व धनुर्वेदके पारगामी होंगे ४९ एकका अनु नाम होगा दूसरे का पूरु तीसरेका द्रुह्यु व चौथे का वीर्य्ययुक्त यदुनाम होगा ५० ये सब पुत्र महावीर्य्य महाबली महात्मा सब प्रकार के तेजों से युक्त होंगे ५१ उन में यदु के वीर पुत्र सिंहके समान पराक्रमी होंगे अब यदुके महापराक्रमी पुत्रों के नाम कहतेहुये हमसे सुनो ५२ भोज भीमक अन्धक कुञ्जर धर्म्मात्मा और सत्य के आधार वृष्णि पांच ये ५३ छठां श्रुतसेन सातवां श्रुताधार कालदंष्ट्र जोकि समरमें कालको भी जीतेगा और महाबलीहोगा ५४ हे वरानने! यदुके महावीर्य सबपुत्र यादव कहावेंगे उनके पुत्र पौत्रादि सहस्रोंहोंगे ५५ हे देवि! तुम्हारा व नहुषका ऐसा वंशहोगा इससे अब ऐसा दुःखछोड़ कर सुखसे स्थित होओ ५६ हे शुभानने! वह महाप्राज्ञ नहुष तुम्हारा स्वामी तुम्हारेलिये अवश्य आवेगा हुण्ड दानव का वधकरके फिर तुम्हारे संग विवाह करेगा ५७ दुःख से उत्पन्न उष्ण तुम्हारे नेत्रों से गिरेहुये आंसुओं के बूँद वह मान का देनेवाला अपने हाथों से आकर पोंछेगा ५८

व आयु राजाके दुःखको उद्धारकर अपने सबकुलको तारेगा व अ-पने पिताको सुखित करके पीछे आप प्रजापालहोगा ५९ हे शुभे! यह सब हमने देवताओंका वचन तुमसे कहा अब सब दुःख शोक छोड़कर सुख से बैठो ६० यह सुनकर अशोकसुन्दरी बोली कि ॥

चौ० दैवविहितनिजपतिगुणधामा। कब देखब हम पूरणकामा ॥
धर्म्मधीर यह कहहु विचारी। सब सुख जासों होयकरारी ६१
विह्वबोल्यो सुनि यह वचना। बहुत शीघ्र लखिहोयह रचना ॥
इमिकहि विह्वर गो सुरलोका। जो सब विधिसोंरहतअशोका ६२
अरु अशोकसुन्दरी सुबाला। करन लगी तप तहां बिशाला ॥
काम क्रोध मद लोभ बिहाई। अरुमनकी सिगरी दुचिताई ६३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेनाहुषाख्यानेनवाधिकशततमोऽध्यायः १०९ ॥

एकसौदशका अध्याय ॥

दो० यकसै दशयें महँ कह्यो जिमि देवन निज शस्त्र ॥
दीन नहुष महराजकहँ हुण्डवधनहित अस्त्र १

कुञ्जलजी अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोले कि जब वशिष्ठजीने हुण्ड के मारने की आज्ञा नहुषकोदी तो सब मुनियों व मुनियों में व तप करनेवालों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी से पूँछकर नहुष उस दानव के मारने में उत्सुक हुये १ तब तपस्वी वशिष्ठादिक उन मुनियोंने आयुके म-हाबली पुत्रको बहुतसे आशीर्व्वाद दिये २ व आकाशमें सब देवता-ओंने नगारे बजाये व नहुषके शिरपर पुष्पोंकी वर्षा की ३ व फिर सब देवताओंको सङ्गलिये इन्द्रदेव वहां आये व सूर्य्यतेजोपम अ-पने २ शस्त्र अस्त्र नहुषको दिये ४ हे द्विजसत्तम ! तब देवताओं से नृपशार्दूल नहुषने उन दिव्यअस्त्रोंको ग्रहण किया उनके ग्रहणकरने से औरभी अधिक महाराजकुमार शोभितहोनेलगे ५ फिर सब दे-वगण इन्द्रजीसे बोले कि हे सुरेश्वर ! इन राजाको अपनारथ आप दें ६ देवताओं के मनका अभिप्राय जानकर देवराजने अपने सा-रथि मातलिको बुलाकर आज्ञादी कि ७ तुम इन महात्मा के पास

जाओ व रथपर इनको चढ़ाओ व ध्वजासहित रथपर चढ़ेहुये इन महाराजकुमार को समर में लेजाओ ८ सारथिने कहा बहुत अच्छा ऐसाही हो हे सहस्राक्ष ! आपका कहा करेंगे यह कहकर युद्ध करने पर उद्यत नहुषके समीप रथलेकर मातलि गया ९ व इन्द्रके वचन राजा नहुषसे उसने कहे कि हे धर्मज्ञ ! इस रथपर चढ़कर समरसें विजयीहोओ १० हे नृपतीश्वर ! इन्द्रजीने तुमसे यह कहा है कि अब तुम पापी हुण्डदानवको समरमें मारडालो ११ यह सुनकर राजेन्द्र नहुषजी के मारेहर्ष के सबअङ्गों में पुलकावली छागई व कहा कि देवदेव महात्मा वशिष्ठजी महाराजके प्रसाद से १२ समर में उस पापी दानव को मारेंगे क्योंकि वह दुष्ट देवताओं के साथ बहुत पाप करताहै १३ जब महात्मा नहुषजी ने ऐसा वचन कहा तो देवताओं के भी देव शङ्ख चक्र गदाधर श्रीविष्णुभगवान् आप वहां प्राप्तहुये १४ व अपने चक्रसे सूर्य्य तेजके समान दूसरा चक्र निकालकर तेजसे प्रज्वलित शुभ देनेवाला वह चक्र बड़े हर्षसे युक्त होकर देवदेव ने राजा नहुषजीको दिया फिर महादेवजीने आकर अतिप्रज्वलित तीक्ष्ण अपना त्रिशूल राजाको दिया १५ । १६ जिससे समर करनेको उद्यत राजा बहुतही शोभित हुये मानो त्रिपुरासुरके मारनेवाले दूसरे महादेवही के समान दिखाई दिये १७ फिर ब्रह्माजीने आकर ब्रह्मास्त्र दिया व वरुणने आकर उत्तम फांसी व चन्द्रतेज के समान प्रकाशित शब्दमें मङ्गलदाता शंख दिया १८ फिर इन्द्रने वज्र और शक्ति दिया वायुने धनुर्बाण दिये व अग्निजीने अपना आग्नेयास्त्र महात्माको दिया १९ व विविध बहुत दिव्य अस्त्र शस्त्र अन्य महात्मा देवताओंने महापराक्रमी राजा को दिये २० कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि फिर देवताओं से मानित व तत्त्ववेदी मुनियों की आशिषों से अभिनन्दित महाराजकुमार वीर नहुषजी २१ घण्टाके शब्द से [illegible] छोटी २ घण्टाओंसे नादित दिव्यप्रकाशित रत्नों की मालायुक्त उस रथपर चढ़े २२ व उस दिव्य रथपर चढ़ने से [illegible] ऐसे शोभित हुये कि जैसे अपने तेजों से स्वर्ग में सूर्य्य शोभितहोते हैं २३ व जैसे

सूर्य्य सब के ऊपर अपने तेजसे तपते हैं वैसेही वे महाराजकुमार दैत्यों के मस्तकों पर तपनेलगे व ऐसे वेगसे चले जैसे कि महावेग से प्रचण्ड पवन चलता है २४ जहां वह पापीदानव अपने बलसे युक्त था वहां उस मातलिमहात्मा सारथिके साथ जातेभये २५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेदशादिकशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौग्यारहका अध्याय ॥

दो० यकसै ग्यरहें महँ नहुष समर गमन लखि आप ॥
देवादिक युवती तहां आईं कीन अलाप १

कुञ्जल अपने पुत्रसे बोला कि जब सुरराजके समान विराजमान महाराजकुमार वीर नहुषजी चले तो सुन्दर कौतुकों और मङ्गलगीत युक्त सब देवताओंकी स्त्रियां भी वहां आईं १ देवताओं की सब श्रेष्ठ स्त्रियां व रम्भादिक सब अप्सरायें किन्नरोंकी स्त्रियां ये सब मारे कौतुक की उत्सुकता से स्वरसे गानेलगीं २ व ऐसेही रूप आभूषणयुक्त गन्धर्व्वोंकी सब स्त्रियां कौतुकार्थ वहां आईं जहां कि राजारथपर चढ़े चलेजातेथे ३ जाते २ हुण्डदैत्यके महोदयनाम पुर में राजा पहुँचे जोकि सब ओरसे आनन्ददायक वनोंसे शोभित हो रहाथा ४ जिसमें सात कक्षायें थीं सब सोने चांदीके कलशोंसे शोभित होती थीं व महादण्डयुक्त पताकाओंसे शोभित वह उत्तम पुर होता था ५ व कैलास पर्व्वतके शिखरोंके आकारके शिखरोंसे शोभितथा और भी सब शोभाओंसेयुक्त नानाप्रकार के उत्तम पदार्थों से शोभायमान होताथा ६ सागरके तुल्य तड़ागों से व वन उपवनों से उपशोभितथा तड़ाग सब जलसे भरे थे और कमल लालकमलों से अतीव शोभितथे ७ महारत्नों के प्राकारों से शोभित व सैकड़ों अँटारियों से युक्तथा स्वच्छ जलोंसे परिपूर्णखाओंसे शोभित था ८ अश्वरत्न गजरत्नों से शोभित होरहाथा अतिप्रकाशित रूपवती स्त्रियों से व सुरूपवान् पुरुषोंसे समाकीर्ण ९ व नाना प्रभाववाले दिव्य पदार्थों से उसका महोदय शोभायमान होरहाथा राजाओं श्रेष्ठ महाराज नहु-

षजी जब ऐसे पुरको देखते भये १० तो पुरके समीप एक दिव्य वृक्षों का वन था उसमें महाराजने प्रवेश किया जैसे कि नन्दन वनमें इन्द्रजी प्रवेश करते हैं ११ वहीं वे धर्मात्मा उस मातलि सारथि के साथ ठहरे व उसी वनमें एक बड़ी भारी नदीथी इसलिये फिर वहां उतरे १२ वहां सब रूपसम्पन्न वे दिव्य स्त्रियांभी आईं गीत नृत्य में चतुर गन्धर्वलोगभी आये व राजाके आगे गाने लगे १३ सूत मागधादि नृपोत्तम आयुके पुत्र सूर्य के समान प्रकाशित राजा की स्तुति करनेलगे १४ तब राजा नहुषजी किन्नरों के गायेहुये मधुर गीत सुनते भये १५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेएकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११ ॥

एकसौबारहका अध्याय ॥

दो० यकसै बरहेंमहँ कह्यो जिमि शिवसुता सुगीत ॥
सुनि पहुँचीढिग नहुष के कीन्हें तर्क विनीत १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि जब राजाके आगे वे सब गाने बजाने स्तुति करनेलगे तो सुन्दर स्वरसहित मधुरगीत व तालसहित बाजे पुण्यरूप स्तुतियां उस स्थान से थोड़ेही दूरपर तप करतीहुई शिवजीकी कन्या अशोकसुन्दरी सुनकर चिन्तना करनेलगी १ व आसन परसे तुरन्त उठकर महाउत्साहसे युक्त होकर अपने तपोभावसेयुक्त वहां शीघ्रही आगई २ व दिव्यरूप धारणकिये देव समान प्रकाशित दिव्य चन्दनादि गन्धलगाये दिव्यमाला पहिने ३ दिव्यवस्त्र भूषणोंसे भूषित अतिशोभित महाराजकुमार नहुषजी को दिव्य लक्षणसंयुत सूर्य्यसमान देदीप्यमान देखकर ४ विचारनेलगी कि क्या यह कोई महाबुद्धिमान् देवहै वा गन्धर्व्व वा यह कोई नाग कुमारहै वा कोई विद्याधरहै ५ ऐसा रूपवान् तो हम देवताओंमें भी किसी को नहीं देखती फिर यक्षों में कौन कहै इसी लीला से तो सहस्राक्ष देवभी दिखाई देते हैं ६ कि शम्भुजी तो नहीं हैं कि कामदेव है रूपधारण करके आयाहै कि हमारे पिताके सखा कुबेरजी हैं ७ ॥

चौपैया ॥

इमिजबतक बाला नयनविशाला चिन्ता करन सुलागी ।
तबतक वररूपा परमअनूपा रम्भादिक अनुरागी ॥
अतिप्रहसित होई तनिक न गोई बोली मधुरी बानी ।
निज मनमहँजानी त्यहिंअकुलानी सो सब भांति सयानी ८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेद्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

दो० यकसै तेरहयें महँ रम्भा कह सब ज्ञान ॥
सुनि अशोकसुन्दरिचरित कीन्ह्यो नहुष प्रमान १

उन सब स्त्रियों में से रम्भा अप्सरा बोली कि हे शुभे ! तपकरना छोड़कर यहां क्या देखती हो तप पुरुषके चिन्तन से भी चूजाता है १ यह सुन अशोकसुन्दरी बोली कि नहुषकी कामना से हमारा मन तपस्या में लीन है हमको चलायमान करने में देव असुर नागादि कोई भी पुरुष समर्थ नहीं हैं २ परन्तु हे महाभागे ! इन को देखकर हमारा मन अत्यन्त चलायमान हुआहै इससे यही मनमें आता है कि इनके सङ्ग विहार करें ३ परन्तु हे वरानने ! ऐसा हमारा मन विपरीत हुआहै यदि तुमको इस विषय में उत्तम ज्ञानहो तो हमसे इसका कारण बताओ ४ महात्मा देवताओं ने हमको आयु महाराज के पुत्रकी भार्य्या होनेके लिये आज्ञादीहै फिर कैसे हमारा चित्त रमण करने में उत्सुकहै ५ रम्भाबोली कि हे भामिनि ! सब देहरूप प्राणियों में ज्ञानरूप सनातन ब्रह्म आत्मा आप बसता है ६ यद्यपि अपकारिणी इन्द्रियां अपने अपने विषयोंकी द्वारा खींच कर आत्माको मोहित कराती हैं तथापि वह सबों में सदैव रहताहै ७ हे सुन्दरि ! प्रकृति ज्ञान विज्ञानकी कला को नहीं जानती परन्तु यह शुद्धात्मा धर्मज्ञ आत्मा अच्छेप्रकार जानता है ८ तथापि इन महामति को देख मन तापको प्राप्त है इसीप्रकार पापको छोड़कर सत्यही को धावताहै ९ ये आयुराजा के पुत्र तुम्हारेही भर्त्ता हैं इस

में कुछभी सन्देह नहीं है अन्य पापीपुरुष को देखकर तुम्हारा आत्मा शङ्का करता १० क्योंकि देवताओं ने सत्यकी फांसी से तुम्हारे आत्माको इन महात्मा नहुषमें बांधदिया है जिससे कि जब कभी अपने पतिको देखे उसी के पास चलीजावे ११ हे सुन्दरि ! तुम्हारे आत्मा ने इस निवन्धन को सुन लियाथा इसी से भाव के सत्य सम्बन्ध को ग्रहणकर अपने आप स्थितहुआ १२ अन्यभाव को वह जानताही नहीं बस अपने आयुपुत्रके समीप चलाआया पर हे देवि! तुम्हारी प्रकृति इन राजाको आयेहुयेनहीं जानती १३ ऐसा जानकर तुम्हारा प्रधान आत्मा इन्हीं के पीछे दौड़ताहै बस आत्मा सब कुछ जानताहै क्योंकि वह सनातन देवहै १४ येही वीर्य्यवान् वीरोंमें श्रेष्ठ नहुष महाराजहैं इससे तुम्हारा चित्तगयाहै सत्य सम्बन्धकी इच्छा करताहै १५ हे भद्रे ! आयुके पुत्रको जानकर अन्यके पास नहीं गया यह सब शाश्वत तुम्हारे मनमें प्राप्त को मैंने कहा १६ कि लड़ाई में महाघोर दानवोंमें अधम हुण्डको मारकर तुमको अपने उत्तम स्थान आयुके गृहको लेजावेंगे १७ वीरेन्द्र दैत्य से हरलिया गया था परन्तु अपनी पुण्य से बचगयाहै बाल्यावस्था से लेकर स्वजनों से वियुक्त रहा है १८ पिता माता से हीन महावनमें वृद्धि को प्राप्त हुआ है और तुम्हारे साथ इस समय पिताके घरको जावेगा १९ इसप्रकार शिवपुत्री अशोकसुन्दरी रम्भा के वचन सुनकर बड़े आनन्द से युक्त रम्भा से बोली २० कि यह सत्यात्मा अत्यन्त वीर्यवान् हमारा स्वामी है हमारा शोकसे आकुल विह्वल मन चलायमान है २१ जिसके समान कोई देव नहीं है क्योंकि वह सब निश्चित पदार्थ जानताहै हे चारुहासिनि ! सत्य २ हमने अपना चित्त ऐसाही देखा २२ कि काम सदृश अन्य पुरुषको देखकर कभी यह चित्त चलायमान न हुआ व इन महात्माको अपना जानकर चलउठा २३ हे भद्रे ! जैसे इनको देखकर चित्तने बाधाकी है वैसा अन्य पुरुष को देखकर कभी नहींकी इससे अब हम व तुम दोनों सखियां सङ्गही सङ्ग इनके गृह चलें २४ जब ऐसा अशोकसुन्दरी ने कहा तो रम्भा चलने के लिये उद्यत हुई नहुषके समीप जाने के लिये उत्सुक अशोक-

सुन्दरी को जानकर २५ रम्भा बोली कि अब क्यों नहीं चलती सूत जी शौनकादिकों से बोले कि अशोकसुन्दरी रम्भा सखी के साथ वीर लक्षण नहुष २६ के समीप प्राप्त होकर रम्भा सखी को भेजा और कह दिया कि हे महाभागे ! इन देवरूपी नहुष के पास जाओ २७ व इस सब कथा को कहो कि तुम्हारे लिये जिससे आई है तब फिर रम्भा बोली कि हे सुव्रते ! हे सखि ! ऐसा प्रिय हम तुम्हारा करेंगी २८ ऐसा कहकर महाराजनन्दन नहुषजी के पास रम्भा गई व धनुर्बाण धारण किये दूसरे इन्द्रही के समान स्थित वीर नहुष जी से २९ अपनी सखी का उत्तम वचन बोली कि हे आयुपुत्र ! हे महाभाग ! हम रम्भाहैं तुम्हारे समीप आई हैं ३० हे वीर ! शिवकी कन्याने हमको तुम्हारे समीप भेजाहै व तुम्हारेही लिये देवदेव श्री महादेवजीने और पार्वतीजी ने पूर्वकालमें ३१ तुम्हारे अनुरूप श्रेष्ठ भार्य्या उत्पन्न की है यह लोकों में दुर्लभ नरश्रेष्ठों इन्द्रादिक तपस्वी देवों ३२ गन्धर्व्व नागादिकों पुण्यात्मासिद्ध चारणों को दुष्प्राप्य है वह तुम्हारे लिये अपने आप आई है उसके स्वभावादि हम से सुनो ३३ हे महाप्राज्ञ ! यह स्त्रीरत्न पुण्यसे निर्मित सम्पूर्ण है अशोकसुन्दरी उसका नामहै व तुम्हारेही लिये तपकरती है ३४ व तुम्हारे अर्त्थ उस ने अत्यन्त तपकिया है व तुम्हीं को सदैव चाहती है ऐसा जानकर हे महाभाग ! भजती हुई उसको भजो ३५ तुमको छोड़ अन्य किसी को वह वरारोहा पुरुषही नहीं मांगती जब ऐसा रम्भा ने अपनी सखीकी ओर से वचन कहा ३६ तो राजा ने प्रत्युत्तर दिया कि हे रम्भे ! हमारा वचन सुनो जो तुमने हमारे आगे कहा है वह सब हम प्रथमही से जानते हैं ३७ क्योंकि पूर्व्वसमय हमारे आगे महात्मा वशिष्ठजी ने कहाहै व सब इसके उत्तम तपको हम जानते हैं ३८ हे भद्रे ! कारण सुनिये जैसे सुख होगा विना इस हुण्डदानव को मारडाले हम इस वराङ्गना के पास न जावेंगे ३९ यह सब वृत्तान्तभी हम जानते हैं कि हमारेही अर्त्थ वह उत्पन्न हुई है व तपभी हमारेही अर्त्थ करती है ४० व वह हमारीही भार्य्या ब्रह्मा से बनाई गई है इस में सन्देह नहीं है व हमारेही अर्त्थ

निश्चयकर तपकरने में उद्यतहुई है ४१ फिर नियमयुक्त उसे दुष्ट पापी हुण्ड हरलेगया था व वह दानवाधम अपने गृहको सूतिका गृह से हमें लेगया था ४२ व बालावस्थाही में विना पिता माता का कर दिया था इससे उस दानवाधम हुण्डको मारकर ४३ तब उसको वशिष्ठजीके आश्रमपर लेजायँगे हे रम्भे! तुम्हारा कल्याणहो हमारे प्रिय करनेवाली से ऐसा कहो ४४ ऐसा कहकर रम्भाको बिदाकिया वह अतिवेग से चलीगई ॥

चौ० कह्योअशोकसुन्दरीपाहीं । सबसँदेश रम्भा शक नाहीं ॥
जोभाषा नृप नहुष विचारी । क्रमसोंसो निजमतिअनुसारी ॥
सुनि अशोकसुन्दरी सुबाला । भाषित नहुष केर गतजाला ॥
हर्षित भई बहुत सुख पावा । वीरप्राणपति अतिमनभावा ॥
रम्भासहित तहां सुखपूर्वक । रहनलगी तपकरतअपूर्वक ॥
इमि अशोकसुन्दरी कहानी । कहीभूपतुमसन प्रियजानी ४५ । ४८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेत्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३॥

एकसौचौदहका अध्याय ॥

दो० यकसैचौदहयें महँ हुण्ड नहुष को जानि ॥
युद्धकरनगो क्रोधसों समर अरम्भ्यो मानि १

कुञ्जलजी अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि इसके पीछे हुण्ड के परिचारक सब दानवों ने जैसा रम्भा व नहुषका संवाद सुना था १ सब ज्योंकात्यों जाकर दैत्येन्द्र हुण्डसे कहा उसे सुनकर बड़ा क्रोधकरके वह दूत से बोला कि २ हे वीर! हमारे आदेशसे जाओ हमने तिसपुरुषको जाना है कि वह अशोकसुन्दरी के साथ वार्त्ता करता था ३ स्वामी की आज्ञापाकर वह लघु दानव वीर नहुषजी के पास गया व एकान्त यह वचन बोला कि ४ सारथि घोड़े सहित रथपर चढ़कर दिव्य धनुर्बाणादि धारणकिये सभा में भयकराते हुये ५ तुम कौनहो व किसकेहो व किसने तुमको किस कार्य्यके लिये भेजाहै व इस रम्भासे और इस अशोकसुन्दरी से ६ तुमने स्पष्टता

पूर्व्वक क्या कहा था हमारे आगेभी कहो व देवताओंके मर्दन करनेवाले हुण्डसे आप कैसे नहीं डरते ७ जो जीने की इच्छाहो तो यह सब हमसे कहो व शीघ्र यहांसे चलेजाओ यहां न रहो क्योंकि दानवों का स्वामी बड़ा दुस्सह है ८ यह सुन नहुषजी बोले कि जो सप्तद्वीपवती पृथ्वी के बड़ेबली महाराज आयुजी हैं सब दानवोंके विनाशक हमको उनके पुत्र जानो ९ नहुष हमारा नाम विख्यातहै व देवता ब्राह्मणों के हम पूजकहैं हे दानव ! हमको बालकपनहीमें तुम्हारा स्वामी हुण्ड हरलायाथा १० व शिवजीकी इस कन्याको भी यह दैत्य पूर्व्वकालमें हरलायाथा इसलिये हुण्डके वध के निमित्त इसने अतिघोर तपकियाहै ११ जैसेही हमारा जन्महुआ कि सूतिका गृहसे तुम्हारा स्वामी हमें उठालाया और अपनी दासी को और पाककर्त्ताको दिया हे पाप ! अब सुन हम वही हैं उस दुष्ट पापकर्म करनेवाले हुण्डदैत्यके वधके लिये आयेहैं १२।१३ व यहांके औरभी घोर दानवोंको यमपुरको भेजेंगे हे पापिष्ठ ! हमको ऐसा जानकर दानव से ऐसाही जाकर कहदे १४ नहुष महात्माके ऐसे वचन सुनकर वह दुष्टात्मा वहां गया हुण्ड से जैसेका तैसा उसने कहा १५ दूतके मुखसे जैसेही ऐसा सुना कि दानवेन्द्रने बड़ाभारी क्रोध किया व कहा कि उस पापी सूदने व उस दुष्टा दासीने क्यों नहीं उस बालकको मारडाला १६ अब देखो हमारा मरणरूप वह बढ़कर फिर आनपहुँचा हम अभी अशोकसुन्दरीसहित उस १७ आयु के दुष्ट पुत्रको जाकर मारते हैं समरमें मारेतीखे बाणोंसे मारकर उड़ादेंगे फिर ऐसा कहकर अपने सारथिसे बोला कि तुम अच्छे सीखेहुये घोड़ेजोतकर रथलाओ फिर आतुर उसने सेनापतिको बुलाकर उससे यह कहा कि १८।१९ हमारी सबसेना अभी तैयारकरो व सब अन्यशूरोंकोभी आज्ञादेओ कि युद्ध करनेको उद्यतहों घोड़े व सवार योधा सब तैयारहों पताका चामर छत्र सब हमारे रथके ऊपर लगायेजायँ २० हमारी चतुरंगिणी सेना योजितकरो पर बहुतही शीघ्र विलम्ब न हो ऐसा हुण्डका वचन सुनकर तुरन्त २१ महाप्राज्ञ सेनापतिने यथाविधि सबकिसा चतुरङ्ग महासैन्यसे वह

असुर युक्तहुआ २२ व बाणचाप धारण कियेहुये नहुषवीरके सङ्ग युद्धकरनेके लिये वह गया हुण्ड उन नहुषजीके सामने पहुँचा जोकि इन्द्रके रथपर चढ़े सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ २३ समरमें उद्यन्तवीर सुर असुरों से दुःखसे प्राप्तथे इनका युद्ध देखने के लिये विमानोंपर चढ़कर सब महापराक्रमी देवगणभी आकाश में स्थितहुये २४ नहुषको सब तेजोज्वालासे समाकीर्ण दूसरे सूर्य्यहीकेसमान सबों ने देखा सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि फिर वे सब दानवलोग नहुषके ऊपर उत्तम बाणोंकी वर्षा करनेलगे २५ शक्ति, महाशूल, खड्ग, परशु,फँसरी आदि अस्त्र शस्त्र चलानेलगे व समर में उन महात्मा नहुषजीके सङ्ग युद्ध करने लगे २६ व क्रोधसे ऐसे गर्जने लगे जैसे वर्षाकालमें मेघ पर्वत में गर्ज्जतेहैं उन दैत्योंका विक्रम देखकर आयुकेपुत्र महाप्रतापी नहुषजीने २७ अपने इन्द्रके आयुधके समान धनुषको उठाकर उसकी प्रत्यञ्चा चढ़ाई व उन महात्माने वज्रके शब्दके समान धन्वा का शब्दकिया २८ हे विप्रो ! नहुषजीने ऐसा चाप शब्दकिया कि जिससे सब दानवों को भय पहुँचा ॥

चौ० महाघोररवसुनिसबदानव । कम्पितभेजिमिकातरमानव ॥
कश्मलसहित भग्नसब अङ्गा । सुनतशब्द सारेअँगभङ्गा २९।३०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः११४ ॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय ॥

दो० यकसैपन्द्रह महँ कह्यो हुण्ड नहुषकर युद्ध ॥
जामें दानव सकलनृप मारे ह्वैके क्रुद्ध १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि तदनन्तर धनुर्बाण धारण किये महात्मा महाराज नहुषजी संग्राम में विराजमान हो अतिक्रोध से दानवोंके नाशकरने में ऐसे उद्यतहुये जैसे प्रलयकाल में काल क्रुद्धहोकर सबलोकों का नाशकरताहै १ रविके तेजके समान दीप्तिमान् अस्त्रोंके जालोंसे उन महात्माने दानवोंको ऐसा मारा जैसा कि प्रचण्डपवन वृक्षोंको उखाड़डालताहै २ व जैसे पवन अपने

बल तेजसे दिव्य मेघसमूहों को उड़ालेजाताहै वैसेही महाराज ने अत्यन्त तीक्ष्ण श्रेष्ठ बाणोंसे मार २ कर सब मदोत्कट असुरोंको नाशकरदिया ३ यहांतककि उन महात्माकी बाणवृष्टि कोईभी दानव न सहसके कोई तो मरगये कोई घायल हुये व बहुतसे समर छोड़ कर भागखड़ेहुये ४ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि महातेजस्वी महाप्राज्ञ बड़े दानवोंके विनाशनेवाले महाराज नहुषको देख दुष्टात्मा हुण्डने क्रोधकिया ५ व सम्मुख जाकर बोला कि हे आयुपुत्र! रण में खड़ेरहो खड़ेरहो तुमको अभी यमराजके पास भेजेदेते हैं ६ तब नहुषजी बोलेकि देख हम समरमें स्थित हैं व तुम्हारे मारने के लिये आये हैं हम तुझ पापी दानवको मारडालेंगे ७ यह कह धन्वाले अग्निकी शिखाकेसमान लपलपाते हुये बाण चढ़ाकर छत्र लगाये हुये राजा समर में शोभित हुये ८ व इन्द्र के दिव्य सारथि मातलि से वचन बोले कि आप हमारा रथ हुण्ड के सम्मुख लेचलें ९ जब वीर नहुषजीने ऐसा कहा तो मातलि ने महावायु के वेगके समान अतिशीघ्र चलनेवाले घोड़ों को हांका १० व ऐसे उड़े कि जैसे आकाश में हंसउड़ते हैं व चन्द्रमा के रङ्ग के छत्र पताकासहित उस रथपर चढ़े ११ राजानहुष ऐसे शोभितहुये जैसे आकाश में सूर्य्य शोभित होतेहैं ऐसेही तेजसे व विक्रमसे आयुके पुत्र रणमें शोभित हुये १२ व उधर हुण्डभी अपने रथपर चढ़ाहुआ व अपने तेजसे विराजमान सब आयुध धारण किये वीरव्रत में स्थित हुआ १३ व दोनों वीरोंका दारुण भयङ्कर युद्ध होने लगा जिससे कि देवताओं कोभी विस्मयहुआ हे महाप्राज्ञ! तब अतितीक्ष्ण कङ्कपत्र लगेहुये बाणोंसे हुण्डने नहुषराजा की छातीमें ताड़ित किया १४। १५ और पांच बाण नहुष के मस्तक में मारे तब बाणोंसे विद्धराजा क्रुद्धहुआ व उस समय बाणोंके लगनेसे अधिक शोभितहुआ १६ जैसे अपने किरणों से अरुणसहित उदयहुये सूर्य्य शोभित होते हैं ऊपर से रुधिर की धारा बहरही थी व सुवर्ण की फोंकवाले बाण देह में घुस गये थे १७ इससे सूर्य्य के समान राजा भूमिपर शोभित हुये और तिसके पौरुष को देखकर दानव से बोले १८ हे दैत्य!

खड़े होकर हमारी शीघ्रता देख ऐसा कहकर समर में दैत्य के दश बाण मारे १९ वे सब बाण मुख व ललाटही में लगे इससे महा- बली मूर्च्छितहोकर सब देवताओं के देखतेही देखते रथके ऊपर पतितहुआ २० तब देवों चारणों सिद्धोंने आकाश में बड़े हर्ष का शब्द किया जय २ महीपाल ऐसा कह सबोंने शंख बजाये २१ वह देवताओं का कियाहुआ तुमुल कोलाहल हुआ व मूर्च्छित हुण्ड के कानों में पड़ा २२ सुनतेही धन्वा व सर्पोंके समान बाण लेकर बोला कि समर में खड़े होवो खड़े होवो अभी तुम्हारे मारनेसे नहीं मराहूं २३ ऐसा कह फिर उठकर अतिवेगसे इक्कीस बाणों से नहुष को मारा २४ उनमेंसे एक बाण से तो मूठी के मध्यमें मारा व चार बाणों से छाती में प्रहार किया व अन्य चारबाणों से चारो घोड़ोंको मारा व एकसे छत्रको २५ व पांच बाणों से मातलिको मारकर सा- तबाण रथमें मारे व उस दानवने मोरके पंख लगेहुये तीनबाणों से ध्वजा के दण्डमें मारा २६ बाणों का लेना चढ़ाना व छोड़ना अति वेग से दुरात्माका देखकर सब देवगण बहुत विस्मित हुये २७ व उसका पौरुष देखकर राजाने दानवोत्तम से कहा कि तुम शूर हो धनुर्विद्या भी पढ़े हो धीर व रणमें पण्डितहो २८ ऐसा उस दानव से कह व धन्वाकी टङ्कोर दे महाराज ने दश बाण दानव के ऊपर चलाये २९ तीन बाणों से ध्वजा काटकर पृथ्वी में गिरादिया चारबाणों से तिसके घोडों को गिराया ३० पराक्रमी राजाने एक बाण से तिसके छत्रको काटा दश बाणोंसे उसके सारथिको यमराज के मन्दिर भेजा ३१ दशबाणों से उसके दाँतों को गिराया तीस बाणों से दनुजेश्वर के सब अंगों में मारा ३२ जब घोड़ा मर गया और रथ टूटगया तो वह राक्षस बाण और धनुष् हाथ में लेकर वेगसे तीक्ष्ण बाण बरसाता हुआ दौड़ा ३३ फिर तलवार और शूल धारण कर दैत्य राजापर दौड़ा तब दौड़ते हुये हुण्डकी तलवार ढाल को राजाने तीक्ष्ण बाणों से काटडाला तब दुष्टात्मा हुण्ड ने चारोंओर देखकर ३४ । ३५ मुद्गर को शीघ्र ग्रहणकर छोड़ा राजा ने वज्र के समान वेगवाले मुद्गरको आते हुये देखा ३६ और दश तीक्ष्ण बाणों

स अपने पराक्रम से शब्दयुक्त मुद्गरको आकाश से गिराया ३७ तब हुण्ड दश खण्ड मुद्गर के पृथ्वी में गिरे देखकर वेगसे गदा लेकर राजापर दौड़ा ३८ फिर राजाने उसके उसी हाथमें एक तीक्ष्ण धारवाला खड्ग ऐसा मारा कि गदा बहूँटासहित उसका वह हाथ कट कर अलग पृथ्वीमें गिरा ३९ तब उसने वज्रपात के समान बड़ा भारी शब्द किया व रुधिर से सर्व्वांग भीगाहुआ वह रणमें इधर उधर दौड़नेलगा ४० व बड़े क्रोधसे युक्तहोकर उसने राजाको लीललेना चाहा इससे राजाके सम्मुख दौड़ा ४१ कि महाराजने ऐसी महाशक्ति हृदयमें मारी कि उसके लगतेही वह दानव सहसा से पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे माराहुआ पर्व्वत गिरे ४२ ॥

चौ० जब सो दैत्य गिर्‌यो महिमाहीं। प्राणरहित कछु संशयनाहीं ॥
शेष दैत्य भागे चहुँओरा। करत पुकार महारव घोरा ॥
सुर गन्धर्व्व सिद्ध मुनि चारण। हर्षित भये असुर हतिकारण ॥
नहुषमहात्मा जब त्यहिमारा। सब देवन जयजयतिउचारा ॥
आशिष दीन देवगण आई। जीवहु भूपति सब सुख पाई ॥
यहसुनिहर्षितभयहुमहीपा। मनमहँविहँस्योसोकुलदीपा ४३। ४५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेपंचदशाधिकशततमोऽध्यायः ११५ ॥

एकसौसोलहका अध्याय ॥

दो० यकसैसोलहवें महँ नहुष युवतियुत गेह ॥
मुनिआज्ञासोंआयगे त्यहिलखिनृपकियनेह १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि हुण्डके मारजाने पर पुण्यरूपिणी तपस्विनी अशोकसुन्दरी अतिहर्षित होकर रम्भाकेसाथ आकर नहुष वीरसे बोली कि १ हे वीर मैं आपकी धर्मसे स्त्री हूँ देवोंसे दिष्टा और तपस्विनी हूं यदि धर्मकी इच्छा करतेहो तो अब हमारे संग विवाहकरो २ क्योंकि हम सदासे तुम्हारी चिन्ता करतीहुई तप करती हैं हे नृपोत्तम! आपको धर्म्मके प्रसादसे हमने पाया है ३ यह सुन नहुषजी बोले कि हे भद्रे! जो तुम हमारेही निमित्त बहुत दिनोंसे तप

करती हो तो हमभी गुरुजीके कथनानुसार जब मुहूर्त्त आवेगा तब तुम्हारे पतिहोंगे ४ हे भामिनि ! अब इस रम्भाके साथ हम तुम चलोचलें यह कह उसको व मनोरमा रम्भाको रथपर चढ़ाकर ५ उसी श्रेष्ठ रथकी द्वारा वशिष्ठजीके आश्रमपरको अतिशीघ्रता से महायशस्वी नहुष वीर चलेगये ६ वहां पहुँच वशिष्ठजी को स्थान में देखकर प्रणाम करके स्त्री के साथ महातेजस्वी राजा बड़े आनन्दसे युक्तहुये ७ व मुनिराजके आगे उसयुद्धमें जो २ वृत्तान्त हुये थे जैसे कि उस दानवाधमको मारा सब समाचार महात्मा वशिष्ठ मुनिसे कहे ८ वशिष्ठजीने भी नहुषके वृत्तान्त सुनकर अतिहर्षितहो राजाको बहुतसी आशिषें दीं ९ व जब शुभ तिथि और लग्न आई तब मुनिराजने उनदोनोंका विवाह अग्नि व ब्राह्मणों केसम्मुखकराया १० व बहुतसे आशीर्व्वाद देकर स्त्रीसहित राजा नहुष से कहा कि हे महामतेराजन्! अब तुम शीघ्रतासे जाकर अपनी माता व पिता को देखो ११ हेसुव्रत! तुम दोनों को देखकर तुम्हारी माता व पिता बहुत हर्षित होंगे जैसे कि पूर्णमासी के चन्द्रमा को देखकर समुद्र बड़े हर्षसे प्रसन्न होता है १२ इसप्रकार ब्रह्माजीके पुत्र वशिष्ठमुनि ने उन दोनों को भेजा व मुनि के प्रणामकर रथपर चढ़के सारथि समेत दोनों गये १३ जब इसप्रकार पिता माताके देखनेको अपनी स्त्रीसमेत नहुषचले १४ सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि इतने में देवताओंने मेनकानाम अप्सराको भेजा तो मेनका मारेदुःखसे व्याकुल राजा आयुकी स्त्री को शोकके समुद्रमें गिरीहुई १५ महाभागा देवी इन्दुमती रानी से बोली कि हे महाभागे ! अब शोक को छोड़ो व पतोहू समेत अपने पुत्र को देखो १६ कितुम्हारे पुत्रके हरलेजाने वाले पापी दानव को मारकर वीर श्री से युक्त सभामें आया हुआहै १७ फिरमेनिकाने तिस इन्दुमतीसे नहुषनेहुण्डके संग्राममें जैसा वृत्तान्त कियाथा सब निवेदित किया १८ मेनिकाके वचन सुनकर बड़े आनन्दसे युक्त रानी मेनिकासे गद्गद समेत वचन बोली कि हे सखि ! तुम सत्यही कहती हो १९ अमृत समेत अत्यन्त प्रिय मनके उत्साह करनेवाला कहां है यदि सत्य है तो हम अपने प्राणादिक सब इस

प्रियवचनकी न्योछावर करसक्ती हैं २० ऐसा मेनकासे कहकर इन्दुमती अपनेपतिसे बोली कि सुनतीहैं महाबाहु तुम्हारापुत्र इसीसमय आताहै २१ हे महाराज ! यह श्रेष्ठ अप्सरा मेनिका कहती है यह स्वामी से कहकर अत्यन्त हर्षयुक्त रानी चुपहोरही २२ यह सुनकर आयुराजा तिसप्रियासे बोले कि हे महाभागे! हमसे यह बात नारद मुनि पहले कहगयेथे कि २३ हे राजन् ! तुम पुत्रकेलिये कभी दुःख न करना तुम्हारा पुत्र अच्छे पराक्रमसे उस दुष्ट हुण्ड दैत्यको मारकर आवेगा २४ सो पहलेका मुनिका कहाहुआ अब सत्यहुआ हे देवि! उन मुनिका वचन अन्यथा कैसे होसक्ताथा २५ व इसके विशेष मुनियों में श्रेष्ठ साक्षात् जनार्द्दनरूप दत्तात्रेयजी की सेवा पहले हमने व तुमने बहुत दिनोंतक तपसे कीथी २६ तब उन्होंने विष्णु केतेजसे युक्त पुत्ररत्न दियाथा कि वह पुत्र पापी दानव को सदैव मारडाले २७ दत्तात्रेयजीनेसब दैत्योंका प्रहर्त्ता प्रजाओंका पालक महाबली वैष्णवअंश धारणकरनेवाला उत्तम पुत्र तो हमको दिया हीथा २८ राजाआयुजीने अपनी इन्दुमती स्त्रीसे ऐसा कहकर अपने पुत्रके आनेका बड़ाभारी उत्सव किया २९ व बड़े आनन्दसे युक्तहोकर फिर राजाने विष्णुभगवान् का स्मरण किया जोकि सबपदार्थों सेयुक्त देववर्गसमेत आनन्दरूप एक परमार्त्थ रूप अच्छे वैष्णव मनुष्योंके क्लेश नाशनेवाले व सुखदेनेवाले मोक्षरूप ३०।३१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखंडेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेषोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६ ॥

एकसौसत्रह का अध्याय॥

दो० यकसै सत्रहयें महँ नहुष राज्य अभिषेक ॥
तापितु जननीस्वर्ग्गहरिपुरगतिसहितविवेक १

कुञ्जल अपनेपुत्र कपिञ्जलसे बोला कि महाराजकुमार नहुष अपनी उस अशोकसुन्दरी भार्य्या व रम्भानाम अप्सरा समेत इन्द्र के दियेहुये उस श्रेष्ठ दिव्यविमानपर आरूढ़ १ सब शोभायुक्त हास्तिनापुरमें पहुँचे जो कि दिव्य मङ्गलयुक्त दिव्यमंदिरों से उपशोभित

होरहाथा २ व सुवर्ण के तोरणसे युक्त और पताकाओंसे अलंकृत होरहाथा व नानाप्रकारके बाजों से व बन्दीगण चारणादिकोंसे शोभितथा ३ व देवरूपोंके समान रूपवाले पुण्यकारी मनुष्योंसे उपशोभित व दिव्यरूपवती स्त्रियोंसे और गज अश्व रथादिकोंसे भूषित होरहाथा ४ नानामङ्गलशब्दोंसे व वेदध्वनियों से युक्तथा गीत वादित्रोंके शब्दोंसे व वीणावंशीके सुस्वरोंसे पूरण होरहा था ५ इसीप्रकारअन्यसब शोभाओंसे समाकीर्ण उत्तमपुरमें उन्होंने [illegible] वेदमङ्गल पढ़तेहुये ब्राह्मणोंने पूजा ६ उन वीरने अपने पिता व पुण्यरूपिणी माताके दर्शन किये व बड़े हर्ष से युक्तहोकर पिता के चरणों के प्रणाम किया ७ व फिर श्रेष्ठमुखवाली अशोकसुन्दरी ने अपने श्वशुर श्वश्रूके चरणोंपर बार२गिरकर भक्तिभावसे प्रणाम किया ८ फिर प्रीति दिखाती हुई रम्भा ने भी रानी राजा दोनों के [illegible] किया इसप्रकार जब प्रणाम करचुके तो नहुष महाराजकुमार ने अपने गुरु ९ व माता पितासे कुशल पूँछी तब राजा आयु आनन्दकी पुलकावली समेत आंसु छोड़तेहुये बोले कि १० अब सब व्याधि नष्ट हुये व शोक दुःख दोनों जातेरहे हे पुत्र ! तुम्हारे देखनेसे अच्छी प्रसन्नतासे सब जगत् आनन्दपूर्ण है ११ व तुम महापराक्रमी के उत्पन्न होने से हम कृतार्थ हुये क्योंकि अपने वंशका [illegible] हमको तुमने उद्धार किया १२ फिर उनकी माता इन्दुमती बोली कि हे महाभाग ! हे तात ! जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमाके तेजको देख कर समुद्र बढ़ता है ऐसेही तुम्हारे देखने से हम १३ बढ़ी हैं व बड़े आनन्द से समाकुल होकर हर्षको प्राप्तहुई हैं हे महाप्राज्ञ ! हे मान के देनेवाले ! तुम्हारे दर्शन से हम धन्य हुईं १४ इसप्रकार पुत्र से कहकर फिर छाती से लपटाकर शिरसूँघा जैसे कि बाहरसे आकर धेनु अपने बछड़े को सूँघती है १५ देवरूपी नहुष नाम पुत्रको पाकर अत्यानन्द युक्तहो पुण्यकारिणी इन्दुमती देवीने बहुतसी आशिषों से पुत्रको युक्तकिया १६ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि तब नहुष ने अपनी पुण्यवती माता देवी इन्दुमती से अपने सब वृत्तान्त जिसप्रकार दैत्य उठा लेगया था १७ व अपनी भार्या की उत्पत्ति

व प्राप्ति व जैसे फिर हुण्ड से युद्ध हुआ व जैसे हुण्डको मारा १८ सब संक्षेप रीति से कह सुनाया व जिसके सुनने से माता पिता को परमानन्द हुआ १९ व माता पिताभी अपने पुत्रका विक्रम सुन कर बड़े हर्षितहो आनन्दसे पूर्णमन होगये २० फिर इन्द्रके रथपर से धनुष्ले नहुषने देश सहित सप्तद्वीपवती सब पृथ्वी को जीतकर २१ सब धन धान्य से पूर्ण पृथ्वी अपने पिताके समर्प्पण करदी व दान पुण्यादि सुकर्म्मोंसे नित्य पिताको हर्षित कराते हुये नहुषजीने २२ अपने पितासे राजसूयादि नानाप्रकारके यज्ञ कराये महायज्ञों दानों व्रतों नियमों संयमों २३ अच्छे दानों यश व पुण्यों से व पुण्यदायक अन्य महोदय वाले यज्ञों से पिता माता को पूर्ण किया २४ फिर देवगणों ने उत्तम हस्तिनापुरमें आकर वीरमर्द्दन महात्मा नहुषजी का अभिषेक अपने हाथों से किया २५ व मुनियों सिद्धों व राजा आयुसे भी अभिषेक करवाया अशोकसुन्दरीसमेत नहुषजी का राज्यसिंहासन पर अभिषेक कराके २६ फिर राजा आयु महायशस्वी धर्मात्मा अपनी भार्य्यासमेत स्वर्ग को चलेगये व उनकी देवताओं सिद्धोंने बड़ी वहां पूजाकी २७ कुछ दिन इन्द्रलोकमें रह कर उसे छोड़कर राजाआयु ब्रह्मलोकको गये फिर मुनियों व देवों से पूजित होतेहुये राजा वहांसे शिवलोक को गये २८ अपने कर्म्मोंसे व अपने पुत्रके तेज पुण्यसे महाराज विष्णुलोकमें बसते भये २९ व हे महाभाग! पुण्यकर्म करनेवाले पुरुषोंको ऐसेही उत्तम पुण्यकर्म करने चाहियें अन्य शोक देनेवाले कर्म्मोंके करनेसे क्या है ३० जैसे नहुष धर्म्मात्मा अपने पितृके तारक हुये क्योंकि ज्ञान से पण्डित नहुष अपने सब कुलके धर्त्ता हुये ३१ यह हमने नहुष का सब चरित्र तुमसे कहा हे पुत्र कपिञ्जल! कहो अब और तुमसे क्या कहें ३२॥

चौपैया॥ इमि नहुषचरित्रं परमविचित्रं जो नर सुनै सुनावै ।
सोसब सुखभोगै रहै निरोगै निज वाञ्छितफलपावै ॥
पुनि सुरपुर जावै अतिहरषावै तायश किन्नर गावै ।
देवन मनभावै सदा सुहावै तिन्हें सुमतसमझावै ३३

इति श्रीपाद्मेभाषानुवादेगुरुतीर्थमाहात्म्येसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७ ॥

एकसौअठारहका अध्याय ॥

दो० यकसै अठरहयें महँ कह विहुण्डकी गाथ ॥
जोमाया हरिरूपलखि मोहित भयहु अकाथ १

कपिञ्जलने अपनेपिता कुञ्जलसे प्रश्नकिया कि हे तात ! प्रथम गङ्गामुखके समीप एक श्रेष्ठस्त्री रोदन करतीथी उस के दोनों नेत्रों से आंसुओंके बिन्दु गङ्गाजल में गिरते १ व गङ्गाजलके मध्य गिरतेही कमलहोते थे उन कमलोंमें बहुत दिव्य रूप व सुगन्धित बहुत पुष्प फुलातेथे २ सो हे तात ! हे महाभाग ! तिसके सुन्दर नेत्रों से निर्मल आंसुओं के बिन्दु गङ्गाजलमें किसलिये गिरते ३ उनको केवल जिसके शरीरमें हड्डी व चमड़ाही रहगयाथा जटा चीर धारण किये वह एक पुरुष तोड़ाकरताथा ४ व सुवर्णमय उन दिव्य पुष्पों से शिवकी पूजा करताथा हे महामते ! वह नारी कौनथी व पुरुष कौनथा ५ महादेवकी पूजाकरके फिर पीछेको वह रोदन क्यों करता जो हम प्रिय सुतहों तो यह सब हमसे कहो ६ तब कुञ्जल बोला कि हे वत्स ! सुनो देवनिर्म्मित वृत्तान्त हम तुम से कहेंगे यह सब पापनाशन चरित्र महात्मा विष्णु भगवान् का है ७ जिस महावीर हुण्ड दैत्य को राजा नहुष ने समर में माराथा उसके पुत्रका विहुण्ड नाम हुआ वह तप करने लगा ८ जब उसने सुना कि मन्त्री और सेना समेत हमारे पिता को वीर बलवान् आयुके पुत्र नहुषने रणमें मारडाला ९ तो उसने क्रोधसे बड़ा तप किया व तप करने से उस दुष्टका पौरुष बहुत बढ़ा फिर वह देवताओं के मारने में उद्यत हुआ १० सब देवता रणमें उसको दुःसह जानते भये यहां तक कि हुण्ड का पुत्र विहुण्ड तीनोंलोकों के मारने में उद्यत हुआ ११ व पिताके वैरका पलटा लेने के लिये हम देवताओं मनुष्यों को मारडालेंगे इसप्रकार समुद्यत होकर वह पापी देवताओं ब्राह्मणों का कण्टक हुआ १२ वह उपद्रव व प्रजाओंको पीड़ादेता तब इन्द्रादि सब देवगण तिसके तेजसे जलते भये १३ देवदेव महात्मा श्रीविष्णु भगवान् के शरणको गये जोकि देवदेव जगन्नाथ शंख चक्र गदाधारी

हैं १४ उनसे देवता कहतेभये कि विहुण्डके महाभयसे हमारी नित्यही रक्षाकरो श्रीविष्णु बोले कि हे देवगणो ! सुखसे तुम्हारी बढ़तीहो १५ देवताओं के कण्टक पापी विहुण्डको हम मारेंगे इसप्रकार उन देवताओं से कहकर फिर माया करके श्रीहरि महायशस्वी १६ अपने आप अपना मायामय सुरूप बनाकर एक दिव्य रूप की गुणयुक्त स्त्री बनकर नन्दनवनमें जापहुँचे १७ कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि देवताओंके वधके लिये विहुण्ड दिव्यमार्गको गया १८।१९ व नन्दनवन के समीप उसने माया देखा व देखतेही वह दैत्य तिससे ऐसा मोहित हुआ कि कामबाणों से पीड़ित होकर २० उसने कालरूप श्रेष्ठ स्त्री को अपना नाश न जाना व रूप लावण्यसमेत उस नवीन सुवर्ण के समान स्त्री को देखकर २१ पापात्मा विहुण्ड अति कामातुर होकर श्रेष्ठ स्त्रीसे बोला कि हे वरारोहे ! तुम कौन हो कौन की हो जो हमारे चित्तको मथतीहो २२ हे वरानने ! हमको सङ्गमदेवो हमारी रक्षाकरो रक्षाकरो हे देवेशि ! जब हमारा सङ्गम करोगी तब जिस२ कामकी इससमय इच्छा करोगी २३ वह सब हम तुमको देंगे चाहे देवता दैत्योंको भी दुर्लभ क्यों न हो तब वह मायामयी स्त्री बोली कि हे दानव ! जो हमारे सङ्ग भोग किया चाहतेहो तो यह करो भाग हमको दो २४ किरोड़ कामोदके दिव्य सुगन्धित देवोंके दुर्लभ पुष्पोंसे महादेवकी पूजाकरो २५ उन सुगन्धित पुष्पोंकी माला बनाकर फिर आकर हमारे गले में अपने हाथोंसे पहिनाओ हे महाभाग ! यही भाग हमको देओ २६ तब हम तुम्हारी सुप्रिया भार्य्या होंगी इस में कुछ संशय नहीं है तब विहुण्डने कहा हे देवि ! ऐसाही करेंगे ऐसे पुष्पोंकी माला तुमको देंगे २७ ऐसा कहकर वह दानवेश्वर सब पुण्यकारी दिव्य वनों में घूमनेलगा काम बाणसे व्याकुल वह वृक्ष उसने कहीं न देखा २८ जहां कहीं जाय पूँछे कि कामोद का वृक्ष कहां है तब सब महाजन कहें कि कामोद नाम वृक्ष तो नहीं है २९ इस प्रकार कामबाणों से पीड़ित वह दुष्टात्मा सबसे पूँछते २ एकदिन जाकर बड़ी भक्तिसे मस्तक झुकाकर भार्गवमुनिसे पूछा ३० कि आप सुन्दर पुष्पयुक्त कामोदकनाम वृक्ष हमसे बतावें तब शुक्राचार्य्यजी

बोले कि हे दानव! कामोद वृक्ष तो नहीं है पर स्त्री है ३१ जब वह हर्षित होकर किसी प्रसंगसे हँसती है तब हे दैत्य! उसके हास्य करने से श्रेष्ठ सुगन्धित दिव्य हृदय को प्रिय सुगन्ध युक्त पीले पुष्प उत्पन्न होते हैं इसमें सन्देह नहीं है ३२ । ३३ उनमेंसे जो कोई एकपुष्प से भी महादेवजीको पूजन करताहै उसका वाञ्छित महादेवजी पूर्ण करते हैं ३४ हे दैत्य! उस स्त्रीके रोदन करनेसेभी होते हैं इसमें सन्देह नहीं है तैसेही लोहित बहुत पुष्प होते हैं ३५ बिना सौरभके हे दैत्य! तिन पुष्पोंको न छुवै जब ऐसा शुक्राचार्य्य का वचन विहुण्डने सुना ३६ तो फिर उनसे बोला कि शुक्रजी कामोदा नाम स्त्री कहांहै शुक्र बोले कि महापातक नाशनेवाले महापुण्य गङ्गाद्वारपर ३७ कामोदाख्यपुर है वह विश्वकर्म्माका बनाया हुआहै उसी पुरमें दिव्य भोगों से शोभित ३८ आभरणों से शोभित सब देवों से पूजित कामोदा नारी रहती है उसकी पूजा जाकर तुम करो सो इस रीतिसे कि जैसा करने से वह श्रेष्ठ अप्सरा हँसे वही पुण्यकारी उपायकरो ॥

चौ० इमिकहियोगिराजभार्गवमुनि । कीनविरामकामअपनोपुनि ॥
करनलगे करिमानसपावन । जो सबभांतिसुहावनगावन ३९ । ४१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे च्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेऽष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

एकसौउन्नीसका अध्याय ॥

दो० यकसैउन्निस महँ कह्यो जिमि विहुण्डकी दौष्ट्य ॥
लखिहरियुवतीह्वैविधिज कहँ नहँ पठव सपौष्ट्य १

कपिञ्जलने अपने पिता कुञ्जलसे पूँछा कि हे तात! जिसके हँसने से दिव्य गन्धयुक्त व सुरासुरों को भी दुर्लभ सुहृद्य पुष्प उत्पन्न होते हैं १ हे महामते! उन पुष्पों को सब देवगण वाञ्छाकरते महादेवजी हास्य के पुष्पों से पूजित सुखको प्राप्त होते हैं २ उस पुष्प का क्या गुणहै हमसे विस्तारसहित कहो व कामोदा कौनहै व वह वरांगना किसकी पुत्री है ३ हे महाभाग! उसके हँसने से सुन्दर पुष्प

क्यों होते हैं व उन पुष्पों में कौनसा गुणहै यह सब कथा हमसे विस्तारपूर्वक कहो ४ कुञ्जल बोला कि जब देवताओं व महादैत्यों ने उद्यत होकर बड़ी उत्तममित्रताकरके अमृतके लिये क्षीरसागरको मथा ५ तब उन सुरासुरों के मथने से क्षीरसागरसे अतिदिव्य चार कन्या निकलीं उन कन्याओंको प्रथम वरुणने दिखाया फिर चन्द्रमा ने दिखाया ६ फिर कलशमें भराहुआ पुण्यकारी अमृत निकला वे चारो कन्या देवोंकेही हितकी इच्छा करती भईं ७ उनमें एकका लक्ष्मीनाम था दूसरी का वारुणी तीसरी का ज्येष्ठा व चौथी का कामोदा नामहुआ ८ हे महामते ! उनके मध्यमें पहले उत्पन्न हुई वह श्रेष्ठ ज्येष्ठाहुई क्योंकि उसमें सबसे अधिक गुण थे इससे उस ज्येष्ठा की पूजा सदा हुआ करती है ९ व क्षीरसागरसे निकलेहुये पय के फेनेसे वारुणीनाम कन्या हुई व अमृतकी लहरी से कामोदा हुई १० लक्ष्मी व चन्द्रमा ये दोनों अमृतही से उत्पन्न हुये हैं च-न्द्रमा तीनों लोकों के भूषणहुये मुख्यकर शिवजी के तो प्रियहुये ११ व ज्येष्ठा मृत्युरोग हरनेवाली हुई तैसेही देवों को वारुणीहुई ज्येष्ठा कल्याणकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको अत्यन्त पुण्यदेनेवाली भई १२ व जो अमृतसे पुण्यदेनेवाली कामोदा नाम देवी उत्पन्न हुई उसने श्रीविष्णुही की प्रीतिके लिये वृक्षरूप धारण किया १३ वह सदैव विष्णुके प्रीति करनेवाली होगी वही पुण्यकारिणी कामोदा तुलसीहोगी इसमें सन्देहनहीं है १४ तिसके साथ जगन्नाथजी रमण करेंगे इस में भी संशय नहीं है जो तुलसी का एक पत्र श्रीहरि को चढ़ावेगा १५ श्रीभगवान् उसका उपकार मानेंगे कि हम इसके बदले में इसे क्या दें ऐसा नित्य चिन्तवन करते २ फिर उसकी प्रीति करने लगेंगे १६ सो इसप्रकार पूर्वकालमें कामोदा समुद्र से उत्पन्नहुई जब वह कभी हर्षसे गद्गदवचन कहतीहुई हँसतीहै १७ तब उसके मुखसे सुगन्धित दिव्य पुष्प निकलने लगते हैं व कभी सुन्दरपुष्प सूखते नहीं जो कोई उद्यत होकर उनफूलोंको ग्रहणकरता १८ और उनसे शङ्करदेव ब्रह्मा वा श्रीविष्णु की पूजा करताहै उसके ऊपर ये तीनों देव प्रसन्नहोते हैं व जो कुछ वह मांगताहै उसको देते हैं १९

व जब किसी दुःख से दुःखित जब यह रोती है तो उसके नेत्रों स
जलकी धारा बहती है उससेभी वैसेही दिव्यपुष्प बहुत उत्पन्नहोते
हैं वे सुगन्धहीन होते हैं उनसे जो महादेवजी को पूजता है २० ।
२१ उसको दुःख व सन्ताप होते हैं इसमें सन्देह नहीं है जो पाप-
बुद्धि सुगन्धहीन उन पुष्पों से एक बार भी देवोंको पूजताहै २२
तो देवता उसको दुःख करतेहैं इसमें सन्देह नहीं है हे पुत्र ! यह
तुम से हमने सब कामोदा के जन्मकी उत्तम कथा कही २३ यही
चिन्तना करके श्रीविष्णु भगवान्‌जीने पापी विहुण्डका विक्रम सा-
हस व उद्यम देखकर २४ श्रीनारदमुनिको उसके समीप भेजा कि
तुम जाकर उसदुष्ट विहुण्डको मोहितकरो फिर महात्मा श्रीविष्णुजी
के वचन सुनकर नारदजी २५ चले व कामोदा के समीपको जाते
हुये उस दुष्टात्मा विहुण्ड के पास पहुँचे व हँसतेही से उस दुष्ट दै-
त्यन्द्रसे बोले २६ कि हे दैत्येन्द्र ! अतिआतुरहोकर बड़ी शीघ्रता
से कहांको जाते हो व इस समय किस कार्यके लिये और किसके
भेजेहुये जातेहो २७ तब वह नारदजी के नमस्कारकर हाथ जोड़
कर बोला कि हे द्विजसत्तम ! हम कामोद पुष्पकेलिये जाते हैं २८
तब धर्म्मात्मा नारदजीने उससे कहा कि उन पुष्पों से तुम्हारा कौन
प्रयोजन है तब उसने विप्रवर्य्य नारदजी से अपने कार्य्यका कारण
कहा २९ कि नन्दनवनमें एक अतिश्रेष्ठ स्त्रीहै उसके दर्शनमात्र से
हम कामके वशीभूत होगये ३० हे विप्रश्रेष्ठ ! उसने हमसे कहा कि
कामोदा से उत्पन्न पुष्पों से महादेवजी की पूजाकरो सो सात कि-
ड़ोर पुष्पों से ३१ तब हम तुम्हारी प्रियाहोंगी इसमें सन्देह नहीं है
सो हम उन्हीं पुष्पोंके लिये अब कामोदपुरको जाते हैं ३२ व समुद्र
से उत्पन्न उस कामोदाको हम लेआवेंगे सो उसके मन को ऐसा उ-
ल्लासित करेंगे और महाहासों से फिर हँसावेंगे ३३ वह महाप्रसन्न
होगी तो बारबार हँसेगी हे विप्र ! उसका गद्गद हास्य हमारा कार्य
बढ़ावेगा ३४ तिससे कि वह अपने हास्यसे दिव्य पुष्प गिरावेगी
उन से इसी समय शिवकी पूजा करेंगे ३५ वे पूजा के देने से सन्तुष्ट
होकर उस [illegible] फल हमको देंगे क्योंकि महादेवजी सब प्राणियों के

स्वामी व कल्याणकर्त्ता लोकभावनहैं ३६ यह सुनकर नारदजी बोले कि हे दैत्य! तुम कामोदनाम उत्तम पुरको कभी न जाना क्योंकि वहां सब दैत्यों के नाशक अत्यन्त बुद्धिमान् विष्णुजी रहते हैं ३७ हे दानव ! जिस उपायसे कामोद नाम पुष्प तुम्हारे हाथ लगैंगे वह उपाय हम तुमसे कहते हैं ३८ गङ्गाके जलमें वे दिव्य पुष्प गिरते हैं इसमें सन्देह नहीं है वे पुष्प जलों में बहते हुये इस समय यहां आवेंगे ३९ उन दिव्य बहुतसे पुष्पोंको लेकर तुम अपना मनोवाञ्छित साधन करना ४० यह दानव श्रेष्ठसे कहकर फिर मोहितकर धर्म्मात्मा नारदजी ने चिन्तनाकी ४१ कि अब वह कामोदा कैसे रोदनकरे किसदुःखसे दुःखितहो इस विषयमें एक क्षणभर विचारांश कर ४२ फिर बुद्धिसे समझकर आप कामोदनामपुरको चलेगये ४३॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे च्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेएकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ११९ ॥

एकसौबीसका अध्याय ॥

दो० यकसै बीस अध्यायमहँ कामोदा सों भाष ॥
नारदमुनि पैत्तिक प्रमुख स्वप्न सकलसहसाष १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि नारदजी सब कामों से समृद्ध व देवताओं से समाकुल दिव्य कामोदाख्यपुर देखतेभये १ व द्विजोत्तमजी कामोदाके घरमें प्रविष्टहुये व सब कामों से समाकुल कामोदा को देखकर २ उससे अर्घ्य पाद्याचमनीय व स्वागतादिक सुवाक्योंसे पूजितहुये फिर दिव्य आसनपर बैठकर उस स्त्री से बोले ३ कि हे विष्णु तेजसे उत्पन्न कल्याणयुक्तवाली ! सुखसे तो रहती हो तुम्हारा अनामय तो है ऐसा कहकर बहुतसे आशीर्व्वाद दिये ४ तब कामोदा देवर्षिजी से बोली कि तुम्हारे व श्रीविष्णुभगवान् के प्रसाद से हम सुखसे हैं हे महाभाग ! प्रश्नोत्तर का कारण हमसे कहिये ५ व हे मुनिपुङ्गव! हमारे अंगमें महामोह उत्पन्नहुआहै कि हमारी मतिका नाशकरताहै वह सब लोगों मेंभी व्याप्तरहताहै ६ उसी महामोहके कारण हमको निद्रा आरही है जैसे मनुष्यादिकोंको आतीहै हे मुनि

जी ! आज हम सोगई थीं तब हमने एक दारुण स्वप्न देखा ७ कि किसी ने आकर हमसे यह कहा कि ये अव्यक्त हृषीकेश भगवान् संसारको जावेंगे ८ तबसे हम बड़े दुःखसे दुःखितहैं आप ज्ञानवानों में श्रेष्ठ हैं इसका कारण हमसे कहें ९ नारदजी बोले कि हे भद्रे ! मनुष्यों में वात पित्त कफ और सन्निपातसे उत्पन्न स्वप्न सदा हुआ करते हैं इसमें संदेह नहीं है १० परन्तु देवताओं में ये स्वप्न कभी नहीं होते सो हे सुन्दरि ! जो उत्तम स्वप्न सूर्योदय के समयमें दिखाईदेताहै ११ वह अच्छा स्वप्न मनुष्योंको पुण्य फलदायक होताहै हे शुभे! अब औरभी स्वप्नका कारण तुमसे कहते हैं १२ हे वरानने! जब प्रचण्ड पवन चलताहै तो उससे सब जल चलायमान होते हैं उनसे सूक्ष्म जलकण निकलने लगते हैं १३ वे निर्मल जलकण बाहर निकलकर जापड़ते हैं व फिर आकर उन्हीं जलोंमें लीन होजाते हैं इससे कभी दृश्य कभी अदृश्य होजाते हैं १४ ऐसेही स्वप्न का भावहै सो कहते हैं हे भामिनि! सुनो यह आत्मा शुद्ध और विरक्त है इससे राग दोषों से विवर्जित रहताहै १५ व यह शरीर पृथ्वी जल अग्नि पवन आकाश पांच तत्त्वों से बनाहै इससे छब्बीस तत्त्वों के बीचमें यह रहताहै १६ यह शुद्धात्मा केवल नित्य है पर प्रकृति केसाथ इसका सङ्गम होजाताहै उसी प्रकृतिके वायुरूप भावों से प्रेरितहोकर स्थानसे जब इधर उधर चलायमान होने लगताहै १७ तब वह आत्मा तेजके संग प्रचलित होनेलगता है वास्तव में इस अन्तरात्मा का शुभनामहै जैसे पवनके प्रसङ्गसे जल में जलकण उठनेलगते हैं फिर फेना निकलने लगताहै ऐसेही प्रकृत्यादिकों के संयोगसे यह आत्मा कभी कभी चलायमान होताहै १८ । १९ नहीं तो यही आत्मा पृथ्वी है यही वायु यही आकाश यही तेज यही जल ये पांचों पहले कियेगये हैं २० ये आत्माके तेजसे संयुक्त होने के कारण पञ्च महाभूत कहाते हैं व उसीके संगको पाकर फिर ये पांचो एक होजाते हैं २१ तब आत्माके साथ पांचो ऐसे मिल जाते हैं कि दिखाई भी नहींदेते कि कहांहैं हे वरानने ! फिर इसीप्रकार बार २ अपने निर्गमकी इच्छा किया करते हैं २२ व इन्हीं तत्त्वोंकी

क्रीड़ा के रूपसे यह सब सृष्टि होतीहै जैसे जलमें तरङ्ग उठतेहैं फिर उसीमें लीन होजाते हैं २३ ऐसेही इन पांच महाभूतों से सृष्टि होती है फिर उन्हीं में लीन होजाती है जैसे जलका व तरंगका दृष्टान्त है वैसाही सृष्टिकारूपहै इसमें संदेह नहीं है २४ हे देवि! आत्मा तेज वायु पृथ्वी आकाश जल ये नाश नहीं होते हैं २५ सो हे भद्रे! आत्माके साथ तो ये पृथिव्यादि पञ्चमहाभूत नित्यहैं इसमें संशय नहीं है २६ केवल इनके इकट्ठे होने से जो पिण्ड बनजाताहै उसीका नाश होताहै व इनके विषयों का नाश राग द्वेषादिकों से होजाता है २७ तब सब वे प्रलयको प्राप्त होजाते हैं व पिण्डीभूत वह शरीरभी नष्ट होजाताहै व इन पञ्च महाभूतों में पिण्डके नाशहोनेपर भी अन्त-रात्मा सदा प्रकाशित रहताहै २८ जैसे अग्नि जब प्रज्वलित होता है तब उससे चिनगारियां निकलती हैं ऐसेही इनके संग आत्मा प्रकाशको प्राप्त होताहै कभी दृश्य कभी अदृश्य रहताहै २९ परन्तु वह शुद्धात्मा परब्रह्म नित्य सदैव जागताहै अंतरात्मा प्रकृति के महागुणों से बँधाहै ३० अन्नके आहार से पुष्टों से अंतरात्मा सुखको प्राप्त होताहै तिससे मनमोहित होजाताहै ३१ पीछे से तामसीलय बढ़ानेवाली निद्रा उत्पन्न होती है सो जबतक सूर्य्य सुमेरु पर्व्वतके उस पार जाकर उदय नहीं होते तबतक हे वरानने! यह आत्मा विषयान्धकारों से घिरारहता है अर्थात् तबतक रात्रिहोती है ३२। ३३ व तबतक पञ्च तत्त्वों से प्रतोषित आत्मा योगनिद्राको ग्रहण करके आनन्द करता है व पूर्व्वजन्मके स्थित पिण्डमें निशावसानमें फिर आत्मा प्राप्त होताहै ३४ व वह आत्मा फिर ऊँचे नीचे पिण्डोंमें प्रवेश करता है व आत्मा संसारमें दोषोंसे बँधा प्राप्त होताहै ३५ व जीवात्मा देहकी रक्षाकरता पीछे मध्य में प्राप्त होकर स्थित होताहै जब उदानवायु स्फुरित होताहै तो उससे शब्द उत्पन्नहोता है ३६ जैसे सूखी धौंकनी वायु से पूरित श्वास करती है तैसेही शब्दके वश से उदान बलसे श्वासकरताहै ३७ व आत्माकेही प्रभावसे जब प्रेरित होताहै तब उदान पवन बलवान् होताहै व इसीप्रकार शरीर मोहको प्राप्त होताहै मृतकके समान होजाताहै ३८ तब इसको महामाया

निद्रा आजाती है वह हृदय कण्ठ मुख नासिकामें स्थितहोताहै ३९ और बाहुको संकुचित करादेता है व नाभिमण्डलमें हृदय में स्थित होताहै तब आत्माके प्रभावसे उदान नाम पवन ४० महातीव्र उत्पन्न होताहै इससे वह जाकर बलको रोंकदेताहै जैसे काठका कील रस्सी से बांधने से दृढ़ होजाताहै ४१ ऐसेही आत्माकी प्रेरणासे बद्धहोकर प्राणवायु दृढ़होता है इसमें सन्देह नहीं है हे शुभानने! अन्तरात्मा में प्रसक्तप्राणवायुहै ४२ व हे भद्रे! इसप्रकार महानिद्रा अर्थात् मरणके पीछे अन्तरात्मा फिर अपने दूसरे शरीरमें प्रवेश करताहै व पूर्व्वजन्मका स्मरण करताहुआ उस शरीर में इधर उधर दौड़ता रहता है ४३ व वहां रहकर वह महाप्राज्ञ अपनी इच्छा से रमताहै व इसीप्रकार नानाप्रकार के स्वप्न अन्तरात्मा देखा करता है ४४ कर्म्म से युक्त उत्तम व अपने विरुद्ध स्वप्न देखताहै ऊँचे नीचे नाना प्रकार के पर्व्वत दुर्ग्गमस्थान देखताहै ४५ सो वातसे जानो यह कफकीनाईं है तिसको कहते हैं जल नदी तड़ाग और जलके स्थान ४६ अग्नि उत्तम बहुत सुवर्णको स्वप्न में देखताहै ये सब पित्तके कारण स्वप्न देखताहै अब भाग्यको कहते हैं ४७ व हे वरारोहे! जो स्वप्न प्रभात समय प्राणी अच्छा वा बुरा देखताहै वह लाभ अलाभका दायक अपने फलके अनुसार होता है ४८ ॥

चौ० इमिपैत्तिकसबस्वप्नबखाने । जिनकर फलनहिं होत प्रमाने ॥
वातजहू नहिं सफल कदापी । होतस्वप्न नहिं मृषा अलापी ॥
विष्णुप्रसाद पाय सबसपना । सफल होत देवत फलअपना ॥
तुम देखा दुस्स्वप्न करारी । हरिप्रसाद होइहि फलकारी ४९।५०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे माहात्म्येच्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइक्कीसका अध्याय ॥

दो० यकसै इक्कीसयें महँ देवी मायारूप ॥
धरिमारोसुविहुण्डकहँ कहास्वमति अनुरूप १

नारदजी के वचन सुनकर कामोदा बोली कि जिस परमेश्वरका

अन्त सब देवगण नहीं जानते व न जिसका रूप जानते हैं व जिस में यह सब संसार लीन रहताहै वही आत्मा कहाताहै १ व हे नारद! सुनो जिसकी मायाका प्रपञ्च यह सब संसारहै वह हमारा स्वामी जगत्पति संसारको कैसे प्राप्तहोताहै २ व मनुष्य पाप पुण्य कर्म्मों से बँधा रहताहै फिर हे विप्र! श्रीहरि संसार में क्यों प्राप्तहोते हैं इसका कारण हमसे कहो ३ नारदजी बोले कि हे देवि! सुनो श्रीहरि जिस कारण इस संसार में जन्म लेते हैं उसका हेतु तुमसे कहते हैं आगेकी बातहै कि भृगुमुनि यज्ञकरनेलगे तब श्रीहरिने प्रतिज्ञाकी कि हम यज्ञकी रक्षाकरेंगे ४ जब भृगु यज्ञ करनेलगे तो उसी बीचमें देवताओं दैत्योंका संग्राम होनेलगा तब इन्द्रकी रक्षाकेलिये श्रीहरि भृगु के यज्ञकी रक्षा छोड़कर चलेगये ५ जब श्रीहरि चलेगये तो पापी दानवोंने आकर भृगुमुनि के यज्ञका विध्वंस करडाला ६ तब श्रीहरिको योगीन्द्र भृगुजीने शाप दिया कि अच्छा हमारे शाप से मलिनहोकर मर्त्यलोकमें तुम दश बार अवतार लेवो ७ बस तबसे जन्मलेकर श्रीजनार्दनजी अपने कर्म्मों का फल भोगते हैं सो हे देवि! यह तो हमने तुमसे कहा हमको उन्हीं श्रीहरिने तुम्हारे निमित्त यहांको भेजाहै ८ इतना कहकर नारदजी तो ब्रह्मलोकको चले गये और श्रीविष्णुभगवान् के दुःखसे कामोदा अतिव्याकुलहोकर ९ हाहा कहकर वह बाला करुणापूर्वक बारबार रोदन करनेलगी रोदनके समय गङ्गाजी के तटपर जलके बनाय समीप बैठीथी १० दोनों नेत्रोंसे मारे दुःखके आंसु गिराने लगी वे आंसु सब गङ्गाजी केही जलमें गिरे ११ व जल में जाकर डूबगये हे तात! फिर सब वे भी कमलरूप होगये १२ फिर वे आंसु सुन्दर फूलहोकर गङ्गाजी के जलमें बहनेलगे फिर विष्णुभगवान्की मायासे मोहित उस विहुण्ड दानवने उन पुष्पों को देखा १३ मुनि ने कहाथा कि कामोद पुष्प अभी गङ्गाजलमें बहकर आवेंगे इससे उस दानवने न जाना कि ये पुष्प दुःखके आंसुओं से उत्पन्नहैं इससे दुःखद व नाशक हैं आनन्दके आंसुओंसे उत्पन्न नहीं हैं इसलिये बड़े हर्ष से युक्तहोकर उस दैत्य ने उन फूलों को गङ्गाके भीतर से निकाल लिया १४ व

उन्हीं फूलों कमलों से गिरिजापति शङ्करजीकी पूजा उसने की विष्णु की मायासे अतिमोहित उसने सात किरोड़ फूलों से महादेवजी को पूजा १५ यह वृत्तान्त देखकर देवीजी अत्यन्त क्रुद्धहोकर महादेव जी से बोलीं कि हे महामते! इस दानवके कर्म्म आपने देखा १६ कि शोक से फूलेहुये पुष्प गङ्गाके जलमें बहतेहुये कामसे आकुलचित्त १७ यह दुष्ट लेआताहै व उन शोक सन्ताप करनेवाले पुष्पोंसे आप की पूजा करता है फिर दुःख देनेवाले शोकसे उत्पन्न उन पुष्पों से पूजा करने से इसका कल्याण कैसे होगा १८ जैसे भावसे हमको पूजा तैसे भावसे इसकी सिद्धि होगी १९ यह कामोदा में मन लगाये है इससे सत्य ध्यानसे विहीन है इससे महापापात्मा है हे देवि! तुम अपने तेजसे इसको मारडालो २० महात्मा शम्भुजी की ऐसी वाक्यसुनकर देवीजी बोलीं कि हे शम्भुजी! तुम्हारी आज्ञासे हम इस दुष्टका नाशकरेंगी २१ ऐसा कहकर फिर देवीजी उस विहुण्डके वध के विषय में चिन्तना करनेलगीं कि कैसे इसका वधकरें २२ फिर सोचकर उन्हों ने महात्मा ब्राह्मणका मायास्वरूप बनाया व पारिजात के सुन्दर पुष्पों से शङ्करकी पूजा करनेलगीं २३ तब पापी दानवने आकर उस ब्राह्मणकी कीहुई दिव्य पूजा का नाशकरदिया क्योंकि वह तो काम के मारे व्याकुल था उसका भाव उसी मायामय विष्णुरूप स्त्री में लगाथा २४ व विष्णुजीकी माया से वह दुष्ट मोहितथाही इससे कामबाणों से पीड़ित होकर उस दुष्टने उसी स्त्रीका स्मरण किया २५ व उसके स्मरणमात्रसे बलवान् कन्दर्प से व्याकुलित होगया मदन ने बनाय उस समय उसे पीड़ित किया बार बार रोने लगा २६ इसी से कालके मारेहुये उस दुरात्मा ने उन शोकसे उत्पन्न पुष्पों से शिवजी की पूजाकी २७ व बहुत से पुष्प इकट्ठे किये व दिव्य पुष्पों से जो पूजा वह ब्राह्मणरूप देवी करतीथी उसे तो अत्यन्त लोभसे नष्ट करदिया व आप उन्हीं शोकज पुष्पों से पूजने लगा २८ व शोकज पुष्पों से पूजन करने के कारण उस दुष्ट के नेत्रों से भी आंसुओंकी धारा बहती चलीजातीथी व शिवजी के ऊपर पड़तीथी २९ तब ब्राह्मण का रूप धारण किये हुई देवी।

जी उससे बोलीं कि हे महामते ! आप कौनहैं जो इस प्रकारके शोक से युक्तहोकर सदैव शिवजी की पूजा करते हैं ३० व शोकसे उत्पन्न आंसुओं के बूँद देवताके शिरपर गिरते हैं ये आंसुओं के बिन्दु अपवित्र हैं इसका कारण हम से कहो ३१ विहुण्ड बोला कि पूर्व काल में सब सौभाग्य सम्पदासे सब लक्षणयुक्त बड़ा काम का घर एक स्त्री हमने देखी है ३२ उसके मोहसे सन्तप्त होनेके कारण हम कामसे व्याकुलहैं उस स्त्रीने कहा कि भोगमें हमको उत्तम भागदो ३३ कामोदाख्य पुष्पों से शङ्करजीकी पूजाकरो तिनके ऊपरके चढ़े हुये पुष्पों की माला हमारे गले में डालो ३४ सो जब सातकोटि पुष्पों से पूजाकरो बस इसी अर्थ फलदायक शिवकी पूजा करते हैं ३५ ये कामोद सम्भव पुष्प देवताओं व दैत्यों कोभी दुर्लभहैं तब देवीजी बोलीं कि हे दुष्ट ! तेरा भाव कहां है व तेरा ध्यान कहां है व तेरा ज्ञान कहां है ३६ ईश्वरका कुछभी सम्बन्ध तेरा नहीं है कामोदाका श्रेष्ठरूप कैसाहै प्रथम हम से कह ३७ व उसके हँसने से उत्पन्न पुष्प तूने कहां पाये विहुण्ड बोला कि भाव व ध्यान हम नहीं जानते न हमने कभी कामोदा को देखाहै ३८ गङ्गाजी के जलमें प्राप्त पुष्पों को नित्यही ग्रहण करताहूं तिनसे शङ्कर एकही को पूजन करताहूं यह मैं कहताहूं ३९ हे विप्र ! हमारे आगे महात्मा शुक्रजीने भी कहा है तिसके वचनसे हम प्रतिदिन महादेवजी को पूजते हैं ४० जो तुमने हमसे पूँछा सब हमने तुम से कहा देवीजी फिर बोलीं कि कामोदाके दुःख से उत्पन्न पुष्पों से ४१ तुम नित्य प्रभात समय शिवलिङ्ग की पूजा करतेहो सो जैसे भावों से व जैसे पुष्पों से तुमने ४२ शिवकी पूजाकी है वैसेही फलोंको भोगो दिव्य पूजा का नाशकरके शोक के पुष्पों से पूजन किया ४३ इससे तुम को यह बड़ा दारुण दोष उत्पन्न हुआ तिससे हम तुमको दण्डदेंगे अब अपने कर्म से उत्पन्न फलको भोगो ४४ उस मायारूप ब्राह्मण के ऐसे वचन सुनकर कालके वशीभूत होकर वह दुष्ट दैत्य यह बोला कि रेरे दुष्ट रे दुराचार रे हमारे कर्म्म के दूषण करनेवाले ४५ हम इस खड्गसे तुझको मारते हैं इसमें संशय नहीं है ऐसा कहकर

उस ब्राह्मणके मारनेकी इच्छासे उसने अतितीक्ष्ण खड्गलिया ४६ व वह दुष्टात्मा दानव उसके मारने के लिये दौड़ा परन्तु विप्ररूप धारण कियेहुये वह परमेश्वरी देवी क्रुद्धहुईं ४७ जब उसको अपने स्थानमें आते देखा तो हुङ्कार शब्द किया उन देवीजीके हुङ्कारके शब्दसे वह दानवों में अधम पतित होगया ४८ व वज्रसे मारेहुये पर्व्वतके समान चेष्टारहित होकर गिरपड़ा जब सब लोकों का नाशक वह दानव पतित होगया ४९ तो सब लोक दुःख तापसे रहित होकर स्वस्थ होगये हे वत्स! गङ्गाजीके तीरपर इसीलिये वह वरारोहा कामोदा दुःख से व्याकुल मन होकर रोदन करती है यह सब तुमसे कहा जो तुमने पूंछा ५०।५१ ॥

चौ० इमिनिजसुतसोंकहिखगराजा। कुञ्जलसबविधिसाजिसमाजा ॥
कीनविराम न पुनिकुछ बोला। भूपति तुमसन हम यहखोला ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेएकविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२१ ॥

एकसौबाईसका अध्याय ॥

दो० यकसैबाइसयें महँ च्यवन कुँजल सों पूँछ ॥
तिनभाष्यो निजपूर्व्वजनि कथा औरनाहिं कूछ १

श्रीविष्णुभगवान् राजावेनसे बोले कि धर्म्मयुक्त बड़ा बुद्धिमान् कुञ्जलपक्षी ऐसा अपने सब पुत्रोंसे कहकर जब चुप होरहा उनसे फिर और कुछ न बोला १ तब उस वटवृक्षके नीचे बैठेहुये च्यवन मुनिने उस कुञ्जलसे कहा कि आप पक्षीका रूप धारण किये ऐसे धर्म्मवक्ता कौनहैं २ क्या कोई देव हैं वा गन्धर्व्व वा विद्याधर हैं किसके शापसे इस सुयेकी पापयोनिमें उत्पन्न हुयेहैं ३ तुम्हारा ऐसा दिव्यज्ञान कैसे है यह किस सुन्दर पुण्य वा तपका फलहै ४ अथवा हे महामते! कोई सिद्ध वा देवहीहो इस रूपमें छिपे हुयेहो इसका कारण हमसे कहो ५ तब कुञ्जल च्यवनसे बोला कि हे सिद्ध! उत्तम गोत्र कुल तो हम जानते हैं विद्या तपका प्रभाव जानते हैं जिससे तुम पृथ्वीपर घूमतेहो ६ हे विप्र! हेसुव्रत! सब तुमसे कहते हैं अच्छे

प्रकार तो तुम्हारा आगमन हुआ अब अच्छे प्रकार इस वृक्षकी छायामें उस पुण्यकारी आसन पर विराजिये ७ अव्यक्तब्रह्मसे ब्रह्मा जी उत्पन्न हुये उनसे प्रजापति ब्राह्मणद्विज भृगुजी उत्पन्नहुये जो कि ब्रह्माकेही गुणोंसे युक्त होनेके कारण उन्हींके समानहैं ८ व उनके पुत्रका भार्गव नाम हुआ ये सब धर्म्म जाननेवालों में बड़े श्रेष्ठ हुये उन्हीं के वंशमें आप उत्पन्न हुये हैं व च्यवन आपका अतिप्रसिद्ध पृथ्वीमें नामहै ९ हम न देवहैं न गन्धर्व्व न विद्याधर हे विप्र! जो हमहैं कहते हैं कहते हुये हमसे सुनो १० कश्यपके कुलमें उत्पन्न वेदवेदाङ्गपारग सर्व्वकर्म्मप्रकाशक एक उत्तम ब्राह्मण था ११ विद्याधर उसका नामथा व कुल शील गुणों से संयुतथा व आचार तप करने के कारण शोभासे वह प्रकाशित था १२ उस विद्याधरके तीन पुत्र हुये वसुशर्म्मा नामशर्म्मा धर्म्मशर्म्मा ये तीन भये १३ उनमें सबसे छोटा धर्म्मशर्म्मा हुआ जोकि गुणसे वर्जितथा सो वह मैं था वसुशर्म्मा हमारा भाई वेद शास्त्रके अर्थका जाननेवाला १४ आचार से और विद्यादि अच्छे गुणों से युक्त हुआ नामशर्म्मा महा बुद्धिमान् तैसेही गुणों में अधिकहुआ १५ मैं एक महामूर्ख हुआ हे सत्तम! सुनो हे विप्र ! विद्याओंका उत्तम भाव शुभ अर्थ कभी १६ न सुनूं न उत्तमगुरुजी के घरको जाऊं तब मेरेपिता हमारे लिये चिन्तना करतेभये १७ कि धर्मशर्मा पुत्रका नाम निरर्थकहै पृथ्वी के मध्य में विद्वान् और गुणखानि न हुआ १८ यह चिन्तनाकर धर्मात्मा अत्यन्त दुःखित हमसे बोला कि हे पुत्र ! गुरुजी के घरको विद्या पढ़नेके लिये जाओ १९ इस प्रकार पिताके शुभ वचन हमने सुनकर कहा कि हे तात ! अत्यन्त दुःखदायी गुरुजी के घरको हम न जावेंगे २० हे सत्तम! जहाँ नित्यही ताड़न भौंहें टेढ़ीकर बुलानाहै कर्मसे अन्न नहीं दिखाई देता सो सुनो २१ दिन रात्रि नींद नहींहै सुखका साधन नहीं है हे तात ! तिससे दुःखमय गुरुजीके मन्दिरको न जावेंगे २२ क्रीड़ाके अर्थमें उत्सुक विद्याका कार्य न करेंगे हे पिता जी! भोजन सोना खेलना आपके प्रसादसे बालकोंके साथ अतंद्रित होकर दिन रात्रि सुखसे करेंगे तब धर्मात्मा अत्यन्त दुःखित हमको

मूर्खजानकर बोले २३।२४ कि हे पुत्र! साहस न करो विद्याके लिये उद्यमकरो विद्या से सुख यश अतुल कीर्ति ज्ञान स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त होता है तिससे विद्याको पढ़ो पहले दुःखकी मूल होती है पीछे से विद्या सुख देती है २५।२६ तिससे हे पुत्र! तुम विद्याको साधन करो गुरुजी के घरको जावो तब हम पिताके वचन न करतेहुये दिन दिनमें २७ जहाँ तहाँ स्थित और नित्यही द्रव्यकी हानि करते भये हे विप्र! मनुष्यों ने उपहास और निन्दाकी २८ तब हमारे जीवके नाश करनेवाली लज्जा उत्पन्न हुई कि विद्या के अर्थ में उद्यत हम किस गुरुजीकी प्रार्थना करें २९ इससे मारे दुःख व शोकके मुझको बड़ी चिन्ता हुई कि मैं विद्या कैसे जानूं व गुणोंको कैसे पाऊँ ३० मुझको स्वर्ग कैसे हो व फिर मोक्ष कैसे हो ऐसी चिन्ता होनेसे मैं वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ ३१ दुःखित मैं एकदिन एक देवमन्दिर में बैठाथा कि इतने में मेरे भाग्यों की प्रेरणासे एक सिद्ध वहां आया ३२ वह निराश्रय जिताहार सदा आनन्दरूप सब वाञ्छारहित व जितेन्द्रिय योगयुक्त एकान्तमें आकर बैठगया ३३ व ज्ञान ध्यान समाधि युक्तहो ब्रह्ममें लीनहुआ हे विप्र! मैं उस ज्ञान रूप महामतिके समीप गया ३४ व शुद्धभाव भक्तिसे मस्तक झुका-कर महात्माके नमस्कारकरके उनके आगे बैठगया ३५ व मन्दभाग्य होने के कारण उसके आगे अत्यन्त दीनहोकर स्थित रहा तब उस सिद्धब्राह्मण ने मुझसे कहा कि आप क्यों शोच करते हैं ३६ व किस अभिप्रायके भावसे ऐसा दुःख भोगते हैं हे विप्रेन्द्र! जब उस ज्ञानी योगी ने मुझ से ऐसा कहा तो ३७ मूर्ख मैंने अपना सब पूर्व्व का वृत्तान्त उससे कहा कि मैं सब जाननेवाला कैसे होजाऊं ३८ इससे अत्यन्त दुःखी रहताहूँ अब इस विषय में आपही मेरी सदैवगति हैं तब वह महात्मा हमसे सब ज्ञान का कारण कहता भया ३९ ॥

इति श्रीपाद्मेच्यवनचरित्रेद्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२२ ॥

एकसौतेईसका अध्याय ॥

दो० यकसै तेइसयें महँ ज्ञानोत्पत्ति बखान ॥

पुनिपृथुके अरुवेनके चरितकहेशुभदान १
सिद्ध बोला कि सुनो ज्ञानरूप हम तुम्हारे आगे कहेंगे ज्ञानके देह नहीं है हाथ पांव नेत्र १ नाक कान और हाड़ों का संग्रह भी ज्ञानके नहीं है किसने ज्ञान देखा है तिसके कौन चिह्न है २ नित्यही आकारोंसे रहित है वह सर्ववित् सबको जानताहै दिनका प्रकाशक सूर्य्यहै व रात्रि का प्रकाशक चन्द्रमा ३ व गृहका प्रकाशक दीपक है ये तीनों लोक में स्थित रहते हैं वह पद किस तेजसे देखा जाताहै हे सत्तम ! सुनो ४ विष्णुकी मायासे मोहित वे मूर्ख देहके मध्यमें स्थित ध्यानसे प्रकाशित उपमारहित ज्ञानको नहीं जानते हैं ५ वह पद चन्द्रमा और सूर्यादिकों ने भी नहीं देखा यद्यपि ज्ञानके हस्त पाद कर्ण नेत्र कुछभी नहीं हैं ६ परन्तु वह सब कहीं जासक्ताहै सबको ग्रहण करताहै व सब कुछ देखताहै सब सूँघताहै व सब सुनताहै हे विप्रेन्द्र ! इसमें सन्देह नहीं है ७ इस ज्ञानके समान सब अन्धकार नाशने में दीपक नहीं है पर ज्ञान का स्थान स्वर्ग में दिखाईदेता है भूमिपर पातालमें स्थान २ में दिखाताहै ८ इसी शरीरके मध्यमें ज्ञान सदा स्थित रहताहै परन्तु कुबुद्धिलोग उसे नहीं देखते अब हम ज्ञानकास्थान कहते हैं जिससे ज्ञान उत्पन्न होताहै ९ हे द्विज ! ज्ञान सदा प्राणियोंके हृदयमें नित्य स्थित रहता है व कामादिक महाभोगों को और महामोहादिकों को १० विवेकरूप अग्निसे सबको सदा जलाना चाहताहै व सर्व्व शान्तिमय होकर इन्द्रियों के अर्थोंका मर्दनकिया करता है ११ तो वह ज्ञान सब अङ्गोंमें प्राप्तहोकर सब तत्त्वके अर्थोंको देखने लगताहै तत्त्वका मूल निर्मल सर्वदर्शक यह ज्ञानहै १२ तिससे सब सुखकी बढ़ानेवाली शान्ति तुम करो शत्रु मित्र अपनेमें व परमें समदृष्टि करो १३ व नित्य नियतहोकर जितेन्द्रिय व जिताहारहोवो न किसीसे बहुत मैत्री करो और वैरतो कभी किसीसे करोनहीं १४ निस्स्पृह निस्सङ्गहोकर एकान्त में बैठो बस ऐसाकरनेसे सर्व्वप्रकाशक ज्ञानी सर्वदर्शी होजावोगे १५ हे वत्स ! एकही स्थानपर टिकेहुये तुम तीनोंलोकोंमें जो कुछ वृत्तान्त होंगे हमारे प्रसादसे सब देखाकरोगे इसमें कुछभी संशयनहींहै १६

कुञ्जलबोले कि हेविप्र! तिससिद्धने हमारेज्ञानरूप प्रकाशितकिया तिसी भावसे भावित तिसके वाक्य में नित्यही स्थित रहताहूं १७ इससे तीनोंलोकोंके वृत्तान्तोंका ज्ञान हमको एकही स्थानपर बैठे पर तिस सद्गुरुके प्रसादसे रहताहै १८ यह हमने अपना सब वृत्तान्त तुमसे कहा हे द्विजसत्तम ! और क्या तुमसे कहो सो कहैं १९ च्यवन मुनि बोले कि ज्ञानवानोंमें श्रेष्ठ आप सुखकी योनिको कैसे प्राप्तहुये सर्व्व सन्देहनाशन इसका कारण तुम हमसे कहो २० कुञ्जल बोला कि संसर्गसे पाप उत्पन्नहोताहै व संसर्गहीसे पुण्यउत्पन्न होताहै इससे विद्वान् को चाहिये कि अभव्योंका संसर्ग न करे २१ एकपापी लुब्धक एक शुकका बच्चा पकड़कर बेचनेके लिये एकसमय लाया २२ वह तोतेकाबच्चा बड़ासुन्दर प्रियवचन बोलता था इससे उसको देखकर एक ब्राह्मणने मोललिया व आकर फिर प्रीतिसे हमको देदिया २३ हे द्विजोत्तम! हमतो नित्य अपने ज्ञानध्यानमें स्थितरहते थे परन्तु बालस्वभाव से कौतुक से सुयेको हाथमें लिया २४ उसके कौतुक युक्त वाक्योंसे हम मोहित होगये इसलिये उस शुकके बच्चे को हम अपना पुत्र समझनेलगे व नित्यही सुयेमें मन लगारहे २५ व वहभी हमको तात पद कहकर बोलाकरे कहे कि हे महाभाग ! बैठो अब स्नान करनेजावो अब पूजनकरो २६ इत्यादि बहुतप्रिय मधुरवचन सदा हमसे कहाकरे उसके वाक्य के विनोदसे हमको धीरे २ उत्तम ज्ञान विस्मरणहोगया २७ एक दिन हम पुष्पलेनेके लिये व भोजनकेलिये फल लेनेको वनको गये व उसी बीचमें एक विडाल हमारे दुःखके हेतु उस शुकको पकड़लेभागा २८ समान उमरवाले सज्जन हमारे संसर्गी लोगोंने चाहा कि इससे हम इस बच्चेकोछीनलें परन्तु उनका श्रम वृथाहुआ उस विडालने मारकर उस पक्षीको खालिया २९ जब हम आये तो चाटुकारक उस पक्षी का मरण सुनकर हम बड़ेभारी दुःखसे अत्यन्त दुःखित हुये ३० व उसके महादुःखसे ऐसे पीड़ितहुये कि वनाय विक्षिप्त से होगये हे द्विजपुङ्गव! हम महामोहजालमें फँसगये ३१ मोहसे चलायमान मन होगया रामचन्द्र शुकराज अतिपंडित श्लोक रोज कहा करें ३२

और अपने कर्म से हम दुःखसे संतप्तहोगये व हे विप्रेन्द्र ! उस शुकके वियोग से ३३ हमको उस सिद्धका कहाहुआ सबज्ञान भूल गया बस दिन रात्रि उसी शुकका स्मरणकर २ शोकसे व्याकुलचित्त बनेरहैं ३४ व हे वत्स ! हे वत्स ! पुकाराकरैं सो गद्यपद्यमय संस्कृत वाक्योंसे पुकारें ३५ कि हे वत्स! तुम्हारेविना अब हमको कौन इस समय समझावेगा व नानाप्रकारकी विचित्र कथायें कौन हमसे कहेगा हे पक्षिराज! हमको प्रसन्न करो ३६ हे वत्स ! इस निर्जन वन में हमको छोड़कर आप कहां चलेगये तुम किसदोषसे खिन्नहोगये हो हमसे आकर इस समय कहो ३७ इसप्रकारके नानामोहमय वचन दीनतापूर्व्वक कहतेहुये हम अत्यन्त मोहित होगये इसीप्रकार के अनेक वचन कहतेहुये मारेशोकके अत्यन्त पीड़ित ३८ तिस मोहसे तिसभावसे मोहित हम मृतक होगये मरणकालमें जिसका जैसा भाव और जैसी मति होतीहै ३९ हे द्विजसत्तम ! वह वैसेही भावसे उत्पन्न होताहीहै इससे एक शुकी के गर्भ को प्राप्तहुये व सबज्ञान स्मरण बनारहा ४० व पूर्व्व का अपना कियाहुआ कर्म्म स्मरण करतारहा कि हम अकृतात्मा मूढ़ने यह क्या किया ४१ गर्भके योगमें आरूढ़ फिर तिसको चिन्तना करता भया इसी से हमको सर्वदर्शक निर्म्मल ज्ञान होगया ४२ यह उत्तम ज्ञान शुकहोनेपरभी उन्हीं गुरुजीकेही प्रसाद से हमको हुआ व उनके स्वच्छ जलरूप वाक्योंसे हमारे शरीरका मल दूरहोगया ४३ भीतर बाहर निर्मल होगया सुयेकी जातिसे उत्पन्न तिर्यक् योनि मैंने पाई ४४ जो कि मरण के समयमें शुकका ध्यानभावकिया और तिसभावसे भावित तिसीसमयमें मरा ४५ इसी से हम उसीप्रकारके शुक पृथ्वीपरहुये मरणसमयमें प्राणियों का जैसा भाव होताहै ४६ तैसेही वे प्राणी वैसाही रूप तिसीमें परायण तैसेही गुण और तैसेही स्वरूपभावभूत होते हैं ४७ हे विप्रेन्द्र ! हे महामते ! मृत्युकालके भाव से हम यहां अतुल ज्ञान को प्राप्तहुये इसमें सन्देह नहींहै ४८ हे महामते! हे महाप्राज्ञ ! तिसज्ञानसे भूत भविष्य वर्तमान सब हम देखतेहैं ४९ और यहां स्थित सबको जानतेहैं इसमें संदेह नहींहै संसारमें वर्तमान मनुष्यों के तारने के लिये ५०

बन्ध छेदन करनेवाला गुरु समान तीर्थ नहींहै हे भार्गवनन्दन ! हे द्विज ! यह सब तुमसे कहा ५१ हे विप्र! जो तुमने पूंछा वह तुमसे सब प्रकाशित किया स्थलके उत्पन्न जलसे सब बाहरका मलनाश होजाता है ५२ जन्मान्तर के कियेहुये पापों को गुरुतीर्थ नाश करता है संसार तारण के लिये उत्तम जंगम तीर्थहै ५३ विष्णुजी बोले कि हे राजाओंमें उत्तम वेन! महाबुद्धिमान् शुक महात्मा च्यवनजीसे तत्त्व प्रकाशित कर चुपहोरहा ५४ यहउत्तम सब जंगमतीर्थ तुमसेकहा तुम्हारा कल्याण हो और जो मनमें वर्तमानहो वह वरमांगो ५५ तब वेनजी बोले कि हे जनार्दनजी ! मैं राज्यकी कामना नहीं करता और न कुछ कामना करता देहसमेत तुम्हारे देहके जानेकी इच्छा करताहूं ५६ जो यहां देनेकी इच्छाहै तो यहीवर हम मांगतेहैं फिर जगन्नाथ श्रीनारायणजी राजा वेनसे बोले कि हे भूपते ! अब तुम अश्वमेध और राजसूययज्ञकरो ५७ गऊ पृथ्वी सोना जल और धान्योंका दान करो क्योंकि दानसे तुरन्त पाप नष्टहोते हैं व दुर्गति काभी तुरन्तही नाशहोताहै व हे राजन् ! ब्रह्महत्यादिक घोर पाप दानसे नष्टहोते हैं इससे दान सदा देतेरहो ५८ दान देने से धर्म अर्थ काम मोक्ष सिद्ध होताहै इसमें संशय नहीं है इससे हे नरोत्तम ! हमारे उद्देश से नित्य दान करना चाहिये ५९ हमारे उद्देशसे जिस भावसे कोई दान करता है उसको हम उसीप्रकारके भावसे सत्यही युक्त करते हैं ६० ऋषियों के दर्शन करने व स्पर्श करने से पातक समूह तुम्हारा भ्रष्ट होगया यज्ञ के अंतमें हमारी देहको प्राप्तहोगे इसमें सन्देह नहीं है ६१ ऐसा कहकर श्रीभगवान् अन्तर्द्धानहोगये ६२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्यसम्पूर्तिवर्णनेच्यवनचरित्रसमाप्तौचत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३॥

एकसौचौबीसका अध्याय ॥

दो० यकसै चौबिसयें महं पृथुतप कीन्ह अपार ॥
ब्रह्मासों वरदान लहि तब आये आगार १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि महाबुद्धिमान् राजावेन विष्णु

जीके अन्तर्द्धान होनेमें देवदेवेशजी कहांगये इस चिन्ता में परायण भये १ व राजा बड़े हर्षसे युक्तहोकर चिन्तना करके अपने पुत्र महाराज पृथुजी को मधुर अक्षरों से बुलाकर २ उन महात्मा से बड़े हर्षसे बोले कि हे पुत्र ! तुमने हमको इसलोक के पापोंसे तारदिया ३ व हमारे वंशको तुमने उज्ज्वल किया हमने इस वंशको दोषोंसे विनाशित कियाथा व तुमने गुणोंसे प्रकाशित किया ४ अब हम अश्वमेध यज्ञकरें व विविधप्रकार के अनेक दानदें तो तुम्हारे प्रसाद से शरीरसहित श्रीविष्णुके लोकको इस समय जायँ ५ हे महाभाग ! इससे अब तुम यज्ञ करनेकी सब सामग्री इकट्ठीकरो व हे महाभाग ! वेदपारगामी ब्राह्मणों को बुलावो ६ जब महात्मा राजा वेनने पृथु को ऐसी आज्ञादी तो वे महात्मा पृथुजी अपने पिता राजा वेनसे आदर से बोले ७ कि हे महाराज ! अभी आप राज्यकरें व दिव्य पुण्यकारी मनुष्योंके वाञ्छित भोगभोगें व यज्ञोंसे श्रीविष्णुभगवान् की पूजा करतेरहें ८ ज्ञानमें तत्पर पितासे ऐसा कहकर प्रणामकर पृथुजीने धन्वाबाण यत्नपूर्वक उठाकर ९ सब भटों को आज्ञादी कि पृथ्वी में हमारी आज्ञा सुनावो कि मन वचन कर्म से पाप नहीं करना चाहिये १० जो वेन राजाकी आज्ञा उल्लङ्घन कर पाप करेगा वह नाश को प्राप्तहोगा इसमें सन्देह नहीं है ११ भगवान् में मनलगा कर मत्सरहीन हो सब मनुष्य दान देवें यज्ञों से जनार्दनजीको पूजें १२ इसप्रकार सब प्रजाओं को शिक्षा देकर व राज्यकार्य्य अपने मन्त्रियों को सौंपकर राजा पृथुजी तप करने को वनको चले गये १३ वहां सब दोषोंको छोड़ इन्द्रियों को उनके विषयों से रोंक सौवर्षतक निराहार तप करतेरहे १४ उनके तपसे सन्तुष्टहोकर ब्रह्माजी आकर पृथुसे बोले कि तुम क्यों तप करतेहो इसका कारण हमसे कहो १५ यह सुनकर पृथुजी बोले कि कीर्त्ति बढ़ानेवाले हमारे महाप्राज्ञ पिताजी राज्य में जो कोई पुरुषाधम पापकरे १६ उसका शिर श्रीविष्णुभगवान् काटडालें महाचक्र न देखपड़ें उनसे श्रीहरिजी आपही दण्ड देवें १७ मनसे कर्म्म से व वचनसे जैसेही कोई पाप करनाचाहें वैसेही उनके शिर पक्के फलके समान पृथ्वीपर

गिरपड़ें १८ हे सुरेश्वर ! बस यही वर हम तुमसे मांगते हैं जिसमें प्रजाओं के दोषों से हमारे पिता न लिप्तहों १९ हे देवेश ! वैसा आप करें जो वरदेने की इच्छाहो और उत्तम काम दो हे ब्रह्माजी ! आपके नमस्कार हैं २० ब्रह्माजी बोले कि हे महाभाग ! ऐसाहीहो पिता तुम्हारे पवित्र होगये हे वत्स ! हे पृथो ! तुम्हारे पिताको विष्णुजीने और तुम्ह पुत्रने भी शिक्षा कीथी २१ ऐसा पृथुको आज्ञादे वर देकर ब्रह्माजी तो चलेगये व राजापृथु अपने स्थान पर आये अपना राज्यकर्म्म करनेलगे २२ तबसे पृथुके राज्य में कोई पाप नहीं करता था जो कोई मनसा वाचा कर्म्मणा पाप करनेकी चिन्ता करताथा २३ उसका शिर कटकर गिरपड़ता था जैसे कि चक्रसे काटनेपर गिरताहै इससे तबसे फिर उस राज्यमें किसीने कुछ पाप कियाही नहीं २४ महात्मा पृथुकी भी यही आज्ञा होगई थी कि हमारे राज्य में नित्यही सबलोग सदाचारही करते रहें २५ ॥

चौ० दानदेहिंसबप्रजानिरन्तर । धर्म्मपरायणहोहिंसमन्तर ॥
सबसुखभोगें जनसबमेरे । पाप न आवहिं तिनकेनेरे २६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने चतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४ ॥

एकसौपच्चीसका अध्याय ॥

दो० यकसै पच्चिसयें महँ वेनस्वर्ग पृथुराज्य ॥
कहीफलस्तुतिविघ्नहतिहितहुतितिलयवआज्य १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि राजावेनकी यज्ञकरनेकी आज्ञा पाकर परमधार्म्मिक उनके पुत्र महाराज पृथुजीने नानाप्रकार के पुण्यकारी सब यज्ञसम्भार एकत्रकराये १ व नानादेशों के रहनेवाले सब ब्राह्मणोंको निमन्त्रणदेकर बुलाया तब वेन राजा अश्वमेध यज्ञ करताभया २ ब्राह्मणोंको नानाप्रकारके अनेक दान राजा ने दिये इसलिये महाराजवेन इसी पाञ्चभौतिक शरीरसे वैकुण्ठको सीधे चलेगये ३ व वे धर्म्मात्मा विष्णुभगवान्के सङ्ग नित्य वहाँ बसनेलगे यह हमने उन महात्माराजाका चरित्र तुमसे कहा ४ जो

इसप्रकार जो नहीं करता तिसके विघ्नको हम कहते हैं बहुत पीड़ा का देनेवाला तिसके अंगमें रोग होताहै ३३ स्त्री का शोक पुत्रका शोक धनकी हानि और नानाप्रकारके महारोगोंको भोगताहै इसमें स-न्देह नहीं है ३४ जिसके घरमें द्रव्य नहीं है वह एकादशी का व्रत कर भावयुक्त चित्तसे सोलहों उपचारोंसे भगवान् की पूजनकरै पीछेसे जैसा द्रव्यहो उसके अनुसार ब्राह्मणोंको भोजन करावै ३५। ३६ खीरयुक्त सङ्कल्प केशवजीको देकर फिर बुद्धिमान् मनुष्य बान्धवों पुत्रों और स्त्रीसमेत आप भोजनकरै तब सिद्धिकोप्राप्तहोवै सम्पूर्ण पुराणसंहिता धर्मतत्पर मनुष्य को सुननी चाहिये ३७। ३८ तब सुननेवाले को धर्म अर्थ काम मोक्षकी सिद्धि होतीहै अन्यथा नहीं होती सवालक्ष ब्रह्मनाम पुष्करको सुनो ३९ हे द्विज! सतयुग में पापहीन मनुष्य सब पद्मपुराण बावन हजार श्लोकयुक्त को सुनते भये त्रेतायुग में जो मनुष्य सुनते हैं ४०। ४१ वे धर्म अर्थ काम मोक्ष फलको भोगकर फिर भगवान्को प्राप्तहोते हैं बाईसहजार पद्मपुराणकी संहिता ४२ ब्रह्मापरमात्मा ने द्वापरयुग में कहीहै बारहहजार पद्मपुराण की सं-हिता ४३ कलियुगमें विष्णुमें तत्पर मनुष्य पढ़ेंगे एक अर्थ एकही भाव चारोंमें वर्त्तमान है४४संहिताओं में शेष आख्यानका विस्तार है हे विप्रेन्द्र! हे सत्तम! कलियुगमें बारह हजार नाशको प्राप्त होगये भूमिखण्डको मनुष्य सुनकर सबपापोंसे छूटजाताहै४५।४६सबदुःखों और सब रोगोंसे भी छूटजाताहै और सब जप दान और सुनने को छोड़कर ४७ पाप नाशनेवाला पद्मपुराण यत्नसे सुनना चाहिये प्रथम सृष्टिखण्ड द्वितीय भूमिखण्ड ४८ तृतीय स्वर्ग खण्ड चतुर्थ पाताल खण्ड पंचम सब पाप नाशनेवाला उत्तर खण्ड है ४९ जो मनुष्य भक्तिसे क्रमसे पांच खण्डों को सुनता है वह हजार गोदान के फलको पाता है ५० हे ब्राह्मणो! बड़ी भाग्यसे पांच खण्ड मिलते हैं ये पांचों सुनने से सत्य सत्य निस्सन्देह मोक्षदेते हैं ५१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने पञ्चविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५॥

समाप्तमिदम्भूमिखण्डन्द्वितीयम्॥